CET-2026

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)

समान पात्रता परीक्षा

स्नातक स्तर – (हिन्दी माध्यम)

भाग - 3

इतिहास एवं संस्कृति

HISTORY AND CULTURE

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF

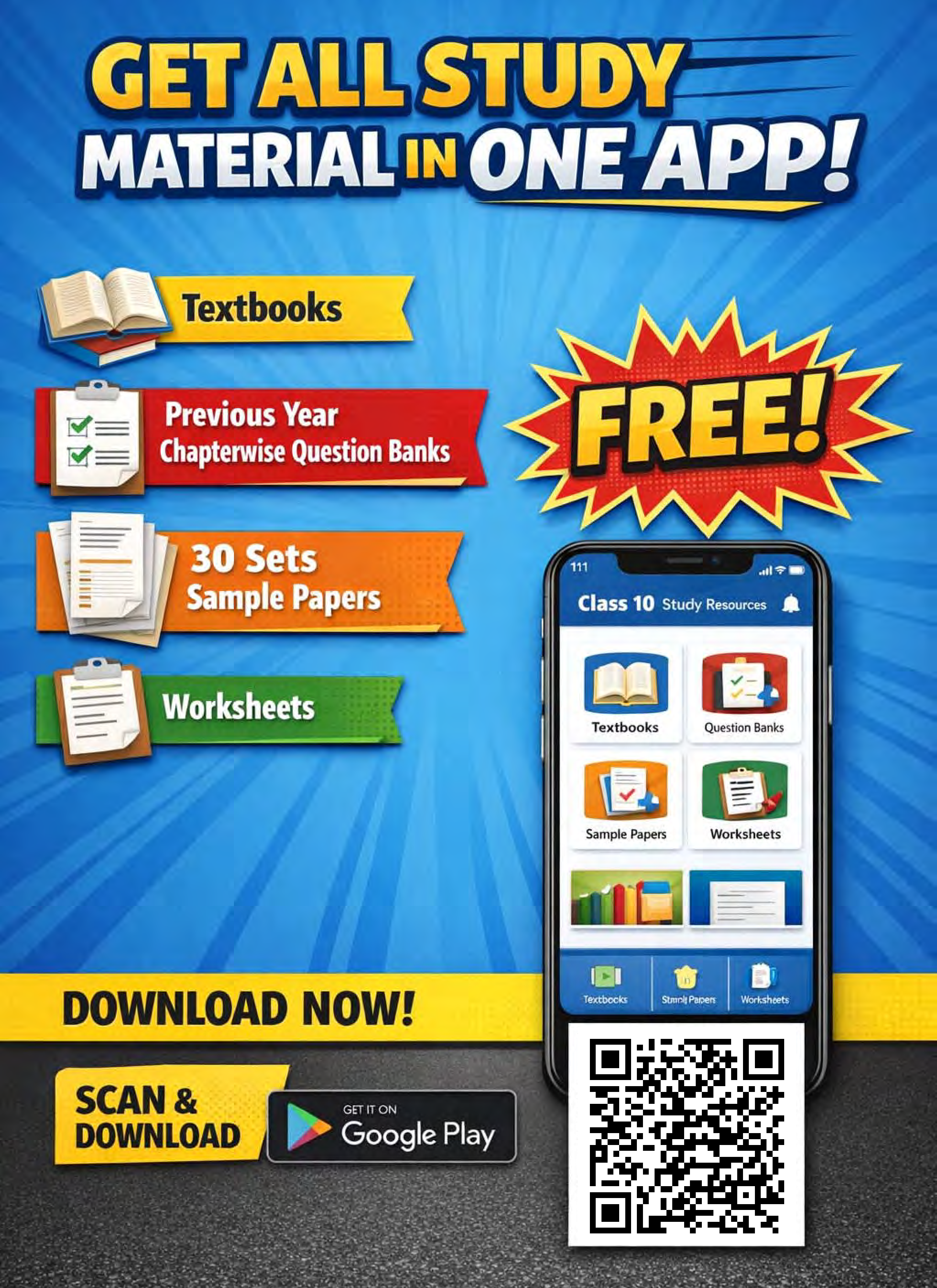
GET ALL STUDY
MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year
Chapterwise Question Banks
30 Sets
Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN &
DOWNLOAD
GET IT ON
Google Play

RSSB 2026
राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

COMMON ELIGIBILITY TEST (CET)
GRADUATE LEVEL
समान पात्रता परीक्षा
स्नातक स्तर

PART 3
HISTORY AND CULTURE
भाग 3
इतिहास एवं संस्कृति

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार

Nodia

Downloaded from www.pdf.tube

RSSB CET स्नातक स्तर इतिहास एवं संस्कृति भाग 3
Edition July 2026
Published by :Nodia
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

इस पुस्तक में निहित जानकारी लेखक द्वारा ऐसे स्रोतों से प्राप्त की गई है जिन्हें विश्वसनीय माना गया है। तथापि, Nodia तथा इसके लेखक इस पुस्तक में दी गई किसी भी जानकारी की शुद्धता, पूर्णता अथवा अद्यतनता की कोई गारंटी नहीं देते हैं। इस पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि, चूक अथवा इसमें निहित जानकारी के उपयोग से उत्पन्न होने वाली किसी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हानि के लिए Nodia तथा इसके लेखक उत्तरदायी नहीं होंगे। यह पुस्तक इस समझ के साथ प्रकाशित की गई है कि Nodia तथा इसके लेखक केवल सामान्य जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं। इसका उद्देश्य अभियांत्रिकी (Engineering) अथवा किसी अन्य व्यावसायिक या विशेषज्ञ सेवा अथवा परामर्श प्रदान करना नहीं है।

© NODIA EDITIONS LLP

NODIA

MRP ₹420.00

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

अध्याय 1.	भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ	5
अध्याय 2.	19वीं और 20वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन	25
अध्याय 3.	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	45
अध्याय 4.	1857 में राजस्थान की भूमिका	66
अध्याय 5.	राजस्थान में आदिवासी किसान आंदोलन	87
अध्याय 6.	राजनीतिक जागृति प्रजामण्डल आन्दोलन	108
अध्याय 7.	आज़ादी के बाद राष्ट्र-निर्माण	128
अध्याय 8.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ	148
अध्याय 9.	राजस्थान के राजवंश और प्रशासनिक राजस्व प्रणालियाँ	168
अध्याय 10.	राजस्थान के इतिहास के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू	189
अध्याय 11.	वास्तुकला, किले और स्मारक	210
अध्याय 12.	कला, पेंटिंग और हस्तशिल्प	230
अध्याय 13.	राजस्थानी साहित्य और बोलियाँ	251
अध्याय 14.	राजस्थान के मेले और त्योहार	271
अध्याय 15.	राजस्थान का लोक संगीत और लोक नृत्य	291

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 16.	संस्कृति, परंपरा, विरासत	312
अध्याय 17.	धार्मिक आंदोलन, संत और लोक देवता	333
अध्याय 18.	राजस्थान के ऐतिहासिक स्थल	351
अध्याय 19.	राजस्थान की प्रमुख हस्तियाँ	373
अध्याय 20.	राजस्थान का एकीकरण	392

****

NODIA

अध्याय 01
भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएँ

1. निम्नलिखित में से कौन-सा साहित्यिक स्रोत कश्मीर के प्रारंभिक राजवंशों का सबसे विस्तृत और विश्वसनीय ऐतिहासिक विवरण प्रदान करता है?
(A) मुद्राराक्षस
(B) राजतरंगिणी
(C) हर्षचरित
(D) मालविकाग्निमित्रम्

2. वर्तमान राजस्थान में स्थित सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख प्रांतीय केंद्र 'कालीबंगा' पुरातात्विक स्थल, निम्नलिखित में से किस खोज के लिए प्रसिद्ध है?
(A) विदेशी व्यापार के लिए एक विशाल गोदीवाड़ा
(B) अनुष्ठानिक स्नान के लिए उपयोग किया जाने वाला विशाल स्नानागार
(C) केवल लकड़ी से निर्मित एक उन्नत भूमिगत जल निकासी प्रणाली
(D) जुते हुए खेत और अग्निवेदिकाओं के साक्ष्य

3. सिंधु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन पर विचार कीजिए। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मौलिक रूप से असत्य है?
(A) प्रत्येक प्रमुख शहर के केंद्र में बड़े विशाल पत्थरों के मंदिर स्थित थे।
(B) अधिकांश प्रमुख नगरों को एक ऊंचे दुर्ग और एक निचले नगर में विभाजित किया गया था।
(C) घर सामान्यतः मानक आकार की पकी हुई ईंटों से बनाए जाते थे।
(D) मुख्य सड़कें आमतौर पर एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं, जो ग्रिड पद्धति बनाती थीं।

4. प्रारंभिक वैदिक काल (ऋग्वैदिक काल) के दौरान राजनीतिक संगठन की मूलभूत इकाई 'कुल' (परिवार) थी। इस काल में सर्वोच्च राजनीतिक इकाई कौन-सी थी?
(A) ग्राम
(B) विश
(C) जन
(D) राष्ट्र

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : उत्तर वैदिक काल में मुख्यतः पशुचारण अर्थव्यवस्था से स्थायी कृषि अर्थव्यवस्था की ओर एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया।
कारण (R) : लौह प्रौद्योगिकी की खोज और इसके व्यापक उपयोग ने खेती के लिए गंगा के मैदानी भागों के घने जंगलों को साफ करना संभव बनाया।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

6. महाजनपद काल के दौरान, मत्स्य महाजनपद वर्तमान राजस्थान के कुछ हिस्सों में फैला हुआ था। इसकी राजधानी क्या थी?
(A) मथुरा
(B) इंद्रप्रस्थ
(C) अहिच्छत्र
(D) विराटनगर

7. मगध साम्राज्य के निम्नलिखित शासकों में से किसे गंगा और सोन नदियों के संगम पर एक किला बनाकर पाटलिपुत्र नगर स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) बिंबिसार
(B) उदयन
(C) अजातशत्रु
(D) शिशुनाग

8. जैन धर्म में 'स्याद्वाद' की अवधारणा निम्नलिखित में से किस दार्शनिक सिद्धांत से सबसे निकटता से संबंधित है?
(A) सार्वभौमिक अहिंसा और जीवन की पवित्रता का सिद्धांत
(B) सभी भौतिक सांसारिक वस्तुओं का पूर्ण त्याग
(C) सशर्त कथन और सापेक्ष सत्य का सिद्धांत
(D) एक मात्र सर्वोच्च रचयिता ईश्वर में मूलभूत विश्वास

9. चतुर्थ बौद्ध संगीति, जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म का औपचारिक रूप से महायान और हीनयान संप्रदायों में विभाजन हुआ, किस शासक के संरक्षण में आयोजित की गई थी?
(A) अशोक
(B) कालाशोक
(C) अजातशत्रु
(D) कनिष्क

10. बौद्ध धर्म के प्रसार और उपदेशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बुद्ध ने वेदों की प्रामाणिकता और वैदिक कर्मकांडों के अभ्यास को खारिज कर दिया।
II. बौद्ध धर्म ने आम जनमानस तक पहुँचने के लिए उपदेश

Downloaded from www.pdf.tube

के माध्यम के रूप में पाली भाषा को अपनाया।

III. बोधिसत्व की अवधारणा बौद्ध धर्म के हीनयान संप्रदाय का केंद्रीय विचार है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

11. राजस्थान में पाया गया कौन-सा अशोककालीन शिलालेख बौद्ध त्रिरत्न (बुद्ध, धम्म और संघ) में अशोक के अगाध विश्वास की स्पष्ट रूप से पुष्टि करता है?
(A) मास्की लघु शिलालेख
(B) भाब्रू-बैराठ शिलालेख
(C) गिरनार शिलालेख
(D) रुम्मिनदेई स्तंभ शिलालेख

12. मेगस्थनीज की 'इंडिका' के विवरण के अनुसार, मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र का नगर प्रशासन कितनी समितियों में विभाजित नगर परिषद द्वारा प्रबंधित किया जाता था?
(A) 5-5 सदस्यों की 4 समितियाँ
(B) 6-6 सदस्यों की 5 समितियाँ
(C) 5-5 सदस्यों की 6 समितियाँ
(D) 4-4 सदस्यों की 8 समितियाँ

13. मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था में निम्नलिखित में से किस विभाग की देखरेख 'सीताध्यक्ष' द्वारा की जाती थी?
(A) राजकीय कृषि भूमि
(B) व्यापार, वाणिज्य और बाजार विनिमय
(C) धातुकर्म कार्य और राज्य की खदानें
(D) शाही राजस्व और राज्य कोष

14. इतिहासकारों द्वारा सामान्यतः किस मौर्योत्तर राजवंश को भारत में बड़े पैमाने पर सोने के सिक्के जारी करने वाले प्रथम राजवंश का श्रेय दिया जाता है?
(A) शुंग
(B) सातवाहन
(C) कुषाण
(D) हिंद-यवन

15. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I : मौर्योत्तर राजवंश
P. शुंग राजवंश
Q. कण्व राजवंश
R. सातवाहन राजवंश
S. कुषाण राजवंश (भारत में)

सूची II : उनके संस्थापक
1. वासुदेव
2. सिमुक
3. पुष्यमित्र
4. कुजुल कडफिसस

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-1, Q-3, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

16. गुप्त काल को प्रायः प्राचीन भारत का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। गुप्त प्रशासन के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पूर्णतः सटीक है?
(A) यह एक अत्यधिक केंद्रीकृत प्रशासन था जिसने पूरे साम्राज्य में स्थानीय प्रांतीय स्वायत्तता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया था।
(B) गुप्त साम्राज्य ने शहरी व्यापारिक श्रेणियों के सभी स्वायत्त कामकाज पर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया और उन्हें भंग कर दिया।
(C) ब्राह्मणों को बड़े पैमाने पर दिए गए प्रशासनिक भूमि दानों ने प्रशासनिक विकेंद्रीकरण को गति दी।
(D) पारंपरिक ग्राम प्रधान ने अपने सभी स्थानीय न्यायिक और प्रशासनिक अधिकार केंद्रीय रूप से नियुक्त शाही अधिकारियों के हाथों खो दिए।

17. प्रसिद्ध 'इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख' (प्रयाग प्रशस्ति), जो समुद्रगुप्त की सैन्य विजयों का विवरण देता है, उसके किस दरबारी कवि द्वारा रचा गया था?
(A) कालिदास
(B) हरिषेण
(C) बाणभट्ट
(D) रविकीर्ति

18. गुप्त काल के निम्नलिखित खगोलशास्त्रियों/गणितज्ञों में से किसने सबसे पहले यह घोषणा की थी कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है?
(A) वराहमिहिर
(B) ब्रह्मगुप्त
(C) भास्कराचार्य
(D) आर्यभट्ट

19. राजा हर्षवर्धन ने गंगा-यमुना दोआब में अपने साम्राज्य को बेहतर ढंग से प्रशासित करने के लिए अपनी राजधानी थानेसर से किस नगर में स्थानांतरित की थी?
(A) कन्नौज
(B) पाटलिपुत्र
(C) उज्जैन
(D) मथुरा

20. प्राचीन भारत के निम्नलिखित विदेशी आक्रमणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. कुषाण
2. हिंद-यवन
3. हुण
4. शक

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 1, 4, 3

NODIA

(D) 4, 1, 2, 3

21. कौन-सा दक्षिण भारतीय राजवंश ग्राम स्तर पर स्थानीय स्वशासन की अपनी उन्नत प्रणाली के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है, जैसा कि उत्तरमेरूर अभिलेख में विस्तृत रूप से वर्णित है?
(A) चोल
(B) पल्लव
(C) राष्ट्रकूट
(D) चालुक्य

22. क्षेत्रीय राजवंश और उनकी राजधानी का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) पल्लव - कांचीपुरम
(B) राष्ट्रकूट - मान्यखेत
(C) बादामी के चालुक्य - वातापी
(D) चोल - मदुरै

23. सिंध पर पहला सफल अरब आक्रमण, जिसने भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम के शुरुआती आगमन को चिह्नित किया, 712 ईस्वी में किसके नेतृत्व में हुआ था?
(A) गजनी का सुल्तान महमूद
(B) मुहम्मद बिन कासिम
(C) सुल्तान मुहम्मद गोरी
(D) सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक

24. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : महमूद गजनवी के भारत पर बार-बार होने वाले आक्रमणों का प्राथमिक उद्देश्य उपमहाद्वीप में एक स्थायी इस्लामिक साम्राज्य स्थापित करना था।
कथन II : मुहम्मद गोरी ने तराइन के द्वितीय युद्ध के बाद उत्तर भारत में मुस्लिम राजनीतिक शासन की सफलतापूर्वक नींव रखी।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है।
(C) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है।
(D) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

25. दिल्ली सल्तनत के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इक्ता प्रणाली भू-राजस्व के संग्रह और सैनिकों के रख-रखाव की एक व्यवस्था थी।
II. दीवान-ए-अर्ज मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा निर्मित कृषि विभाग था।
III. बलबन ने सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए दरबार में सिजदा और पाबोस की कठोर परंपराओं की शुरुआत की।
IV. अलाउद्दीन खिलजी ने व्यापक बाजार नियंत्रण नियमों और मूल्य नियंत्रण प्रणाली को लागू किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

26. दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान 'खालिसा' शब्द का क्या तात्पर्य था?
(A) वह भूमि जिसका राजस्व सीधे सुल्तान के खजाने के लिए आरक्षित था
(B) धार्मिक संस्थाओं को उनके रखरखाव के लिए दी गई भूमि
(C) नकद वेतन के बदले सैन्य कमानों को हस्तांतरित भू-राजस्व
(D) केवल गैर-मुस्लिम व्यापारियों पर लगाया जाने वाला एक विशेष कर

27. तुर्क अभिजात वर्ग (चाहालगानी) के कड़े विरोध के बावजूद अपने कुशल प्रशासन के लिए जानी जाने वाली दिल्ली सल्तनत की एकमात्र महिला शासिका कौन थी?
(A) चांद बीबी
(B) रजिया सुल्तान
(C) नूरजहाँ
(D) गुलबदन बेगम

28. दिल्ली का कौन-सा सुल्तान अपनी राजधानी दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरि) स्थानांतरित करने और तांबे और पीतल की सांकेतिक मुद्रा चलाने के लिए जाना जाता है?
(A) सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी
(B) मुहम्मद बिन तुगलक
(C) सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक
(D) सुल्तान फिरोज शाह तुगलक

29. 'विशिष्टाद्वैत' का दार्शनिक सिद्धांत, जिसने मध्यकालीन भक्ति आंदोलन को गहराई से प्रभावित किया, किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
(A) रामानुजाचार्य
(B) आदि शंकराचार्य
(C) मध्वाचार्य
(D) निंबार्काचार्य

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : चिश्ती संप्रदाय के सूफी संतों ने राज्य के साथ किसी भी संबंध से सख्ती से परहेज किया और आम तौर पर शाही अनुदान या आधिकारिक पदों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया।
कारण (R) : उनका मानना था कि सल्तनत की राजनीतिक शक्ति और धन के साथ जुड़ने से उनकी आध्यात्मिक पवित्रता भ्रष्ट हो जाएगी।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।

Click Here to Buy book on Flipkart

(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

31. पानीपत का प्रथम युद्ध (1526) भारतीय इतिहास में मौलिक रूप से महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इसके परिणामस्वरुप:
(A) बंगाल से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सशस्त्र सेनाओं का पूर्ण निष्कासन हुआ।
(B) उत्तर में आक्रमणकारी अफगान सेनाओं पर मराठा परिसंघ की निर्णायक विजय हुई।
(C) दक्षिण भारत में शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य का तत्काल राजनीतिक पतन हुआ।
(D) इब्राहिम लोदी की पराजय हुई और बाबर द्वारा मुगल शासन की स्थापना हुई।

32. हुमायूं के 15 वर्षों के निर्वासन के दौरान, सूरी राजवंश ने उत्तर भारत पर थोड़े समय के लिए शासन किया। शेरशाह सूरी के प्रशासन को विशेष रूप से किसके लिए याद किया जाता है?
(A) ताजमहल जैसी भव्य शाही स्थापत्य कला की इमारतों का निर्माण।
(B) 'दीन-ए-इलाही' नामक एक समन्वयात्मक धर्म की आधिकारिक स्थापना और प्रचार।
(C) चांदी का 'रुपया' चलाना और ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण करना।
(D) सामंती जागीरदारी राजस्व प्रणाली का तत्काल और पूर्ण उन्मूलन।

33. अकबर के प्रशासन के तहत, 'मनसबदारी' प्रणाली नागरिक और सैन्य नौकरशाही का मूल आधार थी। इस प्रणाली में 'सवार' शब्द विशेष रूप से दर्शाता था:
(A) नियुक्त अभिजात का समग्र व्यक्तिगत प्रशासनिक पद, रैंक और वेतन।
(B) बनाए रखे जाने वाले घुड़सवारों और घोड़ों की आवश्यक संख्या।
(C) विशिष्ट प्रांतीय सूबा जिसे सीधे प्रशासित करने के लिए अभिजात को सौंपा गया था।
(D) मनसबदार को सीधे प्रदान किए गए नागरिक और आपराधिक न्यायिक अधिकार की मात्रा।

34. अकबर ने फतेहपुर सीकरी में 'इबादत खाना' की स्थापना मुख्य रूप से किस उद्देश्य से की थी?
(A) भारी तोपखाने, आग्नेयास्त्रों और बारूद के भंडार के लिए एक सुरक्षित शाही सैन्य भंडारगृह के रूप में कार्य करना।
(B) केंद्रीय शाही राज्य कोष, सर्राफा भंडार और मूल्यवान शाही मुकुट रत्नों को रखना।
(C) उच्च स्तरीय अभिजात वर्ग को आपराधिक न्याय देने के लिए एक सर्वोच्च विशेष शाही अदालत के रूप में कार्य करना।
(D) विद्वानों के बीच अंतर-धार्मिक और दार्शनिक चर्चाओं को सुगम बनाना।

35. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : मुगल प्रशासनिक शब्द
P. वजीर
Q. मीर बख्शी
R. मीर सामां
S. काजी-उल-कुजात
सूची II : उनके अर्थ
1. सैन्य प्रशासन और गुप्तचर विभाग का प्रमुख
2. साम्राज्य का मुख्य न्यायाधीश
3. राजस्व और वित्त प्रमुख
4. शाही घराने और कारखानों का प्रभारी
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

36. निम्नलिखित में से कौन-सी नीति निश्चित रूप से सम्राट औरंगजेब के शासनकाल से संबंधित है?
(A) सभी राजपूत राज्यों के साथ सौहार्दपूर्ण वैवाहिक संबंधों की स्थापना।
(B) गैर-मुस्लिमों पर से जजिया कर का औपचारिक उन्मूलन।
(C) बीजापुर और गोलकुंडा की दक्कन सल्तनतों का विलय।
(D) शाही दरबार में संगीत, चित्रकला और ललित कलाओं का सक्रिय संरक्षण।

37. शाहजहाँ के पुत्रों के बीच मुगल उत्तराधिकार के युद्ध के दौरान, मारवाड़ के राजपूत शासक महाराजा जसवंत सिंह ने शुरु में किस प्रसिद्ध युद्ध में औरंगजेब के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी?
(A) धर्मत का युद्ध
(B) सामूगढ़ का युद्ध
(C) खजुआ का युद्ध
(D) देवराई का युद्ध

38. 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन में योगदान देने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक जागीरदारी संकट था। इस संकट का मुख्य कारण क्या था?
(A) ग्रामीण हिंदू किसानों द्वारा शाही मुस्लिम जागीरदारों को अनिवार्य कृषि भू-राजस्व देने से व्यापक इनकार।
(B) एक प्रणालीगत प्रशासनिक विफलता जहां जागीरदारों ने आध्यात्मिक कारणों से स्वेच्छा से अपनी भूमि शाही खजाने को सौंप दी।
(C) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का आक्रामक सैन्य हस्तक्षेप जिसने सभी आकर्षक मुगल जागीरें जबरन छीन लीं।
(D) मनसबदारों की बढ़ती संख्या को जागीर के रूप में आवंटित करने के लिए भूमि की भारी कमी।

39. कमजोर होते मुगल साम्राज्य का फायदा उठाकर निजाम-उल-मुल्क आसफ जाह ने 1724 में एक स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्य की नींव रखी। वह कौन-सा राज्य था?
(A) अवध का राज्य
(B) हैदराबाद
(C) बंगाल प्रांत
(D) मैसूर राज्य

Downloaded from www.pdf.tube

40. शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्ति के उदय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शिवाजी की आठ मंत्रियों की प्रशासनिक परिषद को 'अष्टप्रधान' कहा जाता था।
II. चौथ भू-राजस्व के एक-चौथाई के बराबर एक कर था, जिसे मराठों द्वारा पड़ोसी क्षेत्रों में आक्रमणों से बचने के बदले माँगा जाता था।
III. शिवाजी का औपचारिक रूप से 1674 में रायगढ़ में छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक हुआ था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

41. मराठा प्रशासनिक व्यवस्था में, 18वीं शताब्दी में सत्ता परिवर्तन से पूर्व 'पेशवा' की प्राथमिक भूमिका क्या थी?
(A) सशस्त्र सेना का प्रधान सेनापति
(B) धार्मिक व्यवस्था का प्रमुख
(C) विदेशी गुप्तचर विभाग का प्रमुख
(D) छत्रपति के प्रधानमंत्री

42. 1734 में, राजपूत शासकों ने वर्तमान राजस्थान में 'हूरड़ा सम्मेलन' बुलाया। इस सभा का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) मराठा आक्रमणों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा तैयार करना।
(B) विस्तारवादी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ एक संयुक्त सैन्य अभियान की योजना बनाना।
(C) नाममात्र के मुगल सम्राट से पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता की औपचारिक घोषणा करना।
(D) मेवाड़ राजपरिवार के भीतर एक आंतरिक उत्तराधिकार विवाद को शांतिपूर्वक सुलझाना।

43. कौन-सी यूरोपीय शक्ति भारत के लिए सीधे समुद्री मार्ग की खोज करने और एक व्यापारिक केंद्र स्थापित करने वाली पहली शक्ति थी, फिर भी स्वतंत्रता के बाद भारतीय क्षेत्र को छोड़ने वाली अंतिम शक्ति बनी?
(A) डच ईस्ट इंडिया कंपनी
(B) पुर्तगाली
(C) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी
(D) फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी

44. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस युद्ध में भारत में फ्रांसीसियों पर निर्णायक विजय प्राप्त की, जिससे उपमहाद्वीप में फ्रांसीसी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं का प्रभावी रूप से अंत हो गया?
(A) प्लासी का युद्ध (1757)
(B) वांडीवाश का युद्ध (1760)
(C) बक्सर का युद्ध (1764)
(D) श्रीरंगपटनम का युद्ध (1799)

45. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) पुर्तगाली, अंग्रेज, डच, फ्रांसीसी
(B) पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी
(C) डच, पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रांसीसी
(D) पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी, अंग्रेज

46. प्लासी के युद्ध (1757) को प्रायः भारत में ब्रिटिश राजनीतिक प्रभुत्व की शुरुआत माना जाता है। इस युद्ध में अपने सेनापति मीर जाफर के विश्वासघात के कारण पराजित होने वाला बंगाल का नवाब कौन था?
(A) अलीवर्दी खान
(B) मीर कासिम
(C) सिराजुद्दौला
(D) शुजाउद्दौला

NODIA

47. 1764 के बक्सर के युद्ध के बाद, इलाहाबाद की संधि (1765) पर हस्ताक्षर किए गए। ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए इस संधि का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(A) उन्होंने संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में कच्चे कपास के व्यापार का अनन्य और अप्रतिबंधित व्यावसायिक एकाधिकार अधिकार प्राप्त कर लिया।
(B) उन्हें मराठा साम्राज्य के सभी प्रादेशिक क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण और सैन्य शासन प्रदान किया गया।
(C) उन्होंने अपनी इच्छानुसार तत्कालीन मुगल सम्राट को नियुक्त करने, नियंत्रित करने और हटाने का पूर्ण राजनीतिक अधिकार प्राप्त कर लिया।
(D) उन्होंने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्राप्त कर लिए।

48. लॉर्ड डलहौजी ने ब्रिटिश क्षेत्रों का तेजी से विस्तार करने के लिए 'व्यपगत का सिद्धांत' लागू किया। इस नीति के तहत 1848 में विलय किया जाने वाला पहला भारतीय राज्य कौन-सा था?
(A) झांसी (B) अवध
(C) सतारा (D) नागपुर

49. 'सहायक संधि' लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा अपनाई गई एक आक्रामक साम्राज्यवादी नीति थी। इस संधि में प्रवेश करने वाले भारतीय शासक पर निम्नलिखित में से कौन-सी मानक शर्त नहीं लादी गई थी?
(A) मित्र भारतीय शासक पूरी तरह से अपने वित्तीय खर्च पर अपने क्षेत्र के भीतर एक ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी को स्थायी रूप से बनाए रखने के लिए बाध्य था।
(B) शासक को ईसाई धर्म अपनाने की आवश्यकता थी।
(C) शासक को अपनी सेना या नागरिक दरबार में सेवा देने वाले सभी गैर-ब्रिटिश यूरोपीय अधिकारियों और पेशेवरों को तुरंत निष्कासित करना अनिवार्य था।
(D) शासक को अपनी बाहरी विदेश नीति और राजनयिक संबंधों पर सभी स्वतंत्र नियंत्रण को सीधे अंग्रेजों को सौंपने के लिए मजबूर किया गया था।

50. 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश भू-राजस्व प्रणालियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्थायी बंदोबस्त लॉर्ड कॉर्नवालिस द्वारा बंगाल और बिहार में शुरु किया गया था।
II. रैयतवाड़ी व्यवस्था के तहत, राजस्व बंदोबस्त सीधे व्यक्तिगत किसानों के साथ किया जाता था।
III. महालवाड़ी व्यवस्था ने राजस्व भुगतान के लिए संपूर्ण ग्राम समुदाय या 'महाल' को जिम्मेदार माना।
IV. जमींदारी व्यवस्था ने जमींदार द्वारा किसान से वसूले जा सकने वाले लगान की राशि को कड़ाई से सीमित कर दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

51. 19वीं शताब्दी के दौरान भारत में अंग्रेजों की आर्थिक नीति की भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा भारी आलोचना की गई थी। 'धन के निष्कासन' का सिद्धांत प्रस्तुत करते हुए प्रसिद्ध पुस्तक "पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रुल इन इंडिया" किसने लिखी थी?
(A) दादाभाई नौरोजी
(B) आर.सी. दत्त
(C) गोपाल कृष्ण गोखले
(D) बदरुद्दीन तैयबजी

52. राजा राममोहन राय के निरंतर अभियान के कारण 1829 में कौन-सा महत्त्वपूर्ण सामाजिक सुधार अधिनियम पारित किया गया था?
(A) हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
(B) बाल विवाह निरोधक अधिनियम
(C) सती प्रथा का उन्मूलन
(D) कन्या भ्रूणहत्या निवारण अधिनियम

53. 1857 के विद्रोह में उत्तर और मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों से सक्रिय भागीदारी देखी गई। कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था?
(A) नाना साहेब
(B) बेगम हजरत महल
(C) कुंवर सिंह
(D) रानी लक्ष्मीबाई

54. 1857 के विद्रोह के भारत के लिए दूरगामी प्रशासनिक परिणाम हुए। भारत सरकार अधिनियम 1858 के माध्यम से निम्नलिखित में से कौन-सा परिवर्तन तुरंत लागू किया गया था?
(A) ब्रिटिश भारत के सभी प्रांतों में पूर्ण प्रांतीय स्वायत्तता की तत्काल शुरुआत और पूर्ण कार्यान्वयन।
(B) संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप से सभी ब्रिटिश सैन्य रेजीमेंटों और सैन्य बलों की पूर्ण और तत्काल वापसी।
(C) देशी नागरिकों के लिए समान राजनीतिक प्रतिनिधित्व वाली एक पूर्ण संप्रभु भारतीय राष्ट्रीय संसद का निर्माण।
(D) शासन व्यवस्था का ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को स्थानांतरण।

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने भारतीयों के आंतरिक धार्मिक और सामाजिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप की नीति का पालन किया।
कारण (R) : उन्होंने महसूस किया कि आक्रामक सामाजिक सुधार और ईसाई मिशनरी गतिविधियां सैनिकों और रुढ़िवादी वर्गों के बीच व्यापक असंतोष का एक प्रमुख कारण थीं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

56. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की औपचारिक स्थापना 1885 में हुई थी। इसका पहला अधिवेशन कहाँ आयोजित किया गया था, और इसके पहले अध्यक्ष कौन थे?
(A) कलकत्ता, सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(B) मद्रास, बदरुद्दीन तैयबजी
(C) बंबई, व्योमेश चंद्र बनर्जी
(D) इलाहाबाद, जॉर्ज यूल

57. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर नरमपंथियों और गरमपंथियों के बीच वैचारिक विभाजन एक औपचारिक विभाजन में परिणत हुआ। यह विभाजन किस वर्ष और किस अधिवेशन में हुआ था?
(A) 1905, बनारस अधिवेशन
(B) 1906, कलकत्ता अधिवेशन
(C) 1916, लखनऊ अधिवेशन
(D) 1907, सूरत अधिवेशन

58. 1905 में प्रशासनिक सुविधा के नाम पर बंगाल का विभाजन लागू किया गया था, यद्यपि इसका वास्तविक उद्देश्य राष्ट्रवादी गढ़ को विभाजित करना था। इस कार्य के लिए कौन-सा वायसराय जिम्मेदार था?
(A) लॉर्ड कर्जन
(B) लॉर्ड मिंटो
(C) लॉर्ड हार्डिंग
(D) लॉर्ड चेम्सफोर्ड

59. स्वदेशी आंदोलन बंगाल विभाजन की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया थी। निम्नलिखित में से कौन-सा इस आंदोलन का एक प्रमुख लक्षण नहीं था?
(A) आयातित विदेशी निर्मित वस्तुओं, विलासिता की वस्तुओं और ब्रिटिश कपड़ों के बड़े पैमाने पर बहिष्कार का आयोजन।
(B) सैन्य बैरकों पर व्यापक सशस्त्र हमले।
(C) स्वदेशी भारतीय आर्थिक उद्यमों और राष्ट्रीय शैक्षणिक

Click Here to Buy book on Amazon

संस्थानों को बढ़ावा देने पर अत्यधिक बल देना।
(D) जनता को राजनीतिक रूप से संगठित करने के लिए प्रभावी सार्वजनिक मंचों के रूप में पारंपरिक सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सवों का उपयोग करना।

60. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : किसान/जनजातीय आंदोलन
P. संताल विद्रोह
Q. मुंडा उलगुलान
R. नील विद्रोह
S. बिजोलिया किसान आंदोलन
सूची II : प्रमुख नेता/क्षेत्र
1. राजस्थान
2. दिगंबर विश्वास और विष्णु विश्वास
3. सिद्धू और कान्हू
4. बिरसा मुंडा
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

61. प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष में होम रूल लीग आंदोलन की शुरुआत देखी गई। निम्नलिखित में से किसने दो मुख्य होम रूल लीगों की स्थापना की थी?
(A) बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट
(B) महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू
(C) सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह
(D) लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल

62. जलियांवाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 को हुआ था। किन दो प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में एक बड़ी भीड़ शांतिपूर्वक एकत्र हुई थी?
(A) आदरणीय राष्ट्रीय नेता महात्मा गांधी और सरदार वल्लभभाई पटेल
(B) प्रमुख पंजाबी राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह
(C) डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल
(D) क्रांतिकारी नेता भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त

63. असहयोग आंदोलन को 1922 में महात्मा गांधी द्वारा अचानक वापस ले लिया गया था। इस निर्णय का प्रत्यक्ष कारण क्या था?
(A) नई दिल्ली में ऐतिहासिक कूटनीतिक गांधी-इरविन समझौते पर औपचारिक हस्ताक्षर।
(B) खिलाफत आंदोलन का पूर्ण पतन और अंतिम राजनीतिक विफलता।
(C) जवाहरलाल नेहरू जैसे प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं की अचानक गिरफ्तारी और कारावास।
(D) चौरी चौरा में हुई हिंसक भीड़ की घटना।

64. असहयोग आंदोलन के स्थगन के बाद, नेताओं के एक समूह ने सरकार को भीतर से बाधित करने के लिए विधान परिषदों में प्रवेश करने की वकालत की। इसके परिणामस्वरूप स्वराज पार्टी का गठन किसके द्वारा किया गया?
(A) महात्मा गांधी और सरदार पटेल
(B) सुभाष चंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरू
(C) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू
(D) डॉ. बी.आर. अंबेडकर और मौलाना आजाद

NODIA

65. सविनय अवज्ञा आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी शुरुआत मार्च 1930 में गांधीजी की ऐतिहासिक दांडी यात्रा से हुई थी।
II. इसका मुख्य एजेंडा नमक कानून को तोड़ना था, क्योंकि नमक को एक बुनियादी मानवीय अधिकार माना जाता था।
III. पिछले आंदोलनों की तुलना में इसमें महिलाओं की भागीदारी बहुत कम देखी गई।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

66. उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, 'खुदाई खिदमतगार' (ईश्वर के सेवक) ने एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अहिंसक संगठन का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था?
(A) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(B) सैयद अहमद खान
(C) मोहम्मद अली जिन्ना
(D) खान अब्दुल गफ्फार खान

67. ब्रिटिश सरकार ने भारत में संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने के लिए लंदन में तीन गोलमेज सम्मेलन बुलाए। महात्मा गांधी ने कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में इनमें से किस सम्मेलन में भाग लिया था?
(A) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
(B) प्रथम गोलमेज सम्मेलन
(C) तृतीय गोलमेज सम्मेलन
(D) उन्होंने प्रथम और द्वितीय दोनों सम्मेलनों में भाग लिया

68. 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड द्वारा घोषित 'सांप्रदायिक पंचाट' का मुख्य प्रावधान क्या था?
(A) इसने ब्रिटिश भारत के सभी प्रांतों में पूर्ण और तत्काल संवैधानिक प्रांतीय स्वायत्तता प्रदान की।
(B) इसने द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद भारत को पूर्ण डोमिनियन स्टेटस का आधिकारिक वादा किया।
(C) दलित वर्गों और अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र।
(D) इसने ब्रिटिश भारतीय प्रांतों और संप्रभु देशी रियासतों को मिलाकर एक अखिल भारतीय राजनीतिक संघ का प्रस्ताव रखा।

69. द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने से भारतीय राजनीति गंभीर रूप से प्रभावित हुई। 1937 के चुनावों के बाद प्रांतों में बनी कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने 1939 में सामूहिक रूप से इस्तीफा दे दिया। इसका प्राथमिक कारण क्या था?
(A) परामर्श के बिना द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को एकतरफा शामिल करना।
(B) ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रशासन ने देशी भारतीय सिविल सेवकों के मूल वेतन को बढ़ाने से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया था।
(C) मुस्लिम लीग ने सभी कांग्रेस मंत्रिमंडलों के खिलाफ एक बाध्यकारी राजनीतिक अविश्वास प्रस्ताव सफलतापूर्वक आयोजित और पारित किया।
(D) ब्रिटिश सरकार ने प्रांतीय विधान सभाओं के भीतर देशभक्ति गीत वंदे मातरम गाने पर औपचारिक रूप से प्रतिबंध लगा दिया।

70. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. साइमन कमीशन का भारत आगमन
2. चौरी चौरा की घटना
3. कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (पूर्ण स्वराज प्रस्ताव)
4. दांडी मार्च
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 1, 3, 2, 4

71. 'भारत छोड़ो आंदोलन' 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से आए किस ब्रिटिश प्रस्ताव की विफलता के तुरंत बाद शुरू किया गया था?
(A) अगस्त प्रस्ताव
(B) क्रिप्स मिशन
(C) कैबिनेट मिशन योजना
(D) वेवेल योजना

72. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान आम जनता तक संदेश प्रसारित करने के लिए 'कांग्रेस रेडियो' नामक एक गुप्त रेडियो स्टेशन संचालित किया गया था। इस गुप्त रेडियो को चलाने से जुड़ी सबसे प्रमुख हस्ती कौन थी?
(A) अरुणा आसफ अली
(B) सरोजिनी नायडू
(C) उषा मेहता
(D) सुचेता कृपलानी

73. सुभाष चंद्र बोस ने अंग्रेजों से लड़ने के लिए भारतीय राष्ट्रीय सेना (आजाद हिंद फौज) का पुनर्गठन किया। आजाद हिंद फौज में महिलाओं की एक समर्पित रेजीमेंट थी, जिसका नाम किसके नाम पर रखा गया था?
(A) बेगम हजरत महल
(B) रानी गिडालू
(C) अहिल्याबाई होल्कर
(D) झांसी की रानी

74. 1946 के कैबिनेट मिशन ने भारत के लिए एक जटिल संवैधानिक योजना का प्रस्ताव रखा। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इसकी मूल सिफारिश को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) रक्षा, विदेश मामले और संचार को संभालने वाला एक सीमित शक्तियों वाला केंद्रीय संघ।
(B) इसने पाकिस्तान के संप्रभु राज्य के तत्काल निर्माण की मुस्लिम लीग की मांग को स्पष्ट रूप से स्वीकार और समर्थित किया।
(C) इसने धर्म के आधार पर बंगाल और पंजाब के प्रमुख प्रांतों के तत्काल प्रादेशिक विभाजन की सिफारिश की।
(D) इसने प्रस्ताव दिया कि देशी रियासतों पर ब्रिटिश क्राउन की सर्वोपरिता सीधे उत्तराधिकारी सरकार को स्थानांतरित कर दी जाएगी।

75. भारत के विभाजन और स्वतंत्रता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. माउंटबेटन योजना (3 जून योजना) ने भारत को दो डोमिनियनों में विभाजित करने की रूपरेखा तैयार की।
II. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 को माउंटबेटन योजना को कानूनी रूप देने के लिए ब्रिटिश संसद द्वारा पारित किया गया था।
III. सीमाओं के निर्धारण का कार्य सौंपे गए सीमा आयोग की अध्यक्षता लॉर्ड इस्मे ने की थी।
IV. देशी रियासतों को या तो भारत या पाकिस्तान में शामिल होने, या स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

76. भारत के विभाजन के निर्णय के बाद, भारतीय संघ में 500 से अधिक देशी रियासतों का एकीकरण किसके द्वारा कुशलतापूर्वक संपन्न किया गया था?
(A) जवाहरलाल नेहरु और वी.पी. मेनन
(B) सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन
(C) लॉर्ड माउंटबेटन और सी. राजगोपालाचारी
(D) डॉ. बी.आर. अंबेडकर और सरदार वल्लभभाई पटेल

77. भारत की संविधान सभा, जिसने संविधान का मसौदा तैयार किया था, ने शुरू में 1946 में किसके द्वारा तैयार की गई योजना के आधार पर अपनी बैठकें आयोजित की थीं?
(A) कैबिनेट मिशन
(B) क्रिप्स मिशन
(C) वेवेल योजना
(D) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम

78. किस महत्त्वपूर्ण ब्रिटिश संसदीय अधिनियम ने बंगाल के गवर्नर को 'बंगाल का गवर्नर-जनरल' नामित करके और कलकत्ता में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना करके भारत में केंद्रीकरण की प्रक्रिया शुरु की थी?
(A) 1813 का चार्टर एक्ट

Downloaded from www.pdf.tube

(B) 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट
(C) 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट
(D) 1833 का चार्टर एक्ट

79. किस अधिनियम के तहत भारत के साथ व्यापार में ईस्ट इंडिया कंपनी के एकाधिकार को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया था (चाय के व्यापार और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर)?
(A) 1793 का चार्टर एक्ट
(B) 1833 का चार्टर एक्ट
(C) 1853 का चार्टर एक्ट
(D) 1813 का चार्टर एक्ट

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : 1909 के भारतीय परिषद अधिनियम (मार्ले-मिंटो सुधार) ने भारत में विभाजन के बीज बोए।
कारण (R) : इसने धर्म-आधारित राजनीतिक प्रतिनिधित्व की अवधारणा को मान्यता देते हुए मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र की प्रणाली शुरू की।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

81. 'द्वैध शासन' की प्रणाली, जहां प्रांतीय विषयों को 'आरक्षित' और 'हस्तांतरित' सूचियों में विभाजित किया गया था, किसके द्वारा शुरू की गई थी?
(A) भारतीय परिषद अधिनियम, 1892
(B) भारत सरकार अधिनियम, 1919
(C) भारत सरकार अधिनियम, 1909
(D) भारत सरकार अधिनियम, 1935

82. भारतीय भूमि पर लड़े गए निम्नलिखित ऐतिहासिक युद्धों में से कौन-सा अपने वर्ष के साथ गलत सुमेलित है?
(A) तराइन का प्रथम युद्ध - 1191
(B) हल्दीघाटी का युद्ध - 1576
(C) तालीकोटा का युद्ध - 1565
(D) खानवा का युद्ध - 1530

83. भारत में यूरोपीय औपनिवेशिक विस्तार के संदर्भ में वांडीवाश का युद्ध एक महत्त्वपूर्ण संघर्ष था। यह किस व्यापक युद्ध का एक हिस्सा था?
(A) तृतीय कर्नाटक युद्ध
(B) प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध
(C) द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध
(D) प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध

84. 'पुरंदर की संधि' (1665) पर छत्रपति शिवाजी और मुगल सम्राट औरंगजेब के किस प्रतिनिधि के बीच हस्ताक्षर किए गए थे?
(A) सूबेदार शाइस्ता खान
(B) जनरल अफजल खान
(C) राजा जयसिंह प्रथम
(D) शाहजादा शाह आलम मुअज्जम

NODIA

85. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : महत्त्वपूर्ण संधियां
P. सालबाई की संधि
Q. श्रीरंगपटनम की संधि
R. यांडबू की संधि
S. बसीन की संधि
सूची II : संबंधित युद्ध
1. तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध
2. प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध
3. द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध
4. प्रथम आंग्ल-बर्मी युद्ध
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

86. प्राचीन काल के प्रमुख व्यक्तित्वों में से किसने संस्कृत व्याकरण पर एक मूलभूत ग्रंथ 'महाभाष्य' लिखा था?
(A) पाणिनि
(B) अमरसिंह
(C) भरत मुनि
(D) पतंजलि

87. मध्यकाल के दौरान, सिख संप्रदाय की स्थापना करने वाले और सभी मनुष्यों की समानता पर बल देने वाले दूरदर्शी संत कौन थे?
(A) गुरु अंगद
(B) गुरु नानक
(C) गुरु अर्जुन देव
(D) गुरु गोविंद सिंह

88. स्वामी विवेकानंद ने 1893 में विश्व धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण के माध्यम से हिंदू धर्म की वैश्विक धारणा पर गहरा प्रभाव डाला। यह कार्यक्रम कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) लंदन
(B) पेरिस
(C) शिकागो
(D) न्यूयॉर्क

89. डॉ. बी.आर. अंबेडकर आधुनिक भारतीय इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। निम्नलिखित में से किस राजनीतिक संगठन की स्थापना उनके द्वारा नहीं की गई थी?
(A) इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी

(B) ऑल इंडिया शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन
(C) बहिष्कृत हितकारिणी सभा
(D) हरिजन सेवक संघ

90. भारत के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भगत सिंह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) से जुड़े थे।
II. सूर्य सेन ने 1930 में प्रसिद्ध चटगांव शस्त्रागार छापे का नेतृत्व किया था।
III. अरबिंदो घोष 1947 में स्वतंत्रता तक एक सक्रिय क्रांतिकारी नेता बने रहे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

91. राजस्थान के इतिहास के संदर्भ में, '1818 की संधि' एक ऐसा मोड़ थी जहाँ राजपूत राज्यों ने किसकी सर्वोपरिता स्वीकार की थी?
(A) पेशवाओं के अधीन विस्तारवादी मराठा साम्राज्य
(B) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी
(C) मुगल सम्राट का सर्वोच्च अधिकार
(D) महाराजा रणजीत सिंह के अधीन संप्रभु सिख साम्राज्य

92. चित्तौड़गढ़ में स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना 'कीर्ति स्तंभ' (विजय स्तंभ) किस मध्यकालीन शासक द्वारा मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में बनवाया गया था?
(A) राणा सांगा
(B) राणा कुंभा
(C) महाराणा प्रताप
(D) राणा उदय सिंह

93. गुप्तोत्तर काल के दौरान, 'त्रिपक्षीय संघर्ष' रणनीतिक नगर कन्नौज के नियंत्रण के लिए एक लंबा संघर्ष था। इस संघर्ष में कौन-सी तीन प्रमुख शक्तियां शामिल थीं?
(A) प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट
(B) चोल, पांड्य और चेर के दक्षिणी राजवंश
(C) चालुक्य, पल्लव और राष्ट्रकूट की दक्कन शक्तियां
(D) परमार, चाहमान और सोलंकी के पश्चिमी राजवंश

94. प्राचीन भारत में व्यापारियों के संघों ने अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इन व्यापारी संघों के लिए आमतौर पर किस शब्द का प्रयोग किया जाता था?
(A) उर
(B) सभा
(C) श्रेणी
(D) समिति

95. भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम चरण के दौरान निम्नलिखित घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन-सा है?
(A) क्रिप्स मिशन, भारत छोड़ो आंदोलन, कैबिनेट मिशन, माउंटबेटन योजना
(B) भारत छोड़ो आंदोलन, क्रिप्स मिशन, माउंटबेटन योजना, कैबिनेट मिशन
(C) क्रिप्स मिशन, कैबिनेट मिशन, भारत छोड़ो आंदोलन, माउंटबेटन योजना
(D) कैबिनेट मिशन, क्रिप्स मिशन, भारत छोड़ो आंदोलन, माउंटबेटन योजना

96. प्राचीन भारतीय समाज में, पारंपरिक वैदिक व्यवस्था चार आश्रमों (जीवन के चरणों) को मान्यता देती थी। इन चरणों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास
(B) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यास, वानप्रस्थ
(C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
(D) वानप्रस्थ, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यास

97. एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर, जो दुनिया की सबसे बड़ी एकाश्म (एक ही पत्थर से तराशी गई) संरचना है, किस राजवंश के राजा द्वारा बनवाया गया था?
(A) पल्लव राजवंश
(B) राष्ट्रकूट
(C) चोल राजवंश
(D) बादामी चालुक्य राजवंश

98. मध्यकालीन भारतीय साहित्य में, 'पद्मावत' एक महाकाव्य है जो अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी का वर्णन करता है। इस ग्रंथ की रचना किसने की थी?
(A) सूफी कवि अमीर खुसरो
(B) दरबारी कवि चंदबरदाई
(C) भक्ति संत तुलसीदास
(D) मलिक मुहम्मद जायसी

99. शुरुआती राष्ट्रवादी नेताओं ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन से पहले कई संगठनों की स्थापना की थी। निम्नलिखित में से कौन 1876 में 'इंडियन एसोसिएशन' के संस्थापक थे?
(A) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(B) दादाभाई नौरोजी
(C) जस्टिस महादेव गोविंद रानाडे
(D) बदरुद्दीन तैयबजी

100. भारत सरकार अधिनियम 1935 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने प्रांतों और देशी रियासतों को मिलाकर एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव रखा।
II. इसने प्रांतीय द्वैध शासन को समाप्त कर दिया और प्रांतीय स्वायत्तता की शुरुआत की।
III. इसने केंद्र में द्वैध शासन लागू किया।
IV. इसने देश की मुद्रा और साख को नियंत्रित करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना का प्रावधान किया।

Click Here to Buy book on Flipkart

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I, II और III

(B) केवल II, III और IV

(C) केवल I, III और IV

(D) I, II, III और IV

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) राजतरंगिणी
कलहण द्वारा बारहवीं शताब्दी में रचित ग्रंथ राजतरंगिणी को कश्मीरी इतिहास का प्रामाणिक स्रोत माना जाता है। इसमें कश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शताब्दी तक के राजवंशों, राजाओं, सामाजिक परिस्थितियों और राजनीतिक घटनाओं का कालानुक्रमिक विवरण मिलता है। ऐतिहासिक घटनाओं को निष्पक्षता से प्रस्तुत करने की पद्धति के कारण इसे भारतीय ऐतिहासिक साहित्य में अद्वितीय स्थान प्राप्त है। यह एक महत्वपूर्ण धरोहर माना जाता है।

2. (D) जुते हुए खेत और अग्निवेदिकाओं के साक्ष्य
राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर स्थित कालीबंगा एक प्रमुख हड़प्पाकालीन स्थल है। इस स्थान की खुदाई से प्राक-हड़प्पा काल के जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो विश्व में कृषि के प्राचीनतम प्रमाणों में से एक हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से अनेक अग्निवेदिकाएँ भी मिली हैं, जो धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञ परंपरा की ओर संकेत करती हैं। यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

3. (A) प्रत्येक प्रमुख शहर के केंद्र में बड़े विशाल पत्थरों के मंदिर स्थित थे।
सिंधु घाटी सभ्यता अपनी उत्कृष्ट नगर नियोजन व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें सड़कें समकोण पर काटती थीं। इस ग्रिड प्रणाली के साथ जल निकासी की व्यवस्था और पकी ईंटों से बने मकान इस सभ्यता की पहचान थे। नगर प्रायः दो भागों पश्चिमी दुर्ग तथा निचले नगर में विभाजित होते थे। इस सभ्यता में किसी भी विशाल मंदिर के अवशेष प्राप्त नहीं हुए हैं।

4. (C) जन
ऋग्वैदिक काल में समाज की राजनीतिक संरचना विभिन्न स्तरों में संगठित थी। इसमें सबसे छोटी इकाई कुल अथवा परिवार थी जिसका प्रमुख कुलप कहलाता था। कई कुलों से मिलकर ग्राम बनता था जिसका प्रमुख ग्रामणी होता था। कई ग्रामों के समूह को विश कहते थे। अनेक विशों से राजनीतिक व्यवस्था की सर्वोच्च इकाई जन का निर्माण होता था, जिसका शासक गोपा अथवा राजा कहलाता था।

5. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
उत्तर वैदिक काल में लोहे के उपकरणों के उपयोग ने भारतीय आर्थिक संरचना में परिवर्तन ला दिया। लोहे की कुल्हाड़ियों की सहायता से गंगा के मैदानी इलाकों के घने जंगलों को साफ करना आसान हो गया। इसके फलस्वरुप कृषि भूमि का विस्तार हुआ और पशुचारण पर आधारित जीवन शैली स्थाई कृषि अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई। इस परिवर्तन ने नए राज्यों की नींव रखी।

6. (D) विराटनगर
छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सोलह महाजनपदों में से मत्स्य महाजनपद वर्तमान राजस्थान के जयपुर, अलवर और भरतपुर क्षेत्रों में विस्तृत था। इस महाजनपद की राजधानी विराटनगर थी जिसे वर्तमान में बैराठ के नाम से जाना जाता है। महाभारत काल में पांडवों ने अपने अज्ञातवास का समय इसी राजा विराट के दरबार में व्यतीत किया था। यह बौद्ध संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी रहा।

7. (B) उदयन
हर्यक वंश के शासक उदयन ने मगध साम्राज्य की राजधानी को राजगृह से स्थानांतरित करने के उद्देश्य से गंगा और सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नगर की स्थापना की थी। उसने रणनीतिक सुरक्षा एवं व्यापारिक सुगमता हेतु यहाँ एक जलदुर्ग बनवाया। पाटलिपुत्र आगे चलकर मौर्य तथा गुप्त जैसे साम्राज्यों की मुख्य राजधानी बना और प्राचीन भारत का एक अत्यंत प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र बन गया।

8. (C) सशर्त कथन और सापेक्ष सत्य का सिद्धांत
स्याद्वाद जैन दर्शन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं मौलिक ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है। इसे अनेकांतवाद का व्यावहारिक रुप माना जाता है, जिसके अनुसार किसी भी वस्तु के अनेक पहलू होते हैं और ज्ञान सीमित तथा सापेक्षी होता है। स्याद्वाद का अर्थ किसी दृष्टिकोण से सत्य होना है। यह महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाता है कि प्रत्येक निर्णय को निरपेक्ष न मानकर सापेक्ष दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए।

9. (D) कनिष्क
प्रथम शताब्दी ईस्वी में कुषाण वंश के प्रसिद्ध शासक कनिष्क के शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर के कुंडलवन में किया गया था। इस संगीति की अध्यक्षता वसुमित्र ने की थी और अश्वघोष इसके उपाध्यक्ष थे। इसी सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो संप्रदायों हीनयान और महायान में विभाजित हो गया। कनिष्क ने महायान शाखा के प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

10. (A) केवल I और II
गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों में वेदों की प्रामाणिकता और यज्ञीय कर्मकांडों का खंडन किया था। उन्होंने जनसामान्य तक अपने विचारों को पहुँचाने के लिए तत्कालीन लोकभाषा पाली को माध्यम बनाया। बोधिसत्व की अवधारणा हीनयान की न होकर महायान बौद्ध धर्म का केंद्रीय विचार है, जिसमें सभी जीवों के कल्याण हेतु करुणा पर बल दिया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

NODIA

11. (B) भाब्रू-बैराठ शिलालेख
राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित बैराठ से प्राप्त भाब्रू शिलालेख मौर्य सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म के प्रति निष्ठा का सबसे स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। इस शिलालेख में अशोक बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त इस अभिलेख में अशोक स्वयं को मगध का राजा संबोधित करते हैं। यह अभिलेख ऐतिहासिक है।

12. (C) 5-5 सदस्यों की 6 समितियाँ
चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आए यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में पाटलिपुत्र के उत्कृष्ट प्रशासन का विस्तृत वर्णन किया है। नगर का प्रशासन कुल 30 सदस्यों वाली एक नगर परिषद द्वारा संचालित होता था। यह परिषद 5-5 सदस्यों की 6 अलग-अलग समितियों में विभाजित थी। ये समितियाँ उद्योग, व्यापार, जन्म-मृत्यु पंजीकरण तथा कर वसूली का कार्य संभालती थीं।

13. (A) राजकीय कृषि भूमि
कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित मौर्य प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत विभिन्न विभागों के लिए अध्यक्षों की नियुक्ति की जाती थी। इनमें सीताध्यक्ष राजकीय कृषि भूमि और कृषि गतिविधियों का सर्वोच्च प्रभारी अधिकारी होता था। उसका मुख्य कार्य राज्य की भूमि पर खेती करवाना, सिंचाई व्यवस्था का प्रबंधन करना तथा कृषि उत्पादन से प्राप्त राजस्व का हिसाब रखना होता था। यह एक प्रमुख पद था।

14. (C) कुषाण
यद्यपि भारत में सबसे पहले सोने के सिक्के चलाने का श्रेय हिंद-यवन शासकों को दिया जाता है, परंतु भारत में बड़े पैमाने पर और नियमित रूप से शुद्ध स्वर्ण सिक्के जारी करने का श्रेय कुषाण राजवंश को प्राप्त है। कुषाण सम्राट विम कडफिसस ने पहली बार भारी मात्रा में स्वर्ण मुद्राएँ जारी कीं, जिसके बाद कनिष्क ने व्यापार को बढ़ावा दिया।

15. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
मौर्योत्तर काल में भारत में कई राजवंशों का उदय हुआ। अंतिम मौर्य सम्राट की हत्या करके पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना की। कण्व वंश की स्थापना वासुदेव ने की थी। सातवाहन वंश का संस्थापक सिमुक था जिसने दक्कन क्षेत्र में मजबूत नींव रखी। भारत में कुषाण राजवंश की स्थापना कुजुल कडफिसस द्वारा की गई थी। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य है।

16. (C) ब्राह्मणों को बड़े पैमाने पर दिए गए प्रशासनिक भूमि दानों ने प्रशासनिक विकेंद्रीकरण को गति दी।
गुप्त साम्राज्य में शासन व्यवस्था का स्वरूप अत्यधिक केंद्रीकृत न होकर विकेंद्रीकृत था। गुप्त शासकों द्वारा धार्मिक तथा प्रशासनिक सेवाओं के बदले ब्राह्मणों तथा अधिकारियों को बड़े पैमाने पर कर-मुक्त भूमि दान दी गई। इन भूमि दानों के साथ ही उन्हें प्रशासनिक तथा न्यायिक अधिकार भी प्रदान किए गए, जिससे केंद्रीय नियंत्रण शिथिल हुआ और प्रशासनिक विकेंद्रीकरण को गति मिली।

17. (B) हरिषेण
प्रयाग प्रशस्ति की रचना गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा की गई थी। यह प्रशस्ति संस्कृत भाषा में चंपू शैली तथा ब्राह्मी लिपि में लिखी गई है। इसमें समुद्रगुप्त के चरित्र, उसकी दिग्विजय की नीतियों, सैन्य अभियानों और विभिन्न राजाओं पर उसकी विजयों का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो गुप्तकालीन इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

18. (D) आर्यभट्ट
गुप्त काल के महान खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ आर्यभटीय में यह वैज्ञानिक सिद्धांत प्रतिपादित किया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है। उन्होंने ग्रहण के सही खगोलीय कारणों की व्याख्या की तथा पाई का मान निकाला। शून्य के प्रयोग तथा दशमलव प्रणाली में उनका योगदान भारतीय विज्ञान का एक स्वर्णिम अध्याय माना जाता है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण खोज थी।

19. (A) कन्नौज
वर्द्धन राजवंश के शासक हर्षवर्धन ने अपनी बहन राज्यश्री की रक्षा करने के उपरांत अपनी राजधानी को थानेसर से स्थानांतरित करके कन्नौज में स्थापित किया था। गंगा-यमुना दोआब के केंद्र में स्थित होने के कारण कन्नौज की रणनीतिक स्थिति सुदृढ़ थी। इसके पश्चात् कन्नौज उत्तर भारत की राजनीतिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र बन गया और समृद्धि प्राप्त की। यह एक महत्वपूर्ण निर्णय था।

20. (A) 2, 4, 1, 3
मौर्य साम्राज्य के पतन के उपरांत उत्तर-पश्चिम से विदेशी आक्रमण हुए। सबसे पहले हिंद-यवन भारत आए। इसके पश्चात् शक राजवंश का आगमन हुआ। पहली शताब्दी ईस्वी में कुषाणों ने विशाल साम्राज्य स्थापित किया। अंततः पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में गुप्त काल के दौरान हुणों का भारत पर आक्रमण हुआ। यह कालानुक्रमिक क्रम भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है।

21. (A) चोल
दक्षिण भारत का चोल राजवंश अपनी स्वायत्त स्थानीय स्वशासन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है। उत्तरमेरुर से प्राप्त अभिलेखों में चोलकालीन ग्राम सभाओं के कामकाज, समितियों तथा प्रतिनिधियों के चुनाव की योग्यता एवं अयोग्यता का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह व्यवस्था भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों तथा पंचायती राज का एक अत्यंत उत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह प्रणाली अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई।

22. (D) चोल - मदुरै
दक्षिण भारत के इतिहास में राजवंशों और उनकी राजधानियों का महत्व रहा है। पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम, राष्ट्रकूटों की मान्यखेत तथा चालुक्यों की वातापी थी। परंतु चोल राजवंश की मुख्य राजधानी तंजावुर थी। मदुरै चोलों की नहीं बल्कि पांड्य राजवंश की प्रसिद्ध राजधानी थी, जो प्राचीन काल में व्यापार एवं तमिल संगम साहित्य का प्रमुख केंद्र मानी जाती थी। यह तथ्य महत्वपूर्ण है।

Downloaded from www.pdf.tube

23. (B) मुहम्मद बिन कासिम
सन 712 ईस्वी में उमय्यद खिलाफत के सेनापति मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर एक सफल सैन्य अभियान का नेतृत्व किया। उसने रावर के युद्ध में सिंध के शासक राजा दाहिर को पराजित करके सिंध तथा मुल्तान पर विजय प्राप्त की। यह घटना भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामिक सत्ता के शुरुआती आगमन को चिह्नित करती है। इसके पश्चात् यहाँ परिवर्तन प्रारंभ हुए।

24. (C) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है।
महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य स्थापित करना नहीं बल्कि मंदिरों की अपार धन-संपत्ति को लूटना था। इसके विपरीत, मुहम्मद गोरी का उद्देश्य भारत में स्थाई मुस्लिम शासन की स्थापना करना था। उसने 1192 में तराइन के दूसरे युद्ध में सफलता प्राप्त करके उत्तर भारत में तुर्की शासन की नींव रखी। यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

25. (B) केवल I, III और IV
दिल्ली सल्तनत में इक्ता प्रणाली भू-राजस्व संग्रह तथा सैन्य सेवा से जुड़ी थी। बलबन ने सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा हेतु सिजदा और पाबोस की परंपराएँ शुरू कीं तथा अलाउद्दीन खिलजी ने मूल्य नियंत्रण हेतु बाजार सुधार लागू किए। परंतु दीवान-ए-कोही कृषि विभाग था, जबकि दीवान-ए-अर्ज सैन्य विभाग था जिसकी स्थापना बलबन ने की थी। यह अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ध्यान देने योग्य है।

26. (A) वह भूमि जिसका राजस्व सीधे सुल्तान के खजाने के लिए आरक्षित था
दिल्ली सल्तनत में भू-राजस्व प्रशासन में खालिसा भूमि का विशेष स्थान था। खालिसा वह भूमि होती थी जो सीधे सुल्तान के प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण में आती थी। इस भूमि से प्राप्त भू-राजस्व सीधे केंद्रीय शाही खजाने में जमा किया जाता था। इसका उपयोग सुल्तान के व्यक्तिगत व्यय तथा शाही सेना के रख-रखाव में किया जाता था। यह व्यवस्था अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

27. (B) रजिया सुल्तान
इल्तुतमिश की पुत्री रजिया सुल्तान दिल्ली सल्तनत की पहली और एकमात्र महिला शासक थीं। उन्होंने 1236 से 1240 ईस्वी तक कुशलतापूर्वक शासन किया। उन्होंने पर्दा प्रथा का त्याग किया और पुरुषों के वस्त्र पहनकर दरबार संचालित किया। कट्टर तुर्क अमीर वर्ग ने उनके विरुद्ध निरंतर षड्यंत्र किए जिसके कारण अंततः उनकी हत्या कर दी गई। यह इतिहास की प्रमुख घटना है।

28. (B) मुहम्मद बिन तुगलक
मुहम्मद बिन तुगलक को अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिए जाना जाता है। उसने बेहतर नियंत्रण के उद्देश्य से अपनी राजधानी को दिल्ली से देवगिरि स्थानांतरित किया तथा उसका नाम दौलताबाद रखा। इसके अतिरिक्त उसने चाँदी की कमी दूर करने हेतु तांबे और पीतल की सांकेतिक मुद्रा चलाई, जो जाली सिक्कों के कारण विफल साबित हुई। यह मध्यकालीन इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी।

29. (A) रामानुजाचार्य
महान वैष्णव संत रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। इस दर्शन के अनुसार जीव और जगत ब्रह्म से पृथक होते हुए भी उसी पर आश्रित हैं। उन्होंने भक्ति मार्ग को ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया और जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उनके विचारों ने मध्यकालीन भक्ति आंदोलन को दिशा प्रदान की तथा जनमानस को प्रभावित किया। यह अत्यंत महत्वपूर्ण दर्शन है।

30. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
भारत में चिश्ती संप्रदाय के सूफी संतों ने सादा जीवन तथा जनसेवा पर बल दिया। वे राजनीतिक सत्ता, शाही दरबार और जागीरों से दूर रहते थे। उनका मानना था कि सुल्तानों तथा सत्ताधारियों के साथ संपर्क रखने से संत की आध्यात्मिक पवित्रता नष्ट हो जाती है और वे ईश्वर भक्ति के मुख्य मार्ग से भटक सकते हैं। यह उनका मूल विचार था।

31. (D) इब्राहिम लोदी की पराजय हुई और बाबर द्वारा मुगल शासन की स्थापना हुई।
1526 में लड़े गए पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इब्राहिम लोदी को पराजित किया। बाबर ने इस युद्ध में तोपखाने का कुशल प्रयोग किया था। इब्राहिम लोदी के मारे जाने से सल्तनत का अंत हो गया और भारत में मुग़ल साम्राज्य की नींव पड़ी, जिसने देश के इतिहास को अत्यधिक प्रभावित किया। यह एक युगांतरकारी घटना थी।

32. (C) चांदी का 'रुपया' चलाना और ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण करना।
शेरशाह सूरी को उनके कुशल प्रशासनिक और आर्थिक सुधारों के लिए जाना जाता है। उन्होंने मानक वजन वाला चांदी का सिक्का चलाया जिसे रुपया कहा गया, जो आगे की मौद्रिक प्रणाली का आधार बना। इसके साथ ही व्यापार सुगम बनाने हेतु उन्होंने ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण करवाया तथा अनेक सरायों का निर्माण भी कराया। यह अत्यंत प्रशंसनीय कार्य था।

33. (B) बनाए रखे जाने वाले घुड़सवारों और घोड़ों की आवश्यक संख्या।
अकबर द्वारा शुरू की गई मनसबदारी प्रणाली सैन्य प्रशासन का आधार थी। इसमें मनसबदार के दो पद होते थे: जात और सवार। जात शब्द अधिकारी की व्यक्तिगत रैंक और वेतन को दर्शाता था, जबकि सवार शब्द उस संख्या को दर्शाता था जितने घुड़सवार और घोड़े मनसबदार को सेवा हेतु रखने होते थे। यह व्यवस्था प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत संगठित मानी जाती थी।

34. (D) विद्वानों के बीच अंतर-धार्मिक और दार्शनिक चर्चाओं को सुगम बनाना।
मुगल सम्राट अकबर ने 1575 ईस्वी में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना का निर्माण कराया था। प्रारंभ में यहाँ केवल मुस्लिम विद्वान आते थे, परंतु बाद में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित किया गया। इन दार्शनिक चर्चाओं का उद्देश्य सत्य की खोज और अंतर-धार्मिक समझ को बढ़ावा देना था। इसी

NODIA

से प्रेरित होकर उसने नवीन विचार प्रस्तुत किए। यह एक अनूठी पहल थी।

35. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मुगल काल में प्रशासनिक ढांचा विभिन्न अधिकारियों में विभाजित था। वजीर साम्राज्य का वित्त प्रमुख होता था। मीर बख्शी सैन्य प्रशासन तथा गुप्तचर विभाग का प्रमुख था। मीर सामां शाही घराने और कारखानों का प्रभारी था। काजी-उल-कुजात साम्राज्य का मुख्य न्यायाधीश होता था जो न्याय प्रदान करता था। यह पूरी प्रणाली अत्यंत सुव्यवस्थित एवं प्रभावी रूप से कार्य करती थी।

36. (C) बीजापुर और गोलकुंडा की दक्कन सल्तनतों का विलय।
सम्राट औरंगजेब की साम्राज्यवादी नीति के तहत दक्कन अभियानों को प्राथमिकता दी गई। उसने 1686 ईस्वी में बीजापुर तथा 1687 ईस्वी में गोलकुंडा का मुगल साम्राज्य में विलय किया। इसके विपरीत उसने पूर्व नियमों को बदलते हुए जजिया कर पुनः लागू किया और कला पर कड़ा प्रतिबंध लगाया। यह निर्णय उसके शासनकाल का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथा चर्चित पहलू ही माना जाता है।

37. (A) धर्मत का युद्ध
1658 में उज्जैन के निकट धर्मत का युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में औरंगजेब और मुराद की संयुक्त सेना का सामना शाही सेना से हुआ जिसका नेतृत्व मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह कर रहे थे। रणनीतिक गलतियों और भयंकर संघर्ष के बाद औरंगजेब ने विजय प्राप्त की। यह उत्तराधिकार के युद्ध का एक अत्यंत निर्णायक और महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

38. (D) मनसबदारों की बढ़ती संख्या को जागीर के रूप में आवंटित करने के लिए भूमि की भारी कमी।
मुगल साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण जागीरदारी संकट था। औरंगजेब के शासनकाल में मनसबदारों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई, परंतु उन्हें देने के लिए जागीरों की भारी कमी हो गई। जागीरों की इस कमी के कारण अधिकारियों में असंतोष फैला और राजस्व संग्रह प्रभावित हुआ, जिससे साम्राज्य का ढांचा कमजोर होता चला गया। यह एक बड़ा संकट था।

39. (B) हैदराबाद
मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने पर निजाम-उल-मुल्क आसफ जाह ने 1724 ईस्वी में हैदराबाद में स्वतंत्र असफजाही राज्य की स्थापना की। उसने शकरखेड़ा के युद्ध में विजय प्राप्त करके अपनी स्थिति मजबूत की और दक्कन में एक शक्तिशाली शासन स्थापित किया, जो लंबे समय तक अस्तित्व में रहा। यह इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है।

40. (A) केवल I और II
छत्रपति शिवाजी महाराज ने मराठा साम्राज्य के संचालन हेतु आठ मंत्रियों की एक परिषद गठित की थी जिसे अष्टप्रधान कहा जाता था। इसके अतिरिक्त मराठे पड़ोसी क्षेत्रों से सुरक्षा के बदले भू-राजस्व का एक-चौथाई हिस्सा चौथ कर के रूप में एकत्र करते थे। ये दोनों प्रावधान मराठा प्रशासनिक और वित्तीय प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ थे जिन्होंने राज्य के संचालन में भूमिका निभाई।

41. (D) छत्रपति के प्रधानमंत्री
मराठा साम्राज्य में स्थापित अष्टप्रधान परिषद में पेशवा का पद सर्वोच्च होता था। पेशवा छत्रपति का प्रधानमंत्री होता था जो संपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था की देखरेख करता था तथा राजा की अनुपस्थिति में राज्य का संचालन करता था। अठारहवीं शताब्दी में पेशवा का पद अत्यंत शक्तिशाली और प्रभावी बन गया, जिसने साम्राज्य को नई दिशा प्रदान की। यह एक प्रमुख पद था।

42. (A) मराठा आक्रमणों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा तैयार करना।
1734 में भीलवाड़ा के हूरड़ा नामक स्थान पर एक ऐतिहासिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में राजस्थान की विभिन्न राजपूत रियासतों के शासकों ने भाग लिया। इसका मुख्य उद्देश्य मालवा और राजस्थान में मराठों के बढ़ते प्रभाव तथा आक्रमणों को रोकने के लिए एक संयुक्त सैन्य मोर्चा तैयार करना था। यह राजपूत एकता का एक बड़ा प्रयास माना जाता है।

43. (B) पुर्तगाली
1498 ईस्वी में वास्कोडिगामा के आगमन के साथ ही भारत के लिए समुद्री मार्ग खोजने वाले पुर्तगाली प्रथम यूरोपीय थे। उन्होंने गोवा, दमन और दीव में अपने केंद्र बनाए। भारत में सबसे पहले आने वाले पुर्तगाली ही थे तथा स्वतंत्रता के पश्चात 1961 में गोवा से मुक्त होकर भारत छोड़ने वाले भी अंतिम यूरोपीय बने। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

44. (B) वांडीवाश का युद्ध (1760)
1760 में लड़े गए वांडीवाश के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने फ्रांसीसी सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया। इस पराजय के साथ ही भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करने के सपनों का अंत हो गया और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी एकमात्र प्रमुख यूरोपीय शक्ति के रूप में स्थापित हुई। यह औपनिवेशिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

45. (B) पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसीसी
भारत में व्यापारिक केंद्र स्थापित करने वाली यूरोपीय कंपनियों के आगमन का क्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। सबसे पहले 1498 में पुर्तगाली भारत आए। इसके बाद 1602 में डच ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन हुआ। तत्पश्चात अंग्रेज आए और अंत में 1664 में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन हुआ। यह कालानुक्रम ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्णतः प्रमाणिक माना जाता है।

46. (C) सिराजुद्दौला
1757 में लड़े गए प्लासी के युद्ध में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला का सामना ब्रिटिश सेना से हुआ। इस युद्ध में नवाब के सेनापति मीर जाफर के विश्वासघात के कारण नवाब को पराजय

Click Here to Buy book on Amazon

का सामना करना पड़ा। इस घटना ने अंग्रेजों को बंगाल में राजनीतिक रूप से मजबूत किया और औपनिवेशिक शासन की नीव रखी। यह एक निर्णायक युद्ध था।

47. (D) उन्होंने बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्राप्त कर लिए।
बक्सर के युद्ध में विजय के बाद 1765 में इलाहाबाद की संधि हुई। इसके तहत ईस्ट इंडिया कंपनी को मुगल सम्राट से बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई। इससे कंपनी को इन प्रांतों से सीधे राजस्व वसूलने का अधिकार मिल गया, जिसने कंपनी की वित्तीय स्थिति को अत्यधिक सुदृढ़ बनाया और राजनीतिक प्रभाव में वृद्धि की। यह महत्वपूर्ण संधि थी।

48. (C) सतारा
लॉर्ड डलहौजी ने साम्राज्य विस्तार हेतु व्यपगत का सिद्धांत लागू किया। इस नीति के अनुसार किसी शासक के निसंतान मरने पर उसका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था। इस नीति के तहत सबसे पहले 1848 ईस्वी में सतारा रियासत का विलय किया गया। तत्पश्चात जैतपुर, संभलपुर, झाँसी तथा नागपुर जैसी अन्य रियासतों का भी विलय कर लिया गया।

49. (B) शासक को ईसाई धर्म अपनाने की आवश्यकता थी।
लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा प्रयुक्त सहायक संधि का उद्देश्य देशी रियासतों पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित करना था। इसके तहत रियासत को ब्रिटिश सेना रखनी पड़ती थी और विदेशी मामले अंग्रेजों के अधीन करने होते थे। तथापि शासक हेतु धर्म परिवर्तन या ईसाई धर्म अपनाना कभी भी अनिवार्य शर्त नहीं रहा। यह विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक तथा सैन्य प्रकृति का समझौता था।

50. (A) केवल I, II और III
1793 में कॉर्नवालिस ने बंगाल में स्थाई बंदोबस्त लागू किया। रैयतवाड़ी व्यवस्था में सीधे किसानों से भू-राजस्व का निर्धारण किया गया, जबकि महालवाड़ी में संपूर्ण ग्राम समुदाय को जिम्मेदार माना गया। जमींदारी व्यवस्था में जमींदारों द्वारा किसानों से वसूले जाने वाले लगान पर कोई सीमा नहीं थी, जिससे कृषकों का अत्यधिक आर्थिक शोषण हुआ। यह इतिहास का एक कड़वा सत्य है।

51. (A) दादाभाई नौरोजी
दादाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम भारत से धन के निष्कासन के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। अपनी पुस्तक पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया में उन्होंने विस्तारपूर्वक यह दर्शाया कि किस प्रकार ब्रिटिश शासन भारतीय संसाधनों को इंग्लैंड भेजकर देश को निरंतर गरीब बना रहा था। उनके इस सिद्धांत ने राष्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह एक क्रांतिकारी विचार था।

52. (C) सती प्रथा का उन्मूलन
राजा राममोहन राय के निरंतर प्रयासों और सामाजिक सुधार आंदोलन के परिणामस्वरूप गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 1829 में सती प्रथा के उन्मूलन हेतु नियम पारित किया। इसके द्वारा सती प्रथा को गैर-कानूनी एवं आपराधिक कृत्य घोषित किया गया। यह भारतीय समाज में एक ऐतिहासिक तथा दूरगामी सामाजिक सुधार सिद्ध हुआ जिसने नारियों की स्थिति में सुधार किया।

53. (A) नाना साहेब
1857 के संग्राम में कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व नाना साहेब ने किया था। उन्हें अपने सेनापति तात्या टोपे का मजबूत सहयोग प्राप्त हुआ। अंग्रेजों द्वारा पेंशन रोके जाने के विरोध में उन्होंने कानपुर पर अधिकार किया और स्वयं को पेशवा घोषित किया। यह घटना उत्तर भारत में 1857 की क्रांति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय सिद्ध हुई।

NODIA

54. (D) शासन व्यवस्था का ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को स्थानांतरण।
1857 के विद्रोह के बाद पारित भारत सरकार अधिनियम 1858 द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया गया। भारत का प्रत्यक्ष शासन ब्रिटिश क्राउन के हाथों में स्थानांतरित हो गया तथा भारत के गवर्नर जनरल को वायसराय की उपाधि दी गई। यह भारत के प्रशासनिक ढांचे में एक अत्यंत बड़ा तथा बुनियादी परिवर्तन सिद्ध हुआ।

55. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
1857 की क्रांति के पश्चात अंग्रेजों ने यह अनुभव किया कि धार्मिक तथा सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप ने जनता में तीव्र असंतोष उत्पन्न किया था। अतः अपनी सत्ता को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने सामाजिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप की नीति अपनाई और रूढ़िवादी वर्गों को शांत रखने का प्रयास किया। यह उनकी प्रशासनिक नीति का एक मुख्य अंग बन गया।

56. (C) बंबई, व्योमेश चंद्र बनर्जी
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसंबर 1885 को हुई। इसका प्रथम अधिवेशन बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन की अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की थी, जिसमें भारत के विभिन्न भागों से आए 72 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था। यह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण शुभारंभ सिद्ध हुआ।

57. (D) 1907, सूरत अधिवेशन
1907 के सूरत अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विभाजन नरम दल और गरम दल में हो गया। अध्यक्ष पद के चुनाव तथा स्वदेशी आंदोलन की कार्यप्रणाली को लेकर दोनों गुटों में गहरा मतभेद उत्पन्न हो गया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता रासबिहारी घोष ने की थी। यह प्रसिद्ध घटना सूरत की फूट के नाम से जानी जाती है।

58. (A) लॉर्ड कर्जन
वायसराय लॉर्ड कर्जन ने 1905 में बंगाल विभाजन लागू किया था। यद्यपि इसका सरकारी तर्क प्रशासनिक सुविधा था, परंतु वास्तविक उद्देश्य बंगाली राष्ट्रवाद को कमजोर करना तथा

धर्म के आधार पर विभाजन पैदा करना था। इसके विरोध में देशव्यापी स्वदेशी आंदोलन प्रारंभ हुआ, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को अभूतपूर्व गति प्रदान की तथा जनमानस में देशभक्ति का भाव जागृत किया।

59. (B) सैन्य बैरकों पर व्यापक सशस्त्र हमले।
स्वदेशी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा देशी उद्योगों को प्रोत्साहन देना था। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गई तथा पारंपरिक मेलों का प्रयोग जन-समर्थन जुटाने हेतु किया गया। यह आंदोलन पूर्णतः शांतिपूर्ण और रचनात्मक तरीकों पर आधारित था, जिसमें सशस्त्र हिंसा या सैन्य बैरकों पर हमलों का कोई स्थान नहीं था। यह एक तथ्य है।

60. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
1855 के संताल विद्रोह का नेतृत्व सिद्धू और कान्हू ने किया। मुंडा उलगुलान का नेतृत्व महान जननायक बिरसा मुंडा ने किया। बंगाल के नील विद्रोह के प्रमुख नेता दिगंबर विश्वास तथा विष्णु विश्वास थे। राजस्थान का बिजोलिया किसान आंदोलन किसानों पर थोपे गए करों के विरुद्ध संचालित हुआ था। ये सभी आंदोलन शोषण के विरुद्ध अत्यंत महत्वपूर्ण संघर्ष थे।

61. (A) बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट
1916 में भारत में स्वशासन प्राप्ति हेतु होम रूल लीग आंदोलन प्रारंभ किया गया। बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र तथा कर्नाटक क्षेत्र में अपनी लीग गठित की, जबकि एनी बेसेंट ने मद्रास में अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की। इस आंदोलन ने देश में राजनीतिक चेतना और संगठन को अत्यधिक बढ़ावा दिया तथा स्वतंत्रता संग्राम को बल दिया।

62. (C) डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल
13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में लोग एकत्र हुए थे। यह सभा रोलेट एक्ट के विरोध तथा पंजाब के लोकप्रिय नेताओं डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध में आयोजित की गई थी। इस शांतिपूर्ण सभा पर जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियाँ चलवाईं, जिसमें सैकड़ों निर्दोष नागरिक मारे गए। यह एक दुखद घटना थी।

63. (D) चौरी चौरा में हुई हिंसक भीड़ की घटना।
1922 में गोरखपुर के चौरी चौरा में उत्तेजित भीड़ ने एक पुलिस थाने में आग लगा दी जिसमें अनेक पुलिसकर्मी मारे गए। इस हिंसक घटना से आहत होकर महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को तुरंत स्थगित करने का निर्णय लिया, क्योंकि वे किसी भी स्थिति में आंदोलन में हिंसा को स्वीकार नहीं कर सकते थे। यह एक बड़ा निर्णय था।

64. (C) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरु
असहयोग आंदोलन के स्थगन के पश्चात् विधान परिषदों के चुनाव में भाग लेने के उद्देश्य से 1923 में स्वराज पार्टी का गठन किया गया। इसके संस्थापक चितरंजन दास तथा मोतीलाल नेहरु थे। उनका मानना था कि परिषदों में प्रवेश करके ब्रिटिश नीतियों का विरोध करना अधिक प्रभावी होगा। इस दल ने चुनावों में सफलता अर्जित की। यह एक सफल रणनीति थी।

65. (A) केवल I और II
सविनय अवज्ञा आंदोलन का शुभारंभ मार्च 1930 में दांडी यात्रा द्वारा हुआ। गांधीजी ने नमक कानून तोड़कर इस आंदोलन का आह्वान किया था। इस आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता महिलाओं की अभूतपूर्व और व्यापक भागीदारी थी, जिन्होंने शराब की दुकानों और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने में अग्रणी भूमिका निभाई। यह आंदोलन जन-जन तक पहुँचने में पूरी तरह सफल रहा।

66. (D) खान अब्दुल गफ्फार खान
उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खान ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का सफल नेतृत्व किया। उन्हें सीमांत गांधी भी कहा जाता है। उन्होंने खुदाई खिदमतगार नामक एक अहिंसक संगठन का गठन किया, जिसके कार्यकर्ता लाल वस्त्र धारण करते थे। इस संगठन ने क्षेत्र में स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक जनाधार प्रदान किया। यह उनका एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथा सराहनीय प्रयास था।

67. (A) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
गांधी-इरविन समझौते के बाद महात्मा गांधी ने 1931 में लंदन में आयोजित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। हालाँकि सांप्रदायिक प्रश्नों पर सहमति न बनने के कारण यह सम्मेलन असफल रहा और गांधीजी को निराश होकर भारत लौटना पड़ा, जहाँ उन्होंने पुनः आंदोलन प्रारंभ किया। यह इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है।

68. (C) दलित वर्गों और अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र।
1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड द्वारा घोषित सांप्रदायिक पंचाट में दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचन क्षेत्र की व्यवस्था की गई थी। गांधीजी ने इसे हिंदू समाज को बांटने का प्रयास मानकर इसका तीव्र विरोध किया और अनशन प्रारंभ किया, जिसके बाद डॉ. अंबेडकर के साथ ऐतिहासिक पूना समझौता संपन्न हुआ। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ।

69. (A) परामर्श के बिना द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को एकतरफा शामिल करना।
1939 में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ होने पर वायसराय ने भारतीय जनप्रतिनिधियों से बिना कोई परामर्श किए भारत को युद्ध में शामिल कर लिया। कांग्रेस ने इस एकतरफा निर्णय के विरोध में तथा पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की अनदेखी किए जाने पर प्रांतीय मंत्रिमंडलों से सामूहिक रूप से त्यागपत्र दे दिया। यह विरोध दर्ज कराने का एक मुख्य माध्यम बना था।

70. (A) 2, 1, 3, 4
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाओं का कालक्रम अत्यंत स्पष्ट है। चौरी चौरा की घटना 1922 में घटित हुई। तत्पश्चात साइमन कमीशन 1928 में भारत आया। कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन दिसंबर 1929 में आयोजित हुआ जिसमें पूर्ण स्वराज का लक्ष्य रखा गया तथा मार्च 1930 में दांडी मार्च प्रारंभ

Downloaded from www.pdf.tube

हुआ। यह क्रम पूर्णतः ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित माना जाता है।

71. (B) क्रिप्स मिशन
1942 में भारत आए क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद भारत को केवल डोमिनियन स्टेटस देने का प्रस्ताव रखा, जिसे सभी प्रमुख दलों ने खारिज कर दिया। गांधीजी ने इसे उत्तर-दिनांकित चेक की संज्ञा दी। इस मिशन की विफलता के प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप अगस्त 1942 में महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत की। यह एक अंतिम संघर्ष था।

72. (C) उषा मेहता
1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय ब्रिटिश सेंसरशिप से बचने हेतु उषा मेहता ने मुंबई में गुप्त कांग्रेस रेडियो का सफल संचालन किया। इस भूमिगत रेडियो स्टेशन से देशभक्ति के संदेश प्रसारित किए जाते थे जिससे आंदोलनकारियों को मार्गदर्शन तथा प्रेरणा मिलती थी। इस साहसिक कार्य ने आंदोलन को निरंतर गतिमान रखने में अभूतपूर्व योगदान दिया। यह एक ऐतिहासिक कार्य था।

73. (D) झांसी की रानी
सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज में महिलाओं का एक विशेष सैन्य दस्ता गठित किया, जिसका नाम रानी झाँसी रेजीमेंट रखा गया था। 1857 की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के नाम पर नामित इस रेजीमेंट की कमान कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन सहगल ने संभाली। इस रेजीमेंट ने भारतीय नारियों की वीरता और देशभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। यह एक ऐतिहासिक कदम था।

74. (A) रक्षा, विदेश मामले और संचार को संभालने वाला एक सीमित शक्तियों वाला केंद्रीय संघ।
1946 के कैबिनेट मिशन ने भारत के लिए एक त्रिस्तरीय ढाँचे का प्रस्ताव दिया। इसके तहत रक्षा, विदेश मामले और संचार विषयों को सँभालने वाले एक सीमित शक्तियों वाले केंद्रीय संघ की संस्तुति की गई। प्रांतों को व्यापक स्वायत्तता दी गई तथा पाकिस्तान की पृथक मांग को इसमें अस्वीकार कर दिया गया था। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण संवैधानिक योजना थी।

75. (B) केवल I, II और IV
माउंटबेटन योजना ने भारत विभाजन की रुपरेखा तैयार की, जिसे भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 द्वारा वैधानिक रुप दिया गया। देशी रियासतों को किसी भी डोमिनियन में शामिल होने या स्वतंत्र रहने की छूट मिली। परंतु सीमा आयोग की अध्यक्षता सर सिरिल रेडक्लिफ ने की थी। अतः सीमा आयोग से संबंधित कथन असत्य सिद्ध होता है। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य है।

76. (B) सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन
स्वतंत्रता के समय देशी रियासतों के एकीकरण का ऐतिहासिक कार्य सरदार वल्लभभाई पटेल तथा उनके सचिव वी.पी. मेनन द्वारा अत्यंत कुशलतापूर्वक संपन्न किया गया। उन्होंने विलय पत्र के माध्यम से भारतीय संघ में रियासतों का विलय कराया, जिससे एक अखंड एवं सुदृढ़ भारत का निर्माण संभव हो सका। यह उनकी एक अत्यंत महान कूटनीतिक सफलता मानी जाती है।

77. (A) कैबिनेट मिशन
भारत की संविधान सभा का गठन 1946 की कैबिनेट मिशन योजना के प्रावधानों के अनुसार किया गया था। इसके सदस्यों का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा किया गया था। संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसंबर 1946 को आयोजित हुई थी, जिसने भारत के महान संविधान के निर्माण का ऐतिहासिक कार्य प्रारंभ किया। यह एक महत्वपूर्ण शुरुआत थी।

78. (C) 1773 का रेगुलेटिंग एक्ट
1773 के रेगुलेटिंग एक्ट द्वारा बंगाल के गवर्नर को बंगाल का गवर्नर-जनरल पदनामित किया गया और भारत में विकेंद्रीकरण की जगह केंद्रीकरण की नीव रखी गई। इसी अधिनियम के तहत 1774 ईस्वी में कलकत्ता में एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई। यह भारत में संवैधानिक विकास की दिशा में अंग्रेजों का प्रथम अत्यंत महत्वपूर्ण कदम ही माना जाता है।

79. (D) 1813 का चार्टर एक्ट
1813 के चार्टर एक्ट द्वारा भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को समाप्त कर दिया गया, यद्यपि चाय के व्यापार तथा चीन के साथ व्यापार पर उसका एकाधिकार बना रहा। इसके द्वारा अन्य ब्रिटिश प्रजाजनों को भी भारत के साथ व्यापार की अनुमति प्राप्त हुई। यह औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों में बदलाव की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

80. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
1909 के मार्ले-मिंटो सुधारों ने भारत में सांप्रदायिकता को वैधानिक रूप प्रदान किया। इसके द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था की गई, जिसने धर्म के आधार पर राजनीतिक विभाजन को जन्म दिया। लॉर्ड मिंटो को भारत में सांप्रदायिक निर्वाचन का जनक कहा जाता है। इस अधिनियम ने विभाजन के बीज बोने का कार्य किया। यह एक कटु सत्य है।

81. (B) भारत सरकार अधिनियम, 1919
भारत सरकार अधिनियम 1919 द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली लागू की गई। इसके अंतर्गत प्रांतीय विषयों को आरक्षित तथा हस्तांतरित श्रेणियों में विभाजित किया गया था। आरक्षित विषय गवर्नर के पास तथा हस्तांतरित विषय उत्तरदायी भारतीय मंत्रियों के अधीन रखे गए। यह प्रांतीय प्रशासन की दिशा में एक नया प्रयोग था जो बाद में व्यावहारिक रूप से असफल सिद्ध हुआ।

82. (D) खानवा का युद्ध - 1530
तराइन का प्रथम युद्ध 1191 में, तालीकोटा का युद्ध 1565 में तथा हल्दीघाटी का युद्ध 1576 में लड़ा गया था। परंतु खानवा का प्रसिद्ध युद्ध बाबर और महाराणा सांगा के मध्य 1527 ईस्वी में

NODIA

हुआ था, न कि 1530 में। 1530 ईस्वी में तो बाबर की मृत्यु हुई थी। अतः यह सुमेल पूर्णतः त्रुटिपूर्ण एवं गलत ही माना जाता है।

83. (A) तृतीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध
वांडीवाश का युद्ध तृतीय आंग्ल-कर्नाटक युद्ध का एक अत्यंत निर्णायक संघर्ष था, जो यूरोप के सातवर्षीय युद्ध से प्रभावित था। इस युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को पराजित करके दक्षिण भारत में अपनी सर्वोपरिता सिद्ध की और फ्रांसीसी साम्राज्य के विस्तार को पूरी तरह रोक दिया। यह औपनिवेशिक इतिहास का एक अत्यंत प्रमुख मोड़ माना जाता है।

84. (C) राजा जयसिंह प्रथम
1665 में पुरंदर की संधि छत्रपति शिवाजी महाराज और औरंगजेब के सेनापति मिर्जा राजा जयसिंह प्रथम के मध्य हुई थी। जयसिंह ने घेराबंदी करके शिवाजी को संधि हेतु विवश किया। इस समझौते के अनुसार मराठों को अपने 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े थे। यह मराठा इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक तथा रणनीतिक घटना मानी जाती है।

85. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
1782 की सालबाई की संधि प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध से संबंधित है। 1792 की श्रीरंगपटनम की संधि तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के पश्चात हुई। 1826 की यांडबू की संधि प्रथम आंग्ल-बर्मी युद्ध से जुड़ी थी तथा 1802 की बसीन की संधि द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध का कारण बनी। ये सभी संधियाँ ऐतिहासिक रुप से प्रासंगिक मानी जाती हैं। यह सुमेल अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी है।

86. (D) पतंजलि
महर्षि पतंजलि ने संस्कृत व्याकरण के महान ग्रंथ महाभाष्य की रचना की थी। यह ग्रंथ पाणिनि रचित अष्टाध्यायी पर लिखी गई एक अत्यंत प्रसिद्ध टीका है। व्याकरण के साथ-साथ इसमें तत्कालीन शुंगकालीन समाज और संस्कृति के विषय में भी प्रामाणिक जानकारी मिलती है। यह संस्कृत साहित्य की एक अनमोल धरोहर मानी जाती है जो विद्वानों के लिए सदैव मार्गदर्शक बनी रही।

87. (B) गुरु नानक
सिख धर्म के प्रथम गुरु तथा संस्थापक गुरु नानक देव जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और भेदभाव का विरोध किया। उन्होंने सभी मनुष्यों की समानता और एकेश्वरवाद का संदेश दिया। उन्होंने लंगर तथा संगत जैसी सामाजिक संस्थाओं की शुरुआत की जिससे ऊँच-नीच का भाव समाप्त हुआ और भाईचारे को बढ़ावा मिला। यह उनका एक अत्यंत महान एवं पवित्र विचार था।

88. (C) शिकागो
स्वामी विवेकानंद ने सितंबर 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक भाषण दिया था। उन्होंने अपने ओजस्वी विचारों से भारतीय संस्कृति, वेदांत दर्शन तथा हिंदू धर्म की महानता का परचम विश्व स्तर पर लहराया। इस भाषण ने पश्चिमी जगत में भारत के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन ला दिया। यह एक ऐतिहासिक क्षण था।

89. (D) हरिजन सेवक संघ
डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने शोषितों के उत्थान हेतु अनेक संगठनों का गठन किया था। परंतु हरिजन सेवक संघ की स्थापना 1932 में महात्मा गांधी द्वारा अस्पृश्यता निवारण तथा सामाजिक सुधार के उद्देश्य से की गई थी। अन्य तीनों संस्थाएँ डॉ. अंबेडकर द्वारा ही स्थापित की गई थीं, जिन्होंने दलितों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। यह इतिहास का एक स्पष्ट अंतर है।

90. (A) केवल I और II
भगत सिंह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के मुख्य सदस्य थे तथा सूर्य सेन ने चटगांव शस्त्रागार छापे का नेतृत्व किया था। परंतु अरबिंदो घोष 1910 में क्रांतिकारी राजनीति का त्याग करके आध्यात्मिक मार्ग पर चले गए थे और स्वतंत्रता तक सक्रिय नहीं रहे। अतः प्रथम दो कथन पूर्णतः सत्य हैं। यह तथ्य ऐतिहासिक रुप से पूर्णतः प्रमाणित ही माना जाता है।

91. (B) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी
राजस्थान की राजपूत रियासतों ने मराठों और पिंडारियों के निरंतर हमलों तथा आर्थिक शोषण से सुरक्षा पाने हेतु 1818 के आसपास ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ संधियाँ कीं। इन संधियों द्वारा उन्होंने ब्रिटिश सर्वोपरिता स्वीकार कर ली और अपनी विदेश नीति अंग्रेजों को सौंप दी। यह राजस्थान के राजनीतिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन सिद्ध हुआ।

92. (B) राणा कुंभा
चित्तौड़गढ़ किले में स्थित विजय स्तंभ का निर्माण मेवाड़ के महाराणा कुंभा द्वारा करवाया गया था। उन्होंने 1437 में सारंगपुर के युद्ध में मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर प्राप्त शानदार विजय की स्मृति में इसे बनवाया था। नौ मंजिला यह स्तंभ भारतीय स्थापत्य कला तथा मूर्तिकला का एक अद्वितीय और भव्य उदाहरण माना जाता है। यह एक धरोहर है।

93. (A) प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट
कन्नौज पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु आठवीं शताब्दी में त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारंभ हुआ। इस संघर्ष में तीन मुख्य शक्तियाँ शामिल थीं: पश्चिमी भारत के गुर्जर-प्रतिहार, बंगाल के पाल तथा दक्कन के राष्ट्रकूट। लगभग दो सौ वर्षों तक चले इस संघर्ष के अंत में गुर्जर-प्रतिहारों ने कन्नौज पर अपना स्थाई अधिकार जमाया। यह मध्यकालीन इतिहास का एक मुख्य घटनाक्रम माना जाता है।

94. (C) श्रेणी
प्राचीन भारत में व्यापारियों और शिल्पकारों के व्यावसायिक संघों को श्रेणी कहा जाता था। ये श्रेणियाँ अपने सदस्यों के कार्यों का नियमन करती थीं, वस्तुओं की गुणवत्ता तथा मूल्य तय करती थीं। इसके अतिरिक्त ये बैंक के रूप में भी कार्य करती थीं तथा आर्थिक गतिविधियों को सुदृढ़ आधार प्रदान करती थीं। यह प्राचीन भारत की एक अत्यंत विकसित व्यवस्था थी।

Click Here to Buy book on Flipkart

95. (A) क्रिप्स मिशन, भारत छोड़ो आंदोलन, कैबिनेट मिशन, माउंटबेटन योजना
भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अंतिम चरण का क्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन आया, जिसके बाद अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ हुआ। इसके उपरांत मार्च 1946 में कैबिनेट मिशन का आगमन हुआ तथा जून 1947 में माउंटबेटन योजना प्रस्तुत की गई। यह कालानुक्रमिक क्रम पूर्णतः सही तथा ऐतिहासिक तथ्यों पर ही आधारित माना जाता है।

96. (C) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
प्राचीन भारतीय समाज में मानव जीवन को चार प्रमुख आश्रमों में विभाजित किया गया था। प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्याध्ययन किया जाता था। द्वितीय गृहस्थ आश्रम में सांसारिक एवं पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन होता था। तृतीय वानप्रस्थ में आध्यात्मिक चिंतन तथा चतुर्थ संन्यास आश्रम में मोक्ष हेतु सर्वस्व त्याग किया जाता था। यह जीवन की एक अत्यंत आदर्श पद्धति मानी जाती थी।

97. (B) राष्ट्रकूट
एलोरा का प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर विश्व में एकाश्म स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इस विशाल मंदिर का निर्माण आठवीं शताब्दी में राष्ट्रकूट राजवंश के राजा कृष्ण प्रथम द्वारा करवाया गया था। यह संपूर्ण मंदिर एक ही पहाड़ी को ऊपर से नीचे तराशकर बनाया गया है। यह भारतीय वास्तुकला की एक अत्यंत अद्भुत तथा महान उपलब्धि मानी जाती है।

98. (D) मलिक मुहम्मद जायसी
मध्यकालीन अवधि भाषा में रचित प्रसिद्ध महाकाव्य पद्मावत की रचना सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ में चित्तौड़ के राजा रतनसेन, रानी पद्मावती तथा अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण की कथा का सुंदर वर्णन मिलता है। यह काव्य भारतीय साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और लोकप्रिय रचना मानी जाती है जो आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

99. (A) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
1876 में कलकत्ता में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना सुरेंद्रनाथ बनर्जी तथा आनंदमोहन बोस द्वारा की गई थी। यह संगठन कांग्रेस की स्थापना से पूर्व का एक अत्यंत प्रभावशाली राजनीतिक मंच था, जिसने लोगों में राजनीतिक चेतना जगाने तथा सिविल सेवा सुधारों हेतु आंदोलन चलाने में प्रमुख भूमिका निभाई। यह राष्ट्रीय आंदोलन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक प्रयास साबित हुआ।

100. (D) I, II, III और IV
भारत सरकार अधिनियम 1935 एक अत्यंत व्यापक और विस्तृत संवैधानिक दस्तावेज था। इसके द्वारा प्रांतों में स्वायत्तता दी गई तथा केंद्र में द्वैध शासन का प्रस्ताव रखा गया। इसमें एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रावधान था तथा भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना का प्रावधान भी किया गया था। अतः ये चारों कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 02

19वीं और 20वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

NODIA

1. 19वीं शताब्दी के भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों के उदय का प्राथमिक उत्प्रेरक क्या था?
   (A) भारतीय धार्मिक प्रथाओं में ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप
   (B) औद्योगिक क्रांति के बाद व्यापक आर्थिक समृद्धि
   (C) यूरोपीय विद्वानों द्वारा शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का पुनरुद्धार
   (D) पश्चिमी शिक्षा और आधुनिक बुद्धिवादी विचारों की शुरुआत

2. 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों में "सुधारवादी" दृष्टिकोण के विपरीत "पुनरुत्थानवादी" दृष्टिकोण को निम्नलिखित में से कौन सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
   (A) पश्चिमी आदर्शों के साथ पूरी तरह से तालमेल बिठाने के लिए प्राचीन धार्मिक ग्रंथों को अनुकूलित करना
   (B) पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष जीवनशैली अपनाने के लिए सभी धार्मिक प्रथाओं का त्याग करना
   (C) पश्चिमी सांस्कृतिक आधिपत्य का मुकाबला करने के लिए प्राचीन परंपराओं को उनके शुद्ध रूप में पुनर्जीवित करना
   (D) एक सार्वभौमिक धर्म बनाने के लिए ईसाई धर्म और हिंदू धर्म का संश्लेषण करना

3. राजा राममोहन राय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. उन्होंने 1814 में आत्मीय सभा की स्थापना की।
   II. उन्होंने 'तुहफत-उल-मुवाहिदीन' (एकेश्वरवादियों को उपहार) नामक पुस्तक की रचना की।
   III. उन्होंने भारत में अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत का कड़ा विरोध किया।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

4. 1866 में ब्रह्म समाज में विभाजन के बाद, देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व वाले मूल समूह को निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाने लगा?
   (A) भारत का ब्रह्म समाज
   (B) साधारण ब्रह्म समाज
   (C) नवविधान समाज
   (D) आदि ब्रह्म समाज

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
   कथन (A) : राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरोध में तर्क देने के लिए प्राचीन हिंदू शास्त्रों का हवाला दिया।
   कारण (R) : उनका मानना था कि केवल बुद्धिवाद का तर्क देने से हिंदू समाज के कट्टरपंथी वर्गों को आश्वस्त नहीं किया जा सकेगा।
   उपर्युक्त के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
   (D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

6. तत्वबोधिनी सभा, जिसका बाद में ब्रह्म समाज में विलय हो गया था, की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
   (A) केशव चंद्र सेन
   (B) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
   (C) देवेंद्रनाथ टैगोर
   (D) रामकृष्ण परमहंस

7. ईश्वर चंद्र विद्यासागर के व्यापक अभियान ने सीधे तौर पर किस महत्वपूर्ण सामाजिक कानून को अधिनियमित करने में योगदान दिया?
   (A) हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
   (B) सती प्रथा उन्मूलन विनियमन, 1829
   (C) सम्मति आयु अधिनियम, 1891
   (D) बाल विवाह निरोधक अधिनियम, 1929

8. ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने कलकत्ता के किस प्रसिद्ध संस्थान के प्राचार्य के रूप में कार्य किया, जहाँ उन्होंने गैर-ब्राह्मणों के लिए संस्कृत शिक्षा के द्वार खोले?
   (A) प्रेसीडेंसी कॉलेज
   (B) स्कॉटिश चर्च कॉलेज
   (C) फोर्ट विलियम कॉलेज
   (D) संस्कृत कॉलेज

9. बंगाल में शिक्षा के क्षेत्र में ईश्वर चंद्र विद्यासागर के योगदान के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
   (A) उन्होंने जे.ई.डी. बेथ्यून को भारत में बालिका शिक्षा के लिए पहला स्थायी विद्यालय स्थापित करने में सहायता की।

(B) उन्होंने बंगाली वर्णमाला के सरलीकरण का विरोध किया और पारंपरिक जटिल लिपियों का सख्ती से पालन किया।
(C) उन्होंने संस्कृत कॉलेज में पश्चिमी विचारों के अध्ययन की शुरुआत की।
(D) उन्होंने अपने स्वयं के व्यय पर कई देशी विद्यालयों की स्थापना की।

10. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : सुधार संगठन
P. ब्रह्म समाज
Q. आर्य समाज
R. प्रार्थना समाज
S. रामकृष्ण मिशन
सूची II : प्रमुख संस्थापक/व्यक्तित्व
1. स्वामी विवेकानंद
2. आत्माराम पांडुरंग
3. स्वामी दयानंद सरस्वती
4. राजा राममोहन राय
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

11. स्वामी दयानंद सरस्वती किस ग्रंथ को हिंदू धर्म के लिए अंतिम और अचूक प्रमाण मानते थे?
(A) पुराण
(B) उपनिषद
(C) मनुस्मृति
(D) वेद

12. आर्य समाज से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. बंबई में आर्य समाज की स्थापना
2. आर्य समाज का मुख्यालय लाहौर स्थानांतरित होना
3. सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण का प्रकाशन
4. आर्य समाज का कॉलेज और गुरुकुल गुटों में विभाजन
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 3, 1, 2, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 2, 1, 4

13. स्वामी दयानंद सरस्वती ने राजपूताना में काफी समय बिताया और 1883 में उदयपुर में एक प्रमुख सामाजिक संगठन की स्थापना की। इस संगठन का क्या नाम था?
(A) राजपूताना हितकारिणी सभा
(B) परोपकारिणी सभा
(C) देश हितेषिणी सभा
(D) विद्या प्रचारिणी सभा

14. आर्य समाज द्वारा निम्नलिखित में से किस सामाजिक प्रथा का विरोध नहीं किया गया था?
(A) मूर्ति पूजा
(B) विधवा पुनर्विवाह
(C) बाल विवाह
(D) जन्म पर आधारित चतुर्वर्ण व्यवस्था

15. धर्म परिवर्तित व्यक्तियों को पुनः हिंदू धर्म में लाने के उद्देश्य से चलाया गया 'शुद्धि' आंदोलन मुख्य रुप से किस संगठन द्वारा शुरु किया गया था?
(A) आर्य समाज
(B) ब्रह्म समाज
(C) थियोसोफिकल सोसाइटी
(D) प्रार्थना समाज

16. रामकृष्ण मिशन के माध्यम से स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रचारित मुख्य दार्शनिक सिद्धांत क्या था?
(A) व्यक्तिगत मुक्ति प्राप्त करने के लिए संन्यासी अलगाव का कड़ाई से पालन
(B) समाज की भौतिक समृद्धि के लिए जटिल वैदिक अनुष्ठानों का सम्पादन
(C) व्यावहारिक वेदांत और मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा मानना
(D) समाज में मूर्ति पूजा के सभी पारंपरिक रूपों का पूर्ण रूप से बहिष्कार

17. रामकृष्ण मिशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 1897 में स्वामी विवेकानंद द्वारा की गई थी।
II. इसने मानवीय राहत और सामाजिक कार्य पर व्यापक रुप से ध्यान केंद्रित किया।
III. इसने आध्यात्मिक विकास में मूर्ति पूजा की उपयोगिता और मूल्य को स्वीकार किया।
IV. यह विशुद्ध रुप से एक कट्टरपंथी हिंदू आंदोलन था जिसने अन्य धर्मों के सत्य को खारिज कर दिया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

18. स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्व धर्म संसद में अपना ऐतिहासिक भाषण किस वर्ष दिया था?
(A) 1889
(B) 1893
(C) 1897
(D) 1901

19. थियोसोफिकल सोसाइटी की मूल स्थापना 1875 में न्यू यॉर्क में किसके द्वारा की गई थी?
(A) एनी बेसेंट और डॉ. जॉर्ज अरुंडेल

Click Here to Buy book on Amazon

(B) मैडम ब्लावात्स्की और कर्नल ऑलकॉट
(C) एलन ऑक्टेवियन ह्यूम और सर विलियम वेडरबर्न
(D) स्वामी विवेकानंद और सिस्टर निवेदिता

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : एनी बेसेंट ने 1898 में बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की।
कारण (R) : वह विशेष रूप से पश्चिमी विज्ञान का प्रचार करना चाहती थीं और पारंपरिक हिंदू दर्शन को हतोत्साहित करना चाहती थीं।
उपर्युक्त के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

21. किस प्राचीन भारतीय दार्शनिक सिद्धांत ने भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी की शिक्षाओं का मुख्य वैचारिक आधार बनाया?
(A) कर्म और पुनर्जन्म
(B) चार्वाक दर्शन
(C) शून्यता की बौद्ध अवधारणा
(D) जैन धर्म का स्याद्वाद सिद्धांत

22. अलीगढ़ आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : सर सैयद अहमद खान ने पारंपरिक इस्लामिक धर्मशास्त्र और आधुनिक पश्चिमी विज्ञान के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए अलीगढ़ आंदोलन की शुरुआत की।
कथन II : अलीगढ़ आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शुरुआती चरणों में मुसलमानों की सक्रिय भागीदारी का जोरदार समर्थन किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है

23. सर सैयद अहमद खान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने 1875 में अलीगढ़ में मुहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की।
II. उन्होंने सामाजिक सुधारों की वकालत करने के लिए 'तहज़ीब-उल-अखलाक' पत्रिका का प्रकाशन किया।
III. उनका मानना था कि मुस्लिम महिलाओं को पारंपरिक पर्दा प्रथा का सख्ती से पालन करना चाहिए और उन्होंने उन्हें आधुनिक शिक्षा देने से मना कर दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा असत्य है?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

24. निम्नलिखित में से कौन अलीगढ़ आंदोलन या इसकी बौद्धिक विरासत से जुड़ा नहीं था?
(A) ख्वाजा अल्ताफ हुसैन हाली
(B) अल्लामा शिब्ली नोमानी
(C) मौलवी चिराग अली
(D) मौलाना अबुल कलाम आजाद

25. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : समाज सुधारक
P. ज्योतिबा फुले
Q. एम.जी. रानाडे
R. ई.वी. रामासामी
S. बी.आर. अंबेडकर
सूची II : संगठन/आंदोलन
1. आत्म-सम्मान आंदोलन
2. बहिष्कृत हितकारिणी सभा
3. प्रार्थना समाज
4. सत्यशोधक समाज
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

26. 1867 में बंबई में स्थापित प्रार्थना समाज ने किस प्रमुख क्षेत्रीय आंदोलन की आध्यात्मिक परंपरा से प्रेरणा ली?
(A) तमिलनाडु की प्राचीन शैव सिद्धांत परंपरा
(B) बंगाल की रहस्यमयी बाउल भक्ति परंपरा
(C) महाराष्ट्र की भक्ति परंपरा
(D) उत्तर भारत का सूफी चिश्ती सिलसिला आंदोलन

27. उस प्रमुख सुधारक की पहचान कीजिए जिसने देश भर में व्यापक यात्राएं करके प्रार्थना समाज को एक अखिल भारतीय सुधार आंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
(A) आत्माराम पांडुरंग
(B) आर.जी. भंडारकर
(C) बाल गंगाधर तिलक
(D) केशव चंद्र सेन

NODIA

28. निम्नलिखित सामाजिक-धार्मिक संगठनों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(A) ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन
(B) ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन
(C) प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज

(D) आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन

29. ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) शहरी ब्राह्मण अभिजात वर्ग के बीच विशेष रूप से आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देना
(B) निम्न जातियों के लिए सामाजिक न्याय और समान अधिकार सुरक्षित करना
(C) दमनकारी ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक संगठित सशस्त्र विद्रोह की वकालत करना
(D) महाराष्ट्र में कट्टरपंथी प्राचीन वैदिक अनुष्ठानों और परंपराओं को पुनर्जीवित करना

30. सत्यशोधक समाज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 1873 में पुणे में हुई थी।
II. इसने जाति व्यवस्था और धार्मिक अनुष्ठानों में ब्राह्मण पुजारियों की आवश्यकता को पूरी तरह से खारिज कर दिया।
III. सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा संबंधी पहलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
IV. इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से व्यापक वित्तीय और वैचारिक समर्थन मिला।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

31. जाति व्यवस्था की तीखी आलोचना करने वाली और ब्राह्मणवादी वर्चस्व की निंदा करने वाली वह पुस्तक कौन-सी है, जिसे अमेरिकी दासता-विरोधी आंदोलन को समर्पित किया गया था?
(A) गुलामगिरी
(B) सार्वजनिक सत्यधर्म
(C) तृतीय रत्न
(D) इशारा

32. सिंह सभा आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : सिंह सभा आंदोलन की स्थापना 1873 में अमृतसर में मुख्य रूप से सिख धर्म की शुद्धता बहाल करने और ईसाई मिशनरी गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए की गई थी।
कथन II : इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतंत्र एक अलग संप्रभु सिख राज्य की स्थापना करना था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : 1920 के दशक में अकाली आंदोलन सिंह सभा द्वारा शुरु की गई व्यापक सिख सुधार प्रक्रियाओं के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में उभरा।
कारण (R) : अकालियों ने सिख गुरुद्वारों को उन भ्रष्ट महंतों के नियंत्रण से मुक्त कराने का प्रयास किया, जिन्हें ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त था।
उपर्युक्त के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

34. सिंह सभा आंदोलन के शैक्षणिक प्रयासों के परिणामस्वरूप 1892 में किस प्रसिद्ध संस्थान की स्थापना की गई थी?
(A) दयाल सिंह कॉलेज
(B) गुरु नानक देव विश्वविद्यालय
(C) खालसा कॉलेज
(D) फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज

35. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : पारसी सुधारक/संस्थान
P. रहनुमाई मजदायासन सभा
Q. रास्त गोफ्तार
R. दादाभाई नौरोजी
S. बी.एम. मालाबारी
सूची II : योगदान
1. पारसी सुधार आंदोलन के प्रमुख नेता और संस्थापक
2. बाल विवाह के खिलाफ और महिलाओं के अधिकारों के योद्धा
3. 1851 में स्थापित प्रमुख पारसी सुधार संगठन
4. सुधारवादी विचारों को फैलाने के लिए शुरु किया गया गुजराती समाचार पत्र
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

36. रहनुमाई मजदायासन सभा ने पारसी समुदाय के किस पहलू को आधुनिक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया?
(A) गैर-पारसियों को पारसी धर्म में बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित करना
(B) टॉवर ऑफ साइलेंस की पारंपरिक अंतिम संस्कार प्रथा को पूरी तरह से समाप्त करना
(C) अल्पसंख्यक पारसी समुदाय के लिए अलग राजनीतिक निर्वाचन क्षेत्रों की मांग करना
(D) पारसी महिलाओं की सामाजिक स्थिति और शिक्षा में

Downloaded from www.pdf.tube

सुधार करना

37. 1891 के सम्मति आयु अधिनियम को पारित कराने में किस प्रसिद्ध पारसी सुधारक की महत्वपूर्ण भूमिका थी?
(A) बहरामजी मालाबारी
(B) सोराबजी शापूरजी बंगाली
(C) दादाभाई नौरोजी
(D) दिनशा एडुलजी वाचा

38. 19वीं शताब्दी की शुरुआत में भारत में ईसाई मिशनरी गतिविधियों ने मुख्य रूप से किस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करके अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सुधार में योगदान दिया?
(A) पारंपरिक हिंदू मंदिर प्रशासन और प्रबंधन में सुधार और पुनर्गठन
(B) भारतीय चिकित्सा की पारंपरिक स्वदेशी प्रणालियों को बढ़ावा देना और उनका संरक्षण करना
(C) मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) और देशी भाषा के साहित्य की स्थापना करना
(D) ब्रिटिश संसद के भीतर भारतीय स्वशासन की सक्रिय रूप से वकालत करना

39. भारत में ईसाई सुधार आंदोलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अलेक्जेंडर डफ ने अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कलकत्ता में जनरल असेंबलीज इंस्टीट्यूशन की स्थापना की।
II. श्रीरामपुर मिशन ने बंगाल में पहला मुद्रणालय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
III. ईसाई मिशनरियों ने सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए जाति व्यवस्था को जारी रखने का सार्वभौमिक रूप से समर्थन किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

40. निम्नलिखित सामाजिक कानूनों को उनके लागू होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. लेक्स लोकी अधिनियम
2. सती प्रथा उन्मूलन विनियमन
3. हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
4. सम्मति आयु अधिनियम
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 2, 4, 1

41. वह ऐतिहासिक नियम जिसके द्वारा 1829 में सती प्रथा को आधिकारिक रूप से समाप्त कर दिया गया था, किसके गवर्नर-जनरल काल में पारित किया गया था?
(A) लॉर्ड डलहौजी
(B) लॉर्ड विलियम बेंटिक
(C) लॉर्ड फ्रांसिस हेस्टिंग्स
(D) लॉर्ड रिचर्ड वेलेस्ली

NODIA

42. सती प्रथा के उन्मूलन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे 1829 के नियम XVII के माध्यम से लागू किया गया था।
II. प्रारंभ में, यह नियम केवल बंगाल प्रेसीडेंसी पर लागू था।
III. कट्टरपंथी हिंदू समाज ने इस नियम का विरोध करने के लिए धर्म सभा की स्थापना की।
IV. इस नियम ने सती होने का प्रयास करने वाली सभी विधवाओं के लिए मृत्युदंड का प्रावधान किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा असत्य है?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल IV
(D) केवल II और IV

43. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : 1856 के हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम को भारी सामाजिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा और इसके तत्काल बाद बहुत कम वास्तविक पुनर्विवाह हुए।
कारण (R) : अधिनियम में एक प्रावधान शामिल था जिसने पुनर्विवाह करने वाली विधवा को उसके मृतक पति की संपत्ति के अधिकारों से वंचित कर दिया।
उपर्युक्त के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

44. निम्नलिखित में से कौन दक्षिण भारत में विधवा पुनर्विवाह के प्रमुख समर्थक थे और जिन्होंने राजमुंदरी सोशल रिफॉर्म एसोसिएशन की स्थापना की?
(A) कंदुकुरी वीरेशलिंगम
(B) ई.वी. रामासामी पेरियार
(C) कांजीवरम नटराजन अन्नादुरई
(D) कुमारस्वामी कामराज

45. 1899 में, पूना में उच्च जाति की विधवाओं को शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से अनाथ बालिकाश्रम (विधिक नाम: विडोज़ होम एसोसिएशन) की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) एम.जी. रानाडे
(B) धोंडो केशव कर्वे
(C) बाल गंगाधर तिलक
(D) गोपाल कृष्ण गोखले

46. 1872 का नेटिव मैरिज एक्ट, जिसने बाल विवाह को प्रतिबंधित किया और अंतर-जातीय विवाहों को वैध बनाया, किस सुधारक के अभियानों से अत्यधिक प्रभावित था?
(A) राजा राममोहन राय
(B) केशव चंद्र सेन
(C) स्वामी विवेकानंद
(D) स्वामी दयानंद सरस्वती

47. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : विधान
P. सती प्रथा उन्मूलन विनियमन
Q. हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम
R. सम्मति आयु अधिनियम
S. बाल विवाह निरोधक अधिनियम (शारदा अधिनियम)
सूची II : सम्बद्ध वर्ष
1. 1856
2. 1891
3. 1929
4. 1829
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

48. 1929 के बाल विवाह निरोधक अधिनियम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे लोकप्रिय रूप से शारदा अधिनियम के नाम से जाना जाता था।
II. इसने विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों के लिए 14 वर्ष और लड़कों के लिए 18 वर्ष निर्धारित की।
III. इस विधेयक को प्रायोजित करने वाले हरबिलास शारदा, अजमेर, राजस्थान के एक प्रमुख समाज सुधारक थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

49. राजस्थान में सामाजिक सुधारों के संदर्भ में, 1889 में 'वॉल्टरकृत राजपूताना हितकारिणी सभा' की स्थापना मुख्य रूप से किन मुद्दों के समाधान के लिए की गई थी?
(A) मारवाड़ में जागीरदारी व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन और पुनर्गठन
(B) जनजातीय आबादी के बीच आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा का व्यापक प्रचार
(C) मेवाड़ में निम्न जातियों के लिए मंदिर प्रवेश का आधिकारिक नियमन और प्रवर्तन
(D) कन्या शिशु हत्या और विवाह में अत्यधिक व्यय

50. मेवाड़ में 1877 में महाराणा सज्जन सिंह द्वारा स्थापित 'देश हितेषिणी सभा' का उद्देश्य किस विशिष्ट सामाजिक कुप्रथा से निपटना था?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पृश्यता का व्यापक प्रचलन
(B) दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में नरबलि की प्रथाएं
(C) विवाहों पर अत्यधिक व्यय और बहुविवाह
(D) स्थानीय मंदिरों में पारंपरिक देवदासी प्रथा

51. 1891 के सम्मति आयु अधिनियम ने लड़की के लिए विवाह की न्यूनतम आयु 10 वर्ष से बढ़ाकर कितनी कर दी?
(A) 12 वर्ष
(B) 14 वर्ष
(C) 16 वर्ष
(D) 18 वर्ष

52. निम्नलिखित में से प्रमुख महिला शैक्षणिक और सामाजिक संस्थानों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन-सा है?
(A) बेथ्यून स्कूल (कलकत्ता), शारदा सदन (बंबई), एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय (पुणे)
(B) शारदा सदन, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, बेथ्यून स्कूल
(C) एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, बेथ्यून स्कूल, शारदा सदन
(D) बेथ्यून स्कूल, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, शारदा सदन

53. प्रारंभिक महिला सुधारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : पंडिता रमाबाई ने महिला शिक्षा और बाल विवाह के उत्पीड़न से मुक्ति को बढ़ावा देने के लिए आर्य महिला समाज की स्थापना की।
कथन II : ताराबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' की रचना की, जिसे पितृसत्ता की आलोचना करने वाले भारत के सबसे शुरुआती नारीवादी ग्रंथों में से एक माना जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है

54. डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वह पहली भारतीय महिला विधायक थीं।
II. उन्होंने देवदासी प्रथा को समाप्त करने के अभियान का नेतृत्व किया।
III. उन्होंने बेसहारा महिलाओं के लिए अव्वई होम की स्थापना की।
IV. उन्होंने भारत में आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा की शुरुआत का जोरदार विरोध किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV

Click Here to Buy book on Flipkart

(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

55. रोकेया साखावत हुसैन ने मुख्य रूप से किस समुदाय की महिलाओं के शैक्षणिक उत्थान के लिए काम किया?
(A) भारतीय मुस्लिम
(B) बंगाली हिंदू
(C) भारतीय ईसाई
(D) पारसी

56. 1916 में मद्रास प्रेसीडेंसी में स्थापित जस्टिस पार्टी मुख्य रूप से किस समूह के राजनीतिक और सामाजिक हितों का प्रतिनिधित्व करती थी?
(A) कट्टरपंथी ब्राह्मण
(B) भूमिहीन कृषि मजदूर
(C) ब्रिटिश सिविल सेवक
(D) गैर-ब्राह्मण जातियां

57. निम्नलिखित में से कौन जस्टिस पार्टी (साउथ इंडियन लिबरल फेडरेशन) का संस्थापक सदस्य नहीं था?
(A) टी.एम. नायर
(B) सी. राजगोपालाचारी
(C) पी. त्यागराया चेटी
(D) सी. नटेसा मुदलियार

58. 20वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान जस्टिस पार्टी की प्राथमिक मांग क्या थी?
(A) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता की तत्काल प्राप्ति
(B) एक संप्रभु और पृथक द्रविड़ राष्ट्र राज्य की राजनीतिक स्थापना
(C) सरकारी नौकरियों और विधायिका में गैर-ब्राह्मणों के लिए आरक्षण
(D) मद्रास प्रेसीडेंसी में सभी कृषि भूमि का पूर्ण राष्ट्रीयकरण

59. डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 1924 में किस मुख्य ध्येय वाक्य के साथ 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की थी?
(A) "वेदों की ओर लौटें"
(B) "मानव जाति के लिए एक धर्म, एक जाति, एक ईश्वर"
(C) "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है"
(D) "शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो"

60. डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में 1927 का महाड़ सत्याग्रह मुख्य रूप से किस सामाजिक अधिकार को सिद्ध करने के लिए आयोजित किया गया था?
(A) सार्वजनिक चवदार तालाब से पानी भरने का अधिकार
(B) प्रसिद्ध कालाराम मंदिर में प्रवेश करने का निम्न जातियों का अप्रतिबंधित अधिकार
(C) प्रांतीय विधायिका में समान और निष्पक्ष प्रतिनिधित्व का कानूनी अधिकार
(D) बिना किसी कानूनी दंड के अंतर-जातीय विवाह संपन्न करने का मौलिक अधिकार

61. उस समाचार पत्र की पहचान कीजिए जो डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा शुरु नहीं किया गया था।
(A) मूकनायक
(B) हरिजन
(C) बहिष्कृत भारत
(D) जनता

62. प्रांतीय चुनावों में शोषित वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए 1936 में डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा किस राजनीतिक दल की स्थापना की गई थी?
(A) रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया
(B) इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी
(C) शेड्यूल्ड कास्ट्स फेडरेशन
(D) बहुजन समाज पार्टी

63. 1925 में ई.वी. रामासामी (पेरियार) द्वारा शुरु किए गए आत्म-सम्मान आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) ब्राह्मणवादी वर्चस्व को समाप्त करना और समान अधिकार सुनिश्चित करना
(B) पूरे दक्षिण भारत में एकमात्र राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना
(C) पारंपरिक हिंदू मंदिर वास्तुकला और प्रबंधन में व्यापक सुधार करना
(D) तमिलनाडु में पारंपरिक संस्कृत विश्वविद्यालयों का एक विशाल नेटवर्क स्थापित करना

64. ब्राह्मण पुजारियों की भूमिका को समाप्त करने के लिए आत्म-सम्मान आंदोलन द्वारा किस अनूठी सामाजिक प्रथा को अत्यधिक लोकप्रिय बनाया गया था?
(A) पारंपरिक शुद्धि समारोहों के माध्यम से पुनः धर्म परिवर्तन
(B) पारंपरिक नियोग विवाह सहित प्राचीन वैदिक रीति-रिवाज
(C) पुजारियों या धार्मिक अनुष्ठानों के बिना आत्म-सम्मान विवाह
(D) देवदासी प्रथा के तहत युवा महिलाओं का पारंपरिक समर्पण

NODIA

65. आत्म-सम्मान आंदोलन के विचारों का प्रचार करने के लिए 1925 में ई.वी. रामासामी द्वारा शुरु किया गया तमिल साप्ताहिक पत्र कौन-सा था?
(A) द्रविड़ नाडू
(B) स्वदेशमित्रन
(C) द हिंदू
(D) कुडी अरासु

66. सहारनपुर के दारुल उलूम में 1866 में शुरु हुआ देवबंद आंदोलन मूल रूप से किस प्रकार का आंदोलन था?
(A) मुसलमानों के लिए पश्चिमी वैज्ञानिक शिक्षा की वकालत करने वाला एक व्यापक आधुनिकतावादी आंदोलन
(B) हिंदू और इस्लामी परंपराओं का विलय करने वाला एक गहरा समन्वयात्मक दार्शनिक आंदोलन

(C) शुद्ध इस्लामी शिक्षाओं पर केंद्रित एक पारंपरिक आंदोलन
(D) एक पृथक मुस्लिम राज्य के निर्माण की मांग करने वाला एक कट्टरपंथी राजनीतिक आंदोलन

67. देवबंद आंदोलन के प्रमुख संस्थापक कौन थे?
(A) सर सैयद अहमद खान और नवाब मोहसिन-उल-मुल्क अल्ताफ हुसैन हाली
(B) मुहम्मद कासिम नानौतवी और रशीद अहमद गंगोही
(C) मिर्जा गुलाम अहमद और मौलाना हकीम नूर-उद-दीन
(D) रायबरेली के सैयद अहमद और शाह वलीउल्लाह देहलवी

68. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान किस प्रमुख राजनीतिक मुद्दे पर देवबंद आंदोलन का अलीगढ़ आंदोलन से गहरा मतभेद था?
(A) देवबंद स्कूल ने अंग्रेजों के प्रति निष्ठा की वकालत की, जबकि अलीगढ़ ने सशस्त्र विद्रोह को बढ़ावा दिया।
(B) देवबंद स्कूल ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया, जबकि अलीगढ़ ने इसे खारिज कर दिया।
(C) देवबंद स्कूल अलग निर्वाचन क्षेत्र चाहता था, जबकि अलीगढ़ ने उनका विरोध किया।
(D) देवबंद स्कूल ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया, जबकि अलीगढ़ आंदोलन ने इसका विरोध किया।

69. रायबरेली के सैयद अहमद के नेतृत्व में 19वीं शताब्दी के भारत में वहाबी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) इस्लाम का शुद्धिकरण करना और इसकी मूल शिक्षाओं को बहाल करना
(B) प्रगतिशील यूरोपीय तर्ज पर इस्लामी कानूनी व्यवस्था का पूरी तरह से आधुनिकीकरण करना
(C) अंग्रेजी में कुरान के अनुवाद और वितरण को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना
(D) हिंदुओं और मुसलमानों के बीच व्यापक अंतर-धार्मिक विवाहों को प्रोत्साहित करना

70. वहाबी आंदोलन ने अंततः एक अत्यधिक राजनीतिक और साम्राज्यवाद-विरोधी रूप धारण कर लिया, और ब्रिटिश भारत को क्या घोषित किया?
(A) दार-उल-इस्लाम (इस्लाम की भूमि)
(B) दार-उल-अमन (शांति की भूमि)
(C) दार-उल-हरब (युद्ध की भूमि)
(D) दार-उल-खिलाफत (खिलाफत की भूमि)

71. अंग्रेजों द्वारा दमन किए जाने से पहले भारत में वहाबी आंदोलन के प्राथमिक परिचालन आधार और मुख्यालय के रूप में किस क्षेत्र ने कार्य किया?
(A) पटना
(B) हैदराबाद
(C) लाहौर
(D) ढाका

72. 1850 के लेक्स लोकी अधिनियम का सामाजिक संबंधों पर गहरा प्रभाव किसके माध्यम से पड़ा?
(A) सभी प्रमुख भारतीय समुदायों के बीच बहुविवाह पर सख्ती से प्रतिबंध लगाकर
(B) धर्म परिवर्तन की आवश्यकता के बिना नागरिक अंतर-जातीय विवाहों को पूरी तरह से वैध बनाकर
(C) सार्वजनिक स्थानों पर अस्पृश्यता की सदियों पुरानी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त करके
(D) ईसाई धर्मांतरितों के लिए पैतृक संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करके

NODIA

73. 19वीं शताब्दी के किस प्रमुख सुधारक ने बंगाल में उच्च जाति के हिंदुओं के बीच प्रचलित 'कुलीनवाद' (बहुविवाह) प्रथा के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया?
(A) स्वामी विवेकानंद (नरेंद्रनाथ दत्त)
(B) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
(C) महर्षि देवेंद्रनाथ टैगोर
(D) राजा राधाकांत देव

74. 1863 का धार्मिक बंदोबस्ती अधिनियम मुख्य रूप से किस लिए पारित किया गया था?
(A) ब्रिटिश प्रेसीडेंसी में सभी पारंपरिक मंदिर संपत्तियों का राष्ट्रीयकरण करना और उन्हें जब्त करना
(B) निम्न जातियों को सभी हिंदू मंदिरों में प्रवेश का पूर्ण और अप्रतिबंधित अधिकार देना
(C) धार्मिक स्थलों का प्रबंधन स्थानीय समितियों को सौंपना
(D) धार्मिक संस्थानों को कृषि भूमि और परिसंपत्तियों के दान पर कड़ाई से प्रतिबंध लगाना

75. 20वीं शताब्दी की शुरुआत में देवदासी प्रथा के खिलाफ अभियान की परिणति मुख्य रूप से किस क्षेत्र में विधायी प्रतिबंधों के रूप में हुई?
(A) बंगाल प्रेसीडेंसी
(B) बंबई प्रेसीडेंसी
(C) पंजाब प्रांत
(D) मद्रास प्रेसीडेंसी

76. 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान, भारत में मद्यनिषेध आंदोलनों ने किसकी वकालत की?
(A) मदिरा और नशीली दवाओं का निषेध और प्रतिबंध
(B) सभी समुदायों में अनिवार्य शाकाहारी आहार का सख्त प्रवर्तन
(C) औद्योगिक कारखानों में कम उम्र के बाल श्रम का पूर्ण उन्मूलन
(D) महिला श्रमिकों के लिए दैनिक कार्य समय का वैधानिक मानकीकरण

77. किस प्रमुख समाज सुधारक और राष्ट्रवादी नेता ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम में मद्यनिषेध आंदोलन (शराबबंदी) को मजबूती से शामिल किया?
(A) बाल गंगाधर तिलक
(B) महात्मा गांधी

(C) बी.आर. अंबेडकर
(D) सुभाष चंद्र बोस

78. समाज सुधार के विचारों का प्रचार करने के लिए भारत में इस्तेमाल की जाने वाली पहली फ़ारसी पत्रिका 'मिरात-उल-अखबार' किसके द्वारा शुरु की गई थी?
(A) सर सैयद अहमद खान
(B) राजा राममोहन राय
(C) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(D) मिर्जा गालिब

79. विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक सुधारों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए 1832 में शुरु किए गए मराठी समाचार पत्र 'दर्पण' की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) बालशास्त्री जांभेकर
(B) गोपाल हरि देशमुख (लोकहितवादी)
(C) विष्णुशास्त्री पंडित
(D) एम.जी. रानाडे

80. 'सोम प्रकाश', एक प्रमुख बंगाली साप्ताहिक पत्र जिसने नील किसानों का जोरदार समर्थन किया और विधवा पुनर्विवाह की वकालत की, किससे निकटता से जुड़ा था?
(A) बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय
(B) रवींद्रनाथ टैगोर
(C) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
(D) सुरेंद्रनाथ बनर्जी

81. भारतीय जनता को आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से जगाने के लिए स्वामी विवेकानंद द्वारा किस पत्रिका का प्रकाशन किया गया था?
(A) केसरी (B) मराठा
(C) युगांतर (D) प्रबुद्ध भारत

82. 'सुधारक', एक ऐसा समाचार पत्र जिसने सामाजिक सुधारों की पुरजोर वकालत की और रूढ़िवादी हिंदू प्रथाओं की तीखी आलोचना की, किसके द्वारा स्थापित किया गया था?
(A) बाल गंगाधर तिलक
(B) विनायक दामोदर सावरकर
(C) गोपाल गणेश आगरकर
(D) लाला लाजपत राय

83. 'तहज़ीब-उल-अखलाक' के प्रकाशन ने मुस्लिम समुदाय की मानसिकता को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके संपादक/लेखक कौन थे?
(A) अल्लामा मुहम्मद इकबाल
(B) सर सैयद अहमद खान
(C) मौलाना शिब्ली नोमानी
(D) बदरुद्दीन तैयबजी

84. 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने मौलिक रूप से भारतीय राष्ट्रवाद के उदय की पृष्ठभूमि किस प्रकार तैयार की?
(A) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक संगठित सशस्त्र विद्रोह की वकालत करके
(B) ब्रिटिश राजनीतिक अनुग्रह प्राप्त करने के लिए ईसाई धर्म में व्यापक पैमाने पर धर्मांतरण को प्रोत्साहित करके
(C) पूरे भारत में ऐतिहासिक मुगल साम्राज्य की पूर्ण बहाली और पुनः स्थापना की मांग करके
(D) कठोर जातिगत बाधाओं पर प्रहार करके और आधुनिक भारतीय एकता को बढ़ावा देकर

85. यह अवधारणा कि सामाजिक-धार्मिक सुधार राजनीतिक स्वतंत्रता से पहले होने चाहिए, नेताओं के किस समूह द्वारा सबसे मजबूती से समर्थित की गई थी?
(A) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी नेता
(B) बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व वाले उग्रवादी नेता
(C) गदर पार्टी के कट्टरपंथी भूमिगत क्रांतिकारी
(D) धर्म सभा से जुड़े अत्यधिक पारंपरिक कट्टरपंथी नेता

86. कांग्रेस के मंच पर केंद्रीय विषय बनने से बहुत पहले किस सुधार आंदोलन ने 'स्वदेशी' और 'स्वराज' की अवधारणाओं को लोकप्रिय बनाकर राष्ट्रवाद में सक्रिय योगदान दिया?
(A) प्रार्थना समाज (B) ब्रह्म समाज
(C) आर्य समाज (D) अलीगढ़ आंदोलन

87. स्वामी विवेकानंद की शिष्या सिस्टर निवेदिता ने मुख्य रूप से किस प्रकार राष्ट्रवादी चेतना में योगदान दिया?
(A) भारतीय कला, विज्ञान और नारीत्व के गौरव को बढ़ावा देकर
(B) बंगाल में भूमिगत उग्रवादी राष्ट्रवादी गतिविधियों को संगठित और संचालित करके
(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रारंभिक स्थापना का व्यक्तिगत रूप से वित्तपोषण करके
(D) स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक संविधान का मसौदा तैयार करने में सहायता करके

88. सुधारक और उनके द्वारा स्थापित संगठन के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) राधाकांत देव - ब्रह्म समाज
(B) स्वामी सहजानंद - रामकृष्ण मिशन
(C) तुलसी राम (शिव दयाल साहब) - सत्यशोधक समाज
(D) शिव नारायण अग्निहोत्री - देव समाज

89. 1864 में मद्रास में स्थापित और ब्रह्म समाज से अत्यधिक प्रेरित वेद समाज की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) के. केलप्पन
(B) चेमबेटी श्रीधरालू नायडू
(C) वी.ओ. चिदंबरम पिल्लई
(D) सी.वी. रमन पिल्लई

90. दक्षिणी राजस्थान और गुजरात की भील जनजातियों के सुधार के उद्देश्य से गोविंद गिरि के 'भगत आंदोलन' को किस सामाजिक-धार्मिक संगठन ने अत्यधिक प्रभावित किया?
(A) ब्रह्म समाज

Downloaded from www.pdf.tube

(B) रामकृष्ण मिशन
(C) आर्य समाज
(D) थियोसोफिकल सोसाइटी

91. उत्तर और पश्चिमी भारत में उच्च जातियों में मुख्य रूप से प्रचलित प्रथा को रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा किस वर्ष बालिका शिशु हत्या निवारण अधिनियम पारित किया गया था?
(A) 1856
(B) 1870
(C) 1891
(D) 1929

92. 1929 के शारदा अधिनियम को शुरुआत में समाज के किन वर्गों के विरोध का सामना करना पड़ा?
(A) राज्य के हस्तक्षेप का विरोध करने वाले कट्टरपंथी हिंदू और मुस्लिम
(B) पूरे उत्तर भारत में विशेष रूप से कट्टरपंथी हिंदू नेता और धार्मिक विद्वान
(C) विशेष रूप से कट्टरपंथी मुस्लिम धार्मिक विद्वान और सामुदायिक नेता
(D) आधुनिकतावादी समाज सुधारक और पश्चिमी-शिक्षित प्रगतिशील भारतीय बुद्धिजीवी

93. ब्रह्म समाज और आर्य समाज की तुलना करते समय, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ऐतिहासिक रूप से सटीक है?
(A) दोनों आंदोलन वेदों की अचूकता में विश्वास करते थे।
(B) ब्रह्म समाज ने पश्चिमी बुद्धिवाद से प्रेरणा ली, जबकि आर्य समाज पूरी तरह से स्वदेशी और पुनरुत्थानवादी था।
(C) आर्य समाज ने मूर्ति पूजा का समर्थन किया, जबकि ब्रह्म समाज ने इसका विरोध किया।
(D) दोनों आंदोलनों ने अपनी सदस्यता केवल ब्राह्मण जाति तक ही सीमित रखी।

94. ब्रह्म समाज, जिसने मुख्य रूप से बंगाल के पश्चिमी-शिक्षित शहरी अभिजात वर्ग को आकर्षित किया, के विपरीत आर्य समाज ने मुख्य रूप से किन समूहों के बीच व्यापक जन आधार पाया?
(A) छोटानागपुर पठार क्षेत्र में रहने वाली स्वदेशी जनजातीय आबादी
(B) पंजाब और उत्तर-पश्चिम भारत के किसान और व्यापारी
(C) मद्रास प्रेसीडेंसी के निर्धन भूमिहीन कृषि मजदूर
(D) पूर्वी बंगाल के धनी पारंपरिक हिंदू जमींदार

95. अलीगढ़ आंदोलन और देवबंद आंदोलन का तुलनात्मक विश्लेषण प्रकट करता है कि:
(A) अलीगढ़ ने पश्चिमी शिक्षा और अंग्रेजों के प्रति निष्ठा पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि देवबंद ने पारंपरिक इस्लामी पांडित्य और साम्राज्यवाद-विरोध पर ध्यान केंद्रित किया।
(B) दोनों ने भारत में एक इस्लामी खिलाफत स्थापित करने का प्रयास किया।
(C) दोनों ने मुसलमानों को अंग्रेजी और पश्चिमी विज्ञान सीखने के लिए सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया।
(D) अलीगढ़ ने पर्दा प्रथा का विरोध किया, जबकि देवबंद ने राजनीति में महिलाओं के प्रवेश के लिए व्यापक अभियान चलाया।

NODIA

96. केरल में श्री नारायण गुरु का आंदोलन (एस.एन.डी.पी. योगम) उच्च जाति के सुधार आंदोलनों से मौलिक रूप से भिन्न था क्योंकि:
(A) इसने प्राचीन और जटिल वैदिक यज्ञों के भव्य पुनरुद्धार की बिना किसी समझौते के मांग की
(B) इसने पारंपरिक स्थानीय राजशाही को तत्काल हिंसक रूप से उखाड़ फेंकने की उग्र वकालत की
(C) इसने सीधे तौर पर निम्न जाति के इझ़ावा समुदाय का उद्धार किया
(D) इसने जातिगत उत्पीड़न से बचने के एकमात्र साधन के रूप में ईसाई धर्म में बड़े पैमाने पर धर्मांतरण को व्यापक रूप से बढ़ावा दिया

97. 1888 में श्री नारायण गुरु द्वारा शुरु किया गया अरुविप्पुरम आंदोलन ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(A) उन्होंने शोषित वर्गों के लिए पूर्ण मतदान अधिकारों की मांग के लिए एक विशाल ऐतिहासिक सार्वजनिक मार्च का नेतृत्व किया।
(B) उन्होंने कट्टरपंथी ब्राह्मण पुजारियों के सामने मनुस्मृति जैसे प्राचीन ग्रंथों को सार्वजनिक रूप से जलाया।
(C) उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भारत में विशेष रूप से निम्न जातियों के लिए सबसे पहला आधुनिक अंग्रेजी स्कूल स्थापित किया।
(D) उन्होंने ब्राह्मणवादी एकाधिकार को चुनौती देते हुए एक शिव मूर्ति की प्रतिष्ठा की

98. निम्नलिखित में से किसे 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों की एक प्रमुख सीमा या आलोचना माना जाता है?
(A) उन्होंने महिला साक्षरता और शिक्षा से जुड़े सभी मुद्दों को पूरी तरह से नजरअंदाज और व्यवस्थित रूप से दरकिनार कर दिया।
(B) उन्होंने आधुनिक लोकतांत्रिक, वैज्ञानिक या तर्कसंगत प्रबुद्धता की अवधारणाओं से जुड़ने से दृढ़ता से इनकार कर दिया।
(C) वे शहरी मध्यम वर्ग के अभिजात वर्ग तक ही सीमित रहे, ग्रामीण जनता तक नहीं पहुँच सके
(D) उन्होंने पूरे भारत में अस्पृश्यता की सामाजिक निरंतरता का सार्वभौमिक रूप से समर्थन किया और सक्रिय रूप से बचाव किया।

99. 19वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों की आधुनिक इतिहासकारों द्वारा उनके "उच्च-जाति पूर्वाग्रह" के लिए आलोचना की गई है। इसका मुख्य रूप से क्या अर्थ है?

(A) उन्होंने अस्पतालों में आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और चिकित्सा देखभाल तक पहुँचने से निम्न जाति के व्यक्तियों को व्यवस्थित रूप से रोक दिया।
(B) उन्होंने निम्न जाति की दुर्दशा को नजरअंदाज करते हुए उच्च जाति के सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया
(C) उन्होंने पारंपरिक वर्ण व्यवस्था को कानूनी रूप से लागू करने और मजबूत करने के लिए ब्रिटिश औपनिवेशिक अदालतों में सक्रिय रूप से अभियान चलाया।
(D) उन्होंने ग्रामीण भारत में किसान विद्रोहों को भौतिक रूप से दबाने के लिए ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों के साथ सीधे साझेदारी की।

100. 19वीं शताब्दी के कुछ सुधार आंदोलनों के भीतर पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों की एक और लगातार आलोचना यह है कि उन्होंने:
(A) पारंपरिक भारतीय संस्कृति का तीव्र और पूर्ण पश्चिमीकरण किया, जिससे स्वदेशी कला और विरासत को स्थायी रूप से नष्ट कर दिया गया।
(B) क्षेत्रीय देशी भारतीय भाषाओं में पवित्र धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद को सख्ती से रोका और गैर-कानूनी घोषित किया।
(C) 19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के तत्काल भू-राजनीतिक विभाजन को सीधे तौर पर प्रेरित किया और उसका परिणाम बने।
(D) अनन्य धार्मिक अतीतों का गुणगान करके सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (D) पश्चिमी शिक्षा और आधुनिक बुद्धिवादी विचारों की शुरुआत
19वीं शताब्दी के भारत में पश्चिमी शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक तर्कवादी विचारों के आगमन ने भारतीय समाज-सुधार आंदोलनों के उदय में उत्प्रेरक का कार्य किया। इस नई शिक्षा पद्धति ने शिक्षित भारतीयों को अपने ही समाज की पारंपरिक रुढ़ियों, अंधविश्वासों और सामाजिक बुराइयों का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने की दृष्टि प्रदान की। इसके परिणामस्वरूप राजा राममोहन राय जैसे विचारकों ने व्यापक सुधार आंदोलनों की शुरुआत की।

2. (C) पश्चिमी सांस्कृतिक आधिपत्य का मुकाबला करने के लिए प्राचीन परंपराओं को उनके शुद्ध रूप में पुनर्जीवित करना
सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों में पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य पश्चिमी सांस्कृतिक एवं धार्मिक आधिपत्य का मुकाबला करने के लिए प्राचीन भारतीय धार्मिक परंपराओं और ग्रंथों को उनके शुद्ध रूप में पुनर्जीवित करना था। यह दृष्टिकोण सुधारवादियों से भिन्न था क्योंकि सुधारवादी पश्चिमी विचारों से प्रेरणा लेकर रुढ़ियों का उन्मूलन चाहते थे, जबकि पुनरुत्थानवादी भारत के प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित कर समाज का उत्थान करना आवश्यक समझते थे।

3. (A) केवल I और II
राजा राममोहन राय ने 1814 में कलकत्ता में आत्मीय सभा का गठन करके धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों के प्रयास आरंभ किए थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन करने के लिए फ़ारसी भाषा में 'तुहफत-उल-मुवाहिदीन' ग्रंथ की रचना की। वे भारत में पाश्चात्य एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे, इसलिए अंग्रेजी शिक्षा का विरोध करने संबंधी विचार असत्य प्रमाणित होता है।

4. (D) आदि ब्रह्म समाज
वर्ष 1866 में केशव चंद्र सेन के उदारवादी एवं प्रगतिशील विचारों तथा अन्य धर्मों की प्रथाओं को समाविष्ट करने के कारणों से ब्रह्म समाज में वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो गए। इस विभाजन के पश्चात देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व वाले पारंपरिक समूह को 'आदि ब्रह्म समाज' नाम दिया गया, जबकि केशव चंद्र सेन ने 'भारत का ब्रह्म समाज' नाम से नवीन संस्था का गठन किया।

5. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के उन्मूलन के लिए प्राचीन हिंदू धर्मशास्त्रों और उपनिषदों के उद्धरण प्रस्तुत किए। उनका यह स्पष्ट मानना था कि केवल पश्चिमी बुद्धिवाद या आधुनिक तर्कों का सहारा लेने से भारतीय समाज का कट्टरपंथी और रुढ़िवादी वर्ग सती प्रथा जैसी अमानवीय कुप्रथा को त्यागने के लिए आश्वस्त नहीं होगा। शास्त्रों के प्रमाणों से वे जनमानस को प्रभावित कर सके।

6. (C) देवेंद्रनाथ टैगोर
तत्वबोधिनी सभा की स्थापना 1839 में देवेंद्रनाथ टैगोर द्वारा कलकत्ता में की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य वेदांत दर्शन का गंभीर अध्ययन करना और बंगाली भाषा के माध्यम से धार्मिक एवं सामाजिक सुधारवादी विचारों का प्रसार करना था। तत्वबोधिनी सभा ने एक पत्रिका 'तत्वबोधिनी पत्रिका' का सम्पादन किया। 1842 में इस संस्था का विलय ब्रह्म समाज में सम्पन्न हुआ था।

7. (A) हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने और उनके पुनर्विवाह के अधिकार को कानूनी मान्यता दिलाने के लिए गहन प्रयास किए। उन्होंने प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन करके यह प्रमाणित किया कि धर्मशास्त्र विधवा विवाह का प्रतिषेध नहीं करते। उनके निरंतर अभियानों के परिणामस्वरूप गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग द्वारा हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 कानून के रूप में लागू किया गया।

8. (D) संस्कृत कॉलेज
ईश्वर चंद्र विद्यासागर कलकत्ता स्थित प्रसिद्ध संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य नियुक्त हुए थे। उन्होंने संस्थान में क्रांतिकारी शैक्षणिक सुधार करते हुए पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को नया रूप दिया। सबसे महत्वपूर्ण सुधार यह था कि उन्होंने गैर-ब्राह्मण छात्रों के लिए भी संस्कृत शिक्षा के द्वार पूरी तरह खोल दिए। इसके साथ ही पाश्चात्य ज्ञान एवं विज्ञान को भी शिक्षण का भाग बनाया।

9. (B) उन्होंने बंगाली वर्णमाला के सरलीकरण का विरोध किया और पारंपरिक जटिल लिपियों का सख्ती से पालन किया।
ईश्वर चंद्र विद्यासागर बंगाली गद्य के जनक माने जाते हैं। उन्होंने बंगाली वर्णमाला और वर्तनी का सरलीकरण किया तथा 'वर्ण परिचय' पुस्तक की रचना की। उन्होंने बेथ्यून के साथ बालिका शिक्षा हेतु कार्य किया, संस्कृत कॉलेज में पाश्चात्य चिंतन लागू किया और निजी व्यय पर मॉडल विद्यालय स्थापित किए। इसलिए बंगाली वर्णमाला के सरलीकरण का विरोध करने का कथन पूरी तरह असत्य है।

10. (C) P-4, Q-3, R-2, S-1
19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों में विभिन्न विचारकों का योगदान अतुलनीय रहा है। राजा राममोहन राय ने 1828 में ब्रह्म समाज की नींव रखी, जिसका उद्देश्य एकेश्वरवाद था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बंबई में आर्य समाज स्थापित किया। आत्माराम पांडुरंग ने 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की, तथा स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन का गठन किया था।

NODIA

11. (D) वेद
स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को हिंदू धर्म, ज्ञान और सत्य का एकमात्र अंतिम तथा अचूक प्रमाण स्वीकार किया। उनका प्रसिद्ध नारा "वेदों की ओर लौटें" था, क्योंकि उनका मानना था कि उत्तर-वैदिक काल के पुराणों ने समाज में मूर्तिपूजा, जातिगत विषमता, अंधविश्वास और बहुदेववाद को बढ़ावा दिया। वैदिक ज्ञान ही विशुद्ध एकेश्वरवाद और सामाजिक समता का वास्तविक आधार प्रस्तुत करता है।

12. (B) 3, 1, 2, 4
स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने मुख्य ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रथम संस्करण 1874-75 में प्रकाशित कराया था। इसके पश्चात अप्रैल 1875 में बंबई में आर्य समाज की स्थापना हुई। संगठन का मुख्यालय 1877 में लाहौर स्थानांतरित किया गया। कालांतर में 1893 में पाश्चात्य शिक्षा और आहार संबंधी मतभेदों के कारण आर्य समाज कॉलेज तथा गुरुकुल गुटों में पूरी तरह विभाजित हो गया।

13. (B) परोपकारिणी सभा
स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने जीवन के अंतिम वर्षों में राजपूताने की रियासतों में समाज एवं धर्म सुधार का कार्य किया। 1883 में उदयपुर में उन्होंने 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य वैदिक साहित्य के मुद्रण, अनाथों के संरक्षण, वैदिक सिद्धांतों के प्रचार और जनकल्याणकारी गतिविधियों को संचालित करना था। महाराणा सज्जन सिंह इसके प्रथम अध्यक्ष बने।

14. (B) विधवा पुनर्विवाह
आर्य समाज ने हिंदू समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया, जिनमें मूर्ति पूजा, बाल विवाह, अंधविश्वास और जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था शामिल थीं। हालांकि, आर्य समाज ने विधवा पुनर्विवाह का विरोध नहीं किया, बल्कि इसका जोरदार समर्थन किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने विधवाओं के सम्मानजनक पुनर्वास और अधिकारों की रक्षा हेतु विधवा विवाह को सामाजिक मान्यता देने पर बल दिया।

15. (A) आर्य समाज
'शुद्धि आंदोलन' आर्य समाज द्वारा प्रारंभ किया गया एक प्रमुख सामाजिक-धार्मिक कार्यक्रम था। इसका मुख्य उद्देश्य उन व्यक्तियों को पुनः हिंदू धर्म में वापस लाना था, जिन्होंने परिस्थितियों, दबाव या प्रलोभन के कारण अन्य धर्मों को स्वीकार कर लिया था। स्वामी दयानंद के अनुसार वैदिक अनुष्ठानों द्वारा शुद्धि करके धर्म परिवर्तित लोगों को स्वधर्म में पुनर्स्थापित करना समाज के हित में था।

16. (C) व्यावहारिक वेदांत और मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा मानना
स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन का मुख्य दार्शनिक आधार 'व्यावहारिक वेदांत' था। स्वामी विवेकानंद ने अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को केवल सैद्धांतिक चर्चाओं तक सीमित न रखकर उन्हें व्यावहारिक जीवन में लागू किया। उनका मानना था कि पीड़ित और निर्धन मनुष्यों की सेवा ही ईश्वर की वास्तविक उपासना है। इसलिए समाज सेवा को आध्यात्मिक साधना का अभिन्न अंग माना गया।

17. (B) केवल I, II और III
स्वामी विवेकानंद ने 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसने आपदा राहत, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण में बड़ा योगदान दिया। मिशन ने आध्यात्मिक चेतना के विकास हेतु प्रतीक एवं मूर्ति पूजा की उपयोगिता को स्वीकार किया। यह संगठन कोई संकीर्ण या कट्टरपंथी संस्था नहीं थी, बल्कि यह सभी धर्मों के प्रति समान आदर तथा सहिष्णुता की सर्वोच्च भावना रखती थी।

18. (B) 1893
स्वामी विवेकानंद ने सितम्बर 1893 में अमेरिका के शिकागो में आयोजित 'विश्व धर्म संसद' में भाग लिया था। अपने भाषण की शुरुआत "मेरे अमेरिकी भाइयों और बहनों" से करके उन्होंने पश्चिमी श्रोताओं को प्रभावित किया। इस संबोधन के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति, वेदांत दर्शन तथा सार्वभौमिक भ्रातृत्व का संदेश पूरे विश्व में प्रसारित करके भारत का मान-सम्मान एवं गौरव बढ़ाया।

19. (B) मैडम ब्लावात्स्की और कर्नल ऑलकॉट
थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 1875 में न्यू यॉर्क में मैडम एच.पी. ब्लावात्स्की और कर्नल एच.एस. ऑलकॉट द्वारा की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य प्राचीन धर्मों, दर्शन और विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित करना तथा विश्व बंधुत्व का विकास करना था। 1882 में इस संस्था ने भारत में मद्रास के पास अड्यार में अपना प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय स्थापित किया था।

20. (C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
एनी बेसेंट ने 1898 में बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की थी, जो आगे चलकर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। हालांकि, उनका उद्देश्य हिंदू दर्शन को हतोत्साहित करना कदापि नहीं था। वे स्वयं भारतीय दर्शन और हिंदू शास्त्रों की प्रशंसक थीं। वे पश्चिमी विज्ञान के साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का समन्वय करना आवश्यक मानती थीं।

21. (A) कर्म और पुनर्जन्म
भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी के सिद्धांतों का मुख्य वैचारिक आधार प्राचीन भारतीय दर्शन में वर्णित 'कर्म' और 'पुनर्जन्म' के सिद्धांत थे। इस संस्था ने यह प्रतिपादित किया कि मानव जीवन का विकास कर्मफल तथा पुनर्जन्म के चक्र द्वारा ही नियंत्रित होता है। इन वैदिक अवधारणाओं को अपनाकर उन्होंने भारतीय जनमानस में अपनी आध्यात्मिक विरासत के प्रति अपार निष्ठा एवं गौरव जगाया।

22. (C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है
सर सैयद अहमद खान ने धार्मिक कट्टरता को दूर करने तथा मुस्लिम समाज में आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा का प्रसार करने हेतु अलीगढ़ आंदोलन चलाया। परंतु उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विरोध किया और मुसलमानों को कांग्रेस की राजनीतिक

Downloaded from www.pdf.tube

गतिविधियों से दूर रहने की सलाह दी। उनका विचार था कि इस समय राजनीति की अपेक्षा शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना अधिक हितकर है।

23. (B) केवल III
सर सैयद अहमद खान ने 1875 में अलीगढ़ में कॉलेज की स्थापना की और सामाजिक चेतना लाने के लिए 'तहज़ीब-उल-अखलाक' का सम्पादन किया। तीसरा कथन गलत है क्योंकि उन्होंने पर्दा प्रथा, अशिक्षा तथा कुरीतियों की आलोचना की थी और स्त्रियों की स्थिति में सुधार की वकालत की थी। वे महिलाओं को समाज में उचित स्थान दिलाने के पक्षधर माने जाते थे।

24. (D) मौलाना अबुल कलाम आजाद
मौलाना अबुल कलाम आजाद अलीगढ़ आंदोलन की विचारधारा से सम्बद्ध नहीं थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुख्य नेता तथा प्रखर राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन का कड़ा विरोध किया। इसके विपरीत अल्ताफ हुसैन हाली, शिब्ली नोमानी और चिराग अली अलीगढ़ आंदोलन के प्रमुख बौद्धिक सहयोगी थे और उन्होंने सर सैयद के शैक्षणिक अभियानों में महत्वपूर्ण सक्रिय भूमिका निभाई थी।

25. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
ज्योतिबा फुले ने 1873 में वंचित वर्गों के उत्थान हेतु सत्यशोधक समाज की स्थापना की। महादेव गोविंद रानाडे प्रार्थना समाज के प्रमुख नेता थे, जिन्होंने सामाजिक सुधारों को दिशा दी। ई.वी. रामासामी पेरियार ने तमिलनाडु में आत्म-सम्मान आंदोलन का नेतृत्व किया, तथा डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने दलितों के अधिकारों के लिए बहिष्कृत हितकारिणी सभा का सफलतापूर्वक गठन किया था।

26. (C) महाराष्ट्र की भक्ति परंपरा
प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में बंबई में हुई थी। इस संस्था ने अपने आध्यात्मिक तथा सामाजिक सुधारों हेतु महाराष्ट्र की मध्यकालीन भक्ति परंपरा से प्रेरणा प्राप्त की। संत तुकाराम, नामदेव और ज्ञानेश्वर जैसे भक्ति संतों के समतावादी विचारों, एकेश्वरवाद तथा जाति-भेद विरोधी शिक्षाओं ने प्रार्थना समाज के सिद्धांतों और कार्यप्रणाली को अत्यधिक तथा गहराई से मार्गदर्शित किया था।

27. (D) केशव चंद्र सेन
केशव चंद्र सेन ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता थे, जिन्होंने भारत के विभिन्न भागों का भ्रमण किया। 1864 और 1867 में बंबई तथा दक्षिण भारत की उनकी यात्राओं ने स्थानीय विचारकों को प्रेरित किया। उनके भाषणों के फलस्वरुप ही प्रार्थना समाज का विचार लोकप्रिय हुआ और यह संगठन एक अखिल भारतीय सुधार आंदोलन के रूप में उभरकर सामने आ सका।

28. (A) ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन
इन सामाजिक-धार्मिक संगठनों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: राजा राममोहन राय ने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। इसके पश्चात 1867 में प्रार्थना समाज गठित हुआ। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में आर्य समाज की नींव रखी। अंत में स्वामी विवेकानंद ने 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। इस प्रकार इन संगठनों का ऐतिहासिक क्रम पूरी तरह सुसंगत है।

29. (B) निम्न जातियों के लिए सामाजिक न्याय और समान अधिकार सुरक्षित करना
ज्योतिबा फुले द्वारा 1873 में पुणे में स्थापित सत्यशोधक समाज का मुख्य उद्देश्य शोषित, वंचित और निम्न जातियों के लोगों को धार्मिक तथा सामाजिक उत्पीड़न से मुक्ति दिलाना था। इस संगठन ने समाज में समता, न्याय, शिक्षा और मानव अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए कार्य किया। इसने पुरोहित वर्ग के वर्चस्व को चुनौती देकर वंचितों में नया स्वाभिमान एवं आत्म-विश्वास जगाया।

30. (A) केवल I, II और III
सत्यशोधक समाज की स्थापना 1873 में पुणे में हुई। इसने वर्ण व्यवस्था और धार्मिक कर्मकांडों में पुरोहितों के वर्चस्व का विरोध किया। सावित्रीबाई फुले ने बालिका शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चौथा कथन गलत है क्योंकि इस संगठन को कांग्रेस से कोई सहायता या वैचारिक समर्थन प्राप्त नहीं हुआ था, क्योंकि फुले कांग्रेस को उच्च जातियों का प्रभुत्व वाला संगठन मानते थे।

31. (A) गुलामगिरी
'गुलामगिरी' ज्योतिबा फुले द्वारा 1873 में लिखी गई एक क्रांतिकारी पुस्तक है। इसमें उन्होंने भारत की जाति व्यवस्था, वर्ण भेद और सामाजिक विषमता की कठोर आलोचना की। उन्होंने अपनी इस पुस्तक को अमरीका के दासता-विरोधी आंदोलनकारी सेनानियों को समर्पित किया। फुले का मानना था कि भारत के शोषित वर्गों की पीड़ा अमरीकी दासों के समान ही कष्टदायक और अत्यंत दुखद थी।

NODIA

32. (C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है
सिंह सभा आंदोलन की शुरुआत 1873 में अमृतसर में सिख धर्म के शुद्धिकरण और ईसाई धर्म प्रचारकों की चुनौतियों का सामना करने के लिए हुई थी। परंतु इस आंदोलन का उद्देश्य कोई स्वतंत्र सिख राज्य बनाना नहीं था, अतः दूसरा कथन असत्य है। इसका मुख्य लक्ष्य सिखों में आधुनिक शिक्षा का प्रसार और धार्मिक सिद्धांतों की रक्षा करना ही निर्धारित था।

33. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
1920 के दशक का अकाली आंदोलन सिंह सभा द्वारा जागृत चेतना का ही परिणाम था। सिंह सभा ने सिखों को अपने धार्मिक स्थलों के प्रति जागरूक किया। अकालियों ने गुरुद्वारों पर काबिज भ्रष्ट महंतों के नियंत्रण को समाप्त करने के लिए संघर्ष किया। इन महंतों को ब्रिटिश सरकार का समर्थन प्राप्त था, जिससे यह आंदोलन अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं व्यापक बन गया था।

34. (C) खालसा कॉलेज
सिंह सभा आंदोलन के शैक्षणिक प्रयासों के परिणामस्वरूप 1892 में अमृतसर में प्रसिद्ध 'खालसा कॉलेज' की स्थापना की

गई। इस कॉलेज का मुख्य उद्देश्य सिख युवाओं को आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और विज्ञान के साथ-साथ पंजाबी भाषा तथा धार्मिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना था। इस संस्थान ने पंजाब में बौद्धिक तथा सामाजिक पुनर्जागरण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया था।

35. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
रहनुमाई मजदायासन सभा की स्थापना 1851 में पारसी समाज के सुधार हेतु हुई। 'रास्त गोफ्तार' एक प्रसिद्ध गुजराती समाचार पत्र था जो सुधारवादी चेतना फैलाता था। दादाभाई नौरोजी पारसी सुधारकों के अग्रणी नेता थे। बी.एम. मालाबारी ने बाल विवाह के विरोध और स्त्रियों के अधिकारों के लिए जीवनभर कार्य किया। इस प्रकार सभी युग्म ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

36. (D) पारसी महिलाओं की सामाजिक स्थिति और शिक्षा में सुधार करना
रहनुमाई मजदायासन सभा ने पारसी समुदाय की सामाजिक कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया। इसका मुख्य केंद्रित क्षेत्र पारसी महिलाओं की सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाना और उन्हें आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराना था। इस संस्था ने पर्दा प्रथा के उन्मूलन और विवाह संबंधी सुधारों हेतु व्यापक कार्य किया, जिससे पारसी स्त्रियां सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से सशक्त बनीं।

37. (A) बहरामजी मालाबारी
पारसी समाज सुधारक बहरामजी मालाबारी ने बाल विवाह जैसी कुरीति को समाप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष किया। उनके द्वारा चलाए गए जन अभियानों और याचिकाओं के परिणामस्वरूप ही ब्रिटिश सरकार ने 1891 में सम्मति आयु अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम के द्वारा बालिकाओं के विवाह की न्यूनतम सहमति आयु में वृद्धि करके उन्हें कानूनी संरक्षण और सुरक्षा प्रदान की गई।

38. (C) मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) और देशी भाषा के साहित्य की स्थापना करना
ईसाई मिशनरियों ने भारत में मुद्रणालय तकनीक को बढ़ावा दिया और क्षेत्रीय देशी भाषाओं में साहित्य का प्रकाशन किया। यद्यपि उनका प्राथमिक लक्ष्य धर्म प्रचार था, परंतु प्रिंटिंग प्रेस के प्रसार ने भारतीय समाज सुधारकों को अपनी पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित करने और जनसामान्य तक अपने सुधारवादी विचारों को पहुँचाने में अप्रत्यक्ष रूप से महान सहायता प्रदान की थी।

39. (A) केवल I और II
अलेक्जेंडर डफ ने कलकत्ता में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार किया तथा श्रीरामपुर मिशन ने बंगाल में प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। तीसरा कथन गलत है क्योंकि ईसाई मिशनरियों ने जाति व्यवस्था का समर्थन नहीं किया, बल्कि इसके भेदभावपूर्ण स्वरूप पर प्रहार किया और शोषित जातियों के शैक्षणिक विकास का प्रयास किया। इस प्रकार केवल प्रथम दो कथन ही पूरी तरह सत्य हैं।

40. (A) 2, 1, 3, 4
इन सामाजिक अधिनियमों का सही ऐतिहासिक क्रम इस प्रकार है: सती प्रथा उन्मूलन नियम 1829 में पारित किया गया। इसके बाद लेक्स लोकी अधिनियम 1850 में बनाया गया। तत्पश्चात हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 में लागू हुआ। अंत में सम्मति आयु अधिनियम 1891 में पारित हुआ। अतः यह क्रम कालानुक्रमिक रूप से सही और तर्कसंगत सिद्ध होता है।

41. (B) लॉर्ड विलियम बेंटिक
1829 में सती प्रथा के उन्मूलन का ऐतिहासिक नियम गवर्नर-जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक के कार्यकाल में पारित किया गया। राजा राममोहन राय के अथक प्रयासों और जन-जागरण अभियानों ने ब्रिटिश सरकार को यह कड़ा कानून बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अधिनियम के तहत सती होने की कुप्रथा को गैर-कानूनी और दंडनीय अपराध घोषित कर प्रतिबंधित कर दिया गया था।

42. (C) केवल IV
सती उन्मूलन नियम 1829 के संदर्भ में शुरुआती तीन कथन सत्य हैं। चौथा कथन गलत है क्योंकि कानून ने पीड़िता अर्थात विधवा स्त्री को मृत्युदंड देने का कोई प्रावधान नहीं किया था। कानून का मुख्य उद्देश्य विधवा को सती होने के लिए बाध्य करने या उकसाने वाले संबंधियों तथा व्यक्तियों को कानूनी रूप से कठोर दंड देना था।

43. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित होने के बावजूद समाज में आसानी से स्वीकार नहीं हुआ और बहुत कम विवाह हुए। इसका मुख्य कारण यह था कि अधिनियम के नियमों के अनुसार पुनर्विवाह करने वाली विधवा को अपने दिवंगत पति की संपत्ति के अधिकारों से वंचित होना पड़ता था। इस आर्थिक हानि ने विधवाओं को पुनर्विवाह से काफी सीमा तक हतोत्साहित किया था।

44. (A) कंदुकुरी वीरेशलिंगम
कंदुकुरी वीरेशलिंगम को दक्षिण भारत में समाज सुधार और पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने राजमुंदरी में 'राजमुंदरी सोशल रिफॉर्म एसोसिएशन' की स्थापना की और दक्षिण भारत में पहला विधवा पुनर्विवाह संपन्न कराया। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा तथा विधवाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित करके नए युग का सूत्रपात किया था।

45. (B) धोंडो केशव कर्वे
महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने 1899 में पूना के समीप अनाथ बालिकाश्रम की स्थापना की थी। इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य विधवा स्त्रियों को आश्रय, शिक्षा तथा स्वरोजगार का प्रशिक्षण देकर उन्हें समाज में आत्मनिर्भर बनाना था। कर्वे ने स्वयं एक विधवा से विवाह करके समाज के सामने एक अनुकरणीय एवं साहसिक उदाहरण भी प्रस्तुत किया था।

Click Here to Buy book on Flipkart

46. (B) केशव चंद्र सेन
1872 का नेटिव मैरिज एक्ट केशव चंद्र सेन के समाज सुधारवादी प्रयासों से ही संभव हो सका था। केशव चंद्र सेन ने बाल विवाह की कुप्रथा को समाप्त करने और अंतर-जातीय विवाहों को कानूनी स्वीकृति दिलाने के लिए निरंतर आंदोलन चलाया। इस अधिनियम के माध्यम से विवाह हेतु न्यूनतम आयु का कानूनन सफलता के साथ निर्धारण किया गया था।

47. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
सामाजिक सुधार संबंधी कानूनों का सही मिलान इस प्रकार है: सती प्रथा उन्मूलन कानून 1829 में बना। हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 में लागू हुआ। सम्मति आयु अधिनियम 1891 में पारित किया गया तथा बाल विवाह निरोधक शारदा अधिनियम 1929 में पारित हुआ। यह सभी अधिनियम भारतीय समाज सुधार के ऐतिहासिक मील के पत्थर सिद्ध हुए हैं।

48. (D) I, II और III
1929 के बाल विवाह निरोधक कानून के बारे में तीनों कथन सत्य हैं। अजमेर के समाज सुधारक हरबिलास शारदा के प्रयासों से पारित होने के कारण इसे 'शारदा अधिनियम' कहा गया। इसने विवाह के समय बालिका के लिए न्यूनतम आयु 14 वर्ष और बालक के लिए 18 वर्ष तय की थी, जो एक अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सुधार था।

49. (D) कन्या शिशु हत्या और विवाह में अत्यधिक व्यय
1889 में गठित 'वॉल्टरकृत राजपूताना हितकारिणी सभा' का मुख्य लक्ष्य राजपूत समुदाय में फैली सामाजिक कुप्रथाओं को नियंत्रित करना था। विशेष रूप से कन्या शिशु हत्या को रोकने और विवाह समारोहों में किए जाने वाले अत्यधिक धन के अपव्यय को सीमित करने हेतु इस सभा ने दिशानिर्देश बनाए थे। इससे समाज के निर्धन परिवारों को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बड़ी राहत मिली थी।

50. (C) विवाहों पर अत्यधिक व्यय और बहुविवाह
मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह द्वारा 1877 में स्थापित 'देश हितेषिणी सभा' का मुख्य उद्देश्य विवाहों के दौरान होने वाले अत्यधिक व्यय को नियंत्रित करना तथा बहुविवाह की प्रथा को समाप्त करना था। इस संगठन ने विवाह संबंधी खर्चे की सीमाएं तय कीं जिससे राजपूत समाज के लोगों को अनुचित आर्थिक बोझ से बड़ी मुक्ति मिल सकी।

51. (A) 12 वर्ष
1891 के सम्मति आयु अधिनियम ने बालिकाओं के लिए विवाह की न्यूनतम कानूनी आयु को 10 वर्ष से बढ़ाकर 12 वर्ष कर दिया। इस कानून का मुख्य उद्देश्य कम उम्र में बालिकाओं के विवाह और शारीरिक उत्पीड़न को रोकना था। यद्यपि बाल गंगाधर तिलक जैसे रुढ़िवादिताओं ने इसमें विदेशी सरकार के हस्तक्षेप का कड़ा विरोध किया था।

52. (A) बेथ्यून स्कूल (कलकत्ता), शारदा सदन (बंबई), एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय (पुणे)
महिला शैक्षणिक और सामाजिक संस्थाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: बेथ्यून स्कूल की स्थापना 1849 में कलकत्ता में हुई। तत्पश्चात पंडिता रमाबाई ने 1889 में शारदा सदन की स्थापना की। अंत में डी.के. कर्वे ने 1916 में एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय स्थापित किया। इस प्रकार यह क्रम ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः प्रामाणिक एवं सही है।

53. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
दिए गए दोनों कथन पूरी तरह सही हैं। पंडिता रमाबाई ने महिला अधिकारों हेतु आर्य महिला समाज की नींव रखी। दूसरी तरफ ताराबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' लिखकर समाज में मौजूद पितृसत्तात्मक सोच और लैंगिक असमानता पर करारा प्रहार किया था। इन दोनों महिलाओं ने भारत में महिला मुक्ति आंदोलन का आधार मजबूती के साथ निर्मित किया था।

54. (A) केवल I, II और III
डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी भारत की पहली महिला विधायक थीं और उन्होंने देवदासी प्रथा के खिलाफ कानून बनवाया। उन्होंने अव्वई होम की स्थापना की। चौथा कथन गलत है क्योंकि वे एक चिकित्सक थीं और उन्होंने आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा का विरोध नहीं किया, बल्कि कैंसर संस्थान बनाकर चिकित्सा सेवा का अभूतपूर्व एवं प्रशंसनीय कार्य किया था।

55. (A) भारतीय मुस्लिम
बेगम रोकेया साखावत हुसैन ने विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं के शैक्षणिक और सामाजिक विकास के लिए कार्य किया। उन्होंने मुस्लिम लड़कियों के लिए विद्यालयों की स्थापना की और पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक रुकावटों को समाप्त करने का प्रयास किया। उनकी रचनाओं ने मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा तथा अधिकारों के प्रति नई चेतना जगाने का काम सफलतापूर्वक किया था।

56. (D) गैर-ब्राह्मण जातियां
1916 में मद्रास में गठित जस्टिस पार्टी मुख्य रूप से गैर-ब्राह्मण जातियों के हितों की रक्षा करने वाला दल था। उस समय प्रशासन और राजनीति में ब्राह्मण वर्ग का अत्यधिक आधिपत्य था। इस दल ने गैर-ब्राह्मणों को नौकरियों तथा शिक्षा में अवसर दिलाने और उनके राजनीतिक अधिकारों की रक्षा हेतु निरंतर आंदोलन चलाया।

57. (B) सी. राजगोपालाचारी
सी. राजगोपालाचारी जस्टिस पार्टी के संस्थापकों में शामिल नहीं थे, बल्कि वे कांग्रेस के प्रमुख नेता थे। टी.एम. नायर, पी. त्यागराया चेटी और सी. नटेसा मुदलियार ने मिलकर 1916 में जस्टिस पार्टी की स्थापना की थी। इस दल का गठन दक्षिण भारत में गैर-ब्राह्मण जातियों के उत्थान और अधिकारों की रक्षा हेतु विशेष रूप से किया गया था।

58. (C) सरकारी नौकरियों और विधायिका में गैर-ब्राह्मणों के लिए आरक्षण
जस्टिस पार्टी की मुख्य मांग मद्रास प्रेसीडेंसी की सरकारी सेवाओं, शैक्षणिक संस्थाओं तथा प्रांतीय विधायिका में गैर-ब्राह्मण वर्गों के लिए आरक्षण प्राप्त करना थी। इस दल ने तर्क

Downloaded from www.pdf.tube

दिया कि उच्च पदों पर केवल एक ही वर्ग का नियंत्रण लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के विरुद्ध है, इसलिए सभी जातियों को समान अधिकार एवं अवसर मिलने चाहिए।

59. (D) "शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो"
डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का गठन किया। इस संगठन का मूल ध्येय वाक्य "शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो" निर्धारित किया गया था। इस संस्था ने शोषित तथा वंचित वर्गों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने, उन्हें शिक्षित करने और आत्म-सम्मान की भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक योगदान दिया था।

60. (A) सार्वजनिक चवदार तालाब से पानी भरने का अधिकार
20 मार्च 1927 को डॉ. बी.आर. अंबेडकर के नेतृत्व में महाड़ सत्याग्रह आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक चवदार तालाब से शोषित वर्ग के लोगों को पानी लेने का मूलभूत नागरिक अधिकार दिलाना था। यह आंदोलन केवल जल प्राप्ति का प्रयास नहीं था, बल्कि मानवीय गरिमा और सामाजिक समानता की प्राप्ति का एक ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी प्रतीक था।

61. (B) हरिजन
'हरिजन' पत्र का सम्पादन महात्मा गांधी द्वारा किया जाता था, न कि डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा। डॉ. अंबेडकर ने वंचित वर्गों के अधिकारों और विचारों के प्रचार हेतु 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत' और 'जनता' जैसे समाचार पत्रों की शुरुआत की थी। इस प्रकार हरिजन समाचार पत्र डॉ. अंबेडकर की पत्रकारिता से सम्बद्ध अथवा संबंधित नहीं है।

62. (B) इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी
1936 में डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना की थी। इस राजनीतिक दल का मुख्य उद्देश्य 1937 के प्रांतीय चुनावों में श्रमिकों, कृषकों तथा शोषित वर्गों के अधिकारों का प्रतिनिधित्व करना था। इस दल ने श्रम सुधारों, जातिगत समानता और शोषितों के राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया।

63. (A) ब्राह्मणवादी वर्चस्व को समाप्त करना और समान अधिकार सुनिश्चित करना
ई.वी. रामासामी पेरियार द्वारा 1925 में प्रारंभ किए गए आत्म-सम्मान आंदोलन का मुख्य लक्ष्य तमिल समाज में ब्राह्मणवादी वर्चस्व को समाप्त करना और गैर-ब्राह्मणों को समान अधिकार दिलाना था। इस आंदोलन ने अंधविश्वासों का विरोध करते हुए बुद्धिवाद, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय पर बल दिया, जिससे दक्षिण भारत में बड़ा सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव आया।

64. (C) पुजारियों या धार्मिक अनुष्ठानों के बिना आत्म-सम्मान विवाह
आत्म-सम्मान आंदोलन ने 'आत्म-सम्मान विवाह' की एक नई सामाजिक प्रथा प्रारंभ की। इन विवाहों में ब्राह्मण पुजारियों की उपस्थिति और वैदिक कर्मकांडों को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया। विवाह केवल वर-वधू की आपसी सहमति तथा सरल प्रतिज्ञा से संपन्न होते थे। इस प्रथा का मुख्य उद्देश्य विवाह प्रणाली से जातिगत और पुरोहितीय वर्चस्व को पूरी तरह से समाप्त करना था।

65. (D) कुडी अरासु
ई.वी. रामासामी पेरियार ने 1925 में 'कुडी अरासु' नामक तमिल साप्ताहिक पत्र की शुरुआत की। यह समाचार पत्र आत्म-सम्मान आंदोलन का मुख्य पत्र था, जिसके द्वारा उन्होंने ब्राह्मणवाद, जातिगत विषमता और अंधविश्वासों के विरुद्ध विचार व्यक्त किए। इस पत्रिका ने तमिलनाडु में सामाजिक और राजनीतिक चेतना जगाने में अत्यंत ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

66. (C) शुद्ध इस्लामी शिक्षाओं पर केंद्रित एक पारंपरिक आंदोलन
देवबंद आंदोलन की स्थापना 1866 में दारुल उलूम देवबंद के माध्यम से हुई थी। यह एक पारंपरिक इस्लामी पुनरुद्धारवादी आंदोलन था, जिसका मुख्य उद्देश्य कुरान और हदीस की मूल एवं शुद्ध शिक्षाओं को पुनर्स्थापित करना था। इस आंदोलन ने पाश्चात्य शिक्षा और ब्रिटिश प्रभाव को अस्वीकार करते हुए पारंपरिक धार्मिक शिक्षा प्रणाली को ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी थी।

67. (B) मुहम्मद कासिम नानौतवी और रशीद अहमद गंगोही
देवबंद आंदोलन के प्रमुख संस्थापक मुहम्मद कासिम नानौतवी और रशीद अहमद गंगोही थे। इन इस्लामी विद्वानों ने मिलकर 1866 में सहारनपुर के देवबंद में मदरसा स्थापित किया। उनका उद्देश्य मुस्लिम समुदाय में शुद्ध धार्मिक ज्ञान का प्रसार करना तथा औपनिवेशिक शासन के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रभावों से अपने धर्म की रक्षा करना पूर्णतः निर्धारित था।

NODIA

68. (D) देवबंद स्कूल ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया, जबकि अलीगढ़ आंदोलन ने इसका विरोध किया।
देवबंद और अलीगढ़ आंदोलनों के बीच मुख्य वैचारिक अंतर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति उनका रुख था। देवबंद आंदोलन ने ब्रिटिश शासन का विरोध करते हुए कांग्रेस का समर्थन किया, जबकि अलीगढ़ आंदोलन ने अंग्रेजों के प्रति निष्ठा रखी और कांग्रेस की गतिविधियों का विरोध किया। इस प्रकार दोनों की राजनीतिक दिशाएँ एक-दूसरे के सर्वथा विपरीत थीं।

69. (A) इस्लाम का शुद्धिकरण करना और इसकी मूल शिक्षाओं को बहाल करना
सैयद अहमद के नेतृत्व में शुरु हुए वहाबी आंदोलन का प्राथमिक उद्देश्य इस्लामी समाज में व्याप्त कुरीतियों का निवारण करना तथा उसकी मूल शिक्षाओं को पुनर्स्थापित करना था। इस आंदोलन ने धार्मिक शुद्धिकरण के साथ-साथ मुस्लिम समाज में आध्यात्मिक चेतना जगाने पर ध्यान केंद्रित किया ताकि गैर-इस्लामी प्रथाओं को पूर्णतः समाप्त एवं निष्प्रभावी किया जा सके।

70. (C) दार-उल-हरब (युद्ध की भूमि)
वहाबी आंदोलनकारी नेताओं ने ब्रिटिश शासित भारत को 'दार-उल-हरब' यानी युद्ध की भूमि घोषित किया था। उनका तर्क

था कि विदेशी और गैर-मुस्लिम सत्ता के नियंत्रण में रहने के कारण देश में धार्मिक स्वतंत्रता बाधित हुई है। इसलिए इसे पुनः स्वतंत्र तथा इस्लामी भूमि बनाने हेतु अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष करना अत्यंत अनिवार्य माना गया।

71. (A) पटना
भारत में वहाबी आंदोलन का मुख्य परिचालन केंद्र और मुख्यालय पटना नगर था। पटना से ही इस आंदोलन के लिए वित्तीय संसाधन, संदेश और स्वयंसेवक उत्तर-पश्चिम सीमांत क्षेत्रों में भेजे जाते थे। अंग्रेजों ने इस आंदोलन के प्रभाव को कुचलने के लिए पटना में अनेक मुकदमे चलाकर इसके नेताओं को जेलों में कठोरता से बंद कर दिया था।

72. (D) ईसाई धर्मांतरितों के लिए पैतृक संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करके
1850 के लेक्स लोकी अधिनियम ने धार्मिक परिवर्तन करने वाले व्यक्तियों को उनके पैतृक संपत्ति के अधिकारों से वंचित होने से बचाया। इस कानून के माध्यम से विशेष रूप से ईसाई धर्म अपनाने वाले भारतीयों के उत्तराधिकार अधिकारों की सुरक्षा की गई। हालांकि पारंपरिक हिंदू और मुस्लिम समाजों ने इसे अपने धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप मानकर इसका विरोध किया था।

73. (B) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने बंगाल के उच्च जातीय समाज में फैली 'कुलीनवाद' यानी बहुविवाह की बुराई के विरुद्ध प्रखर आंदोलन चलाया। उन्होंने प्रमाणों के साथ यह दर्शाया कि किस प्रकार वृद्ध कुलीन पुरुष अनेक कम उम्र बालिकाओं से विवाह करके उनका जीवन नष्ट कर देते थे। उन्होंने इसके उन्मूलन के लिए सरकार से कानून बनाने की पुरजोर मांग की थी।

74. (C) धार्मिक स्थलों का प्रबंधन स्थानीय समितियों को सौंपना
1863 के धार्मिक बंदोबस्ती अधिनियम द्वारा ब्रिटिश सरकार ने भारतीय मंदिरों और धार्मिक स्थानों के प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण से स्वयं को अलग कर लिया। इस अधिनियम के तहत धार्मिक संस्थानों के प्रबंधन तथा उनकी संपत्तियों की देखरेख की जिम्मेदारी स्थानीय समितियों और न्यासों को सौंप दी गई, ताकि सरकार धार्मिक तटस्थता की नीति बनाए रख सके।

75. (D) मद्रास प्रेसीडेंसी
देवदासी प्रथा के उन्मूलन हेतु मुख्य सामाजिक और विधायी प्रयास मद्रास प्रेसीडेंसी में केंद्रित थे। डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी जैसे समाज सुधारकों ने मंदिरों में महिलाओं के इस शोषण के खिलाफ निरंतर आवाज उठाई। इन प्रयासों के फलस्वरूप मद्रास प्रेसीडेंसी में कानून बनाकर इस प्रथा को घोषित कर पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया था।

76. (A) मदिरा और नशीली दवाओं का निषेध और प्रतिबंध
भारत में मद्यनिषेध आंदोलनों ने शराब और अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन का कड़ा विरोध किया। इन आंदोलनों का मुख्य मानना था कि मदिरापान सामाजिक पतन, आर्थिक निर्धनता और पारिवारिक विघटन का प्रमुख कारण है। अतः समाज सुधारकों ने शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने और लोगों को नशा-मुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित करने का व्यापक प्रयास किया था।

77. (B) महात्मा गांधी
महात्मा गांधी ने अपने सामाजिक एवं राजनीतिक रचनात्मक कार्यक्रमों में मद्यनिषेध अर्थात शराबबंदी को प्रमुखता से शामिल किया। उनका मानना था कि नशा व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक और आर्थिक जीवन को नष्ट कर देता है। राष्ट्रीय आंदोलनों के दौरान उनके आह्वान पर शराब की दुकानों की पिकेटिंग करके नशा-मुक्ति का व्यापक संदेश देश भर में दिया गया था।

78. (B) राजा राममोहन राय
राजा राममोहन राय ने 1822 में 'मिरात-उल-अखबार' नामक फ़ारसी पत्रिका की शुरुआत की थी। यह भारत की प्रथम फ़ारसी भाषा की सुधारवादी पत्रिका थी। इसके माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधारों, धार्मिक स्वतंत्रता तथा प्रशासनिक मुद्दों पर अपने विचार प्रकट किए। जब सरकार ने प्रेस पर कड़े नियम थोपे, तो उन्होंने विरोधस्वरूप इसका प्रकाशन स्थगित करने का निर्णय लिया था।

79. (A) बालशास्त्री जांभेकर
बालशास्त्री जांभेकर ने 1832 में 'दर्पण' नामक प्रथम मराठी समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। उन्हें मराठी पत्रकारिता का जनक कहा जाता है। 'दर्पण' ने विधवा पुनर्विवाह, वैज्ञानिक सोच, स्त्री शिक्षा और सामाजिक समानता जैसे प्रगतिशील विषयों पर जनचेतना फैलाई। इस पत्र ने महाराष्ट्र में समाज सुधार की एक नई लहर पैदा करने का ऐतिहासिक काम किया था।

80. (C) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
'सोम प्रकाश' बंगाली भाषा का एक प्रभावशाली साप्ताहिक पत्र था, जो ईश्वर चंद्र विद्यासागर से निकटता से जुड़ा हुआ था। इस समाचार पत्र ने विधवा पुनर्विवाह आंदोलन का समर्थन किया और नील की खेती करने वाले किसानों पर यूरोपीय बागान मालिकों के अत्याचारों को प्रमुखता से उजागर किया, जिससे इसे व्यापक जनसमर्थन एवं ख्याति प्राप्त हुई।

81. (D) प्रबुद्ध भारत
स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा से 1896 में 'प्रबुद्ध भारत' नामक अंग्रेजी पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया था। इस पत्रिका का मुख्य लक्ष्य भारतीय समाज को आध्यात्मिक तथा सामाजिक रूप से पुनर्जाग्रत करना था। इसमें वेदांत दर्शन, भारतीय संस्कृति और मानव सेवा से जुड़े विचार प्रकाशित किए जाते थे, जिससे युवाओं में राष्ट्रनिर्माण की भावना प्रबल रूप से पैदा हुई।

82. (C) गोपाल गणेश आगरकर
'सुधारक' समाचार पत्र की स्थापना 1888 में गोपाल गणेश आगरकर ने की थी। आगरकर एक प्रखर बुद्धिवादी और समाज सुधारक थे। उन्होंने इस पत्र के माध्यम से रूढ़िवादी हिंदू प्रथाओं, जाति-भेद और अंधविश्वासों पर तीखे प्रहार किए।

Click Here to Buy book on Amazon

उनका दृढ़ विश्वास था कि सामाजिक समानता और तर्कसंगत विचार ही समाज की वास्तविक प्रगति का वास्तविक आधार बन सकते हैं।

83. (B) सर सैयद अहमद खान
'तहज़ीब-उल-अखलाक' पत्रिका का सम्पादन सर सैयद अहमद खान द्वारा किया गया था। इस पत्रिका ने मुस्लिम समाज की पारंपरिक मानसिकता को बदलने और उनमें आधुनिक चेतना लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें सामाजिक सुधारों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और शिक्षा के महत्व पर लिखे गए लेखों ने मुस्लिम समाज को आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर करने का कार्य सफलता के साथ किया था।

84. (D) कठोर जातिगत बाधाओं पर प्रहार करके और आधुनिक भारतीय एकता को बढ़ावा देकर
19वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों ने संकीर्ण जातिगत दीवारों को तोड़ा और सामाजिक कुरीतियों का अंत करके भारतीय समाज को एकजुट किया। इन आंदोलनों ने लोगों में मानवीय गरिमा, समानता और स्वतंत्रता की चेतना जगाई, जिससे आधुनिक राष्ट्रवाद का विकास हुआ। एक सुधरा और संगठित समाज ही ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एकीकृत राष्ट्रीय संघर्ष करने में पूरी तरह सक्षम हो सका।

85. (A) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी नेता
कांग्रेस के उदारवादी नेताओं का मानना था कि राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने से पूर्व समाज का सामाजिक एवं नैतिक सुधार होना अत्यंत आवश्यक है। महादेव गोविंद रानाडे जैसे नेताओं ने स्पष्ट कहा था कि जब तक समाज में असमानता और कुरीतियां बनी रहेंगी, तब तक वास्तविक राजनीतिक अधिकार या स्वशासन फलदायी और सफल नहीं हो सकता।

86. (C) आर्य समाज
आर्य समाज ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुख्य धारा में आने से पूर्व ही स्वदेशी और स्वराज के विचारों को प्रचारित किया। स्वामी दयानंद सरस्वती प्रथम विचारक थे जिन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग और स्वदेशी शासन के महत्व पर बल दिया। उनके इस संदेश ने भारतीयों में राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा जागृत करने में बड़ा योगदान सफलता के साथ दिया।

87. (A) भारतीय कला, विज्ञान और नारीत्व के गौरव को बढ़ावा देकर
सिस्टर निवेदिता ने भारतीय कला, संस्कृति, विज्ञान और नारी शक्ति के गौरव को पुनर्जीवित करके राष्ट्रवाद के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने भारतीय वैज्ञानिकों और कलाकारों को प्रोत्साहित किया तथा युवाओं को स्वदेशी भावना अपनाने का संदेश दिया। उनके सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यों ने भारतीयों में अपनी महान विरासत के प्रति स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना का प्रखर संचार किया।

88. (D) शिव नारायण अग्निहोत्री - देव समाज
शिव नारायण अग्निहोत्री ने 1887 में लाहौर में 'देव समाज' की स्थापना की थी, अतः यह युग्म पूरी तरह सही है। इस संस्था ने समाज में नैतिक आचरण, गुरु भक्ति और सामाजिक कुप्रथाओं के अंत का संदेश दिया। अन्य विकल्पों के मिलावट ऐतिहासिक रुप से असत्य हैं, क्योंकि राधाकांत देव का संबंध धर्म सभा से था न कि ब्रह्म समाज से।

89. (B) चेमबेटी श्रीधरालू नायडू
1864 में मद्रास में स्थापित वेद समाज के मुख्य नेता चेमबेटी श्रीधरालू नायडू थे। यह संगठन ब्रह्म समाज के विचारों से गहराई से प्रभावित था। श्रीधरालू नायडू ने दक्षिण भारत में जातिगत विषमता को समाप्त करने, एकेश्वरवाद को बढ़ावा देने और विधवा विवाह को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके कारण इसे दक्षिण का ब्रह्म समाज भी कहा गया।

90. (C) आर्य समाज
गोविंद गिरि द्वारा भील जनजाति के सुधार हेतु चलाया गया 'भगत आंदोलन' आर्य समाज के विचारों और स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित था। इस आंदोलन ने आदिवासियों के बीच नशा-मुक्ति, नैतिक आचरण और सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया। गोविंद गिरि ने सम्प सभा का गठन करके आदिवासियों को अपने अधिकारों के लिए पूरी तरह संगठित किया था।

91. (B) 1870
1870 में ब्रिटिश सरकार ने बालिका शिशु हत्या निवारण अधिनियम पारित किया। इस कानून का मुख्य उद्देश्य उत्तर और पश्चिमी भारत की कुछ जातियों में प्रचलित नवजात कन्याओं की हत्या करने की अमानवीय प्रथा पर कड़ाई से रोक लगाना था। इस अधिनियम के तहत बालिकाओं के जन्म का पंजीकरण अनिवार्य किया गया ताकि उनकी सुरक्षा पूर्णतः सुनिश्चित की जा सके।

92. (A) राज्य के हस्तक्षेप का विरोध करने वाले कट्टरपंथी हिंदू और मुस्लिम
1929 के शारदा अधिनियम का विरोध हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के कट्टरपंथी एवं रुढ़िवादी वर्गों द्वारा किया गया था। इन वर्गों का तर्क था कि सरकार को उनके धार्मिक रीति-रिवाजों और व्यक्तिगत मामलों में कानून बनाकर हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। हालांकि, सुधारवादी नेताओं ने इस कानून का पूर्ण एवं जोरदार समर्थन किया था।

93. (B) ब्रह्म समाज ने पश्चिमी बुद्धिवाद से प्रेरणा ली, जबकि आर्य समाज पूरी तरह से स्वदेशी और पुनरुत्थानवादी था।
ब्रह्म समाज और आर्य समाज का तुलनात्मक अध्ययन दर्शाता है कि ब्रह्म समाज पश्चिमी आधुनिकता और बुद्धिवाद से प्रेरित था, जबकि आर्य समाज स्वदेशी वैदिक परंपराओं पर आधारित एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन था। आर्य समाज वेदों को अचूक मानता था, जबकि ब्रह्म समाज ने मानव बुद्धि और तर्क को किसी भी ग्रंथ से ऊपर सर्वोच्च स्थान प्रदान किया था।

94. (B) पंजाब और उत्तर-पश्चिम भारत के किसान और व्यापारी
ब्रह्म समाज का जनाधार बंगाल के उच्च वर्गीय बौद्धिक तबके तक ही सीमित रहा। इसके विपरीत, आर्य समाज ने पंजाब,

NODIA

संयुक्त प्रांत और उत्तर-पश्चिम भारत के किसानों, व्यापारियों और मध्यम वर्ग में अपनी गहरी पहुँच बनाई। इसकी सरल शिक्षाओं, स्वदेशी भावना और शैक्षणिक संस्थाओं ने सामान्य जनमानस को इस आंदोलन से बड़े पैमाने पर सफलतापूर्वक जोड़ा।

95. (A) अलीगढ़ ने पश्चिमी शिक्षा और अंग्रेजों के प्रति निष्ठा पर ध्यान केंद्रित किया, जबकि देवबंद ने पारंपरिक इस्लामी पांडित्य और साम्राज्यवाद-विरोध पर ध्यान केंद्रित किया।
अलीगढ़ आंदोलन का मुख्य जोर मुसलमानों को आधुनिक पश्चिमी शिक्षा देने और ब्रिटिश शासन से सहयोग करने पर था। इसके विपरीत, देवबंद आंदोलन ने पारंपरिक धार्मिक शिक्षा के संरक्षण और औपनिवेशिक शासन के विरोध पर बल दिया। इस प्रकार दोनों आंदोलनों के शैक्षणिक तथा राजनीतिक मार्ग एक-दूसरे से पूरी तरह भिन्न और विपरीत थे।

96. (C) इसने सीधे तौर पर निम्न जाति के इड़्हावा समुदाय का उद्धार किया
केरल में श्री नारायण गुरु का आंदोलन उच्च जातीय सुधारवादी प्रयासों से भिन्न था, क्योंकि यह शोषित इड़्हावा जाति के सामाजिक और आध्यात्मिक उत्थान पर केंद्रित था। उन्होंने "मानव जाति के लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर" का सिद्धांत दिया और वंचित वर्गों को शिक्षा तथा आत्म-सम्मान दिलाकर उनका सर्वांगीण विकास करने का ऐतिहासिक कार्य किया।

97. (D) उन्होंने ब्राह्मणवादी एकाधिकार को चुनौती देते हुए एक शिव मूर्ति की प्रतिष्ठा की
1888 में श्री नारायण गुरु ने अरुविप्पुरम में एक शिव मूर्ति की स्थापना करके धार्मिक इतिहास में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। उस समय मूर्ति प्रतिष्ठा का अधिकार केवल उच्च जातीय ब्राह्मणों के पास था। एक तथाकथित निम्न जाति के व्यक्ति द्वारा शिवलिंग स्थापित किए जाने ने पुरोहिती एकाधिकार को तोड़ दिया और सामाजिक क्रांति की ऐतिहासिक शुरुआत की।

98. (C) वे शहरी मध्यम वर्ग के अभिजात वर्ग तक ही सीमित रहे, ग्रामीण जनता तक नहीं पहुँच सके
19वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों की एक मुख्य सीमा यह थी कि इनका प्रभाव मुख्यतः शहरी शिक्षित मध्यम वर्ग तक ही सीमित रहा। ये आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली विशाल आम जनता और किसानों को व्यापक रूप से अपने साथ नहीं जोड़ सके। परिणामस्वरूप सुधारों का प्रत्यक्ष लाभ मुख्य रूप से नगरों तक ही सीमित होकर ही रह गया था।

99. (B) उन्होंने निम्न जाति की दुर्दशा को नजरअंदाज करते हुए उच्च जाति के सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया
19वीं शताब्दी के सुधार आंदोलनों पर "उच्च-जाति पूर्वाग्रह" का आरोप इसलिए लगता है क्योंकि उन्होंने अपना मुख्य ध्यान उच्च जातियों की सामाजिक समस्याओं, जैसे सती प्रथा और विधवा अवस्था पर केंद्रित किया। इन आंदोलनों ने शोषित तथा निम्न जातियों की वास्तविक समस्याओं, जैसे जातिगत उत्पीड़न और भूमिहीनता की काफी सीमा तक अनदेखी की थी।

100. (D) अनन्य धार्मिक अतीतों का गुणगान करके सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया
पुनरुत्थानवादी सुधार आंदोलनों की एक बड़ी आलोचना यह है कि उन्होंने अपने-अपने विशिष्ट धार्मिक अतीतों का अत्यधिक गुणगान किया। हिंदू आंदोलनों ने प्राचीन वैदिक सभ्यता का और मुस्लिम आंदोलनों ने प्रारंभिक इस्लामी शासन का महिमामंडन किया। इस प्रवृत्ति ने दोनों संप्रदायों के बीच अलगाव की भावना बढ़ाई और देश में सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने में सहायता की।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 03

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

1. 1857 के विद्रोह के भड़कने का सबसे प्रमुख राजनीतिक कारण निम्नलिखित में से कौन-सा था?
(A) एनफील्ड राइफल और चर्बीयुक्त कारतूसों का प्रयोग
(B) लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत का सिद्धांत (हड़प नीति) सहित आक्रामक विस्तारवादी नीतियाँ
(C) अवध में किसानों पर लगाया गया भारी कराधान
(D) पश्चिमी शिक्षा का प्रसार और ईसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ

2. 1857 के विद्रोह के स्वरुप के संबंध में, किस इतिहासकार ने प्रसिद्ध रूप से इसका वर्णन "न प्रथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम" के रूप में किया था?
(A) वी.डी. सावरकर
(B) एस.एन. सेन
(C) बेंजामिन डिज़रावेली
(D) आर.सी. मजूमदार

3. 1857 के विद्रोह के परिणामों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) विश्वास कायम करने के लिए ब्रिटिश भारतीय सेना में भारतीय सैनिकों के अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि की गई थी।
(B) भारत सरकार अधिनियम 1858 ने सत्ता ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को स्थानांतरित कर दी।
(C) अंग्रेजों ने देशी रियासतों के विलय की नीति को त्याग दिया और भारतीय राजाओं के अधिकारों की गारंटी दी।
(D) भारतीय प्रशासन की देखरेख के लिए भारत के राज्य सचिव (भारत सचिव) का पद सृजित किया गया था।

4. निम्नलिखित में से कौन 1857 के विद्रोह का प्रमुख नेता नहीं था?
(A) कुंवर सिंह
(B) बेगम हजरत महल
(C) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(D) नाना साहेब

5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शुरुआती चरण (1885-1905) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रारंभिक नेतृत्व में मुख्य रूप से वकील, पत्रकार और अंग्रेज़ी-शिक्षित पेशेवर शामिल थे।
II. प्रारंभिक कांग्रेस ने ब्रिटिश शासन को चुनौती देने के लिए सक्रिय रूप से जन-कृषक विद्रोहों का आयोजन किया।
III. इस चरण के दौरान एक प्रमुख मांग सिविल सेवाओं का भारतीयकरण थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

6. 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की थी। यह अधिवेशन कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) कलकत्ता
(B) मद्रास
(C) पूना
(D) बंबई

NODIA

7. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से संबंधित "सेफ्टी वॉल्व सिद्धांत" (सुरक्षा वाल्व सिद्धांत) को किस उग्रवादी (गरमपंथी) नेता ने अपने लेखों में प्रमुखता से लोकप्रिय बनाया था?
(A) बाल गंगाधर तिलक
(B) लाला लाजपत राय
(C) बिपिन चंद्र पाल
(D) अरविंद घोष

8. निम्नलिखित में से कौन-सी कार्यप्रणाली कांग्रेस के उदारवादी नेताओं द्वारा सामान्यतः प्रयोग नहीं की जाती थी?
(A) ब्रिटिश संसद को याचिकाएं और स्मरणपत्र भेजना
(B) सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करना और पर्चे बाँटना
(C) भूमिगत सशस्त्र प्रतिरोध को बढ़ावा देना
(D) वार्षिक अधिवेशनों में प्रस्ताव पारित करना

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी नेता राष्ट्रीय आंदोलन के लिए जनआधार तैयार करने में विफल रहे।
कारण (R) : उनका मानना था कि भारतीय जनता अभी राजनीतिक भागीदारी के लिए तैयार नहीं थी और उन्होंने संवैधानिक आंदोलन पर ध्यान केंद्रित किया।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

10. 'धन के निष्कासन' (Drain of Wealth) के सिद्धांत को, जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की एक सशक्त आर्थिक आलोचना प्रस्तुत की, व्यवस्थित रूप से "पोवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रुल इन इंडिया" नामक पुस्तक में प्रतिपादित किया गया था, जिसके लेखक थे:
(A) दादाभाई नौरोजी
(B) आर.सी. दत्त
(C) गोपाल कृष्ण गोखले
(D) महादेव गोविंद रानाडे

11. बंगाल विभाजन की औपचारिक घोषणा 20 जुलाई 1905 को की गई थी। यह विभाजन किस वायसराय के कार्यकाल में हुआ था?
(A) लॉर्ड मिंटो
(B) लॉर्ड कर्जन
(C) लॉर्ड हार्डिंग
(D) लॉर्ड चेम्सफोर्ड

12. सूची I में दिए गए स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख नेताओं को सूची II में उनके संबंधित कार्य क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : नेता
P. सैयद हैदर रजा
Q. चिदंबरम पिल्लई
R. लाला लाजपत राय
S. बिपिन चंद्र पाल
सूची II : क्षेत्र
1. पंजाब
2. दिल्ली
3. बंगाल
4. मद्रास
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

13. 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में आयोजित बैठक में कौन-सा ऐतिहासिक निर्णय लिया गया था?
(A) औपचारिक बहिष्कार प्रस्ताव पारित करना
(B) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का औपचारिक विभाजन
(C) अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना
(D) राष्ट्रव्यापी होम रुल आंदोलन का शुभारंभ

14. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उदारवादियों की तुलना में गरमपंथियों (उग्र राष्ट्रवादियों) द्वारा परिकल्पित स्वदेशी और बहिष्कार रणनीतियों के बीच मौलिक अंतर को सबसे अच्छी तरह से वर्णित करता है?
(A) गरमपंथियों ने बहिष्कार को विदेशी कपड़ों तक सीमित रखा, जबकि उदारवादियों ने सभी आयातित सामानों के पूर्ण आर्थिक बहिष्कार की मांग की।
(B) उदारवादियों ने स्वदेशी उद्योगों का समर्थन किया, लेकिन ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के किसी भी सक्रिय बहिष्कार का कड़ा विरोध किया।
(C) उदारवादियों ने बहिष्कार को केवल बंगाल तक सीमित रखा, जबकि गरमपंथियों ने इसे एक जन राजनीतिक संघर्ष के रूप में देशव्यापी बना दिया।
(D) गरमपंथियों ने स्वदेशी को व्यापक स्व-शासन की मांगों से जोड़े बिना विशुद्ध रूप से स्थानीय आर्थिक विकास के लिए बढ़ावा दिया।

15. 1907 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक सूरत विभाजन मुख्य रूप से किस मुद्दे पर हुआ था?
(A) कार्यकारी समिति में अल्पसंख्यक प्रतिनिधियों को शामिल करने को लेकर मतभेद
(B) मार्ले-मिंटो सुधारों की बिना शर्त स्वीकृति से संबंधित असहमति
(C) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य के लिए भारतीय समर्थन से संबंधित बहस
(D) आंदोलन के तरीकों तथा स्वदेशी और बहिष्कार के दायरे को लेकर मतभेद

16. राष्ट्रीय आंदोलन के गरमपंथी चरण (लाल-बाल-पाल) के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) उन्होंने आत्मनिर्भरता (आत्मशक्ति) और स्वदेशी उत्पादों के उपयोग पर जोर दिया।
(B) उन्होंने जनता को लामबंद करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक परंपराओं से प्रेरणा ली।
(C) वे ब्रिटिश व्यवस्था के अंतर्निहित न्याय और निष्पक्षता में दृढ़ विश्वास रखते थे।
(D) बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा की, "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।"

17. अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 1906 में ढाका में आगा खां, नवाब सलीमुल्लाह और नवाब मोहसिन-उल-मुल्क के नेतृत्व में हुई थी।
II. इसका प्रारंभिक उद्देश्य स्वदेशी आंदोलन का समर्थन करना और बंगाल विभाजन का विरोध करना था।
III. इसने मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग को लेकर अंग्रेजों पर सफलतापूर्वक दबाव बनाया, जिसे 1909 में प्रदान कर दिया गया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) केवल I

18. भारत में होम रुल आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे 1916 में एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक द्वारा शुरु किया गया था।
II. तिलक की लीग महाराष्ट्र (बंबई शहर को छोड़कर), कर्नाटक, मध्य प्रांत और बरार तक सीमित थी।

Click Here to Buy book on Flipkart

III. एनी बेसेंट की लीग ने बंबई शहर सहित शेष भारत को अपने कार्यक्षेत्र में शामिल किया।
IV. इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्व-शासन प्राप्त करना था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) II, III और IV
(C) I, III और IV
(D) I, II और IV

19. कौन-से प्रमुख नेता, यद्यपि इस आंदोलन के प्रति सहानुभूति रखते थे, फिर भी कभी औपचारिक रुप से होम रुल लीग में शामिल नहीं हुए और इसके बजाय भारत लौटने पर अपनी राजनीतिक रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए दूरी बनाए रखी?
(A) मोतीलाल नेहरु
(B) जवाहरलाल नेहरु
(C) सी.आर. दास
(D) महात्मा गांधी

20. एनी बेसेंट ने होम रुल आंदोलन के विचारों का प्रचार करने के लिए दो समाचार पत्र शुरु किए। निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म इन दो प्रकाशनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) केसरी और मराठा
(B) न्यू इंडिया और कॉमनवील
(C) द बंगाली और वॉयस ऑफ इंडिया
(D) यंग इंडिया और हरिजन

21. निम्नलिखित में से कौन भारत में महात्मा गांधी के शुरुआती स्थानीय संघर्षों का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह, अहमदाबाद मिल हड़ताल
(B) खेड़ा सत्याग्रह, चंपारण सत्याग्रह, अहमदाबाद मिल हड़ताल
(C) चंपारण सत्याग्रह, अहमदाबाद मिल हड़ताल, खेड़ा सत्याग्रह
(D) अहमदाबाद मिल हड़ताल, चंपारण सत्याग्रह, खेड़ा सत्याग्रह

22. अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918) के दौरान, महात्मा गांधी ने भारत में पहली बार विरोध के निम्नलिखित में से किस तरीके का उपयोग किया?
(A) अधिकारियों के खिलाफ सामूहिक सविनय अवज्ञा
(B) भू-राजस्व का व्यापक गैर-भुगतान
(C) आमरण अनशन (भूख हड़ताल)
(D) विदेशी अदालतों का पूर्ण बहिष्कार

23. तिनकाठिया प्रणाली, जिसके खिलाफ चंपारण सत्याग्रह निर्देशित था, में किसानों को अपनी भूमि के कितने हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था?
(A) 3/10 हिस्से पर
(B) 1/3 हिस्से पर
(C) 1/10 हिस्से पर
(D) 3/20 हिस्से पर

24. 1918 के खेड़ा सत्याग्रह का मुख्य कारण क्या था?
(A) सूती वस्त्र मिल मजदूरों की मजदूरी में वृद्धि की मांग
(B) खाद्यान्न के स्थान पर जबरन नकदी फसलों की खेती
(C) फसल खराब होने के कारण भू-राजस्व की माफी की मांग
(D) नए सिंचाई कर को लागू किए जाने के खिलाफ विरोध

NODIA

25. रोलेट एक्ट (1919) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने सरकार को बिना किसी मुकदमे और अदालत में दोषसिद्धि के किसी भी व्यक्ति को दो साल तक जेल में रखने की अनुमति दी।
II. इसे आधिकारिक तौर पर 'अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम' (Anarchical and Revolutionary Crimes Act) के रुप में जाना जाता था।
III. यह अधिनियम इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में भारतीय सदस्यों के सर्वसम्मति से समर्थन के साथ पारित किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और III
(D) केवल I

26. रोलेट एक्ट के जवाब में, महात्मा गांधी ने सत्याग्रह सभा की स्थापना की। इस सभा का आयोजन किस शहर में किया गया था?
(A) दिल्ली
(B) कलकत्ता
(C) लाहौर
(D) बंबई

27. दुखद जलियांवाला बाग हत्याकांड वैशाखी के दिन, 13 अप्रैल 1919 को हुआ था। भीड़ मुख्य रुप से किन दो प्रमुख स्थानीय नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में एकत्र हुई थी?
(A) लाला लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह
(B) डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल
(C) सरदार भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त
(D) महात्मा गांधी और पंडित जवाहरलाल नेहरु

28. जलियांवाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए गठित हंटर आयोग के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) इसमें बिना किसी भारतीय सदस्य के पूरी तरह से ब्रिटिश अधिकारी शामिल थे।
(B) इसने जनरल रेजिनाल्ड डायर पर तत्काल आपराधिक मुकदमा चलाने और कारावास की सिफारिश की।
(C) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसके आधिकारिक निष्कर्षों को पूरी तरह स्वीकार कर लिया और जांच बंद कर दी।

(D) इसे 'डिसऑर्डर्स इंक्वायरी कमेटी' नाम दिया गया था और इसमें तीन भारतीय सदस्य शामिल थे।

29. खिलाफत आंदोलन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) इसकी स्थापना प्रथम विश्व युद्ध के बाद तुर्की में ऑटोमन साम्राज्य के विघटन के विरोध में की गई थी।
(B) आंदोलन का समग्र नेतृत्व अली बंधुओं, शौकत अली और मोहम्मद अली द्वारा प्रदान किया गया था।
(C) महात्मा गांधी ने इस आंदोलन का विरोध किया और इसे एक ऐसा धार्मिक मुद्दा माना जो समुदायों को विभाजित करेगा।
(D) इसने पवित्र इस्लामी स्थानों पर खलीफा के सांसारिक प्रभुत्व को निरंतर बनाए रखने की मांग की।

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : महात्मा गांधी ने खिलाफत आंदोलन को हिंदू-मुस्लिम एकता को मजबूत करने के एक ऐतिहासिक अवसर के रूप में देखा।
कारण (R) : खिलाफत नेता भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में एक स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की मांग कर रहे थे।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

31. असहयोग आंदोलन को मंजूरी देने वाला औपचारिक प्रस्ताव दिसंबर 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में पारित किया गया था?
(A) कलकत्ता (विशेष अधिवेशन)
(B) लाहौर अधिवेशन
(C) नागपुर अधिवेशन
(D) कराची अधिवेशन

32. किस प्रमुख राष्ट्रीय नेता ने 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि वे असहयोग आंदोलन की नई जन-कार्रवाई रणनीति से असहमत थे और संवैधानिक तरीकों को प्राथमिकता देते थे?
(A) एनी बेसेंट
(B) मोतीलाल नेहरू
(C) सी.आर. दास
(D) वल्लभभाई पटेल

33. फरवरी 1922 में किस स्थान पर हुई एक हिंसक घटना के बाद महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन को अचानक वापस ले लिया गया था?
(A) काकोरी
(B) चौरी चौरा
(C) मेरठ
(D) बारडोली गाँव

34. स्वराज पार्टी की स्थापना 1923 में उन नेताओं द्वारा की गई थी जिन्होंने औपनिवेशिक सरकार को भीतर से बाधित करने के लिए परिषद में प्रवेश की वकालत की थी। इसके मुख्य संस्थापक कौन थे?
(A) जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस
(B) महात्मा गांधी और सरदार पटेल
(C) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू
(D) बी.आर. अंबेडकर और तेज बहादुर सप्रू

35. 1920 के दशक की निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. साइमन कमीशन की नियुक्ति
2. स्वराज पार्टी का गठन
3. नेहरू रिपोर्ट की स्वीकृति
4. चौरी चौरा की घटना
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(A) 4, 2, 1, 3
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 2, 3, 1

36. सूची I में दी गई 1920 के दशक की राजनीतिक समितियों और रिपोर्टों को सूची II में उनके प्राथमिक उद्देश्यों या विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : समितियां/रिपोर्ट्स
P. साइमन कमीशन
Q. नेहरू रिपोर्ट
R. मुड्डीमैन समिति
S. बटलर समिति
सूची II : उद्देश्य/विशेषताएं
1. संवैधानिक ढांचा तैयार करने का पहला प्रमुख भारतीय प्रयास
2. 1919 के अधिनियम के तहत द्वैध शासन प्रणाली के कामकाज की जांच करना
3. परम सत्ता (ब्रिटिश क्राउन) और देशी रियासतों के बीच संबंधों की जांच करना
4. भारत के लिए आगे के संवैधानिक सुधारों के प्रश्न की समीक्षा करना (सभी श्वेत सदस्य)
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

37. 1928 की नेहरू रिपोर्ट के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसने अगले तत्काल कदम के रूप में भारत के लिए डोमिनियन स्टेटस की मांग की।
(B) इसमें एक संघीय व्यवस्था का ढांचा और मौलिक अधिकारों की एक सूची शामिल थी।

NODIA

(C) इसने धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल के निर्माण की सिफारिश की।
(D) इसने प्रस्ताव दिया कि भाषाई प्रांतों का गठन किया जाना चाहिए।

38. नेहरु रिपोर्ट के जवाब में, मोहम्मद अली जिन्ना ने मांगों का एक सेट तैयार किया जिसे जिन्ना के चौदह सूत्रों के रूप में जाना जाता है। इन सूत्रों में मुख्य मांग निम्नलिखित में से कौन-सी थी?
(A) पूरे भारत में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को तत्काल और अनियंत्रित रूप से अपनाना
(B) संयुक्त निर्वाचक मंडल के पक्ष में पृथक निर्वाचक मंडल का पूर्ण उन्मूलन
(C) ब्रिटिश भारत का दो संप्रभु डोमिनियनों में तत्काल विभाजन
(D) केंद्रीय विधायिका में मुसलमानों के लिए एक-तिहाई प्रतिनिधित्व

39. ऐतिहासिक 'पूर्ण स्वराज' (पूर्ण स्वतंत्रता) का प्रस्ताव 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पारित किया गया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी?
(A) महात्मा गांधी
(B) मोतीलाल नेहरु
(C) जवाहरलाल नेहरु
(D) सुभाष चंद्र बोस

40. सविनय अवज्ञा आंदोलन का शुभारंभ करने वाली दांडी यात्रा 12 मार्च 1930 को शुरु हुई थी। महात्मा गांधी ने यह यात्रा कहाँ से शुरु की थी?
(A) साबरमती आश्रम
(B) बारडोली तालुका
(C) सेवाग्राम आश्रम
(D) यरवदा सेंट्रल जेल

41. सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, 'कनिंघम सर्कुलर' ने छात्रों को अपने शैक्षणिक संस्थानों में अच्छे व्यवहार की गारंटी देने के लिए बाध्य किया। किस प्रांत में छात्रों ने इस सर्कुलर के खिलाफ व्यापक आंदोलन चलाया?
(A) बंबई
(B) बंगाल
(C) पंजाब
(D) असम

42. उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत (NWFP) में सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व खान अब्दुल गफ्फार खान ने किया था। उनके द्वारा स्थापित अहिंसक स्वयंसेवक संगठन का क्या नाम था?
(A) खुदाई खिदमतगार
(B) मजलिस-ए-अहरार
(C) खाकसार तहरीक
(D) हिंदुस्तान सेवा दल

43. गांधी-इरविन समझौते (1931) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्रिटिश सरकार बिना किसी अपवाद के उन सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा करने पर सहमत हुई, जिनमें हिंसा के दोषी भी शामिल थे।
II. कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करने और दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर सहमत हुई।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) I और II दोनों
(D) न तो I और न ही II

44. गोलमेज सम्मेलनों से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार किया।
II. महात्मा गांधी ने कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
III. तीसरे गोलमेज सम्मेलन में शीर्ष कांग्रेस नेतृत्व ने अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई थी।
IV. बी.आर. अंबेडकर ने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

45. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दृष्टिकोण से द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता के मुख्य कारण का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन करता है?
(A) पूर्ण प्रांतीय स्वायत्तता देने के लिए ब्रिटिश सरकार की अनिच्छा
(B) सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व और अल्पसंख्यक सुरक्षा उपायों पर गतिरोध
(C) केंद्रीय स्तर पर द्वैध शासन प्रणाली बनाए रखने पर अंग्रेजों का जोर
(D) गांधी-इरविन समझौते की शर्तों के कार्यान्वयन के संबंध में असहमति

46. 1932 के कम्युनल अवॉर्ड (सांप्रदायिक पंचाट) की घोषणा ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैमसे मैकडोनाल्ड ने की थी। इसकी सबसे विवादास्पद विशेषता क्या थी जिसके कारण महात्मा गांधी ने आमरण अनशन किया था?
(A) आरक्षित सीटों वाले संयुक्त निर्वाचक मंडल के पक्ष में पृथक निर्वाचक मंडल का पूर्ण उन्मूलन
(B) एक पृथक अल्पसंख्यक के रूप में दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल का विस्तार
(C) केंद्रीय असेंबली में मुस्लिम प्रतिनिधित्व के अनुपात में भारी कमी

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(D) यह अनिवार्य करना कि सभी प्रांतीय मंत्री सीधे ब्रिटिश वायसराय द्वारा नियुक्त किए जाएं

47. 1932 का पूना समझौता महात्मा गांधी और किस प्रमुख नेता के बीच एक समझौता था, जिसके परिणामस्वरुप दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल को छोड़कर आरक्षित सीटों को अपनाया गया?
(A) मोहम्मद अली जिन्ना
(B) बी.आर. अंबेडकर
(C) ई.वी. रामासामी नायकर
(D) एम.सी. राजा

48. भारत सरकार अधिनियम, 1935 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें ब्रिटिश भारतीय प्रांतों और देशी रियासतों को मिलाकर एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव था।
II. इसने प्रांतीय स्तर पर द्वैध शासन की शुरुआत की।
III. इसमें एक संघीय न्यायालय (Federal Court) की स्थापना का प्रावधान था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

49. भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत, अवशिष्ट विधायी शक्तियां किसके पास निहित थीं?
(A) संघीय विधायिका
(B) गवर्नर-जनरल/वायसराय
(C) प्रांतीय विधायिकाएं
(D) भारत के राज्य सचिव

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : 1937 के चुनावों के बाद कई प्रांतों में बनी कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने 1939 में सामूहिक रुप से त्यागपत्र दे दिया।
कारण (R) : वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने भारतीय राजनीतिक नेतृत्व से परामर्श किए बिना भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में युद्धरत देश घोषित कर दिया था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

51. हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) की स्थापना 1924 में क्रांतिकारी नेताओं द्वारा की गई थी। इसके "द रिवोल्यूशनरी" शीर्षक वाले घोषणापत्र के प्राथमिक लेखक निम्नलिखित में से कौन थे?
(A) भगत सिंह
(B) चंद्रशेखर आज़ाद
(C) सचिंद्र नाथ सान्याल
(D) सूर्य सेन

52. 1928 में, फिरोजशाह कोटला, दिल्ली में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का पुनर्गठन किया गया और इसका नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) कर दिया गया। यह पुनर्गठन किस नए वैचारिक आयाम को दर्शाता था?
(A) संवैधानिक आंदोलन के तरीकों के पक्ष में सशस्त्र क्रांति का परित्याग
(B) समाजवादी आदर्शों और समतावादी समाज के लक्ष्य को अपनाना
(C) प्राथमिक संगठनात्मक विचारधारा के रूप में धार्मिक राष्ट्रवाद को पूरी तरह से अपनाना
(D) जापान के खिलाफ ब्रिटिश अधिकारियों के साथ एक रणनीतिक राजनीतिक गठबंधन का गठन

NODIA

53. अंग्रेजों की किस विशिष्ट कार्रवाई ने भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को 1929 में सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में बम फेंकने के लिए प्रेरित किया?
(A) पूरी तरह से ब्रिटिश सदस्यों वाले साइमन कमीशन का आगमन और देशव्यापी बहिष्कार
(B) काकोरी कांड के दोषियों को दी गई मृत्युदंड की सजा
(C) ब्रिटिश प्रधानमंत्री द्वारा कम्युनल अवॉर्ड (सांप्रदायिक पंचाट) की आधिकारिक घोषणा
(D) पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल का पारित होना

54. बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सूर्य सेन ने 1930 में चटगांव शस्त्रागार छापे का आयोजन किया।
II. चटगांव समूह की एक उल्लेखनीय विशेषता प्रीतिलता वड्डेदार और कल्पना दत्त जैसी युवा महिला क्रांतिकारियों की सक्रिय और प्रमुख भागीदारी थी।
III. चटगांव के क्रांतिकारियों ने छह महीने तक पूरे बंगाल प्रांत पर सफलतापूर्वक नियंत्रण बनाए रखा।
IV. सूर्य सेन को बंदी बना लिया गया और अंततः अंग्रेजों द्वारा फांसी दे दी गई।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

55. सुभाष चंद्र बोस और कांग्रेस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे हरिपुरा अधिवेशन (1938) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे।
II. उन्होंने त्रिपुरी अधिवेशन (1939) में गांधी जी द्वारा समर्थित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया को हराया।

III. कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने स्वराज पार्टी की स्थापना की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

56. वह मूल वैचारिक मतभेद क्या था जिसके कारण 1939 में सुभाष चंद्र बोस को कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देना पड़ा था?

(A) अछूतों के लिए मंदिर प्रवेश आंदोलनों की प्राथमिकता को लेकर असहमति
(B) यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के संकट के दौरान तत्काल जन संघर्ष शुरु करना
(C) डोमिनियन स्टेटस के प्रस्तावों की बिना शर्त स्वीकृति से संबंधित मतभेद
(D) राज्य के दर्जे के संबंध में मुस्लिम लीग की मांगों को कांग्रेस के समर्थन पर टकराव

57. आजाद हिंद फौज (INA) के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(A) आजाद हिंद फौज का विचार सबसे पहले मलाया में मोहन सिंह के मन में आया था।
(B) सुभाष चंद्र बोस ने 1943 में इंडियन इंडिपेंडेंस लीग और आजाद हिंद फौज का नेतृत्व संभाला।
(C) आजाद हिंद फौज ने महिलाओं के प्रवेश को सख्ती से प्रतिबंधित किया और केवल पुरुषों को अपनी लड़ाकू टुकड़ियों में अनुमति दी।
(D) आजाद हिंद फौज ने सिंगापुर में भारत की अंतरिम सरकार की स्थापना की।

58. प्रसिद्ध आजाद हिंद फौज मुकदमे, जिसने पूरे भारत में व्यापक राष्ट्रवादी उभार को जन्म दिया, 1945 में किस ऐतिहासिक स्थल पर चलाए गए थे?

(A) सेलुलर जेल, पोर्ट ब्लेयर
(B) लाल किला, दिल्ली
(C) आगा खान पैलेस, पुणे
(D) फोर्ट विलियम, कलकत्ता

59. ऐतिहासिक "भारत छोड़ो" प्रस्ताव को 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा कहाँ अनुमोदित किया गया था?

(A) वर्धा आश्रम मैदान, वर्धा
(B) जलियांवाला बाग मैदान, अमृतसर
(C) गवालिया टैंक मैदान, बंबई
(D) आनंद भवन परिसर, इलाहाबाद

60. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, राष्ट्रवादी संदेशों को प्रसारित करने के लिए गुप्त रूप से एक भूमिगत रेडियो स्टेशन संचालित किया गया था। इस कांग्रेस रेडियो को चलाने में किस प्रमुख महिला नेता की महत्वपूर्ण भूमिका थी?

(A) उषा मेहता
(B) सुचेता कृपलानी
(C) अरुणा आसफ अली
(D) सरोजिनी नायडू

61. भारत छोड़ो आंदोलन की एक अनूठी विशेषता देश के विभिन्न भागों में समानांतर सरकारों (जातीय सरकार/प्रति सरकार) का उभरना था। निम्नलिखित में से किस स्थान पर प्रमुख समानांतर सरकार का गठन नहीं हुआ था?

(A) बलिया जिला (संयुक्त प्रांत)
(B) तमलुक क्षेत्र (बंगाल)
(C) सतारा जिला (महाराष्ट्र)
(D) कानपुर शहर (संयुक्त प्रांत)

62. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. मैडम भीकाजी कामा ने स्टटगार्ट, जर्मनी में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का पहला संस्करण फहराया।
II. सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला थीं।
III. कल्पना दत्त उत्तर भारत में HSRA की हिंसक क्रांतिकारी गतिविधियों में गहराई से शामिल थीं।
IV. अरुणा आसफ अली को भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए याद किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) I, III और IV
(D) II, III और IV

63. देसी भाषा के समाचार पत्रों ने राष्ट्रवादी चेतना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मराठी में प्रकाशित अत्यंत राष्ट्रवादी समाचार पत्र 'केसरी' के संपादक कौन थे?

(A) गोपाल कृष्ण गोखले
(B) बाल गंगाधर तिलक
(C) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
(D) शिशिर कुमार घोष

64. प्रसिद्ध देशभक्ति गीत 'वंदे मातरम', जो स्वदेशी आंदोलन का मुख्य गीत बना, किस प्रसिद्ध साहित्यिक कृति से लिया गया था?

(A) गीतांजलि
(B) आनंदमठ
(C) नील दर्पण
(D) गोदान

65. सूची I के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को सूची II में उनके संबंधित संस्थापकों या संपादकों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I : समाचार पत्र/पत्रिकाएं

P. अल-हिलाल
Q. युगांतर
R. प्रबुद्ध भारत

Click Here to Buy book on Amazon

S. रास्त गोफ्तार

सूची II : संस्थापक/संपादक

1. स्वामी विवेकानंद
2. मौलाना अबुल कलाम आजाद
3. दादाभाई नौरोजी
4. बारिंद्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्ता

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

66. लॉर्ड लिटन के वायसराय काल के दौरान लागू किए गए निम्नलिखित में से किस अधिनियम को भारतीय भाषा के समाचार पत्रों पर कड़े प्रतिबंधों के कारण उपहासपूर्वक "मुँह बंद करने वाला अधिनियम" (Gagging Act) कहा गया था?
(A) 1910 का प्रेस अधिनियम
(B) 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट
(C) 1908 का समाचार पत्र (अपराधों को प्रोत्साहन) अधिनियम
(D) 1931 का भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियां) अधिनियम

67. प्रजामंडल आंदोलन राजस्थान के क्षेत्रीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। राजपूताना रियासतों में प्रजामंडल आंदोलनों का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) रियासतों के पूर्ण उन्मूलन और ब्रिटिश प्रांतों में विलय की मांग करना
(B) संबंधित शासकों के अधीन नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त करना और उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना
(C) ब्रिटिश और कांग्रेस के प्रभाव से मुक्त राजपूत राज्यों के एक अलग स्वतंत्र संघ की वकालत करना
(D) मुख्यधारा के समाज में जनजातीय आबादी के सांस्कृतिक आत्मसातीकरण को बढ़ावा देना

68. राजस्थान में प्रजामंडलों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) जयपुर प्रजामंडल, मेवाड़ प्रजामंडल, झालावाड़ प्रजामंडल
(B) मेवाड़ प्रजामंडल, जयपुर प्रजामंडल, झालावाड़ प्रजामंडल
(C) झालावाड़ प्रजामंडल, मेवाड़ प्रजामंडल, जयपुर प्रजामंडल
(D) जयपुर प्रजामंडल, झालावाड़ प्रजामंडल, मेवाड़ प्रजामंडल

69. बिजोलिया किसान आंदोलन को भारतीय इतिहास के सबसे लंबे अहिंसक किसान आंदोलनों में से एक माना जाता है। इस आंदोलन की ओर राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने और इसके दूसरे चरण का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने में निम्नलिखित में से किस नेता की महत्वपूर्ण भूमिका थी?
(A) साधु सीताराम दास
(B) विजय सिंह पथिक
(C) सेठ माणिक्य लाल वर्मा
(D) जमुनालाल बजाज

70. राजस्थान के क्षेत्रीय और जनजातीय आंदोलनों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) एकी आंदोलन की शुरुआत मोतीलाल तेजावत ने भीलों और गरासियों को शोषक सामंती करों के खिलाफ लामबंद करने के लिए की थी।
(B) गोविंद गुरु ने भीलों के बीच सामाजिक-धार्मिक सुधारों और एकता को बढ़ावा देने के लिए संप सभा की स्थापना की।
(C) 1913 का मानगढ़ नरसंहार तब हुआ जब ब्रिटिश सेना ने गोविंद गुरु के शांतिपूर्ण भील अनुयायियों पर गोलियां चलाईं।
(D) मारवाड़ प्रजामंडल रचनात्मक कार्य और संवैधानिक विरोध के स्थान पर सशस्त्र विद्रोह पर अत्यधिक निर्भर था।

71. 1945 का ऐतिहासिक 'देसाई-लियाकत समझौता' संवैधानिक गतिरोध को हल करने का एक प्रयास था। इसमें क्या प्रस्ताव रखा गया था?
(A) अंतरिम मंत्रिमंडल में कांग्रेस और लीग के बीच नामांकन में समानता
(B) कड़े सांप्रदायिक और धार्मिक आधार पर ब्रिटिश भारतीय सेना का विभाजन
(C) बंगाल और पंजाब का अलग-अलग प्रशासनिक क्षेत्रों में तत्काल विभाजन
(D) अलग होने पर सभी मुस्लिम बहुल प्रांतों में जनमत संग्रह कराना

NODIA

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : 1946 की कैबिनेट मिशन योजना ने पाकिस्तान के एक अलग, पूरी तरह से स्वतंत्र राज्य की मांग को खारिज कर दिया।
कारण (R) : मिशन ने निष्कर्ष निकाला कि एक अलग पाकिस्तान सांप्रदायिक अल्पसंख्यक समस्या का समाधान नहीं करेगा क्योंकि दोनों राज्यों में महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक रह जाएंगे, और यह रक्षा तथा संचार को गंभीर रूप से बाधित करेगा।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

73. 1946 में भारत भेजे गए कैबिनेट मिशन का सदस्य निम्नलिखित में से कौन-सा नेता नहीं था?
(A) लॉर्ड पैथिक-लॉरेंस
(B) सर स्टेफोर्ड क्रिप्स
(C) ए.वी. अलेक्जेंडर

(D) लॉर्ड माउंटबेटन

74. अपनी मांगों को खारिज किए जाने और राजनीतिक आम सहमति के टूटने के जवाब में, मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' (Direct Action Day) की घोषणा की, जिसके परिणामस्वरुप कलकत्ता से व्यापक सांप्रदायिक दंगे शुरु हो गए। प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस किस तिथि को मनाया गया था?
(A) 16 अगस्त 1946
(B) 2 सितंबर 1946
(C) 23 मार्च 1940
(D) 3 जून 1947

75. भारत के औपचारिक विभाजन की घोषणा और स्वीकृति निम्नलिखित में से किस योजना के तहत की गई थी?
(A) शिमला सम्मेलन में तैयार की गई वेवैल योजना
(B) त्रि-स्तरीय संघ का प्रस्ताव रखने वाली कैबिनेट मिशन योजना
(C) माउंटबेटन योजना (3 जून योजना)
(D) युद्ध के बाद डोमिनियन स्टेटस की पेशकश करने वाला क्रिप्स प्रस्ताव

76. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें 15 अगस्त 1947 से भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र डोमिनियनों के निर्माण का प्रावधान था।
II. इसने आधिकारिक तौर पर इंग्लैंड के राजा की शाही उपाधियों से 'भारत का सम्राट' उपाधि को समाप्त कर दिया।
III. इसने अनिवार्य किया कि देशी रियासतों को केवल भारत डोमिनियन में ही शामिल होना चाहिए।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

77. 1947 में भारत और पाकिस्तान के नए बने डोमिनियनों की सीमाओं का सीमांकन करने के लिए किस सीमा आयोग का गठन किया गया था?
(A) सभी श्वेत सदस्यों वाला साइमन कमीशन
(B) डूरंड सीमा आयोग
(C) रेडक्लिफ आयोग
(D) मैकमोहन रेखा आयोग

78. निम्नलिखित में से कौन-सा किसान आंदोलन, जिसकी विशेषता जमींदार के हिस्से को घटाकर फसल का एक-तिहाई करने की मांग थी, भारत की स्वतंत्रता से ठीक पहले बंगाल में हुआ था?
(A) एका आंदोलन
(B) तेभागा आंदोलन
(C) बकाश्त आंदोलन
(D) तेलंगाना आंदोलन

79. संगठित श्रम को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान करने के लिए 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना की गई थी। इसके पहले अध्यक्ष के रूप में किसे चुना गया था?
(A) नारायण मल्हार जोशी
(B) लाला लाजपत राय
(C) सी.आर. दास
(D) वी.वी. गिरि

80. बारडोली सत्याग्रह (1928) मनमानी कर वृद्धि के खिलाफ एक अत्यधिक सफल किसान आंदोलन था। वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व के सम्मान में बारडोली की महिलाओं द्वारा उन्हें कौन-सी उपाधि प्रदान की गई थी?
(A) लोकनायक
(B) देशबंधु
(C) सरदार
(D) नेताजी

81. 1899-1900 में छोटानागपुर क्षेत्र में निम्नलिखित में से कौन-सा जनजातीय विद्रोह हुआ, जो कृषि संबंधी शिकायतों और धार्मिक पुनरुत्थानवाद के मिश्रण से युक्त था, जिसका उद्देश्य 'मुंडा राज' स्थापित करना था?
(A) संथाल विद्रोह
(B) मुंडा उलगुलान
(C) कोल विद्रोह
(D) भील विद्रोह

82. सूची I में दिए गए जनजातीय और किसान विद्रोहों को सूची II में उनके प्रमुख नेताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : विद्रोह
P. संथाल विद्रोह
Q. रम्पा विद्रोह (1922)
R. एका आंदोलन
S. नील विद्रोह (1859)
सूची II : नेता
1. दिगंबर बिस्वास और बिष्णु बिस्वास
2. सिद्धू और कान्हू
3. अल्लूरी सीताराम राजू
4. मदारी पासी
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

83. 1921-1922 का एका आंदोलन (एकता आंदोलन) अवध के जिलों (हरदोई, बहराइच, सीतापुर) में उभरा। इसकी प्राथमिक शिकायत क्या थी?
(A) कृषि में भारी मशीनीकरण और आधुनिक तकनीक की शुरुआत
(B) पारंपरिक ग्रामीण धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं पर आधिकारिक सरकारी प्रतिबंध

Downloaded from www.pdf.tube

(C) निर्धारित दरों से अधिक लगान की वसूली और जमींदारों के शोषक कर
(D) ब्रिटिश औपनिवेशिक सेना में स्थानीय किसानों की अनिवार्य भर्ती

84. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं और उनके साहित्यिक योगदानों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) पंडित जवाहरलाल नेहरु – द डिस्कवरी ऑफ इंडिया
(B) महात्मा गांधी – हिंद स्वराज या इंडियन होम रूल
(C) मौलाना अबुल कलाम आजाद – द इंडियन स्ट्रगल
(D) डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर – एनिहिलेशन ऑफ कास्ट

85. स्वतंत्रता संग्राम के उत्तरार्ध के दौरान, निम्नलिखित में से किस नेता ने लगभग 562 देशी रियासतों को भारतीय संघ में एकीकृत करने के लिए निरंतर प्रयास किया, जिससे उन्हें "भारत के लौह पुरुष" की उपाधि मिली?
(A) डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर
(B) सरदार वल्लभभाई पटेल
(C) वी.पी. मेनन
(D) लॉर्ड माउंटबेटन

86. किस प्रमुख दलित नेता और बुद्धिजीवी ने 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना की और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दलित वर्गों के सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों की पुरजोर वकालत की?
(A) ज्योतिराव फुले
(B) बी.आर. अंबेडकर
(C) जगजीवन राम
(D) ई.वी. रामासामी नायकर

87. वायसराय लिनलिथगो द्वारा दिया गया 1940 का अगस्त प्रस्ताव संवैधानिक सुधारों के इतिहास में महत्वपूर्ण था क्योंकि:
(A) द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद पूर्ण स्वतंत्रता का बिना शर्त वादा किया गया था
(B) भारतीयों द्वारा अपना संविधान स्वयं बनाने के अधिकार की पहली बार आधिकारिक स्वीकृति मिली
(C) पृथक पाकिस्तान के लिए मुस्लिम लीग की मांग की स्पष्ट औपनिवेशिक स्वीकृति थी
(D) कार्यकारी परिषद में एक भारतीय सदस्य को महत्वपूर्ण रक्षा पोर्टफोलियो का हस्तांतरण किया गया

88. 1946 में गठित अंतरिम सरकार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जवाहरलाल नेहरु को वायसराय की कार्यकारी परिषद का उपाध्यक्ष नामित किया गया था।
II. मुस्लिम लीग ने अंतरिम सरकार का पूरी तरह से बहिष्कार किया और किसी भी मोड़ पर इसमें शामिल नहीं हुई।
III. जब लीग अंततः शामिल हुई, तो लियाकत अली खान ने महत्वपूर्ण वित्त पोर्टफोलियो संभाला।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

NODIA

89. माउंटबेटन योजना से संबंधित निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. इसमें भारत को दो डोमिनियनों में विभाजित करने का प्रस्ताव था।
II. इसने सुझाव दिया कि पंजाब और बंगाल की प्रांतीय विधानसभाएं इस बात पर मतदान करेंगी कि प्रांतों का विभाजन किया जाना चाहिए या नहीं।
III. इसमें उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत (NWFP) और असम के सिलहट जिले में जनमत संग्रह का प्रावधान था।
IV. इसने स्वतंत्रता के बाद स्थायी रूप से सीमा विवादों से निपटने के लिए एक संयुक्त भारत-पाकिस्तान सैन्य कमान की स्थापना की।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

90. निम्नलिखित राजनीतिक संगठनों में से उनकी स्थापना और मूल विचारधारा के आधार पर विषम का चयन कीजिए।
(A) अखिल भारतीय हिंदू महासभा
(B) कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी
(C) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS)
(D) अखिल भारतीय मुस्लिम लीग

91. सी. राजगोपालाचारी द्वारा तैयार किए गए सी.आर. फॉर्मूला (1944) का उद्देश्य क्या था?
(A) स्वतंत्र भारत के लिए एक व्यापक आर्थिक नीति ढांचा तैयार करना
(B) कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच राजनीतिक गतिरोध को हल करना
(C) देशी रियासतों के एकीकरण के लिए एक व्यावहारिक प्रशासनिक ढांचा प्रस्तावित करना
(D) संविधान सभा की चुनावी और संवैधानिक संरचना की रूपरेखा तैयार करना

92. 1945 में शिमला सम्मेलन में चर्चा की गई वेवैल योजना मुख्य रूप से किस विवादित बिंदु के कारण विफल हो गई?
(A) हिंदू और मुस्लिम प्रतिनिधियों के बीच कार्यकारी समानता देने से अंग्रेजों का इनकार
(B) जिन्ना की यह मांग कि परिषद के सभी मुस्लिम सदस्यों को लीग द्वारा ही मनोनीत किया जाए
(C) ब्रिटिश सेना की तत्काल वापसी पर कांग्रेस का अडिग रुख
(D) संघ में देशी रियासतों की संप्रभु स्थिति से संबंधित असहमति

93. 1905 में, गोपाल कृष्ण गोखले ने भारत की सेवा के लिए राष्ट्रीय प्रचारकों को प्रशिक्षित करने और संवैधानिक तरीकों से भारतीय लोगों के सच्चे हितों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक प्रसिद्ध संगठन की स्थापना की। इसका क्या नाम था?
(A) सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी
(B) द डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी
(C) द इंडियन एसोसिएशन
(D) द पूना सार्वजनिक सभा

94. ऐतिहासिक 'उद्देश्य प्रस्ताव', जिसने भारतीय संविधान की दार्शनिक नींव रखी, 1946 में संविधान सभा में किसके द्वारा प्रस्तुत किया गया था?
(A) बी.आर. अंबेडकर
(B) सरदार वल्लभभाई पटेल
(C) जवाहरलाल नेहरू
(D) राजेंद्र प्रसाद

95. 1940 के दशक के निम्नलिखित महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रमों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. क्रिप्स मिशन
2. अगस्त प्रस्ताव
3. कैबिनेट मिशन
4. वेवैल योजना
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 2, 1, 3

96. 1942 में जब भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया था तब भारत का वायसराय कौन था?
(A) लॉर्ड वेवैल
(B) बर्मा के लॉर्ड माउंटबेटन
(C) लॉर्ड लिनलिथगो
(D) लॉर्ड इरविन

97. महात्मा गांधी द्वारा गढ़े गए 'सत्याग्रह' शब्द का मौलिक अर्थ क्या है?
(A) मुख्य रुप से आर्थिक और राजनीतिक बहिष्कार पर निर्भर निष्क्रिय प्रतिरोध
(B) सत्य के प्रति अहिंसक निष्ठा और कष्ट सहने की तत्परता
(C) कूटनीतिक शांतिपूर्ण विरोध जो सशस्त्र प्रतिरोध की तैयारी को छिपाता है
(D) कानूनी याचिकाओं और संवैधानिक आंदोलनों पर निरंतर निर्भरता

98. स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण वर्षों (1940-1946) के दौरान किस प्रमुख कांग्रेस नेता ने सबसे लंबी निरंतर अवधि तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया?
(A) पंडित जवाहरलाल नेहरू
(B) नेताजी सुभाष चंद्र बोस
(C) मौलाना अबुल कलाम आजाद
(D) डॉ. राजेंद्र प्रसाद

99. निम्नलिखित में से कौन-सा तत्व महात्मा गांधी के 'रचनात्मक कार्यक्रम' का हिस्सा नहीं था?
(A) खादी और ग्रामीण कुटीर उद्योगों को सक्रिय बढ़ावा देना
(B) अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव का उन्मूलन
(C) सांप्रदायिक सौहार्द और हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना
(D) सशस्त्र ग्रामीण रक्षा मिलिशिया का गठन

100. शैक्षणिक दृष्टिकोण से, निम्नलिखित में से कौन-सा 1885 और 1947 के बीच भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सबसे व्यापक और निर्णायक विशेषता का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) शिक्षित शहरी बुद्धिजीवियों तक सख्ती से सीमित एक अभिजात वर्ग द्वारा संचालित हिंसक क्रांतिकारी संघर्ष
(B) अभिजात वर्ग के संवैधानिक आंदोलन से बहु-वर्गीय व्यापक अहिंसक आंदोलन में विकास
(C) एक कृषि किसान विद्रोह जिसने शहरी राजनीतिक नेतृत्व से पूरी तरह स्वतंत्र होकर कार्य किया
(D) एक सामाजिक-धार्मिक सुधार पहल जो अनजाने में राजनीतिक स्वतंत्रता में परिणत हुई

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) लॉर्ड डलहौजी द्वारा व्यपगत का सिद्धांत (हड़प नीति) सहित आक्रामक विस्तारवादी नीतियाँ
लॉर्ड डलहौजी की आक्रामक विस्तारवादी नीतियों और व्यपगत के सिद्धांत ने भारतीय देशी रियासतों में व्यापक राजनीतिक असंतोष पैदा किया। सतारा, नागपुर, झाँसी तथा अवध जैसी रियासतों का अन्यायपूर्ण अधिग्रहण किए जाने से देशी शासकों की संप्रभुता समाप्त हो गई। इस नीति के कारण भारतीय राजघरानों के अधिकार छीन लिए गए, जिसने शासक वर्ग को ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एकजुट कर दिया। यही असंतोष विद्रोह का कारण बना।

2. (D) आर.सी. मजूमदार
प्रसिद्ध इतिहासकार आर.सी. मजूमदार ने 1857 की घटना का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए इसे "न प्रथम, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम" कहा था। उनका मानना था कि यह विद्रोह अखिल भारतीय स्तर पर एकीकृत नहीं था और इसमें राष्ट्रीय चेतना का अभाव था। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोही स्थानीय हितों तथा व्यक्तिगत कारणों से प्रेरित होकर लड़ रहे थे, इसलिए इसे एक संगठित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम नहीं माना जा सकता।

3. (A) विश्वास कायम करने के लिए ब्रिटिश भारतीय सेना में भारतीय सैनिकों के अनुपात में उल्लेखनीय वृद्धि की गई थी।
1857 के विद्रोह के उपरांत अंग्रेजों ने भारतीय सेना के पुनर्गठन के लिए पील आयोग की सिफारिशों को लागू किया। भविष्य में किसी भी विद्रोह को रोकने के लिए ब्रिटिश भारतीय सेना में यूरोपीय सैनिकों का अनुपात बढ़ाया गया तथा भारतीय सैनिकों की संख्या घटाई गई। इसके अतिरिक्त, महत्वपूर्ण तोपखाने एवं सामरिक शस्त्र केवल ब्रिटिश टुकड़ियों के पास रखे गए, ताकि भारतीय सैनिक पुनः औपनिवेशिक सत्ता को चुनौती न दे सकें।

4. (C) सुरेंद्रनाथ बनर्जी
सुरेंद्रनाथ बनर्जी 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के एक प्रमुख उदारवादी राजनीतिक नेता और इंडियन एसोसिएशन के संस्थापक थे। उन्होंने भारत में नागरिक सेवाओं के सुधार और संवैधानिक अधिकारों के लिए कार्य किया। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनकी कोई भूमिका नहीं थी, क्योंकि उस समय वे सक्रिय राजनीति में प्रवेश नहीं कर चुके थे। कुंवर सिंह, बेगम हजरत महल और नाना साहेब 1857 के विद्रोह के प्रमुख नेता थे।

5. (B) केवल I और III
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शुरुआती चरण (1885-1905) को उदारवादी युग कहा जाता है। इस दौरान नेतृत्व मुख्य रूप से अंग्रेज़ी-शिक्षित बुद्धिजीवियों, वकीलों और पत्रकारों के हाथों में था। इस काल की प्रमुख मांगों में सिविल सेवाओं का भारतीयकरण और प्रशासनिक सुधार शामिल थे। प्रारंभिक कांग्रेस नेताओं का विश्वास संवैधानिक तरीकों में था, इसलिए उन्होंने इस दौर में किसी भी प्रकार के जन-कृषक विद्रोहों या हिंसक आंदोलनों का आयोजन नहीं किया था।

6. (D) बंबई
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन 28 से 31 दिसंबर 1885 को बंबई स्थित गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में आयोजित किया गया था। प्रारंभ में यह अधिवेशन पूना में आयोजित होना निर्धारित था, परंतु वहाँ हैजा फैल जाने के कारण अंतिम समय पर इसका स्थान बदलकर बंबई कर दिया गया। व्योमेश चंद्र बनर्जी की अध्यक्षता में संपन्न इस ऐतिहासिक प्रथम सम्मेलन में देश भर के 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

7. (B) लाला लाजपत राय
सुरक्षा वाल्व सिद्धांत के अनुसार कांग्रेस की स्थापना एक ब्रिटिश अधिकारी द्वारा भारतीय असंतोष को दबाने के लिए की गई थी। उग्रवादी नेता लाला लाजपत राय ने अपने लेखों में इस सिद्धांत को प्रमुखता से लोकप्रिय बनाया। उनका तर्क था कि लॉर्ड डलहौजी और डफरिन के समय में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय जनता में पनप रहे तीव्र असंतोष को एक सुरक्षित मार्ग प्रदान करने के लिए कांग्रेस को एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया।

8. (C) भूमिगत सशस्त्र प्रतिरोध को बढ़ावा देना
कांग्रेस के उदारवादी नेता कानून के दायरे में रहकर संवैधानिक आंदोलन चलाने में विश्वास रखते थे। वे प्रार्थना, याचिका और विरोध सभाओं के माध्यम से अपनी माँगें सरकार के सामने प्रस्तुत करते थे। इसके अतिरिक्त वे पर्चे बाँटने, भाषण देने और प्रस्ताव पारित करने जैसे शांतिपूर्ण तरीकों का उपयोग करते थे। भूमिगत सशस्त्र प्रतिरोध और हिंसा की रणनीतियों को उदारवादियों ने कभी नहीं अपनाया, क्योंकि वे ब्रिटिश न्यायप्रियता में आस्था रखते थे।

9. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
प्रारंभिक उदारवादी नेताओं का मानना था कि भारतीय समाज विभिन्न वर्गों और जातियों में विभाजित है तथा अभी उसमें राजनीतिक परिपक्वता का अभाव है। वे यह मानते थे कि आम जनता प्रत्यक्ष राजनीतिक संघर्ष के लिए तैयार नहीं है, इसलिए उन्होंने जन-आंदोलन आयोजित करने के बजाय संवैधानिक प्रार्थनाओं पर ध्यान केंद्रित किया। इसके परिणामस्वरूप उदारवादी चरण में राष्ट्रीय आंदोलन व्यापक जनआधार हासिल करने में विफल रहा और यह केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित रहा।

Downloaded from www.pdf.tube

10. (A) दादाभाई नौरोजी
दादाभाई नौरोजी ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "पोवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया" में भारत से धन के निष्कासन के सिद्धांत को वैज्ञानिक रूप से प्रतिपादित किया था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ब्रिटिश शासन भारतीय राजस्व और संसाधनों को बिना किसी समुचित प्रतिफल के इंग्लैंड भेज रहा है। इस निरंतर आर्थिक दोहन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को जर्जर कर दिया और देश में व्यापक गरीबी तथा भुखमरी की स्थिति उत्पन्न कर दी।

11. (B) लॉर्ड कर्जन
बंगाल विभाजन की औपचारिक घोषणा 20 जुलाई 1905 को भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा की गई थी। अंग्रेजों ने इसे प्रशासनिक सुविधा का नाम दिया, परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य बंगाल में तेज़ी से बढ़ रहे राष्ट्रवादी आंदोलन को कमजोर करना तथा हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक विभाजन पैदा करना था। इस निर्णय के परिणामस्वरुप संपूर्ण देश में अभूतपूर्व जन-आक्रोश उत्पन्न हुआ और स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई।

12. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
स्वदेशी आंदोलन के दौरान बंगाल विभाजन के विरोध में आंदोलन को देश भर में फैलाने के लिए विभिन्न नेताओं ने नेतृत्व संभाला। दिल्ली में सैयद हैदर रजा ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया, जबकि मद्रास में चिदंबरम पिल्लई ने स्वदेशी भावना का प्रसार किया। पंजाब क्षेत्र में लाला लाजपत राय ने किसानों और युवाओं को संगठित किया तथा बंगाल में बिपिन चंद्र पाल ने स्वदेशी और बहिष्कार का संदेश व्यापक रूप से फैलाया।

13. (A) औपचारिक बहिष्कार प्रस्ताव पारित करना
बंगाल विभाजन के विरोध में 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में एक ऐतिहासिक विशाल जनसभा आयोजित की गई थी। इस बैठक में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का औपचारिक प्रस्ताव पारित किया गया और स्वदेशी आंदोलन की आधिकारिक घोषणा की गई। आंदोलनकारियों ने ब्रिटिश निर्मित वस्त्रों, वस्तुओं और शैक्षणिक संस्थानों का त्याग कर स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का संकल्प लिया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।

14. (C) उदारवादियों ने बहिष्कार को केवल बंगाल तक सीमित रखा, जबकि गरमपंथियों ने इसे एक जन राजनीतिक संघर्ष के रूप में देशव्यापी बना दिया।
उदारवादी नेता स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को मुख्य रूप से बंगाल तक ही सीमित रखना चाहते थे और उनका ध्यान मुख्य रूप से विदेशी सामानों के बहिष्कार तक सीमित था। इसके विपरीत, गरमपंथी नेताओं ने बहिष्कार को केवल बंगाल तक सीमित न रखकर इसे संपूर्ण भारत में विस्तारित करने का आह्वान किया। गरमपंथियों ने इसे एक व्यापक जन-राजनीतिक संघर्ष का रूप दिया, जिसका अंतिम लक्ष्य स्वराज की प्राप्ति था।

15. (D) आंदोलन के तरीकों तथा स्वदेशी और बहिष्कार के दायरे को लेकर मतभेद
1907 का कांग्रेस का सूरत अधिवेशन ऐतिहासिक विभाजन का साक्षी बना। यह विभाजन मुख्य रूप से स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के प्रस्तावों को देशव्यापी स्तर पर लागू करने तथा आंदोलन के तरीकों को लेकर उत्पन्न मतभेदों का परिणाम था। गरमपंथी नेता इन प्रस्तावों को पूरी दृढ़ता से विस्तारित करना चाहते थे, जबकि उदारवादी नेता याचिका और संवैधानिक तरीकों से बाहर जाने को तैयार नहीं थे। इसी असहमति ने विभाजन का रूप लिया।

16. (C) वे ब्रिटिश व्यवस्था के अंतर्निहित न्याय और निष्पक्षता में दृढ़ विश्वास रखते थे।
गरमपंथी नेताओं, जिन्हें लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता है, ने ब्रिटिश शासन की न्यायप्रियता के भ्रम को पूरी तरह से नकार दिया था। उदारवादियों के विपरीत, वे मानते थे कि ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता केवल अपने हितों की पूर्ति करती है और याचिकाओं से कुछ हासिल नहीं होगा। उन्होंने आत्मनिर्भरता, स्वदेशी उत्पादों के प्रचार और प्रत्यक्ष जन-कार्रवाई पर बल दिया। बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज को अपना जन्मसिद्ध अधिकार घोषित किया था।

17. (B) केवल I और III
अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना 1906 में ढाका में नवाब सलीमुल्लाह, आगा खां और मोहसिन-उल-मुल्क के नेतृत्व में हुई थी। इसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम समुदाय के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना और ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा बनाए रखना था। लीग ने बंगाल विभाजन का समर्थन किया था और स्वदेशी आंदोलन का विरोध किया था। इसके प्रयासों से 1909 के मार्ले-मिंटो सुधारों में मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल को मंजूरी दी गई।

18. (A) I, II और III
1916 में एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक द्वारा भारत में होम रूल आंदोलन शुरू किया गया था। तिलक की लीग का कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र (बंबई शहर को छोड़कर), कर्नाटक, मध्य प्रांत और बरार तक सीमित था। एनी बेसेंट की लीग ने बंबई शहर सहित भारत के शेष सभी क्षेत्रों को अपने अधिकार क्षेत्र में शामिल किया। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्व-शासन अर्थात स्वराज्य प्राप्त करना था।

19. (D) महात्मा गांधी
दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के पश्चात महात्मा गांधी ने होम रूल आंदोलन के प्रति सहानुभूति रखी, लेकिन वे औपचारिक रूप से एनी बेसेंट या तिलक की किसी भी होम रूल लीग में शामिल नहीं हुए। गांधी जी का मानना था कि भारत की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में किसी भी अखिल भारतीय जन-आंदोलन में शामिल होने से पहले उन्हें देश की जमीनी वास्तविकताओं और स्थानीय मुद्दों को गहराई से समझना चाहिए।

20. (B) न्यू इंडिया और कॉमनवील
एनी बेसेंट ने भारत में स्व-शासन और होम रूल आंदोलन के विचारों का व्यापक प्रसार करने के लिए दो प्रमुख समाचार पत्रों का संपादन और प्रकाशन किया। 'न्यू इंडिया' एक दैनिक समाचार पत्र था तथा 'कॉमनवील' एक साप्ताहिक पत्रिका

NODIA

थी। इन दोनों प्रकाशनों ने भारतीय जनता में राजनीतिक चेतना जागृत करने, ब्रिटिश नीतियों की आलोचना करने तथा होम रूल के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

21. (C) चंपारण सत्याग्रह, अहमदाबाद मिल हड़ताल, खेड़ा सत्याग्रह
महात्मा गांधी ने भारत लौटने के बाद सबसे पहले 1917 में बिहार के चंपारण में नील किसानों के अधिकारों के लिए पहला सत्याग्रह आयोजित किया। इसके पश्चात फरवरी-मार्च 1918 में उन्होंने अहमदाबाद के सूती वस्त्र मिल मजदूरों की वेतन वृद्धि के लिए सफल आंदोलन का संचालन किया। तत्पश्चात मार्च 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में फसल खराब होने पर किसानों के भू-राजस्व की माफी के लिए सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

22. (C) आमरण अनशन (भूख हड़ताल)
1918 के अहमदाबाद मिल हड़ताल के दौरान सूती वस्त्र मिल मजदूरों और मालिकों के बीच बोनस को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया था। जब मजदूरों का मनोबल गिरने लगा, तब महात्मा गांधी ने उनके न्यायपूर्ण संघर्ष को बल देने के लिए भारत में पहली बार आमरण अनशन अर्थात भूख हड़ताल का प्रयोग किया। इस अहिंसक दबाव के परिणामस्वरूप मिल मालिक झुकने पर मजबूर हुए और मजदूरों की वेतन वृद्धि स्वीकार कर ली।

23. (D) 3/20 हिस्से पर
बिहार के चंपारण जिले में यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा तिनकाठिया प्रणाली लागू की गई थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक किसान को अपनी कुल कृषि योग्य भूमि के 3/20वें हिस्से पर अनिवार्य रुप से नील की खेती करनी पड़ती थी। इसके अतिरिक्त किसानों को अपनी उपज की बेहद कम कीमत दी जाती थी और शोषक कर वसूले जाते थे। महात्मा गांधी ने 1917 में सत्याग्रह चलाकर इस उत्पीड़नकारी प्रथा को समाप्त कराया।

24. (C) फसल खराब होने के कारण भू-राजस्व की माफी की मांग
1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में अत्यधिक वर्षा और बीमारी के कारण फसलें पूरी तरह नष्ट हो गई थीं। राजस्व संहिता के नियमों के अनुसार यदि पैदावार 25 प्रतिशत से कम हो, तो किसानों को भू-राजस्व में पूर्ण छूट पाने का कानूनी अधिकार था। इसके बावजूद ब्रिटिश अधिकारियों ने कर वसूली स्थगित करने से इंकार कर दिया। इसके विरोध में किसानों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह किया।

25. (B) केवल III
1919 का अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम, जिसे रोलेट एक्ट कहा जाता है, सरकार को बिना मुकदमा चलाए राजनीतिक संदिग्धों को दो वर्ष तक जेल में रखने का अधिकार देता था। इस दमनकारी विधेयक का इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल में उपस्थित सभी भारतीय गैर-सरकारी सदस्यों ने एक स्वर में कड़ा विरोध किया था। भारतीय सदस्यों के भारी विरोध और असहमति के बावजूद ब्रिटिश सरकार ने इसे जबरन पास कर दिया था।

26. (D) बंबई
रोलेट एक्ट जैसे काले कानून के लागू होने के विरोध में महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आंदोलन संगठित करने का निर्णय लिया। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने फरवरी 1919 में बंबई में 'सत्याग्रह सभा' की स्थापना की। इस सभा का मुख्य कार्य देश भर के युवाओं को अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों में प्रशिक्षित करना, शपथ पत्र भरवाना और ब्रिटिश सरकार के अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ देशव्यापी हड़ताल तथा विरोध प्रदर्शनों का कुशल संचालन करना था।

27. (B) डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल
पंजाब में रोलेट एक्ट के खिलाफ व्यापक जन-विरोध चल रहा था। इसी दौरान ब्रिटिश प्रशासन ने अमृतसर के दो अत्यंत लोकप्रिय राष्ट्रवादी नेताओं, डॉ. सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल को बिना किसी कानूनी आधार के गिरफ्तार कर लिया। इनकी अन्यायी गिरफ्तारी का शांतिपूर्ण विरोध करने तथा वैशाखी का त्यौहार मनाने के उद्देश्य से 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग में एक विशाल जनसभा आयोजित हुई, जहाँ भयानक नरसंहार हुआ।

28. (D) इसे 'डिसऑर्डर्स इंक्वायरी कमेटी' नाम दिया गया था और इसमें तीन भारतीय सदस्य शामिल थे।
जलियांवाला बाग कांड के बाद ब्रिटिश सरकार ने जांच हेतु लॉर्ड हंटर की अध्यक्षता में 'डिसऑर्डर्स इंक्वायरी कमेटी' का गठन किया। इस आयोग में आठ सदस्य थे, जिनमें तीन भारतीय सदस्य - सर चिमनलाल सीतलवाड़, पंडित जगत नारायण और सुल्तान अहमद खां शामिल थे। यद्यपि इस समिति ने जनरल डायर के कृत्य की आलोचना की, लेकिन उसने उसके खिलाफ किसी कठोर दंडात्मक या आपराधिक मुकदमे की सिफारिश नहीं की, जिससे भारतीय असंतुष्ट रहे।

29. (C) महात्मा गांधी ने इस आंदोलन का विरोध किया और इसे एक ऐसा धार्मिक मुद्दा माना जो समुदायों को विभाजित करेगा।
प्रथम विश्व युद्ध के बाद तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य के विघटन और खलीफा के पद के अपमान के विरोध में भारत में खिलाफत आंदोलन शुरु हुआ। मोहम्मद अली और शौकत अली ने इसका नेतृत्व किया। महात्मा गांधी ने इस आंदोलन का समर्थन किया, क्योंकि उन्होंने इसे हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ लाकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक विशाल और एकजुट राष्ट्रीय आंदोलन खड़ा करने का अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवसर माना था।

30. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
महात्मा गांधी ने खिलाफत मुद्दे को ब्रिटिश शासन के खिलाफ हिंदू और मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने के एक अप्रतिम अवसर के रूप में देखा। उस समय खिलाफत नेताओं की मुख्य मांग तुर्की के खलीफा के धार्मिक स्थलों और क्षेत्रीय संप्रभुता को बनाए रखना थी। इस आंदोलन के दौरान खिलाफत नेताओं द्वारा भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में किसी अलग स्वतंत्र मुस्लिम राज्य की मांग बिल्कुल नहीं की गई थी, इसलिए कारण कथन पूरी तरह से असत्य है।

Click Here to Buy book on Amazon

NODIA

31. (C) नागपुर अधिवेशन
असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम को अंतिम रुप देने और उसे औपचारिक स्वीकृति प्रदान करने के लिए दिसंबर 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन नागपुर में आयोजित किया गया था। इस अधिवेशन में सी.आर. दास ने असहयोग का मुख्य प्रस्ताव पेश किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। इसी अधिवेशन में कांग्रेस के संविधान में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए ताकि इसे एक वास्तविक जन-आधारित राजनीतिक संगठन बनाया जा सके।

32. (A) एनी बेसेंट
1920 में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन और गैर-संवैधानिक जन-कार्रवाई के तरीकों को अपनाया, तब एनी बेसेंट ने कांग्रेस छोड़ दी। वे संवैधानिक सुधारों, क्रमिक राजनीतिक विकास और कानून के दायरे में रहकर आंदोलन करने की पक्षधर थीं। उनका मानना था कि कानून की अवहेलना और जन-आंदोलन से देश में अराजकता फैलेगी, इसलिए उन्होंने कांग्रेस से अपना संबंध समाप्त कर लिया।

33. (B) चौरी चौरा
5 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी चौरा नामक स्थान पर एक हिंसक घटना घटी। प्रदर्शन कर रही उग्र भीड़ ने एक पुलिस थाने को घेरकर उसमें आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मी जीवंत जलकर मर गए। महात्मा गांधी अहिंसा के सिद्धांत के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध थे। इस भयानक हिंसक घटना से आहत होकर उन्होंने 12 फरवरी 1922 को बारडोली में असहयोग आंदोलन को तुरंत वापस लेने की घोषणा कर दी।

34. (C) सी.आर. दास और मोतीलाल नेहरू
असहयोग आंदोलन के स्थगन के बाद कांग्रेस में भावी रणनीति को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गए। 'परिषद् प्रवेश' के समर्थकों ने विधान परिषदों का चुनाव लड़कर भीतर से सरकारी नीतियों को बाधित करने का प्रस्ताव रखा। जब कांग्रेस ने इसे खारिज कर दिया, तब जनवरी 1923 में चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने 'कांग्रेस-खिलाफत स्वराज पार्टी' का गठन किया। सी.आर. दास इसके अध्यक्ष तथा मोतीलाल नेहरू इसके सचिव बने।

35. (A) 4, 2, 1, 3
दिए गए ऐतिहासिक घटनाक्रम का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: चौरी चौरा की हिंसक घटना फरवरी 1922 में हुई थी, जिसके बाद आंदोलन वापस लिया गया। इसके उपरांत जनवरी 1923 में स्वराज पार्टी का गठन किया गया। ब्रिटिश सरकार द्वारा नवंबर 1927 में साइमन कमीशन की नियुक्ति की घोषणा की गई। इसके जवाब में भारतीय नेताओं द्वारा तैयार की गई नेहरू रिपोर्ट को अगस्त 1928 में सर्वदलीय सम्मेलन में स्वीकार किया गया था।

36. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
1920 के दशक में विभिन्न राजनीतिक समितियां गठित हुईं। साइमन कमीशन 1927 में भारत में संवैधानिक सुधारों की समीक्षा के लिए गठित सात सदस्यीय आयोग था, जिसके सभी सदस्य श्वेत थे। नेहरू रिपोर्ट 1928 में भारतीयों द्वारा निर्मित पहला संवैधानिक ढांचा था। मुड्डीमैन समिति ने 1919 के अधिनियम के तहत लागू द्वैध शासन की जांच की, जबकि बटलर समिति ने ब्रिटिश क्राउन और भारतीय देशी रियासतों के संबंधों की समीक्षा की।

37. (C) इसने धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल के निर्माण की सिफारिश की।
1928 में पंडित मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में तैयार नेहरू रिपोर्ट ने भारत के लिए डोमिनियन स्टेटस, मौलिक अधिकारों और भाषाई प्रांतीय पुनर्गठन की जोरदार वकालत की। इस रिपोर्ट की एक मुख्य विशेषता यह थी कि इसने धर्म-आधारित पृथक निर्वाचक मंडल को पूरी तरह खारिज कर दिया था। इसके स्थान पर इसने केंद्र और उन प्रांतों में जहाँ अल्पसंख्यक संख्या में कम थे, आरक्षित सीटों के साथ संयुक्त निर्वाचक मंडल का प्रस्ताव रखा था।

38. (D) केंद्रीय विधायिका में मुसलमानों के लिए एक-तिहाई प्रतिनिधित्व
नेहरू रिपोर्ट में पृथक निर्वाचक मंडल को समाप्त किए जाने के विरोध में मोहम्मद अली जिन्ना ने मार्च 1929 में मुस्लिम लीग के दिल्ली अधिवेशन में अपनी चौदह सूत्री मांगें प्रस्तुत कीं। इन मांगों में प्रमुख मांग यह थी कि प्रस्तावित केंद्रीय विधायिका में मुस्लिम समुदाय के लिए कम से कम एक-तिहाई सीटें आरक्षित की जाएं। इसके अतिरिक्त उन्होंने प्रांतीय स्वायत्तता और मुस्लिम बहुल प्रांतों में मुस्लिम बहुमत बनाए रखने पर जोर दिया।

39. (C) जवाहरलाल नेहरू
दिसंबर 1929 में पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक वार्षिक अधिवेशन लाहौर में रावी नदी के तट पर आयोजित हुआ। इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से 'पूर्ण स्वराज' अर्थात पूर्ण स्वतंत्रता का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया गया। इसी अधिवेशन में 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में पहला स्वतंत्रता दिवस मनाने का आह्वान किया गया और कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया।

40. (A) साबरमती आश्रम
सविनय अवज्ञा आंदोलन की औपचारिक शुरुआत करने के लिए महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक दांडी यात्रा का आयोजन किया। 12 मार्च 1930 को उन्होंने अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से समुद्र तटीय गांव दांडी के लिए पैदल यात्रा शुरु की। लगभग 24 दिनों में 240 मील की दूरी तय करके 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुँचकर उन्होंने अवैध रुप से नमक बनाकर ब्रिटिश नमक कानून को तोड़ा।

41. (D) असम
सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान असम में औपनिवेशिक प्रशासन ने छात्रों की क्रांतिकारी गतिविधियों को दबाने के लिए 'कनिंघम सर्कुलर' लागू किया। इस सर्कुलर के तहत छात्रों और

उनके अभिभावकों को लिखित रुप में यह गारंटी देनी पड़ती थी कि वे किसी भी राजनीतिक आंदोलन या हड़ताल में भाग नहीं लेंगे। असम के छात्रों ने इस अपमानजनक सर्कुलर का डटकर विरोध किया और इसके खिलाफ राज्यव्यापी शक्तिशाली आंदोलन चलाया।

42. (A) खुदाई खिदमतगार
उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में सविनय अवज्ञा आंदोलन का सफल नेतृत्व खान अब्दुल गफ्फार खान ने किया, जिन्हें 'सीमांत गांधी' भी कहा जाता है। उन्होंने स्थानीय पश्तूनों को संगठित करने और अहिंसक आंदोलन चलाने के लिए 'खुदाई खिदमतगार' नाम से एक स्वयंसेवक संगठन बनाया। इस संगठन के सदस्य लाल रंग के कुर्ते पहनते थे, जिसके कारण उन्हें 'लाल कुर्ती आंदोलन' या 'रेड शर्ट्स' के नाम से भी जाना जाता था।

43. (B) केवल II
मार्च 1931 में महात्मा गांधी और वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच हुए समझौते के तहत कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित करने और लंदन में आयोजित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर सहमत हुई। सरकार हिंसा के दोषियों को छोड़कर अन्य सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा करने पर राजी हुई। परंतु भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांतिकारी नेताओं, जिन पर हिंसा का आरोप था, की रिहाई ब्रिटिश सरकार ने खारिज कर दी थी।

44. (B) I, II और IV
प्रथम गोलमेज सम्मेलन का कांग्रेस ने पूर्ण बहिष्कार किया था। इसके पश्चात गांधी-इरविन समझौते के तहत महात्मा गांधी ने कांग्रेस के एकमात्र अधिकृत प्रतिनिधि के रूप में लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। तीसरे गोलमेज सम्मेलन का कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने पूरी तरह बहिष्कार किया था। डॉ. भीमराव अंबेडकर उन गिने-चुने भारतीय नेताओं में शामिल थे जिन्होंने तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेकर दलित वर्गों का प्रतिनिधित्व किया।

45. (B) सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व और अल्पसंख्यक सुरक्षा उपायों पर गतिरोध
द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता का मुख्य कारण विभिन्न भारतीय प्रतिनिधियों के बीच सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व और अल्पसंख्यकों के अधिकारों को लेकर उत्पन्न गंभीर गतिरोध था। महात्मा गांधी का तर्क था कि कांग्रेस संपूर्ण भारतीय राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है, जबकि मुस्लिम लीग, दलित वर्ग के प्रतिनिधि और अन्य समूह अपने समुदायों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल और विशेष संरक्षण की मांग पर अड़े रहे। इस मतभेद से सम्मेलन बेनतीजा समाप्त हो गया।

46. (B) एक पृथक अल्पसंख्यक के रूप में दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल का विस्तार
अगस्त 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैमसे मैकडोनाल्ड ने कम्युनल अवॉर्ड की घोषणा की। इसकी सबसे विवादास्पद बात यह थी कि इसने दलित वर्गों को हिंदू समाज से अलग मानते हुए उनके लिए पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान कर दिया। महात्मा गांधी ने इसे हिंदू समाज को विभाजित करने और राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने का औपनिवेशिक षड्यंत्र माना। इसके विरोध में उन्होंने यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरु कर दिया था।

47. (B) बी.आर. अंबेडकर
कम्युनल अवॉर्ड के विरोध में महात्मा गांधी के आमरण अनशन के बाद सितंबर 1932 में यरवदा जेल में गांधी जी के प्रतिनिधियों और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के बीच ऐतिहासिक 'पूना समझौता' हुआ। इस समझौते के तहत दलित वर्गों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया। इसके बदले प्रांतीय और केंद्रीय विधानमंडलों में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि की गई।

48. (B) केवल I और III
भारत सरकार अधिनियम 1935 ने ब्रिटिश भारतीय प्रांतों और देशी रियासतों से मिलकर एक 'अखिल भारतीय संघ' स्थापित करने का प्रस्ताव रखा, जो रियासतों के शामिल न होने से लागू नहीं हो सका। इस अधिनियम ने प्रांतीय स्तर पर द्वैध शासन को समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तता लागू की और केंद्र में द्वैध शासन का प्रावधान किया। इसके अतिरिक्त, संवैधानिक विवादों के समाधान के लिए दिल्ली में एक संघीय न्यायालय स्थापित किया गया।

49. (B) गवर्नर-जनरल/वायसराय
भारत सरकार अधिनियम 1935 के तहत विधायी शक्तियों को केंद्र और प्रांतों के बीच तीन सूचियों - संघीय सूची, प्रांतीय सूची और समवर्ती सूची में विभाजित किया गया था। जो विषय इन तीनों सूचियों में शामिल नहीं थे, उन्हें अवशिष्ट शक्तियां कहा गया। अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार ये अवशिष्ट विधायी शक्तियां पूरी तरह से गवर्नर-जनरल अर्थात वायसराय के स्वविवेक और विवेकाधीन अधिकारों में निहित की गई थीं।

50. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
सितंबर 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर भारत के वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने भारतीय जनमत और निर्वाचित प्रांतीय सरकारों से परामर्श किए बिना भारत को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में शामिल घोषित कर दिया। कांग्रेस ने इसका कड़ा विरोध किया और मांग की कि युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्र किया जाए। अंग्रेजों द्वारा इस मांग को ठुकरा दिए जाने पर सभी प्रांतीय कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने सामूहिक त्यागपत्र दिया।

51. (C) सचिंद्र नाथ सान्याल
हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना 1924 में कानपुर में राम प्रसाद बिस्मिल, सचिंद्र नाथ सान्याल और योगेश चंद्र चटर्जी जैसे क्रांतिकारियों ने की थी। इस संगठन का आधिकारिक घोषणापत्र "द रिवोल्यूशनरी" शीर्षक से जनवरी 1925 में प्रकाशित और वितरित किया गया था। इस घोषणापत्र के मुख्य लेखक सचिंद्र नाथ सान्याल थे, जिसमें भारत में सशस्त्र

Downloaded from www.pdf.tube

क्रांति द्वारा औपनिवेशिक शासन को समाप्त कर संयुक्त राज्य भारत की स्थापना का लक्ष्य रखा गया था।

52. (B) समाजवादी आदर्शों और समतावादी समाज के लक्ष्य को अपनाना
सितंबर 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और सुखदेव के नेतृत्व में क्रांतिकारियों की बैठक हुई। इसमें संगठन का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन रखा गया। यह परिवर्तन संगठन की वैचारिक परिपक्वता को दर्शाता था, जिसका उद्देश्य केवल अंग्रेजों को भगाना नहीं, बल्कि मार्क्सवादी और समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित एक शोषणमुक्त, समतावादी और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना था।

53. (D) पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल का पारित होना
ब्रिटिश सरकार मजदूरों के अधिकारों का दमन करने और नागरिक स्वतंत्रताओं को छीनने के उद्देश्य से 'पब्लिक सेफ्टी बिल' और 'ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल' को असेंबली में पारित कराना चाहती थी। इसके विरोध में 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में बम फेंके। उनका उद्देश्य किसी को नुकसान पहुँचाना नहीं, बल्कि औपनिवेशिक सरकार के दमनकारी रवैये के खिलाफ "बधिरों को सुनाना" था।

54. (B) I, II और IV
बंगाल में सूर्य सेन के नेतृत्व में इंडियन रिपब्लिकन आर्मी ने अप्रैल 1930 में प्रसिद्ध चटगांव शस्त्रागार छापे का आयोजन किया। इस क्रांतिकारी आंदोलन में प्रीतिलता वड्डेदार और कल्पना दत्त जैसी निडर महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया। क्रांतिकारियों ने कुछ समय के लिए स्थानीय प्रशासन को ठप कर दिया था, लेकिन वे छह महीने तक पूरे बंगाल पर नियंत्रण नहीं रख सके। सूर्य सेन को बाद में गिरफ्तार कर फांसी दे दी गई थी।

55. (A) केवल I और II
सुभाष चंद्र बोस 1938 के हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गए थे। इसके बाद 1939 के त्रिपुरी अधिवेशन में वे महात्मा गांधी द्वारा समर्थित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया को हराकर पुनः अध्यक्ष बने। हालांकि, कार्यकारिणी समिति के गठन को लेकर गांधी जी से हुए वैचारिक मतभेदों के कारण उन्होंने इस्तीफा दे दिया। कांग्रेस छोड़ने के बाद उन्होंने 1939 में 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की थी, न कि स्वराज पार्टी की।

56. (B) यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध के संकट के दौरान तत्काल जन संघर्ष शुरू करना
1939 में सुभाष चंद्र बोस और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के बीच मुख्य वैचारिक मतभेद द्वितीय विश्व युद्ध के संकट को लेकर था। बोस का मानना था कि ब्रिटेन की युद्धकालीन कठिनाइयों का लाभ उठाकर भारत को ब्रिटिश शासन के खिलाफ तुरंत एक व्यापक जन-आंदोलन शुरू कर देना चाहिए। इसके विपरीत, गांधी जी और अन्य वरिष्ठ नेता साम्राज्यवादी संकट के समय अंग्रेजों को इस प्रकार की शर्त पर घेरने के पक्ष में नहीं थे।

57. (C) आजाद हिंद फौज ने महिलाओं के प्रवेश को सख्ती से प्रतिबंधित किया और केवल पुरुषों को अपनी लड़ाकू टुकड़ियों में अनुमति दी।
आजाद हिंद फौज (आईएनए) की स्थापना का प्राथमिक विचार सबसे पहले मलाया में कैप्टन मोहन सिंह के मन में आया था। जुलाई 1943 में सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर पहुँचकर आजाद हिंद फौज और इंडियन इंडिपेंडेंस लीग का नेतृत्व संभाला। आजाद हिंद फौज ने महिलाओं को प्रतिबंधित करने के बजाय कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन के नेतृत्व में 'रानी झाँसी रेजीमेंट' नामक एक पूर्ण महिला लड़ाकू ब्रिगेड का गठन किया था।

58. (B) लाल किला, दिल्ली
द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में ब्रिटिश सरकार ने आजाद हिंद फौज के युद्ध बंदियों पर राजद्रोह और हत्या के आरोप चलाए। नवंबर 1945 में दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले में शाहनवाज खान, प्रेम सहगल और गुरुबख्श सिंह ढिल्लों पर प्रसिद्ध सार्वजनिक मुकदमा चलाया गया। भूलाभाई देसाई, जवाहरलाल नेहरू और तेज बहादुर सप्रू जैसे शीर्ष वकीलों ने उनका बचाव किया। इस मुकदमे ने संपूर्ण भारत में अभूतपूर्व राष्ट्रवादी लहर पैदा कर दी।

59. (C) गवालिया टैंक मैदान, बंबई
क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की ऐतिहासिक बैठक बंबई के गवालिया टैंक मैदान में आयोजित की गई। 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस ने प्रसिद्ध 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को औपचारिक रूप से मंजूरी दे दी। इसी ऐतिहासिक मैदान से महात्मा गांधी ने देशवासियों को ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए "करो या मरो" का अमर मंत्र दिया था, जिसके बाद भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ।

60. (A) उषा मेहता
9 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू होते ही अंग्रेजों ने सभी शीर्ष कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। ऐसे समय में आंदोलन की निरंतरता और राष्ट्रवादी समाचारों के प्रसार हेतु उषा मेहता ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर गुप्त रूप से 'कांग्रेस रेडियो' नामक एक भूमिगत ट्रांसमीटर स्टेशन का संचालन किया। बंबई के विभिन्न स्थानों से प्रसारित होने वाले इस रेडियो ने जनता को संगठित करने और आंदोलन की अलख जगाए रखने में मदद की।

61. (D) कानपुर शहर (संयुक्त प्रांत)
भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान देश के कई हिस्सों में ब्रिटिश शासन ठप हो गया और स्थानीय लोगों ने समानांतर सरकारों की स्थापना की। उत्तर प्रदेश के बलिया में चित्तू पांडे के नेतृत्व में, बंगाल के तमलीक में 'जातीय सरकार' तथा महाराष्ट्र के सतारा में नाना पाटिल के नेतृत्व में 'प्रति सरकार' जैसी प्रसिद्ध समानांतर सरकारें बनीं। कानपुर शहर में ऐसी किसी भी समानांतर सरकार का गठन आंदोलन के इस दौर में नहीं हुआ था।

NODIA

62. (B) I, II और IV
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने अभूतपूर्व योगदान दिया। मैडम भीकाजी कामा ने 1907 में जर्मनी के स्टटगार्ट में पहला भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। सरोजिनी नायडू 1925 में कांग्रेस की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष बनीं। अरुणा आसफ अली ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गवालिया टैंक मैदान में तिरंगा फहराया था। कल्पना दत्त बंगाल के सूर्य सेन समूह से जुड़ी थीं, न कि उत्तर भारत के HSRA संगठन से।

63. (B) बाल गंगाधर तिलक
लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने जनता में राष्ट्रवादी चेतना जगाने और औपनिवेशिक शासन के दमनकारी स्वरूप को उजागर करने के लिए दो प्रमुख समाचार पत्र शुरू किए। उन्होंने मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी भाषा में 'मराठा' का संपादन किया। केसरी के निडर और तीखे संपादकीय लेखों के माध्यम से तिलक ने भारतीयों में स्वराज, स्वदेशी और बहिष्कार का संदेश फैलाया, जिसके लिए उन्हें कई बार कठोर कारावास भुगतना पड़ा।

64. (B) आनंदमठ
प्रसिद्ध देशभक्ति गीत 'वंदे मातरम' की रचना बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने की थी। यह कालजयी गीत उनके प्रसिद्ध बांग्ला उपन्यास 'आनंदमठ' से लिया गया था, जो 1882 में प्रकाशित हुआ था। इस गीत ने भारतीय राष्ट्रवादियों को गहराई से प्रेरित किया और 1905 के स्वदेशी आंदोलन के दौरान यह ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शनों का मुख्य राष्ट्रीय गीत बन गया। बाद में इसे भारत के राष्ट्रीय गीत का दर्जा प्रदान किया गया।

65. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारतीय पुनर्जागरण और स्वतंत्रता संग्राम में पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने उर्दू पत्र 'अल-हिलाल' का संपादन किया। बारिंद्र कुमार घोष और भूपेंद्रनाथ दत्ता ने क्रांतिकारी विचारों के प्रसार के लिए 'युगांतर' शुरू किया। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन के सिद्धांतों और वेदांत दर्शन हेतु 'प्रबुद्ध भारत' का प्रकाशन किया, जबकि दादाभाई नौरोजी ने पारसी सुधारों हेतु 'रास्त गोफ्तार' निकाला था।

66. (B) 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट
वायसराय लॉर्ड लिटन के कार्यकाल में पारित 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को "मुँह बंद करने वाला अधिनियम" कहा गया। यह अधिनियम केवल भारतीय भाषा (देशी) के समाचार पत्रों पर कठोर सेंसरशिप और प्रतिबंध लगाने के लिए बनाया गया था, जबकि अंग्रेजी समाचार पत्रों को इससे मुक्त रखा गया था। इसके तहत जिला मजिस्ट्रेटों को बिना किसी अदालती सुनवाई के भारतीय समाचार पत्रों की प्रिंटिंग प्रेस जब्त करने का व्यापक अधिकार दिया गया था।

67. (B) संबंधित शासकों के अधीन नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त करना और उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना
राजस्थान की देशी रियासतों में चले प्रजामंडल आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य रियासती शासकों की निरंकुशता को समाप्त करना था। ये आंदोलन स्थानीय राजाओं के संरक्षण में ही उत्तरदायी शासन प्रणाली की स्थापना, नागरिकों के मौलिक अधिकारों की सुरक्षा और सामंती शोषण से मुक्ति चाहते थे। प्रजामंडलों ने मुख्यधारा के राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़कर रियासतों में राजनीतिक चेतना जगाने और सामाजिक सुधार लागू करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

68. (A) जयपुर प्रजामंडल, मेवाड़ प्रजामंडल, झालावाड़ प्रजामंडल
राजस्थान में प्रजामंडलों की स्थापना का कालानुक्रमिक क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जयपुर प्रजामंडल की स्थापना सबसे पहले 1931 में कपूरचंद पाटनी और जमनालाल बजाज के प्रयासों से हुई थी। इसके पश्चात मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना अप्रैल 1938 में माणिक्य लाल वर्मा द्वारा की गई थी। झालावाड़ प्रजामंडल की स्थापना राजस्थान में सबसे अंत में 1946 में मांगीलाल भव्य के नेतृत्व में हुई थी।

69. (B) विजय सिंह पथिक
बिजोलिया किसान आंदोलन सामंती करों और लाटा-कुंता प्रथा के खिलाफ मेवाड़ रियासत में शुरू हुआ था। भूप सिंह अर्थात विजय सिंह पथिक ने 1916 में इस आंदोलन के दूसरे चरण का नेतृत्व संभाला। उन्होंने 'राजस्थान सेवा संघ' और 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' की स्थापना करके आंदोलन को सुसंगठित किया। 'प्रताप' समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने इस स्थानीय किसान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई और इसे अत्यधिक सफल बनाया।

70. (D) मारवाड़ प्रजामंडल रचनात्मक कार्य और संवैधानिक विरोध के स्थान पर सशस्त्र विद्रोह पर अत्यधिक निर्भर था।
राजस्थान के आंदोलनों में मोतीलाल तेजावत का एकी आंदोलन और गोविंद गुरु द्वारा स्थापित संप सभा के माध्यम से भीलों का सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान ऐतिहासिक घटनाएं थीं। 1913 में मानगढ़ पहाड़ी पर ब्रिटिश सेना की गोलीबारी में सैकड़ों निर्दोष भील मारे गए थे। मारवाड़ प्रजामंडल ने कभी सशस्त्र विद्रोह का रास्ता नहीं अपनाया; इसने जयनारायण व्यास के नेतृत्व में पूरी तरह अहिंसक, संवैधानिक और रचनात्मक तरीकों से उत्तरदायी शासन की मांग की थी।

71. (A) अंतरिम मंत्रिमंडल में कांग्रेस और लीग के बीच नामांकन में समानता
1945 का देसाई-लियाकत समझौता केंद्रीय विधायिका में कांग्रेस नेता भूलाभाई देसाई और मुस्लिम लीग के लियाकत अली खान के बीच एक भावी संवैधानिक समझौते का खाका था। इसमें प्रस्ताव दिया गया कि केंद्र में बनने वाली अंतरिम सरकार में कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों को बराबर संख्या में सदस्य नामित करने का अधिकार होगा। इसके अतिरिक्त इसमें अल्पसंख्यकों तथा सिखों के लिए बीस प्रतिशत सीटें आरक्षित करने का प्रावधान शामिल था।

72. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
1946 में भारत आई कैबिनेट मिशन योजना ने पृथक और पूर्ण संप्रभु पाकिस्तान की मांग को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया था। मिशन का स्पष्ट निष्कर्ष था कि विभाजन से गैर-मुस्लिम

Click Here to Buy book on Flipkart

और मुस्लिम अल्पसंख्यकों की समस्या हल नहीं होगी, क्योंकि दोनों राज्यों में बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक रह जाएंगे। इसके अलावा विभाजन से पंजाब और बंगाल का विघटन होगा तथा देश की रक्षा, संचार और परिवहन व्यवस्था को गंभीर नुकसान पहुँचेगा।

73. (D) लॉर्ड माउंटबेटन
मार्च 1946 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने भारतीय संवैधानिक गतिरोध को दूर करने और सत्ता हस्तांतरण का ढांचा तैयार करने हेतु तीन ब्रिटिश कैबिनेट मंत्रियों का एक उच्चस्तरीय दल भारत भेजा। इस कैबिनेट मिशन में लॉर्ड पैथिक-लॉरेंस (भारत सचिव), सर स्टेफोर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष) और ए.वी. अलेक्जेंडर (नौसेना के प्रथम लॉर्ड) शामिल थे। लॉर्ड माउंटबेटन इस मिशन के सदस्य नहीं थे, वे मार्च 1947 में वायसराय बने।

74. (A) 16 अगस्त 1946
कैबिनेट मिशन योजना के प्रांतीय समूहन प्रावधानों पर कांग्रेस के बयानों से नाराज होकर मुस्लिम लीग ने जुलाई 1946 में योजना की स्वीकृति वापस ले ली। पृथक पाकिस्तान की मांग को मनवाने और अपनी राजनीतिक ताकत दिखाने के लिए मोहम्मद अली जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस' मनाने का आह्वान किया। इसके परिणामस्वरुप कलकत्ता और बंगाल के अन्य हिस्सों में भीषण सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे।

75. (C) माउंटबेटन योजना (3 जून योजना)
भारत के विभाजन और शीघ्र सत्ता हस्तांतरण की औपचारिक योजना भारत के अंतिम ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा 3 जून 1947 को प्रस्तुत की गई थी। इस योजना को '3 जून योजना' या 'माउंटबेटन योजना' कहा जाता है। इसमें पंजाब और बंगाल की विधानसभाओं द्वारा विभाजन पर मतदान, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में जनमत संग्रह और 15 अगस्त 1947 को भारत तथा पाकिस्तान नामक दो डोमिनियन बनाने का प्रावधान स्वीकृत हुआ।

76. (A) केवल I और II
ब्रिटिश संसद में पारित भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने 15 अगस्त 1947 को भारत और पाकिस्तान नामक दो स्वतंत्र डोमिनियन के गठन का प्रावधान किया। इसने ब्रिटिश सम्राट की उपाधियों से 'भारत का सम्राट' शब्द समाप्त कर दिया। देशी रियासतों के संबंध में अधिनियम में यह प्रावधान था कि वे अपनी इच्छानुसार भारत या पाकिस्तान में से किसी भी डोमिनियन में शामिल हो सकती हैं अथवा स्वतंत्र रह सकती हैं।

77. (C) रेडक्लिफ आयोग
1947 में भारत विभाजन के समय भारत और पाकिस्तान के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के निर्धारण के लिए दो सीमा आयोग गठित किए गए थे - एक पंजाब के लिए और दूसरा बंगाल के लिए। ब्रिटिश कानूनविद सर सिरिल रेडक्लिफ को दोनों सीमा आयोगों का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उनके द्वारा निर्धारित सीमा रेखा को 'रेडक्लिफ रेखा' कहा जाता है, जिसने दोनों देशों के बीच प्रांतीय क्षेत्रों का औपचारिक सीमांकन किया।

78. (B) तेभागा आंदोलन
1946-47 में स्वतंत्रता से ठीक पहले बंगाल में किसान सभा के नेतृत्व में 'तेभागा आंदोलन' शुरु हुआ। इस आंदोलन की मुख्य मांग यह थी कि जोतदारों को दिए जाने वाले फसल के हिस्से को घटाकर आधा करने के बजाय दो-तिहाई हिस्सा बटाईदार किसानों (वर्गदार) को दिया जाए और जमींदार या जोतदार का हिस्सा घटाकर केवल एक-तिहाई अर्थात 'तेभागा' किया जाए। यह एक अत्यंत व्यापक और संगठित किसान आंदोलन था।

79. (B) लाला लाजपत राय
भारत में संगठित मजदूर आंदोलन को दिशा देने और श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा हेतु 31 अक्टूबर 1920 को बंबई में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना की गई थी। एन.एम. जोशी, जोसेफ बैप्टिस्टा और अन्य नेताओं के सहयोग से गठित इस राष्ट्रीय श्रमिक संगठन के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय को चुना गया था।

80. (C) सरदार
1928 में गुजरात के बारडोली तालुका में बॉम्बे सरकार द्वारा भू-राजस्व में 22 प्रतिशत की अन्यायपूर्ण वृद्धि के खिलाफ किसानों ने आंदोलन शुरु किया। वल्लभभाई पटेल ने इस आंदोलन का अत्यंत कुशल, अनुशासित और अहिंसक नेतृत्व किया, जिसके आगे झुककर ब्रिटिश सरकार को कर वृद्धि रद्द करनी पड़ी। इस शानदार विजय के उपरांत बारडोली की महिलाओं ने उनके नेतृत्व और साहस से प्रभावित होकर उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी।

81. (B) मुंडा उलगुलान
1899-1900 में छोटानागपुर क्षेत्र में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में एक विशाल जनजातीय विद्रोह हुआ, जिसे 'मुंडा उलगुलान' (महान हलचल) कहा जाता है। यह आंदोलन मुंडा समाज की पारंपरिक सामूहिक खेती व्यवस्था (खूंटकट्टी) को दीकुओं अर्थात बाहरी जमींदारों द्वारा नष्ट किए जाने के खिलाफ था। बिरसा मुंडा ने सामाजिक-धार्मिक पुनरुद्धार और विदेशी शासन को समाप्त कर एक स्वतंत्र 'मुंडा राज' की स्थापना का आह्वान किया था।

NODIA

82. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
विभिन्न किसान और जनजातीय विद्रोहों ने औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। 1855 के संथाल विद्रोह का नेतृत्व सिद्धू और कान्हू मुर्मू भाइयों ने किया था। 1922 का रम्पा जनजातीय विद्रोह आंध्र प्रदेश में अल्लूरी सीताराम राजू के नेतृत्व में हुआ। अवध का एका आंदोलन मदारी पासी द्वारा किसानों के अधिकारों हेतु चलाया गया, जबकि 1859 के बंगाल नील विद्रोह का नेतृत्व दिगंबर बिस्वास और बिष्णु बिस्वास ने किया था।

83. (C) निर्धारित दरों से अधिक लगान की वसूली और जमींदारों के शोषक कर
1921-1922 के दौरान उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के जिलों में 'एका आंदोलन' अर्थात एकता आंदोलन उभरा, जिसका नेतृत्व मदारी पासी ने किया। इस आंदोलन की प्राथमिक शिकायत जमींदारों

और तालुकदारों द्वारा निर्धारित कानूनी दर से 50 प्रतिशत तक अधिक लगान वसूलना, बेगार की अन्यायी प्रथा और तरह-तरह के अवैध कर थे। किसानों ने एकजुट होकर शपथ ली कि वे केवल दर्ज कानूनी लगान ही देंगे और समय पर भुगतान करेंगे।

84. (C) मौलाना अबुल कलाम आजाद – द इंडियन स्ट्रगल
भारतीय नेताओं और उनकी साहित्यिक रचनाओं में 'द इंडियन स्ट्रगल' मौलाना अबुल कलाम आजाद की नहीं, बल्कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रसिद्ध पुस्तक है। इस पुस्तक में सुभाष चंद्र बोस ने 1920 से 1942 के बीच भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का विस्तृत विवरण दिया है। मौलाना अबुल कलाम आजाद की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'इंडिया विंस फ्रीडम' है। अन्य सभी दिए गए युग्म पूरी तरह से सही हैं।

85. (B) सरदार वल्लभभाई पटेल
1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय देश में 560 से अधिक देशी रियासतें मौजूद थीं, जिन्हें स्वतंत्र रहने या किसी डोमिनियन में शामिल होने का विकल्प दिया गया था। भारत के पहले गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने वी.पी. मेनन के साथ मिलकर अपनी अद्भुत राजनीतिक कूटनीति, दृढ़ संकल्प और सूझबूझ से इन सभी रियासतों का भारतीय संघ में विलय कराया। इस ऐतिहासिक एकीकरण हेतु उन्हें "भारत का लौह पुरुष" कहा जाता है।

86. (B) बी.आर. अंबेडकर
महान समाज सुधारक और विधिनेता डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर ने दलितों और श्रमिक वर्ग के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए 1936 में 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना की। उन्होंने आजीवन अस्पृश्यता उन्मूलन, सामाजिक न्याय, समान अधिकारों और दलित वर्गों के शैक्षणिक पुनरुत्थान के लिए संघर्ष किया। उन्होंने गोलमेज सम्मेलनों और संवैधानिक बहसों में वंचित वर्गों की आवाज को सबसे प्रखर रूप से उठाकर भारत के सामाजिक परिदृश्य को बदला।

87. (B) भारतीयों द्वारा अपना संविधान स्वयं बनाने के अधिकार की पहली बार आधिकारिक स्वीकृति मिली
अगस्त 1940 में वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो द्वारा प्रस्तुत 'अगस्त प्रस्ताव' भारतीय संवैधानिक विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस प्रस्ताव में ब्रिटिश सरकार ने पहली बार आधिकारिक तौर पर यह स्वीकार किया कि भारत का भावी संविधान बनाना मुख्य रूप से स्वयं भारतीयों का अधिकार और उत्तरदायित्व है। इसके अतिरिक्त इसमें युद्ध के बाद एक प्रतिनिधि संविधान सभा का गठन करने और वायसराय की कार्यकारी परिषद के विस्तार का प्रस्ताव था।

88. (B) केवल I और III
सितंबर 1946 में गठित अंतरिम सरकार में पंडित जवाहरलाल नेहरू को वायसराय की कार्यकारी परिषद का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया था। प्रारंभ में मुस्लिम लीग इसमें शामिल नहीं हुई, लेकिन अक्टूबर 1946 में वे सरकार में शामिल हो गए। जब लीग के प्रतिनिधि शामिल हुए, तो लियाकत अली खान को वित्त विभाग सौंपा गया। उन्होंने अपने बजट प्रस्तावों से सरकार के कामकाज में अनेक बाधाएं उत्पन्न की थीं।

89. (A) I, II और III
लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा प्रस्तुत 3 जून योजना में भारत और पाकिस्तान दो डोमिनियनों के गठन तथा पंजाब एवं बंगाल विधानसभाओं द्वारा विभाजन पर निर्णय लेने का प्रावधान था। इसके अलावा असम के सिलहट जिले और उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में जनमत संग्रह कराने की व्यवस्था शामिल थी। योजना में स्वतंत्रता के बाद किसी संयुक्त सैन्य कमान की स्थापना का कोई स्थायी प्रावधान नहीं था, केवल अल्पकालिक विभाजन प्रक्रिया के लिए व्यवस्था थी।

90. (B) कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी
दिए गए राजनीतिक संगठनों में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी अन्य तीनों से मूल विचारधारा के आधार पर भिन्न है। हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और मुस्लिम लीग की स्थापना धार्मिक या सांप्रदायिक आधार पर अपने-अपने समुदायों के हितों की रक्षा हेतु हुई थी। इसके विपरीत, 1934 में आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण द्वारा स्थापित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी एक वामपंथी, धर्मनिरपेक्ष और आर्थिक-सामाजिक समानता तथा समाजवाद पर आधारित राजनीतिक दल थी।

91. (B) कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच राजनीतिक गतिरोध को हल करना
1944 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच स्वतंत्रता तथा पाकिस्तान की मांग को लेकर बने गंभीर राजनीतिक गतिरोध को दूर करने के लिए 'सी.आर. फॉर्मूला' तैयार किया। इस फॉर्मूले में प्रस्ताव था कि मुस्लिम लीग स्वतंत्रता की मांग का समर्थन करे और युद्ध समाप्त होने के बाद मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में जनमत संग्रह कराया जाए। गांधी जी ने बात की, परंतु जिन्ना ने इसे अस्वीकार किया।

92. (B) जिन्ना की यह मांग कि परिषद के सभी मुस्लिम सदस्यों को लीग द्वारा ही मनोनीत किया जाए
जून 1945 में वायसराय लॉर्ड वेवैल ने राजनीतिक गतिरोध दूर करने हेतु शिमला में सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया। वेवैल योजना के तहत वायसराय की कार्यकारी परिषद में हिंदुओं और मुसलमानों को समान प्रतिनिधित्व देना प्रस्तावित था। यह सम्मेलन इसलिए विफल हो गया क्योंकि मोहम्मद अली जिन्ना ने यह शर्त रखी कि परिषद में शामिल होने वाले सभी मुस्लिम प्रतिनिधियों को केवल मुस्लिम लीग ही मनोनीत करेगी, जिसे कांग्रेस ने खारिज कर दिया।

93. (A) सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी
1905 में पुणे में प्रसिद्ध उदारवादी नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' (भारत सेवक समाज) की स्थापना की। इस संस्था का प्राथमिक उद्देश्य ऐसे समर्पित राष्ट्रीय प्रचारकों और कार्यकर्ताओं को तैयार करना था जो अपना जीवन देश सेवा के लिए समर्पित कर सकें। इस संगठन ने देश में शिक्षा के प्रसार, अछूतोद्धार, जनजातीय कल्याण और संवैधानिक सुधारों को बढ़ावा देने में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कार्य किया।

NODIA

94. (C) जवाहरलाल नेहरू
13 दिसंबर 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की संविधान सभा में ऐतिहासिक 'उद्देश्य प्रस्ताव' (ऑब्जेक्टिव्स रिजोल्यूशन) प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव ने भावी स्वतंत्र भारत के संवैधानिक ढांचे, दार्शनिक मूल्यों, लोकतंत्र, संप्रभुता और नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अधिकारों की रूपरेखा निर्धारित की। संविधान सभा द्वारा 22 जनवरी 1947 को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया यह प्रस्ताव वर्तमान भारतीय संविधान की उद्देशिका (प्रस्तावना) का मुख्य आधार बना।

95. (A) 2, 1, 4, 3
1940 के दशक के राजनीतिक घटनाक्रमों का सही कालानुक्रमिक अनुक्रम इस प्रकार है: सबसे पहले अगस्त 1940 में वायसराय लिनलिथगो द्वारा 'अगस्त प्रस्ताव' लाया गया। इसके पश्चात मार्च 1942 में सर स्टेफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में 'क्रिप्स मिशन' भारत आया। जून 1945 में शिमला सम्मेलन के दौरान 'वेवैल योजना' पर चर्चा हुई और अंततः मार्च 1946 में तीन ब्रिटिश मंत्रियों का 'कैबिनेट मिशन' भारत भेजा गया था।

96. (C) लॉर्ड लिनलिथगो
अगस्त 1942 में जब महात्मा गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया गया, उस समय लॉर्ड लिनलिथगो भारत के वायसराय और गवर्नर-जनरल थे। लॉर्ड लिनलिथगो का कार्यकाल 1936 से 1943 तक रहा, जो किसी भी ब्रिटिश वायसराय का सबसे लंबा कार्यकाल था। आंदोलन की शुरुआत होते ही उन्होंने कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं को तुरंत गिरफ्तार करवाकर दमनकारी नीतियां लागू की थीं।

97. (B) सत्य के प्रति अहिंसक निष्ठा और कष्ट सहने की तत्परता
महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित 'सत्याग्रह' शब्द दो शब्दों 'सत्य' और 'आग्रह' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है सत्य के प्रति अटल निष्ठा। गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह दुर्बलों का निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं, बल्कि आत्मबल और नैतिक शक्ति पर आधारित एक अहिंसक हथियार है। इसमें विरोधी के प्रति बिना किसी द्वेष या हिंसा के, स्वयं कष्ट सहकर और अहिंसक साधनों द्वारा अन्याय का विरोध करना तथा विरोधी का हृदय परिवर्तन करना शामिल है।

98. (C) मौलाना अबुल कलाम आजाद
मौलाना अबुल कलाम आजाद 1940 में रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे। इसके बाद द्वितीय विश्व युद्ध के छिड़ने, भारत छोड़ो आंदोलन तथा औपनिवेशिक सरकार द्वारा नेताओं की गिरफ्तारी के कारण कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन आयोजित नहीं हो सके। इसके परिणामस्वरूप मौलाना आजाद 1940 से 1946 तक लगातार छह वर्षों की सबसे लंबी निरंतर अवधि तक कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे।

99. (D) सशस्त्र ग्रामीण रक्षा मिलिशिया का गठन
महात्मा गांधी का 'रचनात्मक कार्यक्रम' उनके अहिंसक आंदोलनों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग था। इसका उद्देश्य ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर बनाना और सामाजिक कुरीतियों को दूर करना था। इसमें खादी और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना, अस्पृश्यता का पूर्ण उन्मूलन, हिंदू-मुस्लिम एकता, बुनियादी शिक्षा और मद्यनिषेध जैसे सामाजिक सुधार शामिल थे। इसमें किसी भी प्रकार के सशस्त्र मिलिशिया या हिंसक दस्ते का गठन पूर्णतः वर्जित था।

100. (B) अभिजात वर्ग के संवैधानिक आंदोलन से बहु-वर्गीय व्यापक अहिंसक आंदोलन में विकास
1885 से 1947 के बीच भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का क्रमिक विकास इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। 1885 में कांग्रेस की स्थापना के समय यह मुख्यतः शिक्षित शहरी अभिजात वर्ग तक सीमित एक संवैधानिक याचिका आंदोलन था। समय के साथ विशेषकर महात्मा गांधी के आगमन के बाद, यह किसान, मजदूर, महिला और युवाओं को शामिल करने वाले एक विशाल, बहु-वर्गीय व्यापक अहिंसक जन-आंदोलन में रुपांतरित हो गया, जिसने अंततः भारत को स्वतंत्रता दिलाई।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 04

1857 में राजस्थान की भूमिका

NODIA

1. 1857 के विद्रोह की पूर्व संध्या पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और राजस्थान की रियासतों के बीच संबंधों को नियंत्रित करने वाला प्राथमिक राजनीतिक ढांचा क्या था?
   (A) व्यपगत का सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स)
   (B) अधीनस्थ पृथक्करण की नीति (पॉलिसी ऑफ सबऑर्डिनेट आइसोलेशन)
   (C) समान संघ की नीति
   (D) प्रत्यक्ष विलय की प्रणाली

2. 1857 से पूर्व राजपूताना पर अंग्रेजों के प्रशासनिक नियंत्रण का सही वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा कथन करता है?
   (A) कलकत्ता में गवर्नर-जनरल द्वारा सीधे नियुक्त एक ब्रिटिश मुख्य आयुक्त (चीफ कमिश्नर) पूरे क्षेत्र पर प्रत्यक्ष शासन करता था।
   (B) राजपूताना को गवर्नर-जनरल के प्रत्यक्ष सर्वोच्च नियंत्रण में एक एकीकृत प्रशासनिक क्षेत्र के रूप में शासित किया जाता था।
   (C) अंग्रेजों ने केवल सैन्य छावनियाँ रखी थीं और व्यक्तिगत रियासतों में कोई आधिकारिक पॉलिटिकल एजेंट तैनात नहीं किया था।
   (D) सर्वोपरि सत्ता का प्रयोग गवर्नर-जनरल के एजेंट (ए.जी.जी.) की देखरेख में पॉलिटिकल एजेंटों के नेटवर्क के माध्यम से किया जाता था।

3. 1857 से पूर्व अंग्रेजों की किस आर्थिक नीति ने राजस्थान के व्यापारी और शासक वर्ग के बीच व्यापक असंतोष पैदा किया था?
   (A) राजपूताना की सभी रियासतों में जमींदारी व्यवस्था का व्यापक उन्मूलन
   (B) संपूर्ण मेवाड़ क्षेत्र में नील की खेती और उसके व्यवसायीकरण की बाध्यता
   (C) स्थानीय नमक व्यापार पर ब्रिटिश एकाधिकार के साथ-साथ भारी पारगमन शुल्क (ट्रांजिट ड्यूटी)
   (D) मारवाड़ क्षेत्र में ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा भू-राजस्व का प्रत्यक्ष संग्रह

4. 1857 से पूर्व राजस्थान की रियासतों की राजनीतिक स्थिति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
   (A) राजस्थान के शासक आंतरिक सुरक्षा के लिए अत्यधिक अंग्रेजों पर निर्भर थे।
   (B) ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण पारंपरिक सामंती अभिजात वर्ग (जागीरदार) के संबंध प्रायः अपने शासकों के साथ तनावपूर्ण रहते थे।
   (C) ब्रिटिश सहायक सेना के रख-रखाव का वित्तीय बोझ रियासतों पर डाला गया था।
   (D) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी रियासतों के उत्तराधिकार विवादों में हस्तक्षेप करने से सख्ती से बचती थी।

5. राजस्थान की छावनियों में तैनात सिपाहियों के बीच 1857 के विद्रोह के प्रसार का तात्कालिक कारण क्या था?
   (A) ए.जी.जी. द्वारा स्थानीय किसानों पर अचानक भारी कृषि कर लगाना
   (B) अंग्रेजों द्वारा अवध का विलय, जिसने राजपूत अभिजात वर्ग को गंभीर रूप से प्रभावित किया
   (C) मेरठ में सिपाही विद्रोह का समाचार राजपूताना के अधिकारियों तक पहुँचना
   (D) माउंट आबू में गवर्नर-जनरल के एजेंट की हत्या का समाचार

6. 1857 में विद्रोह की शुरुआत के समय, राजपूताना एजेंसी में कितनी ब्रिटिश सैन्य छावनियाँ स्थित थीं?
   (A) चार
   (B) छह
   (C) पाँच
   (D) आठ

7. राजस्थान में तैनात सिपाहियों के असंतोष का मुख्य अंतर्निहित कारण निम्नलिखित में से कौन-सा था?
   (A) स्थानीय शासकों द्वारा सभी देशी सिपाहियों का योजनाबद्ध तरीके से बलपूर्वक धर्म परिवर्तन
   (B) ब्रिटिश कमान द्वारा सिपाहियों को स्थानीय त्योहारों में सम्मिलित होने की स्पष्ट अनुमति न देना
   (C) 1850 के पश्चात् अवध से देशी सैनिकों की भर्ती पर पूर्ण प्रतिबंध
   (D) आटे में हड्डियों का चूरा मिलाए जाने की भ्रांतियाँ और चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   कथन (A) : शुरुआती महीनों में, राजस्थान में 1857 का विद्रोह काफी हद तक सैन्य छावनियों तक ही सीमित था।
   कारण (R) : राजस्थान के रियासती शासकों ने नागरिक विद्रोहों का सक्रिय रूप से दमन किया और ब्रिटिश अधिकारियों को पूरा समर्थन दिया।
   उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

9. 1857 के विद्रोह के दौरान राजपूताना के गवर्नर-जनरल के एजेंट (ए.जी.जी.) के पद पर कौन आसीन था?
(A) मेजर विलियम ईडन
(B) कैप्टन चार्ल्स शावर्स
(C) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस
(D) कर्नल जेम्स टॉड

10. मई 1857 के ग्रीष्मकालीन महीने में, जब मेरठ विद्रोह की सूचना पहुँची, तब राजपूताना के गवर्नर-जनरल के एजेंट (ए.जी.जी.) का मुख्यालय कहाँ स्थित था?
(A) माउंट आबू
(B) अजमेर
(C) जयपुर
(D) नसीराबाद

11. 1857 में राजस्थान की विभिन्न रियासतों में तैनात पॉलिटिकल एजेंटों के संबंध में असंगत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) मेजर बर्टन - कोटा
(B) कैप्टन शावर्स - मेवाड़
(C) मैक मोसन - मारवाड़
(D) मेजर ईडन - बीकानेर

12. मेरठ विद्रोह की सूचना मिलने के बाद ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस की कार्रवाइयों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. उसने तुरंत अपना मुख्यालय माउंट आबू से अजमेर स्थानांतरित कर दिया।
II. उसने सभी राजपूत शासकों को शांति बनाए रखने और किसी भी विद्रोह का दमन करने का निर्देश जारी किया।
III. उसने किसी भी सैन्य विद्रोह से पहले अजमेर में सभी देशी पैदल सेना इकाइयों को सफलतापूर्वक निशस्त्र कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

13. नसीराबाद छावनी में राजस्थान का 1857 का पहला सैन्य विद्रोह किस तिथि को हुआ था?
(A) 10 मई 1857
(B) 28 मई 1857
(C) 3 जून 1857
(D) 15 अक्टूबर 1857

14. नसीराबाद छावनी में किस सैन्य रेजिमेंट ने विद्रोह की शुरुआत की थी?
(A) 30वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री
(B) जोधपुर लीजन
(C) मेरवाड़ा बटालियन
(D) 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री

15. नसीराबाद विद्रोह के दौरान विद्रोही सिपाहियों द्वारा किन ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या कर दी गई थी?
(A) 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री
(B) मेजर स्पॉटिसवुड और कर्नल न्यूबरी
(C) मेजर बर्टन और डॉ. सैडलर
(D) कैप्टन हीथकोट और जनरल लॉरेंस

16. 1857 के विद्रोह के दौरान सैन्य टुकड़ियों का उनकी संबंधित छावनियों के साथ मिलान कीजिए:
सूची I : सैन्य टुकड़ियाँ
P. मेरवाड़ा बटालियन
Q. मेवाड़ भील कोर
R. जोधपुर लीजन
S. कोटा कंटिजेंट
सूची II : छावनियाँ
1. देवली
2. एरिनपुरा
3. खेरवाड़ा
4. ब्यावर
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

17. नीमच छावनी में सिपाहियों का विद्रोह 3 जून 1857 को किस प्रमुख व्यक्तित्व के नेतृत्व में शुरु हुआ था?
(A) मेहराब खान
(B) मोहम्मद अली बेग
(C) ठाकुर कुशाल सिंह
(D) लाला जयदयाल

18. नीमच में विद्रोह से ठीक पहले किस ब्रिटिश अधिकारी ने देशी सिपाहियों को कुरान और गीता पर निष्ठा की शपथ दिलाने का असफल प्रयास किया था?
(A) कर्नल एबॉट
(B) मेजर शावर्स
(C) कैप्टन मैकडोनाल्ड
(D) जनरल रॉबर्ट्स

19. नीमच विद्रोह के दौरान, पलायन कर रहे ब्रिटिश अधिकारियों और उनके परिवारों के एक समूह को डूंगला गाँव में रुघनाथ सिंह के घर पर शरण दी गई थी। किस शासक ने बाद में उन्हें सुरक्षित जगमंदिर महल पहुँचाया?
(A) कोटा के महाराव राम सिंह
(B) जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह
(C) मेवाड़ के महाराणा स्वरुप सिंह

(D) बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह

20. नीमच विद्रोह के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) छावनी पर अधिकार करने के बाद विद्रोहियों ने दिल्ली की ओर कूच किया।
(B) दिल्ली के रास्ते में, विद्रोहियों ने देवली में सरकारी कोष को सफलतापूर्वक लूट लिया।
(C) निम्बाहेड़ा की स्थानीय जनता ने नीमच के विद्रोहियों का स्वागत और समर्थन किया।
(D) अंग्रेज 1858 के अंत तक नीमच पर पुनः अधिकार करने में पूरी तरह असफल रहे।

21. आउवा, जो 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ प्रतिरोध के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा, किस रियासत में स्थित एक प्रमुख जागीर थी?
(A) मेवाड़
(B) मारवाड़ (जोधपुर)
(C) जयपुर
(D) बीकानेर

22. 8 सितंबर 1857 को लड़े गए बिथौड़ा के युद्ध में ठाकुर कुशाल सिंह की विजय हुई। इस युद्ध में ब्रिटिश और जोधपुर राज्य की संयुक्त सेना का नेतृत्व किसने किया था?
(A) ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस और मैक मोसन
(B) कैप्टन हीथकोट और किलेदार ओनाड़ सिंह
(C) मेजर शावर्स और रावल शिव सिंह
(D) जनरल रॉबर्ट्स और कैप्टन होम्स

23. किस युद्ध को लोक इतिहास में "काले-गोरे का युद्ध" के रूप में याद किया जाता है, जिसमें ए.जी.जी. लॉरेंस के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना पराजित हुई थी?
(A) बिथौड़ा का युद्ध
(B) कुवाड़ा का युद्ध
(C) चेलावास का युद्ध
(D) नारनौल का युद्ध

24. आउवा विद्रोह के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह मुख्य रूप से महाराजा तख्त सिंह के आंतरिक हस्तक्षेप और सामंती नीतियों का विरोध कर रहे थे।
II. जोधपुर लीजन के विद्रोही सैनिक आउवा में ठाकुर कुशाल सिंह की सेना के साथ शामिल हो गए।
III. चेलावास के युद्ध में पॉलिटिकल एजेंट मैक मोसन मारा गया और उसका सिर आउवा किले के द्वार पर लटका दिया गया।
IV. आउवा विद्रोह को आसोप और आलणियावास जैसे पड़ोसी जागीरदारों से कोई समर्थन नहीं मिला।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

25. 1857 के दौरान राजस्थान में सबसे भीषण नागरिक और सैन्य विद्रोह कोटा में हुआ था। कोटा में विद्रोह किस तिथि को भड़का था?
(A) 21 अगस्त 1857
(B) 15 अक्टूबर 1857
(C) 28 मई 1857
(D) 3 जून 1857

26. कोटा में हुए भीषण विद्रोह के दो मुख्य नेता कौन थे?
(A) ठाकुर कुशाल सिंह और शिवनाथ सिंह
(B) मोहम्मद अली बेग और हीरा सिंह
(C) लाला जयदयाल और मेहराब खान
(D) अमर चंद बांठिया और रावत केसरी सिंह

27. कोटा में विद्रोहियों द्वारा अपने दो पुत्रों के साथ किस ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट की निर्मम हत्या कर दी गई थी?
(A) मेजर ईडन
(B) कैप्टन शावर्स
(C) मैक मोसन
(D) मेजर बर्टन

28. राजस्थान की इन सैन्य छावनियों में 1857 के विद्रोह की शुरुआती घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) नसीराबाद, नीमच, एरिनपुरा, कोटा
(B) नीमच, नसीराबाद, कोटा, एरिनपुरा
(C) नसीराबाद, एरिनपुरा, नीमच, कोटा
(D) एरिनपुरा, नसीराबाद, नीमच, कोटा

NODIA

29. जोधपुर लीजन के सैनिकों ने एरिनपुरा की ओर मार्च करने से पहले 21 अगस्त 1857 को किस स्थान पर अपना विद्रोह शुरु किया था?
(A) माउंट आबू
(B) देवली
(C) ब्यावर
(D) अजमेर

30. विद्रोही जोधपुर लीजन के किस सैन्य कमांडर को प्रसिद्ध नारा "चलो दिल्ली, मारो फिरंगी" देने का श्रेय दिया जाता है?
(A) सूबेदार हीरा सिंह
(B) ठाकुर कुशाल सिंह
(C) शिवनाथ सिंह
(D) मेहराब खान

31. 1857 के विद्रोह के दमन के बाद, आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह की भूमिका और विद्रोह की जाँच के लिए किस ब्रिटिश आयोग की स्थापना की गई थी?
(A) हंटर आयोग
(B) टेलर आयोग
(C) मैल्कम आयोग
(D) लॉरेंस आयोग

32. अगस्त 1860 में ठाकुर कुशाल सिंह ने अंततः ब्रिटिश अधिकारियों के समक्ष कहाँ आत्मसमर्पण किया था?
(A) अजमेर
(B) नीमच
(C) जोधपुर
(D) उदयपुर

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजपूताना में सिपाही विद्रोह अंततः इस क्षेत्र में ब्रिटिश उपस्थिति को उखाड़ फेंकने में असफल रहे।
कारण (R) : राजपूताना के विद्रोही सिपाहियों के पास एक केंद्रीकृत स्थानीय कमान का अभाव था और वे राजस्थान में अपनी शक्ति को मजबूत करने के बजाय मुख्य रूप से दिल्ली की ओर बढ़ गए।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

34. 1857 में राजस्थान की छह ब्रिटिश छावनियों में से किन दो छावनियों में तैनात सैनिकों ने कोई विद्रोह नहीं किया?
(A) नसीराबाद और नीमच
(B) ब्यावर और खेरवाड़ा
(C) एरिनपुरा और देवली
(D) खेरवाड़ा और एरिनपुरा

35. 1857 के दौरान राजस्थान की ब्रिटिश छावनियों में तैनात अधिकांश विद्रोही सिपाही मूल रूप से किस क्षेत्र के रहने वाले थे?
(A) पंजाब और सिंध
(B) अवध और दोआब क्षेत्र
(C) गुजरात और मालवा
(D) पूर्णतः स्थानीय राजपूताना रियासतें

36. विद्रोह के दौरान राजस्थान में आम सिपाहियों की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा कथन करता है?
(A) उनका लक्ष्य लगातार पूरे राजस्थान में एक पूर्णतः लोकतांत्रिक और एकीकृत संप्रभु गणराज्य स्थापित करना था।
(B) वे धार्मिक असंतोष और पदच्युत मुगल सम्राट के प्रति सहानुभूति से प्रेरित थे।
(C) उन्होंने केवल अपने पारंपरिक स्थानीय राजपूत राजाओं की पूर्ण निरंकुश सत्ता को बहाल करने के लिए शस्त्र उठाए थे।
(D) उन्होंने चल रहे स्थानीय जनजातीय विद्रोहों का दमन करने के लिए वरिष्ठ ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों के साथ सीधे सहयोग किया।

37. राजस्थान में 1857 के विद्रोह में जनभागीदारी के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. कोटा में आम नागरिकों की सबसे अधिक भागीदारी देखी गई, जहाँ राज्य के अधिकारी और सामान्य नागरिक विद्रोह में शामिल हुए।
II. राजस्थान के अधिकांश अन्य हिस्सों में, यह विद्रोह जन-कृषक विद्रोह के बजाय मुख्य रूप से एक सैन्य विद्रोह ही बना रहा।
III. राजस्थान के व्यापारियों ने सर्वसम्मति से अंग्रेजों को वित्तपोषित किया और विद्रोही बलों का पूरी तरह से बहिष्कार किया।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

38. आउवा के संदर्भ में, स्थानीय किसानों और आम लोगों द्वारा ठाकुर कुशाल सिंह का समर्थन करने का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) उनका उद्देश्य पूरे मारवाड़ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन को फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन से पूरी तरह बदलना था।
(B) उन्होंने ब्रिटिश हस्तक्षेप और जोधपुर शासक की माँगों के खिलाफ स्थानीय स्वायत्तता की रक्षा के रूप में उनके संघर्ष का समर्थन किया।
(C) अंग्रेजों द्वारा चलाए गए आक्रामक अनिवार्य भर्ती अभियानों के माध्यम से उन्हें अनिवार्य सैन्य सेवा के लिए जबरन मजबूर किया गया था।
(D) वे उनके पीछे इसलिए लामबंद हुए क्योंकि उन्होंने क्षेत्र में सभी भू-राजस्व करों के तत्काल और पूर्ण उन्मूलन का वादा किया था।

39. अन्य छावनियों के विपरीत, कोटा में हुए विद्रोह को राजस्थान के इतिहास में विशेष रूप से याद किया जाता है क्योंकि:
(A) यह पूरे राजपूताना क्षेत्र में एकमात्र ऐसा विद्रोह था जो पूरी तरह से महिलाओं द्वारा संगठित और नेतृत्व किया गया था।
(B) यह एकमात्र ऐसा स्थान था जहाँ के तत्कालीन स्थानीय शासक ने आधिकारिक रूप से ब्रिटिश क्राउन के खिलाफ औपचारिक युद्ध की घोषणा की थी।
(C) यह राज्य की सैन्य ताकतों और आम नागरिकों की भागीदारी वाला एक समन्वित विद्रोह था।
(D) इसने ब्रिटिश सैन्य प्रयासों को सफलतापूर्वक विफल कर दिया और अंतिम एकीकरण तक एक स्वतंत्र राज्य बना रहा।

40. 1857 के विद्रोह के नागरिक नेता और राजस्थान में उनके प्रमुख कार्यक्षेत्र के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) अमर चंद बांठिया - बीकानेर/ग्वालियर
(B) लाला जयदयाल - मारवाड़/जोधपुर क्षेत्र

Downloaded from www.pdf.tube

(C) मेहराब खान - मेवाड़/उदयपुर क्षेत्र
(D) रावत केसरी सिंह - जयपुर/आमेर प्रांत

41. 1857 के विद्रोह के दौरान राजपूत शासकों का उनकी संबंधित रियासतों के साथ मिलान कीजिए:
सूची I : राजपूत शासक
P. महाराजा राम सिंह द्वितीय
Q. महाराणा स्वरुप सिंह
R. महाराजा तख्त सिंह
S. महाराजा सरदार सिंह
सूची II : रियासतें
1. मेवाड़
2. बीकानेर
3. जयपुर
4. जोधपुर
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

42. 1857 के विद्रोह के दौरान राजपूत शासकों द्वारा अंग्रेजों का अत्यधिक समर्थन करने का मुख्य कारण क्या था?
(A) संघर्ष के दौरान रणनीतिक दोहरा एजेंट बनने के लिए मुगल सम्राट द्वारा उन्हें भारी मात्रा में सोने का रिश्वत दिया गया था।
(B) अंग्रेजों ने 1817-1818 की संधियों के तहत उनके राजवंश के अस्तित्व और बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा की गारंटी दी थी।
(C) उनका दृढ़ विश्वास था कि सैन्य विद्रोह समाप्त होने के बाद ब्रिटिश सैन्य कमान उन्हें पूर्ण संप्रभु स्वतंत्रता प्रदान करेगी।
(D) उन्होंने बड़ी संख्या में गुप्त रूप से ईसाई धर्म अपना लिया था और ब्रिटिश अधिकारियों के साथ सांस्कृतिक व धार्मिक रूप से जुड़ाव महसूस करते थे।

43. राजस्थान के किस प्रमुख शासक ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की सहायता के लिए अपनी रियासत की सेना का नेतृत्व व्यक्तिगत रूप से राजपूताना की सीमाओं से बाहर (पंजाब/हरियाणा में) किया था?
(A) जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह
(B) जयपुर के महाराजा राम सिंह
(C) बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह
(D) कोटा के महाराव राम सिंह

44. 1857 के विद्रोह के दौरान राजपूत शासकों के दृष्टिकोण का गलत वर्णन करने वाले कथन की पहचान कीजिए।
(A) अधिकांश रियासती शासकों ने ब्रिटिश सेनाओं को व्यापक सैन्य टुकड़ियाँ और महत्वपूर्ण रसद सहायता प्रदान की।
(B) उन्होंने भागते हुए ब्रिटिश अधिकारियों और उनके संकटग्रस्त परिवारों को सक्रिय रूप से सुरक्षित शरण और सुरक्षा प्रदान की।
(C) उन्होंने संकट के दौरान अंग्रेजों के साथ बेहतर शर्तों पर बातचीत करने के लिए एक एकीकृत महासंघ (कन्फेडरेसी) का गठन किया।
(D) उन्होंने अपने सामंती सामंतों और प्रजा को विद्रोहियों को किसी भी प्रकार की सहायता प्रदान करने से सख्ती से रोक दिया।

NODIA

45. 1857 के विद्रोह के दौरान जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय द्वारा निम्नलिखित में से कौन-सी कार्रवाई की गई थी?
(A) उन्होंने गुप्त रूप से तात्या तोपे की आगे बढ़ती सेना को राज्य के शस्त्रागार से भारी वित्तीय ऋण और हथियारों की आपूर्ति करके वित्तपोषित किया।
(B) उन्होंने ब्रिटिश विरोधी साजिश के संदेह में नवाब विलायत अली खान सहित प्रमुख रईसों को कैद कर लिया।
(C) उन्होंने निकटवर्ती ब्रिटिश क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए मेजर ईडन को राज्य की कोई भी सेना प्रदान करने से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया।
(D) उन्होंने संकट के दौरान अपनी राजधानी पूरी तरह से छोड़ दी और अजमेर के किले में स्थायी सैन्य शरण ली।

46. 1857 के विद्रोह के दौरान उनकी असाधारण निष्ठा और सेवाओं के सम्मान में, ब्रिटिश सरकार ने जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय को किस क्षेत्र से पुरस्कृत किया था?
(A) कोटपूतली का परगना
(B) अजमेर का ब्रिटिश जिला
(C) रणथंभौर का रणनीतिक किला
(D) सांभर की उपजाऊ जागीर

47. जयपुर में तैनात ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट कौन था जिसने राज्य में विद्रोही समर्थक भावनाओं को दबाने के लिए महाराजा राम सिंह द्वितीय के साथ सक्रिय रूप से सहयोग किया था?
(A) मेजर बर्टन
(B) विलियम ईडन
(C) कैप्टन शावर्स
(D) मैक मोसन

48. 1857 के दौरान जयपुर राज्य की आंतरिक राजनीतिक स्थिति का सबसे उपयुक्त वर्णन कौन-सा है?
(A) राज्य में एक बड़े पैमाने पर नागरिक विद्रोह हुआ जिसने सफलतापूर्वक महाराजा को पदच्युत कर दिया और विद्रोही सरकार स्थापित की।
(B) महाराजा के ब्रिटिश समर्थक रुख के बावजूद, कुछ दरबारियों के बीच ब्रिटिश विरोधी साजिश को तेजी से दबा दिया गया।
(C) संपूर्ण जयपुर राज्य सेना ने आधिकारिक तौर पर ब्रिटिश कमान के खिलाफ विद्रोह कर दिया और अवध में सक्रिय विद्रोही बलों में शामिल होने के लिए कूच किया।
(D) जयपुर इस संघर्ष से पूरी तरह अलग-थलग रहा और विद्रोह की किसी भी खबर, विचार या राजनीतिक प्रभाव से अछूता रहा।

49. 1857 के विद्रोह के दौरान जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

I. उन्होंने जोधपुर लीजन के विद्रोहियों के खिलाफ अंग्रेजों की सहायता के लिए राज्य की सेना भेजी।
II. उन्होंने अपने ही सामंत आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह के साथ अत्यधिक शत्रुतापूर्ण संबंध बनाए रखे।
III. उन्होंने ब्रिटिश मदद के बिना चेलावास के युद्ध में विद्रोहियों को सफलतापूर्वक पराजित किया।
IV. उन्होंने शांति के बदले मारवाड़ क्षेत्र से विद्रोहियों को सुरक्षित निकलने का मार्ग प्रदान किया।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I, II और IV
(D) केवल I, III और IV

50. जोधपुर राज्य सेना के उस विश्वसनीय कमांडर का नाम बताइए जिसे महाराजा तख्त सिंह ने आउवा विद्रोह का दमन करने के लिए भेजा था लेकिन वह बिथौड़ा के युद्ध में मारा गया था।

(A) किलेदार ओनाड़ सिंह
(B) शिवनाथ सिंह
(C) रावल शिव सिंह
(D) ठाकुर जोध सिंह

51. विद्रोहियों द्वारा किस ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट का काटा गया सिर आउवा किले के मुख्य द्वार पर लटकाया गया था?

(A) मेजर बर्टन
(B) जनरल लॉरेंस
(C) कैप्टन मैक मोसन
(D) कर्नल होम्स

52. 1857 के विद्रोह से पहले भी महाराजा तख्त सिंह और ठाकुर कुशाल सिंह के बीच तीव्र शत्रुता का मुख्य अंतर्निहित कारण क्या था?

(A) महाराजा द्वारा नव-संरक्षित धार्मिक संप्रदाय और शाही प्रशासनिक अनुष्ठानों को अपनाने से कुशाल सिंह का पूर्ण इनकार।
(B) बिथौड़ा में सामंती उत्तराधिकार अधिकारों का विवाद और भारी "रेख" सामंती करों को लागू किया जाना।
(C) तख्त सिंह का संपूर्ण आउवा क्षेत्र को स्थायी सैन्य छावनी के लिए अंग्रेजों को सौंपने का एकतरफा निर्णय।
(D) तख्त सिंह को उखाड़ फेंकने और मारवाड़ राज्य के संप्रभु सिंहासन पर अधिकार करने का कुशाल सिंह का प्रत्यक्ष राजनीतिक दावा।

53. राजस्थान में 1857 के विद्रोह की निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. ब्रिटिश सेना द्वारा ठाकुर कुशाल सिंह की पराजय और आउवा पर अधिकार
2. जनरल रॉबर्ट्स द्वारा कोटा पर पुनः अधिकार
3. तात्या तोपे को फाँसी दिया जाना
4. कुवाड़ा के युद्ध में तात्या तोपे की पराजय

(A) 1, 2, 4, 3
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 1, 4, 2, 3

54. किस ब्रिटिश सैन्य कमांडर ने जनवरी 1858 में आउवा किले की सफलतापूर्वक घेराबंदी की और उस पर अधिकार कर लिया?

(A) जनरल रॉबर्ट्स
(B) कर्नल होम्स
(C) मेजर शावर्स
(D) कैप्टन हीथकोट

55. मार्च 1858 में किसके कमान वाली ब्रिटिश सेना द्वारा कोटा शहर को विद्रोहियों के नियंत्रण से मुक्त कराया गया था?

(A) मेजर जनरल एच.जी. रॉबर्ट्स
(B) कर्नल होम्स
(C) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस
(D) लॉर्ड कैनिंग

56. राजस्थान की किस रियासत ने कोटा पर पुनः अधिकार करने और महाराव राम सिंह को विद्रोहियों से मुक्त कराने में अंग्रेजों की सहायता के लिए अपनी सैन्य टुकड़ियाँ भेजी थीं?

(A) बीकानेर (सरदार सिंह के अधीन)
(B) करौली (मदन पाल के अधीन)
(C) मेवाड़ (स्वरुप सिंह के अधीन)
(D) अलवर (विनय सिंह के अधीन)

57. आउवा पर अधिकार करने के बाद कठोर प्रतिशोध के रूप में, ब्रिटिश सेना ने किले को नष्ट कर दिया और किस अत्यधिक पूजनीय स्थानीय देवी की मूर्ति को जब्त कर लिया?

(A) करणी माता
(B) चामुंडा माता
(C) सुगाली माता
(D) शीला देवी

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

कथन (A) : 1857 के विद्रोह के दमन के बाद, अंग्रेजों ने करौली के शासक की तोपों की सलामी बढ़ा दी लेकिन कोटा के महाराव की सलामी घटा दी।

कारण (R) : कोटा के महाराव को मेजर बर्टन की सुरक्षा करने में विफल रहने के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार माना गया था, जबकि करौली के शासक ने अंग्रेजों को महत्वपूर्ण सैन्य सहायता प्रदान की थी।

उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:

(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

Click Here to Buy book on Flipkart

59. कोटा विद्रोह के मुख्य नेताओं लाला जयदयाल और मेहराब खान की अंतिम परिणति क्या हुई?
(A) वे घने जंगलों के रास्ते सफलतापूर्वक नेपाल भाग गए और ब्रिटिश सेना द्वारा कभी नहीं पकड़े गए।
(B) उन्हें 1858 की महारानी विक्टोरिया की शाही घोषणा की शर्तों के तहत पूर्ण राजनीतिक क्षमादान दिया गया था।
(C) उन्हें बंदी बना लिया गया और कोटा रेजीडेंसी के पास सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई।
(D) वे मध्य भारत में तात्या तोपे की सेना के साथ युद्ध के मैदान में बहादुरी से लड़ते हुए मारे गए।

60. 1857 की घटनाओं के दंड के रूप में कोटा के महाराव की आधिकारिक तोपों की सलामी में कितनी कमी की गई थी?
(A) 21 से घटाकर 17 (B) 17 से घटाकर 13
(C) 15 से घटाकर 11 (D) 13 से घटाकर 9

61. मूल रूप से बीकानेर के किस प्रमुख व्यापारी को रानी लक्ष्मीबाई का वित्तीय समर्थन करने और 1857 के विद्रोह के दौरान राजस्थान से फाँसी पाने वाले पहले व्यक्ति होने के कारण अक्सर "राजस्थान का मंगल पांडे" कहा जाता है?
(A) सेठ जमनालाल बजाज
(B) अमर चंद बांठिया
(C) ताराचंद
(D) जियालाल

62. अमर चंद बांठिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. उन्होंने ग्वालियर में सिंधिया शासकों के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
II. उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई और तात्या तोपे को उनके विद्रोह को वित्तपोषित करने के लिए ग्वालियर का पूरा राज्य कोष सौंप दिया।
III. उन्हें अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और ग्वालियर में एक नीम के पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गई।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

63. बूंदी के किस प्रसिद्ध दरबारी कवि ने "वीर सतसई" ग्रंथ की रचना की, जिसके माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ राजपूत शासकों की युद्ध भावना को जगाने का प्रयास किया?
(A) बांकीदास (B) सूर्यमल्ल मीषण
(C) कवि राजा श्यामलदास (D) दयालदास

64. मेवाड़ के उस प्रमुख सामंत की पहचान कीजिए जिसने महाराणा स्वरूप सिंह के ब्रिटिश समर्थक रुख की अवहेलना की और ठाकुर कुशाल सिंह तथा तात्या तोपे को महत्वपूर्ण रसद सहायता एवं शरण प्रदान की।
(A) सलुंबर के रावत केसरी सिंह
(B) कोठारिया के ठाकुर जोध सिंह
(C) चोमू के रावल शिव सिंह
(D) (A) और (B) दोनों

65. राजस्थान में 1857 के विद्रोह की तुलना अवध में इसके स्वरूप से करने पर, निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे महत्वपूर्ण अंतर दर्शाता है?
(A) अवध की स्थिति के विपरीत, संपूर्ण राजस्थान में विद्रोह मुख्य रूप से भूमि कराधान से प्रेरित एक कृषक विद्रोह था।
(B) राजस्थान का विद्रोह स्थानीय सैन्य विद्रोहों और सामंती असंतोष तक ही सीमित था, जिसमें अवध के समान बड़े पैमाने पर नागरिक विद्रोह का अभाव था।
(C) राजस्थान के पास अपने तत्कालीन राजाओं से मजबूत एकीकृत राजनीतिक नेतृत्व प्राप्त था, जबकि अवध में केंद्रीकृत नियंत्रण का पूरी तरह अभाव था।
(D) अंग्रेजों ने विद्रोह के दौरान राजस्थान में अपने सभी प्रशासनिक पदों को पूरी तरह से छोड़ दिया, जबकि अवध के स्थानों की भारी रक्षा की।

66. 1857 के विद्रोह की क्षेत्रीय विशेषताओं का राजस्थान के संबंधित केंद्रों के साथ मिलान कीजिए:
सूची I : क्षेत्रीय विशेषताएं
P. राज्य के सैनिकों के साथ बड़े पैमाने पर नागरिक विद्रोह
Q. विद्रोह करने वाली पहली छावनी
R. महाराजा के खिलाफ सामंती प्रतिरोध का केंद्र
S. शपथ से जुड़ी भ्रांतियों के कारण सैनिकों द्वारा विद्रोह
सूची II : केंद्र
1. नसीराबाद
2. आउवा
3. नीमच
4. कोटा
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

67. राजस्थान में 1857 के विद्रोह की विफलता का मुख्य कारण निम्नलिखित में से कौन-सा कारक था?
(A) स्थानीय किसानों द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों को प्रदान किया गया अत्यधिक राजनीतिक और सक्रिय सैन्य समर्थन।
(B) विद्रोही गुटों के बीच समन्वय और केंद्रीकृत नेतृत्व का अभाव।
(C) राजपूताना के रेगिस्तानी क्षेत्र में ब्रिटिश सेना द्वारा तैनात श्रेष्ठ नौसेना शक्ति और गनबोट।
(D) भारत में ब्रिटिश सेना की ओर से फ्रांसीसी साम्राज्यवादी सेना का तत्काल बड़े पैमाने पर सैन्य हस्तक्षेप।

68. बहादुर शाह ज़फ़र के अधीन राष्ट्रीय नेतृत्व की तुलना में राजस्थान में 1857 के विद्रोह के नेतृत्व की एक अनूठी विशेषता क्या थी?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) संपूर्ण राजस्थान में सर्वोच्च सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व आधिकारिक तौर पर तत्कालीन स्थानीय राजाओं द्वारा संभाला गया था।
(B) राजस्थान में नेतृत्व शासक राजाओं के बजाय सूबेदारों और स्थानीय जागीरदारों द्वारा संभाला गया था।
(C) नेतृत्व विशेष रूप से क्षेत्र के प्रभावशाली हिंदू और मुस्लिम धार्मिक मौलवियों/धर्मगुरुओं द्वारा प्रदान और निर्देशित किया गया था।
(D) राजस्थान में किसी भी चरण में कोई पहचाना हुआ नेतृत्व या संगठित कमान प्राधिकरण बिल्कुल नहीं था।

69. विद्रोह के दमन के बाद, भारत सरकार अधिनियम 1858 के परिणामस्वरूप राजस्थान के प्रशासन में कौन-सा प्रमुख राजनीतिक बदलाव आया?
(A) सभी संप्रभु राजपूताना रियासतों को औपचारिक रूप से एक ही प्रत्यक्ष शासित ब्रिटिश प्रशासनिक प्रांत में मिला दिया गया।
(B) रियासतों पर सर्वोपरि सत्ता (परमसत्ता) ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को स्थानांतरित हो गई।
(C) राजस्थान की सभी रियासतों को व्यपगत के सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) नीति के तहत योजनाबद्ध तरीके से ब्रिटिश भारत में मिला लिया गया।
(D) गवर्नर-जनरल के एजेंट के केंद्रीकृत प्रशासनिक कार्यालय को पूरे भारत में स्थायी रूप से समाप्त कर दिया गया।

70. 1858 की महारानी विक्टोरिया की घोषणा-पत्र को राजस्थान के शासकों और जनता तक कैसे पहुँचाया गया था?
(A) विशेष रुप से अजमेर शहर में आयोजित ब्रिटिश संसद के एक विशेष विधायी सत्र के माध्यम से।
(B) रियासती राजधानियों में सार्वजनिक 'दरबारों' का आयोजन करके जहाँ घोषणा-पत्र को उच्च स्वर में पढ़ा गया था।
(C) केवल नसीराबाद छावनी में आयोजित एक औपचारिक सैन्य परेड और शाही समारोह के माध्यम से।
(D) सभी संप्रभु रियासती शासकों को आधिकारिक फरमान प्राप्त करने के लिए सीधे लंदन जाने के लिए मजबूर करके।

71. 1857 के बाद राजपूताना में सैन्य बलों की संरचना के संबंध में अंग्रेजों ने क्या तात्कालिक बदलाव लागू किया?
(A) उन्होंने सभी देशी सैन्य इकाइयों को पूरी तरह से भंग कर दिया और राजपूताना की सभी छावनियों में उन्हें केवल यूरोपीय सैनिकों से बदल दिया।
(B) उन्होंने अवध के सिपाहियों की भर्ती कम कर दी तथा निष्ठावान समूहों और पुनर्गठित टुकड़ियों पर निर्भरता बढ़ा दी।
(C) उन्होंने सभी भारी तोपखाने इकाइयों का कुल परिचालन नियंत्रण सीधे विश्वसनीय स्थानीय राजपूत शासकों को सौंप दिया।
(D) उन्होंने सख्ती से अनिवार्य किया कि सभी वरिष्ठ ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों को अब से स्थानीय राजपूत कमांडरों के अधीन सेवा देनी होगी।

72. 1857 की घटनाओं के बाद राजस्थान में किस प्रशासनिक संरचना ने अत्यधिक समेकित शक्ति हासिल की?
(A) स्थानीय पंचायतें
(B) ए.जी.जी. के नेतृत्व वाली राजपूताना एजेंसी
(C) मराठा चौथ/कर संग्रहकर्ता
(D) संबंधित रियासतों के दीवान

73. 1857 के विद्रोह के बाद राजस्थान की रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति में आए बदलाव का सबसे अच्छा वर्णन कौन-सा वाक्यांश करता है?
(A) अधीनस्थ पृथक्करण से अधीनस्थ संघ की ओर (सबऑर्डिनेट आइसोलेशन से सबऑर्डिनेट यूनियन)
(B) प्रत्यक्ष विलय से पूर्ण स्वतंत्रता की ओर
(C) अहस्तक्षेप से पूर्ण सैन्य अधिकार की ओर
(D) समान संघ से सहायक संधि की ओर

74. 1857 के बाद राजपूताना राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति में आए परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. अंग्रेजों ने शासकों के उत्तराधिकारी गोद लेने के पारंपरिक अधिकार को औपचारिक रूप से मान्यता दी।
II. अंग्रेजों ने राज्यों के आंतरिक आर्थिक मामलों, जैसे रेलवे और नमक उत्पादन में हस्तक्षेप करना पूरी तरह बंद कर दिया।
III. शासकों को उनकी निष्ठा के लिए उपाधियों, क्षेत्रों और सम्मानों से भारी पुरस्कार दिया गया।
IV. अंग्रेजों ने राजाओं को साम्राज्य के स्तंभ और प्रशासन में भागीदार के रूप में मानना शुरु कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

75. व्यपगत के सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) के कारण उत्पन्न चिंता के बाद निष्ठावान राजपूत शासकों को उनके राजवंश के निरंतरता का आश्वासन देने के लिए, ब्रिटिश क्राउन ने जारी किया:
(A) गोद लेने की सनद (गोद सनद)
(B) सहायक संधि पत्र
(C) राजपूताना का मैग्ना कार्टा
(D) शाही सर्वोच्चता का फरमान

76. 1857 के बाद राजनीतिक गारंटियों के बावजूद, अंग्रेजों ने मुख्य रूप से किसके माध्यम से राजस्थान की रियासतों में अपना हस्तक्षेप काफी बढ़ा दिया?
(A) सभी रियासती शासकों और शाही परिवारों को योजनाबद्ध तरीके से अनिवार्य रूप से ईसाई धर्म में परिवर्तित करना।
(B) नमक, रेलवे और टेलीग्राम नेटवर्क जैसे आर्थिक संसाधनों पर सीधा नियंत्रण स्थापित करना।
(C) सभी पारंपरिक राजाओं की शाही उपाधियों, सम्मानों और वंशानुगत विशेषाधिकारों को औपचारिक रूप से समाप्त करना।

NODIA

(D) सभी युवा राजपूत शासकों को सीधे आभिजात्य ब्रिटिश कुलीन परिवारों के सदस्यों से विवाह करने के लिए मजबूर करना।

77. आउवा के क्रांतिकारियों द्वारा अत्यधिक पूजनीय सुगाली माता की मूर्ति में कितने सिर और हाथ दर्शाए गए हैं?
(A) 5 सिर और 10 हाथ
(B) 10 सिर और 54 हाथ
(C) 3 सिर और 8 हाथ
(D) 12 सिर और 24 हाथ

78. राजस्थान में 1857 के विद्रोह के स्थानीय लोककथाओं में याद की जाने वाली निम्नलिखित घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(A) नसीराबाद में विद्रोह -> बिथौड़ा का युद्ध -> चेलावास का युद्ध -> होम्स द्वारा आउवा पर अधिकार
(B) बिथौड़ा का युद्ध -> नसीराबाद में विद्रोह -> होम्स द्वारा आउवा पर अधिकार -> चेलावास का युद्ध
(C) नसीराबाद में विद्रोह -> चेलावास का युद्ध -> बिथौड़ा का युद्ध -> होम्स द्वारा आउवा पर अधिकार
(D) चेलावास का युद्ध -> नसीराबाद में विद्रोह -> बिथौड़ा का युद्ध -> होम्स द्वारा आउवा पर अधिकार

79. "ढोल बाजे, चंग बाजे, भलो बाजे बांकियो..." 1857 के विद्रोह से जुड़ा एक प्रसिद्ध राजस्थानी लोकगीत है। यह गीत किस ऐतिहासिक घटना का जश्न मनाता है?
(A) मध्य भारत और राजपूताना में अपने अभियान के बाद तात्या तोपे की फाँसी और अंतिम शहादत।
(B) ग्वालियर के पतन के बाद नीम के पेड़ से लटकाकर अमर चंद बांठिया को दी गई सार्वजनिक फाँसी।
(C) आउवा किले के द्वार पर पॉलिटिकल एजेंट मैक मोसन का कटा हुआ सिर लटकाया जाना।
(D) कोटा की घेराबंदी के दौरान विद्रोही सैन्य टुकड़ी पर जनरल रॉबर्ट्स के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना की निर्णायक विजय।

80. मारवाड़ दरबार के किस प्रमुख कवि ने अंग्रेजों की बढ़ती पराधीनता के खिलाफ शासकों को चेतावनी देते हुए सक्रिय रूप से छंद लिखे, जो 1857 से पहले और उसके दौरान भी औपनिवेशिक विरोधी भावना को दर्शाते हैं?
(A) बांकीदास
(B) चंद बरदाई
(C) मुहणौत नैणसी
(D) पृथ्वीराज राठौड़

81. समर्थन जुटाने के लिए अपने सैन्य अभियानों के दौरान, प्रसिद्ध विद्रोही नेता तात्या तोपे ने अगस्त 1858 में पहली बार किस स्थान से राजस्थान में प्रवेश किया था?
(A) बांसवाड़ा जिला
(B) मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)
(C) झालावाड़ रियासत
(D) सीकर संभाग

82. अगस्त 1858 में, तात्या तोपे की सेना ने किस ब्रिटिश कमांडर के खिलाफ कुवाड़ा (कोठारी नदी के तट पर) में भीषण युद्ध लड़ा था?
(A) जनरल रॉबर्ट्स
(B) कर्नल होम्स
(C) मेजर ईडन
(D) जनरल लॉरेंस

83. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : तात्या तोपे अपने अभियानों के दौरान राजस्थान के प्रमुख राजवंशों से पर्याप्त सैन्य सहायता प्राप्त करने में विफल रहे।
कारण (R) : राजस्थान के शासक अंग्रेजों के साथ अपनी सहायक संधियों से सख्ती से बंधे हुए थे और उन्होंने उनके खिलाफ अपनी राज्य सेनाओं को सक्रिय रूप से तैनात किया था।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

84. किस स्थानीय जागीरदार ने तात्या तोपे के साथ विश्वासघात किया, जिसके कारण पारोन के जंगलों में विश्राम करते समय ब्रिटिश सेना द्वारा उन्हें बंदी बना लिया गया?
(A) रावल शिव सिंह
(B) मान सिंह नरुका
(C) ठाकुर जोध सिंह
(D) अमर चंद बांठिया

85. तात्या तोपे को सिपरी (शिवपुरी) में किस तिथि को फाँसी दी गई थी, जिसने राजस्थान से जुड़े 1857 के विद्रोह के सक्रिय चरण के अंत को प्रभावी रूप से चिह्नित किया?
(A) 15 अक्टूबर 1858
(B) 18 अप्रैल 1859
(C) 21 अगस्त 1859
(D) 10 मई 1860

86. एरिनपुरा में जोधपुर लीजन का सैन्य विद्रोह किस महीने और वर्ष में भड़का था?
(A) मई 1857
(B) जून 1857
(C) अगस्त 1857
(D) अक्टूबर 1857

87. राजस्थान में 1857 के विद्रोह के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों की मृत्यु के कालानुक्रमिक घटित होने पर विचार कीजिए:
I. मेजर स्पॉटिसवुड
II. कैप्टन मैक मोसन

Click Here to Buy book on Amazon

III. मेजर बर्टन
निम्नलिखित में से कौन-सा उनकी मृत्यु का सही क्रम दर्शाता है?
(A) I, II, III
(B) II, I, III
(C) III, II, I
(D) I, III, II

88. किस समय तक ब्रिटिश अधिकारियों ने राजपूताना के सभी हिस्सों में सशस्त्र विद्रोह को पूरी तरह से दबा दिया था और सामान्य व्यवस्था बहाल कर दी थी?
(A) 1857 के अंतिम महीने
(B) 1858 का प्रारंभ से मध्य
(C) 1859 के अंतिम महीने
(D) 1861 के मध्य का समय

89. आउवा में 1857 के विद्रोह से गहराई से जुड़ी सुगाली माता की प्रसिद्ध काले पत्थर की मूर्ति वर्तमान में किस संग्रहालय में सुरक्षित है?
(A) अल्बर्ट हॉल म्यूजियम, जयपुर
(B) बांगड़ म्यूजियम, पाली
(C) सिटी पैलेस म्यूजियम, उदयपुर
(D) मेहरानगढ़ म्यूजियम, जोधपुर

90. 1857 के विद्रोह के दौरान मारे गए मेजर बर्टन और उनके पुत्रों के सम्मान में अंग्रेजों ने किस शहर की रेजीडेंसी में एक स्मारक स्थापित किया था?
(A) जोधपुर
(B) जयपुर
(C) कोटा
(D) अजमेर

91. 1857 के विद्रोह से जुड़े ऐतिहासिक स्थलों या कलाकृतियों का उनके प्राथमिक स्थान से मिलान कीजिए:
सूची I : ऐतिहासिक स्थल/कलाकृतियाँ
P. जग मंदिर (अंग्रेजों के लिए शरणस्थल)
Q. सुगाली माता की मूर्ति (मूल स्थान)
R. बांठिया की नीम के पेड़ वाली फाँसी का स्थान
S. कुवाड़ा का युद्ध स्थल
सूची II : स्थान
1. आउवा
2. भीलवाड़ा
3. ग्वालियर
4. उदयपुर
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

92. ठाकुर कुशाल सिंह के प्रतिरोध का केंद्र रहे ऐतिहासिक आउवा किले की वर्तमान स्थिति क्या है?
(A) यह पूरी तरह से संरक्षित है और जोधपुर राजपरिवार के आधिकारिक निजी निवास के रूप में कार्य कर रहा है।
(B) इसे 1858 में अंग्रेजों द्वारा बारूद से उड़ा दिया गया था, जिसके अवशेष और एक स्मारक ही शेष बचे हैं।
(C) इसे स्थायी रूप से एक ब्रिटिश सैन्य छावनी में बदल दिया गया था और वर्तमान में भारतीय सेना के अधिकार में है।
(D) एक आधुनिक जलविद्युत बाँध परियोजना के निर्माण के बाद यह पूरी तरह से जलमग्न हो गया।

NODIA

93. राजस्थान में विद्रोह के केंद्रों के तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर, किस स्थान पर अंग्रेजों के खिलाफ सबसे संगठित और दीर्घकालिक नागरिक-सैन्य गठबंधन देखा गया?
(A) नसीराबाद
(B) नीमच
(C) कोटा
(D) देवली

94. राजस्थान की किस सैन्य छावनी के सैनिकों ने अपने आधार स्थल पर बिना किसी महत्वपूर्ण हिंसा या लूटपाट के, नीमच के विद्रोहियों में शामिल होने के लिए छावनी छोड़ दी थी?
(A) देवली
(B) ब्यावर
(C) खेरवाड़ा
(D) एरिनपुरा

95. निम्नलिखित विद्रोही नेताओं को उनके संबंधित विद्रोहों की कालानुक्रमिक शुरुआत के अनुसार व्यवस्थित कीजिए:
1. लाला जयदयाल
2. मोहम्मद अली बेग
3. ठाकुर कुशाल सिंह
4. तात्या तोपे (राजस्थान में प्रवेश)
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 2, 4, 1

96. एरिनपुरा के विद्रोहियों (जोधपुर लीजन) के मुख्य दल का आउवा छोड़ने और दिल्ली की ओर बढ़ने के बाद अंतिम हश्र क्या हुआ?
(A) उन्होंने दिल्ली शहर पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लिया और औपचारिक रूप से सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र को पूर्ण साम्राज्यवादी शक्तियाँ बहाल कर दीं।
(B) नारनौल में जनरल जेरार्ड द्वारा उन्हें रोक लिया गया और निर्णायक रूप से पराजित किया गया।
(C) वे तात्या तोपे की पीछे हटती केंद्रीय सेना के साथ-साथ उत्तरी सीमा पार करके नेपाल सुरक्षित भाग गए।
(D) अपने कृत्यों के लिए शाही क्षमादान की गारंटी मिलने के बाद उन्होंने जयपुर के महाराजा के समक्ष शांतिपूर्वक आत्मसमर्पण कर दिया।

97. 1857 के विद्रोह के दौरान दक्षिणी राजस्थान में ब्रिटिश नियंत्रण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली 'मेवाड़ भील कोर' की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
(A) 1818
(B) 1832
(C) 1841
(D) 1857

98. 1857 के विद्रोह के दौरान दक्षिणी राजस्थान (मेवाड़ क्षेत्र) में भील जनजातीय समूहों का ब्रिटिश अधिकारियों के प्रति सामान्य दृष्टिकोण क्या था?
(A) उन्होंने ब्रिटिश सैन्य चौकियों के खिलाफ एक व्यापक और समन्वित छापामार युद्ध अभियान शुरू किया।
(B) वे उदयपुर शहर पर सफलतापूर्वक अधिकार करने के लिए तात्या तोपे के मार्च के दौरान उनकी सेना में शामिल हो गए।
(C) वे तटस्थ रहे या ब्रिटिश कमान के प्रति वफादार रहे, जिससे जनजातीय क्षेत्र शांत रहे।
(D) उन्होंने विशाल सैन्य टुकड़ियाँ संगठित कीं जो नसीराबाद के विद्रोहियों के साथ सीधे दिल्ली की ओर बढ़ गईं।

99. 1857 के दौरान जनजातीय समूहों और मेवाड़ भील कोर (एम.बी.सी.) की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
I. अंग्रेजों ने नीमच के विद्रोहियों को मेवाड़ क्षेत्र में गहराई तक प्रवेश करने से रोकने के लिए एम.बी.सी. का सफलतापूर्वक उपयोग किया।
II. एम.बी.सी. के भील सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और खेरवाड़ा में अपने ब्रिटिश कमांडिंग अधिकारियों की हत्या कर दी।
III. नियमित वेतन और अवध के सिपाहियों से भिन्न जातीय पृष्ठभूमि के कारण एम.बी.सी. अंग्रेजों के प्रति वफादार रही।
IV. क्षेत्र के भीलों को उनकी वफादारी के लिए 1857 के बाद अंग्रेजों द्वारा स्वतंत्र रियासती दर्जा प्रदान किया गया था।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II और IV
(C) केवल I, II और III
(D) केवल I, III और IV

100. राजस्थान की कौन-सी दो सैन्य छावनियों में क्रमशः मेर और भील जनजातीय बल मुख्य रूप से तैनात थे, जिन्होंने 1857 में अपने सैनिकों के भीतर किसी भी विद्रोह को सफलतापूर्वक होने से रोका था?
(A) नसीराबाद और नीमच
(B) एरिनपुरा और देवली
(C) ब्यावर और खेरवाड़ा
(D) कोटा और अजमेर

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) अधीनस्थ पृथक्करण की नीति (पॉलिसी ऑफ सबऑर्डिनेट आइसोलेशन)
अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजस्थान की रियासतों के साथ अधीनस्थ पृथक्करण की नीति के अंतर्गत संधियाँ संपन्न की थीं। गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा प्रवर्तित इस नीति के माध्यम से देशी रियासतों ने ब्रिटिश सर्वोपरि सत्ता को सहर्ष स्वीकार कर लिया था। इसके परिणामस्वरूप रियासतों के वैदेशिक अधिकार समाप्त हो गए तथा आंतरिक मामलों में ब्रिटिश हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2. (D) सर्वोपरि सत्ता का प्रयोग गवर्नर-जनरल के एजेंट (ए.जी. जी.) की देखरेख में पॉलिटिकल एजेंटों के नेटवर्क के माध्यम से किया जाता था।
सन् 1857 से पूर्व राजपूताना क्षेत्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रशासनिक व्यवस्था गवर्नर-जनरल के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त एजेंट टू गवर्नर-जनरल द्वारा संचालित होती थी। इस एजेंट का मुख्यालय अजमेर तथा ग्रीष्मकाल में माउंट आबू में स्थित था। विभिन्न रियासतों में ब्रिटिश हितों की रक्षा हेतु पॉलिटिकल एजेंट तैनात किए गए थे, जो स्थानीय राजाओं के कामकाज पर निगरानी रखते थे और सर्वोपरि सत्ता का प्रयोग करते थे।

3. (C) स्थानीय नमक व्यापार पर ब्रिटिश एकाधिकार के साथ-साथ भारी पारगमन शुल्क (ट्रांजिट ड्यूटी)
उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश प्रशासन ने राजस्थान के नमक संसाधनों पर अपना पूर्ण एकाधिकार स्थापित कर लिया था। कंपनी द्वारा सांभर झील सहित प्रमुख नमक उत्पादक क्षेत्रों को लीज पर लेने से स्थानीय व्यापारी व्यापारिक अधिकारों से वंचित हो गए। इसके साथ ही वस्तुओं के परिवहन पर अत्यधिक पारगमन शुल्क लगाया गया, जिससे व्यापार अत्यधिक प्रभावित हुआ। इस आर्थिक नीति ने व्यापारी तथा शासक वर्ग में भारी रोष भरा।

4. (D) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी रियासतों के उत्तराधिकार विवादों में हस्तक्षेप करने से सख्ती से बचती थी।
1857 के स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व राजस्थान की रियासतों में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापक राजनीतिक एवं प्रशासनिक हस्तक्षेप करती थी। यद्यपि संधियों के नियम अहस्तक्षेप की बात करते थे, परंतु कंपनी प्रशासन ने उत्तराधिकार के विवादों, मंत्रियों की नियुक्ति तथा कर वसूली में निरंतर हस्तक्षेप किया। कंपनी के इस अनुचित दबाव से स्थानीय राजाओं तथा सामंतों में गहरी असंतोष की भावना उपजी।

5. (C) मेरठ में सिपाही विद्रोह का समाचार राजपूताना के अधिकारियों तक पहुँचना
10 मई 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों द्वारा किए गए विद्रोह की खबर शीघ्र ही राजपूताना क्षेत्र में फैल गई। मई के मध्य में जब यह समाचार गवर्नर-जनरल के एजेंट तथा विभिन्न सैन्य छावनियों तक पहुँचा, तो ब्रिटिश अधिकारियों में खलबली मच गई। देशी सिपाहियों में भी अपनी धार्मिक अस्मिता की रक्षा हेतु विद्रोह करने की तीव्र चेतना स्वतः जाग्रत हो गई।

6. (B) छह
वर्ष 1857 के सैन्य संग्राम के समय राजपूताना एजेंसी के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत कुल छह ब्रिटिश सैन्य छावनियाँ स्थापित थीं। ये छावनियाँ नसीराबाद, नीमच, एरिनपुरा, देवली, ब्यावर तथा खेरवाड़ा में स्थित थीं। इन छावनियों में लगभग पाँच हजार देशी सिपाही तैनात थे, जबकि यूरोपीय सैनिकों की संख्या अत्यधिक नगण्य थी। नसीराबाद इनमें सबसे बड़ी तथा सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण सैन्य छावनी मानी जाती थी।

7. (D) आटे में हड्डियों का चूरा मिलाए जाने की भ्रांतियाँ और चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग
राजस्थान की ब्रिटिश छावनियों में तैनात भारतीय सिपाहियों के मध्य असंतोष का मुख्य कारण एनफील्ड राइफलों में प्रयोग होने वाले चर्बीयुक्त कारतूस थे। इन कारतूसों की टोपी को दाँतों से काटना पड़ता था, जिसमें गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग होने का संदेह था। इसके अतिरिक्त बाजार के आटे में हड्डियों का चूरा मिलाए जाने की अफवाहों ने सिपाहियों में धर्म भ्रष्ट होने का तीव्र भय पैदा कर दिया।

8. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
1857 की क्रांति के प्रारंभिक दौर में राजस्थान में विद्रोह का स्वरूप मुख्यतः सैन्य छावनियों तक ही सीमित रहा। इसका प्रमुख कारण यह था कि राजस्थान के अधिकांश देशी शासकों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रति वफादारी निभाई। शासकों ने अपनी सेनाओं तथा संसाधनों का उपयोग करके अपने राज्यों में होने वाले नागरिक उभारों को कठोरता से कुचल दिया और अंग्रेजों को पूर्ण सुरक्षा एवं सैन्य सहयोग प्रदान किया।

9. (C) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस
1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय पैट्रिक लॉरेंस राजपूताना एजेंसी में एजेंट टू गवर्नर-जनरल के उच्च प्रशासनिक पद पर आसीन थे। वे इस संपूर्ण क्षेत्र में ब्रिटिश हितों के संरक्षण तथा सैन्य व्यवस्था के संचालन हेतु उत्तरदायी शीर्ष अधिकारी थे। क्रांति की सूचना मिलते ही उन्होंने समस्त राजपूताना के शासकों को ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठावान रहने तथा विद्रोहियों का दमन करने के कड़े निर्देश जारी किए थे।

10. (A) माउंट आबू
मई 1857 में जब मेरठ विद्रोह की सूचना राजपूताना पहुँची, उस समय गवर्नर-जनरल के एजेंट जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस का मुख्यालय ग्रीष्मकालीन केंद्र माउंट आबू में स्थित था। राजपूताना एजेंसी

NODIA

का मुख्य प्रशासनिक कार्यालय अजमेर में था, परंतु अत्यधिक गर्मी के कारण ए.जी.जी. का कार्यालय माउंट आबू स्थानांतरित कर दिया जाता था। मेरठ के घटनाक्रम की जानकारी मिलते ही ए.जी.जी. ने आबू से ही सुरक्षात्मक निर्देश प्रसारित किए।

11. (D) मेजर ईडन - बीकानेर
1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजपूताना की प्रमुख रियासतों में अपने पॉलिटिकल एजेंट तैनात कर रखे थे। कोटा में मेजर बर्टन, मेवाड़ में कैप्टन शावर्स तथा मारवाड़ में मैक मोसन तैनात थे। जयपुर रियासत में मेजर विलियम ईडन पॉलिटिकल एजेंट के रूप में कार्यरत थे। बीकानेर रियासत में कोई पृथक पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त नहीं था, वहाँ का कार्यक्षेत्र सीधे ए.जी.जी. के नियंत्रण में आता था।

12. (A) केवल I और II
मेरठ विद्रोह की खबर मिलने के पश्चात् ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने तुरंत सुरक्षात्मक कदम उठाए। उन्होंने अपना प्रशासनिक मुख्यालय ग्रीष्मकालीन स्थल माउंट आबू से सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अजमेर स्थानांतरित किया। इसके साथ ही उन्होंने राजपूताना के समस्त देशी शासकों को पत्र भेजकर शांति व्यवस्था बनाए रखने का निर्देश दिया। हालाँकि, वे अजमेर की देशी पैदल सेना इकाइयों को समय रहते निशस्त्र करने में पूरी तरह असफल रहे थे।

13. (B) 28 मई 1857
राजस्थान की धरा पर 1857 की क्रांति का प्रथम सैन्य विस्फोट 28 मई 1857 को अजमेर के समीप स्थित नसीराबाद छावनी में हुआ था। मेरठ विद्रोह की खबर से उद्वेलित होकर सैनिकों में भारी अविश्वास व्याप्त हो गया था। जब 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सिपाहियों को तोपखाने द्वारा घेरे जाने का संदेह हुआ, तो उन्होंने हथियार उठाकर विद्रोह की घोषणा कर दी और ब्रिटिश अधिकारियों पर आक्रमण कर दिया।

14. (D) 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री
नसीराबाद छावनी में विद्रोह का सूत्रपात 15वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के देशी सैनिकों द्वारा किया गया था। इस टुकड़ी को मेरठ से स्थानांतरित करके नसीराबाद लाया गया था, जिससे ब्रिटिश अधिकारियों को इस पर संदेह था। अधिकारियों द्वारा बंबई कैवलरी के गश्ती दल तैनात करने तथा तोपों को तैनात करने से सिपाहियों में यह विश्वास पक्का हो गया कि उनका धर्म नष्ट किया जा रहा है, फलस्वरूप उन्होंने विद्रोह कर दिया।

15. (B) मेजर स्पॉटिसवुड और कर्नल न्यूबरी
28 मई 1857 को नसीराबाद छावनी में हुए भीषण सैन्य विद्रोह के दौरान उग्र सिपाहियों ने ब्रिटिश अधिकारियों पर सीधा हमला बोल दिया था। इस हिंसक झड़प में 15वीं नेटिव इन्फैंट्री के विद्रोही सैनिकों ने ब्रिटिश सैन्य अधिकारी मेजर स्पॉटिसवुड तथा कर्नल न्यूबरी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इसके अतिरिक्त कई अन्य अंग्रेज अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गए तथा विद्रोही तोपखाने पर अधिकार कर दिल्ली रवाना हुए।

16. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
1857 के संग्राम के दौरान राजपूताना की विभिन्न छावनियों में विशिष्ट सैन्य टुकड़ियाँ तैनात थीं। ब्यावर छावनी में मुख्य रूप से मेरवाड़ा बटालियन का गठन किया गया था, जबकि खेरवाड़ा में मेवाड़ भील कोर तैनात थी। एरिनपुरा छावनी जोधपुर लीजन का प्रमुख मुख्यालय थी तथा देवली छावनी में कोटा कंटिजेंट की टुकड़ी को स्थापित किया गया था। इन सभी टुकड़ियों ने प्रांतीय सुरक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

17. (B) मोहम्मद अली बेग
3 जून 1857 की रात्रि को नीमच छावनी में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध हिंसक विद्रोह भड़क उठा। इस सैन्य विद्रोह का कुशल नेतृत्व मोहम्मद अली बेग तथा सुबेदार हीरा सिंह ने किया था। मोहम्मद अली बेग ने ब्रिटिश अधिकारी द्वारा दिलाई जा रही वफादारी की शपथ को चुनौती देते हुए अवध के अन्यायपूर्ण विलय का स्मरण कराया। इसके पश्चात् सिपाहियों ने तोपखाने एवं शस्त्रागार पर अधिकार करके छावनी में आग लगा दी।

18. (A) कर्नल एबॉट
नीमच छावनी में गहराते असंतोष को देखते हुए ब्रिटिश कमान के वरिष्ठ अधिकारी कर्नल एबॉट ने 2 जून 1857 को एक परेड का आयोजन किया। उसने भारतीय सिपाहियों को धार्मिक ग्रंथों पवित्र कुरान तथा श्रीमद्भगवद्गीता पर हाथ रखवाकर ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रति निष्ठा की शपथ दिलाने का प्रयास किया। परंतु मोहम्मद अली बेग नामक सिपाही ने इसका डटकर विरोध किया और अगले ही दिन वहाँ क्रांति का बिगुल बज गया।

19. (C) मेवाड़ के महाराणा स्वरुप सिंह
नीमच छावनी में 3 जून को हुए विद्रोह के बाद लगभग चालिस ब्रिटिश अधिकारी अपने परिवारों के साथ जान बचाकर भागे। भागते हुए अंग्रेजों को डूंगला गाँव में किसान रुघनाथ सिंह ने शरण प्रदान की। इस घटना की सूचना मिलते ही मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह ने तुरंत अपनी सेना भेजकर उन अंग्रेजों को सुरक्षित बचाया। महाराणा ने उन्हें उदयपुर लाकर पिछोला झील स्थित जगमंदिर महल में ठहराया तथा सुरक्षा दी।

20. (D) अंग्रेज 1858 के अंत तक नीमच पर पुनः अधिकार करने में पूरी तरह असफल रहे।
नीमच में विद्रोह करने के पश्चात् सैनिकों ने शस्त्रागार को लूटा और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उन्होंने देवली छावनी के खजाने को लूटा तथा निम्बाहेड़ा की जनता ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। हालाँकि, ब्रिटिश अधिकारियों ने मेवाड़ की सेना की सहायता से स्थिति पर शीघ्र नियंत्रण पा लिया था। जून 1857 के मध्य तक अंग्रेजों ने नीमच छावनी पर पुनः अपना अधिकार स्थापित कर लिया था, जिससे स्थिति सामान्य हो गई।

21. (B) मारवाड़ (जोधपुर)
आउवा 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ सशस्त्र क्रांति का एक अत्यंत प्रसिद्ध केंद्र बनकर उभरा। भौगोलिक एवं प्रशासनिक रूप से आउवा मारवाड़ (जोधपुर) रियासत के अंतर्गत आने वाली एक अत्यंत शक्तिशाली तथा

Click Here to Buy book on Flipkart

प्रभावशालिनी जागीर थी। यहाँ के ठाकुर कुशाल सिंह राठौड़ ने जोधपुर के महाराजा तथा ब्रिटिश सेना की संयुक्त शक्तियों को चुनौती देकर इस पूरे क्षेत्र में विद्रोह का नेतृत्व किया था।

22. (B) कैप्टन हीथकोट और किलेदार ओनाड़ सिंह
8 सितंबर 1857 को पाली जिले के बिथौड़ा नामक स्थान पर एक ऐतिहासिक युद्ध लड़ा गया था। इस युद्ध में आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह के नेतृत्व वाली विद्रोही सेना का मुकाबला ब्रिटिश सेना तथा जोधपुर राज्य की संयुक्त टुकड़ी से हुआ। संयुक्त सेना का नेतृत्व ब्रिटिश अधिकारी कैप्टन हीथकोट तथा जोधपुर के किलेदार ओनाड़ सिंह कर रहे थे। ठाकुर कुशाल सिंह ने कुशल रणनीति से इस युद्ध में शानदार विजय प्राप्त की।

23. (C) चेलावास का युद्ध
18 सितंबर 1857 को लड़ा गया चेलावास का युद्ध स्थानीय लोक इतिहास तथा गीतों में "काले-गोरे का युद्ध" के नाम से विख्यात है। इस संग्राम में ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस और मारवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट मैक मोसन की ब्रिटिश सेना को आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह की देशभक्त सेना ने करारी शिकस्त दी थी। अंग्रेजों की पराजय तथा मैक मोसन के वध ने इस युद्ध को ऐतिहासिक बना दिया।

24. (A) केवल I, II और III
आउवा का विद्रोह सामंती अधिकारों में जोधपुर महाराजा तख्त सिंह के हस्तक्षेप का परिणाम था। एरिनपुरा में विद्रोह करने वाले जोधपुर लीजन के सिपाही आउवा पहुँचकर ठाकुर कुशाल सिंह के साथ मिल गए। 18 सितंबर को चेलावास युद्ध में मारवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट मैक मोसन का सिर काटकर आउवा किले के द्वार पर टाँग दिया गया। आसोप, आलणियावास तथा गूलर जैसी पड़ोसी जागीरों के सामंतों ने भी इस युद्ध में सहयोग दिया।

25. (B) 15 अक्टूबर 1857
1857 के महान संग्राम के दौरान राजस्थान में सबसे व्यापक, सुसंगठित एवं भीषण नागरिक विद्रोह कोटा रियासत में घटित हुआ। कोटा में यह जनविद्रोह 15 अक्टूबर 1857 को आधिकारिक रूप से प्रारंभ हुआ। राज्य की सेना के राजकीय सैनिकों तथा स्थानीय आम नागरिकों ने मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध शस्त्र उठा लिए। विद्रोहियों ने संपूर्ण शहर तथा प्रशासनिक व्यवस्था पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

26. (C) लाला जयदयाल और मेहराब खान
कोटा में 1857 के महान जनविद्रोह का रणनीतिक एवं सैन्य नेतृत्व दो प्रमुख देशभक्त हस्तियों ने किया था। इनमें जयपुर के वकील लाला जयदयाल तथा कोटा राज्य की पैदल सेना के रिसालदार मेहराब खान मुख्य सूत्रधार थे। इन दोनों नेताओं ने राजकीय सेना और स्थानीय जनता को ब्रिटिश विरोधी चेतना से संगठित किया तथा कई महीनों तक कोटा शहर का शासन अपने हाथों में कुशलतापूर्वक संचालित किया।

27. (D) मेजर बर्टन
15 अक्टूबर 1857 को कोटा में क्रांति का बिगुल बजते ही विद्रोही सैनिकों तथा नागरिकों की भीड़ ने ब्रिटिश रेजीडेंसी को घेर लिया। विद्रोहियों ने कोटा में तैनात ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन, उनके दो निर्दोष बेटों तथा रेजिडेंसी के डॉक्टर सैडलर की हत्या कर दी। क्रांतिकारियों ने मेजर बर्टन का सिर धड़ से अलग करके पूरे कोटा शहर में घुमाया, जो औपनिवेशिक सत्ता के प्रति तीव्र आक्रोश का प्रतीक था।

28. (A) नसीराबाद, नीमच, एरिनपुरा, कोटा
राजस्थान में 1857 के विद्रोह की घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम नसीराबाद से प्रारंभ होता है, जहाँ 28 मई को पहली क्रांति हुई। इसके पश्चात् 3 जून को नीमच छावनी में सिपाहियों ने विद्रोह किया। तत्पश्चात् 21 अगस्त को सिरोही के माउंट आबू तथा एरिनपुरा में जोधपुर लीजन के सैनिकों ने बगावत की। अंत में 15 अक्टूबर 1857 को कोटा में विशाल जनविद्रोह भड़का था।

29. (A) माउंट आबू
जोधपुर लीजन की सैन्य टुकड़ियों ने 21 अगस्त 1857 को सबसे पहले पर्वतीय स्थल माउंट आबू में ब्रिटिश अधिकारियों पर आक्रमण करके अपने विद्रोह का शुभारंभ किया। वहाँ ए.जी.जी. के पुत्र पर हमला करने के पश्चात् विद्रोही सैनिक पाली जिले में स्थित अपनी मुख्य छावनी एरिनपुरा पहुँचे। एरिनपुरा में उन्होंने अपने शेष साथियों को साथ लिया और ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेकर आगे बढ़े।

NODIA

30. (C) शिवनाथ सिंह
एरिनपुरा छावनी में विद्रोह करने के उपरांत जोधपुर लीजन के विद्रोही सिपाही आउवा पहुँचे। आउवा से दिल्ली की ओर कूच करते समय असोपा के ठाकुर शिवनाथ सिंह ने सैनिकों की कमान संभाली। उन्होंने देशभक्त सिपाहियों में जोश भरने के लिए ऐतिहासिक नारा "चलो दिल्ली, मारो फिरंगी" प्रदान किया। इस जोशीले नारे ने विद्रोही सैनिकों को राष्ट्रीय क्रांति के केंद्र दिल्ली की ओर बढ़ने के लिए अत्यधिक प्रेरित किया।

31. (B) टेलर आयोग
1857 की क्रांति का दमन करने के उपरांत ब्रिटिश सरकार ने आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह की भूमिका तथा विद्रोही गतिविधियों की निष्पक्ष जाँच हेतु मेजर टेलर की अध्यक्षता में एक विशेष जाँच आयोग गठित किया। टेलर आयोग ने विभिन्न साक्ष्यों का गहन विश्लेषण करने के बाद पाया कि कुशाल सिंह का विद्रोह मुख्य रूप से जोधपुर महाराजा के विरुद्ध था, न कि अंग्रेजों के खिलाफ, फलस्वरूप उन्हें निर्दोष बरी कर दिया गया।

32. (B) नीमच
आउवा के पतन और वर्षों तक भूमिगत रहने के पश्चात्, अंततः ठाकुर कुशाल सिंह ने अगस्त 1860 में नीमच में ब्रिटिश अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। उन्होंने अपनी निष्पक्ष जाँच की माँग रखी, जिसके आधार पर ब्रिटिश सरकार ने मेजर टेलर आयोग का गठन किया था। जाँच में केवल अपने सामंती अधिकारों की रक्षा करने का दोषी पाए जाने के कारण उन्हें सभी आरोपों से बरी कर दिया गया था।

33. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में 1857 के विभिन्न सिपाही विद्रोह अंततः ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने में पूरी तरह सफल नहीं हो सके। इसका प्रमुख कारण विद्रोही कमान में एक केंद्रीय रणनीतिक नेतृत्व का अभाव होना था। छावनियों में विद्रोह करने के उपरांत देशी सिपाही प्रांतीय स्तर पर सत्ता पर अधिकार मजबूत करने के स्थान पर दिल्ली के सम्राट की सहायता हेतु कूच कर गए, जिससे अंग्रेजों को पुनः संगठित होने का अवसर मिल गया।

34. (B) ब्यावर और खेरवाड़ा
1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजस्थान की कुल छह ब्रिटिश छावनियों में से केवल दो छावनियाँ ब्यावर और खेरवाड़ा ही ऐसी थीं, जहाँ के सैनिकों ने कोई विद्रोह नहीं किया। ब्यावर में मुख्य रूप से स्थानीय मेर जाति की मेरवाड़ा बटालियन तथा खेरवाड़ा में मेवाड़ भील कोर तैनात थी। ये दोनों जनजातीय सैन्य टुकड़ियाँ अंग्रेजों के प्रति वफादार बनी रहीं और क्रांति से पूरी तरह दूर रहीं।

35. (B) अवध और दोआब क्षेत्र
1857 के दौरान राजस्थान की विभिन्न ब्रिटिश छावनियों जैसे नसीराबाद तथा नीमच में तैनात बहुसंख्यक देशी सिपाही मूल रूप से अवध, बिहार तथा गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र के निवासी थे। इन सिपाहियों के परिवार अवध में ईस्ट इंडिया कंपनी की शोषणकारी भू-राजस्व नीतियों तथा अवध के जबरन विलय से अत्यधिक प्रभावित थे। इसी प्रांतीय एवं धार्मिक असंतोष के कारण वे विद्रोह करने हेतु प्रेरित हुए थे।

36. (B) वे धार्मिक असंतोष और पदच्युत मुगल सम्राट के प्रति सहानुभूति से प्रेरित थे।
राजस्थान की छावनियों में विद्रोह करने वाले आम सिपाहियों की प्राथमिक प्रेरणा उनका धार्मिक असंतोष तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा उनके रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप था। चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग ने उनकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी। इसके अतिरिक्त, वे अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र को भारत का वास्तविक सार्वभौम सम्राट मानते थे तथा उनके प्रति गहरी राजनीतिक सहानुभूति रखकर देश सेवा हेतु तत्पर थे।

37. (B) केवल I और II
1857 के संग्राम में राजस्थान के केवल कोटा शहर में ही व्यापक जन-भागीदारी देखी गई, जहाँ राज्य के अधिकारियों और आम जनता ने मिलकर विद्रोह किया। राज्य के अन्य अधिकांश हिस्सों में यह संघर्ष मुख्यतः सैन्य छावनियों और असंतुष्ट जागीरदारों तक सीमित रहा, तथा आम कृषक वर्ग इससे दूर रहा। इसके अतिरिक्त राजस्थान के कई बड़े व्यापारियों एवं सेठों ने विद्रोही सेनाओं को गुप्त रूप से आर्थिक सहायता प्रदान की थी।

38. (B) उन्होंने ब्रिटिश हस्तक्षेप और जोधपुर शासक की माँगों के खिलाफ स्थानीय स्वायत्तता की रक्षा के रूप में उनके संघर्ष का समर्थन किया।
आउवा के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों एवं आम जनता ने ठाकुर कुशाल सिंह का व्यापक समर्थन किया, क्योंकि वे उनके संघर्ष को अपनी पारंपरिक स्वायत्तता की रक्षा के रूप में देखते थे। मारवाड़ के महाराजा तख्त सिंह तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का अत्यधिक प्रशासनिक हस्तक्षेप एवं आर्थिक उत्पीड़न स्थानीय लोगों के लिए कष्टकारी था। जनता ने आउवा के ठाकुर को औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध रक्षक मानकर उनका साथ दिया।

39. (C) यह राज्य की सैन्य ताकतों और आम नागरिकों की भागीदारी वाला एक समन्वित विद्रोह था।
कोटा में हुआ 1857 का विद्रोह राजस्थान के अन्य क्षेत्रों के विद्रोहों की तुलना में विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि यह केवल सैन्य विद्रोह न होकर एक सुसंगठित जनविद्रोह था। इसमें कोटा राज्य की सशस्त्र सेनाओं, प्रशासनिक कर्मचारियों तथा आम शहरवासियों ने एक साथ मिलकर औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ संघर्ष किया। विद्रोहियों ने महीनों तक राज्य का प्रशासन चलाया तथा महारानी और अंग्रेजों की संयुक्त शक्ति को बेअसर कर दिया।

40. (A) अमर चंद बांठिया - बीकानेर/ग्वालियर
अमर चंद बांठिया मूल रूप से बीकानेर के निवासी थे, जिन्होंने 1857 के विद्रोह के दौरान महत्वपूर्ण नागरिक भूमिका निभाई। वे ग्वालियर राज्य के राजकोष के नगर सेठ और कोषाध्यक्ष थे। उन्होंने अदम्य साहस दिखाते हुए रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या तोपे की विद्रोही सेनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की। इस देशभक्तिपूर्ण कार्य के लिए अंग्रेजों ने उन्हें जून 1858 में ग्वालियर में सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी थी।

41. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
1857 के संग्राम के दौरान राजपूताना की प्रमुख रियासतों में विभिन्न राजपूत शासक सत्तासीन थे। जयपुर रियासत के शासक महाराजा राम सिंह द्वितीय थे, जिन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया। मेवाड़ रियासत के महाराणा स्वरूप सिंह उदयपुर के सिंहासन पर विराजमान थे। मारवाड़ (जोधपुर) रियासत के महाराजा तख्त सिंह थे, जबकि बीकानेर रियासत का शासन महाराजा सरदार सिंह के हाथों में पूरी तरह से केंद्रित था।

NODIA

42. (B) अंग्रेजों ने 1817-1818 की संधियों के तहत उनके राजवंश के अस्तित्व और बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा की गारंटी दी थी।
1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजस्थान के अधिकांश राजपूत शासकों ने ब्रिटिश सरकार का पूर्ण समर्थन किया। इसका मुख्य कारण 1817-1818 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ की गई अधीनस्थ संधि व्यवस्था थी। इन संधियों के माध्यम से अंग्रेजों ने राजपूत राजवंशों के आंतरिक अस्तित्व, सिंहासनों की सुरक्षा तथा बाहरी आक्रमणों से रक्षा की लिखित गारंटी दी थी, जिसके कारण शासकों ने अपनी निष्ठा अंग्रेजों के प्रति दिखाई।

43. (C) बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह
1857 के विद्रोह का दमन करने के लिए बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह राजस्थान के एकमात्र ऐसे शासक थे, जिन्होंने अपनी सेना का नेतृत्व स्वयं किया। वे ब्रिटिश साम्राज्य की सहायता हेतु अपनी प्रांतीय सीमाओं से बाहर निकलकर पंजाब तथा हरियाणा (हांसी और सिरसा) के क्षेत्रों तक पहुँचे। उनकी

इस असाधारण निष्ठा एवं सैन्य सेवा से प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें टिब्बी परगने के 41 गाँव उपहार स्वरुप दिए थे।

44. (C) उन्होंने संकट के दौरान अंग्रेजों के साथ बेहतर शर्तों पर बातचीत करने के लिए एक एकीकृत महासंघ (कन्फेडरेसी) का गठन किया।
1857 के विद्रोह के समय राजस्थान के शासकों का दृष्टिकोण पूर्णतः ब्रिटिश समर्थक रहा। उन्होंने अंग्रेजों को सैन्य टुकड़ियाँ, रसद तथा आर्थिक सहायता प्रदान की और संकटग्रस्त अंग्रेज परिवारों को अपने महलों में सुरक्षित आश्रय दिया। शासकों ने अपने सामंतों तथा प्रजा को विद्रोहियों की सहायता करने से सख्ती से रोका। किसी भी राजपूत शासक ने अंग्रेजों के विरुद्ध बातचीत या विरोध हेतु किसी एकीकृत महासंघ का गठन बिलकुल नहीं किया।

45. (B) उन्होंने ब्रिटिश विरोधी साजिश के संदेह में नवाब विलायत अली खान सहित प्रमुख रईसों को कैद कर लिया।
1857 के महान संग्राम के समय जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय ने ब्रिटिश सत्ता के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन किया। जब उन्हें अपनी राजधानी जयपुर में ब्रिटिश विरोधी साजिश रचने का संदेह हुआ, तो उन्होंने त्वरित कार्रवाई की। उन्होंने नवाब विलायत अली खान, उस्मान खान तथा सादुल्ला खान जैसे प्रमुख प्रभावशाली रईसों को तुरंत गिरफ्तार करके कारागार में डाल दिया, जिससे राज्य में विद्रोह की कोई संभावना न रहे।

46. (A) कोटपूतली का परगना
1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय ने ब्रिटिश सरकार को हर संभव सैन्य, वित्तीय तथा प्रशासनिक सहायता प्रदान की थी। उनकी इस असाधारण स्वामीभक्ति तथा बहुमूल्य सेवाओं से प्रसन्न होकर ब्रिटिश हुकूमत ने उन्हें 'सितार-ए-हिंद' की सर्वोच्च सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया। इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें स्थायी रुप से कोटपूतली का समृद्ध परगना पुरस्कार के रूप में प्रदान किया था।

47. (B) विलियम ईडन
1857 की क्रांति की अवधि में जयपुर रियासत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी मेजर विलियम ईडन पॉलिटिकल एजेंट के रूप में कार्यरत थे। जब पूरे भारत में विद्रोह की ज्वाला भड़क रही थी, तब मेजर ईडन ने जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय के साथ मिलकर राज्य में शांति बनाए रखी। उन्होंने जयपुर की सेना को पड़ोस के उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में कानून व्यवस्था स्थापित करने हेतु भेजा।

48. (B) महाराजा के ब्रिटिश समर्थक रुख के बावजूद, कुछ दरबारियों के बीच ब्रिटिश विरोधी साजिश को तेजी से दबा दिया गया।
1857 की क्रांति के दौरान जयपुर रियासत की आंतरिक राजनीतिक स्थिति काफी हद तक नियंत्रित रही। यद्यपि महाराजा राम सिंह द्वितीय ने अंग्रेजों का पूर्ण समर्थन किया, परंतु जयपुर दरबार के कुछ मुस्लिम सैनिकों एवं रईसों में ब्रिटिश विरोधी भावनाएँ मौजूद थीं। महाराजा तथा पॉलिटिकल एजेंट विलियम ईडन ने गुप्त षड्यंत्रों का समय रहते भंडाफोड़ किया और संदिग्ध अधिकारियों को बंदी बनाकर विद्रोह के किसी भी बड़े प्रयास को विफल कर दिया।

49. (A) केवल I और II
1857 के विद्रोह के समय जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह ने अंग्रेजों की रक्षा हेतु राजकीय सेना भेजी थी। वे अपने ही शक्तिशाली सामंत आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह के प्रति तीव्र शत्रुता रखते थे, क्योंकि कुशाल सिंह ने उनके अधिकार को चुनौती दी थी। हालाँकि, चेलावास के युद्ध में महाराजा और अंग्रेजों की संयुक्त सेना पराजित हुई थी तथा महाराजा ने विद्रोहियों को कोई सुरक्षित मार्ग प्रदान नहीं किया था।

50. (A) किलेदार ओनाड़ सिंह
जोधपुर के महाराजा तख्त सिंह ने आउवा में भड़के सामंती एवं सैन्य विद्रोह का दमन करने के लिए अपनी रियासती सेना भेजी थी। इस मारवाड़ राज्य सेना का नेतृत्व उनके अत्यंत विश्वसनीय किलेदार ओनाड़ सिंह कर रहे थे। 8 सितंबर 1857 को बिथौड़ा में हुए भीषण संग्राम में ओनाड़ सिंह बहादुरी से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए, जिससे जोधपुर दरबार तथा ब्रिटिश अधिकारियों को भारी झटका लगा।

51. (C) कैप्टन मैक मोसन
18 सितंबर 1857 को लड़ा गया चेलावास का युद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत प्रसिद्ध है। इस युद्ध में मारवाड़ (जोधपुर) के ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन मैक मोसन आउवा के क्रांतिकारियों द्वारा युद्ध के मैदान में मारे गए। विद्रोही सिपाहियों और स्थानीय निवासियों ने कैप्टन मैक मोसन का कटा हुआ सिर आउवा के ऐतिहासिक किले के मुख्य प्रवेश द्वार पर लटका दिया, जो औपनिवेशिक प्रतिरोध का प्रतीक बना।

52. (B) बिथौड़ा में सामंती उत्तराधिकार अधिकारों का विवाद और भारी "रेख" सामंती करों को लागू किया जाना।
1857 के संग्राम से पूर्व ही जोधपुर महाराजा तख्त सिंह तथा आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह के मध्य तीव्र कटुता विद्यमान थी। इस वैमनस्य का मुख्य कारण बिथौड़ा जागीर के उत्तराधिकार का विवाद तथा तख्त सिंह द्वारा सामंतों पर अत्यधिक 'रेख' (वार्षिक सामंती कर) लागू करने की नीति थी। जब महाराजा ने कुशाल सिंह के अधिकारों को दबाने का प्रयास किया, तो आउवा के ठाकुर ने खुले तौर पर बगावत कर दी।

53. (A) 1, 2, 4, 3
1857 क्रांति से जुड़ी इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: जनवरी 1858 में कर्नल होम्स की ब्रिटिश सेना ने आउवा किले पर अधिकार किया। इसके बाद मार्च 1858 में जनरल रॉबर्ट्स ने कोटा को विद्रोहियों से मुक्त कराया। अगस्त 1858 में कुवाड़ा के युद्ध में तात्या तोपे पराजित हुए। अंततः अप्रैल 1859 में तात्या तोपे को ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा फाँसी दे दी गई।

54. (B) कर्नल होम्स
जनवरी 1858 में आउवा के क्रांतिकारियों का दमन करने के लिए एक विशाल ब्रिटिश सेना भेजी गई। इस सैन्य अभियान

Downloaded from www.pdf.tube

की कमान ब्रिटिश सैन्य अधिकारी कर्नल होम्स के हाथों में थी। कर्नल होम्स ने आउवा के अभेद्य किले की घेराबंदी की और भारी तोपखाने से प्रहार किया। अंततः 24 जनवरी 1858 को कर्नल होम्स के नेतृत्व वाली ब्रिटिश सेना ने आउवा किले पर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया।

55. (A) मेजर जनरल एच.जी. रॉबर्ट्स
मार्च 1858 में कोटा शहर को क्रांतिकारियों के कब्जे से छुड़ाने हेतु एक विशाल ब्रिटिश सैन्य दल भेजा गया। इस ब्रिटिश राजपूताना फ़ील्ड फ़ोर्स की कमान मेजर जनरल एच.जी. रॉबर्ट्स संभाल रहे थे। जनरल रॉबर्ट्स की सेना ने करौली राज्य की सैन्य सहायता से कोटा शहर को घेर लिया और भारी तोपबाज़ी के बाद 30 मार्च 1858 को कोटा पर पुनः पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया।

56. (B) करौली (मदन पाल के अधीन)
कोटा में विद्रोहियों द्वारा महाराव राम सिंह को नजरबंद किए जाने पर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मुक्त कराने का प्रयास किया। इस दौरान करौली रियासत के शासक महाराजा मदन पाल ने अंग्रेजों का समर्थन करते हुए अपनी एक बड़ी सेना कोटा भेजी। करौली की इस सैन्य टुकड़ी ने ब्रिटिश जनरल रॉबर्ट्स की सेना के साथ मिलकर कोटा शहर पर धावा बोला और महाराव को विद्रोहियों के चंगुल से सफलतापूर्वक छुड़ाया।

57. (C) सुगाली माता
जनवरी 1858 में कर्नल होम्स के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने जब आउवा किले पर अधिकार किया, तो उन्होंने प्रतिशोध की भावना से पूरे गाँव और किले को नष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजों ने क्रांतिकारियों की प्रेरणा स्रोत मानी जाने वाली आउवा के ठाकुरों की कुलदेवी सुगाली माता की प्रसिद्ध काले पत्थर की मूर्ति को उखाड़ लिया और उसे जब्त करके अपने साथ अजमेर ले गए।

58. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
1857 के संग्राम के पश्चात् अंग्रेजों ने कोटा के महाराव राम सिंह की तोपों की सलामी घटाकर 13 कर दी, क्योंकि वे मेजर बर्टन की सुरक्षा में विफल रहे थे। दूसरी ओर, करौली के राजा मदन पाल को कोटा मुक्ति अभियान में महत्वपूर्ण सैन्य सहायता देने के लिए उनकी तोपों की सलामी बढ़ाकर 17 कर दी गई। अतः करौली के शासक को पुरस्कृत और कोटा के महाराव को दंडित किया गया।

59. (C) उन्हें बंदी बना लिया गया और कोटा रेजीडेंसी के पास सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई।
मार्च 1858 में ब्रिटिश सेना द्वारा कोटा पर पुनः अधिकार करने के पश्चात् क्रांति के मुख्य सूत्रधारों की धरपकड़ शुरू हुई। कोटा विद्रोह के प्रमुख नायक लाला जयदयाल तथा मेहराब खान को अंततः अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर राजद्रोह तथा हत्या का मुकदमा चलाकर, कोटा रेजीडेंसी के समीप ही सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई, ताकि जनता में औपनिवेशिक सत्ता का भय व्याप्त हो सके।

60. (B) 17 से घटाकर 13
कोटा में ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन की हत्या तथा विद्रोहियों पर नियंत्रण न रख पाने के कारण ब्रिटिश सरकार कोटा के महाराव राम सिंह द्वितीय से अत्यधिक रुष्ट थी। इसके दंड स्वरूप महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में कोटा राज्य की आधिकारिक तोपों की सलामी को 17 से घटाकर 13 कर दिया गया। यह कमी औपनिवेशिक सरकार द्वारा राजा की असफलता पर दिया गया एक कड़ा राजनीतिक दंड था।

61. (B) अमर चंद बांठिया
बीकानेर मूल के प्रसिद्ध देशभक्त व्यवसायी अमर चंद बांठिया को इतिहास में "राजस्थान का मंगल पांडे" कहा जाता है। वे ग्वालियर के राजकीय कोषाध्यक्ष थे। उन्होंने 1857 के संग्राम के दौरान झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या तोपे की विद्रोही सेना को वित्तीय संकट से उबारने हेतु ग्वालियर का संपूर्ण राजकोष सौंप दिया था। इस महान बलिदान के लिए अंग्रेजों ने जून 1858 में उन्हें फाँसी दे दी थी।

62. (D) I, II और III
अमर चंद बांठिया ग्वालियर के मराठा राजवंश के खजांची थे। 1857 की क्रांति के समय उन्होंने अप्रतिम देशभक्ति का परिचय देते हुए ग्वालियर का शाही खजाना रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या तोपे के क्रांतिकारी अभियानों के संचालन हेतु खोल दिया था। उनके इस देशद्रोही माने गए कार्य से क्रोधित होकर ब्रिटिश सैन्य अधिकारियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और जून 1858 में ग्वालियर में नीम के पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी।

63. (B) सूर्यमल्ल मीषण
बूंदी रियासत के महान प्रसिद्ध दरबारी कवि सूर्यमल्ल मीषण ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ऐतिहासिक ग्रन्थ "वीर सतसई" की रचना की। अपनी ओजस्वी काव्य रचनाओं के माध्यम से उन्होंने राजस्थान के राजपूत शासकों और सामंतों में औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध स्वाभिमान तथा युद्ध भावना जगाने का प्रयास किया। वे ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों के प्रखर विरोधी तथा राष्ट्रीय चेतना के अमर संवाहक कवि माने जाते हैं।

64. (D) (A) और (B) दोनों
1857 के संग्राम के दौरान मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह के ब्रिटिश समर्थक रुख के बावजूद मेवाड़ क्षेत्र के कुछ सामंतों ने देशभक्ति का परिचय दिया। सलुंबर के रावत केसरी सिंह तथा कोठारिया के ठाकुर जोध सिंह ने महाराणा के आदेशों की अवहेलना करते हुए आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह तथा मराठा सेनापति तात्या तोपे को अपने ठिकानों पर शरण, भोजन एवं सामरिक सहायता प्रदान की थी।

65. (B) राजस्थान का विद्रोह स्थानीय सैन्य विद्रोहों और सामंती असंतोष तक ही सीमित था, जिसमें अवध के समान बड़े पैमाने पर नागरिक विद्रोह का अभाव था।
1857 की क्रांति के स्वरूप की तुलना करने पर राजस्थान और अवध में बड़ा अंतर दिखाई देता है। अवध में यह संग्राम एक व्यापक जनविद्रोह था जिसमें कृषक, ज़मींदार तथा आम जनता

NODIA

शामिल थी। इसके विपरीत राजस्थान में यह आंदोलन मुख्यतः सैनिक छावनियों के असंतोष तथा आउवा व कोटा जैसे केंद्रों के सामंती एवं स्थानीय विद्रोहों तक ही सीमित रहा, तथा इसमें अवध जैसी व्यापक जनभागीदारी का अभाव रहा।

66. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
1857 की क्रांति के दौरान राजस्थान के विभिन्न केंद्रों की अपनी अलग विशेषता थी। कोटा में आम नागरिकों तथा राजकीय सैनिकों का सबसे सुसंगठित जनविद्रोह हुआ। नसीराबाद में सबसे पहली सैन्य क्रांति भड़की थी। आउवा का किला महाराजा तथा अंग्रेजों के खिलाफ सामंती प्रतिरोध का मुख्य केंद्र बना, जबकि नीमच छावनी में सैनिकों ने धर्म भ्रष्ट होने की आशंका तथा शपथ विवाद के कारण विद्रोह किया था।

67. (B) विद्रोही गुटों के बीच समन्वय और केंद्रीकृत नेतृत्व का अभाव।
राजस्थान में 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम अंततः असफल हो गया। इस विफलता का सबसे प्रमुख कारण विभिन्न विद्रोही गुटों के मध्य आपसी समन्वय, सुसंगठित योजना तथा एक सशक्त केंद्रीकृत नेतृत्व का अभाव होना था। अलग-अलग छावनियों तथा जागीरों में विद्रोह भिन्न-भिन्न समय पर हुए, जिससे अंग्रेजों को अलग-अलग स्थानों पर अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग करके क्रांति का दमन करने में अत्यधिक सुगमता हुई।

68. (B) राजस्थान में नेतृत्व शासक राजाओं के बजाय सूबेदारों और स्थानीय जागीरदारों द्वारा संभाला गया था।
दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर पर 1857 के आंदोलन का नेतृत्व मुगल सम्राट के हाथों में था, परंतु राजस्थान में स्थिति सर्वथा भिन्न थी। राजस्थान के तत्कालीन रियासती राजाओं ने क्रांति का नेतृत्व करने के स्थान पर अंग्रेजों का साथ दिया। फलस्वरूप, राजस्थान में विद्रोह की बागडोर छावनियों के देशी सूबेदारों, सेनापतियों तथा आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह जैसे असंतुष्ट स्थानीय सामंतों एवं जागीरदारों द्वारा संभाली गई थी।

69. (B) रियासतों पर सर्वोपरि सत्ता (परमसत्ता) ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश क्राउन को स्थानांतरित हो गई।
1857 की क्रांति के दमन के पश्चात् ब्रिटिश संसद ने भारत सरकार अधिनियम 1858 पारित किया। इसके परिणामस्वरूप राजस्थान की देशी रियासतों पर ब्रिटिश सर्वोपरि सत्ता का अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर सीधे ब्रिटिश क्राउन तथा महारानी विक्टोरिया को स्थानांतरित हो गया। हालाँकि, राजपूताना की रियासतों के प्रशासनिक ढाँचे को नष्ट नहीं किया गया, बल्कि राजाओं के अधिकारों को क्राउन के अधीन सुरक्षित रखा गया।

70. (B) रियासती राजधानियों में सार्वजनिक 'दरबारों' का आयोजन करके जहाँ घोषणा-पत्र को उच्च स्वर में पढ़ा गया था।
1858 में ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया का शाही घोषणा-पत्र जारी होने के बाद इसे राजस्थान की समस्त रियासतों के शासकों एवं आम जनता तक पहुँचाया गया। इसके लिए विभिन्न रियासती राजधानियों में भव्य सार्वजनिक 'दरबारों' का औपचारिक आयोजन किया गया। इन दरबारों में ब्रिटिश अधिकारियों एवं रियासती मंत्रियों द्वारा घोषणा-पत्र को उच्च स्वर में पढ़कर सुनाया गया, जिससे क्राउन के सीधे शासन की शुरुआत की अधिकृत सूचना दी गई।

71. (B) उन्होंने अवध के सिपाहियों की भर्ती कम कर दी तथा निष्ठावान समूहों और पुनर्गठित टुकड़ियों पर निर्भरता बढ़ा दी।
1857 के विद्रोह के तुरंत बाद अंग्रेजों ने राजपूताना में सैन्य पुनर्गठन की नीति अपनाई। नसीराबाद और नीमच में अवध व पूर्वांचल के सिपाहियों की विद्रोही भूमिका को देखते हुए, उनकी सेना में भर्ती काफी कम कर दी गई। इसके स्थान पर अंग्रेजों ने मेर, भील तथा अन्य स्थानीय समूहों पर अपनी निर्भरता बढ़ा दी, जो संकट के समय ब्रिटिश कमान के प्रति निष्ठावान और वफादार सिद्ध हुए थे।

72. (B) ए.जी.जी. के नेतृत्व वाली राजपूताना एजेंसी
1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दमन के उपरांत राजपूताना एजेंसी अत्यधिक शक्तिशाली प्रशासनिक संस्था के रूप में उभरी। एजेंट टू गवर्नर-जनरल (ए.जी.जी.) के नेतृत्व में इस एजेंसी ने राजस्थान की सभी रियासतों पर अपना नियंत्रण और अधिक मजबूत कर लिया। विभिन्न राज्यों में तैनात पॉलिटिकल एजेंटों के माध्यम से ब्रिटिश क्राउन ने देशी राजाओं की आंतरिक नीतियों तथा राजस्व मामलों पर प्रभावी सर्वोपरि सत्ता का प्रयोग करना शुरु किया।

73. (A) अधीनस्थ पृथक्करण से अधीनस्थ संघ की ओर (सबऑर्डिनेट आइसोलेशन से सबऑर्डिनेट यूनियन)
1857 के संग्राम के पश्चात् राजस्थान की रियासतों के प्रति ब्रिटिश विदेश नीति में मौलिक परिवर्तन आया। पूर्व की "अधीनस्थ पृथक्करण की नीति" के स्थान पर "अधीनस्थ संघ की नीति" को अपनाया गया। इस नीति के तहत ब्रिटिश क्राउन ने देशी राजाओं को साम्राज्य का सहयोगी साझेदार माना। राजाओं की रियासती सीमाओं की रक्षा का वचन देकर उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के एक एकीकृत प्रशासनिक संघ में जोड़ दिया गया।

74. (B) केवल I, III और IV
1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों ने अपनी रियासती नीति में व्यापक परिवर्तन किए। शासकों को गोद लेने की सनद देकर वंशानुगत अधिकार मान्यता दी गई। क्रांति में वफादारी दिखाने वाले राजाओं को विभिन्न उपाधियों तथा भू-क्षेत्रों से अलंकृत किया गया। राजाओं को ब्रिटिश साम्राज्य के मजबूत स्तंभ के रुप में स्वीकारा गया। हालाँकि, अंग्रेजों ने रेलवे, डाक तथा नमक जैसे आर्थिक संसाधनों में अपना हस्तक्षेप काफी बढ़ा दिया था।

75. (A) गोद लेने की सनद (गोद सनद)
लॉर्ड डलहौजी की व्यपगत के सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) नीति से देशी राजाओं में अपने राजवंश के समाप्त होने का गहरा भय व्याप्त था। 1857 के विद्रोह में वफादार रहे राजपूत शासकों को आश्वस्त करने के लिए ब्रिटिश क्राउन ने "गोद लेने की सनद" (गोद सनद) जारी की। इस व्यवस्था के तहत राजाओं को बिना

Click Here to Buy book on Amazon

किसी ब्रिटिश हस्तक्षेप के अपना निसंतान होने पर उत्तराधिकारी गोद लेने का अधिकार प्रदान किया गया।

76. (B) नमक, रेलवे और टेलीग्राम नेटवर्क जैसे आर्थिक संसाधनों पर सीधा नियंत्रण स्थापित करना।
1857 के बाद ब्रिटिश सरकार ने राजस्थान के शासकों की क्षेत्रीय अखंडता का आश्वासन तो दिया, परंतु आर्थिक मामलों में अपना हस्तक्षेप अत्यधिक बढ़ा दिया। अंग्रेजों ने संपूर्ण राजपूताना में रेलवे लाइन बिछाने, तार (टेलीग्राम) नेटवर्क का विस्तार करने तथा सांभर झील सहित प्रमुख नमक स्रोतों के उत्पादन पर सीधा पट्टा और नियंत्रण प्राप्त कर लिया। इससे रियासतों की आर्थिक स्वायत्तता ब्रिटिश हितों के अधीन हो गई।

77. (B) 10 सिर और 54 हाथ
आउवा के स्वतंत्रता संग्राम की आराध्य देवी सुगाली माता की काले पत्थर से निर्मित मूर्ति अत्यंत अद्भुत एवं ऐतिहासिक है। इस मूर्ति में देवी के 10 सिर तथा 54 हाथ दर्शाए गए हैं। 1857 की क्रांति के समय आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह तथा क्रांतिकारियों ने इसी देवी की पूजा करके ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया था। यह प्रतिमा स्वाधीनता संग्राम का प्रमुख सांस्कृतिक प्रतीक रही है।

78. (A) नसीराबाद में विद्रोह -> बिथौड़ा का युद्ध -> चेलावास का युद्ध -> होम्स द्वारा आउवा पर अधिकार
राजस्थान में 1857 के संग्राम की घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले 28 मई 1857 को नसीराबाद छावनी में विद्रोह भड़का। तत्पश्चात् 8 सितंबर 1857 को आउवा के ठाकुर ने बिथौड़ा का युद्ध जीता। इसके बाद 18 सितंबर 1857 को चेलावास का प्रसिद्ध युद्ध हुआ। अंत में जनवरी 1858 में कर्नल होम्स की ब्रिटिश सेना ने आउवा किले पर अपना अधिकार कर लिया।

79. (C) आउवा किले के द्वार पर पॉलिटिकल एजेंट मैक मोसन का कटा हुआ सिर लटकाया जाना।
"ढोल बाजे, चंग बाजे, भलो बाजे बांकियो, एजेन्सी ने मार नै, माथौ धरणियाँ रांकियो" यह प्रसिद्ध राजस्थानी लोकगीत 1857 के चेलावास युद्ध की विजय गाथा का वर्णन करता है। इस लोकगीत में आउवा के देशप्रेमी क्रांतिकारियों द्वारा मारवाड़ के ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन मैक मोसन का वध करने तथा उसका कटा हुआ सिर आउवा किले के मुख्य द्वार पर लटकाए जाने की ऐतिहासिक घटना का जश्न मनाया जाता है।

80. (A) बांकीदास
मारवाड़ दरबार के महान विद्वान एवं प्रसिद्ध दरबारी कवि बांकीदास ने अपनी ओजस्वी काव्य रचनाओं के माध्यम से राजपूत शासकों द्वारा अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने की तीखी आलोचना की। उन्होंने "आयो अंग्रेज मुलक रै ऊपर" जैसे प्रसिद्ध छप्पयों के माध्यम से देशी राजाओं को ब्रिटिश दासता के प्रति आगाह किया। उनकी देशभक्तिपूर्ण रचनाओं ने 1857 से पूर्व ही राजस्थान में औपनिवेशिक विरोधी जनचेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

81. (B) मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)
1857 के महान संग्राम के प्रसिद्ध मराठा विद्रोही सेनापति तात्या तोपे ने उत्तर भारत से खदेड़े जाने के बाद राजस्थान में प्रवेश किया। वे अगस्त 1858 में पहली बार मेवाड़ क्षेत्र के मांडलगढ़ (वर्तमान भीलवाड़ा जिला) के रास्ते राजस्थान की सीमा में दाखिल हुए। तात्या तोपे का मुख्य उद्देश्य राजस्थान की रियासतों से वित्तीय संसाधन, रसद तथा सैन्य समर्थन प्राप्त करके ब्रिटिश सेना के विरुद्ध संघर्ष को पुनर्जीवित करना था।

82. (A) जनरल रॉबर्ट्स
अगस्त 1858 में राजस्थान आगमन के दौरान तात्या तोपे की विद्रोही सेना का सामना ब्रिटिश सेनापति जनरल रॉबर्ट्स की कमान वाली अंग्रेजी सेना से हुआ। यह ऐतिहासिक युद्ध भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तट पर स्थित कुवाड़ा नामक स्थान पर लड़ा गया। इस भीषण संग्राम में कड़ा मुकाबला करने के बावजूद तात्या तोपे की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा और उन्हें नाथद्वारा की ओर पीछे हटना पड़ा।

83. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
तात्या तोपे अपने सैन्य अभियानों के दौरान राजस्थान की प्रमुख रियासतों से वांछित सहयोग प्राप्त करने में सफल न हो सके। इसका मुख्य कारण यह था कि राजस्थान के शासक अंग्रेजों के साथ 1818 की सहायक संधियों में बंधे हुए थे। ब्रिटिश हुकूमत के दबाव में इन देशी राजाओं ने तात्या तोपे को शरण या सहायता देने के स्थान पर उनके विरुद्ध अपनी राज्य सेनाएँ अभियान हेतु मैदान में उतार दी थीं।

84. (B) मान सिंह नरुका
तात्या तोपे के निरंतर छापामार युद्ध से परेशान ब्रिटिश अधिकारी उन्हें पकड़ने के लिए प्रयासरत थे। नरवर जागीर के सामंत मान सिंह नरुका ने अंग्रेजों के बहकावे और लालच में आकर तात्या तोपे के साथ विश्वासघात किया। जब तात्या तोपे पारोन के घने जंगलों में विश्राम कर रहे थे, तब मान सिंह की सूचना पर ब्रिटिश सेना ने उन्हें अप्रैल 1859 में सोते हुए बंदी बना लिया था।

85. (B) 18 अप्रैल 1859
तात्या तोपे को बंदी बनाने के पश्चात् उन पर ब्रिटिश सैन्य अदालत द्वारा मुकदमा चलाया गया। अंततः 18 अप्रैल 1859 को मध्य प्रदेश के सिपरी (शिवपुरी) नामक स्थान पर सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई। तात्या तोपे की शहादत के साथ ही राजस्थान तथा मध्य भारत से जुड़े 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम सक्रिय एवं हिंसक अध्याय पूरी तरह से समाप्त हो गया।

NODIA

86. (C) अगस्त 1857
पाली जिले में स्थित एरिनपुरा छावनी में तैनात जोधपुर लीजन की देशी टुकड़ी ने अगस्त 1857 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बगावत की थी। 21 अगस्त 1857 को माउंट आबू में ए.जी.जी. के दल पर हमला करने के बाद विद्रोही सैनिक एरिनपुरा पहुँचे।

वहाँ उन्होंने छावनी को लूटा और "चलो दिल्ली, मारो फिरंगी" का उद्घोष करते हुए आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह से जा मिले।

87. (A) I, II, III
1857 के संग्राम के दौरान राजस्थान में मारे गए ब्रिटिश अधिकारियों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: सबसे पहले 28 मई 1857 को नसीराबाद विद्रोह के दौरान मेजर स्पॉटिसवुड मारे गए। इसके पश्चात् 18 सितंबर 1857 को चेलावास के युद्ध में मारवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट कैप्टन मैक मोसन की हत्या की गई। अंत में 15 अक्टूबर 1857 को कोटा जनविद्रोह के दौरान मेजर बर्टन मारे गए थे।

88. (B) 1858 का प्रारंभ से मध्य
1857 के अंत तक राजस्थान के कई क्षेत्र विद्रोह की चपेट में थे, परंतु 1858 के प्रारंभ से मध्य तक ब्रिटिश अधिकारियों ने पूरी तरह नियंत्रण पा लिया। जनवरी 1858 में आउवा के पतन तथा मार्च 1858 में जनरल रॉबर्ट्स द्वारा कोटा पर पुनः अधिकार करने के साथ ही अधिकांश विद्रोही ठिकानों को ध्वस्त कर दिया गया और पूरे राजपूताना में औपनिवेशिक व्यवस्था बहाल हो गई।

89. (B) बांगड़ म्यूजियम, पाली
1857 के आउवा विद्रोह की प्रतीक सुगाली माता की प्रसिद्ध काले पत्थर की प्रतिमा को अंग्रेज आउवा से हटाकर अजमेर ले गए थे। बाद में इसे बाँगड़ संग्रहालय पाली में स्थानांतरित कर दिया गया। 10 सिर और 54 हाथों वाली यह ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर वर्तमान में पाली जिले के बांगड़ म्यूजियम में सुरक्षित रखी गई है, जहाँ यह 1857 के क्रांतिकारियों के अदम्य साहस का स्मरण कराती है।

90. (C) कोटा
15 अक्टूबर 1857 को कोटा में हुए भीषण जनविद्रोह के दौरान क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट मेजर बर्टन तथा उनके दो पुत्रों की हत्या कर दी थी। विद्रोह का पूरी तरह दमन करने के पश्चात्, ब्रिटिश सरकार ने मेजर बर्टन तथा उनके बेटों की स्मृति में कोटा शहर स्थित ब्रिटिश रेजीडेंसी परिसर में एक विशेष स्मारक का निर्माण करवाया, जो आज भी उस ऐतिहासिक घटना का साक्षी है।

91. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
1857 के विद्रोह से जुड़े स्थलों का संबंध इस प्रकार है: नीमच से भागे अंग्रेज अधिकारियों को उदयपुर के जगमंदिर महल में शरण दी गई। सुगाली माता की प्रसिद्ध मूर्ति मूलतः आउवा किले में स्थापित थी। महान देशभक्त अमर चंद बांठिया को ग्वालियर में नीम के पेड़ से फाँसी दी गई थी। वहीं, तात्या तोपे और ब्रिटिश सेना के मध्य ऐतिहासिक कुवाड़ा का युद्ध भीलवाड़ा में लड़ा गया था।

92. (B) इसे 1858 में अंग्रेजों द्वारा बारूद से उड़ा दिया गया था, जिसके अवशेष और एक स्मारक ही शेष बचे हैं।
1857 के संग्राम में ठाकुर कुशाल सिंह के प्रतिरोध का गढ़ रहा आउवा किला कर्नल होम्स की ब्रिटिश सेना द्वारा भारी तोपबाज़ी का शिकार बना। जनवरी 1858 में किले पर अधिकार करने के बाद अंग्रेजों ने प्रतिशोध की भावना से इसके मुख्य प्राचीरों एवं भवनों को बारूद से उड़ाकर ध्वस्त कर दिया। वर्तमान में इस ऐतिहासिक स्थल पर केवल किले के भग्न अवशेष तथा एक शहीद स्मारक ही शेष बचे हैं।

93. (C) कोटा
राजस्थान में 1857 के क्रांति केंद्रों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कोटा में अंग्रेजों के विरुद्ध सबसे सुसंगठित, व्यापक तथा दीर्घकालिक नागरिक-सैन्य गठबंधन देखा गया। कोटा में केवल सिपाहियों ने ही नहीं, बल्कि राजकीय सेना की टुकड़ियों, आम नागरिकों तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने मिलकर लगभग छह महीनों तक शहर पर अपना स्वतंत्र शासन चलाया और अंग्रेजों को बाहर रखा।

94. (A) देवली
राजस्थान की देवली सैन्य छावनी में तैनात कोटा कंटिजेंट के देशी सिपाहियों ने जून 1857 में अपने आधार स्थल पर बिना किसी हिंसा या लूटपाट के छावनी छोड़ दी। जब 3 जून को नीमच में विद्रोह भड़का, तो देवली के सैनिक भी अपने धार्मिक एवं प्रांतीय साथियों का समर्थन करने हेतु देवली से निकलकर नीमच के विद्रोही सिपाहियों के दल में शामिल हो गए और दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

95. (A) 2, 3, 1, 4
विद्रोही नेताओं के आंदोलनों की शुरुआत का कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले 3 जून 1857 को मोहम्मद अली बेग ने नीमच में विद्रोह किया। इसके बाद अगस्त 1857 में आउवा के ठाकुर कुशाल सिंह ने बगावत की। तत्पश्चात् 15 अक्टूबर 1857 को लाला जयदयाल ने कोटा में जनविद्रोह का नेतृत्व किया। अंत में तात्या तोपे ने अगस्त 1858 में राजस्थान में प्रवेश करके अभियानों का संचालन किया।

96. (B) नारनौल में जनरल जेरार्ड द्वारा उन्हें रोक लिया गया और निर्णायक रूप से पराजित किया गया।
एरिनपुरा छावनी के विद्रोही सिपाहियों (जोधपुर लीजन) ने आउवा से दिल्ली की ओर कूच किया। रास्ते में हरियाणा के नारनौल (नसीबपुर) नामक स्थान पर ब्रिटिश सैन्य कमांडर जनरल जेरार्ड के नेतृत्व वाली सेना ने उन्हें घेर लिया। 16 नवंबर 1857 को हुए भीषण संग्राम में विद्रोही सैनिकों ने असाधारण वीरता दिखाई, परंतु ब्रिटिश तोपखाने के सामने वे पराजित हो गए और उनका दिल्ली पहुँचने का सपना अधूरा रह गया।

97. (C) 1841
दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ एवं पहाड़ी क्षेत्रों में जनजातीय असंतोष को नियंत्रित करने हेतु ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष 1841 में 'मेवाड़ भील कोर' (एम.बी.सी.) का गठन किया था। इसका मुख्य मुख्यालय उदयपुर के पास खेरवाड़ा में स्थापित किया गया था। इस विशिष्ट सैन्य बल ने 1857 के संग्राम के दौरान भील जनजातियों को शांत रखने तथा अंग्रेजों का नियंत्रण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

Downloaded from www.pdf.tube

98. (C) वे तटस्थ रहे या ब्रिटिश कमान के प्रति वफादार रहे, जिससे जनजातीय क्षेत्र शांत रहे।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में निवास करने वाले भील जनजातीय समूहों का दृष्टिकोण सामान्यतः शांतिपूर्ण एवं तटस्थ रहा। मेवाड़ भील कोर में कार्यरत भील सैनिक ब्रिटिश कमान के प्रति निष्ठावान बने रहे। फलस्वरुप, सम्पूर्ण जनजातीय क्षेत्र क्रांति की उथल-पुथल से दूर रहा, जिससे अंग्रेजों को दक्षिणी राजस्थान में अपनी प्रशासनिक व्यवस्था को स्थिर रखने में अत्यधिक सुगमता हुई।

99. (A) केवल I और III

1857 के विद्रोह में मेवाड़ भील कोर की भूमिका अंग्रेजों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई। एम.बी.सी. के भील सिपाहियों ने कोई विद्रोह नहीं किया और अपने ब्रिटिश अधिकारियों के प्रति पूर्ण वफादार रहे। इसका मुख्य कारण उन्हें नियमित वेतन मिलना तथा अवध के सिपाहियों से भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होना था। अंग्रेजों ने नीमच के विद्रोहियों को मेवाड़ में आगे बढ़ने से रोकने हेतु एम.बी.सी. का सफलता पूर्वक प्रयोग किया।

100. (C) ब्यावर और खेरवाड़ा

राजस्थान की ब्यावर तथा खेरवाड़ा ऐसी दो प्रमुख ब्रिटिश सैन्य छावनियाँ थीं, जहाँ क्रमशः मेर तथा भील जनजातीय सैनिक मुख्य रूप से तैनात थे। ब्यावर छावनी में मेरवाड़ा बटालियन तथा खेरवाड़ा में मेवाड़ भील कोर कार्यरत थी। इन दोनों छावनियों के स्थानीय सैनिकों ने 1857 के दौरान पूर्ण अनुशासन बनाए रखा और किसी भी प्रकार का विद्रोह नहीं होने दिया, जिससे ये क्षेत्र पूरी तरह शांत रहे।

NODIA

अध्याय 05

राजस्थान में आदिवासी किसान आंदोलन

1. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजस्थान की रियासतों में किसान असंतोष का प्राथमिक कारण कृषि संरचना में निहित था। निम्नलिखित में से कौन-सा 'लाटा-कुंता' प्रणाली का सही वर्णन करता है, जिसका किसानों द्वारा व्यापक विरोध किया गया था?
(A) निर्माण कार्यों के लिए जागीरदारों द्वारा कराया जाने वाला बिना पारिश्रमिक का जबरन श्रम (बेगार प्रणाली)
(B) वास्तविक तौल के बिना खड़ी या काटी गई फसल के आधार पर भू-राजस्व का अनुमान लगाने और वसूलने की एक विधि
(C) किसान की पुत्री के विवाह पर लगाया जाने वाला कर
(D) जब कोई नया जागीरदार गद्दी पर बैठता था, तो किसानों द्वारा दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क

2. बिजोलिया किसान आंदोलन, जिसे प्रायः भारत का सबसे लंबा अहिंसक किसान संघर्ष माना जाता है, किस रियासत के एक प्रमुख ठिकाने में हुआ था?
(A) मारवाड़
(B) जयपुर
(C) कोटा
(D) मेवाड़

3. बिजोलिया किसान आंदोलन में साधु सीताराम दास की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : वे बिजोलिया ठिकाने में एक पुस्तकालयाध्यक्ष थे, जिन्होंने आंदोलन के शुरुआती चरण में किसानों को सक्रिय रूप से संगठित किया था।
कथन II : उन्होंने 1916 में विजय सिंह पथिक को आंदोलन का नेतृत्व संभालने के लिए आमंत्रित किया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों सही नहीं हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

4. बिजोलिया ठिकाने में करों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राव कृष्ण सिंह ने 1903 में किसान की पुत्री के विवाह पर 5 रुपये का 'चंवरी' कर लगाया था।
II. राव पृथ्वी सिंह ने 1906 में जनता पर उत्तराधिकार कर के रूप में 'तलवार बंधाई' कर लगाया था।
III. किसानों ने मेवाड़ महाराणा को पारंपरिक नजराने के रूप में 'तलवार बंधाई' कर सहर्ष दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

5. विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। ब्रिटिश गिरफ्तारी से बचने के लिए अपना नाम बदलने से पूर्व उनका मूल नाम क्या था?
(A) भूप सिंह गुर्जर
(B) रामनारायण चौधरी
(C) नयनूराम शर्मा
(D) रूपजी पटेल

6. दुखद मानगढ़ जनसंहार, जिसे प्रायः राजस्थान का जलियांवाला बाग कहा जाता है, निम्नलिखित में से किस तिथि को हुआ था?
(A) 14 मई 1925
(B) 13 अप्रैल 1919
(C) 7 मार्च 1922
(D) 17 नवंबर 1913

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : गोविंद गुरु ने 1883 में संपसभा की स्थापना की थी।
कारण (R) : संपसभा का प्राथमिक उद्देश्य अंग्रेजों और मेवाड़ राज्य के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह शुरू करना था।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

8. बेगूं किसान आंदोलन बिजोलिया की सफलता से अत्यधिक प्रभावित था। बेगूं के किसानों की शिकायतों की जांच के लिए गठित आयोग का प्रमुख कौन-सा ब्रिटिश अधिकारी था?
(A) रॉबर्ट हॉलैंड
(B) जे.सी. ब्रुक
(C) जी.सी. ट्रेंच
(D) ए.जी.जी. बार्टन

Click Here to Buy book on Flipkart

9. महात्मा गांधी ने अपने समाचार पत्र 'यंग इंडिया' में राजस्थान के किस किसान जनसंहार को "डायरवाद का दोहरा वीभत्स स्वरुप" कहा था?
(A) गोविंदपुरा जनसंहार
(B) डाबी जनसंहार
(C) रोहेड़ा जनसंहार
(D) नीमूचाणा जनसंहार

10. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : नेता
P. नयनूराम शर्मा
Q. मोतीलाल तेजावत
R. यासीन खान
S. रामनारायण चौधरी
सूची II : सम्बद्ध आंदोलन/क्षेत्र
1. मेवाड़ भील (एकी) आंदोलन
2. बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन
3. बेगूं किसान आंदोलन
4. मेवात (अलवर-भरतपुर) किसान आंदोलन
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

11. एकी आंदोलन का उद्देश्य भीलों को एकजुट करना और जागीरदारों के खिलाफ उनकी शिकायतों का निवारण करना था। मोतीलाल तेजावत ने 1921 में आधिकारिक तौर पर इस आंदोलन का शुभारंभ किस स्थान से किया था?
(A) मानगढ़ पहाड़ी
(B) मातृकुंडिया
(C) झाड़ोल ठिकाना
(D) नीमड़ा गांव

12. राजस्थान में जनजाति और किसान आंदोलनों की निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. राजस्थान सेवा संघ का गठन
2. मानगढ़ जनसंहार
3. नीमूचाणा जनसंहार
4. संपसभा की स्थापना
निम्नलिखित में से कौन-सा इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) 4, 2, 1, 3
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 1, 4, 2, 3

13. मानगढ़ जनसंहार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) गोविंद गुरु को युद्ध के मैदान में ही तुरंत फांसी दे दी गई थी।
(B) भील गोविंद गुरु के नेतृत्व में एक शांतिपूर्ण धार्मिक मेले के लिए मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्र हुए थे।
(C) मेवाड़ भील कोर ने ब्रिटिश और रियासती सेना के साथ मिलकर पहाड़ी को घेर लिया और गोलियां चलाईं।
(D) इस त्रासदी में 1,500 से अधिक भीलों की जान चली गई।

14. जयपुर राज्य में मीना जनजाति असंतोष मुख्य रूप से एक भेदभावपूर्ण कानून के खिलाफ प्रतिक्रिया थी, जिसके तहत वयस्क मीना पुरुषों और महिलाओं को स्थानीय पुलिस स्टेशन में अपनी दैनिक उपस्थिति दर्ज कराना अनिवार्य था। इस अधिनियम का क्या नाम था?
(A) मीना प्रतिबंध अधिनियम
(B) राजपूताना वन अधिनियम
(C) आपराधिक जनजाति अधिनियम
(D) आवारागर्दी नियंत्रण अधिनियम

15. राजस्थान के किसान आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) रमा देवी - एकी आंदोलन के सक्रिय चरण के दौरान भील महिलाओं का नेतृत्व किया
(B) किशोरी देवी - बूंदी आंदोलन के दौरान विशाल महिला विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया
(C) नारायणी देवी वर्मा - सामाजिक जनजातीय सुधार के लिए संपसभा का गठन किया
(D) अंजना देवी चौधरी - बिजोलिया और बेगूं में सक्रिय भूमिका के लिए गिरफ्तार हुईं

16. मोतीलाल तेजावत और एकी आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तेजावत ओसवाल जैन समुदाय से थे और झाड़ोल ठिकाने में कामदार के रूप में कार्य करते थे।
II. उन्होंने मेवाड़ के महाराणा को "मेवाड़ पुकार" के नाम से जाना जाने वाला 21-सूत्रीय मांग पत्र प्रस्तुत किया।
III. महाराणा ने तुरंत सभी 21 मांगों को स्वीकार कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप आंदोलन का शांतिपूर्ण समापन हुआ।
IV. तेजावत का अहिंसक तरीकों में दृढ़ विश्वास था, हालांकि आंदोलन को समय-समय पर हिंसक राज्य दमन का सामना करना पड़ा।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I और IV

17. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प नानक जी भील की शहादत के संदर्भ का सही वर्णन करता है?
(A) वे बेगूं आंदोलन में गोविंदपुरा में हुई अंधाधुंध पुलिस गोलीबारी में मारे गए थे।
(B) डाबी में एक किसान सभा के दौरान देशभक्ति का ध्वज फहराते समय उन्हें गोली मार दी गई थी।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) मानगढ़ में मेवाड़ भील कोर के खिलाफ वीरतापूर्वक लड़ते हुए उनके प्राण चले गए थे।
(D) उन्हें राज्य पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था और एकी आंदोलन के दौरान उदयपुर की केंद्रीय जेल में उनकी मृत्यु हो गई थी।

18. 1931 में भरतपुर किसान आंदोलन को मुख्य रूप से भोजी लंबरदार के नेतृत्व में गति मिली। इस असंतोष का तात्कालिक कारण क्या था?
(A) जाट किसानों पर कठोर आपराधिक जनजाति अधिनियम का सख्त क्रियान्वयन
(B) पड़ोसी ब्रिटिश भारत में खाद्यान्न निर्यात करने पर राज्य द्वारा प्रतिबंध लगाना
(C) स्थानीय चरागाह भूमियों का विशेष शाही शिकारगाहों में जबरन परिवर्तन
(D) एक नए भू-राजस्व बंदोबस्त का क्रियान्वयन जिसने करों में भारी वृद्धि की

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : बिजोलिया किसान आंदोलन ने सफलतापूर्वक राष्ट्रीय ध्यान और समर्थन प्राप्त किया।
कारण (R) : विजय सिंह पथिक ने पूरे भारत में बिजोलिया के किसानों की दुर्दशा को उजागर करने के लिए 'प्रताप' (गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा संपादित) जैसे समाचार पत्रों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

20. राजस्थान के जनजाति आंदोलनों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज "मेवाड़ पुकार" को किस रूप में परिभाषित किया जाता है?
(A) राजनीतिक जागरूकता फैलाने के लिए माणिक्य लाल वर्मा द्वारा प्रकाशित एक क्रांतिकारी साप्ताहिक समाचार पत्र
(B) मेवाड़ राज्य का आधिकारिक शाही गजट जो स्थानीय आदिवासियों को एकी आंदोलन में शामिल न होने की चेतावनी देता था
(C) मोतीलाल तेजावत द्वारा तैयार किया गया 21-सूत्रीय मांग पत्र जिसमें भीलों की शिकायतों का समाधान प्रस्तुत था
(D) भगत आंदोलन के लिए गोविंद गुरु द्वारा संकलित प्रेरणादायक लोक गीतों का एक लोकप्रिय संग्रह

21. देशी रियासतों के राजनीतिक संघर्षों को व्यापक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ एकीकृत करने के लिए अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का गठन किया गया था। इसका पहला अधिवेशन किस वर्ष आयोजित किया गया था?
(A) 1919
(B) 1927
(C) 1931
(D) 1938

22. माणिक्य लाल वर्मा ने जन-जागरूकता और प्रेरक साहित्य के माध्यम से किसान आंदोलनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। निम्नलिखित में से कौन-सी कृति/गीत उनसे संबंधित नहीं है?
(A) पंछीड़ा गीत
(B) मेवाड़ का वर्तमान शासन
(C) अर्जी
(D) मीना पुराण

23. माणिक्य लाल वर्मा के सहयोगी बलवंत सिंह मेहता, मेवाड़ की राजनीतिक चेतना में गहराई से जुड़े हुए थे। उन्हें राजस्थान के इतिहास में किस रूप में प्रमुखता से याद किया जाता है?
(A) मेवाड़ भील कोर के कमांडर जिन्होंने आदिवासियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था
(B) मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष
(C) 'मेवाड़ पुकार' मांग पत्र के रचयिता
(D) मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री

24. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : शब्द
P. बेगार
Q. चंवरी
R. तलवार बंधाई
S. कामदार
सूची II : अर्थ
1. नए जागीरदार द्वारा दिया जाने वाला उत्तराधिकार कर
2. किसान की पुत्री के विवाह पर लगने वाला कर
3. बिना पारिश्रमिक के कराया जाने वाला जबरन श्रम
4. किसी ठिकाने का प्रबंधक या अधिकारी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

NODIA

25. बिजोलिया आंदोलन तीन स्पष्ट चरणों में आगे बढ़ा। निम्नलिखित में से कौन-सा नेता आंदोलन के अंतिम चरण (1927-1941) के नेतृत्व से सक्रिय रूप से नहीं जुड़ा था?
(A) माणिक्य लाल वर्मा
(B) जमनालाल बजाज
(C) हरिभाऊ उपाध्याय
(D) साधु सीताराम दास

26. भीलों के बीच गोविंद गुरु के भगत आंदोलन में एक गहरा सामाजिक सुधार पहलू था। गोविंद गुरु द्वारा अपने अनुयायियों के लिए निर्धारित मुख्य सिद्धांतों में से कौन-सा एक था?

(A) मांस, मदिरा के सेवन और चोरी करने की प्रथा का त्याग
(B) सभी हिंदू देवी-देवताओं और अनुष्ठानों का बहिष्कार
(C) गुजरात क्षेत्र में अनिवार्य प्रवास
(D) ब्रिटिश मिशनरियों द्वारा प्रदान की जाने वाली आधुनिक शिक्षा का बहिष्कार

27. बेगूं किसान आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह आंदोलन 1921 में भीलवाड़ा के मेनाल से शुरु हुआ था।
II. बेगूं के किसानों ने सरकारी अदालतों का बहिष्कार किया और अपनी समानांतर प्रशासनिक पंचायतें स्थापित कीं।
III. मेवाड़ के महाराणा ने बेगूं के ठाकुर और राजस्थान सेवा संघ के बीच हस्ताक्षरित 'बोल्शेविक समझौते' का स्वागत किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

28. रुपजी और धाकड़ (नांजी) पटेल राजस्थान के किसान आंदोलनों के सम्मानित शहीद हैं। उन्होंने किस घटना में अपने प्राणों की आहुति दी थी?
(A) नीमूचाणा गांव में पुलिस गोलीबारी
(B) 1923 में गोविंदपुरा गांव में ट्रेंच आयोग की गोलीबारी
(C) बूंदी में डाबी जनसंहार
(D) तलवार बंधाई विरोध के दौरान बिजोलिया में किसानों पर हमला

29. बिजोलिया किसान आंदोलन को इसके तीनों चरणों (प्रथम चरण से तीसरे चरण तक) में मार्गदर्शन देने वाले प्रमुख नेताओं के सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) साधु सीताराम दास → विजय सिंह पथिक → माणिक्य लाल वर्मा
(B) विजय सिंह पथिक → माणिक्य लाल वर्मा → साधु सीताराम दास
(C) माणिक्य लाल वर्मा → साधु सीताराम दास → विजय सिंह पथिक
(D) साधु सीताराम दास → मोतीलाल तेजावत → जमनालाल बजाज

30. अलवर किसान आंदोलन (1921) के शुरुआती कारणों में से एक कारण राज्य द्वारा एक विशिष्ट पशु को मारने पर लगाया गया प्रतिबंध था जो किसानों की फसलों को नष्ट कर रहा था। वह कौन-सा पशु था?
(A) नीलगाय
(B) मरुस्थलीय लोमड़ी
(C) जंगली सूअर
(D) काला हिरण (कृष्णमृग)

31. मीना समुदाय में सुधार करने और राज्य के दमनकारी कानूनों के खिलाफ उन्हें एकजुट करने के लिए 1944 में नीम का थाना में एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया था। किस प्रमुख संत ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की और बाद में 'मीना पुराण' का संपादन किया?
(A) स्वामी केशवानंद
(B) गोविंद गुरु
(C) संत मावजी
(D) मुनि मगन सागर

32. जयपुर राज्य में मीना जनजाति आंदोलन के संदर्भ में, समुदाय को राजनीतिक और सामाजिक रुप से संगठित करने के लिए मीना क्षत्रिय महासभा की स्थापना की गई थी। इसका गठन किस वर्ष किया गया था?
(A) 1924
(B) 1933
(C) 1942
(D) 1952

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : दक्षिणी राजस्थान में 19वीं शताब्दी के भील विद्रोह मुख्य रुप से ब्रिटिश प्रशासनिक नीतियों के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थे।
कारण (R) : अंग्रेजों ने भीलों के स्थानीय मदिरा (महुआ) बनाने के अधिकार पर प्रतिबंध लगाकर और उनके वन अधिकारों को सीमित करके उनके पारंपरिक सामाजिक-आर्थिक जीवन में हस्तक्षेप किया।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

34. नीमड़ा जनसंहार (1922) राजस्थान में जनजाति आंदोलनों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस घटना की सही पहचान करता है?
(A) मेवाड़ राज्य के सशस्त्र पुलिस बलों ने चंवरी कर का विरोध कर रहे शांतिपूर्ण किसानों पर गोलियां चलाईं।
(B) यह मीना समुदाय के उन सदस्यों पर राज्य की एक बड़ी कार्रवाई थी जिन्होंने पुलिस स्टेशनों में उपस्थिति दर्ज कराने से इनकार कर दिया था।
(C) यह जमींदार मीना और चौकीदार मीना के प्रतिद्वंद्वी गुटों के बीच एक हिंसक आंतरिक झड़प थी।
(D) कर्नल शटन के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने नीमड़ा में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में एकत्र हुए भीलों पर गोलियां चलाईं।

Click Here to Buy book on Amazon

35. राजस्थान में जनजाति/किसान नेताओं की विरासत और स्मरणोत्सव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत है?
(A) मानगढ़ धाम स्मारक - प्रतापगढ़
(B) गोविंद गुरु राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय - बांसवाड़ा
(C) विजय सिंह पथिक स्मारक - बिजोलिया
(D) शहीद नानक जी भील स्मारक - डाबी (बूंदी)

36. गोविंद गुरु और संपसभा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गोविंद गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से गहराई से प्रेरित थे।
II. भीलों के बीच सद्भाव और सामाजिक सुधार को बढ़ावा देने के लिए सिरोही में संपसभा की स्थापना की गई थी।
III. गोविंद गुरु ने भीलों को संयम और एकेश्वरवाद पर जोर देते हुए 'भगत' जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।
IV. उन्होंने 1900 से पहले ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य से पूरी तरह बाहर एक स्वतंत्र भील राज्य की स्थापना की मांग की।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और III
(D) केवल I, III और IV

37. बिजोलिया और बेगूं किसान आंदोलनों में अपनी सक्रिय भागीदारी के लिए गिरफ्तार होने और निर्वासित होने वाली राजस्थान की पहली महिला राजनीतिक कार्यकर्ता होने का गौरव निम्नलिखित में से किसे प्राप्त है?
(A) अंजना देवी चौधरी
(B) रतन शास्त्री
(C) नारायणी देवी वर्मा
(D) रमा देवी

38. राजस्थान सेवा संघ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : इसकी स्थापना 1919 में वर्धा में विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरि भाई किंकर द्वारा की गई थी।
कथन II : संघ का प्राथमिक उद्देश्य राजनीतिक चेतना जगाना और राजस्थान में किसान संघर्षों का समर्थन करना था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

39. बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन के दौरान, 2 अप्रैल 1923 को डाबी गांव में हुई दुखद गोलीबारी का आदेश निम्नलिखित में से किस राज्य पुलिस अधिकारी ने दिया था?
(A) जी.सी. ट्रेंच (B) इकराम हुसैन
(C) छज्जू सिंह (D) रॉबर्ट हॉलैंड

NODIA

40. राजस्थान में किसान और जनजाति आंदोलनों की तुलनात्मक प्रकृति का विश्लेषण करते समय, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन दोनों के बीच मौलिक अंतर को सबसे अच्छी तरह से रेखांकित करता है?
(A) जनजाति आंदोलन पूरी तरह से अहिंसक सामाजिक-धार्मिक संघर्ष थे, जबकि किसान आंदोलन शुरू से अंत तक व्यापक रूप से सशस्त्र विद्रोह पर निर्भर थे।
(B) शुरुआती किसान आंदोलनों के विपरीत, जनजाति आंदोलनों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से तत्काल वैचारिक और वित्तीय सहायता प्राप्त हुई।
(C) किसान आंदोलनों ने अत्यधिक करों और बेगार का विरोध किया, जबकि जनजाति आंदोलनों ने वन अधिकारों और सामाजिक पहचान पर खतरों से लड़ाई लड़ी।
(D) किसान आंदोलन बाहरी ब्रिटिश प्रशासनिक सुधारकों द्वारा संगठित और निर्देशित थे, जबकि जनजाति आंदोलनों का नेतृत्व स्थानीय जागीरदारों ने किया था।

41. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : आंदोलन
P. बेगूं किसान आंदोलन
Q. भील (भगत) आंदोलन
R. बूंदी किसान आंदोलन
S. अलवर किसान आंदोलन
सूची II : सम्बद्ध स्थान/घटना
1. नीमूचाणा जनसंहार
2. गोविंदपुरा गोलीबारी
3. मानगढ़ जनसंहार
4. डाबी जनसंहार
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

42. बिजोलिया आंदोलन के शुरुआती चरणों में, हरि भाई किंकर द्वारा किस संस्था की स्थापना की गई थी, जिसका उपयोग बाद में विजय सिंह पथिक ने ठिकाने के युवाओं को गुप्त रूप से शिक्षित और संगठित करने के लिए किया था?
(A) विद्या प्रचारिणी सभा
(B) राजस्थान सेवा संघ
(C) राजपूताना मध्य भारत सभा
(D) वीर भारत समाज

43. गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा कानपुर से प्रकाशित कौन-सा प्रमुख हिंदी समाचार पत्र बिजोलिया किसान आंदोलन को राष्ट्रीय सुर्खियों में लाने में सहायक था?
(A) तरुण राजस्थान
(B) प्रताप
(C) नवज्योति
(D) राजस्थान केसरी

44. भरतपुर किसान आंदोलन और राजनीतिक चेतना से जुड़े नेतृत्व के संदर्भ में बेमेल विकल्प की पहचान कीजिए:
(A) भोजी लंबरदार
(B) साधु सीताराम दास
(C) मास्टर आदित्येंद्र
(D) किशन लाल जोशी

45. मीना जनजाति आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आंदोलन का उद्देश्य जरायम पेशा कानून का उन्मूलन था।
II. मीना क्षत्रिय महासभा ने 1946 में बामनवास में एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया जहाँ मीना चौकीदारों ने विरोध स्वरूप अपने पदों से त्यागपत्र दे दिया।
III. जयपुर राज्य द्वारा 1946 में ही जरायम पेशा कानून को तुरंत और पूरी तरह से रद्द कर दिया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

46. बेगूं किसान आंदोलन के दौरान, मेवाड़ राज्य प्रशासन द्वारा "बोल्शेविक समझौता" शब्द का प्रयोग किया गया था। यह किससे संबंधित था?
(A) ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार और रूसी साम्राज्य के बीच हस्ताक्षरित एक अंतरराष्ट्रीय सीमा समझौता
(B) मोतीलाल तेजावत और मेवाड़ के शासक महाराणा के बीच सीधे हस्ताक्षरित एक गुप्त शांति संधि
(C) बेगूं के ठाकुर अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच एक समझौता संधि
(D) विजय सिंह पथिक और ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलैंड के बीच बातचीत से हुआ अंतिम राजनीतिक समझौता

47. राजस्थान में जनजाति विद्रोहों से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. गोविंद गुरु का जन्म
2. एकी आंदोलन के दौरान नीमड़ा जनसंहार
3. मानगढ़ जनसंहार
4. मातृकुंडिया में एकी आंदोलन का शुभारंभ
निम्नलिखित में से कौन-सा इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) 1, 3, 4, 2
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 3, 4, 1, 2

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : राजस्थान में शुरुआती किसान आंदोलनों ने बाद की राजनीतिक चेतना और प्रजामंडलों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
कारण (R) : किसान आंदोलनों ने जमीनी स्तर के नेताओं की एक पीढ़ी को प्रशिक्षित किया और रियासती प्रशासन के मानसिक भय को तोड़कर नागरिक स्वतंत्रता आंदोलनों के लिए एक आधार तैयार किया।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

49. एकी आंदोलन के प्रमुख नेता मोतीलाल तेजावत कई वर्षों तक पुलिस की गिरफ्त से बचते रहे। 1929 में मेवाड़ को सौंपे जाने से पहले पुलिस ने उन्हें आखिरकार किस राज्य में गिरफ्तार किया था?
(A) गुजरात
(B) ईडर
(C) बांसवाड़ा
(D) डूंगरपुर

50. निम्नलिखित में से कौन-सा नियम या उपदेश गोविंद गुरु द्वारा स्थापित संपसभा के अंतर्गत निर्धारित नहीं था?
(A) अनुयायियों को मदिरापान से दूर रहना चाहिए।
(B) अनुयायियों को आंतरिक एकता बनाए रखनी चाहिए और अपनी पंचायतों के माध्यम से विवादों को हल करना चाहिए।
(C) अनुयायियों को चोरी या डकैती नहीं करनी चाहिए।
(D) अनुयायियों को जातिगत पदानुक्रम और अस्पृश्यता का सख्ती से पालन करना चाहिए।

51. रियासती राजस्थान में कृषि कर प्रणाली के संदर्भ में, 'लाग-बाग' और 'बेगार' शब्द अक्सर मुख्य शिकायतों के रूप में सामने आते थे। 'बेगार' का तात्पर्य है:
(A) किसानों से कराया जाने वाला बिना पारिश्रमिक का जबरन श्रम
(B) शाही त्योहारों के दौरान सीधे शासक को दी जाने वाली पारंपरिक मौद्रिक भेंट
(C) सीमाओं के पार कृषि उपज के निर्यात पर लगाया जाने वाला भारी राज्य कर
(D) केवल मिट्टी की गुणवत्ता पर आधारित एक संशोधित भू-राजस्व बंदोबस्त प्रणाली

52. बिजोलिया आंदोलन के दौरान, जब ठिकाने द्वारा पारंपरिक संचार माध्यमों को अवरुद्ध कर दिया गया था, तब निम्नलिखित में से किसने आंदोलन के पत्राचार को ले जाने के लिए गुप्त संदेशवाहक के रूप में कार्य किया था?
(A) नानक जी भील
(B) गोविंद गुरु
(C) तुलसी भील
(D) ठाकरी पटेल

Downloaded from www.pdf.tube

53. मोतीलाल तेजावत द्वारा शुरू किए गए एकी आंदोलन को मेवाड़ के किस विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में सबसे अधिक समर्थन प्राप्त हुआ?
(A) भोमट
(B) ऊपरमाल
(C) मगरा
(D) शेखावाटी

54. माणिक्य लाल वर्मा और बलवंत सिंह मेहता की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. माणिक्य लाल वर्मा ने राज्य प्रशासन की आलोचना करते हुए प्रसिद्ध पुस्तक "मेवाड़ का वर्तमान शासन" लिखी थी।
II. बलवंत सिंह मेहता ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए उदयपुर में प्रताप सभा की स्थापना की थी।
III. दोनों नेता किसानों की पीड़ा और व्यापक लोकतांत्रिक प्रजामंडल आंदोलन के बीच की दूरी को पाटने में सहायक थे।
IV. बलवंत सिंह मेहता ने भारतीय संघ में मेवाड़ के विलय का कड़ा विरोध किया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I और III
(D) I, II, III और IV

55. रियासती शासकों और उनके शासनकाल के दौरान हुए किसान आंदोलनों से संबंधित गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) महाराणा फतेह सिंह - शुरुआती बिजोलिया किसान आंदोलन चरण
(B) महाराजा किशन सिंह - भरतपुर आंदोलन
(C) महाराजा जय सिंह - अलवर किसान आंदोलन असंतोष
(D) राव कृष्ण सिंह - बिजोलिया ठिकाने में चंवरी कर का लागू किया जाना

56. 1913 में मानगढ़ में भील विद्रोह का दमन मुख्य रूप से 1841 में अंग्रेजों द्वारा गठित किस सैन्य रेजिमेंट द्वारा किया गया था?
(A) शेखावाटी ब्रिगेड
(B) मेरवाड़ा बटालियन
(C) मेवाड़ भील कोर
(D) जोधपुर लीजन

57. गोविंद गुरु के भगत आंदोलन ने भीलों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को बदल दिया। 1881 में उदयपुर की किसकी यात्रा ने गोविंद गुरु की आध्यात्मिक और सुधारवादी विचारधारा को गहराई से प्रभावित किया?
(A) स्वामी विवेकानंद
(B) महात्मा गांधी
(C) राजा राम मोहन राय
(D) स्वामी दयानंद सरस्वती

58. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : पुस्तक/गीत
P. पंछीड़ा
Q. मेवाड़ पुकार
R. प्रताप (समाचार पत्र संपादक)
S. मीना पुराण
सूची II : सम्बद्ध नेता/लेखक
1. मोतीलाल तेजावत
2. गणेश शंकर विद्यार्थी
3. माणिक्य लाल वर्मा
4. मुनि मगन सागर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

NODIA

59. जब 1921 में बेगूं के किसानों ने अन्यायपूर्ण करों के खिलाफ आंदोलन शुरू करने का फैसला किया, तो वे नेतृत्व के लिए विजय सिंह पथिक के पास गए। पथिक ने बेगूं आंदोलन का सीधा नेतृत्व करने के लिए किसे नियुक्त किया?
(A) जमनालाल बजाज
(B) रामनारायण चौधरी
(C) हरिभाऊ उपाध्याय
(D) साधु सीताराम दास

60. राजस्थान के निम्नलिखित किसान आंदोलनों पर विचार कीजिए:
1. बिजोलिया किसान आंदोलन
2. बेगूं किसान आंदोलन
3. अलवर (नीमूचाणा) असंतोष
निम्नलिखित में से कौन-सा इनकी शुरुआत का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 1, 2

61. देशी रियासतों में किसानों के लामबंदी को अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की राजपूताना शाखा से संगठनात्मक समर्थन प्राप्त हुआ। इस राजपूताना इकाई का अध्यक्ष किसे चुना गया था?
(A) रामनारायण चौधरी
(B) विजय सिंह पथिक
(C) माणिक्य लाल वर्मा
(D) अमृतलाल पायक

62. 1903 में, बिजोलिया के राव कृष्ण सिंह ने 'चंवरी कर' लगाया। इस कर के तहत वसूल की जाने वाली राशि क्या थी?
(A) 1 रुपया
(B) 5 रुपये
(C) 11 रुपये
(D) 21 रुपये

63. मानगढ़ जनसंहार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह घटना ऐतिहासिक रूप से मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन घटित दर्ज की गई है।

II. उस समय के ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट, मेजर हैमिल्टन ने रक्तपात को रोकने के लिए सेना की तत्काल वापसी का आदेश दिया था।

III. आधुनिक इतिहासकार इसे "राजस्थान का जलियांवाला बाग" कहते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

64. गोविंदपुरा गांव की घटना, जहां किसानों पर गोलियां चलाई गईं जिसके परिणामस्वरूप रूपजी और नांजी पटेल की मृत्यु हो गई, किस महीने और वर्ष में हुई थी?

(A) मई 1925
(B) अप्रैल 1919
(C) जुलाई 1923
(D) नवंबर 1913

65. बूंदी (बरड़) किसान आंदोलन के साथ नयनूराम शर्मा के संबंध को निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही ढंग से उजागर करता है?

(A) वे बूंदी राज्य के दीवान थे जिन्होंने पूरे विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया था।
(B) उन्होंने राजस्थान सेवा संघ के नेता के रूप में आंदोलन का नेतृत्व किया था।
(C) उन्होंने बूंदी के किसानों की ओर से प्रसिद्ध बोल्शेविक समझौते का मसौदा तैयार किया था।
(D) उन्होंने बूंदी में तैनात मुख्य ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट की हत्या कर दी थी।

66. मीना समुदाय के नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई नेता और समाज सुधारक उनके आंदोलन से जुड़े थे। निम्नलिखित में से कौन-सा नेता मीना जनजाति आंदोलन से प्रमुख रूप से नहीं जुड़ा था?

(A) बंसीधर शर्मा
(B) ठक्कर बापा
(C) छोटूराम झारणावाल
(D) छज्जू सिंह

67. एकी आंदोलन शुरु करने और भीलों के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करने से पहले, मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ के किस ठिकाने में 'कामदार' (प्रबंधक) के रूप में कार्य किया था?

(A) झाड़ोल
(B) सलूंबर
(C) कोठारिया
(D) बिजोलिया

68. राजस्थान में किसान आंदोलनों (जैसे बिजोलिया/बेगूं) और जनजाति आंदोलनों (जैसे एकी/भगत) के बीच तुलनात्मक विश्लेषण करते समय, निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता जनजाति आंदोलनों में अधिक विशिष्ट रूप से प्रकट हुई थी?

(A) लिखित भू-राजस्व संहिताओं और औपचारिक भूमि बंदोबस्त अधिकारों की मांग
(B) राज्य द्वारा संचालित न्यायिक अदालतों और विद्यालयों का पूर्ण एवं संगठित बहिष्कार
(C) राजनीतिक मांगों के साथ सामाजिक-धार्मिक सुधार का एकीकरण
(D) व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रमुख राष्ट्रीय हिंदी समाचार पत्रों पर अत्यधिक निर्भरता

69. 1931 के भरतपुर किसान विद्रोह में, किसान वैश्विक आर्थिक मंदी से गंभीर रूप से प्रभावित हुए थे। करों में वृद्धि करने वाले संशोधित भूमि बंदोबस्त के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किसने किया था?

(A) भोजी लंबरदार
(B) गोकुलभाई भट्ट
(C) यासीन खान
(D) मास्टर भोलानाथ

70. अलवर और भरतपुर किसान आंदोलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. दोनों आंदोलन मुख्य रूप से कृषि प्रधान जाट और मेव आबादी वाले राज्यों में हुए थे।

II. अलवर-भरतपुर में मेव किसान आंदोलन का नेतृत्व यासीन खान और सैयद भीखा जैसे नेताओं ने किया था।

III. इन क्षेत्रों में कृषि असंतोष को कभी-कभी राज्य प्रशासनों की नीतियों के कारण सांप्रदायिक तनाव का रूप दे दिया गया था।

IV. आंदोलनों के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में दोनों राज्यों में 1930 तक जागीरदारी प्रथा का पूर्ण उन्मूलन देखा गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I और III
(D) I, II, III और IV

71. बिजोलिया आंदोलन के सबसे शुरुआती चरण (1897-1915) के दौरान, अपनी शिकायतों को आवाज देने के लिए खुद किसान समुदाय से स्थानीय नेता उभरे। साधु सीताराम दास के अलावा, निम्नलिखित में से कौन प्रमुख शुरुआती नेता थे?

(A) जमनालाल बजाज और हरिभाऊ उपाध्याय
(B) फतेहकरण चारण और ब्रह्मदेव
(C) नयनूराम शर्मा और रामनारायण चौधरी
(D) गोकुलभाई भट्ट और भोगीलाल पांड्या

72. भीलों के बीच भगत आंदोलन के प्रणेता गोविंद गुरु का जन्म किस समुदाय में हुआ था?

(A) भील (B) मीना
(C) बंजारा (D) राजपूत

Click Here to Buy book on Flipkart

73. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प "मेवाड़ पुकार" नामक दस्तावेज को सही रूप से परिभाषित करता है?
(A) बिजोलिया आंदोलन के अंत में किसानों और जागीरदारों के बीच हस्ताक्षरित शांति संधि
(B) राजनीतिक जागरुकता फैलाने के लिए माणिक्य लाल वर्मा द्वारा लिखित और व्यापक रूप से प्रसारित एक गुप्त क्रांतिकारी पर्चा
(C) पूरे भोमट क्षेत्र में सख्त मार्शल लॉ लागू करने वाली आधिकारिक राज्य घोषणा
(D) मोतीलाल तेजावत द्वारा मेवाड़ के महाराणा को प्रस्तुत 21-सूत्रीय मांग पत्र

74. एकी आंदोलन के दौरान, राज्य बलों द्वारा दिए गए आदेश पर हुए एक क्रूर जनसंहार में सिरोही क्षेत्र के निम्नलिखित में से किस गांव में अनेक जनजाति किसानों की मृत्यु हुई थी?
(A) पाल छितरिया (रोहेड़ा)
(B) डाबी
(C) गोविंदपुरा
(D) नीमूचाणा

75. महिला नेता का उस क्षेत्र/आंदोलन से सही सुमेलित युग्म पहचानिए जहाँ उन्होंने प्रमुख नेतृत्व का प्रदर्शन किया था:
(A) रतन शास्त्री - अलवर में मेव किसान आंदोलन
(B) किशोरी देवी - शेखावाटी आंदोलन
(C) कालीबाई - बिजोलिया किसान आंदोलन संघर्ष
(D) रमा देवी - अलवर किसान आंदोलन संघर्ष

76. बेगूं के वे ठाकुर कौन थे, जिन्होंने किसानों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की और राजस्थान सेवा संघ के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके बाद ब्रिटिश रेजिडेंट द्वारा उन्हें उदयपुर में निर्वासित कर दिया गया था?
(A) ठाकुर पृथ्वी सिंह
(B) ठाकुर अनूप सिंह
(C) ठाकुर केसरी सिंह
(D) ठाकुर कल्याण सिंह

77. अलवर राज्य में नीमूचाणा जनसंहार, जहाँ राज्य के सैनिकों ने भू-राजस्व में वृद्धि का विरोध कर रहे राजपूत किसानों की एक शांतिपूर्ण सभा पर गोलियां चलाई थीं, किस तिथि को हुआ था?
(A) 14 मई 1925
(B) 13 अप्रैल 1919
(C) 17 नवंबर 1913
(D) 2 अप्रैल 1923

78. बूंदी किसान आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : यह आंदोलन मुख्य रूप से बूंदी के बरड़ क्षेत्र में केंद्रित था।
कथन II : यह राजस्थान सेवा संघ के किसी भी संगठनात्मक समर्थन के बिना पूरी तरह से एक स्वतःस्फूर्त विद्रोह था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

79. राजस्थान में किसान और जनजाति आंदोलनों की विरासत और प्रभाव का आकलन करते समय, राज्य के राजनीतिक इतिहास में कौन-सा संकल्पनात्मक बदलाव सबसे स्पष्ट है?
(A) लोकप्रिय लोकतांत्रिक मांगों से वापस निरंकुश राजशाही की ओर एक राजनीतिक बदलाव
(B) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व से क्षेत्रीय राज्य आंदोलनों का पूर्ण अलगाव
(C) ब्रिटिश क्राउन द्वारा मान्यता प्राप्त स्वतंत्र जनजातीय गणराज्यों की सफल स्थापना
(D) स्थानीय कृषि संघर्षों से उत्तरदायी सरकार की मांगों की ओर एक बदलाव

NODIA

80. मानगढ़ जनसंहार का कारण बनने वाले सैन्य अभियान की कमान किस ब्रिटिश अधिकारी के पास थी?
(A) मेजर हैमिल्टन
(B) जनरल डायर
(C) कर्नल शटन (सुट्टन)
(D) ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलैंड

81. बिजोलिया आंदोलन के संदर्भ में, 1906 में लगाया गया 'तलवार बंधाई' कर मूल रूप से क्या था?
(A) सेना को नई तलवारों से लैस करने के लिए राज्य अधिकारियों द्वारा वसूला जाने वाला एक विशेष शुल्क
(B) नए जागीरदार द्वारा किसानों पर कर के रूप में स्थानांतरित किया गया एक उत्तराधिकार शुल्क
(C) हथियार बनाने वाले स्थानीय ग्रामीण लोहारों पर विशेष रूप से लगाया गया कर
(D) विद्रोह में भाग लेने वाले किसानों पर लगाया गया एक कठोर वित्तीय जुर्माना

82. किसान आंदोलनों में माणिक्य लाल वर्मा के संगठनात्मक कौशल ने मेवाड़ में संस्थागत राजनीति का मार्ग प्रशस्त किया। वे 1938 में गठित किस राजनीतिक संगठन के मुख्य सूत्रधार थे?
(A) मारवाड़ लोक परिषद
(B) राजपूताना मध्य भारत सभा
(C) राजस्थान सेवा संघ
(D) मेवाड़ प्रजामंडल

83. मेवाड़ में जनजाति और किसान हितों के सक्रिय समर्थक बलवंत सिंह मेहता भारत के संवैधानिक इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। वह क्या है?
(A) वे भारतीय संविधान के मूल प्रारूप पर हस्ताक्षर करने वाले राजस्थान के प्रथम व्यक्ति थे।
(B) उन्होंने कराची कांग्रेस अधिवेशन के दौरान आधिकारिक मूल अधिकार प्रस्ताव का मसौदा तैयार किया था।

(C) उन्होंने नवस्थापित राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया।
(D) उन्हें ब्रिटिश संसद में जनजाति समुदायों के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था।

84. अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद ने रियासती प्रजा की शिकायतों के लिए एक राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। 1927 में इसका स्थापना अधिवेशन कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) दिल्ली
(B) वर्धा
(C) बंबई
(D) अजमेर

85. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में गोविंद गुरु के साथ-साथ किस अन्य प्रमुख व्यक्तित्व ने भीलों के बीच धार्मिक और सामाजिक सुधारों को शुरु करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे जनजातीय जागरण की नींव पड़ी?
(A) सुरजी भगत
(B) ठक्कर बापा
(C) मामा बालेश्वर दयाल
(D) भोगीलाल पांड्या

86. जयपुर राज्य में मीना आंदोलन को जरायम पेशा कानून के खिलाफ एक एकजुट मोर्चा बनाने के लिए समुदाय के भीतर आंतरिक विभाजनों को सुलझाने की आवश्यकता थी। यह प्राथमिक विभाजन किनके बीच था?
(A) भील मीना और राजपूत मीना
(B) उजाले मीना और मैले मीना
(C) पूरबिया मीना और पश्चिमी मीना
(D) चौकीदार मीना और जमींदार मीना

87. भरतपुर किसान आंदोलन के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह स्थानीय साहूकारों के खिलाफ लड़ने वाले भूमिहीन मजदूरों का विशेष रूप से एक कृषि आंदोलन था।
(B) भू-राजस्व में अचानक हुई वृद्धि ने जाट महासभा के समर्थन से जाट और गुर्जर किसानों को एकजुट कर दिया।
(C) आंदोलन ने भरतपुर के शासक महाराजा को सफलतापूर्वक अपदस्थ कर दिया और 1925 में एक गणराज्य की स्थापना की।
(D) यह गोविंद गुरु के आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार उपदेशों से गहराई से प्रभावित था।

88. राजस्थान में किसान आंदोलनों की शुरुआती लामबंदी में, किसानों के बीच एकजुटता और बहिष्कार को लागू करने में कौन-सी पारंपरिक सामाजिक संस्था सबसे प्रभावी साबित हुई?
(A) क्षेत्रीय ठिकाना न्यायिक अदालतें
(B) ब्रिटिश रेजिडेंसी कार्यालय
(C) पारंपरिक जाति पंचायतें
(D) आधुनिक विश्वविद्यालय छात्र संघ

89. मानगढ़ जनसंहार के बाद, गोविंद गुरु को गिरफ्तार कर लिया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई, हालांकि बाद में उनकी सजा कम कर दी गई थी। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष निर्वासन में कहाँ बिताए, जहाँ उन्होंने अपना सामाजिक सुधार कार्य जारी रखा?
(A) झाड़ोल (मेवाड़)
(B) पुणे (महाराष्ट्र)
(C) मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)
(D) कंबोई (गुजरात)

90. एकी आंदोलन के तहत भील विद्रोह के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कारकों में से बेमेल विकल्प की पहचान कीजिए:
(A) 'भीलिस्तान' नामक एक स्वतंत्र संप्रभु राष्ट्र की मांग
(B) विभिन्न रियासती ठिकानों में स्थानीय जागीरदारों द्वारा बेगार (बिना पारिश्रमिक का काम) की जबरन वसूली
(C) वन उपज पर मनमाने कर और पारंपरिक पैतृक वन अधिकारों पर प्रतिबंध
(D) अकाल के समय राज्य के अधिकारियों द्वारा आक्रामक रूप से एकत्र की जाने वाली भू-राजस्व की उच्च दरें

NODIA

91. बेगूं किसान आंदोलन के दमन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) राज्य ने आंदोलन को कुचलने के लिए जी.सी. ट्रेंच के सीधे कमान के तहत सशस्त्र बलों को तैनात किया था।
(B) गोविंदपुरा गोलीबारी के बाद आंदोलन समाप्त हो गया और किसानों ने सभी करों का भुगतान कर दिया।
(C) किसान महिलाओं ने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और गंभीर पुलिस बर्बरता का सामना किया।
(D) रामनारायण चौधरी की गिरफ्तारी के बाद आंदोलन को बनाए रखने के लिए विजय सिंह पथिक गुप्त रूप से बेगूं पहुंचे।

92. बिजोलिया आंदोलन पर राष्ट्रीय आक्रोश के कारण, एक उच्च स्तरीय समिति ने 1922 में बिजोलिया का दौरा किया और 35 करों को समाप्त करके संकट को अस्थायी रूप से हल करने में सफलता प्राप्त की। इस समिति का प्रमुख कौन था?
(A) मेवाड़ के रेजिडेंट, कर्नल वॉल्टर
(B) ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलैंड
(C) भारत के वायसराय, लॉर्ड रीडिंग
(D) राजस्व आयुक्त जी.सी. ट्रेंच

93. बूंदी किसान आंदोलन को अक्सर 'बरड़' किसान आंदोलन भी कहा जाता है। राजस्थान के भौगोलिक संदर्भ में 'बरड़' क्या दर्शाता है?
(A) बूंदी का एक पथरीला, पहाड़ी और बीहड़ इलाका जहाँ खेती करना कठिन था
(B) चंबल नदी के पास दक्षिणी बूंदी में स्थित एक उपजाऊ नदी घाटी क्षेत्र
(C) विशेष रूप से शाही शिकार के लिए आरक्षित सघन, संरक्षित वन क्षेत्र
(D) बूंदी रियासत का केंद्रीय शहरी बाजार और वाणिज्यिक व्यापार केंद्र

94. अलवर किसान आंदोलन (नीमूचाणा) न केवल उच्च राजस्व मांगों के कारण, बल्कि महाराजा जय सिंह की विशिष्ट प्रशासनिक नीतियों के कारण भी भड़का था। निम्नलिखित में से किस नीति ने असंतोष को और बढ़ा दिया?
(A) स्थानीय युवाओं के ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल होने पर पूर्ण राज्य प्रतिबंध लगाना
(B) सभी उपजाऊ कृषि भूमि को व्यवस्थित रूप से चाय के बागानों में बदलने के लिए मजबूर करना
(C) राजपूत किसानों को राजस्व विशेषाधिकारों से वंचित करना और चराई कर बढ़ाना
(D) स्थानीय किसानों को निर्यात के लिए पूरी तरह से वाणिज्यिक नील की खेती करने के लिए बाध्य करना

95. भीलों के बीच भगत आंदोलन का प्राथमिक माध्यम संपसभा की स्थापना गोविंद गुरु ने 1883 में किस रियासत में की थी?
(A) बांसवाड़ा
(B) डूंगरपुर
(C) मेवाड़
(D) सिरोही

96. मानगढ़ पहाड़ी पर भीलों का वार्षिक जमावड़ा, जो 1913 के दुखद जनसंहार में समाप्त हुआ, पारंपरिक रूप से हिंदू कैलेंडर के किस महत्वपूर्ण दिन होता था?
(A) चैत्र नवरात्रि
(B) कार्तिक पूर्णिमा
(C) मार्गशीर्ष पूर्णिमा
(D) शरद पूर्णिमा

97. दमनकारी जरायम पेशा कानून (आपराधिक जनजाति अधिनियम) के खिलाफ मीना समुदाय का निरंतर संघर्ष आखिरकार तब सफल हुआ जब राजस्थान में इस कानून को किस वर्ष पूरी तरह से रद्द कर दिया गया?
(A) 1944
(B) 1947
(C) 1952
(D) 1956

98. जनजाति समुदायों के साथ मोतीलाल तेजावत के गहरे जुड़ाव ने उन्हें अत्यधिक सम्मान दिलाया। भीलों द्वारा उन्हें किस लोकप्रिय नाम से स्नेहपूर्वक संबोधित किया जाता था?
(A) लोकनायक (B) महामना
(C) देशरत्न (D) बावजी

99. 1920 के दशक से 1940 के दशक तक राजस्थान में राजनीतिक चेतना के संक्रमण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे उपयुक्त कथन है?
(A) कृषक संघर्षों ने राजनीतिक रूप से जागरूक जनता का निर्माण किया जो बाद में प्रजामंडलों से जुड़ी।
(B) किसान आंदोलन पूरी तरह विफल रहे, जिससे शहरी राजनीतिक नेताओं को सभी नागरिक गतिविधियों को छोड़ना पड़ा।
(C) जनजाति विद्रोहों ने दक्षिणी क्षेत्रों में संप्रभु राज्यों की स्थापना की, जिससे प्रजामंडल अप्रासंगिक हो गए।
(D) ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रशासन ने रियासती शासन को व्यवस्थित रूप से समाप्त करने के लिए किसान आंदोलन का समर्थन किया।

100. 1897 में शुरु हुआ बिजोलिया किसान आंदोलन आखिरकार 1941 में एक निर्णायक और स्थायी समझौते पर पहुंचा। मेवाड़ के राजस्व मंत्री कौन थे जिन्होंने माणिक्य लाल वर्मा जैसे नेताओं के साथ इस अंतिम समझौते पर बातचीत की थी?
(A) सर टी. विजयराघवाचार्य
(B) सुखदेव प्रसाद
(C) डॉ. मोहन सिंह मेहता
(D) जी.सी. ट्रेंच

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) वास्तविक तौल के बिना खड़ी या काटी गई फसल के आधार पर भू-राजस्व का अनुमान लगाने और वसूलने की एक विधि
राजस्थान की रियासती व्यवस्था में लाटा-कुंता भू-राजस्व निर्धारण की एक पारंपरिक पद्धति थी। इसमें लाटा का तात्पर्य खलिहान में काटी गई फसल के ढेर का अनुमान लगाने से था, जबकि कुंता का अर्थ खेत में खड़ी फसल के आधार पर उपज का आकलन करना था। यह अनुमान जागीरदारों तथा उनके अधिकारियों की स्वेच्छा पर निर्भर करता था। इस प्रक्रिया में बिना किसी वास्तविक तौल के कर निर्धारित किया जाता था, जिससे किसानों का निरंतर शोषण होता था।

2. (D) मेवाड़
बिजोलिया किसान आंदोलन भारत का सबसे लंबा अहिंसक किसान संघर्ष माना जाता है, जो मेवाड़ रियासत के अंतर्गत बिजोलिया ठिकाने में घटित हुआ था। यह आंदोलन 1897 में शुरु होकर 1941 तक लगभग 44 वर्षों तक अनवरत चला। बिजोलिया ठिकाने में धाकड़ जाति के किसान बहुसंख्या में निवास करते थे। जागीरदार द्वारा किसानों पर 84 प्रकार की मनमानी लाग-बाग, अत्यधिक भू-राजस्व और बेगार प्रथा थोपी गई थी। इन शोषणकारी नीतियों के विरोध में किसानों ने संगठित आंदोलन चलाया।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
बिजोलिया किसान आंदोलन के प्रथम चरण में साधु सीताराम दास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे बिजोलिया ठिकाने के पुस्तकालय में कार्यरत थे और उन्होंने किसानों को जागीरदारी शोषण के विरुद्ध संगठित किया। 1916 में उन्होंने इस आंदोलन को व्यापक तथा प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने के उद्देश्य से विजय सिंह पथिक को बिजोलिया आने का निमंत्रण दिया। विजय सिंह पथिक ने उनके आग्रह को स्वीकार करते हुए आंदोलन की कमान संभाली और इसे एक सशक्त पहचान दी।

4. (A) केवल I और II
बिजोलिया ठिकाने के राव कृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया, जिसके तहत प्रत्येक किसान को अपनी पुत्री के विवाह पर 5 रुपये ठिकाने को देने होते थे। इसके पश्चात 1906 में नए राव पृथ्वी सिंह ने गद्दी पर बैठते ही तलवार बंधाई नामक उत्तराधिकार कर जनता पर थोप दिया। किसानों ने इस अन्यायी कर का कड़ा विरोध किया तथा इसे देने से स्पष्ट इनकार कर दिया था।

5. (A) भूप सिंह गुर्जर
बिजोलिया किसान आंदोलन के महान नेता विजय सिंह पथिक का मूल नाम भूप सिंह गुर्जर था। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में हुआ था। क्रांतिकारी गतिविधियों और लाहौर षड्यंत्र केस में नाम आने के कारण वे राजस्थान आ गए थे। ब्रिटिश सरकार की गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्होंने अपना नाम बदलकर विजय सिंह पथिक रख लिया था। उन्होंने राजस्थान में किसान चेतना को जगाने और बिजोलिया आंदोलन को नई दिशा देने में मुख्य योगदान दिया।

6. (D) 17 नवंबर 1913
मानगढ़ जनसंहार 17 नवंबर 1913 को बांसवाड़ा जिले की मानगढ़ पहाड़ी पर घटित हुआ था। गोविंद गुरु के नेतृत्व में हजारों भील श्रद्धालु धार्मिक मेले और सभा के लिए एकत्र हुए थे। ब्रिटिश सेना, मेवाड़ भील कोर तथा रियासती बलों ने पहाड़ी को घेरकर निहत्थे आदिवासियों पर अंधाधुंध गोलियां चला दीं। इस दर्दनाक घटना में 1,500 से अधिक भील शहीद हो गए थे। इस ऐतिहासिक त्रासदी को राजस्थान का जलियांवाला बाग कहा जाता है।

NODIA

7. (C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
गोविंद गुरु ने 1883 में सिरोही में संपसभा की स्थापना की थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भील और गरासिया जनजातियों के मध्य सामाजिक-धार्मिक सुधार करना, उन्हें शराब और चोरी जैसी बुराइयों से दूर रखना तथा आपसी बंधुत्व को बढ़ावा देना था। संपसभा का उद्देश्य अंग्रेजों या मेवाड़ राज्य के खिलाफ कोई सशस्त्र विद्रोह शुरु करना नहीं था, बल्कि यह पूरी तरह से एक शांतिपूर्ण तथा सुधारवादी संगठन था। अतः अभिकथन सत्य है किंतु कारण असत्य है।

8. (C) जी.सी. ट्रेंच
बेगूं किसान आंदोलन में किसानों की अत्यधिक करों और बेगार से जुड़ी शिकायतों की जांच करने के लिए मेवाड़ राज्य द्वारा ट्रेंच आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग का प्रमुख ब्रिटिश अधिकारी जी.सी. ट्रेंच था। ट्रेंच ने किसानों की मांगों को पूरी तरह से खारिज कर दिया और उनके प्रति कठोर रवैया अपनाया। बाद में गोविंदपुरा में हुई किसान सभा पर ट्रेंच के आदेश से ही गोलियां चलाई गई थीं, जिसमें रुपजी और कृपाजी धाकड़ शहीद हुए थे।

9. (D) नीमूचाणा जनसंहार
14 मई 1925 को अलवर रियासत के नीमूचाणा गांव में भू-राजस्व वृद्धि के विरोध में एकत्र हुए किसानों पर राज्य पुलिस ने अंधाधुंध गोलाबारी की और पूरे गांव को आग लगा दी। इस बर्बर घटना में सैकड़ों किसान मारे गए। महात्मा गांधी ने अपने समाचार पत्र यंग इंडिया में इस घटना की उग्र निंदा करते हुए इसे जलियांवाला बाग हत्याकांड से भी अधिक भयानक बताया और इसे डायरवाद का दोहरा वीभत्स स्वरुप की संज्ञा दी थी।

10. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
नयनूराम शर्मा ने बूंदी के बरड़ क्षेत्र में किसान आंदोलन का नेतृत्व किया था। मोतीलाल तेजावत ने भीलों में चेतना जगाने के लिए 1921 में मेवाड़ भील क्षेत्र से एकी आंदोलन की शुरुआत की थी। यासीन खान ने मेवात क्षेत्र में अलवर-भरतपुर के मेव किसानों की मांगों को संगठित नेतृत्व प्रदान किया था। रामनारायण चौधरी ने बिजोलिया की प्रेरणा से बेगूं ठिकाने में किसानों के संघर्ष का मार्गदर्शन और कुशल संचालन किया था।

11. (B) मातृकुंडिया
मोतीलाल तेजावत ने 1921 में वैशाख पूर्णिमा के अवसर पर चित्तौड़गढ़ जिले के मातृकुंडिया नामक स्थान से ऐतिहासिक एकी आंदोलन का औपचारिक शुभारंभ किया था। मातृकुंडिया को राजस्थान का हरिद्वार भी कहा जाता है। तेजावत जी का मुख्य उद्देश्य भील और गरासिया आदिवासियों को जागीरदारों एवं शासकों के क्रूर उत्पीड़न, बेगार तथा अत्यधिक करों के खिलाफ एकजुट करना था। इस आंदोलन ने संपूर्ण भौमट और आसपास के जनजातीय क्षेत्रों में अभूतपूर्व राजनीतिक जागृति पैदा की।

12. (A) 4, 2, 1, 3
गोविंद गुरु द्वारा संपसभा की स्थापना 1883 में की गई थी। मानगढ़ पहाड़ी पर भीलों का प्रसिद्ध जनसंहार 1913 में हुआ था। विजय सिंह पथिक और सहयोगियों द्वारा वर्धा में राजस्थान सेवा संघ का गठन 1919 में किया गया था। अलवर रियासत में भीषण नीमूचाणा जनसंहार 1925 में घटित हुआ था। इस प्रकार इन ऐतिहासिक घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम 1883, 1913, 1919 तथा 1925 है।

13. (A) गोविंद गुरु को युद्ध के मैदान में ही तुरंत फांसी दे दी गई थी।
1913 के मानगढ़ जनसंहार के दौरान गोविंद गुरु को युद्ध के मैदान में फांसी नहीं दी गई थी, बल्कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। उन पर मुकदमा चलाकर पहले मृत्युदंड और बाद में उसे आजीवन कारावास में बदल दिया गया था। उनकी सजा कम करके उन्हें 1923 में जेल से रिहा किया गया, जिसके बाद उन्होंने अपना शेष जीवन गुजरात के कंबोई में समाज सेवा में बिताया। इसलिए उन्हें मैदान में फांसी देने का दावा पूरी तरह गलत है।

14. (C) आपराधिक जनजाति अधिनियम
जयपुर राज्य में मीना समुदाय पर 1930 में जरायम पेशा कानून लागू किया गया था, जो ब्रिटिश सरकार के 1871 के आपराधिक जनजाति अधिनियम पर आधारित था। इस भेदभावपूर्ण कानून के तहत 12 वर्ष से अधिक आयु के सभी मीना पुरुषों और महिलाओं के लिए निकटतम पुलिस स्टेशन में दैनिक उपस्थिति दर्ज कराना अनिवार्य बना दिया गया था। इस अपमानजनक व्यवस्था के कारण मीना समुदाय में तीव्र असंतोष फैला और उन्होंने इसके उन्मूलन हेतु संगठित आंदोलन चलाया।

15. (D) अंजना देवी चौधरी - बिजोलिया और बेगूं में सक्रिय भूमिका के लिए गिरफ्तार हुईं
अंजना देवी चौधरी स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधरी की पत्नी थीं। उन्होंने बिजोलिया और बेगूं किसान आंदोलनों में महिलाओं को संगठित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने साहसिक राजनीतिक कार्यों और रियासती दमन के विरोध के कारण वे राजस्थान की पहली महिला बनीं जिन्हें किसी रियासत द्वारा गिरफ्तार और निर्वासित किया गया था। अन्य विकल्प असंगत हैं क्योंकि संपसभा की स्थापना गोविंद गुरु ने की थी और किशोरी देवी का संबंध शेखावाटी आंदोलन से था।

16. (A) केवल I, II और IV
मोतीलाल तेजावत ओसवाल जैन परिवार से थे और झाड़ोल ठिकाने में कामदार के रूप में कार्य करते थे। उन्होंने मेवाड़ महाराणा को भीलों की 21 मांगों का पत्र प्रस्तुत किया, जिसे मेवाड़ पुकार कहा जाता है। तेजावत अहिंसक साधनों में विश्वास रखते थे, यद्यपि आंदोलन को भारी दमन का सामना करना पड़ा। महाराणा ने सभी 21 मांगों को स्वीकार नहीं किया था, केवल कुछ मांगों पर सहमति बनी थी। अतः तीसरा कथन गलत है।

17. (B) डाबी में एक किसान सभा के दौरान देशभक्ति का ध्वज फहराते समय उन्हें गोली मार दी गई थी।
नानक जी भील बूंदी किसान आंदोलन के एक अमर शहीद थे। 2 अप्रैल 1923 को डाबी गांव में आयोजित एक किसान सभा में पुलिस अधिकारी इकराम हुसैन के नेतृत्व में पुलिस ने गोलियां चला दीं। उस समय नानक जी भील हाथ में राष्ट्रीय ध्वज थामे हुए देशभक्ति का झंडा गीत गा रहे थे। वे सीने पर गोली लगने से घटनास्थल पर ही शहीद हो गए। उनकी शहादत की याद में माणिक्य लाल वर्मा ने अर्जी नामक प्रसिद्ध गीत रचा था।

18. (D) एक नए भू-राजस्व बंदोबस्त का क्रियान्वयन जिसने करों में भारी वृद्धि की
1931 में भरतपुर में किसान असंतोष का तात्कालिक कारण राज्य द्वारा लागू किया गया एक नया भू-राजस्व बंदोबस्त था। इस बंदोबस्त के तहत किसानों पर राजस्व कर की दरों में अत्यधिक वृद्धि कर दी गई थी, जबकि उस समय वैश्विक आर्थिक मंदी के कारण किसान पहले से ही भारी संकट का सामना कर रहे थे। इस अन्यायी कर वृद्धि के खिलाफ भोजी लंबरदार के नेतृत्व में जाट किसानों ने संगठित होकर तीव्र विरोध प्रदर्शन शुरू किया था।

19. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बिजोलिया किसान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में विजय सिंह पथिक का दूरदर्शी प्रयास निर्णायक रहा। पथिक जी ने कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा संपादित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र 'प्रताप' का उपयोग किया। 'प्रताप' में बिजोलिया के किसानों पर हो रहे जागीरदारी अत्याचारों और शोषण पर नियमित लेख प्रकाशित किए गए।

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY
PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

इससे यह स्थानीय मुद्दा पूरे देश में चर्चा का विषय बन गया और आंदोलन को राष्ट्रीय नेताओं का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ।

20. (C) मोतीलाल तेजावत द्वारा तैयार किया गया 21-सूत्रीय मांग पत्र जिसमें भीलों की शिकायतों का समाधान प्रस्तुत था
'मेवाड़ पुकार' 21 मांगों की एक ऐतिहासिक सूची थी, जिसे एकी आंदोलन के नेता मोतीलाल तेजावत द्वारा तैयार किया गया था। इसे 1921 में मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। इस मांग पत्र में भील और गरासिया किसानों पर थोपी गई बेगार, अत्यधिक भू-राजस्व, वनों पर अनुचित प्रतिबंधों और जागीरदारों के उत्पीड़न को समाप्त करने की प्रमुख मांगे शामिल थीं। यह दस्तावेज राजस्थान के जनजातीय आंदोलन का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

21. (B) 1927
अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना रियासतों की प्रजा के नागरिक अधिकारों और राजनीतिक संघर्षों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने के उद्देश्य से की गई थी। इसका प्रथम अधिवेशन दिसंबर 1927 में बंबई में आयोजित हुआ था। इस संगठन ने राजस्थान की विभिन्न रियासतों में चल रहे प्रजामंडल और किसान आंदोलनों को एक साझा मंच प्रदान किया तथा रियासती तानाशाही के विरुद्ध प्रजा की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती से उठाया।

22. (D) मीना पुराण
माणिक्य लाल वर्मा मेवाड़ के महान स्वतंत्रता सेनानी और लोक नेता थे। उन्होंने किसानों में चेतना जगाने के लिए 'पंछीड़ा' और 'अर्जी' जैसे अत्यंत लोकप्रिय प्रेरणादायक गीत लिखे थे तथा 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तिका प्रकाशित की थी। इसके विपरीत, 'मीना पुराण' ग्रन्थ की रचना जैन मुनि मगन सागर द्वारा की गई थी, जिसका उद्देश्य मीना समुदाय में सामाजिक सुधार करना और उन्हें उनके गौरवशाली इतिहास से परिचित कराना था।

23. (B) मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष
बलवंत सिंह मेहता राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और उदयपुर के अग्रणी नेता थे। अप्रैल 1938 में जब माणिक्य लाल वर्मा के प्रयासों से मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना की गई, तब बलवंत सिंह मेहता को इसका प्रथम अध्यक्ष चुना गया था। उन्होंने मेवाड़ में उत्तरदायी शासन की स्थापना और किसानों के अधिकारों के लिए कड़ा संघर्ष किया। इसके अतिरिक्त, वे भारत की संविधान सभा के सदस्य बनने वाले राजस्थान के पहले नागरिक भी थे।

24. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
'बेगार' का अर्थ किसानों से बिना कोई पारिश्रमिक दिए जबरन कराया जाने वाला श्रम था। 'चंवरी' कर बिजोलिया ठिकाने में किसान की पुत्री के विवाह पर वसूला जाने वाला कर था। 'तलवार बंधाई' नए जागीरदार के गद्दी पर बैठने पर प्रजा पर लगाया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क था। 'कामदार' किसी ठिकाने या जागीर के प्रशासनिक और वित्तीय मामलों की देखभाल करने वाला प्रमुख अधिकारी या प्रबंधक होता था।

25. (D) साधु सीताराम दास
बिजोलिया किसान आंदोलन के तीसरे और अंतिम चरण का समय 1927 से 1941 तक माना जाता है। जब विजय सिंह पथिक आंदोलन से अलग हो गए, तब नेतृत्व की जिम्मेदारी जमनालाल बजाज, हरिभाऊ उपाध्याय और माणिक्य लाल वर्मा जैसे नेताओं ने संभाली। साधु सीताराम दास ने केवल आंदोलन के प्रथम चरण (1897-1915) का नेतृत्व किया था और वे इस अंतिम चरण के दौरान मुख्य संगठनात्मक गतिविधियों से सक्रिय रूप से नहीं जुड़े हुए थे।

NODIA

26. (A) मांस, मदिरा के सेवन और चोरी करने की प्रथा का त्याग
गोविंद गुरु द्वारा चलाए गए भगत आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भील समुदाय का सामाजिक और नैतिक उत्थान करना था। उन्होंने अपने अनुयायियों को 'भगत' जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिसके तहत मांस तथा मदिरा के सेवन का पूर्ण त्याग करना, चोरी न करना, व्यसनों से दूर रहना और सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चलना अनिवार्य था। इस धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन ने आदिवासियों में स्वाभिमान और एकता की नई लहर पैदा की थी।

27. (A) केवल I और II
बेगूं किसान आंदोलन 1921 में भीलवाड़ा के मेनाल नामक स्थान से शुरु हुआ था। किसानों ने सरकारी अदालतों का पूर्ण बहिष्कार किया और अपनी पंचायतों के माध्यम से समानांतर शासन चलाया। जब बेगूं के ठाकुर अनूप सिंह ने राजस्थान सेवा संघ के साथ समझौता किया, तो मेवाड़ महाराणा ने इसे 'बोल्शेविक समझौता' कहकर खारिज कर दिया। महाराणा ने इसका स्वागत नहीं किया था, अतः तीसरा कथन असत्य है जबकि प्रथम दो कथन सही हैं।

28. (B) 1923 में गोविंदपुरा गांव में ट्रेंच आयोग की गोलीबारी
रूपजी धाकड़ और कृपाजी (नांजी) धाकड़ बेगूं किसान आंदोलन के अमर शहीद थे। 13 जुलाई 1923 को बेगूं ठिकाने के गोविंदपुरा गांव में किसानों की एक विशाल सभा आयोजित की गई थी। ट्रेंच आयोग के ब्रिटिश अधिकारी जी.सी. ट्रेंच के आदेश पर सशस्त्र सेना ने सभा स्थल को घेरकर गोलियां चला दीं। इस दर्दनाक घटना में रूपजी और कृपाजी धाकड़ बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हो गए थे।

29. (A) साधु सीताराम दास → विजय सिंह पथिक → माणिक्य लाल वर्मा
बिजोलिया किसान आंदोलन तीन मुख्य चरणों में संपन्न हुआ था। प्रथम चरण (1897-1915) का स्थानीय नेतृत्व साधु सीताराम दास ने किया। द्वितीय चरण (1916-1927) में विजय सिंह पथिक ने आंदोलन की कमान संभाली और इसे राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा दिया। तृतीय एवं अंतिम चरण (1927-1941) का कुशल संचालन माणिक्य लाल वर्मा, जमनालाल बजाज और हरिभाऊ उपाध्याय ने किया, जिसके बाद 1941 में किसानों की मांगे मान ली गईं।

30. (C) जंगली सूअर
1921 में अलवर रियासत में किसान असंतोष का एक प्रमुख तात्कालिक कारण जंगली सूअरों की समस्या थी। राज्य सरकार ने शाही शिकारगाहों के संरक्षण हेतु जंगली सूअरों को मारने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा रखा था। ये सूअर किसानों के खेतों में घुसकर खड़ी फसलों को भारी नुकसान पहुंचाते थे। जब किसानों को अपनी फसलों की रक्षा करने की अनुमति नहीं मिली, तो उन्होंने एकजुट होकर राज्य प्रशासन की इस अन्यायी नीति के खिलाफ आंदोलन शुरू किया।

31. (D) मुनि मगन सागर
1944 में सीकर जिले के नीम का थाना में मीना समुदाय का एक ऐतिहासिक महासम्मेलन आयोजित किया गया था। इस विशाल सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध जैन संत मुनि मगन सागर ने की थी। उन्होंने मीना जाति को संगठित करने और उनमें धार्मिक तथा सामाजिक चेतना जगाने के उद्देश्य से 'मीना पुराण' नामक ग्रंथ का संपादन किया था। इस सम्मेलन से मीना आंदोलन को नई ऊर्जा और संगठनात्मक दिशा प्राप्त हुई थी।

32. (B) 1933
जयपुर राज्य में मीना समुदाय को सामाजिक रूप से संगठित करने और दमनकारी जरायम पेशा कानून का विरोध करने के उद्देश्य से मई 1933 में 'मीना क्षत्रिय महासभा' की स्थापना की गई थी। इस संस्था ने मीना जाति के अधिकारों की रक्षा करने, उनमें शिक्षा का प्रसार करने और दैनिक पुलिस उपस्थिति की अपमानजनक व्यवस्था को समाप्त करवाने के लिए पूरे राज्य में जागरूकता अभियान चलाया तथा निरंतर जन आंदोलन संगठित किया।

33. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
19वीं शताब्दी में दक्षिणी राजस्थान के भील विद्रोह मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन की नई प्रशासनिक और आर्थिक नीतियों का परिणाम थे। अंग्रेजों ने भीलों की पारंपरिक स्वायत्तता में हस्तक्षेप किया, वनों से उपज एकत्र करने के पैतृक अधिकारों को सीमित कर दिया और महुआ की शराब बनाने पर आबकारी प्रतिबंध लगा दिए। इन प्रत्यक्ष हस्तक्षेपों के कारण भीलों की जीवनशैली और आजीविका पर संकट आ गया, जिससे उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया।

34. (D) कर्नल शटन के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने नीमड़ा में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में एकत्र हुए भीलों पर गोलियां चलाईं।
नीमड़ा जनसंहार 7 मार्च 1922 को सिरोही राज्य के नीमड़ा गांव में घटित हुआ था। मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में हजारों भील और गरासिया किसान अपनी मांगों पर विचार करने के लिए एकत्र हुए थे। कर्नल शटन की कमान वाली ब्रिटिश और रियासती सेना ने निहत्थे आदिवासियों पर अंधाधुंध गोलियां चला दीं। इस भीषण घटना में लगभग 1,200 आदिवासी शहीद हो गए थे। यह जनजातीय आंदोलन के इतिहास का एक अत्यंत दुखद अध्याय है।

35. (A) मानगढ़ धाम स्मारक - प्रतापगढ़
मानगढ़ धाम स्मारक प्रतापगढ़ में नहीं, बल्कि बांसवाड़ा जिले में आनंदपुरी के पास गुजरात सीमा पर स्थित है। यह वही ऐतिहासिक स्थल है जहां 1913 में गोविंद गुरु के समर्थकों पर ब्रिटिश सेना ने अंधाधुंध गोलियां चलाई थीं। अन्य सभी विकल्प सही हैं: गोविंद गुरु विश्वविद्यालय बांसवाड़ा में है, विजय सिंह पथिक का स्मारक बिजोलिया में तथा शहीद नानक जी भील का स्मारक डाबी (बूंदी) में स्थित है।

36. (C) केवल I, II और III
गोविंद गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने भीलों में सामाजिक एकता और नैतिक सुधार हेतु सिरोही में 1883 में संपसभा की स्थापना की तथा उन्हें भगत जीवनशैली अपनाने को प्रेरित किया। गोविंद गुरु का उद्देश्य आदिवासियों का सुधार करना था, उन्होंने कभी भी ब्रिटिश साम्राज्य से बाहर किसी स्वतंत्र भील राज्य की मांग नहीं रखी थी। अतः चतुर्थ कथन असत्य है, जबकि प्रथम तीनों कथन पूर्णतः सही हैं।

37. (A) अंजना देवी चौधरी
अंजना देवी चौधरी राजस्थान की पहली महिला राजनीतिक कार्यकर्ता थीं जिन्हें किसी रियासत द्वारा गिरफ्तार करके राज्य से निर्वासित किया गया था। उन्होंने बिजोलिया और बेगूं के किसान आंदोलनों में महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने और जागीरदारी शोषण के खिलाफ जागरूक करने में अग्रणी भूमिका निभाई। उनके साहसिक योगदान और त्याग ने राजस्थान में महिला राजनीतिक सक्रियता के लिए एक नई राह प्रदर्शित की थी।

38. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में महाराष्ट्र के वर्धा में विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरि भाई किंकर द्वारा की गई थी। बाद में 1920 में इसका मुख्यालय अजमेर स्थानांतरित कर दिया गया। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राजपूताना की रियासतों में प्रजा के नागरिक अधिकारों की रक्षा करना, जन-जागृति फैलाना और बिजोलिया तथा बेगूं जैसे किसान संघर्षों को कुशल नेतृत्व एवं संगठनात्मक समर्थन प्रदान करना था। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

39. (B) इकराम हुसैन
2 अप्रैल 1923 को बूंदी रियासत के डाबी गांव में किसानों की एक शांतिपूर्ण आम सभा चल रही थी। बूंदी राज्य के पुलिस अधीक्षक इकराम हुसैन ने अपनी पुलिस टुकड़ी के साथ सभा स्थल को घेर लिया और निहत्थे किसानों पर गोलियां चलाने का क्रूर आदेश दे दिया। इस गोलीबारी में देशभक्ति गीत गा रहे नानक जी भील और देवीलाल गुर्जर मौके पर ही शहीद हो गए थे।

40. (C) किसान आंदोलनों ने अत्यधिक करों और बेगार का विरोध किया, जबकि जनजाति आंदोलनों ने वन अधिकारों और सामाजिक पहचान पर खतरों से लड़ाई लड़ी।
राजस्थान में किसान आंदोलनों का प्राथमिक ध्यान जागीरदारों द्वारा थोपे गए अत्यधिक भू-राजस्व, 84 प्रकार की लाग-बाग और बिना पारिश्रमिक की बेगार प्रथा को समाप्त कराने पर था। दूसरी ओर, भील और गरासिया जनजातियों के आंदोलन मुख्य

Downloaded from www.pdf.tube

रूप से अंग्रेजों तथा रियासती प्रशासनों द्वारा उनके पारंपरिक वन अधिकारों पर प्रतिबंध लगाने, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान में हस्तक्षेप करने और महुआ शराब पर रोक जैसी नीतियों के विरुद्ध अपनी स्वायत्तता की रक्षा हेतु चलाए गए थे।

41. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
बेगूं किसान आंदोलन में गोविंदपुरा गांव में पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी एक प्रमुख घटना थी। भील (भगत) आंदोलन के दौरान मानगढ़ पहाड़ी पर दुखद जनसंहार हुआ था। बूंदी किसान आंदोलन के समय डाबी गांव में पुलिस गोलीबारी में नानक जी भील शहीद हुए थे। अलवर किसान आंदोलन के दौरान नीमूचाणा गांव में राज्य की सेना द्वारा क्रूर हत्याकांड को अंजाम दिया गया था।

42. (A) विद्या प्रचारिणी सभा
बिजोलिया में हरि भाई किंकर ने विद्या प्रचारिणी सभा की स्थापना की थी। जब विजय सिंह पथिक बिजोलिया आए, तो वे इस संस्था से जुड़ गए। पथिक जी ने विद्या प्रचारिणी सभा के अंतर्गत संचालित पुस्तकालय और पाठशाला का उपयोग गांव के युवाओं में राजनीतिक चेतना जगाने, उन्हें देशप्रेम की शिक्षा देने और जागीरदारी अन्याय के खिलाफ गुप्त रूप से संगठित करने के मुख्य केंद्र के रूप में किया था।

43. (B) प्रताप
गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा कानपुर से संपादित प्रसिद्ध हिंदी राष्ट्रीय समाचार पत्र 'प्रताप' ने बिजोलिया किसान आंदोलन को देश भर में चर्चित बनाने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया। विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया के किसानों पर हो रहे अत्याचारों की प्रामाणिक जानकारी और समाचार 'प्रताप' पत्र में नियमित रूप से प्रकाशित करवाए। इससे यह स्थानीय मुद्दा राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया और आंदोलन को भारी जनसमर्थन मिला।

44. (B) साधु सीताराम दास
भरतपुर के किसान आंदोलन और राजनीतिक चेतना से भोजी लंबरदार, मास्टर आदित्येंद्र और किशन लाल जोशी गहराई से जुड़े हुए थे। भोजी लंबरदार ने 1931 में भू-राजस्व वृद्धि के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया था। इसके विपरीत, साधु सीताराम दास का संबंध विशेष रूप से मेवाड़ रियासत के बिजोलिया किसान आंदोलन से था, भरतपुर राज्य के राजनीतिक घटनाक्रम या किसान संघर्षों से उनका कोई संबंध नहीं था।

45. (A) केवल I और II
मीना आंदोलन का मुख्य उद्देश्य जरायम पेशा कानून को रद्द कराना था। 1946 में बामनवास सम्मेलन के दौरान मीना चौकीदारों ने विरोध स्वरूप अपने पदों से सामूहिक त्यागपत्र दे दिया था। परंतु जयपुर राज्य ने इस कानून को 1946 में तुरंत पूरी तरह समाप्त नहीं किया था, केवल महिलाओं और बच्चों को राहत दी गई थी। यह कानून स्वतंत्रता के बाद 1952 में पूरी तरह रद्द हुआ। अतः तीसरा कथन असत्य है।

46. (C) बेगूं के ठाकुर अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच एक समझौता संधि
बेगूं किसान आंदोलन के दौरान 1922 में बेगूं के ठाकुर अनूप सिंह ने किसानों की मांगों की उपेक्षा करने के बजाय स्थिति की गंभीरता को समझा और राजस्थान सेवा संघ के प्रतिनिधियों के साथ एक शांति समझौता किया। इस समझौते में किसानों को करों में राहत दी गई। परंतु मेवाड़ महाराणा और ब्रिटिश प्रशासन ने इस समझौते को किसानों की जीत मानते हुए 'बोल्शेविक समझौता' की संज्ञा देकर निरस्त कर दिया था।

NODIA

47. (A) 1, 3, 4, 2
गोविंद गुरु का जन्म 1858 में डूंगरपुर जिले के बांसिया गांव में हुआ था। मानगढ़ पहाड़ी का भीषण जनसंहार 1913 में घटित हुआ था। मोतीलाल तेजावत द्वारा मातृकुंडिया से एकी आंदोलन की औपचारिक शुरुआत 1921 में की गई थी। एकी आंदोलन के दौरान सिरोही के नीमड़ा गांव में क्रूर जनसंहार 1922 में हुआ था। अतः इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम 1858, 1913, 1921 और 1922 है।

48. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में शुरुआती किसान आंदोलनों ने आम जनता में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का साहस भरा और उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक बनाया। इन आंदोलनों ने स्थानीय स्तर पर निडर नेताओं की एक नई पीढ़ी को जन्म दिया, जिसने जागीरदारों और रियासती शासकों के निरंकुश भय को समाप्त कर दिया। इसी मजबूत जनाधार और चेतना के परिणामस्वरूप 1930 के दशक में विभिन्न रियासतों में प्रजामंडलों की स्थापना संभव हो सकी थी।

49. (B) ईडर
एकी आंदोलन के सर्वमान्य नेता मोतीलाल तेजावत नीमड़ा जनसंहार के बाद भूमिगत हो गए थे और कई वर्षों तक ब्रिटिश तथा रियासती पुलिस को चकमा देते रहे। वे आदिवासियों के बीच रहकर उन्हें संगठित करते रहे। अंततः 1929 में महात्मा गांधी के परामर्श पर उन्होंने गुजरात की ईडर रियासत की सीमा में आत्मसमर्पण कर दिया, जिसके बाद ईडर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करके मेवाड़ राज्य के सुपुर्द कर दिया था।

50. (D) अनुयायियों को जातिगत पदानुक्रम और अस्पृश्यता का सख्ती से पालन करना चाहिए।
गोविंद गुरु द्वारा संस्थापित संपसभा का उद्देश्य जनजातीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों और सामाजिक भेदभाव का अंत करना था। उन्होंने अपने अनुयायियों को मदिरापान से दूर रहने, चोरी न करने, आपसी विवादों को अपनी पंचायतों से सुलझाने और आपस में समानता व बंधुत्व बनाए रखने का उपदेश दिया। संपसभा ने कभी भी जातिगत पदानुक्रम या अस्पृश्यता के पालन का समर्थन नहीं किया, बल्कि इसका सदैव विरोध किया था।

51. (A) किसानों से कराया जाने वाला बिना पारिश्रमिक का जबरन श्रम
रियासती राजस्थान की सामंती व्यवस्था में 'बेगार' एक अत्यधिक दमनकारी प्रथा थी। इसके अंतर्गत जागीरदारों, ठिकानेदारों और राज्य के अधिकारियों द्वारा स्थानीय किसानों, मजदूरों तथा हस्तशिल्पियों से बिना कोई मजदूरी या पारिश्रमिक दिए जबरन काम कराया जाता था। किसानों को अपने कृषि कार्यों को छोड़कर जागीरदार के निजी काम, निर्माण कार्य और सामान ढोने के लिए विवश होना पड़ता था, जो उनके आर्थिक शोषण का मुख्य कारण था।

52. (C) तुलसी भील
बिजोलिया किसान आंदोलन के दौरान जागीरदार ने ठिकाने में संदेशों के आवागमन और पत्राचार पर कड़ा प्रतिबंध लगा रखा था। इस दौरान तुलसी भील नामक एक समर्पित किसान कार्यकर्ता ने आंदोलन के संदेशवाहक के रूप में असाधारण भूमिका निभाई। वे दिन-रात पैदल चलकर दुर्गम रास्तों से होते हुए आंदोलन के गुप्त पत्र, निर्देश और समाचार विजय सिंह पथिक तथा अन्य नेताओं तक बिना पकड़े गए सफलतापूर्वक पहुंचाते थे।

53. (A) भोमट
मोतीलाल तेजावत द्वारा संचालित एकी आंदोलन को सबसे व्यापक जनसमर्थन और मजबूती मेवाड़ के 'भौमट' क्षेत्र में प्राप्त हुई थी। भौमट एक दुर्गम पहाड़ी और वनाच्छादित जनजातीय बहुल इलाका था, जहाँ मुख्य रूप से भील और गरासिया आबादी निवास करती थी। इस क्षेत्र के आदिवासियों ने तेजावत जी के आह्वान पर एकजुट होकर जागीरदारों के शोषण, अत्यधिक करों और बेगार प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक अहिंसक संघर्ष चलाया था।

54. (A) केवल I, II और III
माणिक्य लाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तिका लिखकर राज्य के कुशासन को उजागर किया। बलवंत सिंह मेहता ने उदयपुर में 'प्रताप सभा' की स्थापना की। दोनों नेताओं ने किसान आंदोलनों को लोकतांत्रिक प्रजामंडल से जोड़ा। बलवंत सिंह मेहता ने भारतीय संघ में मेवाड़ के विलय का विरोध नहीं किया, बल्कि वे भारत की संविधान सभा के सदस्य थे और विलय के समर्थक थे। अतः चौथा कथन असत्य है।

55. (B) महाराजा किशन सिंह - भरतपुर आंदोलन
1931 में जब भरतपुर में भू-राजस्व वृद्धि के विरुद्ध व्यापक किसान आंदोलन शुरू हुआ, उस समय भरतपुर के शासक महाराजा किशन सिंह नहीं थे। महाराजा किशन सिंह को ब्रिटिश सरकार द्वारा 1928 में ही गद्दी से हटा दिया गया था और राज्य का प्रशासन एक ब्रिटिश प्रशासक (नंबरदार) के अधीन चला गया था। इसलिए महाराजा किशन सिंह को 1931 के भरतपुर किसान असंतोष से जोड़ना ऐतिहासिक रूप से गलत है।

56. (C) मेवाड़ भील कोर
17 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्र हुए शांतिपूर्ण भील श्रद्धालुओं पर दमनकारी कार्रवाई करने में 'मेवाड़ भील कोर' की मुख्य भूमिका थी। इस सैन्य बल का गठन अंग्रेजों द्वारा 1841 में मेवाड़ के जनजातीय क्षेत्रों में नियंत्रण स्थापित करने हेतु किया गया था। मानगढ़ में मेवाड़ भील कोर ने ब्रिटिश भारतीय सेना की अन्य टुकड़ियों के साथ मिलकर पहाड़ी को घेरा और असहाय आदिवासियों पर घातक गोलियां चलाई थीं।

57. (D) स्वामी दयानंद सरस्वती
आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1881 में उदयपुर की यात्रा की थी। उनकी इस यात्रा और ओजस्वी विचारों का गोविंद गुरु के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। स्वामी जी के संपर्क में आने के बाद गोविंद गुरु ने भील समुदाय के उत्थान हेतु सामाजिक और धार्मिक सुधारों का मार्ग चुना। उन्होंने दयानंद सरस्वती के उपदेशों से प्रेरित होकर ही स्वदेशी, नशामुक्ति और एकेश्वरवाद का संदेश आदिवासियों के बीच फैलाया।

58. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
'पंछीड़ा' लोकगीत की रचना माणिक्य लाल वर्मा ने किसानों में जोश भरने हेतु की थी। 'मेवाड़ पुकार' 21-सूत्रीय मांग पत्र मोतीलाल तेजावत द्वारा तैयार किया गया था। 'प्रताप' समाचार पत्र का संपादन गणेश शंकर विद्यार्थी ने कानपुर से किया था। 'मीना पुराण' ग्रन्थ की रचना मुनि मगन सागर द्वारा मीना समुदाय के इतिहास और सामाजिक सुधारों पर मार्गदर्शन करने हेतु की गई थी।

59. (B) रामनारायण चौधरी
1921 में जब बेगूं ठिकाने के किसानों ने अत्यधिक लाग-बाग और बेगार के खिलाफ आंदोलन करने का निर्णय लिया, तो वे मार्गदर्शन हेतु बिजोलिया में विजय सिंह पथिक से मिले। पथिक जी ने स्वयं बिजोलिया में व्यस्त होने के कारण अपने योग्य सहयोगी और राजस्थान सेवा संघ के प्रमुख कार्यकर्ता रामनारायण चौधरी को बेगूं किसान आंदोलन का सीधा नेतृत्व और मार्गदर्शन करने का उत्तरदायित्व सौंपा था।

60. (A) 1, 2, 3
बिजोलिया किसान आंदोलन की शुरुआत 1897 में हुई थी, जो राजस्थान का सबसे पहला संगठित किसान संघर्ष था। बेगूं किसान आंदोलन बिजोलिया की प्रेरणा से 1921 में मेनाल से प्रारंभ हुआ था। अलवर रियासत के नीमूचाणा में किसानों का संगठित असंतोष और आंदोलन 1924-1925 के दौरान उभरा था। इस प्रकार इन आंदोलनों की शुरुआत का सही कालानुक्रमिक क्रम 1897, 1921 तथा 1924-1925 है।

61. (A) रामनारायण चौधरी
अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना के बाद रियासतों में प्रजा के अधिकारों को उठाने के लिए इसकी प्रांतीय इकाइयां गठित की गईं। इसकी राजपूताना प्रांतीय शाखा के अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधरी को चुना गया था। उन्होंने राजस्थान की विभिन्न रियासतों में किसानों और आम जनता पर हो रहे सामंती अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई और प्रजामंडल आंदोलनों को मजबूत दिशा प्रदान की।

Click Here to Buy book on Flipkart

62. (B) 5 रुपये
1903 में बिजोलिया ठिकाने के शासक राव कृष्ण सिंह ने किसानों पर 'चंवरी कर' नामक एक नया अनुचित कर लागू किया था। इस कर के नियमानुसार ठिकाने के प्रत्येक किसान को अपनी बेटी के विवाह के अवसर पर ठिकाने के कोष में 5 रुपये की राशि जमा करानी पड़ती थी। किसानों ने इस अपमानजनक कर का सामूहिक बहिष्कार किया और दो वर्षों तक अपनी बेटियों का विवाह नहीं किया था।

63. (C) केवल I और III
मानगढ़ पहाड़ी पर भीलों का विशाल मेला मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन आयोजित हुआ था और इतिहासकार इस बर्बर घटना को राजस्थान का जलियांवाला बाग कहते हैं। उस समय ब्रिटिश अधिकारियों ने सेना को वापस नहीं बुलाया था, बल्कि निहत्थे आदिवासियों पर क्रूरतापूर्वक गोलियां चलाने का आदेश दिया था। अतः दूसरा कथन असत्य है, जबकि प्रथम और तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह सही हैं।

64. (C) जुलाई 1923
बेगूं किसान आंदोलन के दौरान गोविंदपुरा गांव में घटी दुखद घटना 13 जुलाई 1923 को हुई थी। ट्रेंच आयोग के अनुचित रवैये का विरोध करने के लिए गोविंदपुरा में किसानों का एक बड़ा सम्मेलन आयोजित किया गया था। ब्रिटिश अधिकारी ट्रेंच ने सेना को सभा पर गोलियां चलाने का हुक्म दिया, जिसमें रूपजी और कृपाजी धाकड़ शहीद हो गए थे। यह घटना जुलाई 1923 की एक प्रमुख ऐतिहासिक त्रासदी है।

65. (B) उन्होंने राजस्थान सेवा संघ के नेता के रूप में आंदोलन का नेतृत्व किया था।
पंडित नयनूराम शर्मा राजस्थान सेवा संघ के एक निष्ठावान और सक्रिय कार्यकर्ता थे। जब बूंदी (बरड़) क्षेत्र के किसानों ने अत्यधिक करों और बेगार के खिलाफ आवाज उठाई, तो नयनूराम शर्मा ने राजस्थान सेवा संघ के प्रतिनिधि के रूप में बूंदी किसान आंदोलन का कुशल संगठनात्मक नेतृत्व संभाला। उन्होंने किसानों को संगठित किया, उनकी सभाएं आयोजित कीं और रियासती प्रशासन के दमन के सामने डटे रहे।

66. (D) छज्जू सिंह
मीना जनजाति आंदोलन में बंसीधर शर्मा, ठक्कर बापा और छोटूराम झारणावाल जैसे समाज सुधारकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसके विपरीत, छज्जू सिंह अलवर रियासत का एक कुख्यात पुलिस अधिकारी था। उसे नीमूचाणा जनसंहार में किसानों पर गोलियां चलवाने की क्रूर भूमिका के लिए जाना जाता है, जिसके कारण उसे 'राजस्थान का जनरल डायर' भी कहा गया था। उसका मीना आंदोलन से कोई संबंध नहीं था।

67. (A) झाड़ोल
जनजातीय सुधारों और एकी आंदोलन में कूदने से पूर्व मोतीलाल तेजावत मेवाड़ रियासत के अंतर्गत 'झाड़ोल' ठिकाने में एक कर्मचारी यानी कामदार (प्रबंधक) के रूप में कार्य करते थे। झाड़ोल में काम करते हुए उन्होंने पास से देखा कि जागीरदार किस प्रकार गरीब भील और गरासिया आदिवासियों का मानसिक व आर्थिक शोषण करते थे। इस अन्याय से द्रवित होकर उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और आदिवासियों के अधिकारों के लिए संघर्ष शुरू किया।

68. (C) राजनीतिक मांगों के साथ सामाजिक-धार्मिक सुधार का एकीकरण
राजस्थान में भील और गरासिया जनजातियों द्वारा चलाए गए आंदोलन (जैसे भगत आंदोलन और एकी आंदोलन) केवल भू-राजस्व या करों तक सीमित नहीं थे। इनमें राजनीतिक तथा आर्थिक मांगों के साथ-साथ गहन सामाजिक और धार्मिक सुधारों का सुंदर एकीकरण देखने को मिला। गोविंद गुरु और तेजावत जी ने आदिवासियों को मदिरा त्यागने, कुरीतियां समाप्त करने और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दी, जो सामान्य किसान आंदोलनों की तुलना में एक विशिष्ट लक्षण था।

69. (A) भोजी लंबरदार
1931 में भरतपुर रियासत में जब नए भू-राजस्व बंदोबस्त के तहत करों में भारी वृद्धि की गई, तो किसानों का गुस्सा फूट पड़ा। इस व्यापक किसान असंतोष का नेतृत्व भोजी लंबरदार ने किया था। उन्होंने जाट और अन्य कृषक जातियों को संगठित करके सरकार के अन्यायी फैसले के खिलाफ विशाल आंदोलन चलाया। उनके उग्र भाषणों और प्रभाव के कारण रियासती प्रशासन ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

70. (A) केवल I, II और III
अलवर और भरतपुर में मुख्य रूप से जाट और मेव किसान आबादी निवास करती थी, जहाँ यासीन खान जैसे नेताओं ने मेव किसानों का नेतृत्व किया। रियासती नीतियों के कारण इस असंतोष ने कभी-कभी सांप्रदायिक रूप भी लिया। हालांकि, इन आंदोलनों से 1930 तक जागीरदारी प्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। जागीरदारी उन्मूलन स्वतंत्रता के बाद संभव हुआ। अतः चतुर्थ कथन गलत है, जबकि प्रथम तीन सही हैं।

71. (B) फतेहकरण चारण और ब्रह्मदेव
बिजोलिया किसान आंदोलन के प्रारंभिक चरण (1897-1915) में जब किसानों ने जागीरदार के शोषण के खिलाफ अपनी आवाज उठाई, तो स्थानीय स्तर पर नेतृत्व उभरा। साधु सीताराम दास के साथ फतेहकरण चारण और ब्रह्मदेव ने किसानों को जागृत और संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने ठिकाने के जुल्मों के खिलाफ आवेदन तैयार किए और मेवाड़ महाराणा तक किसानों की व्यथा पहुंचाने में मुख्य सहयोग दिया था।

72. (C) बंजारा
भीलों में जागृति फैलाने वाले महान सुधारक गोविंद गुरु का जन्म एक बंजारा (घुमंतू व्यापारिक जाति) परिवार में हुआ था। उनका जन्म 20 दिसंबर 1858 को डूंगरपुर रियासत के बांसिया (वेडसा) गांव में हुआ था। यद्यपि वे जन्म से बंजारा समुदाय के थे, परंतु उन्होंने अपना पूरा जीवन दक्षिणी राजस्थान के उत्पीडित भील और गरासिया आदिवासियों के सामाजिक, धार्मिक तथा नैतिक उत्थान के लिए समर्पित कर दिया था।

Downloaded from www.pdf.tube

73. (D) मोतीलाल तेजावत द्वारा मेवाड़ के महाराणा को प्रस्तुत 21-सूत्रीय मांग पत्र
'मेवाड़ पुकार' ऐतिहासिक रूप से वह प्रसिद्ध 21-सूत्रीय मांग पत्र है जिसे एकी आंदोलन के जनक मोतीलाल तेजावत ने 1921 में मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह के समक्ष प्रस्तुत किया था। इस मांग पत्र में भीलों और किसानों पर लगे अन्यायी करों, बेगार प्रथा, वन संसाधनों के उपयोग पर प्रतिबंधों तथा जागीरदारी जुल्मों को तुरंत समाप्त करने की पुरजोर मांग की गई थी।

74. (A) पाल छितरिया (रोहेड़ा)
एकी आंदोलन के विस्तार के दौरान, सिरोही रियासत के रोहेड़ा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले 'पाल छितरिया' गांव में राज्य और ब्रिटिश सेना ने एकत्रित जनजातीय किसानों पर भयानक गोलीबारी की थी। इस क्रूर घटना में अनेक निहत्थे भील और गरासिया किसान मारे गए थे। नीमड़ा के बाद पाल छितरिया जनसंहार सिरोही क्षेत्र में आदिवासियों के दमन की एक और अत्यंत दुखद घटना मानी जाती है।

75. (B) किशोरी देवी - शेखावाटी आंदोलन
किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी हरलाल सिंह की पत्नी थीं। उन्होंने शेखावाटी के कटराथल में 1934 में आयोजित एक विशाल महिला सम्मेलन का ऐतिहासिक नेतृत्व किया था, जिसमें जागीरदारी अत्याचारों के खिलाफ लगभग 10,000 किसान महिलाओं ने भाग लिया था। यह राजस्थान के इतिहास में महिलाओं का सबसे बड़ा संगठित विरोध प्रदर्शन था। अतः किशोरी देवी का शेखावाटी आंदोलन से सुमेलित युग्म पूरी तरह सही है।

76. (B) ठाकुर अनूप सिंह
बेगूं ठिकाने के ठाकुर अनूप सिंह ने किसानों के कष्टों को समझते हुए 1922 में राजस्थान सेवा संघ के माध्यम से किसानों के साथ एक न्यायपूर्ण समझौता किया। परंतु मेवाड़ के ब्रिटिश रेजिडेंट और महाराणा ने इस समझौते को स्वीकार नहीं किया और इसे बोल्शेविक करार दिया। इसके पश्चात ब्रिटिश अधिकारियों ने अनूप सिंह को ठिकाने के अधिकारों से वंचित कर दिया और उन्हें उदयपुर में नजरबंद व निर्वासित कर दिया था।

77. (A) 14 मई 1925
नीमूचाणा जनसंहार 14 मई 1925 को अलवर रियासत के नीमूचाणा गांव में हुआ था। भू-राजस्व की बढ़ी हुई दरों का विरोध करने के लिए नीमूचाणा में लगभग 800 किसान एकत्र हुए थे। कमांडर छज्जू सिंह के नेतृत्व में अलवर राज्य की सेना ने गांव को चारों तरफ से घेरकर अंधाधुंध गोलाबारी की और घरों में आग लगा दी। इस भीषण कांड में सैकड़ों किसान मारे गए थे।

78. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
बूंदी किसान आंदोलन मुख्य रूप से बूंदी के पथरीले और उपजाऊ 'बरड़' क्षेत्र में केंद्रित था। यह आंदोलन स्वतःस्फूर्त नहीं था, बल्कि इसे राजस्थान सेवा संघ का पूरा संगठनात्मक और वैचारिक समर्थन प्राप्त था। राजस्थान सेवा संघ के प्रमुख नेता पंडित नयनूराम शर्मा ने ही इस आंदोलन का मार्गदर्शन और नेतृत्व किया था। इसलिए पहला कथन सत्य है और दूसरा कथन गलत है।

79. (D) स्थानीय कृषि संघर्षों से उत्तरदायी सरकार की मांगों की ओर एक बदलाव
राजस्थान में किसान और जनजातीय आंदोलनों ने आम जनता में चेतना का संचार किया। शुरुआत में ये संघर्ष केवल स्थानीय आर्थिक शिकायतों, जैसे अत्यधिक भू-राजस्व, लाग-बाग और बेगार को समाप्त कराने तक सीमित थे। परंतु समय के साथ ये आंदोलन निखरकर प्रजामंडलों के व्यापक राजनीतिक मंच से जुड़ गए और अंततः रियासतों में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना तथा लोकतांत्रिक अधिकारों की मांग में परिवर्तित हो गए।

80. (C) कर्नल शटन (सुट्टन)
17 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर भीलों के धार्मिक सम्मेलन पर हुए भीषण हमले की सैन्य कमान ब्रिटिश सैन्य अधिकारी कर्नल शटन (सुट्टन) के हाथों में थी। कर्नल शटन के नेतृत्व में मेवाड़ भील कोर, मेजर हैमिल्टन की टुकड़ियों और राजपूत रियासती सेना ने मानगढ़ पहाड़ी को घेरकर मशीनगनों व राइफलों से हमला किया, जिसमें 1,500 से अधिक निर्दोष भील मारे गए थे।

NODIA

81. (B) नए जागीरदार द्वारा किसानों पर कर के रूप में स्थानांतरित किया गया एक उत्तराधिकार शुल्क
'तलवार बंधाई' मूल रूप से एक उत्तराधिकार शुल्क था, जो किसी जागीरदार की मृत्यु के बाद नए जागीरदार के गद्दी पर बैठने पर राज्य (महाराणा) को दिया जाता था। परंतु 1906 में बिजोलिया ठिकाने के नए राव पृथ्वी सिंह ने इस शुल्क का वित्तीय भार स्वयं वहन करने के बजाय कर के रूप में ठिकाने की गरीब जनता पर थोप दिया था, जिसका किसानों ने कड़ा विरोध किया।

82. (D) मेवाड़ प्रजामंडल
माणिक्य लाल वर्मा ने बिजोलिया किसान आंदोलन के सफल संचालन के पश्चात मेवाड़ में व्यापक राजनीतिक अधिकारों के लिए कार्य किया। उन्होंने 24 अप्रैल 1938 को उदयपुर में 'मेवाड़ प्रजामंडल' की स्थापना में मुख्य सूत्रधार की भूमिका निभाई। इस संगठन का उद्देश्य मेवाड़ रियासत में किसानों और आम नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना तथा निरंकुश शाही शासन के स्थान पर उत्तरदायी शासन स्थापित करना था।

83. (A) वे भारतीय संविधान के मूल प्रारूप पर हस्ताक्षर करने वाले राजस्थान के प्रथम व्यक्ति थे।
बलवंत सिंह मेहता मेवाड़ के एक अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी और प्रजामंडल के संस्थापक अध्यक्ष थे। भारत के संवैधानिक इतिहास में उनका विशिष्ट स्थान इसलिए है क्योंकि वे भारत की संविधान सभा के सदस्य चुने गए थे और 24 जनवरी 1952 को भारतीय संविधान की मूल प्रति पर हस्ताक्षर करने वाले राजस्थान के पहले नागरिक बने थे। यह राजस्थान के इतिहास का एक अत्यंत गौरवान्वित क्षण है।

84. (C) बंबई
अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का स्थापना अधिवेशन 16-17 दिसंबर 1927 को बंबई (वर्तमान मुंबई) में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में भारत की विभिन्न रियासतों के 700 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस ऐतिहासिक संगठन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य देशी रियासतों की प्रजा को सामंती उत्पीड़न से मुक्ति दिलाना और उनके अधिकारों की लड़ाई को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ना था।

85. (A) सुरजी भगत
19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में दक्षिणी राजस्थान के भील समुदाय में धार्मिक और नैतिक चेतना जगाने में गोविंद गुरु के साथ-साथ 'सुरजी भगत' ने भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सुरजी भगत ने भीलों को अंधविश्वासों, नशाखोरी और सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कराने के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने गोविंद गुरु के भगत आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने और आदिवासियों में संगठन की भावना पैदा करने में मुख्य योगदान दिया था।

86. (D) चौकीदार मीना और जमींदार मीना
जयपुर राज्य में मीना समुदाय मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित था: 'चौकीदार मीना' और 'जमींदार मीना'। जरायम पेशा कानून लागू होने के बाद पुलिस द्वारा मुख्य रूप से चौकीदार मीना वर्ग को दैनिक उपस्थिति के लिए प्रताड़ित किया जाता था। मीना आंदोलन के नेताओं ने महसूस किया कि इस अन्यायपूर्ण कानून को समाप्त कराने के लिए इन दोनों आंतरिक धड़ों में एकता स्थापित करना आवश्यक है, जिसके बाद दोनों वर्गों ने एकजुट होकर संघर्ष किया।

87. (B) भू-राजस्व में अचानक हुई वृद्धि ने जाट महासभा के समर्थन से जाट और गुर्जर किसानों को एकजुट कर दिया।
1931 में भरतपुर रियासत में नए भूमि बंदोबस्त के तहत अचानक की गई भू-राजस्व वृद्धि ने किसानों को आंदोलित कर दिया। देशव्यापी आर्थिक मंदी के दौर में इस कर वृद्धि के खिलाफ देशभक्त भोजी लंबरदार और 'जाट महासभा' के सहयोग से जाट तथा गुर्जर किसान एक मंच पर एकत्र हुए। किसानों ने एकजुट होकर लगान देने से मना कर दिया और राज्य सरकार पर कर घटाने हेतु भारी दबाव बनाया था।

88. (C) पारंपरिक जाति पंचायतें
राजस्थान के किसान आंदोलनों के शुरुआती दौर में किसानों को संगठित करने और आंदोलन के निर्णयों को लागू करने में उनकी 'पारंपरिक जाति पंचायतें' सबसे प्रभावी संस्था साबित हुईं। जाति पंचायतों के माध्यम से बैठकों का आयोजन किया जाता था, कर न देने के निर्णय लिए जाते थे और यदि कोई व्यक्ति आंदोलन का उल्लंघन करता था तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाता था। इस सामाजिक ताने-बाने ने आंदोलन को अटूट मजबूती दी।

89. (D) कंबोई (गुजरात)
1913 के मानगढ़ जनसंहार के बाद गोविंद गुरु को गिरफ्तार कर लिया गया था। सजा पूरी होने और जेल से रिहा होने के बाद ब्रिटिश सरकार ने उनके राजस्थान की रियासतों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसलिए उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष गुजरात के पंचमहल जिले में स्थित 'कंबोई' गांव में निर्वासन में बिताए। कंबोई में ही रहते हुए उन्होंने 1931 में अपनी मृत्यु तक समाज सेवा और सुधार कार्य जारी रखा।

90. (A) 'भीलिस्तान' नामक एक संप्रभु राष्ट्र की मांग
मोतीलाल तेजावत द्वारा संचालित एकी आंदोलन का उद्देश्य जागीरदारों द्वारा ली जाने वाली बेगार, वनों पर अनुचित प्रतिबंधों और अत्यधिक भू-राजस्व की दरों के खिलाफ लड़ना था। यह आंदोलन पूरी तरह से शोषित आदिवासियों के नागरिक और आर्थिक अधिकारों की रक्षा के लिए था। इस आंदोलन का उद्देश्य किसी पृथक अथवा स्वतंत्र 'भीलिस्तान' राज्य का निर्माण करना कभी नहीं था। अतः प्रथम विकल्प इस आंदोलन के संदर्भ में गलत है।

91. (B) गोविंदपुरा गोलीबारी के बाद आंदोलन समाप्त हो गया और किसानों ने सभी करों का भुगतान कर दिया।
13 जुलाई 1923 को गोविंदपुरा में हुई पुलिस गोलीबारी में रुपजी और कृपाजी धाकड़ के शहीद होने के बाद बेगूं किसान आंदोलन समाप्त नहीं हुआ था। यद्यपि राज्य ने भारी दमन चक्र चलाया, परंतु किसानों का मनोबल नहीं टूटा। रामनारायण चौधरी की गिरफ्तारी के पश्चात विजय सिंह पथिक गुप्त रूप से बेगूं पहुंचे और उन्होंने आंदोलन की कमान संभालकर संघर्ष को जारी रखा था। इसलिए आंदोलन समाप्त होने का कथन असत्य है।

92. (B) ए.जी.जी. रॉबर्ट हॉलैंड
बिजोलिया आंदोलन के व्यापक जन-असंतोष को शांत करने के लिए फरवरी 1922 में राजपूताना के एजेंट टू द गवर्नर जनरल (ए.जी.जी.) रॉबर्ट हॉलैंड के नेतृत्व में एक उच्चस्तरीय आयोग बिजोलिया पहुंचा। रॉबर्ट हॉलैंड ने किसानों के प्रतिनिधियों और राजस्थान सेवा संघ के नेताओं के साथ सीधे बातचीत की। इस सफल वार्ता के परिणामस्वरूप ए.जी.जी. हॉलैंड ने किसानों पर थोपे गए 35 अनुचित करों (लाग-बाग) को समाप्त करने का ऐतिहासिक आदेश दिया था।

93. (A) बूंदी का एक पथरीला, पहाड़ी और बीहड़ इलाका जहाँ खेती करना कठिन था
भौगोलिक संदर्भ में 'बरड़' शब्द बूंदी रियासत के उस पश्चिमी भाग को संदर्भित करता है जो अत्यंत पथरीला, बीहड़ और पहाड़ी इलाका था। इस कठिन भौगोलिक क्षेत्र में मिट्टी उपजाऊ नहीं थी और सिंचाई के साधनों के अभाव के कारण कृषि उत्पादन बहुत कम होता था। इसके बावजूद, राज्य प्रशासन द्वारा बरड़ क्षेत्र के गरीब किसानों पर अत्यधिक कर और लाग-बाग थपे गए थे, जिससे ऐतिहासिक बरड़ किसान आंदोलन भड़का।

94. (C) राजपूत किसानों को राजस्व विशेषाधिकारों से वंचित करना और चराई कर बढ़ाना
अलवर के महाराजा जय सिंह ने 1923-1924 में एक नया भू-राजस्व बंदोबस्त लागू किया, जिसके तहत भू-राजस्व की दरों में 40 प्रतिशत तक की वृद्धि कर दी गई। इसके अतिरिक्त,

Click Here to Buy book on Amazon

पारंपरिक रूप से राजपूत किसानों को प्राप्त कर-विशेषाधिकारों और रियायतों को समाप्त कर दिया गया तथा चराई कर बढ़ा दिया गया। इस प्रशासनिक नीति से राजपूत किसानों में भारी असंतोष पैदा हुआ, जिसके परिणामस्वरूप नीमूचाणा में ऐतिहासिक किसान आंदोलन की शुरुआत हुई।

95. (D) सिरोही
गोविंद गुरु ने भील, गरासिया और अन्य जनजातीय समुदायों को एकजुट करने तथा उनमें सामाजिक-धार्मिक सुधार लाने के उद्देश्य से 1883 में 'संपसभा' की स्थापना की थी। इस महान संस्था की स्थापना उन्होंने 'सिरोही' रियासत में की थी। संपसभा के माध्यम से उन्होंने आदिवासियों में नशामुक्ति, स्वदेशी के प्रयोग, शिक्षा और आपसी विवादों को बिना अदालत गए पंचायतों से सुलझाने का संदेश फैलाया था, जिसने जनजातीय चेतना की नींव रखी।

96. (C) मार्गशीर्ष पूर्णिमा
मानगढ़ पहाड़ी पर भीलों का वार्षिक धार्मिक जमावड़ा पारंपरिक रूप से हिंदू पंचांग के अनुसार 'मार्गशीर्ष पूर्णिमा' के पवित्र अवसर पर होता था। इस दिन गोविंद गुरु के अनुयायी हवन कुंड में आहुति देने, गुरु का उपदेश सुनने और अपने धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करने के लिए एकत्र होते थे। 17 नवंबर 1913 को मार्गशीर्ष पूर्णिमा के ही दिन मानगढ़ पहाड़ी पर ब्रिटिश सेना ने अंधाधुंध गोलाबारी करके दर्दनाक जनसंहार किया था।

97. (C) 1952
मीना समुदाय पर 1930 में थोपा गया दमनकारी जरायम पेशा कानून (आपराधिक जनजाति अधिनियम) एक अत्यंत अपमानजनक व्यवस्था थी। इसके खिलाफ मीना समाज ने दशकों तक लगातार अहिंसक और संगठित संघर्ष चलाया। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात, लोकतान्त्रिक सरकार द्वारा 1952 में इस अन्यायी कानून को आधिकारिक रूप से पूरी तरह से निरस्त कर दिया गया, जिससे मीना समुदाय को दैनिक पुलिस उपस्थिति के कलंक से मुक्ति मिली।

98. (D) बावजी
एकी आंदोलन के महान नेता मोतीलाल तेजावत ने अपना पूरा जीवन भील और गरासिया आदिवासियों के अधिकारों, गरिमा और कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। तेजावत जी के इस निस्वार्थ समर्पण, प्रेम और कुशल नेतृत्व के कारण भील समुदाय के लोग उन्हें अत्यधिक आदर देते थे और उन्हें स्नेह व श्रद्धा से 'बावजी' कहकर पुकारते थे। आदिवासियों के बीच आज भी उन्हें एक लोकनायक के रूप में पूजा जाता है।

99. (A) कृषक संघर्षों ने राजनीतिक रूप से जागरूक जनता का निर्माण किया जो बाद में प्रजामंडलों से जुड़ी।
1920 से 1940 के दशक के दौरान राजस्थान में राजनीतिक चेतना का क्रमिक विकास हुआ। 1920 के दशक में शुरू हुए बिजोलिया, बेगूं और एकी जैसे कृषक व जनजातीय आंदोलनों ने आम ग्रामीण जनता से सामंती डर को समाप्त किया और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया। इसी जागरूक जनाधार ने 1930 और 1940 के दशकों में प्रजामंडलों को मजबूत आधार प्रदान किया, जिससे आंदोलन कर-राहत से बढ़कर पूर्ण उत्तरदायी शासन की मांग तक पहुंचा।

100. (C) डॉ. मोहन सिंह मेहता
1897 से चला आ रहा बिजोलिया किसान आंदोलन 1941 में अपने अंतिम और निर्णायक समझौते पर पहुंचा। उस समय मेवाड़ रियासत के राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता थे। डॉ. मोहन सिंह मेहता ने दूरदर्शिता दिखाते हुए बिजोलिया का दौरा किया और माणिक्य लाल वर्मा तथा किसानों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की। उन्होंने किसानों की जब्त भूमि वापस लौटाई और करों को घटाकर 44 वर्ष पुराने इस ऐतिहासिक आंदोलन का शांतिपूर्ण समाधान किया।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 06
राजनीतिक जागृति प्रजामण्डल आन्दोलन

1. राजस्थान की देशी रियासतों में प्रजामंडलों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
   (A) देशी रियासतों को समाप्त करना और प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन स्थापित करना
   (B) रियासती शासकों की छत्रछाया में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना
   (C) स्थानीय जागीरदारों और शासकों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह शुरू करना
   (D) ब्रिटिश सर्वोच्चता के साथ सभी राजनयिक संबंधों को पूरी तरह से समाप्त करना

2. निम्नलिखित में से किस कारक ने राजस्थान में प्रारंभिक राजनीतिक जागृति में महत्वपूर्ण योगदान नहीं दिया?
   (A) क्षेत्र में किसान और आदिवासी आंदोलनों का प्रभाव
   (B) आधुनिक पश्चिमी शिक्षा का प्रसार और आर्य समाज के सुधारवादी विचार
   (C) व्यापक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और पड़ोसी ब्रिटिश प्रांतों का प्रभाव
   (D) रियासती शासकों द्वारा बड़े पैमाने पर भारी उद्योगों की स्थापना

3. राजस्थान की सामाजिक-राजनीतिक जागृति में अग्रणी भूमिका निभाने वाला समाचार पत्र 'सज्जन कीर्ति सुधारक' किस रियासत से प्रकाशित हुआ था?
   (A) उदयपुर
   (B) जयपुर
   (C) जोधपुर
   (D) बीकानेर

4. महाराणा सज्जन सिंह के संरक्षण में 'सज्जन कीर्ति सुधारक' पहली बार किस वर्ष प्रकाशित हुआ था?
   (A) 1876
   (B) 1879
   (C) 1885
   (D) 1899

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
   अभिकथन (A) : ब्रिटिश भारतीय प्रांतों की तुलना में राजस्थान की देशी रियासतों में राजनीतिक जागृति काफी विलंब से हुई।
   कारण (R) : 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं सदी के प्रारंभ में रियासतों में आधुनिक मध्यम वर्ग, व्यापक आधुनिक शिक्षा और बुनियादी नागरिक स्वतंत्रता का अभाव था।
   (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
   (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
   (D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

6. जयपुर में 'जैन वर्धमान विद्यालय' की स्थापना निम्नलिखित में से किसने की थी, जिसने गुप्त रूप से क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य किया?
   (A) हीरालाल शास्त्री
   (B) जमनालाल बजाज
   (C) कपूरचंद पाटनी
   (D) अर्जुन लाल सेठी

7. राजपूताना क्षेत्र में पहला प्रजामंडल 1931 में निम्नलिखित में से किस रियासत में स्थापित किया गया था?
   (A) मारवाड़
   (B) जयपुर
   (C) मेवाड़
   (D) कोटा

8. 1931 में जब जयपुर प्रजामंडल का प्रारंभिक गठन हुआ, तब इसके प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
   (A) जमनालाल बजाज
   (B) हीरालाल शास्त्री
   (C) कपूरचंद पाटनी
   (D) बाबा हरिश्चंद्र

9. 1936 में, जयपुर प्रजामंडल का पुनर्गठन किस प्रमुख राष्ट्रीय नेता के नेतृत्व में किया गया था?
   (A) जयनारायण व्यास
   (B) माणिक्य लाल वर्मा
   (C) विजय सिंह पथिक
   (D) जमनालाल बजाज

10. 1942 का प्रसिद्ध 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' मिर्जा इस्माइल और जयपुर प्रजामंडल के किस नेता के बीच हस्ताक्षरित हुआ था?
   (A) हीरालाल शास्त्री
   (B) जमनालाल बजाज
   (C) बाबा हरिश्चंद्र
   (D) टीकाराम पालीवाल

Downloaded from www.pdf.tube

11. जयपुर में 'आज़ाद मोर्चा' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका गठन 1942 के जेंटलमैन एग्रीमेंट से असंतुष्ट नेताओं द्वारा किया गया था।
II. इसने अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।
III. इसका नेतृत्व बाबा हरिश्चंद्र ने किया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

12. मारवाड़ (जोधपुर) प्रजामंडल की स्थापना 1934 में निम्नलिखित में से किस नेता द्वारा की गई थी?
(A) मघाराम वैद्य और रघुबर दयाल गोयल
(B) जयनारायण व्यास और भंवरलाल सर्राफ
(C) माणिक्य लाल वर्मा और बलवंत सिंह मेहता
(D) नयनूराम शर्मा और अभिन्न हरि

13. प्रतिबंधित मारवाड़ प्रजामंडल के स्थान पर उत्तरदायी सरकार की मांग को जारी रखने के लिए 1938 में जोधपुर में किस संगठन की स्थापना की गई थी?
(A) मारवाड़ लोक परिषद
(B) मारवाड़ हितकारिणी सभा
(C) मारवाड़ सेवा संघ
(D) मारवाड़ यूथ लीग

14. 1936 में, राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा कृष्णा नामक महिला के अपहरण के विरोध में 'कृष्णा दिवस' मनाया गया था। यह किस रियासत में हुआ था?
(A) जयपुर (B) बीकानेर
(C) जोधपुर (D) मेवाड़

15. निम्नलिखित में से कौन विवादास्पद पुस्तिकाओं 'मारवाड़ की अवस्था' और 'पोपाबाई की पोल' के लेखक हैं, जिन्होंने जोधपुर राज्य में कुशासन का पर्दाफाश किया था?
(A) अचलेश्वर प्रसाद शर्मा
(B) भंवरलाल सर्राफ
(C) मथुरादास मथुर
(D) जयनारायण व्यास

16. मेवाड़ प्रजामंडल की औपचारिक स्थापना 24 अप्रैल 1938 को हुई थी। इसके प्रथम अध्यक्ष के रूप में किसे चुना गया था?
(A) माणिक्य लाल वर्मा
(B) भूरेलाल बया
(C) बलवंत सिंह मेहता
(D) मोहनलाल सुखाड़िया

17. नीचे दो सूचियां दी गई हैं। सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
सूची I : समाचार पत्र/पत्रिका
P. राजस्थान समाचार
Q. राजपूताना गजट
R. तरुण राजस्थान
S. त्याग भूमि
सूची II : संपादक/संस्थापक
1. मौलवी मुराद अली बीमार
2. हरिभाऊ उपाध्याय
3. मुंशी समर्थ दान
4. जयनारायण व्यास
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

18. 1938 में मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना पर, मेवाड़ के किस प्रधानमंत्री ने तुरंत इसे अवैध संगठन घोषित कर दिया था?
(A) सर टी. राघवाचारी
(B) सुखदेव प्रसाद
(C) मिर्जा इस्माइल
(D) धर्मनारायण काक

19. मेवाड़ प्रजामंडल का पहला अधिवेशन 1941 में उदयपुर में आयोजित किया गया था। किस प्रमुख राष्ट्रीय नेता ने इस अधिवेशन का उद्घाटन किया था?
(A) जे.बी. कृपलानी
(B) महात्मा गांधी
(C) जवाहरलाल नेहरु
(D) सरदार वल्लभभाई पटेल

20. मेवाड़ प्रजामंडल आंदोलन के नेतृत्व के दौरान माणिक्य लाल वर्मा को किस किले में कठोर यातनाएं दी गईं और बंदी बनाकर रखा गया?
(A) चित्तौड़गढ़ किला (B) मांडलगढ़ किला
(C) कुंभलगढ़ किला (D) तारागढ़ किला

21. बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना 1936 में हुई थी। राज्य के दमन से बचने के लिए राज्य के क्षेत्र से दूर, इसकी स्थापना कहाँ की गई थी?
(A) कलकत्ता (B) बंबई
(C) अजमेर (D) दिल्ली

NODIA

22. निम्नलिखित में से बीकानेर प्रजामंडल के संस्थापक कौन थे?
(A) रघुबर दयाल गोयल
(B) स्वामी गोपाल दास
(C) हनुमान सिंह बुडानिया
(D) मघाराम वैद्य

23. बीकानेर में राजनीतिक जागृति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बीकानेर राज्य के लोगों ने प्रजामंडल आंदोलन के एक शहीद के सम्मान में 1946 में 'बीरबल दिवस' मनाया।

II. 1946 का 'कांगड़ कांड' बीकानेर में राजनीतिक संघर्ष से जुड़ी एक प्रमुख कृषक अत्याचार की घटना थी।
III. महाराजा गंगा सिंह ने उत्तरदायी सरकार के लिए बीकानेर प्रजामंडल की मांगों का पुरजोर समर्थन किया।
IV. बीकानेर राज्य प्रजा परिषद की स्थापना 1942 में रघुबर दयाल गोयल द्वारा की गई थी।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

24. हाड़ौती प्रजामंडल की स्थापना 1934 में हुई थी। इसके प्रमुख संस्थापक नेता कौन थे?
(A) अभिन्न हरि
(B) ऋषि दत्त मेहता
(C) नयनूराम शर्मा
(D) बृज सुंदर शर्मा

25. कोटा प्रजामंडल की स्थापना 1939 में हुई थी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कोटा प्रजामंडल की एक अनूठी उपलब्धि निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(A) उन्होंने पूरे तीन वर्षों के लिए एक स्वतंत्र समानांतर राज्य सरकार स्थापित की।
(B) उन्होंने कोटा के शासक महाराव को स्वेच्छा से अपना सिंहासन छोड़ने के लिए मना लिया।
(C) उन्होंने कोटा राज्य के प्रशासन को पूरी तरह से ब्रिटिश प्रांतीय प्रणाली में मिला दिया।
(D) उन्होंने शहर के प्रशासन पर अधिकार कर लिया और कोतवाली पर तिरंगा फहरा दिया।

26. अलवर प्रजामंडल का गठन 1938 में हुआ था। कुंजबिहारी लाल मोदी के साथ इसकी स्थापना में किस नेता की महत्वपूर्ण भूमिका थी?
(A) हरिनारायण शर्मा
(B) मास्टर आदित्येंद्र
(C) गोपी लाल यादव
(D) जुगल किशोर चतुर्वेदी

27. अलवर प्रजामंडल के गठन से पहले, हरिनारायण शर्मा ने सामाजिक जागृति लाने के लिए संस्थाओं की स्थापना की थी। निम्नलिखित में से किसकी स्थापना उनके द्वारा नहीं की गई थी?
(A) अस्पृश्यता निवारक संघ
(B) राजपूताना हरिजन सेवक संघ
(C) वाल्मीकि संघ
(D) आदिवासी संघ

28. राज्य के भीतर प्रतिबंधों के कारण, भरतपुर प्रजामंडल की स्थापना 1938 में रियासती सीमा से बाहर किस स्थान पर की गई थी?
(A) आगरा
(B) रेवाड़ी
(C) मथुरा
(D) दिल्ली

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A) : 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों के लिए एक प्रमुख महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।
कारण (R) : हरिपुरा अधिवेशन में ही कांग्रेस ने आधिकारिक तौर पर रियासतों में जन संघर्षों को नैतिक और राजनीतिक समर्थन देने का प्रस्ताव पारित किया।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

30. 1938 में स्थापना के समय भरतपुर प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?
(A) किशन लाल जोशी
(B) मास्टर आदित्येंद्र
(C) गोपी लाल यादव
(D) जुगल किशोर चतुर्वेदी

31. ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस (अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद) की स्थापना 1927 में हुई थी। इसका पहला अधिवेशन कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) अजमेर
(B) दिल्ली
(C) वर्धा
(D) बंबई

32. 1927 में ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप में किसे चुना गया था?
(A) जवाहरलाल नेहरु
(B) महात्मा गांधी
(C) दीवान बहादुर एम. रामचंद्र राव
(D) विजय सिंह पथिक

33. प्रसिद्ध गीत "पंछीड़ा", जो राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान किसानों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुआ, किसके द्वारा रचित था?
(A) जयनारायण व्यास
(B) माणिक्य लाल वर्मा
(C) हीरालाल शास्त्री
(D) अर्जुन लाल सेठी

34. हीरालाल शास्त्री के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

Click Here to Buy book on Flipkart

(A) उन्होंने 'शांता कुटीर' संस्था की स्थापना की, जो बाद में वनस्थली विद्यापीठ बनी।
(B) उन्होंने प्रसिद्ध देशभक्ति गीत "प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः" लिखा।
(C) उन्होंने 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र' शीर्षक से एक आत्मकथा लिखी।
(D) उन्होंने 1931 में जयपुर प्रजामंडल के गठन का कड़ा विरोध किया था।

35. निम्नलिखित प्रजामंडलों को उनकी स्थापना के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मेवाड़ प्रजामंडल
2. जयपुर प्रजामंडल
3. बीकानेर प्रजामंडल
4. मारवाड़ प्रजामंडल

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 4, 2, 3, 1

36. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उदयपुर में राज्य के दमन के खिलाफ महिलाओं के एक विशाल जुलूस का नेतृत्व किस महिला कार्यकर्ता ने किया और कठोर कारावास का सामना किया?
(A) रतन शास्त्री
(B) रमा देवी
(C) नारायणी देवी वर्मा
(D) अंजना देवी चौधरी

37. राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में जनता की शिकायतों को दूर करने और राजनीतिक चेतना जगाने के उद्देश्य से की गई थी। इसकी स्थापना कहाँ हुई थी?
(A) वर्धा
(B) अजमेर
(C) ब्यावर
(D) दिल्ली

38. 1920 में, स्थानीय आंदोलनों का बेहतर समन्वय करने के लिए राजस्थान सेवा संघ का मुख्यालय वर्धा से स्थानांतरित करके राजस्थान के किस शहर में लाया गया?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) उदयपुर
(D) अजमेर

39. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान सेवा संघ के संस्थापक सदस्यों में शामिल नहीं थे?
(A) विजय सिंह पथिक
(B) जमनालाल बजाज
(C) रामनारायण चौधरी
(D) हरि भाई किंकर

40. 13 मार्च 1947 को 'डाबड़ा कांड' हुआ, जहाँ जागीरदारों की सेना ने किसानों और प्रजामंडल कार्यकर्ताओं की सभा पर बर्बरतापूर्वक हमला किया। यह त्रासदी किस रियासत में हुई थी?
(A) बीकानेर
(B) मेवाड़ (उदयपुर)
(C) मारवाड़ (जोधपुर)
(D) अलवर

41. उस सबसे उपयुक्त कारण की पहचान कीजिए कि राजपूताना राज्यों के शासकों ने प्रजामंडल कार्यकर्ताओं का कड़ा दमन और उन पर प्रतिबंध क्यों लगाया।
(A) उन्होंने आरोप लगाया कि प्रजामंडल देशी राजतंत्रों के पूर्ण उन्मूलन और ब्रिटिश भारत में तत्काल एकीकरण की मांग कर रहे थे।
(B) उनका दावा था कि प्रजामंडल गुप्त रूप से ग्रामीण प्रांतों में सशस्त्र कम्युनिस्ट किसान विद्रोह का संचालन कर रहे थे।
(C) उनका मानना था कि स्थानीय राजवंशों को अस्थिर करने के लिए विदेशी राजतंत्र-विरोधी समूहों द्वारा प्रजामंडलों को भारी धन दिया जा रहा था।
(D) उन्होंने उत्तरदायी सरकार की मांग की, जिससे शासकों की निरंकुश शक्ति और सामंती विशेषाधिकारों को प्रत्यक्ष खतरा था।

42. बलवंत सिंह मेहता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष थे।
II. उन्होंने राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए उदयपुर में 'प्रताप सभा' की स्थापना की।
III. उन्होंने भारत की संविधान सभा में मेवाड़ के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

43. किसान और राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी के कारण स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गिरफ्तार होने वाली राजस्थान की पहली महिला कौन थीं?
(A) रतन शास्त्री
(B) अंजना देवी चौधरी
(C) महिमा देवी किंकर
(D) सावित्री देवी भाटी

44. 'रास्तापाल कांड' (1947), जिसमें एक बालिका काली बाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को राज्य पुलिस से बचाते हुए शहीद हो गई थी, किस रियासत में हुआ था?
(A) बांसवाड़ा
(B) डूंगरपुर
(C) प्रतापगढ़
(D) सिरोही

NODIA

45. आदिवासी और वंचित समुदायों के बीच शिक्षा और सामाजिक उत्थान को बढ़ावा देने के लिए किस प्रजामंडल नेता ने डूंगरपुर में 'हरिजन आश्रम' की स्थापना की?
(A) भोगीलाल पंड्या
(B) गोकुलभाई भट्ट
(C) मोतीलाल तेजावत
(D) गोविंद गुरु

46. मुख्यधारा के राष्ट्रीय आंदोलन के साथ प्रजामंडल आंदोलनों के एकीकरण के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन (1938) में देशी रियासतों में उत्तरदायी सरकारों की स्थापना के पक्ष में एक प्रस्ताव पारित किया गया था।
(B) 1938 के बाद, प्रजामंडलों ने अपने स्थानीय आंदोलनों को भारत छोड़ो आंदोलन जैसे राष्ट्रीय अभियानों के साथ तेजी से जोड़ा।
(C) 1938 से पहले, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देशी रियासतों के सदस्यों को कांग्रेस अधिवेशनों में भाग लेने से पूरी तरह से प्रतिबंधित कर रखा था।
(D) ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस अंततः जवाहरलाल नेहरु के प्रत्यक्ष नेतृत्व में आ गई, जिससे दोनों आंदोलनों के बीच का अंतर समाप्त हो गया।

47. बिजोलिया में 'विद्या प्रचारिणी सभा' की स्थापना किसने की, जिसने किसानों के बीच राजनीतिक चेतना पैदा करने में शुरुआती महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) साधु सीताराम दास
(B) विजय सिंह पथिक
(C) माणिक्य लाल वर्मा
(D) हरि भाई किंकर

48. नीचे दो सूचियां दी गई हैं। सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
सूची I : महिला नेता
P. रमा देवी
Q. नारायणी देवी
R. सावित्री देवी भाटी
S. सरस्वती बोहरा
सूची II : प्राथमिक राजनीतिक गतिविधि का क्षेत्र
1. मेवाड़
2. भरतपुर
3. जयपुर
4. मारवाड़
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

49. राजनीतिक जागृति के लिए युवाओं को संगठित करने हेतु 1931 में 'मारवाड़ यूथ लीग' की स्थापना की गई थी। इसके मुख्य सूत्रधार कौन थे?
(A) मथुरादास मथुर
(B) जयनारायण व्यास
(C) भंवरलाल सर्राफ
(D) छगनराज चौपासनीवाला

50. राजनीतिक जागृति काल के दौरान, 1918 में राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना की गई थी। इसका मुख्यालय कहाँ स्थापित किया गया था?
(A) दिल्ली
(B) कानपुर
(C) वर्धा
(D) अजमेर

51. रियासतों में प्रशासनिक भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए 1885 में स्थापित अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र 'राजस्थान टाइम्स' किस शहर से प्रकाशित होता था?
(A) अजमेर
(B) जयपुर
(C) जोधपुर
(D) उदयपुर

52. किस प्रमुख नेता ने प्रसिद्ध रूप से कहा था, "यदि मैं राज्य की नौकरी करूँगा, तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा?", और इस प्रकार क्रांतिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए जयपुर राज्य की सेवा से त्यागपत्र दे दिया था?
(A) जमनालाल बजाज
(B) प्रताप सिंह बारहठ
(C) अर्जुन लाल सेठी
(D) केसरी सिंह बारहठ

NODIA

53. 1931 में अजमेर में राजपूताना देशी राज्य प्रजा परिषद का प्रथम अधिवेशन किसकी अध्यक्षता में आयोजित हुआ था?
(A) रामनारायण चौधरी
(B) विजय सिंह पथिक
(C) अमृतलाल सेठ
(D) जमनालाल बजाज

54. राजस्थान की राजनीतिक जागृति में समाचार पत्रों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'नवीन राजस्थान' का प्रकाशन राजस्थान सेवा संघ द्वारा किया जाता था।
II. जब 'नवीन राजस्थान' पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तो इसका नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' के रूप में प्रकाशन किया गया।
III. 'तरुण राजस्थान' ने बिजोलिया और बेगूं के किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया।
IV. राजस्थानी भाषा के पहले राजनीतिक समाचार पत्र 'आगीबाण' का संपादन हीरालाल शास्त्री ने किया था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

55. 'प्रजासेवक' एक राष्ट्रवादी साप्ताहिक समाचार पत्र था जो प्रजामंडल आंदोलन का आक्रामक रूप से समर्थन करता था। यह कहाँ से और किसके द्वारा प्रकाशित किया गया था?
(A) अजमेर शहर, हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व में
(B) जोधपुर शहर, अचलेश्वर शर्मा के नेतृत्व में
(C) ब्यावर शहर, ऋषि दत्त मेहता के नेतृत्व में
(D) जयपुर शहर, बाबा हरिश्चंद्र के नेतृत्व में

56. 11 अप्रैल 1947 को 'तसीमो कांड' हुआ, जिसमें तिरंगे झंडे की रक्षा करते हुए छत्तर सिंह और पंचम सिंह शहीद हो गए। इस घटना से कौन-सा प्रजामंडल जुड़ा था?
(A) भरतपुर प्रजामंडल
(B) अलवर प्रजामंडल
(C) धौलपुर प्रजामंडल
(D) करौली प्रजामंडल

57. 1936 में स्थापित धौलपुर प्रजामंडल के संस्थापक कौन थे?
(A) त्रिलोकचंद माथुर के साथ चिरंजीलाल शर्मा
(B) गोपी लाल यादव के साथ कार्यकर्ता मास्टर आदित्येंद्र
(C) मीठालाल व्यास के साथ नेता मांगीलाल भव्य
(D) कृष्णदत्त पालीवाल और ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु

58. प्रजामंडल और उसके संस्थापक का गलत युग्म पहचानिए:
(A) प्रतापगढ़ प्रजामंडल – मांगीलाल भव्य
(B) सिरोही प्रजामंडल – गोकुलभाई भट्ट
(C) बांसवाड़ा प्रजामंडल – भूपेंद्र नाथ त्रिवेदी
(D) जैसलमेर प्रजामंडल – मीठालाल व्यास

59. 1946 में झालावाड़ प्रजामंडल की स्थापना किसने की, जिसे अक्सर राजपूताना में स्थापित अंतिम प्रजामंडल माना जाता है?
(A) अमृतलाल पायक और चुन्नीलाल प्रभाकर
(B) कन्हैयालाल मित्तल और मांगीलाल भव्य
(C) भोगीलाल पंड्या और हरिदेव जोशी
(D) गोकुलभाई भट्ट और वृद्धि शंकर

60. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उनके प्रारंभिक स्थापना चरणों के दौरान क्रमशः जयपुर, मेवाड़, बीकानेर और मारवाड़ के प्रजामंडल अध्यक्षों का सही अनुक्रम प्रदान करता है?
(A) जमनालाल बजाज, माणिक्य लाल वर्मा, रघुबर दयाल गोयल, जयनारायण व्यास
(B) कपूरचंद पाटनी, बलवंत सिंह मेहता, मघाराम वैद्य, भंवरलाल सर्राफ
(C) हीरालाल शास्त्री, भूरेलाल बया, स्वामी गोपाल दास, मथुरादास मथुर
(D) कपूरचंद पाटनी, माणिक्य लाल वर्मा, मघाराम वैद्य, जयनारायण व्यास

61. कथन I और कथन II को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I : राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों ने मुख्य रूप से रियासती शासकों को उनके सिंहासनों से पूरी तरह से हटाने की मांग की।
कथन II : ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस ने शुरुआत में राजतंत्र के पूर्ण उन्मूलन के बजाय शासकों की छत्रछाया में उत्तरदायी सरकार की वकालत की।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

62. निम्नलिखित में से किस रियासत में 1942 में सुभाष चंद्र बोस की गिरफ्तारी के बाद व्यापक छात्र हड़ताल और राजनीतिक उथल-पुथल देखी गई थी?
(A) बीकानेर
(B) उदयपुर
(C) जोधपुर
(D) जयपुर

63. राजपूताना के युवाओं में क्रांतिकारी विचारों का संचार करने और उन्हें सशस्त्र संघर्ष के लिए तैयार करने हेतु 'वीर भारत समाज' की स्थापना किसने की थी?
(A) अर्जुन लाल सेठी
(B) केसरी सिंह बारहठ
(C) राव गोपाल सिंह खरवा
(D) विजय सिंह पथिक

64. भीलों के बीच शिक्षा और राजनीतिक चेतना को बढ़ावा देने के लिए सागवाड़ा में 'खांडलाई आश्रम' की स्थापना की गई थी। इसके संस्थापक कौन थे?
(A) भोगीलाल पंड्या
(B) मोतीलाल तेजावत
(C) माणिक्य लाल वर्मा
(D) गोविंद गुरु

65. समाचार पत्र 'राजस्थान वीकली' 1923 में ब्यावर से किस प्रमुख राजनीतिक कार्यकर्ता द्वारा प्रकाशित किया गया था?
(A) रामनारायण चौधरी
(B) ऋषि दत्त मेहता
(C) हरिभाऊ उपाध्याय
(D) जयनारायण व्यास

66. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A) : जयपुर में जैन वर्धमान विद्यालय जैसी शैक्षणिक संस्थाओं ने राज्य की राजनीतिक जागृति में दोहरी भूमिका निभाई।
कारण (R) : बाहर से आधुनिक और धार्मिक शिक्षा प्रदान करते हुए, वे गुप्त रूप से क्रांतिकारियों और ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के लिए युवाओं को भर्ती करने और प्रशिक्षित करने के केंद्रों के रूप में कार्य करते थे।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

67. 'देश हितैषिणी सभा', एक प्रारंभिक सुधारवादी संगठन जिसने बाद की सामाजिक-राजनीतिक जागृति के लिए मंच तैयार करने में मदद की, 1877 में किस राज्य में स्थापित की गई थी?
(A) मेवाड़ (उदयपुर)
(B) जयपुर
(C) मारवाड़ (जोधपुर)
(D) बीकानेर

68. प्रजामंडल आंदोलन में महिलाओं की भूमिका के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) महिलाएं बड़े पैमाने पर घरेलू कर्तव्यों तक सीमित थीं और उन्होंने 1947 तक सार्वजनिक राजनीतिक आंदोलनों में भाग नहीं लिया।
(B) प्रधानमंत्री के खिलाफ एक प्रमुख महिला विरोध का नेतृत्व करने के लिए रतन शास्त्री को मेवाड़ राज्य से निर्वासित कर दिया गया था।
(C) नारायणी देवी वर्मा ने महिला शिक्षा और स्वावलंबन के लिए भीलवाड़ा में 'महिला आश्रम' की स्थापना की।
(D) सावित्री देवी भाटी ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस के अध्यक्ष के रूप में चुनी जाने वाली एकमात्र महिला नेता थीं।

69. ग्रामीण जनता से सीधे जुड़ने के लिए स्थानीय भाषा में प्रकाशित अग्रणी राजनीतिक समाचार पत्र 'आगीबाण' 1932 में ब्यावर से किसके द्वारा शुरु किया गया था?
(A) जयनारायण व्यास
(B) हरिभाऊ उपाध्याय
(C) विजय सिंह पथिक
(D) माणिक्य लाल वर्मा

70. इन प्रजामंडलों की स्थापना के स्थान के संबंध में असंगत विकल्प चुनिए:
(A) बीकानेर प्रजामंडल
(B) भरतपुर प्रजामंडल
(C) सिरोही प्रजामंडल
(D) मेवाड़ प्रजामंडल

71. बीकानेर की 'सर्व हितकारिणी सभा', जिसने 'कबीर पाठशाला' और 'पुत्री पाठशाला' जैसे विद्यालय शुरु करके आम जनता को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, किसके द्वारा स्थापित की गई थी?
(A) मघाराम वैद्य (B) स्वामी गोपाल दास
(C) रघुबर दयाल गोयल (D) हनुमान सिंह बुडानिया

72. राजपूताना मध्य भारत सभा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका गठन 1918 में चांदनी चौक, दिल्ली में हुआ था।
II. जमनालाल बजाज इसके पहले निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हुए।
III. इसका प्राथमिक उद्देश्य राजनीतिक आंदोलन को केवल ब्रिटिश शासित अजमेर-मेरवाड़ा तक सीमित रखना था।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल III
(C) केवल I और II
(D) केवल II और III

73. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, एक समझौता हुआ जिसके तहत यह सुनिश्चित किया गया कि जयपुर प्रजामंडल जयपुर महाराजा के खिलाफ प्रत्यक्ष आंदोलन शुरु नहीं करेगा। इस समझौते की किस गुट द्वारा कड़ी आलोचना की गई थी?
(A) मारवाड़ लोक परिषद
(B) मेवाड़ प्रजामंडल
(C) राजस्थान सेवा संघ
(D) आज़ाद मोर्चा

74. निम्नलिखित में से किस नेता ने 1923 में निष्क्रिय 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' का पुनर्गठन किया और इसे राज्य के शोषण के खिलाफ एक शक्तिशाली राजनीतिक संस्था में बदल दिया?
(A) जयनारायण व्यास
(B) भंवरलाल सर्राफ
(C) आनंद राज सुराणा
(D) चांदमल सुराणा

75. चूरू का 'धर्म स्तूप', जहाँ राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने 1930 में स्वतंत्रता दिवस (26 जनवरी) पर साहसपूर्वक भारतीय तिरंगा फहराया था, किस रियासत के क्षेत्र में स्थित था?
(A) मारवाड़
(B) बीकानेर
(C) जयपुर
(D) शेखावाटी ठिकाना

76. 1938 में, सुभाष चंद्र बोस ने किस रियासत का दौरा किया, जिससे स्थानीय युवा गहराई से प्रेरित हुए और वहां प्रजामंडल के गठन को गति मिली?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) उदयपुर

77. 'पूनावाड़ा कांड', जो प्रजामंडल आंदोलन के दौरान जन शिक्षा की वकालत करने वाले एक शिक्षक के खिलाफ पुलिस बर्बरता की घटना थी, किस रियासत से संबंधित है?
(A) डूंगरपुर (B) बांसवाड़ा
(C) प्रतापगढ़ (D) कुशलगढ़

78. नीचे दो सूचियां दी गई हैं। सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

NODIA

सूची I : घटना/त्रासदी
P. डाबड़ा कांड
Q. रास्तापाल कांड
R. कांगड़ कांड
S. तसीमो कांड
सूची II : संबंधित रियासत
1. धौलपुर
2. बीकानेर
3. डूंगरपुर
4. मारवाड़
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

79. महिलाओं के अधिकारों और राजनीतिक जागृति के लिए समर्पित, 1947 में उदयपुर में 'राजस्थान महिला परिषद' की संस्थापिका निम्नलिखित में से कौन थीं?
(A) रतन शास्त्री
(B) नारायणी देवी वर्मा
(C) अंजना देवी चौधरी
(D) शांता त्रिवेदी

80. नागरिक स्वतंत्रताओं का दमन करने और राजनीतिक सभाओं पर प्रतिबंध लगाने के लिए पारित किया गया 'मारवाड़ पब्लिक सोसाइटी ऑर्डिनेंस' किस वर्ष जारी किया गया था?
(A) 1931 (B) 1934
(C) 1938 (D) 1942

81. राजस्थान में राजनीतिक जागृति के संदर्भ में, जमनालाल बजाज द्वारा जयपुर में स्थापित 'चरखा संघ' का मुख्य ध्यान किस पर था?
(A) पूरे क्षेत्र में एक भूमिगत क्रांतिकारी सेना को संगठित और प्रशिक्षित करना
(B) खादी, ग्रामीण स्वावलंबन और रचनात्मक राजनीतिक कार्य को बढ़ावा देना
(C) प्रजामंडलों के बीच एक गुप्त पत्र-व्यवहार समन्वय इकाई के रूप में कार्य करना
(D) आज़ाद मोर्चा के लिए आवंटित वित्तीय कोष का व्यवस्थित प्रबंधन करना

82. किशनगढ़ प्रजामंडल की स्थापना 1939 में हुई थी। निम्नलिखित में से इसके मुख्य संस्थापक कौन थे?
(A) गोकुलभाई भट्ट और वृद्धि शंकर
(B) मीठालाल व्यास और शिवशंकर गोपा
(C) ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु और कृष्णदत्त पालीवाल
(D) कांतिलाल चौथानी और जमाल शाह

83. राजपूताना के किस प्रमुख नेता ने प्रसिद्ध रूप से घोषणा की थी कि रियासतों का एक एकीकृत राजस्थान में विलय ही सच्चा उत्तरदायी शासन प्राप्त करने का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग है?
(A) माणिक्य लाल वर्मा
(B) हीरालाल शास्त्री
(C) जयनारायण व्यास
(D) गोकुलभाई भट्ट

84. राष्ट्रीय आंदोलन के साथ प्रजामंडल आंदोलन के विलय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1938 से पहले, प्रजामंडलों ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बिना किसी नैतिक समर्थन के पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से अपनी लड़ाई लड़ी।
II. हरिपुरा अधिवेशन ने स्पष्ट रूप से रियासतों की जनता को प्रजामंडलों के नाम पर नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए आंदोलन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया।
III. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, राजस्थान के सभी प्रजामंडलों ने अपने स्थानीय राजाओं को सफलतापूर्वक उखाड़ फेंका।
IV. 1945 के बाद, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस ने अपने अंतिम उद्देश्यों को एक एकीकृत, स्वतंत्र भारत की कांग्रेस की मांग के साथ प्रभावी रूप से जोड़ दिया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

85. अजमेर से प्रकाशित राष्ट्रवादी समाचार पत्र 'नवजीवन' के संपादक कौन थे, जिसने इस क्षेत्र में राजनीतिक जागृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(A) हरिभाऊ उपाध्याय
(B) रामनारायण चौधरी
(C) विजय सिंह पथिक
(D) जयनारायण व्यास

86. बूंदी प्रजामंडल की स्थापना 1931 में निम्नलिखित में से किस नेता द्वारा की गई थी?
(A) नयनूराम शर्मा
(B) ऋषि दत्त मेहता
(C) अभिन्न हरि
(D) कांतिलाल

87. कथन I और कथन II को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन I : राजपूताना में प्रजामंडल आंदोलनों को शुरू में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि अधिकांश ग्रामीण आबादी ब्रिटिश क्राउन के प्रति सक्रिय रूप से वफादार थी।
कथन II : रियासतों के शासकों ने अक्सर प्रमुख प्रजामंडल नेताओं को निर्वासित करने के लिए ब्रिटिश समर्थन और दमनकारी राज्य कानूनों का उपयोग किया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।

Click Here to Buy book on Amazon

(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

88. कानपुर से प्रकाशित एक प्रमुख समाचार पत्र 'प्रताप' ने राजस्थान में राजनीतिक और कृषक संघर्षों की ओर राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने में एक बड़ी भूमिका निभाई। इसके संपादक कौन थे?
(A) माखनलाल चतुर्वेदी
(B) बाल गंगाधर तिलक
(C) गणेश शंकर विद्यार्थी
(D) विजय सिंह पथिक

89. निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस का गठन
2. राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना
3. जयपुर प्रजामंडल का गठन
4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 2, 1, 4

90. राजस्थान में कौन-सा ब्रिटिश शासित क्षेत्र कई निर्वासित प्रजामंडल नेताओं और क्रांतिकारी समाचार पत्रों के लिए एक सुरक्षित आश्रय और कार्यस्थल के रूप में कार्य करता था?
(A) अजमेर-मेरवाड़ा
(B) माउंट आबू
(C) सांभर
(D) नीमच

91. राज्य के भीतर व्यापक कृषक असंतोष और तीव्र राजनीतिक आंदोलनों के बाद 1933 में अंग्रेजों द्वारा अलवर के किस शासक को अंततः अपदस्थ कर दिया गया था?
(A) महाराजा तेज सिंह
(B) महाराजा जय सिंह
(C) महाराजा मंगल सिंह
(D) महाराजा विनय सिंह

92. जोधपुर में 'विद्यार्थी भवन' युवा जागृति और राष्ट्रवादी गतिविधियों के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा। यह किस नेता की विचारधारा से गहराई से प्रभावित था?
(A) माणिक्य लाल वर्मा
(B) जयनारायण व्यास
(C) हीरालाल शास्त्री
(D) मथुरादास मथुर

93. 1938 में स्थापित 'मारवाड़ लोक परिषद' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) महाराजा की देखरेख में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना
(B) स्थानीय जागीरदारों की शक्तियों की बहाली की मांग करना
(C) मारवाड़ को एक स्वतंत्र संप्रभु राष्ट्र के रूप में अलग करने की वकालत करना
(D) राज्य प्रशासन में सख्त धार्मिक कट्टरवादिता को लागू करना

NODIA

94. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A) : बीकानेर प्रजामंडल को अपने शुरुआती वर्षों में बीकानेर राज्य की सीमाओं के भीतर मजबूत ज़मीनी गति बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा।
कारण (R) : महाराजा गंगा सिंह ने कठोर बीकानेर पब्लिक सेफ्टी एक्ट सहित गंभीर दमनकारी उपायों को लागू किया, जिससे राज्य के भीतर राजनीतिक संगठन बनाना लगभग असंभव हो गया।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

95. प्रेरणादायी पुस्तक 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' की रचना किसने की, जिसने मेवाड़ राज्य के निरंकुश प्रशासन की कड़ी आलोचना की?
(A) बलवंत सिंह मेहता
(B) भूरेलाल बया
(C) मोहनलाल सुखाड़िया
(D) माणिक्य लाल वर्मा

96. प्रजामंडल आंदोलन के दौरान, 'भील सेवा मंडल' संस्था जनजातीय आबादी के बीच चेतना जगाने में सक्रिय थी। यह किस राष्ट्रीय व्यक्तित्व के कार्य से अत्यधिक प्रभावित थी?
(A) महात्मा गांधी
(B) विनोबा भावे
(C) ठक्कर बापा
(D) बी.आर. आंबेडकर

97. राजस्थान की राजनीतिक जागृति में स्वामी दयानंद सरस्वती की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने 1883 में उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की।
II. उनकी 'स्वदेशी' और 'स्वराज' की शिक्षाओं ने राजस्थानी क्रांतिकारियों की शुरुआती पीढ़ी को गहराई से प्रभावित किया।
III. उन्होंने जयपुर में पहले प्रजामंडल की स्थापना के लिए सक्रिय रूप से वित्त पोषित किया।
ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

98. नीचे दो सूचियां दी गई हैं। सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

सूची I : नेता

P. अर्जुन लाल सेठी
Q. विजय सिंह पथिक
R. जमनालाल बजाज
S. हरिनारायण शर्मा

सूची II : स्थापित संस्था/संगठन

1. राजस्थान सेवा संघ
2. वाल्मीकि संघ
3. जैन वर्धमान विद्यालय
4. चरखा संघ

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

99. निम्नलिखित में से कौन-सा इन संगठनों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम प्रदान करता है?

(A) मारवाड़ हितकारिणी सभा, राजपूताना मध्य भारत सभा, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस, मारवाड़ लोक परिषद
(B) राजपूताना मध्य भारत सभा, मारवाड़ हितकारिणी सभा, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस, मारवाड़ लोक परिषद
(C) राजपूताना मध्य भारत सभा, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस, मारवाड़ हितकारिणी सभा, मारवाड़ लोक परिषद
(D) ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस, राजपूताना मध्य भारत सभा, मारवाड़ लोक परिषद, मारवाड़ हितकारिणी सभा

100. पूरे राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों की तुलनात्मक गतिशीलता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. मेवाड़ के आंदोलन को जयपुर की तुलना में अधिक निरंतर जमीनी कृषक समर्थन प्राप्त हुआ।
II. बीकानेर और भरतपुर जैसे राज्यों में, अत्यधिक दमन के कारण शुरुआती प्रजामंडलों को राज्य के क्षेत्रों से बाहर बनाना पड़ा था।
III. झालावाड़ में प्रजामंडल की स्थापना जयपुर की तुलना में बहुत पहले हुई थी।
IV. लगभग सभी प्रजामंडलों ने अंततः 1947–48 तक अपने संबंधित राज्यों के भारतीय संघ में विलय की मांग की।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) रियासती शासकों की छत्रछाया में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना
राजस्थान की देशी रियासतों में प्रजामंडल आंदोलनों की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य स्थानीय नरेशों के संरक्षण में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था। ये संगठन निरंकुश सामंती व्यवस्था, अत्यधिक करों और बेगार प्रथा के विरुद्ध नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए गठित किए गए थे। प्रजामंडलों ने प्रजा को लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया और सामाजिक सुधारों के साथ-साथ शिक्षा के व्यापक प्रसार में ऐतिहासिक योगदान दिया।

2. (D) रियासती शासकों द्वारा बड़े पैमाने पर भारी उद्योगों की स्थापना
राजस्थान में प्रारंभिक राजनीतिक जागृति के विकास में किसान तथा आदिवासी आंदोलनों, आर्य समाज के सुधारवादी विचारों, पाश्चात्य शिक्षा और पड़ोसी प्रांतीय आंदोलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। रियासती शासकों द्वारा भारी उद्योगों की स्थापना का इसमें कोई योगदान नहीं था, क्योंकि रियासतों में औद्योगिक विकास अत्यंत नगण्य था। सामंती अर्थव्यवस्था, भारी कर संरचना और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण औद्योगिक निवेश और आधुनिक कारखानों का नितांत अभाव रहा था।

3. (A) उदयपुर
'सज्जन कीर्ति सुधारक' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन उदयपुर (मेवाड़) रियासत से होता था। यह मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह के शासनकाल में शुरु किया गया था और इसे राज्य का प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र माना जाता है। इस पत्र ने क्षेत्र में सामाजिक-राजनीतिक चेतना के प्रसार, प्रशासनिक सुधारों की सूचना देने और जनता को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें नीतिगत विषयों और सामाजिक सुधारों से संबंधित प्रामाणिक आलेख प्रकाशित होते थे।

4. (B) 1879
'सज्जन कीर्ति सुधारक' समाचार पत्र का प्रथम प्रकाशन 1879 में मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह के संरक्षण में हुआ था। यह उदयपुर से प्रकाशित होने वाला एक प्रमुख साप्ताहिक समाचार पत्र था। इस पत्र के माध्यम से मेवाड़ रियासत में प्रशासनिक निर्णयों, राजकीय सूचनाओं और सामाजिक सुधार संबंधी विचारों का जनसामान्य में प्रसार किया जाता था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजपूताना में राजनीतिक और सामाजिक चेतना जगाने में इस पत्रिका का विशेष योगदान रहा।

5. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश भारतीय प्रांतों की तुलना में राजस्थान की देशी रियासतों में राजनीतिक चेतना का विलंब से उदय हुआ। इसका मुख्य कारण यह था कि 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के प्रारंभ में रियासतों में आधुनिक मध्यम वर्ग, उच्च शिक्षा संस्थानों और बुनियादी नागरिक स्वतंत्रताओं का घोर अभाव था। सामंती उत्पीड़न, निरंकुश शासन व्यवस्था और समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंधों ने जन-आंदोलनों और राजनीतिक गतिविधियों के त्वरित विकास को बाधित रखा, जिससे जागृति देर से आई।

6. (D) अर्जुन लाल सेठी
जयपुर में 'जैन वर्धमान विद्यालय' की स्थापना प्रसिद्ध क्रांतिकारी अर्जुन लाल सेठी द्वारा 1907 में की गई थी। बाह्य रुप से यह एक धार्मिक और शैक्षणिक संस्थान था, लेकिन वास्तविक रुप से यह देश के युवाओं को क्रांतिकारी गतिविधियों का गुप्त प्रशिक्षण देने का प्रमुख केंद्र था। यहाँ से शिक्षित युवाओं ने प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। अर्जुन लाल सेठी ने राजस्थान में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का बीजारोपण करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

NODIA

(B) जयपुर
राजपूताना क्षेत्र में सबसे पहले प्रजामंडल की स्थापना 1931 में जयपुर रियासत में हुई थी। यद्यपि 1931 में गठित जयपुर प्रजामंडल शुरुआती वर्षों में अधिक सक्रिय नहीं रह सका, फिर भी यह क्षेत्र का प्रथम राजनीतिक संगठन साबित हुआ। बाद में 1936 में जमनालाल बजाज और हीरालाल शास्त्री के प्रयासों से इसका पुनर्गठन किया गया, जिसके पश्चात इसने जयपुर राज्य में उत्तरदायी शासन और नागरिक स्वतंत्रताओं की प्राप्ति हेतु एक सशक्त जन-आंदोलन का रुप धारण कर लिया।

8. (C) कपूरचंद पाटनी
वर्ष 1931 में जब जयपुर प्रजामंडल का प्रारंभिक गठन हुआ, तब कपूरचंद पाटनी को इसका प्रथम अध्यक्ष बनाया गया था। उनके नेतृत्व में जयपुर में राजनीतिक चेतना फैलाने का प्रारंभिक प्रयास किया गया। यद्यपि तत्कालीन राजकीय प्रतिबंधों और अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में यह शुरुआती संगठन अधिक प्रभावी कार्य नहीं कर सका, लेकिन इसने भविष्य के व्यापक आंदोलनों की नींव रखी। 1936 में पुनर्गठन के बाद ही प्रजामंडल की गतिविधियां व्यापक स्तर पर संचालित हो सकीं।

9. (D) जमनालाल बजाज
वर्ष 1936 में जयपुर प्रजामंडल का पुनर्गठन प्रसिद्ध गांधीवादी नेता जमनालाल बजाज के नेतृत्व में किया गया था। पुनर्गठन के उपरांत हीरालाल शास्त्री जैसे प्रमुख नेताओं ने भी इसमें सक्रिय भूमिका निभाई। जमनालाल बजाज के मार्गदर्शन में प्रजामंडल ने अपने सांगठनिक ढांचे को मजबूत किया और रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना, कर राहत तथा नागरिक अधिकारों के लिए सत्याग्रह आयोजित किए। इस पुनर्गठन से जयपुर में राजनीतिक आंदोलनों को अभूतपूर्व गति प्राप्त हुई।

10. (A) हीरालाल शास्त्री
वर्ष 1942 में प्रसिद्ध 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' जयपुर राज्य के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल और जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री के बीच हस्ताक्षरित हुआ था। इस समझौते के तहत प्रजामंडल ने रियासत में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान प्रत्यक्ष आंदोलन न करने पर सहमति जताई, जबकि सरकार ने प्रजामंडल की जायज मांगों को स्वीकार करने का आश्वासन दिया। इस समझौते के कारण प्रजामंडल में आंतरिक मतभेद पैदा हुए, जिसके परिणामस्वरुप 'आज़ाद मोर्चा' का गठन हुआ।

11. (D) I, II और III
जयपुर में 'आज़ाद मोर्चा' का गठन 1942 में 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' से असंतुष्ट कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया था। इस संगठन की स्थापना बाबा हरिश्चंद्र, रामकरण जोशी और हंस डी. राय जैसे नेताओं ने की थी। इन्होंने जेंटलमैन एग्रीमेंट के विपरीत जयपुर राज्य में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रुप से भाग लिया और अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। वर्ष 1945 में जवाहरलाल नेहरु के मध्यस्थता प्रयासों के कारण आज़ाद मोर्चा का पुन: जयपुर प्रजामंडल में विलय हो गया।

12. (B) जयनारायण व्यास और भंवरलाल सर्राफ
मारवाड़ (जोधपुर) प्रजामंडल की स्थापना वर्ष 1934 में जयनारायण व्यास और भंवरलाल सर्राफ द्वारा की गई थी। भंवरलाल सर्राफ को इसका प्रथम अध्यक्ष चुना गया था। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य मारवाड़ रियासत में नागरिक अधिकारों की सुरक्षा, कुशासन का विरोध और उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना था। प्रजामंडल ने स्थानीय मुद्दों, जैसे अत्यधिक करों, बेगार प्रथा और प्रशासनिक मनमानी के खिलाफ जनजागरण अभियान चलाकर मारवाड़ क्षेत्र में व्यापक राजनीतिक चेतना जागृत करने का कार्य किया।

13. (A) मारवाड़ लोक परिषद
जब जोधपुर राज्य सरकार ने मारवाड़ प्रजामंडल पर प्रतिबंध लगा दिया, तब राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने मई 1938 में 'मारवाड़ लोक परिषद' का गठन किया। इस संस्था की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राज्य में उत्तरदायी शासन की मांग को निरंतर जारी रखना और जन-समस्याओं को उठाना था। रणछोड़दास गट्टानी इसके प्रथम अध्यक्ष बने तथा जयनारायण व्यास ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई। इस परिषद ने जागीरदारी प्रथा के विरोध और किसान आंदोलनों के समर्थन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

14. (C) जोधपुर
वर्ष 1936 में 'कृष्णा दिवस' का आयोजन जोधपुर रियासत (मारवाड़) से संबंधित राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया था। यह विरोध प्रदर्शन कृष्णा नाम की एक युवती के संदिग्ध अपहरण और राज्य प्रशासन की अकर्मण्यता तथा पक्षपातपूर्ण रवैये के खिलाफ आयोजित हुआ था। प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं ने इसे नागरिक स्वतंत्रता और नैतिक न्याय का मुद्दा बनाते हुए पूरे राज्य तथा बंबई में विरोध दिवस के रूप में मनाया, जिससे मारवाड़ के कुशासन की राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक निंदा हुई।

15. (D) जयनारायण व्यास
'मारवाड़ की अवस्था' और 'पोपाबाई की पोल' नामक प्रसिद्ध राजनीतिक पुस्तिकाओं के लेखक जयनारायण व्यास थे। इन पुस्तिकाओं के माध्यम से उन्होंने जोधपुर रियासत में व्याप्त कुशासन, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, सामंती उत्पीड़न और जनता पर थोपे गए भारी करों का करारा पर्दाफाश किया था। इन रचनाओं ने मारवाड़ क्षेत्र के लोगों में भारी राजनीतिक चेतना जगाई। राज्य सरकार ने इन पुस्तिकाओं को जब्त कर प्रतिबंधित कर दिया था, परंतु इनका व्यापक प्रचार-प्रसार गुप्त रुप से जारी रहा।

16. (C) बलवंत सिंह मेहता
मेवाड़ प्रजामंडल की औपचारिक स्थापना 24 अप्रैल 1938 को उदयपुर में हुई थी। इसके प्रथम अध्यक्ष बलवंत सिंह मेहता चुने गए थे, जबकि माणिक्य लाल वर्मा को इसका मुख्य सचिव बनाया गया था। प्रजामंडल का प्राथमिक लक्ष्य मेवाड़ रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना और नागरिक स्वतंत्रताओं को बहाल करना था। स्थापना के तुरंत बाद ही राज्य सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसके बाद इसके नेताओं ने निर्वासन में रहकर भी आंदोलन को जारी रखा।

17. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान में राजनीतिक जागृति फैलाने में समाचार पत्रों की केंद्रीय भूमिका रही है। 'राजस्थान समाचार' का संपादन मुंशी समर्थ दान द्वारा किया गया था। 'राजपूताना गजट' का संपादन मौलवी मुराद अली 'बीमार' ने किया था। 'तरुण राजस्थान' का कुशल संपादन जयनारायण व्यास द्वारा किया गया, जबकि अजमेर से प्रकाशित प्रसिद्ध पत्र 'त्याग भूमि' का संपादन हरिभाऊ उपाध्याय ने किया था। इन पत्रों ने रियासती अत्याचारों को उजागर कर जनता में निर्भीकता और राष्ट्रीय चेतना का संचार किया।

18. (D) धर्मनारायण काक
वर्ष 1938 में मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना के तुरंत बाद, मेवाड़ रियासत के तत्कालीन प्रधानमंत्री धर्मनारायण काक ने इसे गैर-कानूनी संगठन घोषित कर दिया था। सरकार ने प्रजामंडल की गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया और इसके मुख्य कार्यालयों को सील कर दिया। इसके अतिरिक्त माणिक्य लाल वर्मा सहित कई शीर्ष नेताओं को मेवाड़ राज्य की सीमा से निष्कासित कर दिया गया। इन कठोर प्रतिबंधों के बावजूद प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं ने अजमेर से अपना सत्याग्रह जारी रखा।

19. (A) जे.बी. कृपलानी
मेवाड़ प्रजामंडल का प्रथम वार्षिक अधिवेशन नवंबर 1941 में उदयपुर में आयोजित हुआ था। इस ऐतिहासिक अधिवेशन का उद्घाटन प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता और कांग्रेस के तत्कालीन महासचिव जे.बी. कृपलानी ने किया था। इस कार्यक्रम में विजयालक्ष्मी पंडित ने भी विशिष्ट अतिथि के रुप में भाग लिया था। इस अधिवेशन ने मेवाड़ में राजनीतिक आंदोलन को नई दिशा दी और राज्य प्रशासन पर उत्तरदायी सरकार गठित करने तथा नागरिक स्वतंत्रता देने के लिए भारी जन-दबाव निर्मित किया।

Click Here to Buy book on Flipkart

20. (C) कुंभलगढ़ किला
मेवाड़ प्रजामंडल आंदोलन के दौरान सत्याग्रह और राजनीतिक गतिविधियों का नेतृत्व करने के कारण माणिक्य लाल वर्मा को गिरफ्तार कर कुंभलगढ़ किले में बंदी बनाकर रखा गया था। जेल प्रवास के दौरान उन्हें अत्यंत कठोर यातनाएं दी गईं और अमानवीय व्यवहार सहना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने राज्य के उत्पीड़न के सामने झुकने से इनकार कर दिया। उनकी निष्ठा और बलिदान ने मेवाड़ की जनता को निरंकुश शासन के खिलाफ संगठित होकर संघर्ष करने के लिए अत्यधिक प्रेरित किया।

21. (A) कलकत्ता
बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना वर्ष 1936 में बीकानेर राज्य की सीमाओं से दूर कलकत्ता (कोलकाता) में की गई थी। उस समय बीकानेर रियासत में कठोर राजकीय दमन, पुलिस निगरानी और 'बीकानेर सुरक्षा अधिनियम' जैसे कड़े कानूनों के कारण राजनीतिक गतिविधियों का संचालन असंभव था। अतः बीकानेर के प्रवासियों और निष्कासित नेताओं ने कलकत्ता में संगठित होकर प्रजामंडल की स्थापना की ताकि बीकानेर के निरंकुश शासन के खिलाफ बाहर रहकर जनमत तैयार किया जा सके।

22. (D) मघाराम वैद्य
बीकानेर प्रजामंडल के मुख्य संस्थापक वैद्य मघाराम थे। उन्होंने 1936 में कलकत्ता में बीकानेर के अन्य प्रवासियों के सहयोग से इस संगठन की स्थापना की थी। बीकानेर रियासत में राजा के दमनकारी रवैये के कारण उन्होंने राज्य के बाहर रहकर बीकानेर की जनता के अधिकारों, उत्तरदायी सरकार की स्थापना और नागरिक स्वतंत्रताओं के लिए आवाज उठाई। उनके प्रयासों से बीकानेर में रियासती कुशासन के खिलाफ जन-जागरण का मार्ग प्रशस्त हुआ और भावी आंदोलनों को बल मिला।

23. (B) केवल I, II और IV
बीकानेर में राजनीतिक संघर्ष के दौरान जुलूस पर पुलिस गोलीबारी में बीरबल सिंह शहीद हुए, जिनकी याद में 1946 में 'बीरबल दिवस' मनाया गया। 1946 का 'कांगड़ कांड' किसानों पर हुए अत्याचार की प्रमुख घटना थी। रघुबर दयाल गोयल ने 1942 में 'बीकानेर राज्य प्रजा परिषद' की स्थापना की थी। महाराजा गंगा सिंह ने प्रजामंडल की मांगों का समर्थन नहीं किया, बल्कि दमनकारी नीतियां अपनाई थीं। अतः दिए गए कथनों में प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ सही हैं।

24. (C) नयनूराम शर्मा
हाड़ौती प्रजामंडल की स्थापना वर्ष 1934 में पंडित नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में हुई थी। पंडित नयनूराम शर्मा कोटा और हाड़ौती क्षेत्र में राजनीतिक चेतना के जनक माने जाते हैं। उन्होंने राजस्थान सेवा संघ के माध्यम से भी क्षेत्र में कृषक आंदोलनों और बेगार विरोधी अभियानों का संचालन किया था। हाड़ौती प्रजामंडल की स्थापना का मुख्य लक्ष्य कोटा और आसपास के क्षेत्रों में सामंती अत्याचारों को समाप्त करना और जनता को उनके मौलिक अधिकारों के प्रति सचेत करना था।

25. (D) उन्होंने शहर के प्रशासन पर अधिकार कर लिया और कोतवाली पर तिरंगा फहरा दिया।
1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कोटा प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं और स्थानीय जनता ने अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया। उन्होंने कोटा शहर के संपूर्ण प्रशासन पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और पुलिस कोतवाली पर राष्ट्रीय तिरंगा फहरा दिया। कुछ दिनों तक शहर का नियंत्रण आंदोलकारियों के हाथों में रहा और पुलिस को बैरकों में बंद रहना पड़ा। यह घटना राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में जन-शक्ति और अप्रतिम साहस का अनोखा उदाहरण मानी जाती है।

26. (A) हरिनारायण शर्मा
अलवर प्रजामंडल का गठन वर्ष 1938 में पंडित हरिनारायण शर्मा और कुंजबिहारी लाल मोदी के संयुक्त प्रयासों से हुआ था। पंडित हरिनारायण शर्मा ने अलवर राज्य में समाज सुधार, दलित उद्धार और शिक्षा के प्रसार हेतु व्यापक कार्य किया था। उन्होंने प्रजामंडल के माध्यम से रियासत में उत्तरदायी शासन, किसानों को राहत और नागरिक अधिकारों की बहाली की पुरजोर मांग की। उनके प्रयासों से अलवर की जनता में निरंकुश शासन के विरुद्ध संगठित होने का साहस बढ़ा।

27. (B) राजपूताना हरिजन सेवक संघ
पंडित हरिनारायण शर्मा ने अलवर में राजनीतिक चेतना लाने से पूर्व सामाजिक कुरीतियों और अस्पृश्यता को दूर करने के लिए कई संस्थाएं स्थापित कीं। उन्होंने 'अस्पृश्यता निवारक संघ', 'वाल्मीकि संघ' और 'आदिवासी संघ' की स्थापना करके दलितों और पिछड़ों के उत्थान हेतु कार्य किया। 'राजपूताना हरिजन सेवक संघ' प्रांतीय स्तर का संगठन था जिसकी स्थापना केंद्रीय स्तर पर गांधीवादी विचारों से प्रेरित होकर हुई थी, यह केवल हरिनारायण शर्मा द्वारा अलवर में व्यक्तिगत रूप से स्थापित संस्था नहीं थी।

28. (B) रेवाड़ी
भरतपुर रियासत में राजनीतिक गतिविधियों पर लगे कड़े प्रतिबंधों के कारण मार्च 1938 में भरतपुर प्रजामंडल की स्थापना राज्य की सीमा से बाहर रेवाड़ी (वर्तमान हरियाणा) में की गई थी। गोपी लाल यादव, किशन लाल जोशी और मास्टर आदित्येंद्र जैसे नेताओं ने रेवाड़ी में एकत्र होकर इस संगठन की नीव रखी। इसका उद्देश्य भरतपुर राज्य के भीतर उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना, नागरिक अधिकारों की रक्षा करना और सामंती शोषण के खिलाफ जनता को संगठित करना था।

29. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1938 का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन में कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर देशी रियासतों की जनता के स्वतंत्रता संग्राम को नैतिक और राजनीतिक समर्थन देने की आधिकारिक घोषणा की। इस नीतिगत बदलाव के बाद राजस्थान की लगभग सभी देशी रियासतों

Downloaded from www.pdf.tube

में तेजी से प्रजामंडलों की स्थापना हुई और आंदोलनों को नई दिशा प्राप्त हुई।

30. (C) गोपी लाल यादव
वर्ष 1938 में रेवाड़ी में गठित भरतपुर प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष गोपी लाल यादव को चुना गया था। किशन लाल जोशी के विशेष प्रयासों से स्थापित इस प्रजामंडल में मास्टर आदित्येंद्र और जुगल किशोर चतुर्वेदी जैसे नेताओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोपी लाल यादव के नेतृत्व में प्रजामंडल ने भरतपुर राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना और बेगार प्रथा के उन्मूलन के लिए आंदोलन चलाया, जिसके कारण राज्य सरकार को अंततः प्रजामंडल को मान्यता देनी पड़ी।

31. (D) बंबई
ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस (अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद) की स्थापना दिसंबर 1927 में हुई थी, और इसका प्रथम अधिवेशन बंबई (मुंबई) में आयोजित किया गया था। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य भारत की विभिन्न देशी रियासतों में चल रहे प्रजापरिषदों और प्रजामंडलों के आंदोलनों का समन्वय करना तथा शासकों की निरंकुशता के विरुद्ध एक एकीकृत मंच प्रदान करना था। इसने रियासती प्रजा के अधिकारों की लड़ाई को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

32. (C) दीवान बहादुर एम. रामचंद्र राव
वर्ष 1927 में बंबई में आयोजित ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष दीवान बहादुर एम. रामचंद्र राव थे। इस सम्मेलन में देश भर की देशी रियासतों के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें राजस्थान के विजय सिंह पथिक, जयनारायण व्यास और रामनारायण चौधरी प्रमुख थे। इस संगठन के माध्यम से रियासती जनता की मांगों को राष्ट्रीय कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाने का ढांचा तैयार किया गया।

33. (B) माणिक्य लाल वर्मा
प्रसिद्ध देशभक्ति गीत "पंछीड़ा" की रचना मेवाड़ के महान स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा द्वारा की गई थी। बिजोलिया किसान आंदोलन और मेवाड़ प्रजामंडल आंदोलन के दौरान यह गीत किसानों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इस गीत के प्रेरणादायी बोलों ने निरंकुश सामंती शासन के अत्याचारों को उजागर किया और साधारण ग्रामीण जनता के दिलों में अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने, त्याग करने और स्वतंत्रता प्राप्ति की तीव्र भावना जागृत की।

34. (D) उन्होंने 1931 में जयपुर प्रजामंडल के गठन का कड़ा विरोध किया था।
हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रमुख जननेता थे जिन्होंने 'शांता कुटीर' की स्थापना की, जो बाद में 'वनस्थली विद्यापीठ' के रूप में प्रसिद्ध हुई। उन्होंने प्रसिद्ध गीत "प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः" की रचना की और अपनी आत्मकथा 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र' लिखी। उन्होंने 1931 के जयपुर प्रजामंडल का विरोध नहीं किया था, बल्कि 1936 में इसके पुनर्गठन में जमनालाल बजाज के साथ अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और बाद में इसके अध्यक्ष भी बने।

35. (A) 2, 4, 3, 1
प्रजामंडलों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम जयपुर, मारवाड़, बीकानेर और मेवाड़ है। जयपुर प्रजामंडल की स्थापना सर्वप्रथम 1931 में हुई थी। इसके बाद मारवाड़ प्रजामंडल की स्थापना 1934 में की गई। बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना 1936 में हुई, जबकि मेवाड़ प्रजामंडल का गठन 24 अप्रैल 1938 को संपन्न हुआ। अतः इन प्रजामंडलों की स्थापना का सही ऐतिहासिक क्रम 2, 4, 3, 1 है, जो राजस्थान के राजनीतिक इतिहास को दर्शाता है।

36. (C) नारायणी देवी वर्मा
वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उदयपुर में राज्य के दमनकारी रवैये के खिलाफ महिलाओं के विशाल जुलूस का नेतृत्व नारायणी देवी वर्मा ने किया था। वे स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी थीं। आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें अपने छोटे बच्चे के साथ जेल जाना पड़ा और कठोर कारावास भुगतना पड़ा। जेल से रिहा होने के बाद भी उन्होंने महिला शिक्षा, खादी प्रचार और मेवाड़ में राजनीतिक चेतना के लिए निरंतर कार्य किया।

37. (A) वर्धा
राजस्थान सेवा संघ की स्थापना वर्ष 1919 में महाराष्ट्र के वर्धा नामक स्थान पर की गई थी। महात्मा गांधी की प्रेरणा से विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरि भाई किंकर ने मिलकर इस संस्था का गठन किया था। इसका मुख्य उद्देश्य राजपूताना की रियासतों में व्याप्त सामंती शोषण, अत्यधिक लाग-बाग और बेगार प्रथा का विरोध करना तथा जनता में राजनीतिक चेतना जगाना था। वर्धा से संघ ने 'राजस्थान केसरी' नामक समाचार पत्र भी निकाला।

38. (D) अजमेर
राजस्थान सेवा संघ का मुख्यालय वर्ष 1920 में वर्धा से स्थानांतरित करके अजमेर लाया गया था। अजमेर सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन था और भौगोलिक दृष्टि से राजपूताना के केंद्र में स्थित था, जिससे विभिन्न रियासतों में चल रहे किसान आंदोलनों और प्रजामंडल गतिविधियों का समन्वय करना आसान था। अजमेर आने के बाद संघ ने 'नवीन राजस्थान' समाचार पत्र प्रकाशित किया और बिजोलिया तथा बेगूं किसान आंदोलनों को प्रभावी नेतृत्व प्रदान कर जन-जागरण का केंद्र बना।

39. (B) जमनालाल बजाज
राजस्थान सेवा संघ की स्थापना 1919 में वर्धा में विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरि भाई किंकर द्वारा की गई थी। जमनालाल बजाज इस संघ के मूल संस्थापक सदस्यों में शामिल नहीं थे, यद्यपि वे एक महान गांधीवादी नेता थे और उन्होंने बाद में जयपुर प्रजामंडल तथा चरखा संघ के माध्यम से राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में अत्यधिक महत्वपूर्ण वित्तीय और नैतिक योगदान दिया था। संघ के संचालन में पथिक जी की केंद्रीय भूमिका थी।

NODIA

40. (C) मारवाड़ (जोधपुर)

13 मार्च 1947 को घटित भीषण 'डाबड़ा कांड' मारवाड़ (जोधपुर) रियासत के डीडवाना परगने के डाबड़ा गांव में हुआ था। यहाँ किसान सम्मेलन में एकत्र हुए निहत्थे किसानों और मारवाड़ लोक परिषद के कार्यकर्ताओं पर जागीरदारों और उनके सशस्त्र गुंडों ने बर्बरतापूर्वक हमला कर दिया था। इस घटना में चुन्नीलाल शर्मा, रुघाराम सहित कई किसान शहीद हुए और मथुरादास मथुर जैसे नेता गंभीर रूप से घायल हुए। इस त्रासदी ने सामंती क्रूरता को उजागर किया।

41. (D) उन्होंने उत्तरदायी सरकार की मांग की, जिससे शासकों की निरंकुश शक्ति और सामंती विशेषाधिकारों को प्रत्यक्ष खतरा था।

राजपूताना के रियासती शासकों द्वारा प्रजामंडल कार्यकर्ताओं का कठोर दमन करने का सबसे प्रमुख कारण यह था कि प्रजामंडल राजाओं के अधीन उत्तरदायी शासन की स्थापना और सामंती विशेषाधिकारों की समाप्ति की मांग कर रहे थे। इससे नरेशों की निरंकुश सत्ता, स्वेच्छाचारी अधिकारों और जागीरदारों के अनुचित कर वसूलने के विशेषाधिकारों पर सीधा प्रहार होता था। अपनी सत्ता खोने के डर से शासकों ने प्रजामंडलों को गैर-कानूनी घोषित किया और दमनकारी तरीके अपनाए।

42. (D) I, II और III

बलवंत सिंह मेहता मेवाड़ के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। वे 1938 में स्थापित मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष बने। उन्होंने मेवाड़ में राष्ट्रीय चेतना और महाराणा प्रताप के स्वाभिमान को पुनर्जीवित करने के लिए उदयपुर में 'प्रताप सभा' की स्थापना की थी। इसके अतिरिक्त भारत के संविधान निर्माण के समय उन्होंने संविधान सभा में मेवाड़ रियासत के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया और हस्ताक्षर किए। अतः दिए गए तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

43. (B) अंजना देवी चौधरी

राजनीतिक और किसान आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी के कारण गिरफ्तार होने वाली राजस्थान की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी अंजना देवी चौधरी थीं। वे प्रसिद्ध नेता रामनारायण चौधरी की पत्नी थीं। उन्होंने बिजोलिया और बेगूं के किसान आंदोलनों में महिलाओं को संगठित किया तथा रियासती दमन का निर्भीकता से सामना किया। 1921 से 1924 के दौरान उन्हें अपने क्रांतिकारी कार्यों और सामंती विरोध के कारण गिरफ्तार कर रियासत से निष्कासित किया गया था।

44. (B) डूंगरपुर

ऐतिहासिक 'रास्तापाल कांड'जून 1947 में डूंगरपुर रियासत में हुआ था। डूंगरपुर राज्य की पुलिस प्रजामंडल द्वारा संचालित पाठशाला को जबरन बंद कराने आई थी। जब शिक्षक सेंगाभाई को पुलिस गाड़ी के पीछे घसीट रही थी, तब 13 वर्षीया भील बालिका काली बाई ने अपनी दांतेली से रस्सी काटकर शिक्षक को बचाया। इस दौरान पुलिस की गोलियों से काली बाई शहीद हो गई। उनका यह बलिदान राजस्थान में शिक्षा और गुरु-भक्ति का अमर प्रतीक बन गया।

45. (A) भोगीलाल पंड्या

'वागड़ के गांधी' के नाम से प्रसिद्ध भोगीलाल पंड्या ने डूंगरपुर में आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के उत्थान हेतु 'हरिजन आश्रम' की स्थापना की थी। उन्होंने वागड़ क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार, समाज सुधार और जनजातीय चेतना के लिए निरंतर प्रयास किए। 1944 में उन्होंने डूंगरपुर प्रजामंडल की स्थापना की और रियासती अत्याचारों के खिलाफ अहिंसक संघर्ष का नेतृत्व किया। उनके कार्यों ने डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना का आधार तैयार किया।

46. (C) 1938 से पहले, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने देशी रियासतों के सदस्यों को कांग्रेस अधिवेशनों में भाग लेने से पूरी तरह से प्रतिबंधित कर रखा था।

1938 से पूर्व भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में देशी रियासतों के प्रतिनिधि व्यक्तिगत क्षमता में नियमित रूप से भाग लेते थे। कांग्रेस ने उन पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया था, यद्यपि 1938 के हरिपुरा अधिवेशन से पहले कांग्रेस की नीति रियासतों के आंतरिक मामलों में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप न करने की थी। 1938 के बाद कांग्रेस ने आधिकारिक रूप से प्रजामंडल आंदोलनों को अपना समर्थन देना शुरू किया और रियासती आंदोलनों को राष्ट्रीय धारा से जोड़ दिया।

47. (D) हरि भाई किंकर

बिजोलिया में 'विद्या प्रचारिणी सभा' की स्थापना हरि भाई किंकर द्वारा की गई थी। इस संस्था का प्राथमिक उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार करना और युवाओं को नैतिक तथा बौद्धिक रूप से सशक्त बनाना था। बाद में विजय सिंह पथिक और साधु सीताराम दास इस संस्था से जुड़े और इसे किसानों के बीच राजनीतिक चेतना जगाने का सशक्त माध्यम बनाया। इस सभा के पुस्तकालय और वाचनालय क्रांतिकारियों की गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन गए थे।

48. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2

राजस्थान के प्रजामंडल आंदोलनों में महिला नेताओं का अमूल्य योगदान रहा। रमा देवी ने जयपुर रियासत में महिलाओं को संगठित किया और सत्याग्रह में भाग लिया। नारायणी देवी वर्मा ने मेवाड़ (उदयपुर) में प्रजामंडल गतिविधियों और महिला शिक्षा का नेतृत्व किया। सावित्री देवी भाटी मारवाड़ (जोधपुर) लोक परिषद की प्रमुख महिला कार्यकर्ता थीं, जबकि सरस्वती बोहरा ने भरतपुर रियासत में राजनीतिक चेतना फैलाने और दमन के विरुद्ध आवाज उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

49. (B) जयनारायण व्यास

मारवाड़ के युवाओं में राजनीतिक चेतना का संचार करने और उन्हें संगठित करने के उद्देश्य से वर्ष 1931 में 'मारवाड़ यूथ लीग' की स्थापना की गई थी। इसके मुख्य सूत्रधार और प्रेरणास्रोत जयनारायण व्यास थे। इस लीग ने जोधपुर के नवयुवकों को स्वदेशी, नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन की मांग से जोड़ा। मारवाड़ यूथ लीग की क्रांतिकारी गतिविधियों और बढ़ती लोकप्रियता से घबराकर जोधपुर राज्य सरकार ने इस पर शीघ्र ही प्रतिबंध लगा दिया था।

Click Here to Buy book on Amazon

50. (D) अजमेर
'राजपूताना मध्य भारत सभा' की स्थापना 1918 में दिल्ली के चांदनी चौक स्थित मारवाड़ी पुस्तकालय में हुई थी, परंतु इसका मुख्य कार्यालय या मुख्यालय अजमेर में स्थापित किया गया था। अजमेर ब्रिटिश शासित क्षेत्र होने के कारण रियासती दमन से मुक्त था और यहाँ से पूरे राजपूताना और मध्य भारत की रियासतों में राजनीतिक गतिविधियों का संचालन सुगमता से किया जा सकता था। इस सभा ने रियासती प्रजा की समस्याओं को राष्ट्रीय पटल पर रखा।

51. (A) अजमेर
'राजस्थान टाइम्स' नामक अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन 1885 में अजमेर से शुरू हुआ था। इस पत्र ने राजपूताना की देशी रियासतों में व्याप्त प्रशासनिक भ्रष्टाचार, सामंती उत्पीड़न और जन-समस्याओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चूंकि अजमेर सीधे ब्रिटिश प्रांतीय प्रशासन के अधीन था, इसलिए वहाँ से निष्पक्ष पत्रकारिता करना अपेक्षाकृत सुलभ था। इस समाचार पत्र ने अंग्रेजी शिक्षित वर्ग और ब्रिटिश अधिकारियों तक रियासती दुर्दशा की जानकारी पहुँचाने का काम किया।

52. (C) अर्जुन लाल सेठी
प्रसिद्ध क्रांतिकारी अर्जुन लाल सेठी को जब जयपुर महाराजा द्वारा उच्च प्रशासनिक पद का प्रस्ताव दिया गया, तो उन्होंने स्वाभिमानपूर्वक कहा था, "यदि मैं राज्य की नौकरी करूँगा, तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा?" इसके बाद उन्होंने राजकीय सेवा का त्याग कर दिया और युवाओं को क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित करने हेतु 'जैन वर्धमान विद्यालय' स्थापित किया। वे राजस्थान में सशस्त्र क्रांति और राजनीतिक चेतना के महान अग्रदूत माने जाते हैं।

53. (A) रामनारायण चौधरी
वर्ष 1931 में अजमेर में 'राजपूताना देशी राज्य प्रजा परिषद' का प्रथम प्रांतीय अधिवेशन आयोजित किया गया था। इस ऐतिहासिक अधिवेशन की अध्यक्षता प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और राजस्थान सेवा संघ के प्रमुख नेता रामनारायण चौधरी ने की थी। इस सम्मेलन में राजपूताना की विभिन्न रियासतों से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया और देशी राज्यों में निरंकुश शासन समाप्त कर उत्तरदायी सरकार स्थापित करने तथा नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान करने संबंधी प्रस्ताव पारित किए।

54. (A) केवल I, II और III
'नवीन राजस्थान' का प्रकाशन राजस्थान सेवा संघ द्वारा अजमेर से किया जाता था। जब राज्य सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगाया, तो इसका नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' कर दिया गया। इस पत्र ने बिजोलिया और बेगूं के किसान आंदोलनों को व्यापक प्रचार दिया। राजस्थानी भाषा का पहला राजनीतिक समाचार पत्र 'आगीबाण' था, परंतु इसका संपादन जयनारायण व्यास ने किया था, न कि हीरालाल शास्त्री ने। अतः प्रथम तीन कथन सही हैं और चौथा कथन असत्य है।

55. (B) जोधपुर शहर, अचलेश्वर शर्मा के नेतृत्व में
'प्रजासेवक' एक आक्रामक राष्ट्रवादी साप्ताहिक समाचार पत्र था जो जोधपुर से अचलेश्वर प्रसाद शर्मा 'मामू' के संपादन में प्रकाशित होता था। इस पत्र ने मारवाड़ लोक परिषद और राजस्थान के विभिन्न प्रजामंडल आंदोलनों का पुरजोर समर्थन किया। इसने सामंती जुल्मों, पुलिस बर्बरता और रियासती कुशासन के खिलाफ निर्भीक लेख प्रकाशित किए। 'प्रजासेवक' ने मारवाड़ क्षेत्र की जनता को जागरूक करने और प्रजामंडल के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने में अग्रणी भूमिका निभाई।

56. (C) धौलपुर प्रजामंडल
11 अप्रैल 1947 को घटित 'तसीमो कांड' धौलपुर प्रजामंडल के इतिहास की अत्यंत प्रेरणादायी और दुखद घटना है। धौलपुर के तसीमो गांव में प्रजामंडल की सभा के दौरान रियासती पुलिस ने राष्ट्रीय तिरंगे झंडे को उतारने का प्रयास किया। झंडे की आन-बान-शान की रक्षा करते हुए छत्तर सिंह और पंचम सिंह नामक वीर कार्यकर्ताओं ने पुलिस की गोलियों का सामना किया और शहीद हो गए। इस घटना ने धौलपुर में स्वतंत्रता संघर्ष को अत्यधिक तीव्र कर दिया।

NODIA

57. (D) कृष्णदत्त पालीवाल और ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु
धौलपुर प्रजामंडल की स्थापना वर्ष 1936 में कृष्णदत्त पालीवाल और ज्वाला प्रसाद 'जिज्ञासु' द्वारा की गई थी। उनके साथ जोहरी लाल शर्मा जैसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं ने भी मुख्य भूमिका निभाई। इस प्रजामंडल का उद्देश्य धौलपुर रियासत में फैली निरंकुशता को समाप्त करना, बेगार प्रथा का विरोध करना और जनता को उत्तरदायी शासन का अधिकार दिलाना था। प्रजामंडल के प्रयासों से धौलपुर में सामंती शोषण के विरुद्ध एक मजबूत जन-आंदोलन खड़ा हुआ।

58. (A) प्रतापगढ़ प्रजामंडल – मांगीलाल भव्य
प्रतापगढ़ प्रजामंडल की स्थापना 1945 में अमृतलाल पायक और चुन्नीलाल प्रभाकर द्वारा की गई थी, जबकि मांगीलाल भव्य ने 1946 में झालावाड़ प्रजामंडल की स्थापना की थी। अन्य सभी युग्म सही हैं: सिरोही प्रजामंडल की स्थापना गोकुलभाई भट्ट ने की, बांसवाड़ा प्रजामंडल की स्थापना भूपेंद्र नाथ त्रिवेदी ने की और जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना मीठालाल व्यास ने जोधपुर में की थी। अतः विकल्प A असंगत और गलत युग्म है।

59. (B) कन्हैयालाल मित्तल और मांगीलाल भव्य
झालावाड़ प्रजामंडल की स्थापना नवंबर 1946 में मांगीलाल भव्य, कन्हैयालाल मित्तल और मकबूल आलम द्वारा की गई थी। इसे राजपूताना में स्थापित अंतिम प्रजामंडल माना जाता है। झालावाड़ के तत्कालीन शासक राणा हरिश्चंद्र ने दमनकारी नीति अपनाने के बजाय प्रजामंडल की गतिविधियों का समर्थन किया और राज्य में उत्तरदायी सरकार की स्थापना की दिशा में सकारात्मक कदम उठाए, जिससे यह आंदोलन शांतिपूर्ण और सफल रहा।

60. (B) कपूरचंद पाटनी, बलवंत सिंह मेहता, मघाराम वैद्य, भंवरलाल सर्राफ
प्रजामंडलों के प्रारंभिक स्थापना चरणों के अध्यक्षों का सही क्रम इस प्रकार है: 1931 में गठित जयपुर प्रजामंडल के प्रथम

अध्यक्ष कपूरचंद पाटनी थे। 1938 में स्थापित मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष बलवंत सिंह मेहता थे। 1936 में स्थापित बीकानेर प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष मघाराम वैद्य थे तथा 1934 में गठित मारवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष भंवरलाल सर्राफ थे। अतः विकल्प B पूरी तरह से सही अनुक्रम प्रस्तुत करता है।

61. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
प्रजामंडल आंदोलनों ने शुरुआत में रियासती शासकों को पद से हटाने की मांग नहीं की, बल्कि उनकी छत्रछाया में उत्तरदायी सरकार और नागरिक अधिकारों की मांग की। इसलिए प्रथम कथन गलत है। ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस ने भी अपनी शुरुआती नीति में राजतंत्र के उन्मूलन के बजाय शासकों के अधीन लोकतांत्रिक सुधारों की वकालत की थी, अतः द्वितीय कथन सही है। बाद में परिस्थितियां बदलने पर एकीकरण की मांग उठी।

62. (C) जोधपुर
वर्ष 1942 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की गिरफ्तारी के विरोध में मारवाड़ (जोधपुर) रियासत में अभूतपूर्व छात्र हड़ताल और व्यापक राजनीतिक उथल-पुथल देखी गई थी। जोधपुर के छगनराज चौपासनीवाला और अन्य युवा नेताओं के आह्वान पर विद्यार्थियों ने शिक्षण संस्थानों का बहिष्कार किया और विशाल जुलूस निकाले। जोधपुर मारवाड़ लोक परिषद के तत्वावधान में राजनीतिक चेतना का एक प्रमुख केंद्र था, जहाँ राष्ट्रीय स्तर की घटनाओं का गहरा और त्वरित प्रभाव पड़ता था।

63. (D) विजय सिंह पथिक
'वीर भारत समाज' की स्थापना वर्ष 1910 में विजय सिंह पथिक और राव गोपाल सिंह खरवा द्वारा की गई थी। इस गुप्त संगठन का मुख्य उद्देश्य राजपूताना के युवाओं और सामंतों में देशभक्ति की भावना भरना तथा उन्हें अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र क्रांति के लिए संगठित व प्रशिक्षित करना था। इस संगठन ने रासबिहारी बोस और सचिंद्रनाथ सान्याल की सशस्त्र क्रांति योजना से जुड़कर राजस्थान में क्रांतिकारी नेटवर्क का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

64. (C) माणिक्य लाल वर्मा
डूंगरपुर रियासत के सागवाड़ा में 'खांडलाई आश्रम' की स्थापना माणिक्य लाल वर्मा द्वारा की गई थी। इस आश्रम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य वागड़ क्षेत्र के भील आदिवासियों में शिक्षा का प्रसार करना, सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना और उनमें राजनीतिक चेतना का विकास करना था। इस संस्था ने जनजातीय आबादी को संगठित कर उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया और प्रजामंडल आंदोलन के लिए एक सुदृढ़ सामाजिक आधार तैयार किया।

65. (B) ऋषि दत्त मेहता
'राजस्थान वीकली' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन वर्ष 1923 में ब्यावर से प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी ऋषि दत्त मेहता द्वारा प्रारंभ किया गया था। इस पत्र ने बूंदी, हाड़ौती और आसपास की रियासतों में व्याप्त सामंती शोषण, किसानों पर अत्याचार और बेगार प्रथा के खिलाफ निरंतर आवाज उठाई। ब्यावर ब्रिटिश शासित क्षेत्र होने के कारण इस समाचार पत्र को रियासती प्रतिबंधों से मुक्ति मिली, जिससे यह जन-आंदोलनों का एक प्रमुख मुखपत्र बन सका।

66. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जयपुर में अर्जुन लाल सेठी द्वारा स्थापित 'जैन वर्धमान विद्यालय' जैसी संस्थाओं ने राजनीतिक जागृति में दोहरी भूमिका निभाई। बाह्य रूप से ये विद्यालय धार्मिक और आधुनिक शिक्षा प्रदान करते थे, परंतु गुप्त रूप से ये क्रांतिकारियों की भर्ती और उन्हें ब्रिटिश विरोधी सशस्त्र संघर्ष का प्रशिक्षण देने के प्रमुख केंद्र थे। जोरावर सिंह बारहठ और प्रताप सिंह बारहठ जैसे क्रांतिकारियों का संबंध इसी संस्थान से था, जिसने क्रांति की ज्वाला को प्रज्वलित रखा।

67. (A) मेवाड़ (उदयपुर)
'देश हितैषिणी सभा' की स्थापना 2 जुलाई 1877 को मेवाड़ (उदयपुर) के महाराणा सज्जन सिंह की अध्यक्षता में हुई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राजपूत समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, जैसे विवाह पर अत्यधिक फिजूलखर्ची और बहुविवाह प्रथा को मर्यादित करना था। यद्यपि यह एक सामाजिक सुधार संगठन था, परंतु इसने मेवाड़ के सामंतों और प्रबुद्ध नागरिकों को एक मंच पर लाकर भावी राजनीतिक जागृति और सांगठनिक चेतना का आधार तैयार किया।

68. (C) नारायणी देवी वर्मा ने महिला शिक्षा और स्वावलंबन के लिए भीलवाड़ा में 'महिला आश्रम' की स्थापना की।
प्रजामंडल आंदोलन के दौरान महिलाओं ने असाधारण भूमिका निभाई। नारायणी देवी वर्मा ने 1944 में भीलवाड़ा में 'महिला आश्रम' की स्थापना की, जिसने महिलाओं में शिक्षा, स्वावलंबन और राजनीतिक चेतना फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि महिलाओं ने सार्वजनिक आंदोलनों में खुलकर भाग लिया, रतन शास्त्री को मेवाड़ से निष्कासित नहीं किया गया था और सावित्री देवी भाटी ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस की अध्यक्ष नहीं थीं।

69. (A) जयनारायण व्यास
राजस्थानी भाषा का पहला राजनीतिक समाचार पत्र 'आगीबाण' (अग्निबाण) वर्ष 1932 में ब्यावर से जयनारायण व्यास द्वारा शुरु किया गया था। स्थानीय मारवाड़ी/राजस्थानी भाषा में प्रकाशित होने के कारण यह पत्र आम ग्रामीण जनता और किसानों से सीधे जुड़ने में सफल रहा। इसने रियासती शोषण, जागीरदारी अत्याचारों और उत्तरदायी शासन की मांग को अपनी ओजस्वी भाषा में प्रस्तुत किया, जिससे पूरे राजपूताना में व्यापक राजनीतिक जागृति फैली।

70. (D) मेवाड़ प्रजामंडल
दमनकारी राजकीय परिस्थितियों के कारण बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना कलकत्ता में, भरतपुर प्रजामंडल की स्थापना रेवाड़ी में और सिरोही प्रजामंडल की स्थापना बंबई में रियासती सीमाओं से बाहर की गई थी। इसके विपरीत, मेवाड़ प्रजामंडल

Downloaded from www.pdf.tube

की स्थापना 1938 में उदयपुर (मेवाड़ राज्य की सीमा के भीतर) में बलवंत सिंह मेहता के निवास पर की गई थी। अतः मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना के स्थान का विकल्प दिए गए अन्य प्रजामंडलों से पूरी तरह असंगत है।

71. (B) स्वामी गोपाल दास
बीकानेर की प्रसिद्ध संस्था 'सर्व हितकारिणी सभा' की स्थापना 1907 में स्वामी गोपाल दास द्वारा चूरू में की गई थी। इसे 'बीकानेर की कांग्रेस' भी कहा जाता था। इस सभा ने समाज के शोषित वर्गों के लिए 'कबीर पाठशाला' और बालिकाओं की शिक्षा के लिए 'पुत्री पाठशाला' शुरु की। स्वामी गोपाल दास ने इन शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से बीकानेर की जनता में सामाजिक सुधारों के साथ-साथ अभूतपूर्व राजनीतिक चेतना और देशभक्ति की भावना का संचार किया।

72. (B) केवल III
राजपूताना मध्य भारत सभा का गठन 1918 में दिल्ली में हुआ था और जमनालाल बजाज इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गए थे। इस सभा का प्राथमिक उद्देश्य राजनीतिक गतिविधियों को केवल अजमेर तक सीमित रखना नहीं था, बल्कि पूरे राजपूताना और मध्य भारत की देशी रियासतों में प्रजा के अधिकारों की रक्षा करना और उत्तरदायी शासन स्थापित करना था। अतः केवल तीसरा कथन गलत है, जबकि पहला और दूसरा कथन पूरी तरह सही हैं।

73. (D) आज़ाद मोर्चा
1942 में हीरालाल शास्त्री और मिर्जा इस्माइल के बीच हुए जेंटलमैन एग्रीमेंट के तहत जयपुर प्रजामंडल ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग न लेने का निर्णय लिया। इस निर्णय से असंतुष्ट होकर बाबा हरिश्चंद्र, रामकरण जोशी और हंस डी. राय जैसे उग्रवादी कार्यकर्ताओं ने 'आज़ाद मोर्चा' का गठन किया। इस गुट ने समझौते की कड़ी आलोचना की और जयपुर रियासत में भारत छोड़ो आंदोलन का आक्रामक संचालन करते हुए अंग्रेजों के खिलाफ सीधा संघर्ष छेड़ा।

74. (A) जयनारायण व्यास
वर्ष 1923 में जयनारायण व्यास ने निष्क्रिय पड़ी 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' का पुनर्गठन किया। उन्होंने इस संगठन में नई ऊर्जा फूंकी और इसे मारवाड़ रियासत के प्रशासनिक भ्रष्टाचार, जागीरदारी उत्पीड़न और अन्यायी करों के विरुद्ध एक शक्तिशाली राजनीतिक मंच में बदल दिया। व्यास जी के कुशल नेतृत्व में इस सभा ने मारवाड़ के लोगों के नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई सफल आंदोलन चलाए और जनजागरण का मार्ग प्रशस्त किया।

75. (B) बीकानेर
चूरू का ऐतिहासिक 'धर्म स्तूप' बीकानेर रियासत के प्रशासनिक क्षेत्र में स्थित था। 26 जनवरी 1930 को, जब पूरा देश प्रथम स्वाधीनता दिवस मना रहा था, तब स्वामी गोपाल दास, चंदनमल बहड़ और उनके क्रांतिकारी सहयोगियों ने बीकानेर राज्य के कड़े दमन की परवाह न करते हुए इस स्तूप पर निर्भीकता से भारतीय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया था। यह घटना बीकानेर रियासत में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय मानी जाती है।

76. (B) जोधपुर
वर्ष 1938 में प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता सुभाष चंद्र बोस ने जोधपुर (मारवाड़) रियासत का दौरा किया था। उनके आगमन और ओजस्वी भाषणों से जोधपुर के युवाओं और राजनीतिक कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह का संचार हुआ। उनके इस ऐतिहासिक दौरे ने मारवाड़ लोक परिषद के गठन और प्रजामंडल आंदोलन को अत्यधिक गति प्रदान की। युवाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर अधिक आक्रामक और संगठित रुप से प्रस्तुत करना शुरु किया।

77. (A) डूंगरपुर
'पूनावाड़ा कांड' डूंगरपुर रियासत से संबंधित एक प्रमुख दमनकारी घटना है। मई 1947 में डूंगरपुर राज्य की पुलिस ने पूनावाड़ा गांव में प्रजामंडल द्वारा संचालित पाठशाला को बंद कराने का प्रयास किया। जब अध्यापक शिवराम भील ने स्कूल बंद करने से मना कर दिया, तो पुलिस ने उन पर अमानवीय अत्याचार किए और बर्बरतापूर्वक पीटा। रास्तापाल कांड की तरह ही यह घटना भी डूंगरपुर रियासत द्वारा जन-शिक्षा और प्रजामंडल आंदोलन पर किए गए कठोर दमन को दर्शाती है।

78. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों के दौरान कई ऐतिहासिक घटनाएं हुईं। डाबड़ा कांड मारवाड़ रियासत में किसानों पर हुए अत्याचार से जुड़ा है। रास्तापाल कांड डूंगरपुर रियासत में बालिका काली बाई के बलिदान से संबंधित है। कांगड़ कांड बीकानेर रियासत में कृषकों पर हुए शोषण की घटना है, जबकि तसीमो कांड धौलपुर रियासत में तिरंगे की रक्षा करते हुए शहीदों के बलिदान से संबंधित है। अतः सही सुमेलित क्रम P-4, Q-3, R-2, S-1 है।

79. (D) शांता त्रिवेदी
वर्ष 1947 में उदयपुर में 'राजस्थान महिला परिषद' की स्थापना शांता त्रिवेदी द्वारा की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करना, उन्हें शिक्षित बनाना और उनमें राजनीतिक चेतना जागृत करना था। शांता त्रिवेदी के नेतृत्व में इस परिषद ने मेवाड़ क्षेत्र में महिलाओं को प्रजामंडल आंदोलनों में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित किया और स्वतंत्रता संग्राम में नारी शक्ति के योगदान को एक नया आयाम दिया।

80. (B) 1934
जोधपुर राज्य सरकार द्वारा नागरिक स्वतंत्रताओं का दमन करने और प्रजामंडल की राजनीतिक गतिविधियों को रोकने के लिए 'मारवाड़ पब्लिक सोसाइटी ऑर्डिनेंस' वर्ष 1934 में जारी किया गया था। इस अध्यादेश के तहत बिना सरकारी अनुमति के किसी भी संगठन की स्थापना, सार्वजनिक सभा के आयोजन और जुलूस निकालने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसके बावजूद जयनारायण व्यास और अन्य कार्यकर्ताओं ने गुप्त रुप से अपना सत्याग्रह आंदोलन जारी रखा।

NODIA

81. (B) खादी, ग्रामीण स्वावलंबन और रचनात्मक राजनीतिक कार्य को बढ़ावा देना
जमनालाल बजाज द्वारा जयपुर में स्थापित 'चरखा संघ' का मुख्य ध्यान खादी के प्रचार-प्रसार, ग्रामीण स्वावलंबन और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने पर था। इस संघ ने केवल सूत कातने तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि ग्रामीण जनता को सामाजिक सुधारों, अस्पृश्यता निवारण और राजनीतिक अधिकारों के प्रति सचेत करने का एक सशक्त अहिंसक माध्यम बनाया, जिससे जयपुर प्रजामंडल आंदोलन को एक व्यापक जनाधार प्राप्त हो सका।

82. (D) कांतिलाल चौथानी और जमाल शाह
किशनगढ़ प्रजामंडल की स्थापना वर्ष 1939 में कांतिलाल चौथानी और जमाल शाह के प्रयासों से हुई थी। इस प्रजामंडल का प्राथमिक उद्देश्य किशनगढ़ रियासत में निरंकुश शासन के स्थान पर उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना और जनता को उनके नागरिक अधिकार प्रदान कराना था। इन नेताओं के कुशल मार्गदर्शन में प्रजामंडल ने स्थानीय समस्याओं, अत्यधिक करों और प्रशासनिक अकर्मण्यता के विरुद्ध आवाज उठाई तथा जनता में राजनीतिक जागृति का प्रसार किया।

83. (A) माणिक्य लाल वर्मा
मेवाड़ के महान स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा ने स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि राजस्थान की देशी रियासतों का एक एकीकृत भारत में विलय ही सच्चा उत्तरदायी शासन प्राप्त करने का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग है। उनका दृढ़ विश्वास था कि छोटे-छोटे सामंती राज्यों का अस्तित्व समाप्त होकर जब तक एक बृहद लोकतांत्रिक ढांचा नहीं बनेगा, तब तक आम जनता को पूर्ण स्वतंत्रता और अधिकार नहीं मिल सकते। उनके इस विचार ने राजस्थान एकीकरण को गति दी।

84. (B) केवल I, II और IV
1938 से पूर्व प्रजामंडल स्वतंत्र रूप से कार्य करते थे, हरिपुरा अधिवेशन ने स्पष्ट रूप से नागरिक अधिकारों हेतु आंदोलन को प्रेरित किया और 1945 के बाद ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस ने अपने उद्देश्यों को कांग्रेस के साथ एकीकृत किया। हालांकि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सभी प्रजामंडलों ने अपने राजाओं को उखाड़ नहीं फेंका था, कई राज्यों में समझौते हुए। अतः कथन I, II और IV सत्य हैं, जबकि कथन III पूरी तरह असत्य है।

85. (A) हरिभाऊ उपाध्याय
अजमेर से प्रकाशित प्रसिद्ध राष्ट्रवादी समाचार पत्र 'नवजीवन' का संपादन पंडित हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा किया जाता था। उन्होंने 'त्याग भूमि' के साथ-साथ 'नवजीवन' के माध्यम से भी गांधीवादी विचारों, खादी के प्रचार, समाज सुधार और राजनीतिक चेतना का व्यापक प्रसार किया। उनके प्रभावशाली लेखों ने अजमेर-मेरवाड़ा और आसपास की रियासतों की प्रजा को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने और निरंकुशता के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा दी।

86. (D) कांतिलाल
बूंदी प्रजामंडल की स्थापना वर्ष 1931 में कांतिलाल और नित्यानंद के प्रयासों से हुई थी। यद्यपि हाड़ौती क्षेत्र में नयनूराम शर्मा ने प्रारंभिक राजनीतिक चेतना जगाई थी, परंतु बूंदी में प्रजामंडल का गठन कांतिलाल के नेतृत्व में संपन्न हुआ। बाद में 1944 में ऋषि दत्त मेहता ने बूंदी राज्य लोक परिषद की स्थापना कर आंदोलन को नया आयाम दिया। इस प्रजामंडल ने बूंदी रियासत में उत्तरदायी शासन और नागरिक अधिकारों के लिए निरंतर संघर्ष किया।

87. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
राजस्थान की ग्रामीण आबादी ब्रिटिश क्राउन के प्रति वफादार नहीं थी, बल्कि वे सामंती करों और बेगार से त्रस्त होकर प्रजामंडलों के समर्थक बने, इसलिए पहला कथन गलत है। रियासतों के शासकों ने प्रजामंडल आंदोलनों को दबाने के लिए ब्रिटिश मदद ली, काले कानून बनाए और प्रमुख नेताओं को राज्यों से निर्वासित किया, इसलिए दूसरा कथन पूरी तरह सही है। शासकों का दमनकारी चक्र आंदोलनों को रोकने में अंततः विफल रहा।

88. (C) गणेश शंकर विद्यार्थी
कानपुर से प्रकाशित होने वाले प्रसिद्ध समाचार पत्र 'प्रताप' के यशस्वी संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी थे। विजय सिंह पथिक के अनुरोध पर 'प्रताप' ने राजस्थान के बिजोलिया किसान आंदोलन और रियासती अत्याचारों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुखता से प्रकाशित किया। इस पत्र के माध्यम से पूरे देश को राजपूताना में हो रहे सामंती शोषण की जानकारी मिली, जिससे राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम की ओर आकर्षित हुआ और आंदोलनों को बल मिला।

89. (A) 2, 1, 3, 4
घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम 2, 1, 3, 4 है। 'राजपूताना मध्य भारत सभा' की स्थापना सर्वप्रथम 1918 में हुई थी। इसके पश्चात 'ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस' (अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद) का गठन दिसंबर 1927 में बंबई में हुआ। 'जयपुर प्रजामंडल' की स्थापना 1931 में की गई, जबकि 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन' 1938 में आयोजित हुआ था। अतः विकल्प A दिए गए संगठनों और सम्मेलनों का सही ऐतिहासिक क्रम दर्शाता है।

90. (A) अजमेर-मेरवाड़ा
अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन एक केंद्र शासित प्रांत था। यह क्षेत्र राजपूताना की विभिन्न देशी रियासतों के निर्वासित प्रजामंडल नेताओं, क्रांतिकारियों और समाचार पत्रों के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल और कार्यस्थल के रूप में कार्य करता था। रियासती पुलिस का अधिकार क्षेत्र यहाँ न होने के कारण नेता यहाँ से 'नवीन राजस्थान', 'त्याग भूमि' जैसे पत्र निकालते थे और रियासतों के आंदोलनों की दिशा तय करते थे।

91. (B) महाराजा जय सिंह
अलवर में व्यापक कृषक असंतोष, मेव किसान आंदोलन और रियासती नीति के विरोध के बाद वर्ष 1933 में ब्रिटिश सरकार

Click Here to Buy book on Flipkart

ने अलवर के महाराजा जय सिंह को गद्दी से हटाकर राज्य से निष्कासित कर दिया था। महाराजा जय सिंह की स्वेच्छाचारी नीतियों और लगान वृद्धि के कारण राज्य में भारी अराजकता फैल गई थी। अंग्रेजों ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए हस्तक्षेप किया और उन्हें पेरिस भेज दिया, जहाँ बाद में उनकी मृत्यु हो गई।

92. (B) जयनारायण व्यास
जोधपुर में स्थित 'विद्यार्थी भवन' मारवाड़ के युवाओं और छात्रों में राजनीतिक चेतना जगाने का एक प्रमुख केंद्र था। यह संस्थान मारवाड़ के जननेता जयनारायण व्यास की राष्ट्रवादी विचारधारा और व्यक्तित्व से गहराई से प्रभावित था। व्यास जी ने यहाँ के विद्यार्थियों को राष्ट्रप्रेमी साहित्य, भाषणों और सांगठनिक गतिविधियों के माध्यम से प्रजामंडल आंदोलन से जोड़ा। इस भवन से निकले अनेक नवयुवकों ने आगे चलकर मारवाड़ लोक परिषद के अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाई।

93. (A) महाराजा की देखरेख में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करना
मई 1938 में गठित 'मारवाड़ लोक परिषद' का मुख्य उद्देश्य जोधपुर महाराजा के संरक्षण में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था। इसके साथ ही परिषद ने नागरिकों के मौलिक अधिकारों की बहाली, अन्यायी करों की समाप्ति और जागीरदारी शोषण के अंत की पुरजोर मांग की। रणछोड़दास गट्टानी की अध्यक्षता और जयनारायण व्यास के मार्गदर्शन में इस परिषद ने पूरे मारवाड़ क्षेत्र में किसान और जन-आंदोलनों को अभूतपूर्व नेतृत्व प्रदान किया।

94. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बीकानेर प्रजामंडल को अपनी स्थापना के शुरुआती वर्षों में राज्य के भीतर अपनी गतिविधियों को संचालित करने के लिए भारी संघर्ष करना पड़ा। इसका मुख्य कारण यह था कि महाराजा गंगा सिंह ने बीकानेर में किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधि को रोकने के लिए 'बीकानेर पब्लिक सेफ्टी एक्ट' जैसे अत्यधिक दमनकारी कानून लागू कर रखे थे। इस कठोर प्रशासनिक नियंत्रण के कारण प्रजामंडल के नेताओं को राज्य के बाहर कलकत्ता में जाकर संगठन की नींव रखनी पड़ी थी।

95. (D) माणिक्य लाल वर्मा
प्रसिद्ध और प्रेरणादायी पुस्तक 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' की रचना स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा द्वारा की गई थी। इस पुस्तक में उन्होंने मेवाड़ रियासत के निरंकुश, स्वेच्छाचारी और भ्रष्ट प्रशासन की तीखी आलोचना की थी। इसमें सामंती शोषण, किसानों पर लादे गए भारी करों और नागरिक अधिकारों के हनन का प्रामाणिक ब्योरा दिया गया था। इस पुस्तक ने मेवाड़ के लोगों में भारी आक्रोश और राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

96. (C) ठक्कर बापा
प्रजामंडल आंदोलन के दौरान स्थापित 'भील सेवा मंडल' संस्था जनजातीय आबादी के उत्थान और चेतना के लिए समर्पित थी। यह संस्था प्रसिद्ध समाज सुधारक और सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी के नेता अमृतलाल विट्ठलदास ठक्कर, जिन्हें 'ठक्कर बापा' के नाम से जाना जाता है, के सामाजिक कार्यों से अत्यधिक प्रभावित थी। ठक्कर बापा ने भारत भर में आदिवासियों के कल्याण, शिक्षा और अधिकारों के लिए जीवन भर कार्य किया, जिससे राजस्थान के कार्यकर्ता प्रेरित हुए।

NODIA

97. (A) केवल I और II
स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1883 में उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की थी। उनके 'स्वदेशी', 'स्वधर्म' और 'स्वराज' के विचारों ने राजस्थान के भावी स्वतंत्रता सेनानियों को गहराई से प्रभावित किया। हालांकि, उन्होंने जयपुर में प्रजामंडल की स्थापना के लिए वित्त पोषण नहीं किया था, क्योंकि प्रजामंडल की स्थापना दयानंद सरस्वती के निधन के कई दशकों बाद 1931 में हुई थी। अतः केवल प्रथम और द्वितीय कथन सही हैं।

98. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
अर्जुन लाल सेठी ने जयपुर में क्रांतिकारियों को प्रशिक्षित करने हेतु 'जैन वर्धमान विद्यालय' की स्थापना की थी। विजय सिंह पथिक ने 1919 में वर्धा में 'राजस्थान सेवा संघ' का गठन किया। जमनालाल बजाज ने जयपुर में रचनात्मक कार्यों हेतु 'चरखा संघ' की स्थापना की, जबकि हरिनारायण शर्मा ने अलवर में पिछड़े वर्गों के सामाजिक उत्थान हेतु 'वाल्मीकि संघ' का गठन किया था। अतः सही सुमेलित विकल्प P-3, Q-1, R-4, S-2 है।

99. (B) राजपूताना मध्य भारत सभा, मारवाड़ हितकारिणी सभा, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस, मारवाड़ लोक परिषद
इन संगठनों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: 'राजपूताना मध्य भारत सभा' की स्थापना 1918 में हुई। जयनारायण व्यास द्वारा 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' का पुनर्गठन 1923 में किया गया। 'ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस' (अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद) का गठन दिसंबर 1927 में संपन्न हुआ, जबकि 'मारवाड़ लोक परिषद' की स्थापना मई 1938 में हुई थी। अतः विकल्प B सही स्थापना क्रम प्रस्तुत करता है।

100. (B) केवल I, II और IV
मेवाड़ के प्रजामंडल आंदोलन को निरंतर कृषक समर्थन मिला, बीकानेर तथा भरतपुर में दमन के कारण प्रजामंडल बाहर बने, और सभी प्रजामंडलों ने अंततः भारतीय संघ में विलय की मांग की। झालावाड़ में प्रजामंडल की स्थापना 1946 में हुई थी, जो जयपुर से बहुत बाद में हुई, इसलिए तीसरा कथन गलत है। अतः प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ कथन सत्य हैं, जो आंदोलनों की गतिशीलता दर्शाते हैं।

अध्याय 07

आज़ादी के बाद राष्ट्र-निर्माण

1. भारतीय देशी रियासतों के राजनीतिक एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ मिलकर कार्य करने वाले राज्य विभाग (स्टेट्स डिपार्टमेंट) के सचिव के रूप में किसने सेवा दी थी?
(A) जवाहरलाल नेहरू
(B) वी. पी. मेनन
(C) लॉर्ड माउंटबेटन
(D) के. एम. मुंशी

2. देशी रियासतों द्वारा हस्ताक्षरित 'इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' (विलय पत्र) के माध्यम से प्रारंभ में भारत अधिराज्य (डोमिनियन ऑफ इंडिया) को किन तीन विषयों का नियंत्रण सौंपा गया था?
(A) रक्षा, वित्त और आंतरिक सुरक्षा
(B) विदेश मामले, मुद्रा और संचार
(C) वित्त, संचार और शिक्षा
(D) रक्षा, विदेश मामले और संचार

3. निम्नलिखित में से कौन-सी देशी रियासत 15 अगस्त 1947 तक प्रारंभ में भारतीय संघ में शामिल नहीं हुई थी और जिसके लिए बाद में कूटनीतिक एवं सैन्य हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ी?
(A) जूनागढ़
(B) बड़ौदा
(C) ग्वालियर
(D) मैसूर

4. हैदराबाद रियासत का एकीकरण करने के लिए सितंबर 1948 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई पुलिस कार्रवाई का कूटनाम (कोडनेम) क्या था?
(A) ऑपरेशन ब्लू स्टार
(B) ऑपरेशन विजय
(C) ऑपरेशन पोलो
(D) ऑपरेशन ट्राइडेंट

5. सूची I में दिए गए राजस्थान के एकीकरण के चरणों को सूची II में दी गई उनकी गठन तिथियों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (एकीकरण के चरण)
P. मत्स्य संघ
Q. राजस्थान संघ
R. संयुक्त राजस्थान
S. बृहत् राजस्थान
सूची II : (गठन की तिथियां)
1. 18 अप्रैल 1948
2. 30 मार्च 1949
3. 18 मार्च 1948
4. 25 मार्च 1948
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

NODIA

6. 18 अप्रैल 1948 को संयुक्त राजस्थान (एकीकरण का तीसरा चरण) का उद्घाटन निम्नलिखित में से किसने किया था?
(A) सरदार वल्लभभाई पटेल
(B) एन. वी. गाडगिल
(C) लॉर्ड माउंटबेटन
(D) जवाहरलाल नेहरू

7. मत्स्य संघ के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसका गठन अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली के विलय द्वारा किया गया था।
(B) इसकी राजधानी भरतपुर में स्थापित की गई थी।
(C) धौलपुर के उदयभान सिंह को इसका राजप्रमुख नियुक्त किया गया था।
(D) शोभाराम कुमावत को इसका प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था।

8. राजस्थान में सिरोही का विलय मुख्य रूप से किस रणनीतिक और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र के विवाद के कारण विलंबित हुआ था?
(A) जोधपुर और उसके सीमावर्ती क्षेत्र
(B) उदयपुर और उसके खनन क्षेत्र
(C) माउंट आबू और देलवाड़ा
(D) नीमराना ठिकाना

9. चार प्रमुख रियासतों के विलय के साथ 30 मार्च 1949 को बृहत् राजस्थान की औपचारिक स्थापना हुई थी। निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य उन चार रियासतों में शामिल नहीं था?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) मेवाड़

10. बृहत् राजस्थान के लिए पी. आर. राव समिति की सिफारिशों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जयपुर को राज्य की राजधानी बनाने की सिफारिश की गई थी।

II. जोधपुर में उच्च न्यायालय स्थापित करने की सिफारिश की गई थी।
III. शिक्षा विभाग को उदयपुर में स्थित करने की सिफारिश की गई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

11. 1949 में बृहत् राजस्थान के गठन पर इसके प्रथम राजप्रमुख के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(A) महाराणा भूपाल सिंह
(B) सवाई मानसिंह द्वितीय
(C) महाराजा सादुल सिंह
(D) उदयभान सिंह

12. किस समिति की सिफारिश पर अंततः मत्स्य संघ का बृहत् राजस्थान में विलय किया गया था?
(A) फज़ल अली समिति
(B) शंकर राव देव समिति
(C) पी. आर. राव समिति
(D) के. एम. मुंशी समिति

13. राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत भारत में कितने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का सृजन किया गया था?
(A) 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश
(B) 16 राज्य और 3 केंद्र शासित प्रदेश
(C) 15 राज्य और 5 केंद्र शासित प्रदेश
(D) 12 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश

14. 1953 में नियुक्त राज्य पुनर्गठन आयोग के सदस्य निम्नलिखित में से कौन नहीं थे?
(A) न्यायमूर्ति फज़ल अली
(B) के. एम. पणिक्कर
(C) एस. के. धर
(D) एच. एन. कुंज़रू

15. राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत राजस्थान में किए गए संरचनात्मक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भाग सी राज्य अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय कर दिया गया।
II. आबूरोड और देलवाड़ा तहसीलों को राजस्थान में एकीकृत किया गया।
III. मध्य भारत के सुनेल टप्पा का राजस्थान में विलय कर दिया गया।
IV. राजस्थान के सिरोंज उप-खंड को मध्य प्रदेश में स्थानांतरित कर दिया गया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I और IV
(D) I, II, III और IV

16. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य 1950 और 1960 के दशक में मुख्य रूप से भाषाई आधार पर नया गठित या पुनर्गठित नहीं किया गया था?
(A) आंध्र प्रदेश
(B) महाराष्ट्र
(C) उत्तर प्रदेश
(D) गुजरात

17. धर आयोग (1948) का गठन संविधान सभा द्वारा किस आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की व्यावहारिकता की जांच करने के लिए किया गया था?
(A) भौगोलिक समीपता
(B) भाषाई आधार
(C) आर्थिक व्यावहारिकता
(D) प्रशासनिक सुविधा

18. पोट्टी श्रीरामुलु के आमरण अनशन के बाद स्वतंत्रता के बाद के भारत में भाषाई आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य कौन-सा था?
(A) तमिलनाडु
(B) केरल
(C) कर्नाटक
(D) आंध्र प्रदेश

19. राज्यों के पुनर्गठन के संबंध में जेवीपी (JVP) समिति (1948) का प्राथमिक निष्कर्ष क्या था?
(A) इसने राज्य पुनर्गठन के एकमात्र आधार के रूप में भाषा को अस्वीकार कर दिया।
(B) इसने पूरे भारत में तत्काल भाषाई पुनर्गठन की पुरजोर वकालत की।
(C) इसने पूरी तरह से धार्मिक आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की सिफारिश की।
(D) इसने भाषा की परवाह किए बिना भारत को पांच प्रशासनिक क्षेत्रों में विभाजित करने का प्रस्ताव रखा।

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A) : राज्यों के भाषाई पुनर्गठन ने अंततः राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने के बजाय उसे मजबूत किया।
कारण (R) : इसने एक लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर क्षेत्रीय और भाषाई आकांक्षाओं को समायोजित किया, जिससे अलगाववादी प्रवृत्तियों में कमी आई।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

21. भारत की पहली पंचवर्षीय योजना मुख्य रूप से किस आर्थिक मॉडल पर आधारित थी?
(A) हैरोड-डोमर मॉडल
(B) महालनोबिस संवृद्धि मॉडल
(C) सोलो-सवान संवृद्धि मॉडल
(D) लुईस द्वि-क्षेत्रीय मॉडल

22. स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में 1944 में तैयार की गई 'बॉम्बे प्लान' का क्या महत्व था?
(A) इसने पूरी तरह से मुक्त-बाजार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव रखा।
(B) यह स्वतंत्रता के बाद भारत के औद्योगिक विकास को सीमित करने की एक ब्रिटिश रणनीति थी।
(C) यह राज्य के वित्तपोषण के बिना केवल कृषि विकास पर केंद्रित थी।
(D) यह राज्य के नेतृत्व में नियोजित विकास के लिए उद्योगपतियों द्वारा तैयार की गई एक रूपरेखा थी।

23. नियोजन के नेहरूवादी युग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दूसरी पंचवर्षीय योजना का ध्यान भारी औद्योगीकरण की ओर स्थानांतरित हुआ।
II. पी. सी. महालनोबिस दूसरी पंचवर्षीय योजना के मुख्य वास्तुकार थे।
III. पहली पंचवर्षीय योजना में मूलभूत उद्योगों के तीव्र निजीकरण को प्राथमिकता दी गई थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल II और III
(B) केवल I और II
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

24. नियोजित विकास के शुरुआती वर्षों के दौरान, पहली पंचवर्षीय योजना (1951-1956) में किस क्षेत्र को उच्चतम बजटीय आवंटन प्राप्त हुआ था?
(A) भारी उद्योग
(B) परिवहन और संचार
(C) कृषि और सिंचाई
(D) शिक्षा और स्वास्थ्य

25. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में प्रमुख आर्थिक नियोजन निकायों की स्थापना या गठन का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) बॉम्बे प्लान -> राष्ट्रीय नियोजन समिति -> राष्ट्रीय विकास परिषद -> योजना आयोग
(B) राष्ट्रीय नियोजन समिति -> योजना आयोग -> बॉम्बे प्लान -> राष्ट्रीय विकास परिषद
(C) योजना आयोग -> राष्ट्रीय नियोजन समिति -> बॉम्बे प्लान -> राष्ट्रीय विकास परिषद
(D) राष्ट्रीय नियोजन समिति -> बॉम्बे प्लान -> योजना आयोग -> राष्ट्रीय विकास परिषद

26. मार्च 1950 में भारत के योजना आयोग की स्थापना निम्नलिखित में से किस तरीके से की गई थी?
(A) एक कार्यकारी प्रस्ताव द्वारा
(B) एक संवैधानिक संशोधन द्वारा
(C) संसद के एक अधिनियम द्वारा
(D) भारत के राष्ट्रपति के एक अध्यादेश द्वारा

27. भारत के योजना आयोग के प्रथम उपाध्यक्ष के रूप में किसने कार्य किया?
(A) जवाहरलाल नेहरू
(B) गुलजारीलाल नंदा
(C) के. सी. नियोगी
(D) वी. टी. कृष्णमाचारी

28. राष्ट्रीय विकास परिषद (NDC) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसकी स्थापना अगस्त 1952 में की गई थी।
(B) यह संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत एक संवैधानिक निकाय के रूप में कार्य करती है।
(C) भारत के प्रधानमंत्री इसके पदेन अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं।
(D) इसका गठन पंचवर्षीय योजनाओं के निष्पादन में राज्यों का सहयोग प्राप्त करने के लिए किया गया था।

NODIA

29. भारतीय संविधान का कौन-सा अनुच्छेद स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए एक स्वतंत्र निर्वाचन आयोग की स्थापना का प्रावधान करता है?
(A) अनुच्छेद 324
(B) अनुच्छेद 315
(C) अनुच्छेद 280
(D) अनुच्छेद 148

30. सूची I में दिए गए भारत के निर्वाचन आयोग से संबंधित प्रमुख तत्वों को सूची II में दिए गए उनके संबंधित विवरणों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (प्रमुख तत्व)
P. प्रथम मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Q. प्रथम आम चुनाव आयोजित हुए
R. पूरे देश में आम चुनाव में ईवीएम (EVM) की शुरुआत
S. मतदान की आयु 21 से घटाकर 18 की गई
सूची II : (विवरण)
1. 61वां संवैधानिक संशोधन
2. सुकुमार सेन
3. 1951-52
4. 2004
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

31. भारत का निर्वाचन आयोग पहली बार किस वर्ष एकल-सदस्यीय निकाय से बहु-सदस्यीय निकाय में परिवर्तित हुआ था?

(A) 1977
(B) 1989
(C) 1993
(D) 2001

32. भारत का निर्वाचन आयोग निम्नलिखित में से किस पद/निकाय को छोड़कर अन्य सभी के चुनाव आयोजित कराता है?
(A) भारत के राष्ट्रपति
(B) राज्य विधानसभाओं के सदस्य
(C) ग्राम पंचायतों के सदस्य
(D) लोकसभा के सदस्य

33. संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) अपनी ऐतिहासिक निरंतरता किस ब्रिटिश भारतीय कानून के तहत स्थापित संघीय लोक सेवा आयोग (फेडरल पब्लिक सर्विस कमीशन) से प्राप्त करता है?
(A) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909
(B) भारत सरकार अधिनियम, 1935
(C) भारत सरकार अधिनियम, 1919
(D) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947

34. संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह संविधान के अनुच्छेद 315 के तहत स्थापित एक संवैधानिक निकाय है।
II. इसके अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
III. पिछड़े वर्गों के लिए नियुक्तियों में आरक्षण करते समय सरकार के लिए यूपीएससी (UPSC) से परामर्श करना अनिवार्य है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल II और III
(B) केवल I और III
(C) I, II और III
(D) केवल I और II

35. स्वतंत्रता के बाद संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के अध्यक्ष बनने वाले प्रथम भारतीय कौन थे?
(A) एच. के. कृपलानी
(B) रॉस बार्कर
(C) आर. एन. बनर्जी
(D) वी. एस. हेजमाडी

36. यूपीएससी (UPSC) को अक्सर भारत में 'योग्यता प्रणाली का प्रहरी' कहा जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य इसके अधिकार क्षेत्र में नहीं आता है?
(A) संघ की सेवाओं में नियुक्तियों के लिए परीक्षाओं का संचालन करना।
(B) सिविल सेवकों को प्रभावित करने वाले अनुशासनात्मक मामलों पर सलाह देना।
(C) आईएएस अधिकारियों के कैडर आवंटन और तबादलों का प्रबंधन करना।
(D) सिविल सेवाओं में भर्ती के तरीकों पर सलाह देना।

37. 1961 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का पहला आधिकारिक शिखर सम्मेलन कहाँ आयोजित किया गया था?
(A) बेलग्रेड
(B) बांडुंग
(C) नई दिल्ली
(D) काहिरा

38. 1954 के ऐतिहासिक पंचशील समझौते पर भारत और किस अन्य देश के बीच हस्ताक्षर किए गए थे?
(A) सोवियत संघ
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) पाकिस्तान
(D) चीन

39. निम्नलिखित में से कौन-सा नेता गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक वास्तुकारों में से एक नहीं था?
(A) जवाहरलाल नेहरु
(B) विंस्टन चर्चिल
(C) गमाल अब्दुल नासिर
(D) जोसिप ब्रोज़ टीटो

40. पंचशील समझौते के सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
I. एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का पारस्परिक सम्मान।
II. परस्पर गैर-आक्रामकता।
III. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में पारस्परिक गैर-हस्तक्षेप।
IV. समानता और पारस्परिक लाभ।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) I, II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

41. 1948 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव ने भारत में औपचारिक रूप से किस प्रकार की आर्थिक प्रणाली को स्वीकार किया और उसकी वकालत की?
(A) आदेशित अर्थव्यवस्था (कमांड इकोनॉमी)
(B) पूंजीवादी मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था
(C) अहस्तक्षेप (लेसज़-फ़ेयर) अर्थव्यवस्था
(D) मिश्रित अर्थव्यवस्था

42. 1948 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के तहत, उद्योगों को राज्य के हस्तक्षेप और स्वामित्व के आधार पर कितनी व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था?
(A) चार
(B) दो
(C) तीन
(D) पांच

Click Here to Buy book on Amazon

43. 1948 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) इसने विदेशी पूंजी निवेश को पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दिया।
(B) इसने सार्वजनिक क्षेत्र के साथ-साथ निजी उद्यमों की भी अनुमति दी।
(C) इसने निजी क्षेत्र को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
(D) यह विशेष रूप से लघु एवं कुटीर उद्योगों पर केंद्रित था।

44. संविधान सभा (विधायी) में 1948 का पहला औद्योगिक नीति प्रस्ताव निम्नलिखित में से किसने प्रस्तुत किया था?
(A) जवाहरलाल नेहरु
(B) श्यामा प्रसाद मुखर्जी
(C) सी. डी. देशमुख
(D) आर. के. षणमुखम चेटी

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A) : 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव को अक्सर "भारत का आर्थिक संविधान" कहा जाता है।
कारण (R) : इसने सार्वजनिक क्षेत्र के वर्चस्व की नींव रखी और समाज के समाजवादी ढांचे के अनुरुप उद्योगों को सख्ती से वर्गीकृत किया।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

46. 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव ने उद्योगों का वर्गीकरण किस प्रकार किया?
(A) इसने कच्चे माल की उपलब्धता के आधार पर उनका भौगोलिक वर्गीकरण किया।
(B) इसने उन्हें विशुद्ध रूप से घरेलू और निर्यात-उन्मुख इकाइयों में विभाजित किया।
(C) इसने उन्हें अनुसूची A, अनुसूची B और अनुसूची C में विभाजित किया।
(D) इसने कुल पूंजी निवेश सीमा के आधार पर उन्हें वर्गीकृत किया।

47. औद्योगीकरण के साथ-साथ संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 'भाड़ा समतुल्यता नीति' (फ्रेट इक्वलाइजेशन पॉलिसी) शुरु की। इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) कृषि उपज के लिए मुफ्त रेलवे परिवहन प्रदान करना।
(B) तटीय बंदरगाहों के पास स्थित उद्योगों पर भारी कर लगाना।
(C) विभिन्न राज्यों में औद्योगिक श्रमिकों के वेतन को समान करना।
(D) देश भर में प्रमुख कच्चे माल को समान कीमतों पर उपलब्ध कराना।

48. 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव की अनुसूची A में वे उद्योग शामिल थे जिनका भावी विकास राज्य की अनन्य जिम्मेदारी होना था। अनुसूची A में कितने उद्योगों को शामिल किया गया था?
(A) 12
(B) 17
(C) 21
(D) 29

49. सघन कृषि जिला कार्यक्रम (IADP), जो हरित क्रांति का एक शुरुआती अग्रदूत था, किस संगठन की तकनीकी और वित्तीय सहायता से 1960-61 में शुरु किया गया था?
(A) विश्व बैंक
(B) फोर्ड फाउंडेशन
(C) रॉकफेलर फाउंडेशन
(D) खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO)

50. स्वतंत्रता के बाद के भारत की निम्नलिखित कृषि पहलों को उनके प्रारंभ होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. सघन कृषि जिला कार्यक्रम (IADP)
II. उच्च उपज देने वाली किस्मों का कार्यक्रम (HYVP)
III. अधिक अन्न उपजाओ अभियान (ग्रो मोर फूड कैंपेन)
IV. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन
(A) I, III, II, IV
(B) III, II, I, IV
(C) I, II, III, IV
(D) III, I, II, IV

51. भारत में हरित क्रांति की शुरुआत किस कृषि वैज्ञानिक द्वारा गेहूं की अर्ध-बौनी, उच्च उपज देने वाली किस्मों के विकास से महत्वपूर्ण रूप से प्रेरित थी?
(A) नॉर्मन बोरलॉग
(B) एम. एस. स्वामीनाथन
(C) वर्गीज कुरियन
(D) सी. सुब्रमण्यम

52. भारत में हरित क्रांति के शुरुआती चरण के दौरान कौन-सी दो फसलें प्राथमिक लाभार्थी थीं?
(A) दलहन और तिलहन
(B) गन्ना और कपास
(C) गेहूं और चावल
(D) जूट और चाय

NODIA

53. भारत में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) के पदेन अध्यक्ष के रूप में कौन कार्य करता है?
(A) भारत के प्रधानमंत्री
(B) भारत के राष्ट्रपति
(C) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री
(D) मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार

54. सीएसआईआर (CSIR) के संस्थापक निदेशक कौन थे, जिनकी दूरदृष्टि के कारण स्वतंत्रता के बाद भारत भर में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की एक श्रृंखला की स्थापना हुई?
(A) होमी जे. भाभा
(B) विक्रम साराभाई
(C) सी. वी. रमन
(D) एस. एस. भटनागर

55. सूची I की CSIR राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं को सूची II में दिए गए उनके संबंधित स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं)
P. राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (NPL)
Q. राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (NCL)
R. केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान (CFTRI)
S. राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (NEERI)
सूची II : (स्थान)
1. पुणे
2. मैसूरु
3. नई दिल्ली
4. नागपुर
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

56. स्वतंत्रता के तुरंत बाद के युग में सीएसआईआर (CSIR) और उसकी प्रयोगशालाओं के नेटवर्क जैसे विशाल वैज्ञानिक संस्थानों की स्थापना का प्राथमिक रणनीतिक उद्देश्य क्या था?
(A) प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक ग्रंथों पर विशेष रूप से अनुसंधान करना।
(B) आईआईटी के समकक्ष शैक्षणिक डिग्रियां तैयार करना।
(C) औद्योगिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
(D) विशुद्ध रूप से कृषि अनुसंधान और कृषि विस्तार सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करना।

57. भारत में उच्च तकनीकी संस्थानों की स्थापना पर विचार करने के लिए वायसराय की कार्यकारिणी परिषद द्वारा 1946 में किस समिति की नियुक्ति की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप आईआईटी (IITs) का निर्माण हुआ?
(A) राधाकृष्णन आयोग
(B) कोठारी आयोग
(C) मुदालियर आयोग
(D) एन. आर. सरकार समिति

58. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IITs) की शुरुआती स्थापना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आईआईटी खड़गपुर भारत में स्थापित होने वाला पहला आईआईटी था।
II. आईआईटी बॉम्बे की स्थापना सोवियत संघ (USSR) की सहायता से की गई थी।
III. आईआईटी कानपुर की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका की वित्तीय और तकनीकी सहायता से की गई थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) केवल I और III

59. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) मद्रास की स्थापना 1959 में किस देश की तकनीकी और वित्तीय सहायता से की गई थी?
(A) यूनाइटेड किंगडम
(B) पश्चिम जर्मनी
(C) फ्रांस
(D) जापान

60. प्रौद्योगिकी संस्थान अधिनियम, 1961 के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसने कुछ प्रौद्योगिकी संस्थानों को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान घोषित किया।
(B) इसने आईआईटी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के प्रत्यक्ष नियंत्रण में ला दिया।
(C) इसने आईआईटी को अपनी डिग्रियां प्रदान करने के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान किया।
(D) इसने सभी आईआईटी की गतिविधियों में समन्वय के लिए एक आईआईटी परिषद की स्थापना की।

61. भारत का परमाणु ऊर्जा आयोग प्रारंभ में वैज्ञानिक अनुसंधान विभाग के तहत किस वर्ष स्थापित किया गया था?
(A) 1947
(B) 1948
(C) 1954
(D) 1958

62. भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के प्रथम अध्यक्ष के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(A) मेघनाद साहा
(B) विक्रम साराभाई
(C) होमी जे. भाभा
(D) राजा रमन्ना

63. भारत (और एशिया) में निर्मित पहले परमाणु अनुसंधान रिएक्टर का क्या नाम था, जो 1956 में क्रिटिकल (चालू) हुआ था?
(A) साइरस (CIRUS)
(B) जरलीना (ZERLINA)
(C) ध्रुव (DHRUVA)
(D) अप्सरा (APSARA)

64. भारत के तीन-चरण वाले परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Downloaded from www.pdf.tube

I. दीर्घकालिक ऊर्जा स्वतंत्रता हासिल करने के लिए डॉ. होमी जे. भाभा द्वारा इसे तैयार किया गया था।
II. प्रथम चरण में प्राकृतिक यूरेनियम द्वारा संचालित दाबयुक्त भारी जल रिएक्टरों (PHWRs) का उपयोग किया जाता है।
III. दूसरा चरण अधिक विखंडनीय सामग्री का उत्पादन करने के लिए फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों (FBRs) पर केंद्रित है।
IV. तीसरे चरण का उद्देश्य भारत के विशाल थोरियम भंडारों का उपयोग करना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) I, II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

65. इसरो (ISRO) के अग्रदूत, भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (INCOSPAR) की स्थापना भारत सरकार द्वारा किस वर्ष की गई थी?
(A) 1958 (B) 1962
(C) 1969 (D) 1972

66. वह दूरदर्शी वैज्ञानिक कौन थे जिन्होंने भारत सरकार से इनकोस्पार (INCOSPAR) की स्थापना का आग्रह किया था और जिन्हें व्यापक रूप से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है?
(A) सतीश धवन
(B) ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
(C) यू. आर. राव
(D) विक्रम साराभाई

67. भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के शुरुआती दिनों में थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन (TERLS) के स्थल के रूप में केरल के थुम्बा का चयन क्यों किया गया था?
(A) यह पृथ्वी की चुंबकीय भूमध्य रेखा के अत्यधिक निकट स्थित है।
(B) यह कम आबादी वाला क्षेत्र था, जिससे जोखिम न्यूनतम था।
(C) वहां पहले से ब्रिटिश सैन्य बुनियादी ढांचा मौजूद था।
(D) यह ऑप्टिकल ट्रैकिंग के लिए वर्ष भर सबसे साफ आसमान प्रदान करता था।

68. 21 नवंबर 1963 को भारत से सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किए गए पहले साउंडिंग रॉकेट का क्या नाम था?
(A) आर्यभट्ट
(B) रोहिणी-75
(C) नाइक-अपाचे
(D) एसएलवी-3

69. भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम (CDP) आधिकारिक तौर पर किस ऐतिहासिक तिथि को शुरू किया गया था?
(A) 15 अगस्त 1947
(B) 26 जनवरी 1950
(C) 2 अक्टूबर 1952
(D) 1 अप्रैल 1956

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A) : 1952 का सामुदायिक विकास कार्यक्रम (CDP) परिवर्तनकारी ग्रामीण विकास हासिल करने में अपर्याप्त रहा।
कारण (R) : यह कार्यक्रम अत्यधिक नौकरशाही से ग्रस्त हो गया और इसमें स्थानीय लोगों की पर्याप्त सक्रिय भागीदारी का अभाव था।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

71. इटावा पायलट प्रोजेक्ट, जिसने सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लिए एक मुख्य प्रेरणा और अग्रदूत के रूप में कार्य किया, 1948 में किसके द्वारा शुरू किया गया था?
(A) एस. के. डे
(B) अल्बर्ट मेयर
(C) विनोबा भावे
(D) जयप्रकाश नारायण

72. सामुदायिक विकास कार्यक्रम (CDP) की संरचना के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) देश को विकास खंडों (डेवलपमेंट ब्लॉक्स) में विभाजित किया गया था।
(B) खंड विकास अधिकारी (BDO) ब्लॉक स्तर पर प्रमुख प्रशासनिक व्यक्ति था।
(C) सीडीपी पूरी तरह से एक गैर-सरकारी पहल थी जो परोपकारी ट्रस्टों द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित थी।
(D) ग्राम स्तर का कार्यकर्ता (ग्राम सेवक) ग्रामीणों और विकास प्रशासन के बीच प्राथमिक कड़ी के रूप में कार्य करता था।

73. बलवंत राय मेहता समिति मूल रूप से 1957 में मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसकी कार्यप्रणाली की जांच के लिए नियुक्त की गई थी?
(A) भारतीय रिज़र्व बैंक
(B) राज्यों का भाषाई पुनर्गठन
(C) भूमि सीलिंग अधिनियमों का कार्यान्वयन
(D) सामुदायिक विकास कार्यक्रम

74. प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु द्वारा त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का औपचारिक उद्घाटन कहाँ और कब किया गया था?
(A) नागौर, राजस्थान में 2 अक्टूबर 1959 को

(B) पुणे, महाराष्ट्र में 15 अगस्त 1958 को
(C) गुंटूर, आंध्र प्रदेश में 1 नवंबर 1959 को
(D) वर्धा, महाराष्ट्र में 2 अक्टूबर 1960 को

75. बलवंत राय मेहता समिति की रिपोर्ट के बाद भारत में पंचायती राज व्यवस्था लागू करने वाले पहले दो राज्यों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) आंध्र प्रदेश, तत्पश्चात राजस्थान
(B) राजस्थान, तत्पश्चात आंध्र प्रदेश
(C) गुजरात, तत्पश्चात महाराष्ट्र
(D) मद्रास, तत्पश्चात केरल

76. बलवंत राय मेहता समिति द्वारा प्रस्तावित अवधारणा, जिसने पंचायती राज की नींव रखी, को सर्वोत्तम रुप से किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:
(A) लोकतांत्रिक केंद्रीयकरण
(B) लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
(C) नौकरशाही हस्तांतरण
(D) प्रशासनिक विकेंद्रीकरण

77. स्वतंत्रता के बाद के भारत में भूमि सीमा निर्धारण (सीलिंग) अधिनियमों को लागू करने का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) व्यक्तिगत भूमि जोत की अधिकतम सीमा निर्धारित करना और अधिशेष भूमि का पुनर्वितरण करना।
(B) छोटी भूमि जोतों को बड़े कॉर्पोरेट फार्मों में समेकित करना।
(C) नकद फसलों की खेती को प्रतिबंधित करना और खाद्यान्नों को बढ़ावा देना।
(D) सभी कृषि भूमि को राज्य के स्वामित्व में स्थानांतरित करना।

78. जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए राजस्थान भूमि सुधार एवं जागीर पुनर्ग्रहण अधिनियम किस वर्ष पारित किया गया था?
(A) 1949
(B) 1956
(C) 1952
(D) 1961

79. राज्य के भूमि सुधार कानूनों को मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर न्यायिक समीक्षा से बचाने के लिए, संसद ने 1951 में पहला संशोधन अधिनियम पारित किया, जिसने संविधान में कौन-सी अनुसूची जोड़ी?
(A) सातवीं अनुसूची
(B) आठवीं अनुसूची
(C) दसवीं अनुसूची
(D) नौवीं अनुसूची

80. सूची I की भू-धृति शब्दावली/आंदोलनों को सूची II की उनकी प्राथमिक विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (भू-धृति शब्दावली/आंदोलन)
P. जमींदारी व्यवस्था
Q. रैयतवाड़ी व्यवस्था
R. महालवाड़ी व्यवस्था
S. भूदान आंदोलन
सूची II : (प्राथमिक विशेषता)
1. व्यक्तिगत काश्तकार के साथ सीधा बंदोबस्त
2. विनोबा भावे द्वारा शुरू किया गया स्वैच्छिक भूमि दान आंदोलन
3. पूरे ग्राम समुदाय के साथ किया गया राजस्व बंदोबस्त
4. किसानों से लगान वसूलने वाले मध्यस्थ
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

81. राष्ट्रीय एकता परिषद (NIC) का गठन पहली बार 1961 में मुख्य रुप से किस बुराई से निपटने के लिए किया गया था?
(A) गरीबी और बेरोजगारी
(B) सांप्रदायिकता और क्षेत्रवाद
(C) निरक्षरता और लैंगिक असमानता
(D) वामपंथी उग्रवाद और उग्रवाद

82. भारत में सांप्रदायिकता और अल्पसंख्यक अधिकारों के प्रति संवैधानिक दृष्टिकोण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अनुच्छेद 15 धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है।
II. संविधान ने धर्म के आधार पर पृथक निर्वाचक मंडल की स्वतंत्रता-पूर्व व्यवस्था को समाप्त कर दिया।
III. अनुच्छेद 30 अल्पसंख्यकों को शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और उनका प्रशासन करने का अधिकार प्रदान करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

83. प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में राष्ट्रीय एकता परिषद (NIC) का पहला सम्मेलन किस वर्ष आयोजित किया गया था?
(A) 1958
(B) 1960
(C) 1962
(D) 1965

84. स्वतंत्रता के बाद के भारत में सांप्रदायिकता की चुनौती का मुकाबला करने के लिए जवाहरलाल नेहरु ने किस राजनीतिक दृष्टिकोण का समर्थन किया था?
(A) बहुसंख्यकवादी राज्य का निर्माण करना
(B) सार्वजनिक जीवन में सभी धार्मिक प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाना
(C) धर्मनिरपेक्षता और धर्म में राज्य की तटस्थता

Click Here to Buy book on Flipkart

(D) केवल धार्मिक आधार पर राज्यों का विभाजन करना

85. राहत एवं पुनर्वास मंत्रालय की स्थापना स्वतंत्रता के तुरंत बाद मुख्य रूप से कहाँ से आने वाले शरणार्थियों की आमद को प्रबंधित करने के लिए की गई थी?
(A) पाकिस्तान
(B) तिब्बत और चीन
(C) बर्मा और सीलोन
(D) अफगानिस्तान

86. विभाजन के बाद आने वाले शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए विशेष रूप से दिल्ली के पास निम्नलिखित में से कौन-सा प्रमुख टाउनशिप विकसित किया गया था?
(A) चंडीगढ़
(B) नोएडा
(C) गुरुग्राम
(D) फरीदाबाद

87. 1950 में हस्ताक्षरित नेहरु-लियाकत समझौते का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित में से किस मुद्दे को हल करना था?
(A) कश्मीर में सीमा विवाद
(B) अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और शरणार्थियों की सुरक्षा
(C) सिंधु नदी के पानी का बंटवारा
(D) भारत और पाकिस्तान के बीच वित्तीय संपत्तियों का विभाजन

88. शरणार्थी पुनर्वास के लिए उठाए गए कदमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. संकट की देखरेख के लिए पुनर्वास मंत्रालय की स्थापना की गई थी।
II. पाकिस्तान चले गए लोगों द्वारा छोड़ी गई संपत्तियों का प्रबंधन करने के लिए निष्क्रांत संपत्ति प्रशासन अधिनियम पारित किया गया था।
III. शरणार्थियों को अपनी आजीविका फिर से स्थापित करने में मदद के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और कृषि ऋण प्रदान किए गए थे।
IV. सरकार ने राष्ट्रीय खजाने पर बिना किसी वित्तीय दबाव के लाखों शरणार्थियों का सफलतापूर्वक पुनर्वास किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल II, III और IV
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल I, II और III
(D) I, II, III और IV

89. भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों को उनके निवास राज्य की परवाह किए बिना 'एकल नागरिकता' प्रदान करता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) संघ सरकार का कर आधार बढ़ाना
(B) व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों को प्रतिबंधित करना
(C) पासपोर्ट जारी करने की प्रक्रिया को आसान बनाना
(D) बंधुत्व और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना

90. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 1 जानबूझकर भारत को "राज्यों का महासंघ" (फेडरेशन) के बजाय "राज्यों का संघ" (यूनियन) के रूप में वर्णित करता है। जैसा कि डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने स्पष्ट किया था, इसका क्या अर्थ है?
(A) संघ अविनाशी है और राज्यों को अलग होने का अधिकार नहीं है।
(B) राज्यों को संघ से अलग होने का अधिकार है।
(C) राज्य पूरी तरह से संप्रभु और स्वतंत्र निकाय हैं।
(D) संघ सरकार केवल समवर्ती विषयों पर कानून बना सकती है।

91. राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 ने पांच क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना की। उनकी प्राथमिक प्रकृति और कार्य क्या है?
(A) वे अनिवार्य विधायी शक्तियों वाली संवैधानिक संस्थाएं हैं।
(B) वे क्षेत्रीय सहयोग के लिए वैधानिक सलाहकार निकाय हैं।
(C) वे सीमाओं की रक्षा के लिए सैन्य कमान हैं।
(D) वे योजना आयोग का स्थान लेने वाली स्वायत्त वित्तीय संस्थाएं हैं।

92. सूची I की एकता को बढ़ावा देने वाली संवैधानिक विशेषताओं को सूची II में दिए गए उनके संबंधित विवरणों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (संवैधानिक विशेषताएं)
P. एकल नागरिकता
Q. आपातकालीन प्रावधान
R. समवर्ती सूची
S. अखिल भारतीय सेवाएं
सूची II : (विवरण)
1. साझा विषयों पर एकसमान कानून बनाने में सक्षम बनाती है
2. क्षेत्रीय निष्ठा के ऊपर एकीकृत राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा देती है
3. राष्ट्रीय संकट के दौरान केंद्र को राज्यों पर प्रभावी होने की अनुमति देती है
4. केंद्र और राज्यों में एक समान प्रशासनिक ढांचा प्रदान करती है
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

93. स्वतंत्र भारत के प्रथम आम चुनाव किस समयावधि के दौरान आयोजित किए गए थे?
(A) अगस्त 1947 से जनवरी 1948
(B) जनवरी 1950 से मार्च 1950
(C) अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952
(D) मई 1952 से अगस्त 1952

Downloaded from www.pdf.tube

94. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A) : सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर पहला आम चुनाव कराना एक विशाल और साहसिक लोकतांत्रिक प्रयोग माना गया था।

कारण (R) : उस समय भारतीय मतदाताओं का एक बड़ा बहुमत गरीब और निरक्षर था, जिसके पास लोकतांत्रिक मतदान का कोई अनुभव नहीं था।

(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

95. पहले आम चुनाव के दौरान उच्च निरक्षरता की चुनौती से निपटने के लिए मुख्य रूप से किस अभिनव मतदान पद्धति का उपयोग किया गया था?
(A) ऑडियो संकेतों के साथ इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM)
(B) पीठासीन अधिकारी के समक्ष मौखिक मतदान
(C) केवल ग्रामीण मतदाताओं के लिए डाक मतपत्र
(D) प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रतीक-चिह्नित मतपेटी

96. 1951-52 के पहले आम चुनाव के बाद लोकसभा में कौन-सा राजनीतिक दल सबसे बड़े विपक्षी दल के रूप में उभरा?
(A) भारतीय जनसंघ (BJS)
(B) स्वतंत्र पार्टी
(C) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(D) सोशलिस्ट पार्टी

97. जवाहरलाल नेहरु ने भाखड़ा नांगल बांध जैसी स्वतंत्रता के बाद की बड़े पैमाने की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को प्रसिद्ध रुप से किस वाक्यांश द्वारा संदर्भित किया था?
(A) अर्थव्यवस्था के स्तंभ
(B) आधुनिक भारत के मंदिर
(C) प्रगति के किले
(D) आत्मनिर्भरता के स्मारक

98. 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की स्थापना मुख्य रुप से राष्ट्र निर्माण के किस पहलू पर नेहरुवादी जोर को दर्शाती है?
(A) प्राथमिक शिक्षा को शहरी केंद्रों तक सीमित रखना
(B) तकनीकी शिक्षा का निजीकरण करना
(C) विश्वविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देना
(D) उच्च शिक्षा का समन्वय और वित्तपोषण करना

99. निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण
II. नियोजित आर्थिक विकास
III. गुटनिरपेक्ष विदेश नीति

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से नेहरुवादी युग के मूलभूत स्तंभों का प्रतिनिधित्व करता है/करते हैं?
(A) I, II और III
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) केवल I और III

100. स्वतंत्रता के बाद के संस्थान निर्माण की निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. योजना आयोग की स्थापना
II. प्रथम आम चुनावों की समाप्ति
III. नागौर, राजस्थान में पंचायती राज का उद्घाटन
IV. राज्य पुनर्गठन अधिनियम का पारित होना
(A) I, IV, II, III
(B) II, I, III, IV
(C) I, II, IV, III
(D) IV, I, II, III

www.nodia.in

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) वी. पी. मेनन
भारतीय स्वतंत्रता के पश्चात देशी रियासतों के राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया अत्यंत चुनौतीपूर्ण थी। इस ऐतिहासिक कार्य में गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने केंद्रीय भूमिका निभाई। उनके साथ राज्य विभाग के सचिव के रूप में वी. पी. मेनन ने महत्वपूर्ण प्रशासनिक सहायता प्रदान की। मेनन की कूटनीतिक दक्षता, कानूनी समझ और दूरदर्शिता ने विभिन्न रियासतों को भारतीय संघ में विलय करने हेतु तैयार करने में अमूल्य योगदान दिया, जिससे एक अखंड भारत का निर्माण संभव हो सका।

2. (D) रक्षा, विदेश मामले और संचार
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के अंतर्गत देशी रियासतों को भारत या पाकिस्तान में शामिल होने अथवा स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया गया था। भारत में शामिल होने वाली रियासतों ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसके तहत देशी रियासतों ने भारत अधिराज्य को केवल तीन प्रमुख विषयों का नियंत्रण सौंपा। ये तीन महत्वपूर्ण विषय रक्षा, विदेश मामले और संचार थे। अन्य सभी आंतरिक विषय रियासतों के अधिकार क्षेत्र में ही बनाए रखे गए थे।

3. (A) जूनागढ़
स्वतंत्रता प्राप्ति के समय अधिकतर रियासतों ने भारत में विलय स्वीकार कर लिया था, परंतु जूनागढ़ रियासत ने 15 अगस्त 1947 तक भारतीय संघ में शामिल होने से इनकार कर दिया था। जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान में विलय की घोषणा की, जिसका जनता ने तीव्र विरोध किया। स्थिति को संभालने और जनभावनाओं का सम्मान करने हेतु भारत सरकार ने कूटनीतिक दबाव एवं सैन्य हस्तक्षेप का सहारा लिया। अंततः जनमत संग्रह के पश्चात इसे एकीकृत किया गया।

4. (C) ऑपरेशन पोलो
स्वतंत्रता के समय हैदराबाद सबसे बड़ी देशी रियासत थी, जिसके शासक निजाम ने स्वतंत्र रहने का निर्णय लिया था। वहां की जनता पर रजाकारों द्वारा अत्याचार किए जा रहे थे और स्थिति चिंताजनक हो गई थी। भारतीय संघ की सुरक्षा एवं अखंडता बनाए रखने के लिए सितंबर 1948 में भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई शुरु की। इस पुलिस कार्रवाई का कूटनाम ऑपरेशन पोलो रखा गया था। इसके सफल संचालन के बाद हैदराबाद भारत में एकीकृत हुआ।

5. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान का एकीकरण सात चरणों में संपन्न हुआ। इसके प्रथम चरण में 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ का गठन हुआ। द्वितीय चरण में 25 मार्च 1948 को राजस्थान संघ बना। तृतीय चरण के अंतर्गत 18 अप्रैल 1948 को संयुक्त राजस्थान अस्तित्व में आया। चतुर्थ चरण में 30 मार्च 1949 को बृहत् राजस्थान का गठन किया गया। इस प्रकार विभिन्न चरणों की तिथियों का सही मिलान P-3, Q-4, R-1 और S-2 है।

6. (D) जवाहरलाल नेहरु
राजस्थान के एकीकरण के तीसरे चरण में मेवाड़ रियासत का विलय करके संयुक्त राजस्थान का निर्माण किया गया था। इस नए गठित प्रशासनिक संघ का औपचारिक उद्घाटन 18 अप्रैल 1948 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु द्वारा संपन्न किया गया था। इस चरण में उदयपुर को राजधानी बनाया गया और मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया था। इस विलय ने राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया को अत्यधिक गति प्रदान की थी।

7. (B) इसकी राजधानी भरतपुर में स्थापित की गई थी।
राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण में अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली रियासतों को मिलाकर मत्स्य संघ का निर्माण किया गया था। इस संघ का उद्घाटन 18 मार्च 1948 को हुआ था। धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह को इसका राजप्रमुख तथा शोभाराम कुमावत को प्रधानमंत्री बनाया गया था। मत्स्य संघ की राजधानी अलवर को बनाया गया था, न कि भरतपुर को। अतः राजधानी के संबंध में दिया गया विवरण पूर्णतः असत्य एवं त्रुटिपूर्ण है।

8. (C) माउंट आबू और देलवाड़ा
सिरोही रियासत के राजस्थान में पूर्ण विलय को लेकर गंभीर मतभेद उत्पन्न हुए थे। सिरोही के महत्वपूर्ण पर्वतीय स्थल माउंट आबू और देलवाड़ा को प्रारंभ में बॉम्बे राज्य में मिला दिया गया था। स्थानीय निवासियों तथा राजस्थान के नेताओं ने इस निर्णय का कड़ा विरोध किया और इसे राजस्थान का अभिन्न अंग बताया। लंबी वार्ता और जनआंदोलन के पश्चात राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 के तहत इन क्षेत्रों को अंतिम रूप से राजस्थान में शामिल किया गया।

9. (D) मेवाड़
राजस्थान के एकीकरण के चतुर्थ चरण में 30 मार्च 1949 को बृहत् राजस्थान की स्थापना हुई थी। इस चरण में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर जैसी चार बड़ी रियासतों का विलय किया गया था। मेवाड़ रियासत पहले ही तीसरे चरण में संयुक्त राजस्थान के रूप में शामिल हो चुकी थी। इसलिए मेवाड़ इन चार नई रियासतों में शामिल नहीं थी। इसी ऐतिहासिक गठन की स्मृति में प्रतिवर्ष 30 मार्च को राजस्थान दिवस मनाया जाता है।

10. (A) केवल I और II
बृहत् राजस्थान के गठन के समय विभिन्न प्रशासनिक विभागों के आवंटन हेतु पी. आर. राव समिति का गठन किया गया था।

Click Here to Buy book on Amazon

इस समिति की सिफारिशों के आधार पर जयपुर को राज्य की राजधानी बनाया गया और जोधपुर में उच्च न्यायालय की स्थापना की गई। शिक्षा विभाग बीकानेर में स्थित करने का सुझाव दिया गया था, जबकि कृषि विभाग भारतपुर और खनिज विभाग उदयपुर को सौंपा गया था। अतः प्रथम और द्वितीय कथन पूरी तरह सत्य हैं।

11. (B) सवाई मानसिंह द्वितीय
30 मार्च 1949 को बृहत् राजस्थान का गठन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अवसर था। इस विशाल प्रशासनिक इकाई के निर्माण के समय जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय को सर्वसम्मति से प्रथम राजप्रमुख पद पर नियुक्त किया गया था। उन्होंने 1 नवंबर 1956 तक इस पद पर अपनी सेवाएं दीं। इसके अतिरिक्त मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह को महाराजप्रमुख का सर्वोच्च पद प्रदान किया गया था, जो ऐतिहासिक सम्मान का प्रतीक था।

12. (B) शंकर राव देव समिति
मत्स्य संघ के गठन के बाद उसके बृहत् राजस्थान में विलय को लेकर जनता की राय विभाजित थी। इस समस्या के समाधान हेतु भारत सरकार ने शंकर राव देव समिति का गठन किया था। इस समिति ने धौलपुर और भरतपुर की जनता की इच्छाओं का अध्ययन किया और मत्स्य संघ को बृहत् राजस्थान में मिलाने की सिफारिश की। इस सिफारिश के आधार पर 15 मई 1949 को मत्स्य संघ का विलय बृहत् राजस्थान में किया गया।

13. (A) 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश
स्वतंत्रता के पश्चात राज्यों की सीमाओं का भाषाई आधार पर पुनर्गठन करने हेतु गठित आयोग की सिफारिशों के आधार पर राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 पारित किया गया था। इस अधिनियम ने पूर्व में प्रचलित राज्यों के वर्गीकरण जैसे भाग A, B, C और D श्रेणियों को पूरी तरह समाप्त कर दिया। इसके स्थान पर संपूर्ण देश में प्रशासनिक सरलता हेतु 14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों का एक नया ढांचा निर्मित किया गया।

14. (C) एस. के. धर
दिसंबर 1953 में भारत सरकार ने भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांगों पर विचार करने हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की थी। इस आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति फज़ल अली थे तथा के. एम. पणिक्कर और एच. एन. कुंज़रु इसके अन्य दो सदस्य थे। एस. के. धर इस आयोग के सदस्य नहीं थे, बल्कि वे 1948 में संविधान सभा द्वारा गठित धर आयोग के अध्यक्ष थे।

15. (D) I, II, III और IV
राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 द्वारा राजस्थान के मानचित्र में व्यापक परिवर्तन किए गए। भाग C राज्य अजमेर-मेरवाड़ा का विलय राजस्थान में किया गया तथा आबू रोड एवं देलवाड़ा तहसीलों को भी शामिल किया गया। मध्य भारत के मंदसौर जिले के सुनेल टप्पा क्षेत्र का राजस्थान में विलय हुआ, जबकि झालावाड़ के सिरोंज उप-खंड को मध्य प्रदेश को सौंप दिया गया। इस प्रकार राजस्थान के एकीकरण की अंतिम प्रक्रिया में ये सभी कथन पूर्णतः सत्य हैं।

16. (C) उत्तर प्रदेश
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में राज्यों के पुनर्गठन की प्रक्रिया मुख्य रूप से भाषाई पहचान के आधार पर प्रारंभ हुई थी। 1953 में तेलुगु भाषी क्षेत्रों के लिए आंध्र प्रदेश का गठन हुआ, जबकि 1960 में द्विभाषी बॉम्बे राज्य का विभाजन करके मराठी भाषी महाराष्ट्र और गुजराती भाषी गुजरात का सृजन किया गया। उत्तर प्रदेश का गठन भाषाई आधार पर नया नहीं किया गया था, बल्कि यह स्वतंत्रता पूर्व के संयुक्त प्रांत का ही पुनर्नामित रूप था।

17. (B) भाषाई आधार
जून 1948 में संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने एस. के. धर की अध्यक्षता में भाषाई प्रांत आयोग का गठन किया था। इस आयोग का मुख्य कार्य यह जांच करना था कि क्या भारत में राज्यों का पुनर्गठन भाषाई आधार पर किया जाना व्यावहारिक और उचित है। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से भाषाई आधार को खारिज कर दिया और प्रशासनिक सुविधा, वित्तीय व्यावहारिकता तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को पुनर्गठन का मुख्य आधार बनाने की सिफारिश की।

NODIA

18. (D) आंध्र प्रदेश
स्वतंत्रता के पश्चात मद्रास राज्य के तेलुगु भाषी क्षेत्रों को अलग कर नया राज्य बनाने की मांग जोर पकड़ने लगी। इस मांग को लेकर प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी पोट्टी श्रीरामुलु ने आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया। 56 दिनों के अनशन के बाद दिसंबर 1952 में उनका निधन हो गया, जिससे व्यापक जनआंदोलन भड़क उठा। परिणामस्वरूप, सरकार को अक्टूबर 1953 में भाषाई आधार पर देश के पहले राज्य के रूप में आंध्र प्रदेश का गठन करना पड़ा।

19. (A) इसने राज्य पुनर्गठन के एकमात्र आधार के रूप में भाषा को अस्वीकार कर दिया।
धर आयोग की रिपोर्ट से उत्पन्न असंतोष को दूर करने के लिए दिसंबर 1948 में कांग्रेस ने जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल और पट्टाभि सीतारामैया की JVP समिति बनाई। इस समिति ने स्थिति का गहन विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष निकाला कि उस समय भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए हानिकारक हो सकता है। अतः समिति ने भाषा को राज्यों के पुनर्गठन का मुख्य आधार मानने से पूरी तरह इनकार कर दिया।

20. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के बाद राज्यों के भाषाई पुनर्गठन को लेकर यह आशंका थी कि इससे देश का विभाजन हो जाएगा। किंतु व्यावहारिक रूप से इस कदम ने क्षेत्रीय और भाषाई आकांक्षाओं को लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्थान दिया। इससे अलगाववादी प्रवृत्तियों में भारी कमी आई और विविध सांस्कृतिक समूहों में भारत के प्रति निष्ठा बढ़ी। इस प्रकार भाषाई पुनर्गठन ने राष्ट्रीय एकता और अखंडता को अत्यधिक मजबूत किया। अतः कथन और कारण दोनों सत्य और व्याख्यात्मक हैं।

21. (A) हैरोड-डोमर मॉडल
स्वतंत्रता के पश्चात भारत के आर्थिक विकास की नींव रखने के लिए 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना शुरू की गई थी। यह योजना मुख्य रूप से प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों रोय हैरोड और एवसे डोमर द्वारा विकसित 'हैरोड-डोमर संवृद्धि मॉडल' पर आधारित थी। इस मॉडल का मुख्य ध्यान बचत दर और पूंजी-उत्पाद अनुपात को बढ़ाकर आर्थिक वृद्धि दर को गति देना था, जिससे स्वतंत्रता के तुरंत बाद देश की अर्थव्यवस्था को स्थिरता और गति प्रदान की जा सके।

22. (D) यह राज्य के नेतृत्व में नियोजित विकास के लिए उद्योगपतियों द्वारा तैयार की गई एक रुपरेखा थी।
वर्ष 1944 में भारत के आठ प्रमुख उद्योगपतियों ने मिलकर देश के आर्थिक विकास हेतु एक विस्तृत योजना तैयार की, जिसे 'बॉम्बे प्लान' कहा जाता है। इस योजना का मुख्य महत्व यह था कि इसमें स्वतंत्र भारत में तीव्र औद्योगीकरण, बुनियादी ढांचे के निर्माण और आर्थिक प्रगति के लिए राज्य की सक्रिय भूमिका और आर्थिक नियोजन की आवश्यकता पर बल दिया गया था। इसने स्वतंत्रता के बाद भारत की नियोजित अर्थव्यवस्था के निर्माण की दिशा तय की।

23. (B) केवल I और II
भारत के आर्थिक इतिहास में नेहरुवादी युग ने नियोजित विकास का मार्ग प्रशस्त किया। पहली पंचवर्षीय योजना ने कृषि विकास पर बल दिया, जबकि दूसरी योजना में भारी उद्योगों के तीव्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रसिद्ध सांख्यिकीविद पी. सी. महालनोबिस द्वितीय योजना के मुख्य वास्तुकार थे, जिन्होंने भारी उद्योगों के मॉडल का सुझाव दिया। प्रथम योजना में निजीकरण के बजाय सार्वजनिक क्षेत्र और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी गई थी। अतः कथन I और II सही हैं।

24. (C) कृषि और सिंचाई
वर्ष 1951 से 1956 तक संचालित प्रथम पंचवर्षीय योजना के समय भारत गंभीर खाद्यान्न संकट और शरणार्थी पुनर्वास की समस्याओं से जूझ रहा था। इस कारण योजनाकारों ने देश में कृषि उत्पादन बढ़ाने और सिंचाई सुविधाओं के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। भाखड़ा नांगल और दामोदर घाटी जैसी विशाल बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं के निर्माण हेतु बजट का सबसे बड़ा हिस्सा कृषि और सिंचाई क्षेत्र के लिए ही आवंटित किया गया था।

25. (D) राष्ट्रीय नियोजन समिति -> बॉम्बे प्लान -> योजना आयोग -> राष्ट्रीय विकास परिषद
भारत में आर्थिक नियोजन के इतिहास का सही कालक्रम इस प्रकार है। 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन हुआ। इसके पश्चात 1944 में उद्योगपतियों ने बॉम्बे प्लान प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता के बाद मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना की गई। अंततः योजनाओं के अनुमोदन और राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु अगस्त 1952 में राष्ट्रीय विकास परिषद का गठन किया गया। अतः सही क्रम यही है।

26. (A) एक कार्यकारी प्रस्ताव द्वारा
स्वतंत्रता के पश्चात भारत के संतुलित और सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु योजना आयोग का निर्माण किया गया। 15 मार्च 1950 को मंत्रिमंडल के एक साधारण कार्यकारी प्रस्ताव द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। यह न तो एक संवैधानिक निकाय था और न ही संसद के किसी अधिनियम द्वारा निर्मित वैधानिक निकाय था। यह एक गैर-संवैधानिक और परामर्शदात्री संस्था के रूप में कार्य करता था, जिसे 2015 में नीति आयोग द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया।

27. (B) गुलजारीलाल नंदा
मार्च 1950 में जब भारत सरकार द्वारा योजना आयोग की स्थापना की गई, तब प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु इसके पदेन अध्यक्ष बने। आयोग के सुचारु संचालन और प्रशासनिक कार्यों की देखरेख हेतु उपाध्यक्ष का पद निर्मित किया गया था। स्वतंत्रता सेनानी और प्रमुख नेता गुलजारीलाल नंदा को योजना आयोग के प्रथम उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने भारत की शुरुआती पंचवर्षीय योजनाओं की रुपरेखा तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

28. (B) यह संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत एक संवैधानिक निकाय के रूप में कार्य करती है।
राष्ट्रीय विकास परिषद का गठन अगस्त 1952 में योजना आयोग और राज्यों के बीच समन्वय स्थापित करने हेतु किया गया था। प्रधानमंत्री इसके पदेन अध्यक्ष होते हैं और सभी राज्यों के मुख्यमंत्री इसके सदस्य होते हैं। यह एक गैर-संवैधानिक और गैर-वैधानिक निकाय है। इसका संविधान के अनुच्छेद 280 से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि अनुच्छेद 280 भारत के वित्त आयोग के गठन का प्रावधान करता है। अतः संवैधानिक निकाय वाला कथन पूरी तरह से गलत है।

29. (A) अनुच्छेद 324
भारत में स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया संपन्न कराने हेतु संविधान में विशेष प्रावधान किया गया है। संविधान का भाग 15 और अनुच्छेद 324 भारत के निर्वाचन आयोग की स्थापना का प्रावधान करता है। यह अनुच्छेद निर्वाचन आयोग को संसद, राज्य विधानमंडलों, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के पदों के लिए होने वाले सभी चुनावों के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण का पूर्ण अधिकार प्रदान करता है, जिससे भारत का लोकतंत्र सुदृढ़ बना रहता है।

30. (C) P-2, Q-3, R-4, S-1
भारत के निर्वाचन आयोग के इतिहास से जुड़े तथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सुकुमार सेन देश के प्रथम मुख्य निर्वाचन आयुक्त बने थे। स्वतंत्र भारत के प्रथम आम चुनाव 1951-52 में सफलतापूर्वक आयोजित किए गए थे। 1988 के 61वें संवैधानिक संशोधन द्वारा मतदान की न्यूनतम आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई थी। वर्ष 2004 के आम चुनाव में पूरे देश में पहली बार पूर्णतः इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का प्रयोग किया गया था।

Downloaded from www.pdf.tube

31. (B) 1989
1950 में स्थापना के समय से भारत का निर्वाचन आयोग मुख्य रूप से एक एकल-सदस्यीय निकाय था, जिसमें केवल मुख्य निर्वाचन आयुक्त होता था। अक्टूबर 1989 में पहली बार राष्ट्रपति द्वारा दो अतिरिक्त निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति की गई, जिससे यह बहु-सदस्यीय निकाय बना। यद्यपि 1990 में इसे पुनः एकल-सदस्यीय कर दिया गया था, परंतु अक्टूबर 1993 में कानून बनाकर इसे स्थायी रूप से तीन सदस्यीय आयोग के रूप में स्थापित कर दिया गया।

32. (C) ग्राम पंचायतों के सदस्य
भारत का निर्वाचन आयोग एक स्वायत्त संवैधानिक संस्था है जो देश की प्रमुख लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रियाओं का संचालन करती है। यह आयोग राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, संसद के दोनों सदनों तथा राज्य विधानसभाओं और विधान परिषदों के चुनाव आयोजित करने के लिए उत्तरदायी है। हालांकि, ग्राम पंचायतों और नगरपालिकाओं जैसे स्थानीय निकायों के चुनाव कराने की जिम्मेदारी भारत के निर्वाचन आयोग की नहीं होती, बल्कि इसके लिए प्रत्येक राज्य में पृथक राज्य निर्वाचन आयोग गठित होता है।

33. (B) भारत सरकार अधिनियम, 1935
भारत में लोक सेवाओं की ऐतिहासिक परंपरा अत्यंत पुरानी है। ब्रिटिश काल के दौरान भारत सरकार अधिनियम, 1935 के माध्यम से केंद्र स्तर पर एक 'फेडरल पब्लिक सर्विस कमीशन' अर्थात् संघीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की गई थी। स्वतंत्रता के बाद, 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू होने पर इसी संस्था का नाम बदलकर संघ लोक सेवा आयोग कर दिया गया। इस प्रकार यह अपनी ऐतिहासिक और प्रशासनिक निरंतरता 1935 के अधिनियम से प्राप्त करता है।

34. (D) केवल I और II
संघ लोक सेवा आयोग संविधान के अनुच्छेद 315 के तहत स्थापित एक स्वतंत्र संवैधानिक संस्था है। इसके अध्यक्ष और अन्य सदस्यों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। आयोग का मुख्य कार्य संघ की सेवाओं के लिए योग्य अधिकारियों का चयन करना है। संविधान के अनुसार पिछड़े वर्गों के लिए नियुक्तियों में आरक्षण के प्रावधान तय करते समय सरकार के लिए संघ लोक सेवा आयोग से परामर्श करना अनिवार्य नहीं बनाया गया है। अतः केवल कथन I और II सही हैं।

35. (A) एच. के. कृपलानी
26 जनवरी 1950 को जब भारत का संविधान लागू हुआ, तब संघीय लोक सेवा आयोग का पुनर्गठन संघ लोक सेवा आयोग के रूप में किया गया। इस ऐतिहासिक परिवर्तन के अवसर पर एच. के. कृपलानी को स्वतंत्र भारत में इस संवैधानिक आयोग का प्रथम भारतीय अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उन्होंने प्रशासनिक सेवाओं में निष्पक्षता, योग्यता और दक्षता के मानकों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे सिविल सेवाओं की विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा मजबूत हुई।

36. (C) आईएएस अधिकारियों के कैडर आवंटन और तबादलों का प्रबंधन करना।
संघ लोक सेवा आयोग भारत में केंद्रीय सेवाओं में निष्पक्ष भर्ती और पदोन्नति सुनिश्चित करने वाली सर्वोच्च संस्था है। यह परीक्षाओं का संचालन करती है और अनुशासनात्मक मामलों तथा भर्ती नियमों पर सरकार को सलाह देती है। हालांकि, चयनित सिविल सेवकों का कैडर आवंटन, स्थानांतरण और पदस्थापना का प्रबंधन संघ लोक सेवा आयोग के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता। यह कार्य कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग तथा संबंधित मंत्रालयों द्वारा निष्पादित किया जाता है।

37. (A) बेलग्रेड
द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शीतयुद्ध के दौर में दुनिया दो महाशक्तियों के गुटों में विभाजित हो रही थी। ऐसे समय में नवस्वतंत्र देशों ने किसी भी गुट में शामिल न होने का निर्णय लिया। इस सोच को साकार करने के लिए सितम्बर 1961 में युगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रथम आधिकारिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में 25 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और शांति तथा सहयोग का संदेश दिया।

38. (D) चीन
29 अप्रैल 1954 को भारत और चीन के बीच तिब्बत क्षेत्र के संबंध में एक ऐतिहासिक व्यापारिक और सांस्कृतिक समझौता हुआ था। इस समझौते की प्रस्तावना में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच बुनियादी सिद्धांत शामिल किए गए थे, जिन्हें 'पंचशील' के नाम से जाना जाता है। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन-लाई ने इस पर हस्ताक्षर किए थे। यह समझौता अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शांति और सहयोग का एक प्रमुख मॉडल माना गया था।

39. (B) विंस्टन चर्चिल
गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना शीतयुद्ध के समय दोनों वैश्विक शक्ति गुटों से अलग रहने के उद्देश्य से की गई थी। इसके प्रमुख संस्थापक नेताओं में भारत के जवाहरलाल नेहरू, मिस्र के गमाल अब्दुल नासिर, युगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज़ टीटो, इंडोनेशिया के सुकर्णो और घाना के वामे एनक्रूमा शामिल थे। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल इस आंदोलन के संस्थापकों में शामिल नहीं थे, क्योंकि वे पश्चिमी पूंजीवादी गुट के प्रमुख समर्थक थे।

40. (C) I, II, III और IV
1954 में भारत और चीन के मध्य हुए पंचशील समझौते में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संचालन हेतु पांच मूलभूत सिद्धांत तय किए गए थे। इनमें एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान, परस्पर गैर-आक्रामकता, आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप, समानता एवं पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व शामिल हैं। ये सभी पांचों सिद्धांत वैश्विक शांति और गुटनिरपेक्षता की नीति के मुख्य आधार स्तंभ बने। अतः दिए गए चारों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

NODIA

41. (D) मिश्रित अर्थव्यवस्था
स्वतंत्रता के पश्चात भारत की आर्थिक नीति को दिशा देने के लिए 6 अप्रैल 1948 को पहली औद्योगिक नीति की घोषणा की गई थी। इस प्रस्ताव ने देश के विकास के लिए 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' के मॉडल को आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया। इसका तात्पर्य यह था कि देश के आर्थिक और औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र दोनों एक साथ मिलकर कार्य करेंगे, जिससे सामाजिक कल्याण के साथ-साथ औद्योगिक उत्पादन को भी प्रोत्साहन मिल सके।

42. (A) चार
1948 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव में उद्योगों को सरकारी नियंत्रण और स्वामित्व के आधार पर चार मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया था। पहली श्रेणी में पूर्णतः राज्य के एकाधिकार वाले उद्योग शामिल थे। दूसरी श्रेणी में वे उद्योग थे जहां नए उपक्रम केवल राज्य द्वारा स्थापित किए जा सकते थे। तीसरी श्रेणी में नियंत्रित उद्योग शामिल थे जिन पर सरकार का विनियमन था, और चौथी श्रेणी को निजी क्षेत्र के लिए पूरी तरह खुला रखा गया था।

43. (B) इसने सार्वजनिक क्षेत्र के साथ-साथ निजी उद्यमों की भी अनुमति दी।
1948 का औद्योगिक नीति प्रस्ताव स्वतंत्र भारत का पहला आर्थिक दस्तावेज था। इसने देश में मिश्रित अर्थव्यवस्था की नींव रखी, जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र को रणनीतिक महत्व के उद्योगों का प्रभार दिया गया और साथ ही निजी उद्यमों को भी विकास के समान अवसर प्रदान किए गए। इसने निजी क्षेत्र को समाप्त करने के बजाय उनके योगदान को स्वीकार किया और विदेशी पूंजी का भी सशर्त स्वागत किया, जिससे देश में औद्योगिक उत्पादन और रोजगार के नए साधन विकसित हो सके।

44. (B) श्यामा प्रसाद मुखर्जी
स्वतंत्र भारत के औद्योगिक विकास की रुपरेखा तय करने वाला 1948 का पहला औद्योगिक नीति प्रस्ताव संसद में प्रस्तुत किया गया था। उस समय केंद्रीय उद्योग और आपूर्ति मंत्री के रूप में कार्य कर रहे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 6 अप्रैल 1948 को संविधान सभा (विधायी) में इस ऐतिहासिक नीति को पेश किया था। इस नीति ने देश में सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के सह-अस्तित्व पर आधारित मिश्रित अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया था।

45. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
1956 का औद्योगिक नीति प्रस्ताव भारत के औद्योगिक इतिहास का एक मील का पत्थर था, जिसे बहुधा "भारत का आर्थिक संविधान" कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यह था कि इसने देश में समाज के समाजवादी ढांचे के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया। इस नीति ने सार्वजनिक क्षेत्र को आर्थिक विकास के मुख्य चालक के रूप में स्थापित किया और रणनीतिक उद्योगों पर राज्य का वर्चस्व कायम किया। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा सही व्याख्या करते हैं।

46. (C) इसने उन्हें अनुसूची A, अनुसूची B और अनुसूची C में विभाजित किया।
1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव ने देश के औद्योगीकरण को गति देने के लिए उद्योगों को तीन स्पष्ट अनुसूचियों में वर्गीकृत किया। अनुसूची A में 17 उद्योग शामिल थे, जो पूर्णतः राज्य के स्वामित्व में थे। अनुसूची B में 12 उद्योग थे, जिनमें राज्य धीरे-धीरे अपनी भागीदारी बढ़ाता और निजी क्षेत्र केवल पूरक भूमिका निभाता। अनुसूची C में शेष सभी उद्योग शामिल थे, जिन्हें निजी क्षेत्र की पहल और विकास के लिए पूरी तरह छोड़ दिया गया था।

47. (D) देशभर में प्रमुख कच्चे माल को समान कीमतों पर उपलब्ध कराना।
भारत सरकार ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भाड़ा समतुल्यता नीति लागू की थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य कोयला, लोहा और इस्पात जैसे आवश्यक कच्चे माल को देश के किसी भी स्थान पर एक समान मूल्य पर उपलब्ध कराना था। इसके माध्यम से दूर-दराज के क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना को सुलभ बनाया गया, ताकि खनिजों की उपलब्धता वाले क्षेत्रों पर ही उद्योगों का संकेंद्रण न हो सके।

48. (B) 17
1956 की औद्योगिक नीति प्रस्ताव की अनुसूची A में उन उद्योगों को सूचीबद्ध किया गया था जिनका भावी विकास करना राज्य की अनन्य और पूर्ण जिम्मेदारी थी। इस अनुसूची में कुल 17 प्रमुख और रणनीतिक उद्योगों को शामिल किया गया था। इनमें परमाणु ऊर्जा, शस्त्र एवं गोला-बारूद, लोहे और इस्पात का निर्माण, भारी बिजली संयंत्र तथा रेलवे परिवहन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल थे, ताकि राष्ट्र की सुरक्षा और आर्थिक आधारभूत ढांचे को मजबूती प्रदान की जा सके।

49. (B) फोर्ड फाउंडेशन
भारत में कृषि उत्पादन को तीव्र गति से बढ़ाने और आधुनिक तकनीकों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए 1960-61 में सघन कृषि जिला कार्यक्रम शुरु किया गया था। यह कार्यक्रम भारत में हरित क्रांति का एक महत्वपूर्ण अग्रदूत सिद्ध हुआ। इस योजना को अमेरिकी संस्था 'फोर्ड फाउंडेशन' की तकनीकी और वित्तीय सहायता से देश के सात चुनिंदा जिलों में लागू किया गया था, जिससे उन्नत बीजों और उर्वरकों का सफल परीक्षण संभव हो सका।

50. (D) III, I, II, IV
स्वतंत्रता के बाद भारत की कृषि पहलों का सही कालक्रम इस प्रकार है। सर्वप्रथम खाद्यान्न आत्मनिर्भरता हेतु 1940 के दशक के अंत में 'अधिक अन्न उपजाओ अभियान' प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात 1960-61 में 'सघन कृषि जिला कार्यक्रम' (IADP) लागू हुआ। इसके बाद 1966 में 'उच्च उपज देने वाली किस्मों का कार्यक्रम' (HYVP) शुरु हुआ, जो हरित क्रांति का आधार बना। अंततः 2007 में 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन' प्रारंभ किया गया। अतः सही क्रम III, I, II, IV है।

Click Here to Buy book on Flipkart

51. (A) नॉर्मन बोरलॉग
20वीं शताब्दी के मध्य में विश्व स्तर पर खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने हेतु अमेरिकी कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग ने गेहूं की अर्ध-बौनी और उच्च उपज देने वाली किस्मों का सफल विकास किया था। उनके इस क्रांतिकारी अनुसंधान ने भारत सहित कई विकासशील देशों में हरित क्रांति की ठोस नींव रखी। भारत में एम. एस. स्वामीनाथन ने बोरलॉग की इन उन्नत किस्मों को भारतीय कृषि परिस्थितियों के अनुकूल ढालकर देश को खाद्यान्न उत्पादन में पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाया।

52. (C) गेहूं और चावल
1960 के दशक के उत्तरार्ध में भारत में प्रारंभ हुई हरित क्रांति ने देश के कृषि परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। इस क्रांति के शुरुआती चरण में मुख्य रूप से खाद्यान्न फसलों पर ध्यान केंद्रित किया गया था, जिनमें गेहूं और चावल सबसे बड़े लाभार्थी सिद्ध हुए। मेक्सिको से लाए गए गेहूं के बौने बीजों और फिलीपींस के चावल के उन्नत बीजों के प्रयोग से इन दोनों फसलों के उत्पादन में अभूतपूर्व और ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई थी।

53. (A) भारत के प्रधानमंत्री
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) भारत का सबसे बड़ा औद्योगिक अनुसंधान और विकास संगठन है। इसकी स्थापना सितंबर 1942 में एक स्वायत्त निकाय के रूप में की गई थी। पदेन व्यवस्था के अनुसार, भारत के प्रधानमंत्री इस परिषद के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता संगठन को उच्च स्तरीय नीतिगत मार्गदर्शन और अनुसंधान गतिविधियों के संचालन में प्रशासनिक सहायता प्रदान करती है, जिससे देश में वैज्ञानिक विकास को निरंतर बढ़ावा मिलता है।

54. (D) एस. एस. भटनागर
भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. शांति स्वरूप भटनागर सीएसआईआर के संस्थापक निदेशक थे। उनकी असीम दूरदर्शिता और प्रयासों के फलस्वरूप स्वतंत्रता के बाद देश भर में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं का एक विशाल नेटवर्क स्थापित हो सका। उनके महान योगदान के सम्मान में ही भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र का सर्वोच्च पुरस्कार 'शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार' प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। उन्होंने भारत में वैज्ञानिक आधारभूत ढांचे को निर्मित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी।

55. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
सीएसआईआर की राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं देश के वैज्ञानिक विकास में संलग्न हैं। राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (NPL) नई दिल्ली में स्थित है, जो भौतिक मानकों का रखरखाव करती है। राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (NCL) पुणे में स्थित है। केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान (CFTRI) मैसूरु में स्थित है, जो खाद्य प्रसंस्करण पर कार्य करता है। राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (NEERI) नागपुर में स्थित है। इस प्रकार सही मिलान P-3, Q-1, R-2 और S-4 है।

56. (C) औद्योगिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत के समक्ष औद्योगिक और तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनने की बड़ी चुनौती थी। इसी उद्देश्य से सीएसआईआर और उसकी राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की श्रृंखला स्थापित की गई। इन संस्थानों का प्राथमिक रणनीतिक उद्देश्य औद्योगिक अनुसंधान को बढ़ावा देना, स्वदेशी तकनीकों का विकास करना और आयात पर निर्भरता घटाकर देश को प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाना था, जिससे आर्थिक समृद्धि और औद्योगीकरण की नींव मजबूत हो सके।

57. (D) एन. आर. सरकार समिति
द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत के आर्थिक और औद्योगिक पुनरुत्थान हेतु उच्च स्तरीय तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता महसूस की गई। इसके लिए वायसराय की कार्यकारिणी परिषद ने 1946 में नलिनी रंजन सरकार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। एन. आर. सरकार समिति ने भारत के चारों क्षेत्रों में एमआईटी की तर्ज पर उच्च तकनीकी संस्थानों की स्थापना की सिफारिश की, जिसके परिणामस्वरूप देश में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (IITs) का निर्माण हुआ।

NODIA

58. (A) I, II और III
भारत में उच्च तकनीकी शिक्षा के विकास हेतु स्थापित आईआईटी का इतिहास अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1951 में स्थापित आईआईटी खड़गपुर देश का पहला आईआईटी था। इसके बाद 1958 में आईआईटी बॉम्बे की स्थापना सोवियत संघ की सहायता से की गई थी। 1959 में स्थापित आईआईटी कानपुर के विकास में संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रमुख विश्वविद्यालयों का वित्तीय और तकनीकी सहयोग प्राप्त हुआ था। अतः दिए गए तीनों कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

59. (B) पश्चिम जर्मनी
भारत में उच्च तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए 1959 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) मद्रास की स्थापना की गई थी। इस प्रतिष्ठित संस्थान के निर्माण में पश्चिम जर्मनी सरकार ने व्यापक तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान की थी। यह उस समय भारत के बाहर किसी विदेशी सरकार द्वारा दिया गया सबसे बड़ा शैक्षणिक और तकनीकी सहयोग था, जिसने भारत में इंजीनियरिंग शिक्षा के स्तर को अंतरराष्ट्रीय मानकों के समकक्ष स्थापित करने में मदद की।

60. (B) इसने आईआईटी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के प्रत्यक्ष नियंत्रण में ला दिया।
प्रौद्योगिकी संस्थान अधिनियम, 1961 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों को स्वायत्तता और विधिक दर्जा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण केंद्रीय कानून है। इसके तहत सभी आईआईटी को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान घोषित किया गया और उन्हें अपनी डिग्री देने का अधिकार मिला। इस कानून ने समन्वय हेतु आईआईटी परिषद बनाई। हालांकि, इसने आईआईटी को यूजीसी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में नहीं लाया, बल्कि इन्हें स्वायत्त निकाय बनाए रखा। अतः यूजीसी नियंत्रण वाला कथन असत्य है।

61. (B) 1948
भारत में परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग और वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अगस्त 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की थी। प्रारंभ में यह आयोग वैज्ञानिक अनुसंधान विभाग के अंतर्गत कार्य करता था। बाद में अगस्त 1954 में सीधे प्रधानमंत्री के अधीन परमाणु ऊर्जा विभाग का गठन किया गया और आयोग को इसके अंतर्गत लाया गया। इस आयोग ने भारत के परमाणु कार्यक्रम की दिशा तय करने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

62. (C) होमी जे. भाभा
भारत के परमाणु कार्यक्रम की नींव रखने वाले महान भौतिक विज्ञानी डॉ. होमी जहांगीर भाभा थे। अगस्त 1948 में जब भारत सरकार द्वारा परमाणु ऊर्जा आयोग का गठन किया गया, तब डॉ. भाभा को इसका पहला अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उनकी दूरदृष्टि, उत्कृष्ट नेतृत्व और वैज्ञानिक मार्गदर्शन के कारण ही भारत परमाणु विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अग्रणी राष्ट्र बन सका। उन्हें भारतीय परमाणु कार्यक्रम का जनक कहा जाता है।

63. (D) अप्सरा (APSARA)
भारत के परमाणु अनुसंधान के इतिहास में 4 अगस्त 1956 का दिन अत्यंत महत्वपूर्ण था, जब ट्रॉम्बे स्थित परमाणु केंद्र में 'अप्सरा' नामक पहला अनुसंधान रिएक्टर क्रिटिकल अर्थात् चालू हुआ। यह केवल भारत का ही नहीं, बल्कि संपूर्ण एशिया महाद्वीप का पहला परमाणु अनुसंधान रिएक्टर था। इस रिएक्टर का डिजाइन और निर्माण भारतीय वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों द्वारा यूके की सहायता से प्राप्त ईंधन का उपयोग करके किया गया था, जो भारत की बड़ी उपलब्धि थी।

64. (C) I, II, III और IV
डॉ. होमी भाभा ने भारत की विशाल थोरियम निधि का उपयोग करने हेतु तीन-चरण वाला परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम तैयार किया था। प्रथम चरण में प्राकृतिक यूरेनियम से चलने वाले दाबयुक्त भारी जल रिएक्टर (PHWR) का उपयोग होता है। द्वितीय चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों (FBR) द्वारा प्लूटोनियम का उत्पादन किया जाता है। तृतीय चरण में थोरियम-आधारित रिएक्टरों से ऊर्जा प्राप्त की जाती है। अतः इस कार्यक्रम के विषय में दिए गए चारों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

65. (B) 1962
भारत में अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान को संगठित करने हेतु भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा 1962 में 'भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति' (INCOSPAR) की स्थापना की गई थी। यह समिति भारत के भावी अंतरिक्ष कार्यक्रमों की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने हेतु बनाई गई थी। बाद में वर्ष 1969 में इसी समिति का पुनर्गठन करके भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन अर्थात् इसरो (ISRO) की स्थापना की गई थी।

66. (D) विक्रम साराभाई
डॉ. विक्रम साराभाई भारत के एक महान दूरदर्शी वैज्ञानिक थे, जिन्होंने देश के विकास में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के महत्व को बहुत पहले ही पहचान लिया था। उन्होंने भारत सरकार को अंतरिक्ष अनुसंधान हेतु इनकोस्पार (INCOSPAR) के गठन के लिए प्रेरित किया। उनके निरंतर प्रयासों और कुशल नेतृत्व के कारण ही भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू हो सका। इसी ऐतिहासिक योगदान के कारण डॉ. विक्रम साराभाई को व्यापक रुप से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का जनक माना जाता है।

67. (A) यह पृथ्वी की चुंबकीय भूमध्य रेखा के अत्यधिक निकट स्थित है।
1960 के दशक में भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत के लिए केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के पास स्थित थुम्बा गांव का चयन किया गया था। इस स्थान के चयन का मुख्य वैज्ञानिक कारण यह था कि यह स्थल पृथ्वी की चुंबकीय भूमध्य रेखा (मैग्नेटिक इक्वेटर) के अत्यंत समीप स्थित है। यह भौगोलिक स्थिति ऊपरी वायुमंडल और आयनमंडल के वैज्ञानिक अध्ययन तथा साउंडिंग रॉकेटों के प्रक्षेपण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आदर्श मानी जाती थी।

68. (C) नाइक-अपाचे
21 नवंबर 1963 को भारत के अंतरिक्ष इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ा, जब केरल के थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन से पहला साउंडिंग रॉकेट सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। इस ऐतिहासिक रॉकेट का नाम 'नाइक-अपाचे' था, जो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा आपूर्ति किया गया था। इस सफल प्रक्षेपण ने भारत में अंतरिक्ष विज्ञान और रॉकेट तकनीक के प्रयोगात्मक अध्ययन का औपचारिक शुभारंभ किया, जिसने आगे चलकर इसरो की नींव मजबूत की।

69. (C) 2 अक्टूबर 1952
ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास और जनभागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने सामुदायिक विकास कार्यक्रम (CDP) की शुरुआत की थी। इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 1952 को किया गया था। इसका मुख्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं में सुधार करना तथा ग्रामीणों में आत्मनिर्भरता एवं सहयोग की भावना का विकास करना था।

NODIA

70. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
1952 में शुरु किया गया सामुदायिक विकास कार्यक्रम ग्रामीण जीवन में अपेक्षित परिवर्तन लाने में पूर्णतः सफल नहीं हो सका। इसका प्रमुख कारण यह था कि यह कार्यक्रम अत्यधिक सरकारी नियंत्रण और नौकरशाही पर निर्भर हो गया था। प्रशासनिक जटिलताओं के कारण इसमें स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी और जुड़ाव का अभाव रहा। जनता की सहभागिता न होने से यह अपनी मूल भावना खो बैठा। अतः दिए गए अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं।

71. (B) अल्बर्ट मेयर
स्वतंत्रता के तुरंत बाद 1948 में उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में एक प्रायोगिक ग्रामीण विकास योजना शुरू की गई थी, जिसे 'इटावा पायलट प्रोजेक्ट' कहा जाता है। इस अभिनव परियोजना की शुरुआत अमेरिकी नगर नियोजक अल्बर्ट मेयर द्वारा की गई थी। इस परियोजना ने ग्रामीण सहभागिता और विकास का एक सफल मॉडल प्रस्तुत किया, जिसने आगे चलकर 1952 के राष्ट्रीय सामुदायिक विकास कार्यक्रम की रुपरेखा तैयार करने में मुख्य प्रेरणा का कार्य किया।

72. (C) सीडीपी पूरी तरह से एक गैर-सरकारी पहल थी जो परोपकारी ट्रस्टों द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित थी।
सामुदायिक विकास कार्यक्रम का ढांचा पूरी तरह से सरकारी प्रशासनिक तंत्र पर आधारित था। इसके तहत देश को विकास खंडों में बांटा गया था, जहाँ खंड विकास अधिकारी प्रमुख प्रशासक होता था तथा ग्राम सेवक ग्रामीणों के बीच प्राथमिक कड़ी था। यह विचार गलत है कि सीडीपी एक गैर-सरकारी पहल थी जो पूरी तरह निजी ट्रस्टों द्वारा वित्त पोषित थी। वास्तव में यह भारत सरकार की एक पूर्णतः प्रायोजित और संचालित योजना थी।

73. (D) सामुदायिक विकास कार्यक्रम
भारत सरकार ने 1957 में बलवंत राय मेहता की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया था। इस समिति का प्राथमिक कार्य 1952 में शुरू किए गए सामुदायिक विकास कार्यक्रम और राष्ट्रीय विस्तार सेवा के कार्यों की समीक्षा करना था। समिति ने अपनी जांच में पाया कि जनभागीदारी के बिना ग्रामीण विकास संभव नहीं है। इसीलिए समिति ने ग्रामीण स्तर पर शक्तियों के हस्तांतरण हेतु त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू करने की महत्वपूर्ण सिफारिश की थी।

74. (A) नागौर, राजस्थान में 2 अक्टूबर 1959 को
बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिशों के आधार पर लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को धरातल पर उतारने हेतु पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने 2 अक्टूबर 1959 को महात्मा गांधी के जन्मदिवस के अवसर पर राजस्थान के नागौर जिले में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का औपचारिक और ऐतिहासिक उद्घाटन किया था। इसके साथ ही राजस्थान देश में इस व्यवस्था को पूरी तरह लागू करने वाला पहला राज्य बन गया था।

75. (B) राजस्थान, तत्पश्चात आंध्र प्रदेश
बलवंत राय मेहता समिति की रिपोर्ट आने के बाद देश में पंचायती राज व्यवस्था को अपनाने की होड़ शुरु हुई। 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर में प्रधानमंत्री नेहरु ने देश की पहली त्रिस्तरीय पंचायत का उद्घाटन किया। इसके तुरंत बाद, 1 नवंबर 1959 को आंध्र प्रदेश ने अपने संपूर्ण राज्य में पंचायती राज व्यवस्था को लागू किया। इस प्रकार लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की इस व्यवस्था को लागू करने वाले शुरुआती दो राज्य क्रमशः राजस्थान और आंध्र प्रदेश थे।

76. (B) लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण
बलवंत राय मेहता समिति ने 1957 में ग्रामीण विकास और स्थानीय स्वशासन को सुदृढ़ करने हेतु जिस विचार की वकालत की, उसे 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण' कहा जाता है। इसका मुख्य तात्पर्य शासन और निर्णय लेने की शक्तियों को केवल केंद्र या राज्य स्तर तक सीमित न रखकर उन्हें सीधे गांव के लोगों और प्रतिनिधियों के हाथों में सौंपना था। इसी लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण की अवधारणा ने भारत में आधुनिक त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का आधार तैयार किया।

77. (A) व्यक्तिगत भूमि जोत की अधिकतम सीमा निर्धारित करना और अधिशेष भूमि का पुनर्वितरण करना।
स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में कृषि भूमि का असमान वितरण एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्या थी। इसे सुधारने के लिए सरकार ने भूमि सीमा निर्धारण (सीलिंग) कानून लागू किए। इन अधिनियमों का प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति या परिवार के पास रखी जा सकने वाली कृषि भूमि की अधिकतम सीमा तय करना था। इस सीमा से अधिक पाई गई अधिशेष भूमि को राज्य द्वारा अधिग्रहित करके भूमिहीन किसानों और छोटे काश्तकारों में पुनर्वितरित करना था।

78. (C) 1952
राजस्थान में आजादी के समय जागीरदारी प्रथा का व्यापक प्रभाव था, जिसमें किसानों का शोषण होता था। इस सामंती प्रथा को समाप्त करने और कृषकों को भूमि का स्वामित्व देने के उद्देश्य से राज्य विधानसभा ने 'राजस्थान भूमि सुधार एवं जागीर पुनर्ग्रहण अधिनियम' पारित किया था। यह ऐतिहासिक अधिनियम 1952 में लागू किया गया था। इसके माध्यम से जागीरदारों के विशेषाधिकार समाप्त कर दिए गए और किसानों को सीधे भूमि का मालिकाना हक प्राप्त हुआ।

79. (D) नौवीं अनुसूची
स्वतंत्रता के बाद राज्यों द्वारा पारित भूमि सुधार कानूनों को जमींदारों द्वारा मौलिक अधिकारों के हनन के आधार पर अदालतों में चुनौती दी जा रही थी। इस न्यायिक बाधा को दूर करने के लिए संसद ने 1951 में पहला संविधान संशोधन अधिनियम पारित किया। इस संशोधन के द्वारा संविधान में 'नौवीं अनुसूची' जोड़ी गई। इस अनुसूची में शामिल किए गए किसी भी कानून को मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर न्यायिक समीक्षा से सुरक्षा प्रदान की गई थी।

80. (C) P-4, Q-1, R-3, S-2
भारत के भू-राजस्व और भूमि सुधार आंदोलनों का मिलान इस प्रकार है। जमींदारी व्यवस्था में मध्यस्थ किसानों से लगान वसूलते थे। रैयतवाड़ी व्यवस्था में सरकार का काश्तकार के साथ सीधा बंदोबस्त होता था। महालवाड़ी व्यवस्था में पूरे ग्राम समुदाय या महाल के साथ राजस्व का समझौता किया जाता था। विनोबा भावे द्वारा शुरु किया गया भूदान आंदोलन स्वैच्छिक भूमि दान पर आधारित एक अनूठा सामाजिक आंदोलन था। अतः सही मिलान P-4, Q-1, R-3 और S-2 है।

Downloaded from www.pdf.tube

81. (B) सांप्रदायिकता और क्षेत्रवाद
स्वतंत्रता के बाद देश में सिर उठा रही सांप्रदायिक, जातीय और क्षेत्रीय ताकतों से निपटने के लिए अक्टूबर 1961 में राष्ट्रीय एकता परिषद (NIC) का गठन किया गया था। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोजन करके इस परिषद की नींव रखी थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य देश की अखंडता को नुकसान पहुंचाने वाले सांप्रदायिकता, जातिवाद और क्षेत्रवाद जैसी सामाजिक कुरीतियों का अध्ययन करना और उनसे निपटने के उपाय खोजना था।

82. (D) I, II और III
भारतीय संविधान ने देश में सांप्रदायिकता से निपटने और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा हेतु सुदृढ़ व्यवस्था की है। अनुच्छेद 15 धर्म, मूलवंश या जाति के आधार पर भेदभाव को रोकता है। संविधान ने अंग्रेजों द्वारा लागू पृथक निर्वाचक मंडल को पूरी तरह समाप्त कर दिया, जो सांप्रदायिकता का मुख्य कारण था। अनुच्छेद 30 अल्पसंख्यकों को अपनी रुचि के शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने का अधिकार देता है। अतः दिए गए तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

83. (C) 1962
देश में बढ़ती सांप्रदायिक और क्षेत्रीय विषमताओं पर चिंता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने 1961 में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन बुलाया था। इसके परिणामस्वरूप गठित राष्ट्रीय एकता परिषद (NIC) की पहली आधिकारिक बैठक जून 1962 में आयोजित की गई थी। इस बैठक की अध्यक्षता स्वयं जवाहरलाल नेहरु ने की थी, जिसमें देश में सांप्रदायिकता को रोकने, भाषाई विवादों को सुलझाने और राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के उपायों पर गहन विचार-विमर्श किया गया था।

84. (C) धर्मनिरपेक्षता और धर्म में राज्य की तटस्थता
स्वतंत्रता के बाद बहु-सांस्कृतिक और बहु-धार्मिक भारत को एकजुट रखने के लिए जवाहरलाल नेहरु ने धर्मनिरपेक्षता को राज्य की प्राथमिक नीति बनाया। उनका स्पष्ट मानना था कि भारत जैसे विशाल देश की अखंडता तभी बनी रह सकती है जब राज्य सभी धर्मों से समान दूरी बनाए रखे और किसी भी धर्म के साथ भेदभाव न करे। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता और धर्म में राज्य की तटस्थता का समर्थन करके देश में सांप्रदायिकता का मुकाबला करने का प्रयास किया।

85. (A) पाकिस्तान
1947 में भारत के विभाजन के साथ ही अभूतपूर्व मानवीय विस्थापन और त्रासदी उत्पन्न हुई। सीमाओं के आर-पार से लाखों शरणार्थियों का बड़े पैमाने पर पलायन शुरु हुआ। इस आकस्मिक संकट से निपटने, उनके रहने, भोजन और पुनर्वास की तत्काल व्यवस्था करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने अगस्त 1947 में राहत एवं पुनर्वास मंत्रालय की स्थापना की। इसका प्राथमिक कार्य मुख्य रूप से पाकिस्तान से भारत आने वाले विस्थापित शरणार्थियों का पुनर्वास सुनिश्चित करना था।

NODIA

86. (D) फरीदाबाद
1947 के विभाजन के बाद पश्चिमी पाकिस्तान से लाखों की संख्या में शरणार्थी भारत आए, विशेषकर दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में। इन विस्थापित शरणार्थियों को आश्रय, रोजगार और स्थायी निवास प्रदान करने के उद्देश्य से सरकार ने दिल्ली के समीप हरियाणा क्षेत्र में फरीदाबाद नामक एक नया औद्योगिक टाउनशिप विकसित किया। इस टाउनशिप में शरणार्थियों को स्वयं अपने मकान बनाने और औद्योगिक इकाइयों में रोजगार प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए गए थे।

87. (B) अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और शरणार्थियों की सुरक्षा
विभाजन के पश्चात भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर गंभीर तनाव व्याप्त हो गया था। इस मानवीय संकट का समाधान निकालने के लिए अप्रैल 1950 में नई दिल्ली में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के बीच एक द्विपक्षीय संधि हुई, जिसे नेहरु-लियाकत समझौता कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य दोनों देशों में अल्पसंख्यकों के अधिकारों, जान-माल और शरणार्थियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

88. (C) केवल I, II और III
विभाजन के बाद आए लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास हेतु भारत सरकार ने कई ठोस प्रशासनिक कदम उठाए। संकट से निपटने के लिए विशेष पुनर्वास मंत्रालय बनाया गया। पाकिस्तान गए लोगों की संपत्ति के उचित प्रबंधन हेतु निष्क्रांत संपत्ति प्रशासन अधिनियम लागू किया गया। शरणार्थियों को स्वावलंबी बनाने हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र खोले गए और कृषि ऋण दिए गए। हालांकि, इस विशाल प्रक्रिया में सरकारी खजाने पर अत्यधिक वित्तीय दबाव पड़ा था। अतः केवल I, II और III सही हैं।

89. (D) बंधुत्व और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना
भारतीय संविधान अपने नागरिकों को केवल 'एकल नागरिकता' प्रदान करता है, अर्थात् सभी नागरिक केवल भारत के नागरिक हैं, किसी पृथक राज्य के नहीं। अमेरिका जैसे देशों में जहां दोहरी नागरिकता है, वहीं भारत ने क्षेत्रीय विखंडन को रोकने के लिए एकल नागरिकता को अपनाया। इसका मुख्य संवैधानिक और सामाजिक उद्देश्य देश में संकीर्ण क्षेत्रीय चेतना को समाप्त करके बंधुत्व, आपसी भाईचारे और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करना है, जिससे अखंड भारत का निर्माण हो सके।

90. (A) संघ अविनाशी है और राज्यों को अलग होने का अधिकार नहीं है।
संविधान के अनुच्छेद 1 में भारत को "राज्यों का संघ" कहा गया है। संविधान सभा में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने इसकी व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया था कि भारतीय संघ राज्यों के बीच किसी समझौते का परिणाम नहीं है, जैसा कि अमेरिका में है। इसका मूल अर्थ यह है कि भारत का संघ अविनाशी और स्थायी है तथा किसी भी राज्य को भारत से अलग होने का कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं है, जिससे देश की अखंडता सदैव सुरक्षित रहे।

91. (B) वे क्षेत्रीय सहयोग के लिए वैधानिक सलाहकार निकाय हैं।
राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 की धारा 15 के तहत देश में पांच क्षेत्रीय परिषदों (उत्तरी, मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी) की स्थापना की गई थी। ये परिषदें अंतर-राज्यीय सहयोग, आर्थिक समन्वय और सीमा विवादों के समाधान हेतु बनाई गई थीं। ये संवैधानिक संस्थाएं नहीं हैं, बल्कि संसद के कानून द्वारा निर्मित वैधानिक निकाय हैं। इनका कार्य पूर्णतः सलाहकार प्रकृति का है, जो राज्यों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देती हैं।

92. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
भारतीय संविधान की विशेषताएं राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती हैं। एकल नागरिकता एकीकृत राष्ट्रीय पहचान प्रदान करती है। आपातकालीन प्रावधान संकट के समय केंद्र को प्रभावी बनाते हैं। समवर्ती सूची केंद्र और राज्यों को साझा विषयों पर एकसमान कानून बनाने में सक्षम बनाती है। अखिल भारतीय सेवाएं पूरे देश में एक समान प्रशासनिक ढांचा प्रदान करती हैं। इस प्रकार इन विशेषताओं का सही मिलान P-2, Q-3, R-1 और S-4 है।

93. (C) अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952
स्वतंत्र भारत के इतिहास में लोकतंत्र की स्थापना का पहला बड़ा पड़ाव प्रथम आम चुनाव थे। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर आयोजित यह विशाल चुनाव प्रक्रिया अक्टूबर 1951 में शुरु हुई और फरवरी 1952 तक सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यद्यपि चुनाव प्रक्रिया कई महीनों तक चली, परंतु अधिकांश क्षेत्रों में मतदान 1952 के शुरुआती महीनों में पूरा हुआ था। इसीलिए इसे आधिकारिक रूप से 1951-52 का आम चुनाव कहा जाता है।

94. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।
1951-52 में भारत में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर पहला आम चुनाव कराना विश्व इतिहास का सबसे बड़ा और साहसिक लोकतांत्रिक प्रयोग माना गया था। इसका मुख्य कारण यह था कि उस समय देश की कुल आबादी का 85 प्रतिशत हिस्सा निरक्षर था और अत्यधिक गरीबी से ग्रस्त था। ऐसे विशाल और अनुभवहीन मतदाता वर्ग के साथ निष्पक्ष चुनाव कराना एक कठिन चुनौती थी। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा सही व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

95. (D) प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रतीक-चिह्नित मतपेटी
1951-52 के पहले आम चुनाव के समय देश की विशाल आबादी निरक्षर थी, जो उम्मीदवारों के नाम पढ़ने में असमर्थ थी। इस व्यावहारिक समस्या को हल करने के लिए निर्वाचन आयोग ने एक अभिनव तकनीक अपनाई। प्रत्येक मतदान केंद्र पर चुनाव लड़ने वाले प्रत्येक उम्मीदवार के लिए अलग-अलग मतपेटी रखी गई, जिस पर उनका आबंटित चुनाव चिह्न चिपकाया गया था। मतदाताओं को केवल अपनी गुप्त मतपत्री को पसंदीदा उम्मीदवार की प्रतीक-चिह्नित मतपेटी में डालना होता था।

96. (C) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
1951-52 के प्रथम आम चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाई। इस ऐतिहासिक चुनाव में कुल 489 लोकसभा सीटों में से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) ने 16 सीटों पर जीत दर्ज की। इस परिणाम के साथ कम्युनिस्ट पार्टी लोकसभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बाद दूसरे सबसे बड़े दल के रूप में उभरी और संसद में प्रमुख विपक्षी दल का स्थान ग्रहण किया, जिसने शुरुआती संसदीय व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

97. (B) आधुनिक भारत के मंदिर
स्वतंत्रता के बाद भारत के आर्थिक और औद्योगिक पुनरुद्धार के लिए विशाल आधारभूत ढांचा परियोजनाओं का निर्माण प्रारंभ किया गया। प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भाखड़ा नांगल और दामोदर घाटी जैसी विशाल बहुउद्देशीय बांध परियोजनाओं का उद्घाटन करते हुए उन्हें भावुक होकर "आधुनिक भारत के मंदिर" की संज्ञा दी थी। उनका मानना था कि ये परियोजनाएं कृषि और उद्योग दोनों का विकास कर देश को दरिद्रता से मुक्त करेंगी और राष्ट्र निर्माण की नई दिशा तय करेंगी।

98. (D) उच्च शिक्षा का समन्वय और वित्तपोषण करना
स्वतंत्र भारत में शिक्षा के स्तर को सुधारने और विश्वविद्यालयों के विकास हेतु 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की स्थापना की गई थी, जिसे 1956 में वैधानिक दर्जा मिला। यह संस्था नेहरुवादी युग की उस सोच का परिणाम थी, जिसमें उच्च शिक्षा का मानक तय करना, उसका समन्वय करना और देश भर के विश्वविद्यालयों को वित्तीय अनुदान प्रदान करना आवश्यक माना गया था, ताकि देश के विकास के लिए योग्य और कुशल मानव संसाधन तैयार किए जा सकें।

99. (A) I, II और III
स्वतंत्र भारत के निर्माण में नेहरूवादी युग का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस युग के तीन मुख्य स्तंभ थे: मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया, राज्य के नेतृत्व में नियोजित आर्थिक विकास एवं पंचवर्षीय योजनाएं, तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी भी शक्ति गुट में शामिल न होकर स्वतंत्र निर्णय लेने की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति। ये तीनों स्तंभ आधुनिक भारत की नींव बने। अतः दिए गए तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

100. (C) I, II, IV, III
स्वतंत्रता के बाद भारत में संस्थाओं के निर्माण का सही कालक्रम इस प्रकार है। मार्च 1950 में योजना आयोग की स्थापना की गई। इसके बाद फरवरी 1952 में स्वतंत्र भारत के प्रथम आम चुनाव सफलतापूर्वक संपन्न हुए। तत्पश्चात राज्यों की सीमाओं को व्यवस्थित करने के लिए 1956 में राज्य पुनर्गठन अधिनियम पारित हुआ। अंततः 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर में पंचायती राज व्यवस्था का उद्घाटन किया गया। अतः सही कालानुक्रमिक क्रम I, II, IV, III है।

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 08
राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ

1. कालीबंगा पुरातात्विक स्थल की खोज और पहचान सर्वप्रथम निम्नलिखित में से किस पुरातत्वविद द्वारा की गई थी?
(A) बी. बी. लाल
(B) अमलानंद घोष
(C) एच. डी. सांकलिया
(D) आर. सी. अग्रवाल

2. कालीबंगा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह प्राक्-हड़प्पा और हड़प्पा दोनों सांस्कृतिक चरणों के साक्ष्य प्रदान करता है।
II. बस्ती की प्राचीर (दीवारों) के बाहर एक अद्वितीय जुते हुए खेत की खोज की गई थी।
III. आवासीय मकान मुख्य रूप से पक्की ईंटों का उपयोग करके बनाए गए थे।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II और III
(B) केवल I और III
(C) I, II और III
(D) केवल I और II

3. अपनी ताम्रपाषाणिक संस्कृति के लिए प्रसिद्ध आहड़ का प्राचीन स्थल किस नदी के तट पर स्थित है?
(A) आयड़
(B) लूनी
(C) बनास
(D) चंबल

4. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : गणेश्वर स्थल को हड़प्पा सभ्यता के लिए तांबे की वस्तुओं का एक प्राथमिक आपूर्तिकर्ता माना जाता है।
कारण (R) : गणेश्वर कांतली नदी घाटी के साथ समृद्ध खेतड़ी तांबा भंडारों के पास स्थित है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

5. भारतीय उपमहाद्वीप में कुष्ठ रोग का प्राचीनतम पुरातात्विक साक्ष्य निम्नलिखित में से किस स्थल से प्राप्त कंकाल में खोजा गया था?
(A) बालाथल
(B) कालीबंगा
(C) आहड़
(D) बैराठ

6. पुरातात्विक स्थलों और उनसे संबंधित नदियों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (पुरातात्विक स्थल)
P. कालीबंगा
Q. आहड़
R. गणेश्वर
S. जोधपुरा
सूची II : (संबंधित नदी)
1. साबी
2. कांतली
3. आयड़
4. घग्गर
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

7. भाब्रू शिलालेख, जो बौद्ध धर्म में सम्राट अशोक की आस्था की पुष्टि करता है, की खोज बैराठ में किसके द्वारा की गई थी?
(A) अलेक्जेंडर कनिंघम
(B) कैप्टन बर्ट
(C) दयाराम साहनी
(D) जॉन मार्शल

NODIA

8. निम्नलिखित में से किस स्थल को राजस्थान में ताम्रपाषाणिक बस्ती नहीं माना जाता है?
(A) आहड़
(B) बालाथल
(C) बागोर
(D) गिलूंड

9. 'गणेश्वर-जोधपुरा परिसर' शब्द प्राथमिक रूप से किस प्रकार की प्राचीन भौतिक संस्कृति से संबंधित है?
(A) उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड और लोहे के उपकरण
(B) चित्रित धूसर मृदभांड और मृण्मूर्तियां
(C) महापाषाणिक समाधान और काले एवं लाल मृदभांड
(D) गेरुवर्ण मृदभांड और तांबे की कलाकृतियां

10. आहड़ संस्कृति का एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय केंद्र, गिलूंड का पुरातात्विक स्थल राजस्थान के किस जिले में स्थित है?

95. प्राचीन भारतीय प्रतीकशास्त्र में प्रमुख स्वास्तिक और त्रिरत्न प्रतीक कहाँ से उत्खनित कलाकृतियों पर चित्रित पाए गए थे?
(A) आहड़
(B) कालीबंगा
(C) बालाथल
(D) बैराठ

96. प्रसिद्ध इतिहासकार दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को क्या कहा था?
(A) मौर्य साम्राज्य की प्रथम राजधानी
(B) आहड़ संस्कृति की औद्योगिक राजधानी
(C) हड़प्पा साम्राज्य की तीसरी राजधानी
(D) मत्स्य जनपद की ग्रीष्मकालीन राजधानी

97. राजस्थान के किसी स्थल पर NBPW (उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड) की खोज किसका एक प्रबल संकेतक है?
(A) आदिम प्रारंभिक तांबा गलाने और धातुकर्म संबंधी गतिविधियां
(B) नगरीकरण और गंगा घाटी क्षेत्र के साथ व्यापार
(C) प्रागैतिहासिक घुमंतू गुफा-निवासी शिकारी समुदाय
(D) भारतीय उपमहाद्वीप से पूर्ण आर्थिक अलगाव

98. भारत के व्यापक ताम्रपाषाणिक संदर्भ में "आहड़" संस्कृति की अद्वितीय विशिष्टता का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(A) कृषि उपकरणों के लिए लोहे का पहला व्यापक उपयोग
(B) समृद्ध प्राचीन सोने की खानों की खोज और दोहन
(C) हड़प्पा से भिन्न एक अनिर्णीत लिपि का विकास
(D) आहड़ में पत्थर के उपकरणों का तांबे के उपकरणों द्वारा पूर्ण प्रतिस्थापन

99. गणेश्वर में पुरातात्विक उत्खनन मुख्य रूप से आर. सी. अग्रवाल द्वारा किसके सहयोग से आयोजित किया गया था?
(A) विजय कुमार
(B) वी. एन. मिश्रा
(C) बी. बी. लाल
(D) एच. डी. सांकलिया

100. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताओं का समग्र अवलोकन करते हुए, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन कालीबंगा, आहड़ और गणेश्वर के लिए सार्वभौमिक रूप से सत्य है?
(A) तीनों स्थल लौह युग की तकनीक के व्यापक उपयोग को प्रदर्शित करते हैं।
(B) तीनों स्थल सख्ती से अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के भीतर स्थित थे।
(C) तीनों स्थल महत्वपूर्ण नदी प्रणालियों के तटों पर विकसित हुए।
(D) तीनों स्थल बौद्ध स्तूपों के निश्चित साक्ष्य दर्शाते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(A) तांबे के सूक्ष्म बाणाग्र और मछली पकड़ने के कांटे
(B) आयातित मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहरें
(C) विशालकाय यक्ष पाषाण प्रतिमाएं
(D) लकड़ी के जल निकासी पाइप की जटिल प्रणालियां

22. बालाथल स्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें 11 कमरों वाला एक विशाल किलेबंद पत्थरों का ढांचा शामिल है।
II. यहाँ से बुने हुए कपड़े का एक टुकड़ा मिला है, जो वस्त्र ज्ञान को सिद्ध करता है।
III. यह उपमहाद्वीप में कुष्ठ रोग का सबसे पुराना साक्ष्य प्रदान करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

23. पुरातात्विक स्थलों और उनके जिलों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (पुरातात्विक स्थल)
P. नोह
Q. गिलूंड
R. बालाथल
S. बैराठ
सूची II : (जिला)
1. राजसमंद
2. उदयपुर
3. कोटपूतली-बहरोड़ / जयपुर ग्रामीण
4. भरतपुर
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

24. बैराठ के उत्तरकाल में मुख्य रूप से किस विशिष्ट प्रकार का मृदभांड पाया जाता है, जो गंगा घाटी के नगरीकरण के साथ इसके एकीकरण को दर्शाता है?
(A) गेरूवर्ण मृदभांड (OCP)
(B) काले एवं लाल मृदभांड (BRW)
(C) उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड (NBPW)
(D) मालवा मृदभांड

25. भारतीय उपमहाद्वीप में भूकंप का प्राचीनतम ज्ञात पुरातात्विक साक्ष्य कहाँ दर्ज किया गया है?
(A) आहड़
(B) बालाथल
(C) धोलावीरा
(D) कालीबंगा

26. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता गिलूंड के ताम्रपाषाणिक स्थल को आहड़ के प्राथमिक स्थल से अलग करती है?
(A) गिलूंड की संरचनाओं में पक्की ईंटों का प्रचुर उपयोग दिखाई देता है।
(B) गिलूंड में तांबे की कलाकृतियों या उपकरणों की पूरी तरह से कमी है।
(C) गिलूंड पूरी तरह से ताम्रपाषाण काल के बजाय लौह युग के चरण से संबंधित है।
(D) गिलूंड हड़प्पा साम्राज्य के एक प्रमुख शहरी केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

27. आहड़ में एकल बड़े मकानों में एक से अधिक चूल्हों की खोज संभवतः क्या दर्शाती है?
(A) व्यावसायिक बेकरी
(B) एक बड़ी संयुक्त परिवार प्रणाली या सामूहिक भोजन व्यवस्था
(C) घरेलू स्थानों के भीतर तांबा पिघलाने की कार्यशालाएं
(D) केवल पुरोहितों द्वारा की जाने वाली धार्मिक अग्नि पूजा

28. राजस्थान में पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर प्राचीनतम से नवीनतम काल तक का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) पुरापाषाण, ताम्रपाषाण, मध्यपाषाण, लौह युग
(B) मध्यपाषाण, पुरापाषाण, ताम्रपाषाण, लौह युग
(C) पुरापाषाण, मध्यपाषाण, ताम्रपाषाण, लौह युग
(D) ताम्रपाषाण, पुरापाषाण, मध्यपाषाण, लौह युग

NODIA

29. ऐतिहासिक काल में कला की निरंतरता को दर्शाने वाली यक्ष (जाख बाबा) की विशाल आदमकद पाषाण मूर्ति कहाँ से उत्खनित की गई थी?
(A) नोह
(B) जोधपुरा
(C) बैराठ
(D) गिलूंड

30. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता बैराठ के प्राचीन स्थल से संबंधित नहीं है?
(A) एक गोलाकार बौद्ध स्तूप के अवशेष
(B) आहत और हिंद-यवन सिक्कों सहित 36 चांदी के सिक्कों की खोज
(C) प्राक्-हड़प्पाकालीन जुते हुए खेत का साक्ष्य
(D) सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज

31. कालीबंगा में पाई गई अद्वितीय जल निकासी प्रणाली मुख्य रूप से किसका उपयोग करके निर्मित की गई थी?
(A) उच्च गुणवत्ता वाली धूप में सुखाई गई या पक्की ईंटें
(B) समतल गढ़े हुए पत्थर की पट्टियां और चिनाई
(C) इंटरलॉकिंग टेराकोटा नाली पाइप
(D) खोखले किए गए लकड़ी के तने

32. गणेश्वर संस्कृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यहाँ से वृषभ की एक प्रमुख टेराकोटा मूर्ति खोजी गई थी।
II. इसमें संरचनात्मक किलेबंदी का कोई साक्ष्य नहीं है।
III. यह ताम्रपाषाणिक काल से प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में संक्रमण का स्पष्ट साक्ष्य प्रदान करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

75. गणेश्वर संस्कृति की कलाकृतियों के समुच्चय में निम्नलिखित में से कौन-सी सामग्री पूरी तरह से अनुपस्थित थी?
(A) तांबे के बाणाग्र
(B) लोहे के हल
(C) सूक्ष्मपाषाण पत्थर के उपकरण
(D) गेरुवर्ण मृदभांड

76. बैराठ में पुरातात्विक उत्खनन मुख्य रूप से तीन पहाड़ियों पर केंद्रित था। निम्नलिखित में से कौन-सी उनमें से एक नहीं थी?
(A) बीजक की पहाड़ी
(B) धूलकोट की पहाड़ी
(C) भीम की डूंगरी
(D) महादेवजी की डूंगरी

77. आहड़ का विशाल टीला, जो प्राचीन ताम्रपाषाणिक बस्ती को ढकता है, स्थानीय निवासियों द्वारा किस नाम से जाना जाता है?
(A) धूलकोट
(B) महासतियां
(C) रैढ़
(D) नलियासर

78. 1961 और 1969 के बीच, कालीबंगा में व्यापक और व्यवस्थित उत्खनन किसके संयुक्त निर्देशन में किया गया था?
(A) वी. एन. मिश्रा और एच. डी. सांकलिया
(B) आर. सी. अग्रवाल और विजय कुमार
(C) बी. बी. लाल और बी. के. थापर
(D) दयाराम साहनी और एन. आर. बनर्जी

79. भौतिक संस्कृति और उनके प्रमुख संबंधित स्थलों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:

सूची I : (प्रमुख भौतिक संस्कृति)
P. उच्चतम शुद्धता वाले तांबे के उपकरण (99%)
Q. कुषाण काल में समाप्त होने वाले पांच सांस्कृतिक चरण
R. प्राचीनतम ज्ञात जुता हुआ खेत
S. सूती बुने हुए कपड़े का टुकड़ा

सूची II : (प्रमुख संबंधित स्थल)
1. बालाथल
2. नोह
3. गणेश्वर
4. कालीबंगा

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

80. गणेश्वर में तांबे के अनेक मछली पकड़ने के कांटों की खोज यह व्यावहारिक साक्ष्य प्रदान करती है कि तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के दौरान:
(A) गंभीर क्षेत्रीय सूखे के कारण अक्सर नदियां पूरी तरह सूख जाती थीं और अकाल पड़ता था।
(B) स्थानीय निवासी मुख्य रूप से लंबी दूरी के मेसोपोटामिया व्यापार के लिए सूखी मछली का प्रसंस्करण करते थे।
(C) कांतली नदी सदा नीरा थी और समृद्ध जलीय जीवन का समर्थन करती थी।
(D) स्थानीय गणेश्वर आबादी कृषि पद्धतियों से पूरी तरह अनभिज्ञ थी।

81. 'ट्रेपेनेशन' (खोपड़ी में छेद करना, संभवतः जलशीर्ष के इलाज के लिए) के रूप में जानी जाने वाली एक प्राचीन चिकित्सा प्रक्रिया का साक्ष्य एक बच्चे की खोपड़ी में कहाँ खोजा गया था?
(A) बालाथल
(B) कालीबंगा
(C) बैराठ
(D) आहड़

82. निम्नलिखित में से कौन आहड़ में पाए गए मुख्य तांबे के उपकरण समुच्चय का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) बड़ी कांस्य तोपें और भारी कवच
(B) विशेष रूप से सजावटी तांबे के मुकुट
(C) मौर्य राजाओं के जटिल तांबे के सिक्के
(D) चपटी कुल्हाड़ियां, अंगूठियां, चूड़ियां और तार

83. गणेश्वर में अत्यधिक परिष्कृत तांबे के उपकरणों के साथ सूक्ष्मपाषाणों की उपस्थिति क्या दर्शाती है?
(A) आखेटन-खाद्य संग्रहण से उन्नत धातुकर्म में संक्रमण
(B) दो अलग-अलग शत्रुतापूर्ण सभ्यताओं का एक साथ निवास
(C) तांबे के प्रभावी शिकार उपकरणों का निर्माण करने में असमर्थता
(D) सजावटी वस्तुओं और व्यापारिक वस्तुओं के लिए तांबे का विशेष उपयोग

84. राजस्थान के गौण पुरातात्विक स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नोह अपने चित्रित धूसर मृदभांड और यक्ष मूर्ति के लिए जाना जाता है।
II. जोधपुरा साबी नदी पर प्राचीन लोहे को पिघलाने के साक्ष्य प्रदान करता है।
III. गिलूंड ताम्रपाषाणिक आहड़ संस्कृति के एक क्षेत्रीय केंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

Click Here to Buy book on Flipkart

II. इसका उत्खनन आर. सी. अग्रवाल और विजय कुमार द्वारा किया गया था।
III. यह OCP चरण से शुंग-कुषाण काल तक के सांस्कृतिक क्रम को प्रकट करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) केवल I और III

43. राजस्थान के निम्नलिखित प्राचीन पुरातात्विक स्थलों पर विचार कीजिए:
1. बालाथल
2. कालीबंगा
3. बैराठ
4. आहड़

उनके प्रथम प्रमुख आधुनिक उत्खनन/खोज के वर्ष के आधार पर, प्राचीनतम से नवीनतम तक, इन स्थलों का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 2, 4, 3, 1

44. आहड़ में बने मकानों की एक विशिष्ट वास्तुकला विशेषता किसका उपयोग थी?
(A) हड़प्पा स्थलों की विशिष्ट मानक पक्की ईंटें
(B) मिट्टी की दीवारों के साथ नींव के लिए शिस्ट पत्थर के ब्लॉक
(C) विशाल शैलकृत गुफा आवास
(D) लोहे की छतों को सहारा देने वाले लकड़ी के खंभे

45. अपनी तांबे की कलाकृतियों की प्राचीनता और प्रचुरता के कारण, भारत में किस स्थल को प्रायः "ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी" कहा जाता है?
(A) गणेश्वर
(B) आहड़
(C) कालीबंगा
(D) बालाथल

46. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : बैराठ मौर्य काल के दौरान बौद्ध संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
कारण (R) : बैराठ में बीजक की पहाड़ी पर उत्खनन से एक गोलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष और अशोक के अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

47. बालाथल में उत्खनन से निम्नलिखित में से किन कालों से युक्त दोहरे सांस्कृतिक क्रम का पता चला है?
(A) पुरापाषाण और मध्यपाषाण
(B) नवपाषाण और हड़प्पा
(C) प्राक्-हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा
(D) ताम्रपाषाण और प्रारंभिक ऐतिहासिक

48. भरतपुर जिले में स्थित नोह का प्राचीन स्थल किस नदी के तट के समीप स्थित है?
(A) बाणगंगा
(B) लूनी
(C) रूपारेल
(D) बनास

49. पुरातत्वविदों द्वारा "गणेश्वर-जोधपुरा परिसर" शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से इन स्थलों में किस सामग्री की व्यापक समानता के कारण किया गया था?
(A) लोहे के बाणाग्र
(B) गेरुवर्ण मृदभांड (OCP)
(C) उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड
(D) पक्की ईंटों के ढांचे

50. प्राचीन स्थल और उसके ऐतिहासिक/वैकल्पिक नाम के गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) आहड़ - आघाटपुर
(B) बैराठ - विराटनगर
(C) आहड़ - धूलकोट
(D) कालीबंगा - ताम्रवती

51. मेसोपोटामिया की सभ्यता के साथ व्यापारिक संबंधों को दृढ़ता से दर्शाने वाली एक विशिष्ट बेलनाकार मुहर राजस्थान के किस स्थल से खोजी गई थी?
(A) कालीबंगा
(B) आहड़
(C) गणेश्वर
(D) बालाथल

52. बैराठ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बाणगंगा नदी के तट पर स्थित है।
II. उत्खनन मुख्य रूप से दयाराम साहनी द्वारा किया गया था।
III. इसमें चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) का कोई साक्ष्य नहीं है।
IV. यह स्थल ऐतिहासिक रूप से मत्स्य महाजनपद का एक हिस्सा था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II, III और IV
(B) केवल I और III
(C) केवल I, II और IV
(D) I, II, III और IV

Downloaded from www.pdf.tube

(A) राजसमंद
(B) उदयपुर
(C) चित्तौड़गढ़
(D) भीलवाड़ा

11. 'कालीबंगा' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) मृतकों का टीला
(B) काले रंग की चूड़ियां
(C) तांबे का टीला
(D) राख का टीला

12. आहड़ संस्कृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह विशिष्ट काले और लाल मृदभांड की उपस्थिति से अभिलक्षित होती है।
II. इस स्थल पर तांबा पिघलाने की भट्ठियां व्यापक रुप से पाई गई हैं।
III. मकान मुख्य रूप से पक्की ईंटों के बजाय पत्थर की नींव और मिट्टी की दीवारों का उपयोग करके बनाए गए थे।
IV. यह हड़प्पा साम्राज्य द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित एक परिपक्व शहरी चरण का प्रतिनिधित्व करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल IV
(C) केवल III और IV
(D) केवल I, II और III

13. बैराठ स्थल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यहाँ से एक गोलाकार मौर्यकालीन बौद्ध स्तूप प्राप्त हुआ था।
(B) इसने सिंधु घाटी की बस्तियों को तांबे की आपूर्ति की थी।
(C) इसने लोहे के कृषि हल के शुरुआती उपयोग को दर्शाया।
(D) यह मुख्य रूप से एक पुरापाषाणकालीन शैलाश्रय के रूप में कार्य करता था।

14. अपने चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) और विशाल यक्ष (जाख बाबा) की प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध नोह का प्राचीन स्थल कहाँ स्थित है?
(A) जयपुर
(B) अलवर
(C) भरतपुर
(D) धौलपुर

15. राजस्थान के निम्नलिखित प्रागैतिहासिक और आद्य-ऐतिहासिक सांस्कृतिक चरणों पर विचार कीजिए:
1. लौह युग
2. ताम्रपाषाण काल
3. पुरापाषाण काल
4. मध्यपाषाण काल
निम्नलिखित में से कौन प्राचीनतम से नवीनतम तक सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 3, 4, 2, 1
(B) 3, 2, 4, 1
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 4, 1, 2

16. ताम्रपाषाणिक स्थल बालाथल में व्यापक उत्खनन कार्य मुख्य रूप से किसके निर्देशन में किया गया था?
(A) बी. बी. लाल
(B) एस. आर. राव
(C) वी. एन. मिश्रा
(D) एच. डी. सांकलिया

17. कालीबंगा में सात अग्निवेदिकाओं की एक पंक्ति की खोज किसका साक्ष्य प्रदान करती है?
(A) औद्योगिक धातु शोधन भट्ठियां
(B) धार्मिक या याज्ञिक अग्नि अनुष्ठान
(C) शहरी निवासियों के लिए सामूहिक श्मशान भूमि
(D) कृषि श्रमिकों के लिए सामुदायिक रसोई

18. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : आहड़ के प्राचीन स्थल को प्राचीन काल में स्थानीय रूप से 'ताम्रवती' के नाम से जाना जाता था।
कारण (R) : आहड़ में उत्खनन से अनेक तांबे के उपकरण, कुल्हाड़ियां और स्थानीय तांबा पिघलाने की गतिविधियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

19. लोहे को पिघलाने की भट्ठियों और चित्रित धूसर मृदभांड के साक्ष्यों के लिए महत्वपूर्ण जोधपुरा का पुरातात्विक स्थल किस क्षेत्र में स्थित है?
(A) कोटपूतली-बहरोड़ क्षेत्र
(B) जोधपुर जिला क्षेत्र
(C) नागौर जिला क्षेत्र
(D) बीकानेर जिला क्षेत्र

20. पुरातात्विक स्थल और उसके प्रमुख उत्खननकर्ता के गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) कालीबंगा - अमलानंद घोष
(B) आहड़ - एच. डी. सांकलिया
(C) गणेश्वर - बी. बी. लाल
(D) बैराठ - दयाराम साहनी

21. निम्नलिखित में से कौन-सी कलाकृति गणेश्वर स्थल की एक अद्वितीय विशेषता है?

NODIA

I. उनकी अर्थव्यवस्था काफी हद तक पशुपालन और कृषि पर आधारित थी।
II. तांबा पिघलाना एक प्रमुख स्थानीय उद्योग था।
III. उन्होंने व्यापार के लिए मानक चांदी के सिक्के ढाले।
IV. चावल उनके द्वारा उगाए जाने वाले अनाजों में से एक था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) केवल I, III और IV

65. वैज्ञानिक तिथि निर्धारण (कार्बन-14) तांबा उत्पादक गणेश्वर संस्कृति के प्राचीनतम चरण को लगभग किस समय के आसपास रखती है?
(A) 1500 ईसा पूर्व
(B) 2800 ईसा पूर्व
(C) 1000 ईसा पूर्व
(D) 500 ईस्वी

66. बालाथल में पाई गई विशाल 11 कमरों वाली किलेबंद पत्थरों की संरचना के बारे में पुरातत्वविदों का मानना है कि यह मुख्य रूप से किस रूप में प्रयुक्त होती थी?
(A) प्राचीन मौर्य राजाओं के लिए निर्मित एक शाही प्रशासनिक महल
(B) हड़प्पा के व्यापारिक सामानों के भंडारण के लिए बनाया गया एक विशाल केंद्रीय अन्नागार
(C) नागरिक सभाओं और कार्यक्रमों के लिए उपयोग किया जाने वाला एक विशाल सार्वजनिक अखाड़ा
(D) स्थानीय संभ्रांत वर्ग के लिए एक आवासीय परिसर या एक रक्षात्मक दुर्ग

67. बैराठ में बौद्ध स्तूप और मठों के भीषण विनाश का श्रेय ऐतिहासिक रूप से किसके आक्रमण को दिया जाता है?
(A) हूण शासक मिहिरकुल
(B) सिकंदर
(C) कुषाण सम्राट कनिष्क
(D) महमूद गजनवी

68. कालीबंगा में प्राक्-हड़प्पा चरण मुख्य रूप से किस आधार पर परिपक्व हड़प्पा चरण से भिन्न है?
(A) सभी आवासीय क्षेत्रों में अलंकृत मृदभांडों की पूर्ण अनुपस्थिति
(B) संपूर्ण प्राक्-हड़प्पा बस्ती में लोहे के उपकरणों का व्यापक उपयोग
(C) विशिष्ट मकान संरेखण और शुरुआती मृदभांड प्रकार (फैब्रिक A-F)
(D) संरचनात्मक दीवारों में केवल मानक पक्की ईंटों का उपयोग

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

कथन (A) : भारत के अधिकांश ताम्रपाषाणिक स्थलों के विपरीत, मुख्य आहड़ स्थल पर सूक्ष्मपाषाण विशिष्ट रूप से दुर्लभ या अनुपस्थित हैं।
कारण (R) : आहड़ के निवासियों की स्थानीय तांबा अयस्कों तक प्रचुर पहुंच थी और वे पत्थर के बजाय तांबे के उपकरणों पर अत्यधिक निर्भर थे।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

70. PGW चरण से संबंधित लोहे के बाणाग्रों, भालाग्रों और कीलों के बड़े पैमाने पर उत्पादन के महत्वपूर्ण साक्ष्य कहाँ से उत्खनित किए गए थे?
(A) आहड़
(B) कालीबंगा
(C) गणेश्वर
(D) जोधपुरा

71. कालीबंगा में खोजे गए जुते हुए खेत का विशिष्ट पैटर्न समकोण पर एक-दूसरे को काटती हुई कुड़ों के जाल को दर्शाता है, जो क्या संकेत देता है?
(A) कृत्रिम सिंचाई नहरों का एक जटिल नेटवर्क
(B) एक साथ दो अलग-अलग फसलों की खेती
(C) शाही अग्नि अनुष्ठानों के लिए कृषि भूमि की तैयारी
(D) लकड़ी के हल का उपयोग करके मिट्टी वातन की उन्नत तकनीक

72. गिलूंड के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह बनास नदी के मैदानों में स्थित है।
II. इसे व्यापक रूप से आहड़ ताम्रपाषाणिक संस्कृति का एक क्षेत्रीय केंद्र माना जाता है।
III. यहाँ संरचनात्मक अवशेष पक्की ईंटों का प्रचुर उपयोग दर्शाते हैं।
IV. इसका उत्खनन प्रारंभ में अमलानंद घोष द्वारा किया गया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल IV
(D) केवल II और IV

73. OCP से कुषाण काल तक के अपने निरंतर सांस्कृतिक क्रम के लिए प्रसिद्ध नोह स्थल किस क्षेत्र में स्थित है?
(A) मेवाड़ क्षेत्र (उदयपुर-चित्तौड़गढ़)
(B) मारवाड़ क्षेत्र (जोधपुर-पाली)
(C) हाडोती क्षेत्र (कोटा-बूंदी)
(D) मत्स्य क्षेत्र (अलवर-भरतपुर)

74. बालाथल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Click Here to Buy book on Amazon

53. आहड़ संस्कृति में देखी गई समाधान प्रथा में सामान्यतः मृतकों को कैसे दफनाया जाता था?
(A) सिर उत्तर की ओर करके, मृदभांडों और आभूषणों के साथ
(B) पश्चिम की ओर मुंह करके मुड़ी हुई बैठने की मुद्रा में
(C) पूर्ण दाह संस्कार के बाद, राख को बड़े कलशों में रखकर
(D) पूर्ण त्याग को दर्शाने के लिए बिना किसी कब्र-सामग्री के

54. गणेश्वर स्थल से खोजे गए तांबे के मछली पकड़ने के कांटों की व्यापक उपस्थिति क्या दर्शाती है?
(A) स्थानीय निवासी जलीय जीवों की पूजा एक प्राथमिक धार्मिक देवता के रूप में करते थे।
(B) मछली पकड़ने के कांटे विशेष रूप से हड़प्पा व्यापार नेटवर्क के लिए मुद्रा के रूप में बनाए गए थे।
(C) यह बस्ती मूल रूप से अरब सागर के तट पर स्थित थी।
(D) कांतली नदी में प्रचुर मात्रा में मछलियों के जीवन का समर्थन करने के लिए पर्याप्त बारहमासी पानी था।

55. निम्नलिखित में से कौन-सा पुरातात्विक स्थल विस्तृत बनास (आहड़) ताम्रपाषाणिक संस्कृति का हिस्सा नहीं माना जाता है?
(A) बालाथल
(B) नोह
(C) गिलूंड
(D) ओझियाना

56. मृदभांड एवं संस्कृति के प्रकारों और उनसे संबंधित स्थलों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (मृदभांड/संस्कृति का प्रकार)
P. छह प्रकार की बनावट वाला प्राक्-हड़प्पा मृदभांड
Q. काले और लाल मृदभांड
R. गेरुवर्ण मृदभांड (OCP)
S. उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड (NBPW)
सूची II : (संबंधित स्थल)
1. आहड़
2. गणेश्वर
3. कालीबंगा
4. बैराठ
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

57. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता कालीबंगा की नगर योजना की एक प्रमुख विशेषता है?
(A) गहरी सुरक्षात्मक खाइयों से घिरी पूरी तरह से वृत्ताकार बस्ती योजना
(B) बाढ़ से बचने के लिए विशेष रूप से लकड़ी के ऊंचे चबूतरों पर बने मकान
(C) किसी भी किलेबंदी की दीवारों या रक्षात्मक ढांचों की पूर्ण अनुपस्थिति
(D) समकोण पर काटती हुई सड़कों के साथ ग्रिड पैटर्न

58. बालाथल में लौह धातुकर्म का साक्ष्य इसके किस बसावट चरण से संबंधित है?
(A) प्रारंभिक ऐतिहासिक चरण (लगभग 300 ईसा पूर्व)
(B) प्रारंभिक ताम्रपाषाणिक बसावट चरण
(C) प्रारंभिक प्राक्-हड़प्पा बसावट चरण
(D) उत्तर पुरापाषाणिक आखेटक-खाद्य संग्राहक चरण

59. PGW संस्कृति से अत्यधिक संबंधित जोधपुरा का प्राचीन स्थल राजनीतिक रूप से वर्तमान में कहाँ स्थित है?
(A) जोधपुर जिला
(B) जयपुर ग्रामीण / कोटपूतली-बहरोड़ जिला
(C) उदयपुर जिला
(D) सीकर जिला

60. प्राचीन राजस्थान में साक्ष्यांकित प्रमुख मृदभांड संस्कृतियों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(A) NBPW → PGW → BRW → OCP
(B) OCP → BRW → PGW → NBPW
(C) BRW → OCP → NBPW → PGW
(D) PGW → NBPW → OCP → BRW

61. तांबे के कुछ उपकरणों के साथ, गिलूंड का ताम्रपाषाणिक स्थल विशेष रूप से किसके समृद्ध उद्योग के लिए उल्लेखनीय है?
(A) सूक्ष्मपाषाण पत्थर के उपकरण और फलक (ब्लेड)
(B) विभिन्न प्रकार के लोहे के हथियार और कवच
(C) जटिल सोने के आभूषण और मनके
(D) सजावटी कांच की चूड़ियां और अंगूठियां

62. नोह स्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने पांच विशिष्ट सांस्कृतिक कालों के साक्ष्य प्रदान किए हैं।
II. इस स्थल पर चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) पूरी तरह से अनुपस्थित है।
III. यहाँ भालाग्र और बाणाग्र सहित भारी मात्रा में लोहे की कलाकृतियां पाई गईं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

63. कालीबंगा में किस जानवर की हड्डियों की खोज राजस्थान में हड़प्पाकालीन परिवहन और पशुपालन के बारे में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है?
(A) घोड़ा
(B) हाथी
(C) बाघ
(D) ऊंट

64. आहड़ संस्कृति के आर्थिक जीवन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

NODIA

IV. सुनारी अपनी प्रारंभिक हड़प्पाकालीन मुहरों के लिए प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और III
(D) केवल I, III और IV

85. गिलूंड में व्यापक भंडारण प्रथाओं का साक्ष्य किसकी खोज से उजागर होता है?

(A) चूने से लीपे गए मिट्टी की ईंटों के वृत्ताकार भंडारण गड्ढे
(B) अनाज भंडारण के लिए बड़े भूमिगत शैलकृत साइलो
(C) प्रबलित दीवारों वाले भूमिगत लोहे के अन्नागार
(D) दुर्ग के कमरों में रखे गए बंद लकड़ी के खजाना संदूक

86. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता कालीबंगा स्थल पर स्पष्ट रूप से अनुपस्थित है, जो इसे सामान्य हड़प्पाकालीन विशेषताओं के अनुरूप बनाती है?

(A) शहरी क्षेत्रों के चारों ओर विशाल परिधि किलेबंदी की दीवारें
(B) पक्की या धूप में सुखाई गई मिट्टी की ईंटों का उपयोग करके निर्माण
(C) व्यवस्थित कृषि खेतों का प्रत्यक्ष भौतिक साक्ष्य
(D) मंदिर संरचनाएं या विशाल धार्मिक भवन

87. पुरातत्वविद 'शहरी' कालीबंगा की तुलना में आहड़ को 'ग्रामीण' ताम्रपाषाणिक संस्कृति के रूप में अलग करते हैं, इसका प्राथमिक कारण यह है कि आहड़ में:

(A) तांबे या कांस्य धातुकर्म का कोई तकनीकी ज्ञान नहीं था
(B) संरचित नगर नियोजन, ग्रिड सड़कों और नालियों का अभाव था
(C) किसी भी जानवर को पालतू बनाए बिना पूरी तरह से जंगली शिकार पर निर्भर था
(D) यह सबसे पुरानी कालीबंगा बस्तियों से हजारों साल पहले का था

88. बैराठ के खजाने में खोजे गए 28 हिंद-यवन चांदी के सिक्के मुख्य रूप से किस प्रमुख हिंद-यवन राजा के हैं?

(A) डेमेट्रियस
(B) यूक्रेटाइड्स
(C) मिनांडर
(D) अपोलोडोटस

89. राजस्थान में भौगोलिक रूप से उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित निम्नलिखित प्राचीन पुरातात्विक स्थलों का सही क्रम चुनिए:

(A) कालीबंगा → गणेश्वर → बैराठ → आहड़
(B) कालीबंगा → बैराठ → गणेश्वर → आहड़
(C) गणेश्वर → कालीबंगा → आहड़ → बैराठ
(D) आहड़ → बैराठ → गणेश्वर → कालीबंगा

90. कालीबंगा में आवासीय मकानों की छतों का निर्माण आमतौर पर किसका उपयोग करके किया जाता था?

(A) लकड़ी के शहतीरों और सरकंडों के ऊपर लीपी गई मिट्टी
(B) मेसोपोटामिया से आयातित टेराकोटा टाइलें
(C) इंटरलॉकिंग पत्थर की पट्टियां
(D) पीटकर बनाई गई तांबे की मोटी चादरें

91. गणेश्वर की कलाकृतियों में पाई गई तांबे की असाधारण उच्च शुद्धता (99% तक) क्या दर्शाती है?

(A) उन्नत इलेक्ट्रोप्लेटिंग और परिष्करण तकनीकों का अनुप्रयोग
(B) रांगे की मिश्रधातु का अभाव और शुद्ध स्थानीय अयस्कों से निष्कर्षण
(C) रोमन साम्राज्य से परिष्कृत तांबे की सिल्लियों का प्रत्यक्ष आयात
(D) पूरी तरह से अनुष्ठानिक उपकरणों का उत्पादन जिनका कभी उपयोग नहीं किया गया था

92. बालाथल की ताम्रपाषाणिक बस्ती उदयपुर जिले के किस आधुनिक कस्बे के पास स्थित है?

(A) गोगुंदा
(B) वल्लभनगर
(C) खेरवाड़ा
(D) सलूंबर

93. राजस्थान में चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) संस्कृति, जैसा कि नोह और जोधपुरा में देखी गई है, सामान्यतः कालानुक्रमिक रूप से किससे संबंधित है?

(A) लौह युग और प्रारंभिक वैदिक काल
(B) प्रारंभिक पुरापाषाणकालीन आखेटक-खाद्य संग्राहक समाज
(C) परिपक्व हड़प्पाकालीन शहरी कांस्य युग चरण
(D) उत्तर मध्यकालीन राजपूत राजवंश काल

94. राजस्थान में निम्नलिखित प्रमुख पुरातात्विक घटनाओं और निष्कर्षों पर विचार कीजिए:

1. लोहे के उपकरणों का व्यापक उपयोग (PGW चरण)
2. सूक्ष्मपाषाणों के साथ शुद्ध तांबे के उपकरणों का उपयोग (OCP चरण)
3. विशेषीकृत कांस्य धातुकर्म और नगर नियोजन (हड़प्पा चरण)
4. केवल तराशे गए पत्थर के उपकरणों का उपयोग (पुरापाषाण चरण)

तकनीकी विकास में इन घटनाक्रमों का सही तार्किक क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(A) 4, 2, 3, 1
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 4, 2, 1, 3

Downloaded from www.pdf.tube

I. इसे राजस्थान में तांबे का उपयोग करने वाली सबसे प्राचीन संस्कृति के रूप में मान्यता प्राप्त है।
II. इसने कालीबंगा और अन्य हड़प्पा स्थलों को प्रचुर मात्रा में तांबे की आपूर्ति की।
III. इस स्थल पर सूक्ष्मपाषाण पत्थर के उपकरण पूरी तरह से अनुपस्थित थे।
IV. यह स्थल गेरूवर्ण मृदभांड (OCP) द्वारा अभिलक्षित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, III और IV
(B) केवल II और III
(C) केवल I, II और IV
(D) I, II, III और IV

33. आहड़ में खोजी गई प्रमुख मृण्मय वृषभ आकृतियां, जो उनकी धार्मिक या सांस्कृतिक मान्यताओं को दर्शाती हैं, पुरातत्वविदों द्वारा लोकप्रिय रूप से क्या कही जाती हैं?
(A) हड़प्पाई वृषभ
(B) बनासियन बुल
(C) मेवारी वृषभ
(D) ताम्रवती वृषभ

34. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : कालीबंगा बस्ती के पतन का मुख्य कारण सरस्वती-घग्गर नदी प्रणाली का सूखना माना जाता है।
कारण (R) : राजस्थान में शहरी हड़प्पा केंद्रों का अस्तित्व कृषि और व्यापार के लिए सदा नीरा नदी प्रणालियों पर अत्यधिक निर्भर था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

35. निम्नलिखित में से किस स्थल पर सूती बुने हुए कपड़े का एक टुकड़ा खोजा गया था, जो प्राचीन राजस्थान में वस्त्र निर्माण का महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करता है?
(A) बालाथल
(B) गणेश्वर
(C) गिलूंड
(D) नोह

36. बैराठ में एक मिट्टी के बर्तन के भीतर बंधे कपड़े में खोजे गए 36 सिक्कों में से कितने सिक्कों की पहचान प्राचीन आहत सिक्कों के रूप में की गई थी?
(A) 28
(B) 16
(C) 8
(D) 12

37. निम्नलिखित में से किस स्थल से लोहा गलाने की भट्ठियों के महत्वपूर्ण साक्ष्य मिले हैं, जिससे संकेत मिलता है कि यह चित्रित धूसर मृदभांड चरण के दौरान लौह धातुकर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र था?
(A) जोधपुरा
(B) गणेश्वर
(C) कालीबंगा
(D) आहड़

NODIA

38. प्रमुख पुरातात्विक खोजों और उनसे संबंधित स्थलों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (पुरातात्विक खोज)
P. लकड़ी की जल निकासी प्रणाली
Q. कुष्ठ रोग का प्राचीनतम साक्ष्य
R. बनासियन टेराकोटा बुल
S. अशोक का शिलालेख
सूची II : (संबंधित स्थल)
1. बालाथल
2. आहड़
3. बैराठ
4. कालीबंगा
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

39. 1959-60 में गिलूंड में पुरातात्विक उत्खनन का नेतृत्व प्रारंभ में किस प्रख्यात पुरातत्वविद द्वारा किया गया था?
(A) वी. एन. मिश्रा
(B) बी. बी. लाल
(C) आर. सी. अग्रवाल
(D) अमलानंद घोष

40. नोह स्थल ने OCP काल से शुंग-कुषाण काल तक कितने विशिष्ट चरणों वाला एक सतत सांस्कृतिक क्रम प्रदान किया है?
(A) तीन
(B) चार
(C) पांच
(D) सात

41. कालीबंगा में देखी गई समाधान प्रथाओं में निम्नलिखित में से कौन-से विशिष्ट प्रकार शामिल थे?
(A) आयताकार गड्ढों के भीतर पूर्ण समाधान प्रथाएं
(B) वृत्ताकार गड्ढों में कब्र-सामग्री के साथ कलश समाधान
(C) अस्थि-कलश समाधान के साथ विशेष धार्मिक दाह-संस्कार प्रथा
(D) पूर्ण समाधान, कलश समाधान और खाई समाधान

42. जोधपुरा स्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह साबी नदी के तट पर स्थित है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) अमलानंद घोष
कालीबंगा पुरातात्विक स्थल की खोज राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर हुई थी। इस प्राचीन स्थल की खोज और पहचान सर्वप्रथम वर्ष 1952 में प्रसिद्ध पुरातत्वविद अमलानंद घोष द्वारा की गई थी। इसके पश्चात वर्ष 1961 से 1969 के मध्य बी. बी. लाल तथा बी. के. थापर के निर्देशन में यहाँ व्यापक उत्खनन कार्य संपन्न किया गया था। यह स्थल प्राक्-हड़प्पा साक्ष्य देता है।

2. (D) केवल I और II
कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण हड़प्पाकालीन पुरातात्विक स्थल है। यहाँ उत्खनन के दौरान प्राक्-हड़प्पा और परिपक्व हड़प्पा दोनों सांस्कृतिक चरणों के स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। सुरक्षा प्राचीर के बाहर एक अद्वितीय जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है, जो विश्व में कृषि कार्य का प्राचीनतम उदाहरण है। यहाँ के आवासीय भवनों का निर्माण मुख्य रूप से कच्ची ईंटों द्वारा किया गया था।

3. (A) आयड़
राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित आहड़ एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक पुरातात्विक स्थल है। यह प्राचीन बस्ती आयड़ नदी के तट पर विकसित हुई थी, जिसे बेड़च नदी भी कहा जाता है। बेड़च नदी बनास नदी की एक सहायक नदी है, इसलिए इस संस्कृति को बनास संस्कृति भी कहा जाता है। आहड़ में तांबे के प्रचुर उपकरण और तांबा गलाने की भट्ठियां मिलने के कारण प्राचीन काल में इसे ताम्रवती नगरी कहा जाता था।

4. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के नीम का थाना जिले में स्थित गणेश्वर पुरातात्विक स्थल को भारत में ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी माना जाता है। यह स्थल कांतली नदी घाटी के समीप स्थित है, जहाँ समृद्ध खेतड़ी तांबा भंडार मौजूद हैं। इस भौगोलिक अवस्थिति के कारण गणेश्वर में बड़े पैमाने पर तांबे के उपकरणों का निर्माण किया गया था। यहाँ निर्मित तांबे की वस्तुओं की आपूर्ति हड़प्पा और कालीबंगा जैसे स्थलों को की जाती थी।

5. (A) बालाथल
राजस्थान के उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित बालाथल एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरातात्विक स्थल है। इस स्थल पर उत्खनन के दौरान एक मानव कंकाल प्राप्त हुआ था, जो लगभग 2000 ईसा पूर्व काल का माना जाता है। वैज्ञानिक अध्ययनों और परीक्षणों के आधार पर इस कंकाल में भारतीय उपमहाद्वीप में कुष्ठ रोग का प्राचीनतम पुरातात्विक साक्ष्य खोजा गया है। इसके अतिरिक्त बालाथल से सूती वस्त्र भी प्राप्त हुआ है।

6. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल विशेष नदी घाटियों में विकसित हुए थे। कालीबंगा स्थल हनुमानगढ़ जिले में प्राचीन सरस्वती या घग्गर नदी के तट पर स्थित है। आहड़ स्थल उदयपुर जिले में आयड़ या बेड़च नदी के किनारे स्थित है। गणेश्वर स्थल नीम का थाना क्षेत्र में कांतली नदी के प्रवाह क्षेत्र में विकसित हुआ था। जोधपुरा स्थल जयपुर ग्रामीण क्षेत्र में साबी नदी के तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण स्थल है।

7. (B) कैप्टन बर्ट
राजस्थान के कोटपूतली-बहरोड़ जिले में स्थित बैराठ (प्राचीन विराटनगर) मौर्यकालीन एवं बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केंद्र था। वर्ष 1837 में ब्रिटिश सेनाधिकारी कैप्टन बर्ट ने बैराठ की बीजक की पहाड़ी से प्रसिद्ध भाब्रू शिलालेख की खोज की थी। इस अभिलेख में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के त्रिपालकों तथा बुद्ध, धम्म और संघ में अपनी गहरी आस्था प्रकट करने का साक्ष्य मिलता है। यह शिलालेख कोलकाता में सुरक्षित है।

8. (C) बागोर
राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तट पर स्थित बागोर एक प्रमुख मध्यपाषाणकालीन पुरातात्विक स्थल है, जो भारत में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्रदान करता है। इसके विपरीत, आहड़, बालाथल तथा गिलूंड तीनों ही बनास संस्कृति से संबंधित प्रमुख ताम्रपाषाणिक बस्तियां हैं। बागोर में पत्थर के सूक्ष्म औजारों की बहुलता पाई गई है और यह मुख्यतः शिकार एवं पशुपालन पर आधारित मध्यपाषाण काल की जीवनशैली को प्रदर्शित करता है।

9. (D) गेरूवर्ण मृदभांड और तांबे की कलाकृतियां
गणेश्वर-जोधपुरा परिसर राजस्थान का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से गेरूवर्ण मृदभांड तथा तांबे की विविध कलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में कांतली और साबी नदी घाटियों के अंतर्गत आने वाले स्थल शामिल हैं, जहाँ प्राचीन ताम्र धातुकर्म तथा विशिष्ट मृदभांड परंपरा के साक्ष्य मिले हैं। इस सांस्कृतिक परिसर से प्रचुर मात्रा में शुद्ध तांबे के अस्त्र-शस्त्र और बर्तन प्राप्त हुए हैं।

10. (A) राजसमंद
गिलूंड पुरातात्विक स्थल राजस्थान के राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित है। यह स्थल प्रसिद्ध बनास संस्कृति या आहड़ संस्कृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्रीय केंद्र माना जाता है। वर्ष 1959-60 में बी. बी. लाल द्वारा यहाँ प्रथम व्यापक उत्खनन संपन्न किया गया था। गिलूंड की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ ताम्रपाषाणिक ढांचे के निर्माण में कच्ची ईंटों के साथ-साथ पक्की ईंटों का भी प्रयोग किया गया था।

Click Here to Buy book on Flipkart

औजार भी पाए गए थे, इसलिए यह कहना गलत है कि पत्थर के औजार अनुपस्थित थे।

33. (B) बनासियन बुल
आहड़ पुरातात्विक स्थल से उत्खनन में पकी हुई मिट्टी से निर्मित अनेक वृषभ (बैल) की आकृतियां प्राप्त हुई हैं। ये मृण्मय मूर्तियां आहड़ के निवासियों की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पशुपालन संबंधी मान्यताओं को दर्शाती हैं। पुरातत्वविदों ने बनास नदी घाटी में पाई जाने वाली इन विशिष्ट टेराकोटा बैल आकृतियों को बनासियन बुल नाम दिया है। यह बनास संस्कृति का एक प्रमुख पहचान चिह्न माना जाता है, जो उनकी धार्मिक आस्था को दर्शाता है।

34. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
कालीबंगा जैसे विकसित हड़प्पाकालीन शहरी केंद्रों का अस्तित्व मुख्य रूप से कृषि, पीने के पानी और व्यापारिक नौवहन के लिए सरस्वती-घग्गर नदी प्रणाली पर निर्भर था। कालान्तर में जलवायु परिवर्तन और भू-गर्भीय हलचलों के कारण जब घग्गर नदी सूखने लगी और उसका प्रवाह बाधित हो गया, तो जल संकट उत्पन्न हो गया। इसके परिणामस्वरूप कृषि व्यवस्था पूरी तरह ठप हो गई और अंततः समृद्ध कालीबंगा बस्ती का पतन हो गया।

35. (A) बालाथल
राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित बालाथल पुरातात्विक स्थल से उत्खनन के दौरान सूती कपड़े का एक प्राचीन बुना हुआ टुकड़ा प्राप्त हुआ है। यह खोज यह साबित करती है कि बालाथल के निवासी ताम्रपाषाण काल में कपास की खेती और सूत कातने तथा वस्त्र बुनने की कला से भली-भांति परिचित थे। भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन वस्त्र निर्माण परंपरा के पुरातात्विक साक्ष्यों की दृष्टि से बालाथल का यह निष्कर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

36. (C) 8
बैराठ की बीजक पहाड़ी के उत्खनन के दौरान एक मिट्टी के बर्तन के भीतर कपड़े में बंधे हुए कुल 36 प्राचीन चांदी के सिक्के प्राप्त हुए थे। इन 36 सिक्कों में से 8 सिक्के प्राचीन भारतीय आहत सिक्कों (पंचमार्क सिक्कों) के रूप में पहचाने गए। जबकि शेष 28 सिक्के प्रसिद्ध हिंद-यवन (इंडो-ग्रीक) शासकों के थे, जिनमें राजा मिनांडर के सिक्के सर्वाधिक संख्या में शामिल थे। यह प्राचीन व्यापारिक गतिविधियों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

37. (A) जोधपुरा
राजस्थान के साबी नदी तट पर स्थित जोधपुरा स्थल से बड़े पैमाने पर लोहे को गलाने वाली प्राचीन भट्ठियों के अवशेष मिले हैं। उत्खनन में लोहे के बाणाग्र, भालाग्र, कीलें तथा अयस्क पिघलाने के साक्ष्य पाए गए हैं। ये निष्कर्ष दर्शाते हैं कि उत्तर वैदिक काल और चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति के दौरान जोधपुरा लोहे के औजारों एवं हथियारों के निर्माण तथा धातुकर्म का एक अत्यंत प्रमुख प्रादेशिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ था।

38. (D) P-4, Q-1, R-2, S-3
राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों से अद्वितीय खोजें प्राप्त हुई हैं। कालीबंगा से लकड़ी से निर्मित नाली प्रणाली का अनोखा साक्ष्य मिला है। बालाथल से प्राप्त प्राचीन मानव कंकाल में कुष्ठ रोग का पहला साक्ष्य प्राप्त हुआ है। आहड़ स्थल से पकी मिट्टी से बनी वृषभ मूर्ति मिली है जिसे बनासियन बुल कहा जाता है। बैराठ स्थल से सम्राट अशोक का प्रसिद्ध भाब्रू शिलालेख कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था।

39. (B) बी. बी. लाल
राजसमंद जिले में स्थित गिलूंड पुरातात्विक स्थल आहड़ या बनास संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। वर्ष 1959-1960 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रसिद्ध पुरातत्वविद प्रोफेसर बी. बी. लाल के नेतृत्व में यहाँ पहली बार व्यापक उत्खनन कार्य प्रारंभ किया गया था। बाद में वर्ष 1999 से 2003 के दौरान भी यहाँ वी. एस. शिंदे और पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से पुनः उत्खनन कार्य किया गया था।

40. (C) पांच
भरतपुर जिले में स्थित नोह एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है, जहाँ से उत्तर भारत के इतिहास का एक अटूट सांस्कृतिक क्रम प्राप्त होता है। उत्खनन के अनुसार नोह ने पाँच विशिष्ट सांस्कृतिक कालों के साक्ष्य दिए हैं। ये कालक्रम क्रमशः गेरुवर्ण मृदभांड, काले एवं लाल मृदभांड, चित्रित धूसर मृदभांड, उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड तथा अंततः शुंग-कुषाण काल तक निर्बाध रूप से फैले हुए हैं। यह ऐतिहासिक निरंतरता दर्शाता है।

41. (D) पूर्ण समाधान, कलश समाधान और खाई समाधान
कालीबंगा स्थल पर उत्खनन के दौरान तीन प्रकार की मुख्य समाधान पद्धतियों के साक्ष्य मिले हैं। इनमें आयताकार गड्ढों में उत्तर दिशा में सिर रखकर किया जाने वाला पूर्ण समाधान, वृत्ताकार गड्ढों में कब्र-सामग्री तथा आभूषणों के साथ किया जाने वाला कलश समाधान, तथा आयताकार खाइयों में किया जाने वाला समाधान शामिल है। ये विविधताएं कालीबंगा समाज में प्रचलित विभिन्न धार्मिक, सामाजिक तथा अंतिम संस्कार संबंधी रीति-रिवाजों को उजागर करती हैं।

42. (A) I, II और III
जोधपुरा पुरातात्विक स्थल राजस्थान के कोटपूतली-बहरोड़ क्षेत्र में साबी नदी के तट पर स्थित है। इस प्राचीन स्थल का व्यवस्थित उत्खनन आर. सी. अग्रवाल और विजय कुमार के निर्देशन में किया गया था। जोधपुरा में गेरुवर्ण मृदभांड काल से लेकर चित्रित धूसर मृदभांड और अंततः शुंग-कुषाण काल तक के निरंतर सांस्कृतिक विकास के साक्ष्य मिलते हैं। यहाँ से लोहे को पिघलाने वाली प्राचीन भट्ठियां भी पाई गई हैं।

NODIA

22. (D) I, II और III
उदयपुर जिले में स्थित बालाथल एक अत्यंत समृद्ध ताम्रपाषाणिक स्थल है। यहाँ के उत्खनन में 11 कमरों वाला एक विशाल पत्थरों का किलेबंद ढांचा प्राप्त हुआ है, जो प्रशासनिक या सुरक्षात्मक महत्व दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, बालाथल से बुने हुए सूती कपड़े का एक टुकड़ा मिला है, जो प्राचीन राजस्थान में वस्त्र निर्माण तकनीक को सिद्ध करता है। यहाँ से प्राप्त मानव कंकाल में भारत में कुष्ठ रोग का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है।

23. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल वर्तमान में विभिन्न प्रशासनिक जिलों में स्थित हैं। नोह स्थल भरतपुर जिले में रुपारेल नदी के पास स्थित है। गिलूंड स्थल राजसमंद जिले में बनास नदी के मैदानी भाग में स्थित है। बालाथल स्थल उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित है। बैराठ स्थल कोटपूतली-बहरोड़ एवं जयपुर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है, जो प्राचीनकाल में मत्स्य महाजनपद की राजधानी विराटनगर के नाम से विख्यात था।

24. (C) उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड (NBPW)
बैराठ के उत्तरकाल या द्वितीय नगरीकरण के चरण में मुख्य रूप से उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड प्राप्त होते हैं। इस विशिष्ट मृदभांड शैली का प्रसार प्राचीन भारत में मुख्य रूप से मध्य गंगा घाटी के शहरी केंद्रों में हुआ था। बैराठ में इस प्रकार के बर्तनों की मौजूदगी यह दर्शाती है कि मौर्य और उत्तर-मौर्य काल में बैराठ का सीधा आर्थिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध गंगा घाटी के नगरीकरण के साथ स्थापित था।

25. (D) कालीबंगा
राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर स्थित कालीबंगा स्थल से भारतीय उपमहाद्वीप में प्राकृतिक आपदा के रूप में भूकंप का प्राचीनतम पुरातात्विक साक्ष्य मिला है। प्राक्-हड़प्पाकालीन चरण की दीवारों और मकानों के निर्माण में पड़ी दरारों तथा उनके ढहने के स्वरूप के अध्ययन से पुरातत्वविदों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि लगभग 2600 ईसा पूर्व में आए तीव्र भूकंप के कारण यह प्राक्-हड़प्पा बस्ती नष्ट हो गई थी।

26. (A) गिलूंड की संरचनाओं में पक्की ईंटों का प्रचुर उपयोग दिखाई देता है।
राजसमंद में स्थित गिलूंड स्थल बनास या आहड़ संस्कृति का ही एक प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र है। यद्यपि आहड़ में मुख्य रूप से पत्थर और मिट्टी की कच्ची ईंटों का प्रयोग संरचनाओं में किया जाता था, परंतु गिलूंड के उत्खनन में पक्की ईंटों के उपयोग का व्यापक साक्ष्य प्राप्त हुआ है। यही विशेषता गिलूंड को मुख्य आहड़ स्थल से अलग बनाती है, क्योंकि ताम्रपाषाणिक काल में पक्की ईंटों का ऐसा प्रयोग दुर्लभ माना जाता है।

27. (B) एक बड़ी संयुक्त परिवार प्रणाली या सामूहिक भोजन व्यवस्था
आहड़ में पुरातात्विक उत्खनन के दौरान एकल बड़े मकानों के भीतर एक से अधिक और कभी-कभी चार से छह चूल्हे एक साथ पाए गए हैं। एक ही रसोई या बड़े कमरे में इतने सारे चूल्हों का एक साथ मिलना संभवतः यह दर्शाता है कि आहड़ के समाज में एक बड़ी संयुक्त परिवार प्रणाली मौजूद थी या फिर वहाँ सामूहिक भोजन पकाने की व्यवस्था प्रचलित थी। यह उनके संगठित सामाजिक जीवन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

NODIA

28. (C) पुरापाषाण, मध्यपाषाण, ताम्रपाषाण, लौह युग
राजस्थान के प्रागैतिहासिक एवं ऐतिहासिक कालक्रम का अध्ययन करने पर मानव संस्कृति का विकास क्रमबद्ध रूप से दिखाई देता है। सबसे पहले पुरापाषाण काल आया जिसमें मानव केवल शिकार पर निर्भर था। इसके बाद मध्यपाषाण काल आया जिसमें सूक्ष्म पत्थरों के औजार बने। तत्पश्चात ताम्रपाषाण काल आया जिसमें तांबे और धातुओं का उपयोग शुरू हुआ। सबसे अंत में लौह युग आया जिसमें लोहे के उपकरणों ने कृषि तथा युद्ध में क्रांति ला दी।

29. (A) नोह
भरतपुर जिले में स्थित नोह पुरातात्विक स्थल से उत्खनन के दौरान मौर्य एवं शुंग काल की एक आदमकद पाषाण प्रतिमा प्राप्त हुई है। यह विशाल प्रतिमा एक यक्ष की है, जिसे स्थानीय ग्रामीण और पुरातत्वविद जाख बाबा के नाम से पुकारते हैं। यह यक्ष प्रतिमा प्राचीन राजस्थान में पाषाण मूर्ति कला और लोक धर्म के निरंतर विकास तथा मौर्यकालीन कला के प्रभाव को प्रदर्शित करने वाला एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य माना जाता है।

30. (C) प्राक्-हड़प्पाकालीन जुते हुए खेत का साक्ष्य
बैराठ (विराटनगर) मौर्यकालीन, बौद्ध और लौह युगीन अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ से बीजक पहाड़ी पर एक गोल बौद्ध स्तूप, 36 चांदी के सिक्कों का खजाना तथा कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया अशोक का भाब्रू शिलालेख मिला है। इसके विपरीत, प्राक्-हड़प्पाकालीन जुते हुए खेत का अद्वितीय साक्ष्य केवल कालीबंगा स्थल से प्राप्त हुआ है, न कि बैराठ से। बैराठ का संबंध मुख्य रूप से मत्स्य महाजनपद और मौर्य काल से है।

31. (D) खोखले किए गए लकड़ी के तने
कालीबंगा में नगर नियोजन एवं स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा गया था। यहाँ गंदे पानी के निकास के लिए एक अत्यंत अद्वितीय जल निकासी प्रणाली पाई गई है, जिसमें खोखले किए गए लकड़ी के तनों का प्रयोग करके नालियां बनाई गई थीं। लकड़ी को अंदर से कुरेदकर नाली का रूप दिया जाता था और उन्हें आपस में जोड़कर जल निकासी की जाती थी। यह तकनीक सिंधु सभ्यता के अन्य किसी भी स्थल पर देखने को नहीं मिलती है।

32. (C) केवल I, II और IV
सीकर/नीम का थाना क्षेत्र में स्थित गणेश्वर संस्कृति को राजस्थान की प्राचीनतम ताम्रपाषाणिक संस्कृति माना जाता है। इस स्थल ने कालीबंगा और अन्य हड़प्पा स्थलों को प्रचुर मात्रा में तांबे की वस्तुओं की आपूर्ति की थी। यह संस्कृति मुख्य रूप से गेरुवर्ण मृदभांड द्वारा अभिलक्षित है। हालाँकि, गणेश्वर में तांबे के उपकरणों के साथ-साथ सूक्ष्मपाषाण पत्थर के

लगभग पूर्ण प्रतिस्थापन कर दिया था। स्थानीय अरावली पहाड़ियों से तांबे की प्रचुर आपूर्ति ने आहड़ को पूरे भारतीय ताम्रपाषाणिक संदर्भ में एक अद्वितीय तकनीकी स्थान प्रदान किया।

99. (A) विजय कुमार
राजस्थान के नीम का थाना जिले में स्थित गणेश्वर पुरातात्विक स्थल पर उत्खनन कार्य वर्ष 1977-1978 में राजस्थान पुरातत्व विभाग के निदेशक रतन चंद्र अग्रवाल (आर. सी. अग्रवाल) द्वारा आयोजित किया गया था। इस प्रसिद्ध उत्खनन अभियान में पुरातत्वविद विजय कुमार ने उनके मुख्य सहयोगी के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इन दोनों विद्वानों के प्रयासों से ही गणेश्वर की ताम्र सभ्यता उजागर हुई।

100. (C) तीनों स्थल महत्वपूर्ण नदी प्रणालियों के तटों पर विकसित हुए।
राजस्थान की प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन करने पर यह सार्वभौमिक सत्य सामने आता है कि कालीबंगा, आहड़ और गणेश्वर तीनों ही प्रमुख प्राचीन नदी प्रणालियों के तटों पर विकसित हुए थे। कालीबंगा घग्गर नदी के तट पर, आहड़ आयड़ नदी के तट पर, तथा गणेश्वर कांतली नदी के तट पर स्थित था। इन नदियों के जल ने कृषि, पशुपालन और दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

43. (A) 3, 2, 4, 1
राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों की खोज और प्रथम प्रमुख आधुनिक उत्खनन के वर्ष का क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले बैराठ की खोज और उत्खनन 1930 के दशक (1936 दयाराम साहनी) में हुआ। इसके बाद कालीबंगा की खोज 1952 में अमलानंद घोष द्वारा हुई। आहड़ का उत्खनन 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास द्वारा शुरु किया गया। सबसे अंत में बालाथल का उत्खनन 1993 में वी. एन. मिश्रा द्वारा प्रारंभ किया गया।

44. (B) मिट्टी की दीवारों के साथ नींव के लिए शिस्ट पत्थर के ब्लॉक
आहड़ संस्कृति के भवनों की वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता उनके निर्माण में स्थानीय सामग्रियों का कुशलतापूर्वक उपयोग था। आहड़ के निवासियों ने अपने मकानों के निर्माण में नींव को मजबूत करने के लिए शिस्ट और नदियों के पत्थरों के ब्लॉकों का उपयोग किया। इसके ऊपर मिट्टी तथा बांस के ढांचों से बनी दीवारों का निर्माण किया जाता था। छतों को बांस और घास-फूस से ढककर मिट्टी का लेप किया जाता था।

45. (A) गणेश्वर
राजस्थान के नीम का थाना जिले में स्थित गणेश्वर स्थल को भारत की पुरातात्विक खोजों में ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। इसका कारण यहाँ से मिली तांबे की कलाकृतियों की अत्यधिक प्रचुरता और उनकी प्राचीनता है। सी-14 तिथि निर्धारण के अनुसार यह स्थल लगभग 2800 ईसा पूर्व का है। गणेश्वर ने सिंधु घाटी सभ्यता के केंद्रों को परिष्कृत तांबा अयस्क और उपकरण आपूर्ति करने में केंद्रीय भूमिका निभाई थी।

46. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
विराटनगर (बैराठ) मौर्य काल में उत्तर-पश्चिम भारत में बौद्ध धर्म और संस्कृति का एक विशाल प्रशासनिक तथा धार्मिक केंद्र था। बैराठ स्थित बीजक की पहाड़ी से उत्खनन के दौरान एक गोलाकार बौद्ध स्तूप और मठ के पुरातात्विक अवशेष मिले हैं। इसके साथ ही यहाँ से कैप्टन बर्ट द्वारा सम्राट अशोक का प्रसिद्ध भाब्रू शिलालेख खोजा गया था, जिसमें अशोक ने बुद्ध और बौद्ध धर्म के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त की थी।

47. (D) ताम्रपाषाण और प्रारंभिक ऐतिहासिक
उदयपुर जिले के बालाथल स्थल पर व्यापक उत्खनन से दोहरे स्पष्ट सांस्कृतिक क्रम का पता चलता है। पहला चरण एक समृद्ध ताम्रपाषाणिक संस्कृति का है जो लगभग 3000 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व तक फली-फूली, जिसमें 11 कमरों वाला विशाल भवन और तांबे के औजार शामिल हैं। दूसरा चरण एक लंबे अंतराल के पश्चात प्रारंभिक ऐतिहासिक काल (लगभग 300 ईसा पूर्व) का है, जो लोहे के हथियारों और मृदभांडों द्वारा चिह्नित है।

48. (C) रुपारेल
राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित भरतपुर जिले का प्रसिद्ध नोह पुरातात्विक स्थल रुपारेल नदी के तट पर विकसित हुआ था। रुपारेल नदी के जल की उपलब्धता के कारण यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही मानव बसावट के लिए अनुकूल रहा। नोह से गेरुवर्ण मृदभांड काल से लेकर शुंग-कुषाण काल तक के पाँच सांस्कृतिक चरणों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिनमें लोहे के औजार और प्रसिद्ध जाख बाबा की यक्ष प्रतिमा प्रमुख हैं।

NODIA

49. (B) गेरुवर्ण मृदभांड (OCP)
पुरातत्वविदों ने राजस्थान की कांतली और साबी नदी घाटियों में पाए जाने वाले गणेश्वर और जोधपुरा स्थलों को संयुक्त रूप से गणेश्वर-जोधपुरा परिसर का नाम दिया है। इसका मुख्य आधार इन दोनों स्थलों से प्राप्त गेरुवर्ण मृदभांड की अद्वितीय बनावट, रुपरेखा और रंग में पाई जाने वाली गहरी सांस्कृतिक समानता है। ये दोनों स्थल भारत में प्रारंभिक ताम्र धातुकर्म तथा मृदभांड निर्माण के प्रमुख केंद्र माने जाते हैं।

50. (D) कालीबंगा - ताम्रवती
प्राचीन स्थलों के ऐतिहासिक नामों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि आहड़ को आघाटपुर, धूलकोट तथा ताम्रवती नगरी के नाम से जाना जाता था, क्योंकि यहाँ तांबे का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता था। बैराठ का प्राचीन नाम विराटनगर था जो मत्स्य जनपद की राजधानी थी। कालीबंगा को ताम्रवती कहना पूरी तरह से असत्य है, क्योंकि कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ काले रंग की चूड़ियां है और यह घग्गर नदी पर स्थित था।

51. (A) कालीबंगा
राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के किनारे स्थित कालीबंगा से उत्खनन में एक मिट्टी की बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है। इस प्रकार की बेलनाकार मुहरें मूल रूप से प्राचीन मेसोपोटामिया की सभ्यता की मुख्य पहचान मानी जाती हैं। कालीबंगा में इस बेलनाकार मुहर की मौजूदगी यह सिद्ध करती है कि हड़प्पाकालीन कालीबंगा का मेसोपोटामिया और मध्य एशिया के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सुदूर समुद्री एवं थल व्यापारिक संबंध था।

52. (C) केवल I, II और IV
बैराठ बाणगंगा नदी के तट पर स्थित एक प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल है, जिसका उत्खनन मुख्यतः 1936 में रायबहादुर दयाराम साहनी द्वारा कराया गया था। यह प्राचीन मत्स्य महाजनपद की राजधानी विराटनगर के रूप में जाना जाता था। बैराठ में चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति के प्रचुर अवशेष मिले हैं, इसलिए यह कथन गलत है कि यहाँ इस मृदभांड का साक्ष्य नहीं है। बैराठ मौर्यकालीन स्थापत्य और बौद्ध अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है।

53. (A) सिर उत्तर की ओर करके, मृदभांडों और आभूषणों के साथ
आहड़ संस्कृति में मृतकों के अंतिम संस्कार के लिए एक विशेष समाधान परंपरा का पालन किया जाता था। शवों को आमतौर पर आबादी वाले क्षेत्र के पास ही जमीन में गड्ढा खोदकर दफनाया जाता था। दफनाते समय मृतक का सिर हमेशा उत्तर दिशा की ओर तथा पैर दक्षिण की ओर रखे जाते थे। इसके साथ ही कब्र में भोजन के मृदभांड, तांबे के आभूषण और मनके रखे जाते थे, जो पुनर्जन्म में उनके विश्वास को दर्शाते हैं।

11. (B) काले रंग की चूड़ियां
कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर स्थित प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख नगर है। सिंधी एवं पंजाबी भाषा में काली का अर्थ काला रंग तथा बंगा का अर्थ चूड़ियां होता है, इस प्रकार कालीबंगा शब्द का शाब्दिक अर्थ काले रंग की चूड़ियां है। इस स्थल के उत्खनन के दौरान मिट्टी तथा कांच जैसी सामग्री से निर्मित काले रंग की चूड़ियों के अत्यधिक अवशेष प्राप्त हुए थे।

12. (B) केवल IV
आहड़ संस्कृति दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान की एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक ग्रामीण संस्कृति थी। यह संस्कृति विशिष्ट काले और लाल मृदभांडों के प्रयोग तथा तांबा पिघलाने की भट्टियों की उपस्थिति के लिए जानी जाती है। यहाँ के मकान पत्थर की नींव और मिट्टी की दीवारों से बनाए गए थे। यह संस्कृति किसी विशाल हड़प्पा साम्राज्य द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित शहरी केंद्र का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी, बल्कि एक स्वतंत्र कृषक-पशुपालक समुदाय थी।

13. (A) यहाँ से एक गोलाकार मौर्यकालीन बौद्ध स्तूप प्राप्त हुआ था।
जयपुर ग्रामीण क्षेत्र के पास स्थित बैराठ (प्राचीन विराटनगर) मौर्यकालीन और बौद्ध इतिहास का एक प्रसिद्ध केंद्र है। यहाँ की बीजक पहाड़ी पर उत्खनन से एक विशाल गोलाकार मौर्यकालीन बौद्ध स्तूप तथा मठ के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह गोलाकार स्तूप भारत में स्थापत्य कला की दृष्टि से सबसे प्राचीन बौद्ध मंदिरों में से एक माना जाता है। इसके अतिरिक्त बैराठ से सम्राट अशोक का भाब्रू शिलालेख भी प्राप्त हुआ है।

14. (C) भरतपुर
नोह पुरातात्विक स्थल राजस्थान के भरतपुर जिले में रुपारेल नदी के समीप स्थित है। यह प्राचीन स्थल अपने चित्रित धूसर मृदभांड तथा लौह युगीन अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है। नोह में उत्खनन के दौरान मौर्य तथा शुंग काल की एक विशालकाय यक्ष की पाषाण प्रतिमा प्राप्त हुई थी, जिसे स्थानीय रूप से जाख बाबा की मूर्ति कहा जाता है। यह स्थल उत्तर भारत में कला एवं स्थापत्य परंपरा को दर्शाता है।

15. (A) 3, 4, 2, 1
राजस्थान में मानव संस्कृति के विकास का कालानुक्रमिक क्रम पुरापाषाण काल से प्रारंभ होकर लौह युग तक निरंतर चलता रहा है। सबसे पहले पुरापाषाण काल आया जिसमें मानव आखेटक था, इसके पश्चात मध्यपाषाण काल आया जिसमें सूक्ष्म पाषाण औजारों का प्रयोग और पशुपालन शुरु हुआ। इसके बाद ताम्रपाषाण काल आया जिसमें तांबे और पत्थर का प्रयोग साथ हुआ, तथा अंत में लौह युग आया जिसमें लोहे के अस्त्रों का विकास हुआ।

16. (C) वी. एन. मिश्रा
बालाथल राजस्थान के उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक पुरातात्विक स्थल है। इस स्थल पर प्रथम व्यवस्थित एवं व्यापक उत्खनन कार्य वर्ष 1993 में डेक्कन कॉलेज पुणे के प्रसिद्ध पुरातत्वविद प्रोफेसर वी. एन. मिश्रा के कुशल नेतृत्व में प्रारंभ किया गया था। इस उत्खनन के दौरान यहाँ से विशाल पत्थरों की किलेबंद संरचना, 11 कमरों वाला भवन, तांबे के औजार तथा कुष्ठ रोग के साक्ष्य मिले थे।

17. (B) धार्मिक या याज्ञिक अग्नि अनुष्ठान
कालीबंगा के उत्खनन के दौरान दुर्ग क्षेत्र में मिट्टी के बने ऊंचे चबूतरों पर सात आयताकार अग्निवेदियों की एक सीधी पंक्ति प्राप्त हुई है। इन अग्निवेदियों में राख, कोयला और पशुओं की हड्डियों के अवशेष पाए गए हैं। यह पुरातात्विक साक्ष्य स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि कालीबंगा के निवासी धार्मिक या याज्ञिक अग्नि अनुष्ठान करते थे और बलि प्रथा में विश्वास रखते थे। यह सिंधु सभ्यता की धार्मिक मान्यताओं का अंग है।

18. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
उदयपुर जिले में स्थित आहड़ पुरातात्विक स्थल को प्राचीन काल में स्थानीय रूप से ताम्रवती अथवा ताम्रवती नगरी के नाम से जाना जाता था। इसका मुख्य कारण यह है कि आहड़ में व्यापक उत्खनन के दौरान प्रचुर मात्रा में तांबे के उपकरण, कुल्हाड़ियां, चूड़ियां, गंडासे तथा तांबा पिघलाने वाली भट्ठियों के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ के निवासी स्थानीय तांबा अयस्कों से शुद्ध तांबा निकालकर विभिन्न दैनिक उपयोग की वस्तुएं निर्मित करते थे।

19. (A) कोटपूतली-बहरोड़ क्षेत्र
जोधपुरा पुरातात्विक स्थल राजस्थान के कोटपूतली-बहरोड़ क्षेत्र में साबी नदी के तट पर स्थित है। यह स्थल अपने विस्तृत सांस्कृतिक क्रम के लिए जाना जाता है, जो गेरुवर्ण मृदभांड काल से लेकर शुंग-कुषाण काल तक फैला हुआ है। जोधपुरा में चित्रित धूसर मृदभांड के साथ-साथ भट्ठियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जहाँ प्राचीन काल में बड़े पैमाने पर लोहे को पिघलाकर हथियार और कृषि उपकरण बनाए जाते थे।

20. (C) गणेश्वर - बी. बी. लाल
गणेश्वर स्थल राजस्थान के नीम का थाना जिले में स्थित एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक स्थल है, जिसकी खोज और उत्खनन का कार्य मुख्यतः रतन चंद्र अग्रवाल और विजय कुमार द्वारा किया गया था। कालीबंगा का उत्खनन अमलानंद घोष द्वारा खोजे जाने के बाद किया गया, आहड़ का उत्खनन एच. डी. सांकलिया द्वारा किया गया तथा बैराठ का उत्खनन दयाराम साहनी द्वारा संचालित किया गया था। अतः तीसरा विकल्प गलत युग्म दर्शाता है।

21. (A) तांबे के सूक्ष्म बाणाग्र और मछली पकड़ने के कांटे
गणेश्वर पुरातात्विक स्थल राजस्थान में कांतली नदी के तट पर स्थित एक अद्वितीय ताम्रपाषाणिक केंद्र है। इस स्थल की सबसे प्रमुख विशेषता यहाँ से अत्यधिक शुद्ध तांबे के सूक्ष्म बाणाग्र, कुल्हाड़ियां, छैणियां और मछली पकड़ने के कांटों का मिलना है। गणेश्वर से मिले तांबे के कांटों की प्रचुरता यह दर्शाती है कि उस समय कांतली नदी एक सदा नीरा नदी थी जिसमें प्रचुर मात्रा में जलीय जीव और मछलियां मौजूद थीं।

Click Here to Buy book on Amazon

65. (B) 2800 ईसा पूर्व
वैज्ञानिक तिथि निर्धारण पद्धति (रेडियोकार्बन-14) के अनुसार, नीम का थाना में स्थित गणेश्वर संस्कृति के प्राचीनतम ताम्रपाषाणिक चरण का समय लगभग 2800 ईसा पूर्व निर्धारित किया गया है। इस समय निर्धारण से यह स्पष्ट होता है कि गणेश्वर भारत के सबसे पुराने तांबा उत्पादक और उपयोग करने वाले पुरातात्विक स्थलों में से एक था, जो हड़प्पा सभ्यता के परिपक्व चरण से भी पूर्व समृद्ध रूप से फल-फूल रहा था।

66. (D) स्थानीय संभ्रांत वर्ग के लिए एक आवासीय परिसर या एक रक्षात्मक दुर्ग
बालाथल के ताम्रपाषाणिक चरण में उत्खनित विशाल 11 कमरों वाली किलेबंद पत्थरों की संरचना स्थापत्य का एक अद्भुत उदाहरण है। इस विशाल इमारत के चारों ओर पत्थरों और गारे से बनी चौड़ी सुरक्षा दीवारें मौजूद हैं। पुरातत्वविदों का मानना है कि इतनी बड़ी और मजबूत संरचना का उपयोग संभवतः स्थानीय कबीले के प्रमुख या संभ्रांत वर्ग के निवास स्थान के रूप में अथवा बाहरी हमलों से बचाव हेतु एक रक्षात्मक दुर्ग के रूप में होता था।

67. (A) हूण शासक मिहिरकुल
बैराठ (विराटनगर) प्राचीन काल में बौद्ध धर्म का एक समृद्ध केंद्र था, जहाँ अनेक स्तूप, चैत्य और बौद्ध विहार स्थापित थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी अपने यात्रा वृत्तांत में बैराठ के बौद्ध मठों का स्पष्ट उल्लेख किया था। छठी शताब्दी ईस्वी में क्रूर हूण शासक मिहिरकुल ने बैराठ पर आक्रमण किया और यहाँ के प्रसिद्ध गोलाकार बौद्ध स्तूपों, मठों और बौद्ध कलाकृतियों को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया था।

68. (C) विशिष्ट मकान संरेखण और शुरुआती मृदभांड प्रकार (फैब्रिक A-F)
कालीबंगा में प्राक्-हड़प्पा (निचला स्तर) और परिपक्व हड़प्पा (ऊपरी स्तर) के बीच स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। प्राक्-हड़प्पा चरण में मकानों का संरेखण परिपक्व हड़प्पा की भांति पूर्ण ग्रिड पैटर्न पर नहीं था। इसके अतिरिक्त, प्राक्-हड़प्पा काल अपने विशिष्ट पतले और हल्के लाल रंग के मृदभांडों के लिए जाना जाता है, जिन्हें पुरातत्वविद बी. के. थापर ने छह श्रेणियों (फैब्रिक A, B, C, D, E और F) में वर्गीकृत किया है।

69. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत के अधिकांश ताम्रपाषाणिक स्थलों में तांबे की सीमित उपलब्धता के कारण दैनिक औजारों के लिए पत्थर के सूक्ष्म औजारों का बहुतायत से प्रयोग किया जाता था। इसके विपरीत, आहड़ में स्थानीय अरावली पहाड़ियों से तांबा अयस्क की प्रचुर उपलब्धता थी। परिणामस्वरूप, आहड़ के लोगों ने पत्थर के औजारों के स्थान पर पूरी तरह से तांबे के औजारों को अपना लिया, जिससे मुख्य आहड़ स्थल पर सूक्ष्मपाषाण उपकरण अत्यंत दुर्लभ पाए जाते हैं।

70. (D) जोधपुरा
साबी नदी के तट पर स्थित जोधपुरा पुरातात्विक स्थल से चित्रित धूसर मृदभांड काल से संबंधित लौह धातुकर्म के विशाल साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में लोहे को अत्यधिक तापमान पर गलाने वाली भट्ठियां, लोहे के बाणाग्र, भालाग्र, छेदनियां, कीलें और प्रचुर मात्रा में धातु मल मिला है। इन खोजों से यह सिद्ध होता है कि जोधपुरा लौह युगीन भारत में अस्त्र-शस्त्रों और औजारों के उत्पादन का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र था।

NODIA

71. (B) एक साथ दो अलग-अलग फसलों की खेती
कालीबंगा के प्राक्-हड़प्पा स्तर से मिला जुता हुआ खेत एक अद्वितीय पुरातात्विक साक्ष्य है। इस खेत में हल की कुड़ों का एक विशिष्ट पैटर्न पाया गया है, जहाँ पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण की ओर खींची गई कुड़ें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं। यह दोहरा ग्रिड पैटर्न यह सिद्ध करता है कि कालीबंगा के किसान एक ही खेत में एक ही समय पर दो अलग-अलग फसलें (जैसे चना और सरसों) उगाते थे।

72. (C) केवल IV
राजसमंद जिले में स्थित गिलूंड स्थल बनास नदी के उपजाऊ मैदान में स्थित है तथा इसे आहड़ ताम्रपाषाणिक संस्कृति का एक प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र माना जाता है। गिलूंड के उत्खनन में पक्की ईंटों से बनी विशाल संरचनाओं के अवशेष मिले हैं। हालाँकि, इसका प्रथम उत्खनन वर्ष 1959-60 में बी. बी. लाल द्वारा कराया गया था, न कि अमलानंद घोष द्वारा। इसलिए उत्खननकर्ता से संबंधित चौथा कथन पूरी तरह गलत है।

73. (D) मत्स्य क्षेत्र (अलवर-भरतपुर)
नोह पुरातात्विक स्थल राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित भरतपुर जिले में आता है, जो ऐतिहासिक रूप से प्राचीन मत्स्य क्षेत्र का हिस्सा रहा है। यह स्थल अपने अटूट सांस्कृतिक क्रम के लिए विख्यात है, जो गेरुवर्ण मृदभांड काल से प्रारंभ होकर चित्रित धूसर मृदभांड, मौर्य, शुंग तथा अंततः कुषाण काल तक निरंतर विकसित होता रहा। नोह मत्स्य क्षेत्र में प्राचीन कला, व्यापार और संस्कृति का प्रमुख केंद्र माना जाता था।

74. (A) केवल I और III
उदयपुर के बालाथल स्थल से बनासियन शैली की पकी मिट्टी से बनी वृषभ की प्रसिद्ध मूर्ति पाई गई है। यह स्थल लगभग 1500 ईसा पूर्व में ताम्रपाषाण काल के समाप्त होने के पश्चात लगभग 300 ईसा पूर्व में प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में पुनः बसने का स्पष्ट साक्ष्य देता है। बालाथल में 11 कमरों वाली विशाल पत्थरों की किलेबंद संरचना पाई गई है, अतः यह कहना गलत है कि किलेबंदी का कोई साक्ष्य नहीं है।

75. (B) लोहे के हल
गणेश्वर संस्कृति मुख्य रूप से पूर्व-हड़प्पाकालीन एवं ताम्रपाषाणिक काल (लगभग 2800 ईसा पूर्व) से संबंधित है। इस काल में केवल तांबे और पत्थर की तकनीकों का ज्ञान था। गणेश्वर में प्रचुर मात्रा में शुद्ध तांबे के बाणाग्र, कुल्हाड़ियां, मछली पकड़ने के कांटे, गेरुवर्ण मृदभांड तथा सूक्ष्मपाषाण उपकरण पाए गए हैं। चूँकि लोहे की खोज और उपयोग भारत में काफी बाद में हुआ, इसलिए गणेश्वर में लोहे के हल पूरी तरह अनुपस्थित थे।

54. (D) कांतली नदी में प्रचुर मात्रा में मछलियों के जीवन का समर्थन करने के लिए पर्याप्त बारहमासी पानी था।
गणेश्वर स्थल से शुद्ध तांबे से बने अनेक मछली पकड़ने के कांटे उत्खनित किए गए हैं। इन कांटों का प्रचुर मात्रा में मिलना यह भौतिक प्रमाण प्रस्तुत करता है कि लगभग 2800 ईसा पूर्व के दौरान कांतली नदी एक शुष्क मौसमी नाला न होकर एक बारहमासी, सदा नीरा नदी थी। नदी में साल भर प्रचुर मात्रा में जल और मछलियां मौजूद रहती थीं, जिनका शिकार स्थानीय गणेश्वरवासी अपने भोजन हेतु नियमित रूप से करते थे।

55. (B) नोह
बनास या आहड़ ताम्रपाषाणिक संस्कृति दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान की मेवाड़ नदी घाटी में फैली हुई थी। इस संस्कृति के मुख्य स्थलों में आहड़, बालाथल, गिलूंड, ओझियाना तथा लाछूड़ा शामिल हैं, जहाँ से समान प्रकार के काले और लाल मृदभांड एवं तांबे के उपकरण मिले हैं। इसके विपरीत, नोह स्थल भरतपुर जिले में स्थित है और यह मुख्य रूप से गेरूवर्ण मृदभांड, चित्रित धूसर मृदभांड तथा लौह युगीन एवं मौर्य-कुषाण संस्कृति का प्रतिनिधि केंद्र है।

56. (C) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान के विभिन्न पुरातात्विक स्थल विशिष्ट मृदभांड शैलियों से जुड़े हैं। कालीबंगा से प्राक्-हड़प्पा चरण की छह प्रकार की बनावट वाले अलंकृत मृदभांड मिले हैं। आहड़ स्थल काले और लाल मृदभांड के लिए विश्वप्रसिद्ध है। गणेश्वर स्थल गेरूवर्ण मृदभांड परंपरा का प्रमुख प्रतिनिधि माना जाता है। बैराठ स्थल से मौर्य एवं उत्तर-मौर्य काल के चमकते हुए उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जो व्यापारिक संबंध दर्शाते हैं।

57. (D) समकोण पर काटती हुई सड़कों के साथ ग्रिड पैटर्न
कालीबंगा की नगर योजना विशिष्ट सिंधु घाटी सभ्यता की उत्कृष्ट ग्रिड प्रणाली पर आधारित थी। यहाँ की मुख्य सड़कें और गलियां एक-दूसरे को समकोण (90 डिग्री) पर काटती थीं, जिससे पूरा नगर आयताकार खंडों में विभाजित हो जाता था। इस योजनाबद्ध व्यवस्था को ऑक्सफोर्ड सर्कस या चेसबोर्ड पैटर्न भी कहा जाता है। नगर को सुरक्षात्मक दीवारों द्वारा दो भागों, पश्चिमी दुर्ग और पूर्वी निचले नगर में विभाजित किया गया था।

58. (A) प्रारंभिक ऐतिहासिक चरण (लगभग 300 ईसा पूर्व)
उदयपुर जिले में स्थित बालाथल मुख्य रूप से एक ताम्रपाषाणिक स्थल है, लेकिन यहाँ दोहरे सांस्कृतिक काल के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। प्रथम ताम्रपाषाणिक काल के पतन के बाद एक लंबा अंतराल आया। इसके बाद लगभग 300 ईसा पूर्व के प्रारंभिक ऐतिहासिक चरण में यहाँ पुनः बसावट हुई। इसी प्रारंभिक ऐतिहासिक चरण के दौरान बालाथल में लोहे के औजार, हथियार और धातुकर्म से संबंधित लोहा गलाने की गतिविधियों के स्पष्ट साक्ष्य मिले हैं।

59. (B) जयपुर ग्रामीण / कोटपूतली-बहरोड़ जिला
चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति से संबंधित जोधपुरा का प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल प्रशासनिक दृष्टि से जयपुर ग्रामीण एवं कोटपूतली-बहरोड़ जिले की सीमा में साबी नदी के तट पर स्थित है। भौगोलिक रूप से अक्सर जोधपुरा नाम से भ्रम उत्पन्न होता है, परंतु इसका पश्चिमी राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में स्थित जोधपुर जिले से कोई संबंध नहीं है। यह स्थल प्राचीन मत्स्य एवं कुरु क्षेत्रों के सांस्कृतिक व्यापारिक मार्ग पर स्थित था।

60. (B) OCP → BRW → PGW → NBPW
प्राचीन भारत में मृदभांड संस्कृतियों के कालानुक्रमिक विकास का सही क्रम गेरूवर्ण मृदभांड से प्रारंभ होता है, जो ताम्रनिधि काल से जुड़ा है। इसके बाद काले और लाल मृदभांड आते हैं जो आहड़ और प्राक्-हड़प्पा चरण में लोकप्रिय थे। तत्पश्चात लौह युग से संबंधित चित्रित धूसर मृदभांड का प्रसार हुआ। सबसे अंत में बुद्ध और मौर्य काल के द्वितीय नगरीकरण को दर्शाने वाले उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड आए।

61. (A) सूक्ष्मपाषाण पत्थर के उपकरण और फलक (ब्लेड)
राजसमंद में स्थित गिलूंड का ताम्रपाषाणिक स्थल यद्यपि तांबे के उपकरणों के प्रयोग का साक्ष्य प्रस्तुत करता है, परंतु यह विशेष रूप से अपने समृद्ध पत्थर के उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। गिलूंड से प्रचुर संख्या में सूक्ष्मपाषाण पत्थर के औजार, जैसे चाल्सेडोनी और क्वार्ट्ज़ से बने तीखे फलक, स्क्रैपर और बाणाग्र मिले हैं। यह दर्शाता है कि तांबे के साथ-साथ पत्थर के औजार दैनिक जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण बने रहे।

62. (C) केवल I और III
भरतपुर जिले में स्थित नोह स्थल से गेरूवर्ण मृदभांड से लेकर कुषाण काल तक के पाँच निरंतर सांस्कृतिक चरणों के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ चित्रित धूसर मृदभांड का विशाल भंडार मिला है, इसलिए यह कथन गलत है कि यह मृदभांड अनुपस्थित है। नोह में चित्रित धूसर मृदभांड चरण के दौरान भारी संख्या में लोहे की कलाकृतियां, भालाग्र, बाणाग्र, कुल्हाड़ियां और कीलें पाई गईं जो प्राचीन राजस्थान में लौह धातुकर्म के महत्व को सिद्ध करती हैं।

63. (D) ऊंट
कालीबंगा में उत्खनन के दौरान पालतू पशुओं की हड्डियों के साथ-साथ विशेष रूप से ऊंट की पसलियों और पैरों की हड्डियां बड़ी संख्या में पाई गई हैं। यह पुरातात्विक साक्ष्य यह प्रमाणित करता है कि हड़प्पाकालीन कालीबंगा के निवासी ऊंट का उपयोग परिवहन, भार ढोने तथा संभवतः कृषि कार्यों के लिए करते थे। राजस्थान के शुष्क परिवेश में ऊंट के प्राचीनतम पालतू उपयोग की दृष्टि से यह खोज अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

64. (C) केवल I, II और IV
आहड़ संस्कृति का आर्थिक जीवन मुख्य रूप से पशुपालन तथा कृषि पर आधारित था। यहाँ के लोग गेहूं, जो और विशेष रूप से चावल की खेती करते थे। स्थानीय तांबा अयस्क से तांबा पिघलाना और उपकरण बनाना उनका प्रमुख उद्योग था। हालाँकि, आहड़ निवासी धातु के सिक्कों से पूरी तरह अनभिज्ञ थे; उन्होंने व्यापार के लिए कोई चांदी के सिक्के नहीं ढाले थे, बल्कि वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रयोग करते थे।

Downloaded from www.pdf.tube

कारण यह है कि आहड़ में कालीबंगा की भांति समकोण पर काटने वाली ग्रिड सड़कों, व्यवस्थित ईंटों के नगर नियोजन और ढकी हुई सुव्यवस्थित नालियों का पूरी तरह अभाव था। आहड़ के मकान बिना किसी पूर्व नगर योजना के अनियोजित रूप से बनाए गए थे, जो एक समृद्ध ग्रामीण कृषक बस्ती की पहचान है।

88. (C) मिनांडर
बैराठ (विराटनगर) की बीजक पहाड़ी से उत्खनित सिक्कों के खजाने में कुल 36 चांदी के सिक्के प्राप्त हुए थे। इनमें से 28 सिक्के प्रसिद्ध हिंद-यवन (इंडो-ग्रीक) शासकों के हैं। इन हिंद-यवन सिक्कों का विस्तृत अध्ययन करने पर पाया गया कि इनमें सर्वाधिक सिक्के प्रसिद्ध हिंद-यवन राजा मिनांडर (जिन्हें बौद्ध साहित्यों में मिलिंद भी कहा गया है) के शासनकाल के हैं, जो इस क्षेत्र में उनके राजनीतिक एवं व्यापारिक प्रभाव को दर्शाते हैं।

89. (A) कालीबंगा → गणेश्वर → बैराठ → आहड़
राजस्थान के मानचित्र पर उत्तर से दक्षिण की ओर पुरातात्विक स्थलों की भौगोलिक स्थिति का सही क्रम इस प्रकार है: सबसे उत्तर में हनुमानगढ़ जिले में स्थित कालीबंगा है। इसके दक्षिण में सीकर/नीम का थाना में गणेश्वर स्थित है। इसके और दक्षिण में कोटपूतली-जयपुर क्षेत्र में बैराठ स्थित है। सबसे दक्षिण में मेवाड़ के उदयपुर जिले में स्थित आहड़ पुरातात्विक स्थल आता है, जो सही भौगोलिक क्रम प्रस्तुत करता है।

90. (A) लकड़ी के शहतीरों और सरकंडों के ऊपर लीपी गई मिट्टी
कालीबंगा में हड़प्पाकालीन आवासीय भवनों के निर्माण में दीवारों के लिए मुख्यतः धूप में सुखाई गई कच्ची ईंटों का प्रयोग किया जाता था। मकानों की छतों को समतल बनाने के लिए लकड़ी के शहतीरों तथा सरकंडों व बांस की चटाइयों को बिछाकर उनके ऊपर मिट्टी और गोबर का मोटा लेप लगाया जाता था। छत पर जाने के लिए कुछ मकानों में मिट्टी की सीढ़ियों के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं, जो स्थापत्य कला दर्शाते हैं।

91. (B) रांगे की मिश्रधातु का अभाव और शुद्ध स्थानीय अयस्कों से निष्कर्षण
गणेश्वर से मिले तांबे के हथियारों और उपकरणों का रासायनिक विश्लेषण करने पर उनमें 99 प्रतिशत तक असाधारण शुद्ध तांबा पाया गया है। तांबे की यह उच्च शुद्धता यह सिद्ध करती है कि गणेश्वर के कारीगरों ने तांबे में रांगा (टिन) मिलाकर कांस्य बनाने की मिश्रधातु प्रक्रिया का व्यापक प्रयोग नहीं किया था। वे अरावली की स्थानीय खानों से प्राप्त अत्यंत समृद्ध तांबा अयस्कों से सीधे शुद्ध तांबा निष्कर्षित करते थे।

92. (B) वल्लभनगर
बालाथल का प्रसिद्ध ताम्रपाषाणिक पुरातात्विक स्थल राजस्थान के उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील के पास स्थित है। यह स्थल बेड़च नदी की घाटी में स्थित है और बनास संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र रहा है। प्रो. वी. एन. मिश्रा के नेतृत्व में 1993 में यहाँ व्यापक उत्खनन हुआ, जिससे 11 कमरों वाला विशाल भवन, तांबे के उपकरण, बुना हुआ सूती कपड़ा और कुष्ठ रोग का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ था।

93. (A) लौह युग और प्रारंभिक वैदिक काल
राजस्थान के नोह और जोधपुरा जैसे स्थलों में पाई जाने वाली चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति कालानुक्रमिक रूप से भारत के उत्तर वैदिक काल तथा प्रारंभिक लौह युग (लगभग 1000 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व) से संबंधित है। इस काल की मुख्य विशेषता लोहे के अस्त्र-शस्त्रों और कृषि उपकरणों का व्यापक प्रयोग तथा धूसर रंग के बर्तनों पर काले रंग से चित्रकारी की विशिष्ट कलात्मक शैली मानी जाती है।

NODIA

94. (A) 4, 2, 3, 1
मानव तकनीकी विकास के इतिहास में तकनीकों का सही तार्किक और कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले केवल तराशे गए पत्थरों का प्रयोग हुआ। तत्पश्चात सूक्ष्मपाषाणों के साथ शुद्ध तांबे का प्रयोग आया। इसके बाद तांबे में रांगा मिलाकर कांस्य धातुकर्म एवं नगर नियोजन विकसित हुआ। सबसे अंत में लोहे के उपकरणों का व्यापक उपयोग हुआ, जिसने कृषि और युद्ध तकनीक में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

95. (D) बैराठ
प्राचीन भारतीय कला और प्रतीकशास्त्र के अंतर्गत अत्यंत पवित्र माने जाने वाले स्वास्तिक तथा बौद्ध त्रिरत्न (बुद्ध, धम्म, संघ) के प्रतीक बैराठ (विराटनगर) से उत्खनित मिट्टी के बर्तनों और कलाकृतियों पर प्रचुरता से चित्रित पाए गए हैं। बैराठ मौर्य सम्राट अशोक के काल में बौद्ध धर्म का एक महान केंद्र था, इसलिए यहाँ की कलाकृतियों पर इन धार्मिक तथा मंगल प्रतीकों का उकेरा जाना सहज रूप से देखा जाता है।

96. (C) हड़प्पा साम्राज्य की तीसरी राजधानी
प्रसिद्ध इतिहासकार और पुरातत्वविद डॉ. दशरथ शर्मा ने सिंधु घाटी सभ्यता के विशाल विस्तार और प्रशासनिक ढांचे का विश्लेषण करते हुए कालीबंगा को हड़प्पा साम्राज्य की तीसरी राजधानी की संज्ञा दी थी। कालीबंगा का सुव्यवस्थित नगर नियोजन, सुरक्षा प्राचीर, अग्निवेदियां, और रणनीतिक व्यापारिक स्थिति इस निष्कर्ष को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है, जो इसकी प्रशासनिक महत्ता को सिद्ध करता है।

97. (B) नगरीकरण और गंगा घाटी क्षेत्र के साथ व्यापार
राजस्थान के किसी पुरातात्विक स्थल से उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड की उपस्थिति यह स्पष्ट संकेत देती है कि वह स्थल ईसा पूर्व छठी से तीसरी शताब्दी के दौरान द्वितीय नगरीकरण और मध्य गंगा घाटी के महाजनपदों के साथ प्रत्यक्ष व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंधों में जुड़ा हुआ था। इन बर्तनों की उत्कृष्ट गुणवत्ता और चमक प्राचीन भारत में उच्च वर्ग तथा अंतर-क्षेत्रीय व्यापारिक समृद्धि की प्रतीक मानी जाती थी।

98. (D) आहड़ में पत्थर के उपकरणों का तांबे के उपकरणों द्वारा पूर्ण प्रतिस्थापन
भारत के अन्य सभी ताम्रपाषाणिक स्थलों में तांबे की कमी के कारण पत्थर के सूक्ष्म औजारों का प्रयोग जारी रहा, लेकिन आहड़ संस्कृति की सबसे बड़ी विशिष्टता यह थी कि यहाँ के निवासियों ने पत्थर के औजारों का तांबे के उपकरणों द्वारा

76. (B) धूलकोट की पहाड़ी
बैराठ (विराटनगर) में पुरातात्विक उत्खनन मुख्य रूप से तीन प्रमुख पहाड़ियों पर केंद्रित रहा है, जिन्हें बीजक की पहाड़ी, भीम की डूंगरी तथा महादेवजी की डूंगरी कहा जाता है। इन पहाड़ियों से मौर्यकालीन, बौद्ध तथा महाभारतकालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके विपरीत, धूलकोट बैराठ से संबंधित नहीं है, बल्कि धूलकोट उदयपुर में स्थित आहड़ पुरातात्विक स्थल के विशाल मिट्टी के टीले का स्थानीय नाम है।

77. (A) धूलकोट
राजस्थान के उदयपुर शहर के पास आयड़ नदी के तट पर स्थित आहड़ का प्राचीन ताम्रपाषाणिक स्थल एक विशाल मिट्टी और मलबे के टीले के रूप में दिखाई देता है। इस विशाल पुरातात्विक टीले को स्थानीय ग्रामीण भाषा में धूलकोट कहा जाता है, जिसका अर्थ धूल या मिट्टी का किला होता है। वर्ष 1953 में पंडित अक्षय कीर्ति व्यास ने इसी धूलकोट टीले पर प्रथम उत्खनन कार्य प्रारंभ किया था।

78. (C) बी. बी. लाल और बी. के. थापर
राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के किनारे स्थित कालीबंगा स्थल की खोज 1952 में अमलानंद घोष ने की थी। इसके उपरांत वर्ष 1961 से 1969 के मध्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के दो प्रमुख विद्वानों, बी. बी. लाल और बी. के. थापर के संयुक्त निर्देशन में यहाँ अत्यंत विस्तृत, वैज्ञानिक और व्यवस्थित उत्खनन कार्य संपन्न किया गया था, जिससे इस प्राचीन सभ्यता के विविध सामाजिक रहस्य उजागर हुए।

79. (D) P-3, Q-2, R-4, S-1
राजस्थान के प्रमुख स्थलों से अद्वितीय पुरातात्विक वस्तुएं मिली हैं। गणेश्वर से 99 प्रतिशत तक शुद्ध तांबे के औजार मिले हैं। नोह स्थल से गेरुवर्ण मृदभांड से कुषाण काल तक के पाँच निरंतर सांस्कृतिक चरण प्राप्त हुए हैं। कालीबंगा से प्राक्-हड़प्पा स्तर पर विश्व का सबसे प्राचीनतम जुता हुआ खेत मिला है। बालाथल के ताम्रपाषाणिक स्तर से सूती बुने हुए कपड़े का एक दुर्लभ टुकड़ा उत्खनित किया गया है।

80. (C) कांतली नदी सदा नीरा थी और समृद्ध जलीय जीवन का समर्थन करती थी।
गणेश्वर में उत्खनन के दौरान तांबे के बने कई मछली पकड़ने के कांटे पाए गए हैं। तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व (2800 ईसा पूर्व) के दौरान इतनी बड़ी संख्या में मछली पकड़ने के उपकरणों की मौजूदगी यह व्यावहारिक प्रमाण देती है कि उस काल में कांतली नदी एक सूखी मौसमी नदी नहीं थी। वह वर्ष भर बहने वाली सदा नीरा नदी थी, जिसमें पर्याप्त जल और समृद्ध जलीय जीव निवास करते थे।

81. (B) कालीबंगा
कालीबंगा से उत्खनन के दौरान एक बच्चे की खोपड़ी प्राप्त हुई है, जिसमें छह छिद्र किए गए थे। शल्य चिकित्सा और पैथोलॉजिकल अध्ययनों के अनुसार यह खोपड़ी ट्रेपेनेशन नामक प्राचीन चिकित्सा प्रक्रिया का प्रमाण है, जिसका उपयोग संभवतः जलशीर्ष (मस्तिष्क में पानी भरना) या तीव्र सिरदर्द के इलाज के लिए किया गया था। यह भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन शल्य चिकित्सा का सबसे पहला पुरातात्विक प्रमाण माना जाता है।

82. (D) चपटी कुल्हाड़ियां, अंगूठियां, चूड़ियां और तार
आहड़ पुरातात्विक स्थल से तांबे की वस्तुओं का एक विस्तृत समुच्चय प्राप्त हुआ है। यहाँ के निवासियों द्वारा निर्मित मुख्य तांबे के उपकरणों में चपटी कुल्हाड़ियां, छैणियां, गंडासे, तांबे की चूड़ियां, अंगूठियां, चादरें तथा तांबे के महीन तार शामिल हैं। इसके साथ ही आहड़ में तांबा गलाने वाली मिट्टी की भट्टियां और तांबे के अयस्क का कचरा भी मिला है, जो स्थानीय धातुकर्म उद्योग की उच्च दक्षता को प्रदर्शित करता है।

83. (A) आखेटन-खाद्य संग्रहण से उन्नत धातुकर्म में संक्रमण
गणेश्वर स्थल पर परिष्कृत एवं शुद्ध तांबे के शस्त्रों के साथ-साथ चाल्सेडोनी और क्वार्ट्ज़ से बने सूक्ष्मपाषाण पत्थरों के औजारों का एक साथ पाया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सह-अस्तित्व यह दर्शाता है कि गणेश्वर का समाज पुरापाषाणकालीन आखेटन और खाद्य-संग्रहण की जीवनशैली से निकलकर धीरे-धीरे उन्नत धातुकर्म तथा स्थायी ताम्रपाषाणिक ग्रामीण जीवन की ओर सफलतापूर्वक संक्रमित हो रहा था। यह विकास का प्रतीक है।

84. (C) केवल I, II और III
राजस्थान के गौण पुरातात्विक स्थलों में नोह अपने चित्रित धूसर मृदभांड अवशेषों और जाख बाबा यक्ष प्रतिमा के लिए विख्यात है। जोधपुरा साबी नदी तट पर प्राचीन लौह धातुकर्म और भट्ठियों के साक्ष्य देता है। गिलूंड राजसमंद में आहड़ बनास संस्कृति के एक क्षेत्रीय केंद्र को दर्शाता है। हालाँकि, झुंझुनू में स्थित सुनारी स्थल प्राचीन लोहे की भट्ठियों के लिए प्रसिद्ध है, न कि प्रारंभिक हड़प्पाकालीन मुहरों के लिए।

85. (A) चूने से लीपे गए मिट्टी की ईंटों के वृत्ताकार भंडारण गड्ढे
राजसमंद में स्थित गिलूंड के ताम्रपाषाणिक स्थल पर व्यापक खाद्यान्न भंडारण प्रथाओं के पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं। उत्खनन में मिट्टी की कच्ची ईंटों से निर्मित बड़े वृत्ताकार भंडारण गड्ढे प्राप्त हुए हैं, जिनकी अंदरूनी दीवारों पर चूने और मिट्टी का मजबूत लेप किया गया था ताकि नमी और कीड़ों से अनाज को बचाया जा सके। यह व्यवस्था गिलूंड निवासियों की उन्नत कृषि और सरप्लस अनाज भंडारण क्षमता को दर्शाती है।

86. (D) मंदिर संरचनाएं या विशाल धार्मिक भवन
सिंधु घाटी सभ्यता की सामान्य विशेषताओं की भांति, कालीबंगा स्थल पर भी किसी भी प्रकार के मंदिर, देवालय या विशाल धार्मिक भव्य भवनों के अवशेष पूरी तरह अनुपस्थित हैं। यद्यपि कालीबंगा में नगर सुरक्षा हेतु विशाल परिधि दीवारें, पक्की व कच्ची ईंटों के मकान, और व्यवस्थित जुते हुए खेत मिले हैं, परंतु संगठित मंदिर पूजा का अभाव इसे अन्य प्राचीन कांस्य युगीन हड़प्पा स्थलों के सर्वथा अनुरूप बनाता है।

87. (B) संरचित नगर नियोजन, ग्रिड सड़कों और नालियों का अभाव था
पुरातत्वविद कालीबंगा को एक शहरी हड़प्पा केंद्र तथा आहड़ को एक ग्रामीण ताम्रपाषाणिक संस्कृति मानते हैं। इसका मुख्य

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 09
राजस्थान के राजवंश और प्रशासनिक राजस्व प्रणालियाँ

1. निम्नलिखित में से किसे पारंपरिक रूप से मेवाड़ में गुहिलौत सत्ता का वास्तविक संस्थापक माना जाता है, जिसने 8वीं शताब्दी में चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में पहला प्रमुख गढ़ स्थापित किया था?
(A) राणा हम्मीर
(B) बप्पा रावल
(C) राणा कुंभा
(D) रावल रतन सिंह

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन आमेर के कछवाहा राजवंश की दावाकृत उत्पत्ति का सही वर्णन करता है?
(A) वे भगवान राम के पुत्र लव के वंशज होने का दावा करते हैं।
(B) वे अपनी उत्पत्ति भगवान कृष्ण के यादव कुल से मानते हैं।
(C) वे आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पत्ति का दावा करते हैं।
(D) वे भगवान राम के पुत्र कुश के वंशज होने का दावा करते हैं।

3. मध्यकालीन राजपूत राजस्व व्यवस्था में 'रेख' शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता था?
(A) सैन्य दायित्वों को निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला जागीर का अनुमानित भू-राजस्व
(B) सक्रिय युद्ध के समय किसानों पर लगाया जाने वाला आपातकालीन सैन्य कर
(C) राजधानी में प्रवेश करने वाली व्यापारिक वस्तुओं पर एकत्र किया जाने वाला पारगमन शुल्क
(D) राजकीय विवाहों और समारोहों के आयोजन के लिए एकत्र किया जाने वाला विशेष कर

4. सवाई जयसिंह द्वितीय के वैज्ञानिक योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने पूरे भारत में पाँच खगोलीय वेधशालाओं (जंतर-मंतर) का निर्माण कराया।
II. सबसे बड़ी वेधशाला का निर्माण उज्जैन में किया गया था।
III. उन्होंने 'ज़िज-ए-मोहम्मदशाही' के नाम से प्रसिद्ध खगोलीय सारणियों का एक संग्रह संकलित किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

5. निम्नलिखित में से कौन-सा राजपूत राज्य राठौड़ राजवंश की किसी शाखा द्वारा स्थापित नहीं किया गया था?
(A) बूंदी
(B) बीकानेर
(C) किशनगढ़
(D) जोधपुर

6. खानवा के युद्ध के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : खानवा का युद्ध 1527 में बाबर और राणा सांगा के बीच लड़ा गया था।
कथन II : हसन खान मेवाती और महमूद लोदी ने राणा सांगा के संघ के हिस्से के रूप में युद्ध लड़ा था।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

7. निम्नलिखित ऐतिहासिक स्मारकों और उनके संबद्ध शासक राजवंशों में से असंगत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) कुंभलगढ़ दुर्ग - गुहिलौत/सिसोदिया राजवंश
(B) जूनागढ़ दुर्ग - चौहान राजवंश
(C) मेहरानगढ़ दुर्ग - राठौड़ राजवंश
(D) नाहरगढ़ दुर्ग - कछवाहा राजवंश

8. राजपूत राज्यों के केंद्रीय प्रशासन में 'प्रधान' की प्राथमिक भूमिका क्या थी?
(A) राजकीय घुड़सवार सेना की कमान संभालना और प्रमुख युद्धों के दौरान रणनीतिक बलों का नेतृत्व करना
(B) मुख्य धार्मिक सलाहकार और राजकीय समारोहों के मुख्य पुजारी के रूप में कार्य करना
(C) शासक के अधीन मुख्यमंत्री और नागरिक प्रशासन के प्रमुख के रूप में कार्य करना
(D) राज्य की गुप्तचर सेवा का प्रबंधन करना और गुप्तचर तंत्र का नेतृत्व करना

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : अधिकांश राजपूत शासकों ने 1817-18 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों को सहर्ष स्वीकार कर लिया।
कारण (R) : मराठा और पिंडारी सेनाओं की निरंतर वसूली तथा विनाशकारी हमलों ने राजपूत राज्यों की राजनीतिक और

Downloaded from www.pdf.tube

69. मेवाड़ (गुहिलौत/सिसोदिया) राजवंश की निम्नलिखित ऐतिहासिक राजधानियों को उनके अपनाए जाने के कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. नागदा
II. चित्तौड़गढ़
III. उदयपुर
IV. चावंड

निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?

(A) I, II, III, IV
(B) II, I, IV, III
(C) I, II, IV, III
(D) II, III, I, IV

70. मारवाड़ में 'हुकुमनामा' के नाम से जाने जाने वाले प्रशासनिक कर की सटीक प्रकृति क्या थी?

(A) सभी औपचारिक न्यायिक अदालती कार्यवाहियों पर लगाया जाने वाला एक अनिवार्य प्रशासनिक कर
(B) जागीरदार द्वारा पेशकश या नजराना के रूप में दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क
(C) शाही प्रशासनिक आदेशों की अवहेलना करने पर सामंतों पर लगाया जाने वाला वित्तीय जुर्माना या दंड
(D) शहरी व्यापारिक श्रेणियों द्वारा अर्जित लाभ का एक निश्चित प्रतिशत हिस्सा

71. निम्नलिखित शासकों और उनके प्राथमिक विरोधियों में से असंगत युग्म की पहचान कीजिए:

(A) राणा सांगा - बाबर
(B) कान्हड़देव - अलाउद्दीन खिलजी
(C) महाराणा प्रताप - अकबर
(D) सवाई जयसिंह द्वितीय - शेरशाह सूरी

72. 1615 में सम्राट जहांगीर के साथ शांति संधि पर हस्ताक्षर करके निरंतर मुगल-मेवाड़ संघर्ष को समाप्त करने का श्रेय किस राजपूत शासक को दिया जाता है?

(A) महाराणा प्रताप
(B) महाराणा अमर सिंह प्रथम
(C) महाराणा करण सिंह
(D) महाराणा जगत सिंह प्रथम

73. निम्नलिखित में से कौन-सा राजपूत शासन व्यवस्था में प्रचलित 'भाईबंट' प्रणाली का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(A) एक वित्तीय प्रणाली जहाँ केंद्रीय राज्य कोष के धन को समय-समय पर किसानों के बीच वितरित किया जाता था
(B) एक ऐसी व्यवस्था जहाँ राज्य शासक कुल की संयुक्त संपत्ति होता था, जिसमें सगे-संबंधी ठिकाने धारण करते थे
(C) दो पड़ोसी राजपूत राज्यों के बीच अनुबंधित एक रक्षात्मक सैन्य गठबंधन व्यवस्था
(D) जब सत्तारूढ़ शासक की प्रत्यक्ष संतान नहीं होती थी, तो पुरुष उत्तराधिकारी को गोद लेने की प्रथागत कानूनी परंपरा

74. एक विशिष्ट मध्यकालीन राजपूत राज्य में निम्नलिखित प्रशासनिक पदों और उनकी भूमिकाओं पर विचार कीजिए:

I. मुसाहिब: मुख्य सलाहकार या प्रधानमंत्री
II. खानसामा: शाही परिवार और कारखानों का प्रमुख
III. मीर बख्शी: ग्राम पंचायत का प्रमुख
IV. शिकदार: दुर्ग या स्थानीय क्षेत्र का सैन्य कमांडर

किस संयोजन में असंगत युग्म है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और IV
(D) केवल III और IV

75. राजस्थान के 17वीं शताब्दी के किस प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व ने "मारवाड़ रा परगना री विगत" की रचना की, जिसे अक्सर राजपूताना का गजेटियर कहा जाता है?

(A) बांकीदास
(B) सूर्यमल्ल मिश्रण
(C) मुहणोत नैणसी
(D) कवि श्यामलदास

76. राजपूत कूटनीति के संदर्भ में, 'वकील' का प्राथमिक कार्य क्या था?

(A) केंद्रीय राज्य की गुप्तचर और प्रति-गुप्तचर संस्था का संचालन और नेतृत्व करना
(B) स्थापित सीमा चौकियों पर सीमा शुल्क और पारगमन कर एकत्र करना
(C) शाही दरबारों में राज्य के स्थायी कूटनीतिक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना
(D) शासक राजवंश के आधिकारिक दरबारी इतिहासकार और वंशावली लेखक के रूप में कार्य करना

NODIA

77. अजमेर के चौहान राजवंश के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(A) अजयराज ने 12वीं शताब्दी की शुरुआत में अजमेर शहर की स्थापना की।
(B) अर्णोराज ने आना सागर झील का निर्माण कराया।
(C) विग्रहराज चतुर्थ ने तोमरों से दिल्ली को छीना था।
(D) पृथ्वीराज तृतीय ने 1192 में तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गोरी को सफलतापूर्वक पराजित किया था।

78. निम्नलिखित में से किस शासक ने मालवा सल्तनत पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़गढ़ में प्रसिद्ध विजय स्तंभ का निर्माण शुरु करवाया था?

(A) राणा सांगा
(B) महाराणा प्रताप
(C) राणा कुंभा
(D) रावल रतन सिंह

79. 16वीं और 17वीं शताब्दियों के दौरान मुगल-राजपूत संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वैवाहिक संबंधों की नीति को औरंगजेब द्वारा काफी हद तक बंद कर दिया गया था।

II. खानवा का युद्ध
III. हल्दीघाटी का युद्ध
IV. दिवेर का युद्ध
निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?
(A) I, II, III, IV
(B) I, III, II, IV
(C) II, I, IV, III
(D) II, IV, I, III

20. राजपूत शासकों के अधीन ग्राम-स्तरीय प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : ग्राम प्रशासन काफी हद तक स्वायत्त था और इसका नेतृत्व प्रायः पंचकुल या ग्राम पंचायत के नाम से जानी जाने वाली एक स्थानीय संस्था करती थी।
कथन II : 'पटवारी' मुख्य रूप से स्थानीय राजस्व रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए उत्तरदायी था।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

21. किस राजपूत राजवंश ने जैसलमेर पर अपना शासन स्थापित किया और सदियों तक राजस्थान की पश्चिमी सीमाओं की सफलतापूर्वक रक्षा की?
(A) भाटी राजवंश
(B) चौहान राजवंश
(C) कछवाहा राजवंश
(D) सिसोदिया राजवंश

22. निम्नलिखित राजपूत शासकों और उनके द्वारा हस्ताक्षरित ऐतिहासिक संधियों में से सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) महाराणा प्रताप - पुरंदर की संधि (1665)
(B) राव मालदेव - बेसिन की संधि (1802)
(C) राणा सांगा - इलाहाबाद की संधि (1765)
(D) सवाई जयसिंह द्वितीय - देबारी समझौता (1708)

23. राजपूत जागीरदारी व्यवस्था को मुगल मनसबदारी व्यवस्था से अलग करने वाली प्राथमिक विशेषता क्या थी?
(A) जागीरदार केवल वेतनभोगी सैन्य कर्मी थे जिनके पास कोई भूमि अधिकार नहीं था।
(B) राजपूत जागीरदारी व्यवस्था कुल की नातेदारी और रक्त संबंधों (भाईबंट) पर आधारित थी।
(C) राजपूत राज्यों में जागीरदारों के पास अलग मुद्रा ढालने का निरपेक्ष राजकीय अधिकार था।
(D) जागीर की प्रकृति सख्ती से गैर-वंशानुगत थी और इसे नियमित रूप से हर दो वर्ष में स्थानांतरित किया जाता था।

24. राजपूत राज्यों और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच हस्ताक्षरित 1817-18 की संधियों में सामान्यतः शामिल निम्नलिखित शर्तों पर विचार कीजिए:
I. राजपूत राज्यों ने अपनी विदेश नीति अंग्रेजों को सौंप दी।
II. अंग्रेजों ने राज्यों की बाहरी आक्रमणों से रक्षा करने का वचन दिया।
III. राजपूत शासकों को अपनी आंतरिक प्रशासनिक स्वायत्तता त्यागने के लिए मजबूर किया गया।
IV. राज्य कंपनी को एक निश्चित वार्षिक खिराज (नज़राना) देने पर सहमत हुए।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) केवल I, III और IV

25. चौहान राजवंश की शाखाओं और उनके ऐतिहासिक सत्ता केंद्रों में से असंगत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) हाड़ा - कोटा/बूंदी
(B) देवड़ा - सिरोही
(C) सोनगरा - जालौर
(D) खींची - जैसलमेर

26. मध्यकालीन राजस्थान के न्यायिक प्रशासन में 'फौजदार' का क्या कार्य था?
(A) एक कार्यकारी अधिकारी जो स्थानीय आपराधिक मामलों को संभालता था और कानून व्यवस्था बनाए रखता था
(B) राज्य की केंद्रीय अपीलीय अदालत की अध्यक्षता करने वाला सर्वोच्च न्यायिक अधिकारी
(C) एक अधिकारी जो मुख्य रूप से जागीरदारों के बीच दीवानी भूमि और संपत्ति के विवादों का निपटारा करता था
(D) एक धार्मिक अधिकारी जो हिंदू शास्त्रों के आधार पर दंड निर्धारित करता था

27. शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों पर नियोजित जयपुर शहर की स्थापना सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा किस वर्ष की गई थी?
(A) 1699
(B) 1727
(C) 1734
(D) 1743

28. राजपूत राज्यों के बीच कूटनीतिक संबंधों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) राजनीतिक विवादों को सुलझाने के लिए प्रायः वैवाहिक संबंधों का उपयोग किया जाता था।
(B) राजपूत राज्यों ने आंतरिक कूटनीति को विनियमित करने के लिए एक स्थायी रूप से एकीकृत केंद्रीय संघीय सरकार बनाए रखी।
(C) राज्य अपने पड़ोसियों के दरबारों में 'वकील' नामक स्थायी कूटनीतिक प्रतिनिधि रखते थे।
(D) दो राजपूत शासकों के बीच आदान-प्रदान किए जाने वाले औपचारिक कूटनीतिक पत्रों को 'खरीता' कहा जाता था।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) राजपूत सामंतवाद ने केवल संविदात्मक कार्यकाल के बजाय कुल की नातेदारी और रक्त भाईचारे पर जोर दिया।
(C) राजपूत सामंती सरदारों के पास सर्वोच्च संप्रभु के प्रति कोई औपचारिक सैन्य दायित्व नहीं था।
(D) यूरोपीय सामंतवाद विशेष रूप से पुरोहित वर्ग तक सीमित था, जबकि राजपूत सामंतवाद सार्वभौमिक रूप से खुला था।

89. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (महत्वपूर्ण संधियाँ/समझौते)
P. देबारी समझौता (1708)
Q. हुरड़ा सम्मेलन (1734)
R. 1615 की संधि
S. 1817-18 की संधियाँ
सूची II : (मुख्य विशेषताएं/संदर्भ)
1. मुगल-मेवाड़ संघर्ष को समाप्त करने वाला शांति समझौता
2. राजपूत शासकों का मराठा विरोधी गठबंधन बनाने का प्रयास
3. मुगल सम्राट बहादुर शाह प्रथम के खिलाफ राजपूत गठबंधन
4. राजपूत राज्यों द्वारा ब्रिटिश सर्वोच्चता का स्वीकार
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

90. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजपूत ग्रामीण समाज में 'भूमिया' की भूमिका की सही पहचान करता है?
(A) बंधुआ कृषि मजदूर जो रियासती खेतों में काम करते थे लेकिन उनके पास कोई औपचारिक भूमि अधिकार नहीं था
(B) धनी शहरी व्यापारी जिन्होंने स्थानीय अनाज बाजारों और क्षेत्रीय व्यापार पर एकाधिकार कर लिया था
(C) स्थानीय खतरों से गाँव की सुरक्षा के बदले कर-मुक्त भूमि धारण करने वाले भूस्वामी
(D) भव्य दीवान के केंद्रीय कार्यालय से सीधे जुड़े विशिष्ट निजी अंगरक्षक

91. जैसलमेर का ऐतिहासिक 'अर्द्ध-साका' किस भाटी शासक के शासनकाल के दौरान हुआ था जब अमीर अली द्वारा दुर्ग पर आक्रमण किया गया था?
(A) रावल जैसल
(B) रावल लूणकरण
(C) महारावल जवाहर सिंह
(D) रावल मूलराज प्रथम

92. राजपूत सैन्य रणनीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : राजपूत सेना पारंपरिक रूप से खुले मैदान के युद्ध के बजाय दुर्गों के भीतर लंबी घेराबंदी पसंद करती थी।
कथन II : 'जौहर' और 'साका' की रणनीति तब अपनाई जाती थी जब दुर्ग की घेराबंदी में हार बिल्कुल अपरिहार्य हो जाती थी।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

NODIA

93. एक विशिष्ट राजपूत राज्य में निम्नलिखित में से कौन केंद्रीय प्रशासनिक सचिवालय (दीवान खाना) की एक शाखा नहीं थी?
(A) बख्शीखाना
(B) मीर मुंशी
(C) कारखाना
(D) दार-उल-हरब

94. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प राजपूत राज्यों द्वारा अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों (1817-18) पर हस्ताक्षर करने का सही कालानुक्रम प्रदान करता है?
(A) करौली - कोटा - जोधपुर - जयपुर
(B) कोटा - करौली - जयपुर - जोधपुर
(C) जयपुर - जोधपुर - करौली - कोटा
(D) जोधपुर - जयपुर - कोटा - करौली

95. 1818 तक राजपूताना पर स्थापित ब्रिटिश सर्वोपरिता का प्राथमिक परिणाम क्या था?
(A) भाग लेने वाले सभी राजपूत राज्यों में वंशानुगत राजशाही का तत्काल उन्मूलन
(B) राज्य के आंतरिक मामलों में क्रमिक हस्तक्षेप के साथ ब्रिटिश संरक्षण
(C) ब्रिटिश भारत के प्रत्यक्ष प्रशासनिक प्रांतों में राजपूत राज्यों का पूर्ण विलय
(D) पारंपरिक जागीरदारी व्यवस्था को तत्काल गैर-कानूनी घोषित करना और उसके स्थान पर जमींदारी व्यवस्था लाना

96. राजपूत राज्यों के राजनीतिक पतन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) आंतरिक उत्तराधिकार युद्धों, जैसे कि ईश्वरी सिंह और माधो सिंह के बीच जयपुर में हुआ युद्ध, ने राज्यों को आर्थिक रूप से तबाह कर दिया।
(B) मराठों ने शुरु में आंतरिक उत्तराधिकार विवादों के दौरान किराए के सैनिकों के रूप में राजपूताना में प्रवेश किया।
(C) 'चौथ' और 'सरदेशमुखी' के भारी बोझ के कारण गंभीर आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ।
(D) राजपूत राज्यों ने एक अत्यधिक अनुशासित, आधुनिक यूरोपीय शैली की पैदल सेना बनाए रखी जिसने मराठा विजयों को रोका।

39. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I : (शासक)
P. हम्मीर देव
Q. राणा कुंभा
R. राव मालदेव
S. सवाई जयसिंह द्वितीय

सूची II : (राजवंश)
1. सिसोदिया राजवंश
2. चौहान राजवंश
3. कछवाहा राजवंश
4. राठौड़ राजवंश

(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

40. 1817-18 में राजपूत राज्यों के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों पर बातचीत करने के लिए लॉर्ड हेस्टिंग्स द्वारा मुख्य रूप से किस ब्रिटिश अधिकारी को नियुक्त किया गया था?
(A) कर्नल जेम्स टॉड
(B) सर चार्ल्स मेटकाफ
(C) लॉर्ड डलहौजी
(D) सर थॉमस रो

41. अकबर के शासनकाल के दौरान स्थापित मुगल-राजपूत गठबंधन का निम्नलिखित में से कौन-सा परिणाम नहीं था?
(A) प्रमुख राजपूत शासकों को औपचारिक रूप से शाही मनसबदारी व्यवस्था में शामिल किया गया था।
(B) राजपूताना क्षेत्र ने सापेक्षिक आंतरिक शांति और स्थिरता के एक लंबे युग का अनुभव किया।
(C) राजपूत राज्यों ने अपने पैतृक क्षेत्रों (वतन जागीर) में अपनी आंतरिक स्वायत्तता बनाए रखी।
(D) प्रत्यक्ष मुगल प्रशासन के पक्ष में जागीरदारी व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन।

42. राजपूत सैन्य संगठन में, 'बख्शी' शब्द उस अधिकारी को दर्शाता था जो मुख्य रूप से उत्तरदायी था:
(A) सैन्य अभियानों के दौरान युद्ध के मैदान में रणनीतिक हरावल (अग्रिम पंक्ति) का नेतृत्व करने के लिए
(B) सैन्य सूची बनाए रखने, सैनिकों की भर्ती करने और राज्य का वेतन वितरित करने के लिए
(C) शाही गज सेना (हाथी सेना), शस्त्रागार और तोपखाना प्रभागों का प्रबंधन करने के लिए
(D) शत्रु क्षेत्रों में गुप्त सूचनाएं एकत्र करने और जासूसी करने के लिए

43. रणथंभौर के चौहान राजवंश के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सटीक है?
(A) इसकी स्थापना तराइन के द्वितीय युद्ध के तुरंत बाद सीधे पृथ्वीराज तृतीय द्वारा की गई थी।
(B) इसकी स्थापना अजमेर से विस्थापित होने के बाद गोविंदराज ने की थी।
(C) शासक राजवंश ने 1301 में अलाउद्दीन खिलजी के प्रमुख आक्रमण को सफलतापूर्वक विफल कर दिया।
(D) यह मूल रूप से मेवाड़ के सिसोदियों के अधीन एक स्वायत्त करद शाखा के रूप में विकसित हुआ।

44. निम्नलिखित में से कौन मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के शासकों का सही कालानुक्रम दर्शाता है?
(A) राव जोधा - राव चूंडा - राव मालदेव - राव चंद्रसेन
(B) राव चूंडा - राव जोधा - राव मालदेव - राव चंद्रसेन
(C) राव मालदेव - राव जोधा - राव चूंडा - राव चंद्रसेन
(D) राव चूंडा - राव मालदेव - राव जोधा - राव चंद्रसेन

45. 1734 में आयोजित हुरड़ा सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य क्या था, जिसमें प्रमुख राजपूत शासकों ने भाग लिया था?
(A) राजपूताना में बढ़ते मराठा आक्रमणों के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाना
(B) मुगल सम्राट मोहम्मद शाह के खिलाफ सामूहिक विद्रोह की घोषणा करना
(C) सभी भाग लेने वाले राजपूत राज्यों में कृषि भू-राजस्व दरों को मानकीकृत करना
(D) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ एक सामूहिक शांति संधि पर बातचीत करना

46. राजस्थान के राजस्व इतिहास में 'लाग-बाग' शब्द का तात्पर्य है:
(A) स्थानीय जागीरदार और किसान के बीच हस्ताक्षरित औपचारिक कानूनी राजस्व संधि
(B) नियमित भू-राजस्व से इतर जागीरदारों द्वारा लगाए गए विविध उपकर और अतिरिक्त कर
(C) सीधे जागीरदारों द्वारा बनाए रखी जाने वाली विशेष घुड़सवार सेना और विशिष्ट सैन्य इकाइयाँ
(D) राज्य द्वारा विशेष रूप से प्रमुख सूखे के वर्षों के दौरान एकत्र किया जाने वाला आपातकालीन राजस्व हिस्सा

47. सवाई जयसिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान निम्नलिखित में से किस घटना ने प्राचीन हिंदू शाही परंपराओं को पुनर्जीवित करने के उनके प्रयास को रेखांकित किया?
(A) हवा महल का निर्माण
(B) अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान
(C) पुर्तगालियों के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर करना
(D) राज्य धर्म के रूप में बौद्ध धर्म को अपनाना

48. हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप के खिलाफ अकबर द्वारा भेजी गई मुगल सेना का मुख्य सेनापति कौन था?
(A) आसफ खान (B) राजा भगवंत दास
(C) राजा मान सिंह (D) महाबत खान

49. महाराणा प्रताप के सैन्य अभियानों से जुड़े निम्नलिखित प्रमुख व्यक्तियों पर विचार कीजिए:
I. हाकिम खान सूर

Downloaded from www.pdf.tube

29. राजपूत राज्यों की राजनीतिक संरचना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य को शासक कुल की संयुक्त संपत्ति माना जाता था।
II. शासक को कुल के सामंतों द्वारा केवल समकक्षों में प्रथम के रूप में देखा जाता था।
III. सामंतों को राज्य के लिए कोई भी सैन्य सेवा (चाकरी) करने से पूरी तरह छूट दी गई थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

30. निम्नलिखित में से किस कारक को 18वीं शताब्दी में राजपूत सत्ता के पतन का सबसे महत्वपूर्ण तात्कालिक कारण माना जाता है?
(A) पुर्तगाली सेना द्वारा आधुनिक यूरोपीय आग्नेयास्त्रों और तोपखाने की शुरुआत
(B) एक गंभीर क्षेत्रीय कृषि अकाल जो एक दशक से अधिक समय तक लगातार बना रहा
(C) मराठों द्वारा निरंतर हस्तक्षेप और वित्तीय वसूली (उगाही)
(D) ब्रिटिश मिशनरियों द्वारा सक्रिय रूप से शुरू किया गया बड़े पैमाने पर धर्म परिवर्तन

31. ऐतिहासिक ग्रंथ और उसके प्राथमिक विषय सामग्री के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(A) हरिकेलि नाटक - राणा सांगा की सैन्य रणनीतियों का विवरण देने वाला ग्रंथ
(B) राजपंचक - मारवाड़ का आधिकारिक प्रशासनिक और राजस्व रिकॉर्ड
(C) ज़िज-ए-मोहम्मदशाही - खगोलीय अवलोकनों के लिए खगोलीय सारणियाँ
(D) दायभाग - राजपूतों और अंग्रेजों के बीच हस्ताक्षरित कूटनीतिक संधियाँ

32. राजपूत राज्यों के राजस्व प्रशासन में 'सायर' शब्द का क्या अर्थ था?
(A) सीमा शुल्क, चुंगी और बाजार करों से प्राप्त गैर-कृषि राजस्व
(B) कृषि फसलों का वह अनिवार्य हिस्सा जो सीधे गाँव के पुजारी को दिया जाता था
(C) केवल युद्ध के घोड़ों के वाणिज्यिक आयात पर लगाया जाने वाला एक विशेष आपातकालीन कर
(D) नियमित स्थायी सेना को सीधे वितरित किया जाने वाला निश्चित मासिक नकद वेतन

33. गिरि-सुमेल का युद्ध (1544) किसके बीच लड़ा गया एक महत्वपूर्ण संघर्ष था?
(A) राणा सांगा और बाबर
(B) राव मालदेव और शेरशाह सूरी
(C) महाराणा प्रताप और अकबर
(D) सवाई जयसिंह द्वितीय और मराठा

34. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के युद्ध में औपचारिक रूप से पराजित होने के बावजूद दशकों तक मुगल साम्राज्य के खिलाफ अपना प्रतिरोध सफलतापूर्वक जारी रखा।
कारण (R) : महाराणा प्रताप ने प्रभावी छापामार युद्ध छेड़ने और मुगलों की आपूर्ति श्रृंखलाओं को लगातार बाधित करने के लिए अरावली के बीहड़ इलाकों का उपयोग किया।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

35. निम्नलिखित में से किस राजपूत शासक को महाराणा प्रताप से पूर्व सम्राट अकबर के खिलाफ उनके निरंतर संघर्ष के कारण इतिहास में "मारवाड़ का भूला-बिसरा नायक" कहा जाता है?
(A) राव जोधा
(B) राव मालदेव
(C) राव चंद्रसेन
(D) महाराजा अजीत सिंह

36. मध्यकालीन राजस्थान में 'परगना' स्तरीय प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : परगना राज्य के केंद्र और गाँवों के बीच की मूलभूत प्रशासनिक इकाई था।
कथन II : 'आमिल' या 'अमलगुज़ार' परगना स्तर पर भू-राजस्व का निर्धारण और संग्रहण करने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी अधिकारी था।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

37. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रशासनिक शब्द 18वीं शताब्दी के राजपूताना के दौरान एक निश्चित राजस्व राशि के लिए संविदात्मक पट्टे पर भूमि देने की प्रथा का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) लाटा
(B) मुकाता (इजारा)
(C) बटाई
(D) घूघरी

38. जैसलमेर का भाटी राजवंश अपनी उत्पत्ति किस पौराणिक वंश से मानता है?
(A) भगवान राम का सूर्यवंश
(B) भगवान कृष्ण का चंद्रवंश
(C) आबू पर्वत का अग्निवंश
(D) मध्य भारत का नागवंश

NODIA

कथन (A) : राणा सांगा के नेतृत्व वाला राजपूत संघ 1527 में खानवा के युद्ध में पराजित हो गया था।
कारण (R) : बाबर के पास तोपखाने और बंदूकें सहित श्रेष्ठ सैन्य तकनीक थी, और उसने तुलुगमा पद्धति का इस्तेमाल किया।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

60. मुगल साम्राज्य के खिलाफ दुर्गादास राठौड़ का प्रतिरोध आंदोलन मुख्य रूप से किस उद्देश्य से था?
(A) मारवाड़ की क्षेत्रीय सीमाओं का गुजरात के पड़ोसी जिलों में विस्तार करना
(B) शिशु राजकुमार अजीत सिंह के लिए मारवाड़ का सिंहासन सुरक्षित करना
(C) मराठों के साथ एक स्थायी मुगल-विरोधी सैन्य गठबंधन स्थापित करना
(D) पारंपरिक राठौड़ सामंतों को पूरी तरह से स्वतंत्र संप्रभु में परिवर्तित करना

61. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प राजपूत शासक को उसकी सामान्यतः ज्ञात ऐतिहासिक उपाधि से सही रूप से सुमेलित करता है?
(A) राणा कुंभा - हिंदू पत
(B) राणा सांगा - अभिनव भारताचार्य
(C) महाराणा प्रताप - कीका
(D) सवाई जयसिंह द्वितीय - हिंदुआ सूरज

62. राजपूत राज्यों के सैन्य संगठन के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन निश्चित रूप से असत्य है?
(A) राजपूत राज्यों की सैन्य टुकड़ियाँ मुख्य रूप से विशिष्ट घुड़सवार इकाइयों से बनी थीं।
(B) दुर्ग समग्र राजपूत सैन्य संरचना की रणनीतिक रक्षात्मक रीढ़ थे।
(C) वे विशाल स्थायी सेनाएँ रखते थे जिससे सामंती सैन्य सेवा की आवश्यकता पूरी तरह से समाप्त हो गई थी।
(D) पारंपरिक राजपूत युद्ध व्यवस्था के भीतर हरावल अत्यधिक सम्मानित अग्रिम पंक्ति का पद था।

63. मेवाड़ के लिए दिवेर के युद्ध (1582) का मुख्य परिणाम क्या था?
(A) इसने मुगल साम्राज्य द्वारा मेवाड़ की पूर्ण और अपरिवर्तनीय अधीनता को चिह्नित किया।
(B) यह महाराणा प्रताप के लिए एक प्रमुख विजय थी जिसने मेवाड़ की पुनर्विलय की शुरुआत की।
(C) इसके कारण मराठा सेनाओं के हाथों कुंभलगढ़ का रणनीतिक दुर्ग स्थायी रूप से खो गया।
(D) इसके परिणामस्वरूप महाराणा अमर सिंह और जहांगीर के बीच एक औपचारिक शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए।

64. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (भू-धारणा की शर्तें)
P. खालसा
Q. जागीर
R. भूम
S. सासन
सूची II : (विवरण)
1. धार्मिक हस्तियों या मंदिरों को दी गई भूमि
2. सीधे राज्य द्वारा धारित भूमि
3. सैन्य/प्रशासनिक सेवा के बदले दी गई भूमि
4. स्थानीय सुरक्षा और पहरेदारी के कर्तव्यों की शर्त पर धारित भूमि
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

65. धर्मत के युद्ध (1658) में दारा शिकोह की ओर से लड़ते हुए सिसोदिया राजवंश का प्रतिनिधित्व करने वाला सम्मानित सेनापति निम्नलिखित में से कौन था?
(A) महाराजा जसवंत सिंह
(B) राव रतन सिंह राठौड़
(C) मुकुंद सिंह हाड़ा
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं, क्योंकि मेवाड़ तटस्थ रहा था

66. राजपूत राज्य संरचना में 'हाकिम' का प्रशासनिक पद मुख्य रूप से किसके लिए उत्तरदायी था?
(A) विदेश नीति पर शासक को सलाह देना
(B) मुख्य धार्मिक समारोहों का नेतृत्व करना
(C) परगना के कार्यकारी प्रमुख के रूप में कार्य करना
(D) राज्य की स्थापत्य परियोजनाओं की योजना बनाना

67. निम्नलिखित में से किस संधि ने राजपूत राज्यों को मांग किए जाने पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सैन्य सहायता करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य किया?
(A) 1803 की संधियाँ
(B) अधीनस्थ पार्थक्य की संधियाँ (1817-18)
(C) पुरंदर की संधि (1665)
(D) अमृतसर की संधि (1809)

68. मुगल-राजपूत संघर्ष चरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने 1679 में औरंगजेब द्वारा जजिया लगाए जाने का विरोध किया था।
कथन II : राज सिंह ने सम्राट के खिलाफ औरंगजेब के पुत्र शहजादे अकबर के विद्रोह का समर्थन किया था।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Flipkart

आर्थिक स्थिरता को गंभीर रुप से छिन्न-भिन्न कर दिया था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

10. मध्यकालीन राजस्थान की भू-धारण प्रणाली के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन 'खालसा' भूमि को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) राज्य का राजस्व एकत्र करने के लिए प्रत्यक्ष रुप से शासन द्वारा प्रशासित भूमि
(B) विशेष रुप से स्थानीय धार्मिक संस्थानों, विद्वानों और मंदिरों को अनुदान में दी गई भूमि
(C) सैन्य सेवा के बदले वंशानुगत सामंती सरदारों को दी गई भूमि
(D) अकृषित या बंजर भूमि जो कर निर्धारण से पूरी तरह मुक्त थी

11. 17वीं शताब्दी के दौरान मारवाड़ की राजपूत सामंती संरचना और राज्य प्रशासन को समझने के लिए कौन-सा ऐतिहासिक ग्रंथ सबसे प्रमुख स्रोत है?
(A) पृथ्वीराज रासो
(B) नैणसी री ख्यात
(C) सूरज प्रकाश
(D) हम्मीर महाकाव्य

12. महाराणा प्रताप के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पूर्णतः असत्य है?
(A) उनका जन्म 1540 में कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था।
(B) उन्होंने 1576 में औपचारिक रुप से सम्राट अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और मनसब स्वीकार कर लिया।
(C) उन्होंने मान सिंह के नेतृत्व वाली मुगल सेना के खिलाफ हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा।
(D) उन्होंने चावंड में अपनी आपातकालीन राजधानी स्थापित की।

13. राजपूत राज्यों में 'तलवार बंधाई' नामक प्रशासनिक कर की सटीक प्रकृति क्या थी?
(A) अपनी जागीर संभालने पर नए जागीरदार द्वारा शासक को दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क
(B) राजकीय शस्त्रागार के रखरखाव के लिए स्थानीय किसानों से एकत्र किया जाने वाला कर
(C) आक्रामक हथियारों के साथ राज्य की सीमाओं को पार करने वाले व्यापारियों पर लगाया जाने वाला मार्ग कर
(D) राजकीय राज्याभिषेक के दौरान जनता द्वारा दिया जाने वाला अनिवार्य वित्तीय अंशदान

14. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I : (राजपूत राज्यों में प्रशासनिक अधिकारी)
P. दीवान
Q. बख्शी
R. कोतवाल
S. काज़ी

सूची II : (संबंधित कर्तव्य)
1. नगर पुलिस और आंतरिक सुरक्षा के लिए उत्तरदायी
2. न्यायिक व्यवस्था का मुख्य अधिकारी
3. राजस्व और वित्तीय प्रशासन का प्रमुख
4. सैन्य संगठन और वेतन का प्रभारी

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-4, R-3, S-2

15. 1459 में जोधपुर शहर की स्थापना करने और मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराने का श्रेय किस राजपूत शासक को दिया जाता है?
(A) राव चूंडा
(B) राव मालदेव
(C) राव चंद्रसेन
(D) राव जोधा

16. निम्नलिखित में से कौन-सी मध्यकालीन राजपूत राज्यों में भू-राजस्व निर्धारण की एक विशिष्ट पद्धति नहीं थी?
(A) कंकूत
(B) लाटा
(C) चौथ
(D) बटाई

17. मुगल साम्राज्य और किसी राजपूत राज्य के बीच पहला वैवाहिक संबंध किस राजपूत शासक द्वारा सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान स्थापित किया गया था?
(A) आमेर के राजा भगवंत दास
(B) आमेर के राजा भारमल
(C) बीकानेर के राव कल्याणमल
(D) मेवाड़ के महाराणा उदय सिंह

18. भू-राजस्व संग्रहण के संदर्भ में, 'लाटा' शब्द विशेष रुप से किसे संदर्भित करता था?
(A) पैदावार का अनुमान लगाने के लिए कटाई से पहले खड़ी फसलों का प्रत्यक्ष मूल्यांकन
(B) फसल की पैदावार की परवाह किए बिना जागीरदार द्वारा मांगी जाने वाली निश्चित नकद राशि
(C) विशेष रुप से राजकीय हाथियों को खिलाने के लिए गाँवों पर लगाया जाने वाला अतिरिक्त उपकर
(D) राज्य और किसान के बीच कटी हुई फसल का भौतिक विभाजन

19. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख ऐतिहासिक युद्धों को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. तराइन का युद्ध (प्रथम)

NODIA

II. राजपूतों को उच्च मनसब दिए गए और उन्होंने अकबर, जहांगीर और शाहजहां के तहत प्रांतीय राज्यपालों के रूप में सेवा की।
III. किसी राजपूत शासक की 'वतन जागीर' सामान्य मुगल जागीरों की तरह आवधिक स्थानांतरण के अधीन नहीं थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

80. राजपूत प्रशासन में 'नजराना' शब्द का तात्पर्य था:
(A) औपचारिक दरबार सत्रों के दौरान उपस्थित होने वाले सभी सामंतों के लिए लागू एक सख्त प्रशासनिक वेशभूषा नियम
(B) सम्मान और राजनीतिक निष्ठा के प्रतीक के रूप में शासक को औपचारिक रूप से दी जाने वाली भेंट (खिराज)
(C) 'लाटा' प्रक्रिया के अनाज विभाजन के दौरान उपयोग किया जाने वाला एक विशिष्ट पारंपरिक कृषि उपकरण
(D) वरिष्ठ राज्य गुप्तचरों द्वारा नियमित रूप से तैयार की जाने वाली एक गोपनीय रिपोर्ट

81. किस राजपूत रियासत ने स्वतंत्र रहते हुए निरंतर दबाव के बावजूद मुगल सम्राटों के साथ कोई भी वैवाहिक संबंध स्थापित करने से लगातार इनकार कर दिया?
(A) आमेर का कछवाहा राजवंश
(B) बीकानेर का राठौड़ राजवंश
(C) मेवाड़ का गुहिलौत/सिसोदिया राजवंश
(D) जैसलमेर का भाटी राजवंश

82. भाटी राजवंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : भाटी शासकों ने जैसलमेर दुर्ग, जिसे सोनार किला के नाम से जाना जाता है, की सफलतापूर्वक रक्षा की, जो अपने 'अर्द्ध-साका' (आधे साके) के लिए प्रसिद्ध है।
कथन II : भाटी राजवंश मुख्य रूप से मालवा की सीमा से लगे राजस्थान के उपजाऊ पूर्वी मैदानों को नियंत्रित करता था।
निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

83. राजपूत राज्यों में 'चंवरी' कर किस विशेष अवसर पर लगाया जाता था?
(A) शासक के घर पुरुष उत्तराधिकारी के जन्म के अवसर पर
(B) किसी किसान की पुत्री के विवाह के समय
(C) विदेशी नस्ल के घोड़ों की खरीद पर
(D) जब सिंचाई के लिए नया कुआँ खोदा जाता था

84. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजपूत शासक 18वीं शताब्दी में मराठा विस्तार के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे।
कारण (R) : कुलीन प्रतिद्वंद्विता, आंतरिक उत्तराधिकार विवादों और हुरड़ा सम्मेलन की विफलता ने किसी भी दीर्घकालिक राजपूत सैन्य गठबंधन को रोक दिया।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

85. मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था में 'पटेल' की मुख्य भूमिका क्या थी?
(A) गाँव का मुखिया जो राजस्व संग्रहण और व्यवस्था बनाए रखने में सहायता करता था
(B) मुख्य धार्मिक पुजारी जो राज्य के समारोहों और शाही अनुष्ठानों की अध्यक्षता करता था
(C) घेराबंदी के दौरान दुर्ग की टुकड़ी की रक्षा के लिए उत्तरदायी सैन्य कमांडर
(D) केंद्रीय दीवान खाने में वित्तीय रिकॉर्ड का पर्यवेक्षण करने वाला वरिष्ठ मुख्य लेखाकार

86. निम्नलिखित में से कौन-सी 'इजारा' (मुकाता) व्यवस्था का सबसे उपयुक्त विवरण है जो 18वीं शताब्दी में प्रमुखता से उभरी?
(A) बिचौलियों के बिना राजा और किसानों के बीच एक सीधा प्रशासनिक संबंध
(B) एक ऐसी व्यवस्था जहाँ एक निश्चित राशि के लिए कर वसूलने का अधिकार पट्टे पर दिया जाता था
(C) सभी सक्षम गाँव के युवाओं पर लागू एक अनिवार्य सैन्य भर्ती प्रणाली
(D) पवित्र तीर्थ स्थलों पर आने वाले तीर्थयात्रियों पर लगाया जाने वाला एक अनिवार्य राज्य धार्मिक कर

87. निम्नलिखित युद्धों और उनके संबंधित युद्धरत पक्षों के बीच सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) खातोली का युद्ध (1517) - राणा सांगा बनाम इब्राहिम लोदी
(B) गागरोन का युद्ध (1519) - महाराणा प्रताप बनाम महमूद खिलजी द्वितीय
(C) सम्मेल/गिरि-सुमेल का युद्ध (1544) - सवाई जयसिंह द्वितीय बनाम शेरशाह सूरी
(D) राजमहल का युद्ध (1747) - राव मालदेव बनाम बाबर

NODIA

88. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता राजपूत सामंतवाद को यूरोपीय सामंतवाद से स्पष्ट रूप से अलग करती है?
(A) राजपूत सामंतवाद में, भूमि अधिकार प्रतिस्पर्धी खुले व्यापारिक बाजारों में खरीदे और बेचे जाते थे।

II. भीलू राणा (पूंजा)
III. झाला बीदा
IV. हसन खान मेवाती

कौन-सा संयोजन सटीक रूप से उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप के साथ लड़े थे?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

50. राजपूत राज्यों की राजनीतिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित में से किसे एक गलत कथन माना जाता है?

(A) 'भूमिया' वे भूस्वामी थे जो विशिष्ट कर्तव्यों, मुख्य रूप से गाँव की सुरक्षा के बदले भूमि धारण करते थे।
(B) 'सासन' भूमि ब्राह्मणों, चारणों या धार्मिक संस्थानों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि थी।
(C) 'जागीर' सामंत की निरपेक्ष, स्थायी और शर्तहीन निजी संपत्ति थी।
(D) राज्य की समस्त भूमि का अंतिम स्वामित्व सैद्धांतिक रूप से शासक में निहित था।

51. परगना स्तर पर 'कानूनगो' के नाम से जाना जाने वाला प्रशासनिक अधिकारी मुख्य रूप से किसके लिए उत्तरदायी था?

(A) विदेशी सैन्य आक्रमणों के दौरान स्थानीय नागरिक सेना बलों की कमान संभालना और उन्हें संगठित करना
(B) न्यायिक विवादों के दौरान स्थानीय कानूनी प्रथाओं की व्याख्या करना
(C) परगना के स्थायी राजस्व रिकॉर्ड और कृषि आंकड़ों को बनाए रखना
(D) प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर सीमा शुल्क और पारगमन कर एकत्र करना

52. किस राजपूत शासक को उनके महान ग्रंथ 'कुंभलगढ़ प्रशस्ति' और मेवाड़ में कई दुर्गों के निर्माण के लिए जाना जाता है?

(A) राणा सांगा
(B) राणा कुंभा
(C) महाराणा राज सिंह
(D) राणा अमर सिंह

53. 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निरंतर मुगल-राजपूत संघर्ष मुख्य रूप से किस मुगल सम्राट की धार्मिक और विस्तारवादी नीतियों के कारण शुरू हुआ था?

(A) जहांगीर
(B) शाहजहां
(C) औरंगजेब
(D) बहादुर शाह प्रथम

54. राजपूत राज्यों में राजस्व संग्रहण विधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. 'कंकूत' वह पद्धति थी जहाँ कटाई से पहले खड़ी फसल का अनुमान लगाकर राज्य का हिस्सा तय किया जाता था।
II. 'बटाई' वह पद्धति थी जहाँ गहाई किए गए अनाज को किसान और राज्य के बीच भौतिक रूप से विभाजित किया जाता था।
III. 'मुकाता' एक ऐसी प्रणाली थी जहाँ राजस्व संग्रहण को एक निश्चित राशि के लिए पट्टे पर दिया जाता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

55. राजपूत जागीरदारी व्यवस्था में 'चाकरी' दायित्व का मुख्य कार्य क्या था?

(A) जब भी मांग की जाए, राज्य को घुड़सवारों का एक निश्चित दस्ता प्रदान करना
(B) संपूर्ण मौसमी कृषि उपज के बराबर वार्षिक नकद खिराज का भुगतान करना
(C) केंद्रीय प्राधिकरण को सभी स्वतंत्र न्यायिक और प्रशासनिक शक्तियाँ सौंपना
(D) विस्तृत शाही शासक के परिवार की रक्षा करने वाले व्यक्तिगत सशस्त्र अंगरक्षक के रूप में कार्य करना

56. निम्नलिखित ऐतिहासिक करों में से असंगत की पहचान कीजिए:

(A) चंवरी कर
(B) तलवार बंधाई
(C) चौथ
(D) न्योता

57. नवंबर 1817 में अंग्रेजों के साथ व्यापक अधीनस्थ पार्थक्य की संधि पर हस्ताक्षर करने वाला राजपूताना का पहला राज्य कौन-सा था?

(A) कोटा
(B) करौली
(C) जयपुर
(D) मेवाड़

58. राजपूत शासकों के अधीन न्यायिक व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I : शासक का दरबार दीवानी और आपराधिक दोनों मामलों में अपील की सर्वोच्च अदालत के रूप में कार्य करता था।
कथन II : गाँव के स्तर पर, विवादों को आमतौर पर जाति पंचायतों या गाँव के बुजुर्गों द्वारा मध्यस्थता के माध्यम से सुलझाया जाता था।

निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

Downloaded from www.pdf.tube

97. राजपूत राजनीतिक संरचना के संदर्भ में 'छुटभई' शब्द किसे संदर्भित करता था?

(A) भरण-पोषण के लिए छोटी जागीरें पाने वाले छोटे भाई या पार्श्व संबंधी

(B) राजपूताना की सीमाओं के बाहर विदेशी क्षेत्रों से भर्ती किए गए भाड़े के सैनिक

(C) गैर-कृषि कर एकत्र करने के लिए विशेष रूप से उत्तरदायी स्थानीय गाँव के मुखिया

(D) सैन्य हथियारों की खरीद और बिक्री में लगे विशेष व्यापारी संघ

98. मारवाड़ के किस प्रमुख शासक को सम्राट अकबर द्वारा अपने पुत्र मोटा राजा उदय सिंह को मुगल दरबार में भेजने के लिए मजबूर किया गया था, जिससे राज्य की अधीनता शुरू हुई थी?

(A) राव मालदेव

(B) राव चंद्रसेन

(C) महाराजा सूर सिंह

(D) महाराजा जसवंत सिंह

99. राजपूत शासकों के अधीन न्यायिक व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:

I. शक्तियों का सख्त पृथक्करण था; शासक के पास कोई न्यायिक अधिकार नहीं था।

II. प्रथागत कानूनों और धार्मिक ग्रंथों ने न्यायिक निर्णयों का मार्गदर्शन किया।

III. जाति पंचायतों ने स्थानीय स्तर पर दीवानी और सामाजिक विवादों को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

IV. परगनों में आपराधिक न्याय अक्सर हाकिम या फौजदार द्वारा प्रशासित किया जाता था।

कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?

(A) केवल I, II और III

(B) केवल II, III और IV

(C) केवल I, III और IV

(D) I, II, III और IV

100. सवाई जयसिंह द्वितीय के प्रशासनिक और सामाजिक सुधारों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन I : उन्होंने बालिका भ्रूणहत्या को रोकने के लिए राजपूतों के बीच विवाह के खर्चों को विनियमित करने का प्रयास किया।

कथन II : उन्होंने विश्राम गृहों और बावड़ियों का निर्माण कराया तथा हिंदू संप्रदायों के बीच धार्मिक विवादों को सुलझाने का काम किया।

निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।

(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।

(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

NODIA

61. (C) महाराणा प्रताप - कीका
महाराणा प्रताप को मेवाड़ के पर्वतीय क्षेत्रों और भील समुदाय के बीच स्नेहपूर्वक 'कीका' नाम से पुकारा जाता था, जो स्थानीय बोली में छोटे बच्चे के लिए प्रयुक्त शब्द है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं क्योंकि 'हिंदू पत' की उपाधि राणा सांगा से जुड़ी है, 'अभिनव भारताचार्य' राणा कुंभा की उपाधि थी तथा 'हिंदुआ सूरज' मेवाड़ के सिसोदिया शासकों का सामान्य प्रतिष्ठित उपाधि-सूचक शब्द था। इस प्रकार कीका का संबंध पूर्णतः सही है।

62. (C) वे विशाल स्थायी सेनाएँ रखते थे जिससे सामंती सैन्य सेवा की आवश्यकता पूरी तरह से समाप्त हो गई थी।
राजपूत सैन्य व्यवस्था मुख्य रूप से सामंती स्वरूप पर आधारित थी, न कि किसी विशाल स्थायी केंद्रीय सेना पर। शासक युद्ध के समय अपने जागीरदारों और सामंतों द्वारा लाई गई सैन्य टुकड़ियों पर ही निर्भर रहते थे। जागीरदार अपनी 'रेख' के अनुसार सैनिक और घुड़सवार प्रदान करते थे। इसलिए यह कथन निश्चित रूप से असत्य है कि सामंती सैन्य सेवा की आवश्यकता समाप्त हो गई थी, क्योंकि सामंती बल ही राजपूत सेना का मुख्य आधार था।

63. (B) यह महाराणा प्रताप के लिए एक प्रमुख विजय थी जिसने मेवाड़ की पुनर्विलय की शुरुआत की।
1582 में घटित दिवेर का युद्ध महाराणा प्रताप के सैन्य अभियानों में एक स्वर्णिम मोड़ साबित हुआ। इस युद्ध में महाराणा प्रताप ने मुगल सूबेदार सुल्तान खान की सेना को बुरी तरह पराजित किया। दिवेर की इस ऐतिहासिक विजय के बाद महाराणा प्रताप ने आक्रामक रणनीति अपनाते हुए मुगलों द्वारा कब्जा किए गए मेवाड़ के कई महत्वपूर्ण ठिकानों पर पुनः नियंत्रण स्थापित कर लिया, जिसे मेवाड़ की स्वतंत्रता का पुनरुद्धार माना जाता है।

64. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
राजपूत राज्यों में भू-धारणा की विभिन्न शर्तें प्रचलित थीं। 'खालसा' सीधे राज्य के प्रत्यक्ष प्रशासनिक और राजस्व नियंत्रण में रहने वाली भूमि थी। 'जागीर' सैन्य या प्रशासनिक सेवाओं के बदले सामंतों को प्रदान की जाती थी। 'भूम' भूमि स्थानीय सुरक्षा और पहरेदारी के विशेष कर्तव्यों की शर्त पर दी जाती थी, जबकि 'सासन' भूमि धार्मिक हस्तियों, विद्वानों या मंदिरों को दी जाने वाली कर-मुक्त अनुदान भूमि होती थी।

65. (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं, क्योंकि मेवाड़ तटस्थ रहा था
1658 में शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार युद्ध के दौरान प्रसिद्ध धर्मत का युद्ध लड़ा गया था। इस युद्ध में जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह और राव रतन सिंह राठौड़ ने दारा शिकोह की ओर से औरंगजेब का सामना किया था। हालाँकि, मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने इस मुगल गृहयुद्ध में पूरी तरह तटस्थ रहने की नीति अपनाई थी और किसी भी पक्ष की ओर से अपनी सेना नहीं भेजी थी।

66. (C) परगना के कार्यकारी प्रमुख के रूप में कार्य करना
मध्यकालीन राजपूत प्रशासनिक व्यवस्था में 'हाकिम' परगना स्तर का सबसे प्रमुख प्रशासनिक और कार्यकारी अधिकारी होता था। उसका मुख्य उत्तरदायित्व अपने परगने में कानून व्यवस्था बनाए रखना, स्थानीय नागरिक प्रशासन की देखरेख करना, राजस्व संग्रहण में सहयोग देना तथा स्थानीय स्तर के छोटे विवादों का निपटारा करना था। वह केंद्रीय सरकार और स्थानीय ग्रामीण अधिकारियों के बीच समन्वय स्थापित करने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता था।

67. (B) अधीनस्थ पार्थक्य की संधियाँ (1817-18)
1817-18 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और राजपूत राज्यों के मध्य हस्ताक्षरित अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों के प्रावधानों के तहत राजपूत राज्यों को बाह्य सुरक्षा का आश्वासन दिया गया था। इसके बदले में, इन संधियों की शर्तों के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर राजपूत शासकों को अपनी पूरी सैन्य क्षमता के साथ ब्रिटिश सेना की सहायता करना कानूनी रूप से अनिवार्य कर दिया गया था, जिससे राज्यों की सैन्य संप्रभुता समाप्त हो गई।

68. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने औरंगजेब की धार्मिक और विस्तारवादी नीतियों का दृढ़ता से विरोध किया था। 1679 में जब औरंगजेब ने गैर-मुस्लिमों पर पुनः 'जजिया' कर लगाया, तो राज सिंह ने पत्र लिखकर इसका कड़ा विरोध किया। इसके अतिरिक्त, जब औरंगजेब के पुत्र शहजादे अकबर ने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह किया, तो महाराणा राज सिंह और मारवाड़ के दुर्गादास राठौड़ ने शहजादे को सैन्य और राजनीतिक संरक्षण प्रदान किया था।

69. (A) I, II, III, IV
मेवाड़ के गुहिलौत/सिसोदिया राजवंश की राजधानियों का कालानुक्रमिक विकास अत्यधिक महत्वपूर्ण है। प्रारंभ में नागदा बप्पा रावल के समय मेवाड़ की प्राथमिक राजधानी थी। बाद में 13वीं शताब्दी में चित्तौड़गढ़ को मुख्य प्रशासनिक केंद्र बनाया गया। 1559 में महाराणा उदय सिंह ने उदयपुर की स्थापना कर उसे नई राजधानी बनाया, जबकि 1585 में हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप ने चावंड को अपनी आपातकालीन राजधानी घोषित किया था।

70. (B) जागीरदार द्वारा पेशकश या नजराना के रूप में दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क
मारवाड़ रियासत में 'हुकुमनामा' एक अनिवार्य प्रशासनिक और उत्तराधिकार कर था। जब किसी नई जागीर की स्वीकृति होती थी या किसी मृत जागीरदार का उत्तराधिकारी अपनी जागीर का प्रभार संभालता था, तो उसे शासक को एक निश्चित राशि देनी पड़ती थी। यह एक प्रकार का नजराना या पेशकशी कर था जो शासक के प्रति सामंत की निष्ठा को मान्यता प्रदान करता था और राज्य के राजस्व को बढ़ाता था।

71. (D) सवाई जयसिंह द्वितीय - शेरशाह सूरी
दिए गए विकल्पों में सवाई जयसिंह द्वितीय और शेरशाह सूरी का युग्म कालानुक्रमिक रूप से असंगत है। शेरशाह सूरी का काल 16वीं शताब्दी (1540-1545) का था, जिन्होंने मारवाड़ के मालदेव से युद्ध किया था। इसके विपरीत, आमेर के सवाई

NODIA

10. (A) राज्य का राजस्व एकत्र करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से शासन द्वारा प्रशासित भूमि
मध्यकालीन राजपूत राज्यों की भू-धारण व्यवस्था में 'खालसा' उस भूमि को कहा जाता था जो सीधे राज्य या शासक के प्रत्यक्ष नियंत्रण और प्रशासन के अधीन होती थी। इस भूमि से प्राप्त होने वाला संपूर्ण भू-राजस्व सीधे शाही खजाने में जमा किया जाता था। खालसा भूमि का प्रबंधन राज्य के अधिकारियों द्वारा किया जाता था, जो सामंती या जागीरदारी भूमि से भिन्न थी जहाँ राजस्व का उपयोग जागीरदारों द्वारा स्वयं किया जाता था।

11. (B) नैणसी री ख्यात
17वीं शताब्दी के मारवाड़ के इतिहास, प्रशासनिक ढांचे और सामंती व्यवस्था को समझने के लिए 'नैणसी री ख्यात' सबसे महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत है। इस ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के दीवान मुहणोत नैणसी ने की थी। इस ग्रंथ में मारवाड़ के विभिन्न परगनों, राजस्व आंकड़ों, जागीरदारी व्यवस्था और राजपूत कुलों का विस्तृत तथा वैज्ञानिक विवरण मिलता है, जो तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालता है।

12. (B) उन्होंने 1576 में औपचारिक रूप से सम्राट अकबर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और मनसब स्वीकार कर लिया।
महाराणा प्रताप ने जीवन भर मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की और अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने कभी भी सम्राट अकबर के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया और न ही कोई मुगल मनसब स्वीकार किया। उनका जन्म 1540 में कुंभलगढ़ में हुआ था और उन्होंने 1576 में हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा था। बाद में उन्होंने चावंड को अपनी आपातकालीन राजधानी बनाया तथा मेवाड़ के अधिकांश भूभाग को मुगलों से वापस मुक्त करा लिया था।

13. (A) अपनी जागीर संभालने पर नए जागीरदार द्वारा शासक को दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क
राजपूत राज्यों में 'तलवार बंधाई' एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सामंती कर था। जब किसी पुरानी जागीर का जागीरदार बदलता था या नया उत्तराधिकारी जागीर का प्रभार संभालता था, तो उसे शासक के प्रति निष्ठा व्यक्त करने के लिए उत्तराधिकार शुल्क के रूप में एक निश्चित राशि देनी पड़ती थी। इस अवसर पर शासक नए जागीरदार की कमर पर तलवार बांधकर उसे औपचारिक रूप से अधिकार प्रदान करता था।

14. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
मध्यकालीन राजपूत प्रशासन में अधिकारियों के स्पष्ट कार्य विभाजित थे। दीवान राज्य के राजस्व और वित्तीय मामलों का मुख्य प्रभारी अधिकारी था, जबकि बख्शी सैन्य संगठन, सैनिकों की भर्ती और वेतन भुगतान का प्रबंधन करता था। कोतवाल का मुख्य उत्तरदायित्व नगरों में पुलिस व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा बनाए रखना था। काज़ी राज्य की न्यायिक प्रणाली का सर्वोच्च धार्मिक अधिकारी होता था जो कानूनी विवादों और न्याय प्रशासन की देखरेख करता था।

15. (D) राव जोधा
मारवाड़ के प्रसिद्ध राठौड़ शासक राव जोधा को 1459 में जोधपुर शहर की स्थापना करने और मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने चिड़ियाटूँक पहाड़ी पर इस अभेद्य दुर्ग का निर्माण कराकर मंडोर के स्थान पर जोधपुर को अपनी नई राजधानी बनाया। राव जोधा के इस रणनीतिक निर्णय ने मारवाड़ राज्य की सुरक्षा और प्रशासनिक स्थिरता को सुदृढ़ किया, जिससे यह क्षेत्र राठौड़ सत्ता का मुख्य केंद्र बन गया।

16. (C) चौथ
मध्यकालीन राजपूत राज्यों में भू-राजस्व निर्धारण के लिए कंकूत, लाटा और बटाई जैसी पारंपरिक पद्धतियों का उपयोग किया जाता था। इसके विपरीत, 'चौथ' भू-राजस्व निर्धारण की कोई पद्धति नहीं थी, बल्कि यह मराठों द्वारा पड़ोसी राज्यों और क्षेत्रों से वसूल किया जाने वाला एक चौथाई सैन्य कर था। मराठे इस कर के बदले संबंधित राज्यों को बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा का आश्वासन देते थे, इसलिए इसे राजपूतों का आंतरिक कर नहीं माना जाता।

17. (B) आमेर के राजा भारमल
आमेर के कछवाहा शासक राजा भारमल पहले राजपूत राजा थे जिन्होंने सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान मुगलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। 1562 में साँभर में राजा भारमल ने अपनी पुत्री हरखा बाई (मरीयम-उज़-ज़मानी) का विवाह अकबर से किया। इस ऐतिहासिक कदम ने आमेर को मुगल दरबार में उच्च स्थान दिलाया और एक दीर्घकालिक मुगल-राजपूत राजनीतिक गठबंधन की शुरुआत की, जिसने संपूर्ण राजपूताना की राजनीति को प्रभावित किया।

18. (D) राज्य और किसान के बीच कटी हुई फसल का भौतिक विभाजन
राजपूत राज्यों में भू-राजस्व संग्रह की पारंपारिक प्रणालियों में 'लाटा' का महत्वपूर्ण स्थान था। इस पद्धति में फसल की कटाई और गहाई के बाद तैयार अनाज का राज्य और किसान के बीच प्रत्यक्ष रूप से भौतिक विभाजन किया जाता था। निर्धारित अनुपात के अनुसार अनाज का हिस्सा सरकारी कर्मचारियों द्वारा अलग कर लिया जाता था। यह व्यवस्था कंकूत पद्धति से भिन्न थी जिसमें खड़ी फसल का अनुमान लगाकर कर का निर्धारण किया जाता था।

19. (A) I, II, III, IV
इन ऐतिहासिक युद्धों का कालानुक्रमिक क्रम भारत और राजस्थान के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। तराइन का प्रथम युद्ध 1191 में पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गोरी के बीच लड़ा गया था। इसके बाद 1527 में बाबर और राणा सांगा के बीच खानवा का युद्ध हुआ। हल्दीघाटी का युद्ध 1576 में महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के मध्य लड़ा गया, जबकि दिवेर का प्रसिद्ध युद्ध 1582 में घटित हुआ था।

20. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजपूत शासन व्यवस्था में ग्राम प्रशासन प्राथमिक और स्वायत्त इकाई के रूप में कार्य करता था। स्थानीय विवादों का समाधान

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) बप्पा रावल
मेवाड़ में गुहिलौत सत्ता का वास्तविक संस्थापक बप्पा रावल को माना जाता है। उन्होंने आठवीं शताब्दी में मौर्य शासक मान मोरी को पराजित करके चित्तौड़गढ़ पर अधिकार किया। इसके बाद उन्होंने नागदा को राजधानी बनाकर गुहिलौत वंश की स्थिति सुदृढ़ की। बप्पा रावल के सैन्य नेतृत्व और उपलब्धियों ने मेवाड़ को एक शक्तिशाली राज्य बनाया, जिससे क्षेत्रीय राजनीति में इस राजवंश का वर्चस्व स्थापित हो सका।

2. (D) वे भगवान राम के पुत्र कुश के वंशज होने का दावा करते हैं।
आमेर का कछवाहा राजवंश स्वयं को पौराणिक सूर्यवंशी परंपरा से संबंधित मानता है। इस राजवंश के शासक अपनी उत्पत्ति भगवान राम के ज्येष्ठ पुत्र कुश से जोड़ते हैं। इसी पौराणिक संबंध के आधार पर इस वंश को कछवाहा कहा गया। मध्यकालीन इतिहास में कछवाहा शासकों ने राजपूताना के पूर्वी भाग में अपनी प्रशासनिक व्यवस्था सुदृढ़ की तथा आमेर को केंद्र बनाकर कई शताब्दियों तक शासन संचालित किया।

3. (A) सैन्य दायित्वों को निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला जागीर का अनुमानित भू-राजस्व
मध्यकालीन राजपूत राज्यों की सामंती और राजस्व व्यवस्था में 'रेख' का विशेष महत्व था। यह किसी जागीर से प्राप्त होने वाले अनुमानित भू-राजस्व का आधिकारिक मूल्य होता था। इसके आधार पर जागीरदार का राज्य के प्रति सैन्य दायित्व तय किया जाता था। जागीरदार को स्वीकृत रेख के अनुपात में शासक को घुड़सवार सैनिक तथा सैन्य सेवाएँ प्रदान करनी पड़ती थीं, जिससे राज्य का सैन्य ढांचा बना रहता था।

4. (C) केवल I और III
आमेर के सवाई जयसिंह द्वितीय एक महान खगोलशास्त्री और दूरदर्शी शासक थे। उन्होंने भारत में जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, बनारस और मथुरा में पाँच भव्य खगोलीय वेधशालाओं का निर्माण करवाया। इनमें जयपुर की वेधशाला सबसे बड़ी है। उन्होंने शुद्ध खगोलीय अवलोकनों और ग्रहों की गति की गणना के लिए 'ज़िज-ए-मोहम्मदशाही' नामक प्रामाणिक खगोलीय सारणी का संकलन भी करवाया था। उनकी इन पहलों ने खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया।

5. (A) बूंदी
राजस्थान के राजनीतिक इतिहास में राठौड़ राजवंश का प्रमुख योगदान रहा है। राठौड़ वंश की विभिन्न शाखाओं ने मारवाड़ में जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ रियासतों की स्थापना की थी। इसके विपरीत, बूंदी रियासत की स्थापना हाड़ा राजवंश द्वारा की गई थी, जो चौहानों की ही एक महत्वपूर्ण शाखा है। हाड़ा राजपूतों ने हाड़ौती क्षेत्र में कोटा और बूंदी पर शासन किया, जबकि राठौड़ शासकों का वर्चस्व मुख्यतः मारवाड़ और बीकानेर क्षेत्र तक सीमित रहा।

6. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
खानवा का प्रसिद्ध युद्ध मार्च 1527 में मुगल सम्राट बाबर और मेवाड़ के महाराणा सांगा के मध्य लड़ा गया था। इस ऐतिहासिक युद्ध में महाराणा सांगा के नेतृत्व में एक विशाल राजपूत संघ गठित हुआ था। इस संघ में हसन खान मेवाती और महमूद लोदी जैसे मुस्लिम शासक भी बाबर के खिलाफ एक जुट होकर लड़े थे। यह युद्ध भारत में मुगल साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ करने में एक अत्यंत निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ।

7. (B) जूनागढ़ दुर्ग - चौहान राजवंश
बीकानेर स्थित प्रसिद्ध जूनागढ़ दुर्ग का निर्माण बीकानेर के राठौड़ शासक महाराजा रायसिंह ने करवाया था, इसलिए इसे चौहान राजवंश से जोड़ना असंगत है। अन्य सभी विकल्प सही सुमेलित हैं, जैसे कुंभलगढ़ दुर्ग का निर्माण मेवाड़ के सिसोदिया शासकों ने करवाया था, मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण जोधपुर के राठौड़ राजवंश ने कराया था तथा जयपुर का नाहरगढ़ दुर्ग कछवाहा शासकों से संबंधित है। जूनागढ़ दुर्ग अपनी वास्तुकला और अभेद्यता के लिए विख्यात है।

8. (C) शासक के अधीन मुख्यमंत्री और नागरिक प्रशासन के प्रमुख के रूप में कार्य करना
राजपूत राज्यों के केंद्रीय प्रशासनिक ढांचे में 'प्रधान' सर्वोच्च अधिकारी होता था। वह शासक के ठीक नीचे मुख्यमंत्री और नागरिक प्रशासन के प्रधान के रूप में कार्य करता था। प्रधान का मुख्य कार्य राज्य के सभी प्रशासनिक विभागों के कामकाज का पर्यवेक्षण करना, राजस्व नीतियों का सुचारू क्रियान्वयन सुनिश्चित करना और राज्य मामलों में शासक को सलाह देना था। आंतरिक व्यवस्था और प्रशासनिक निरंतरता बनाए रखने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

9. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मराठों और पिंडारियों के निरंतर आक्रमणों एवं आर्थिक शोषण ने राजपूत राज्यों को अत्यधिक कमजोर कर दिया था। भारी वित्तीय मांगों और आंतरिक अराजकता के कारण राज्यों की अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चुकी थी। अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए राजपूत शासकों ने 1817-18 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों को स्वीकार करना ही सबसे व्यावहारिक विकल्प समझा।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तराधिकार विवादों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। उन्होंने राज्यों पर 'चौथ' और 'सरदेशमुखी' जैसे भारी कर थोपे, जिससे राजपूत रियासतों की वित्तीय स्थिति पूरी तरह चरमरा गई और उनकी राजनीतिक स्थिरता नष्ट हो गई।

31. (C) ज़िज-ए-मोहम्मदशाही - खगोलीय अवलोकनों के लिए खगोलीय सारणियाँ
आमेर के खगोलशास्त्री शासक सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा संकलित 'ज़िज-ए-मोहम्मदशाही' खगोलीय सारणियों का एक अत्यंत प्रसिद्ध और प्रामाणिक संग्रह है, जिसका उपयोग ग्रहों की गति और खगोलीय गणनाओं के लिए किया जाता था। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि 'हरिकेलि नाटक' की रचना चौहान राजा विग्रहराज चतुर्थ ने की थी, जबकि 'दायभाग' एक प्राचीन हिंदू विधि ग्रंथ है। इस प्रकार खगोलीय सारणियों से संबंधित युग्म पूर्णतः सही और प्रामाणिक है।

32. (A) सीमा शुल्क, चुंगी और बाजार करों से प्राप्त गैर-कृषि राजस्व
राजपूत राज्यों के राजस्व प्रशासन में 'सायर' उस आय को संदर्भित करता था जो कृषि के अलावा अन्य गैर-कृषि स्रोतों से प्राप्त होती थी। इसके अंतर्गत व्यापारिक वस्तुओं पर लगने वाला सीमा शुल्क, शहरों में ली जाने वाली चुंगी, बाजार कर, खानों से प्राप्त आय और विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों पर लगाए जाने वाले कर शामिल थे। यह राजस्व राज्य के वित्तीय कोष को मजबूत करने और प्रशासनिक खर्चों को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान देता था।

33. (B) राव मालदेव और शेरशाह सूरी
गिरि-सुमेल का प्रसिद्ध युद्ध जनवरी 1544 में मारवाड़ के शक्तिशाली शासक राव मालदेव और दिल्ली के अफगान शासक शेरशाह सूरी की सेनाओं के बीच लड़ा गया था। जैतारण के निकट हुए इस अत्यंत भीषण संघर्ष में राजपूत वीरों के कड़े प्रतिरोध से प्रभावित होकर शेरशाह सूरी को कहना पड़ा था कि "मैंने मुट्ठी भर बाजरे के लिए पूरे हिंदुस्तान की सल्तनत खो दी होती।" इस युद्ध ने मारवाड़ की सैन्य क्षमता को रेखांकित किया।

34. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
1576 में हल्दीघाटी के युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने मुगलों की विशाल सेना के सामने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अरावली की विषम और बीहड़ पहाड़ियों को अपना रक्षात्मक आधार बनाया तथा स्थानीय भील जनजाति के सहयोग से प्रभावी छापामार युद्ध रणनीति अपनाई। मुगलों की रसद और आपूर्ति श्रृंखलाओं को लगातार बाधित करके उन्होंने मुगल नियंत्रण को कमजोर किया और मेवाड़ के विशाल भूभाग को पुनः अपने अधीन करने में सफलता प्राप्त की।

35. (C) राव चंद्रसेन
मारवाड़ के राठौड़ शासक राव चंद्रसेन को इतिहास में "मारवाड़ का भूला-बिसरा नायक" तथा "महाराणा प्रताप का अग्रगामी" कहा जाता है। उन्होंने सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर दिया और भद्राजून, सिवाना तथा भाद्राजूर्ण की पहाड़ियों से मुगलों के खिलाफ निरंतर संघर्ष जारी रखा। अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आजीवन जंगलों में भटकने और मुगलों से लोहा लेने के कारण उनका स्थान इतिहास में महाराणा प्रताप के समान अत्यंत सम्मानित है।

36. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मध्यकालीन राजपूत प्रशासन में परगना एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई थी, जो केंद्रीय शासन और ग्रामीण स्तर के बीच समन्वय स्थापित करती थी। परगना स्तर पर मुख्य वित्तीय और राजस्व अधिकारी 'आमिल' या 'अमलगुज़ार' होता था। आमिल का प्राथमिक कर्तव्य अपने परगने के अंतर्गत आने वाले गाँवों से भू-राजस्व का सटीक निर्धारण करना, करों का संग्रहण सुनिश्चित करना और कृषि उत्पादन से संबंधित समस्त आंकड़ों को केंद्रीय खजाने तक पहुँचाना था।

37. (B) मुकाता (इजारा)
18वीं शताब्दी के राजपूताना में 'मुकाता' (जिसे इजारा भी कहा जाता था) भू-राजस्व संग्रहण की एक विशिष्ट संविदात्मक प्रणाली थी। इसके अंतर्गत राज्य किसी विशेष क्षेत्र या गाँव से राजस्व एकत्र करने का अधिकार एक निश्चित राशि के बदले किसी ठेकेदार या बिचौलिए को पट्टे पर दे देता था। इस प्रणाली से राज्य को अग्रिम या निश्चित आय प्राप्त हो जाती थी, परंतु इससे अक्सर किसानों पर कर का बोझ अत्यधिक बढ़ जाता था।

38. (B) भगवान कृष्ण का चंद्रवंश
जैसलमेर पर शासन करने वाला भाटी राजवंश स्वयं को पौराणिक चंद्रवंशी परंपरा से संबंधित मानता है। भाटी राजपूत अपनी वंशावली भगवान श्रीकृष्ण और उनके यादव कुल से जोड़ते हैं। इसी पौराणिक पृष्ठभूमि के कारण जैसलमेर के शासकों को 'छत्रपति' और 'यदुभट्टी' जैसी गरिमामय उपाधियों से विभूषित किया जाता था। उन्होंने पश्चिमी थार मरुस्थल क्षेत्र में अपनी स्वतंत्र पहचान और सुदृढ़ शासन प्रणाली स्थापित करके सदियों तक राज्य किया।

NODIA

39. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
प्रसिद्ध राजपूत शासकों और उनके राजवंशों का सुमेलित विवरण इस प्रकार है। हम्मीर देव रणथंभौर के प्रतापी चौहान शासक थे, जिन्होंने अलाउद्दीन खिलजी से लोहा लिया था। राणा कुंभा मेवाड़ के महान सिसोदिया राजवंश से संबंधित थे, जिन्होंने कई दुर्गों का निर्माण कराया। राव मालदेव मारवाड़ के शक्तिशाली राठौड़ शासक थे, जबकि सवाई जयसिंह द्वितीय आमेर के विख्यात कछवाहा वंश के राजा थे जिन्होंने जयपुर शहर की स्थापना की थी।

40. (B) सर चार्ल्स मेटकाफ
1817-18 में गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स के कार्यकाल के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजपूत राज्यों के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की संधियाँ कीं। इन ऐतिहासिक संधियों पर बातचीत करने और उन्हें अंतिम रूप देने के लिए दिल्ली के ब्रिटिश रेजिडेंट सर चार्ल्स मेटकाफ को मुख्य वार्ताकार नियुक्त किया गया था। मेटकाफ ने जयपुर, जोधपुर, उदयपुर और कोटा जैसी प्रमुख

रियासतों के साथ कुशलतापूर्वक संधियों को संपन्न कराकर ब्रिटिश सर्वोपरिता स्थापित की।

41. (D) प्रत्यक्ष मुगल प्रशासन के पक्ष में जागीरदारी व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन।
अकबर के शासनकाल में स्थापित मुगल-राजपूत गठबंधन के परिणामस्वरूप राजपूत शासकों को मनसबदारी व्यवस्था में शामिल किया गया और उन्हें अपनी पैतृक भूमि में 'वतन जागीर' का अधिकार मिला। इससे राजपूताना में शांति और आर्थिक समृद्धि का युग शुरु हुआ। हालाँकि, इस गठबंधन के तहत पारंपरिक राजपूत जागीरदारी व्यवस्था का उन्मूलन कभी नहीं किया गया, बल्कि यह व्यवस्था राज्यों की आंतरिक स्वायत्तता के साथ निरंतर सुचारु रूप से चलती रही।

42. (B) सैन्य सूची बनाए रखने, सैनिकों की भर्ती करने और राज्य का वेतन वितरित करने के लिए
राजपूत राज्यों के सैन्य प्रशासन में 'बख्शी' का पद अत्यधिक महत्वपूर्ण होता था। बख्शी मुख्य रूप से सैन्य विभाग का प्रमुख नागरिक और प्रशासनिक प्रभारी था। उसका मुख्य दायित्व राज्य के सैनिकों की भर्ती प्रक्रिया का संचालन करना, सेना का विस्तृत रिकॉर्ड और हुलिया रजिस्टर बनाए रखना, घोड़ों को दागने की व्यवस्था देखना तथा सैनिकों और अधिकारियों के वेतन का समय पर वितरण सुनिश्चित करना था, जिससे सैन्य संगठन अनुशासित रहता था।

43. (B) इसकी स्थापना अजमेर से विस्थापित होने के बाद गोविंदराज ने की थी।
1192 में तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की पराजय के पश्चात उनके पुत्र गोविंदराज ने रणथंभौर जाकर चौहान राजवंश की एक नई शाखा की स्थापना की। रणथंभौर का यह राज्य बाद में हम्मीर देव चौहान के शासनकाल में अत्यंत शक्तिशाली और समृद्ध हुआ। 1301 में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर पर आक्रमण करके दुर्ग पर अधिकार कर लिया, जहाँ ऐतिहासिक साका और जौहर हुआ था।

44. (B) राव चूंडा - राव जोधा - राव मालदेव - राव चंद्रसेन
मारवाड़ के राठौड़ शासकों का ऐतिहासिक कालानुक्रमिक क्रम अत्यंत स्पष्ट है। सर्वप्रथम राव चूंडा ने 14वीं शताब्दी के अंत में राठौड़ सत्ता को संगठित किया। उनके बाद राव जोधा ने 1459 में जोधपुर की स्थापना की। 16वीं शताब्दी में राव मालदेव मारवाड़ के सबसे प्रतापी और शक्तिशाली शासक बने, तथा उनके पश्चात उनके पुत्र राव चंद्रसेन ने गद्दी संभाली और मुगलों के खिलाफ आजीवन संघर्ष जारी रखा।

45. (A) राजपूताना में बढ़ते मराठा आक्रमणों के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाना
जुलाई 1734 में मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह द्वितीय की अध्यक्षता में हुरड़ा स्थान पर प्रमुख राजपूत शासकों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य राजपूताना में निरंतर बढ़ते मराठा आक्रमणों, चौथ वसूली और आंतरिक हस्तक्षेप को रोकने के लिए एक संयुक्त राजपूत सैन्य संघ का निर्माण करना था। हालाँकि, आपसी अविश्वास और व्यक्तिगत मतभेदों के कारण हुरड़ा सम्मेलन की योजनाएं व्यावहारिक रूप से सफल नहीं हो सकीं।

46. (B) नियमित भू-राजस्व से इतर जागीरदारों द्वारा लगाए गए विविध उपकर और अतिरिक्त कर
राजस्थान के सामाजिक और आर्थिक इतिहास में 'लाग-बाग' का तात्पर्य उन विविध उपकरों और अतिरिक्त करों से था जो जागीरदार अपने क्षेत्र के किसानों से नियमित भू-राजस्व के अलावा वसूल करते थे। ये कर विभिन्न अवसरों जैसे विवाह, उत्सवों, युद्ध आवश्यकताओं और प्रशासनिक कार्यों के नाम पर लगाए जाते थे। लाग-बाग प्रणाली के कारण किसानों पर अत्यधिक वित्तीय भार पड़ता था, जिसका बाद में किसान आंदोलनों के दौरान कड़ा विरोध किया गया।

47. (B) अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान
आमेर के सवाई जयसिंह द्वितीय एक निष्ठावान शास्त्रज्ञ और वैदिक परंपराओं के समर्थक थे। उन्होंने प्राचीन हिंदू शाही गरिमा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से 18वीं शताब्दी में भव्य 'अश्वमेध यज्ञ' का आयोजन करवाया। मध्यकालीन भारत में सदियों बाद आयोजित इस दुर्लभ वैदिक अनुष्ठान को संपन्न कराकर उन्होंने अपनी सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतिष्ठा को पूरे भारत में स्थापित किया। इस अनुष्ठान के अवसर पर अनेक प्रसिद्ध विद्वानों और पंडितों को आमंत्रित किया गया था।

48. (C) राजा मान सिंह
1576 में हुए प्रसिद्ध हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सम्राट अकबर की सेना का मुख्य सेनापति आमेर का कछवाहा राजा मान सिंह प्रथम था। अकबर ने महाराणा प्रताप को अधीनता स्वीकार कराने के उद्देश्य से मान सिंह को एक विशाल मुगल सेना के साथ मेवाड़ भेजा था। इस ऐतिहासिक युद्ध में मान सिंह ने मुगल मोर्चे की कमान संभाली, जबकि महाराणा प्रताप ने राजपूत और भील सेना का नेतृत्व करते हुए अभूतपूर्व वीरता का प्रदर्शन किया।

49. (A) केवल I, II और III
1576 के हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना का स्वरूप विविध और निष्ठावान था। उनकी सेना में अफगान सेनापति हाकिम खान सूर हरावल दस्ते का नेतृत्व कर रहे थे, भील नेता राणा पूंजा अपनी धनुर्धर टुकड़ी के साथ डटे थे और झाला बीदा ने प्रताप के प्राणों की रक्षा के लिए स्वयं का बलिदान दिया। हसन खान मेवाती का संबंध खानवा के युद्ध से था, इसलिए केवल पहले तीन व्यक्तित्व हल्दीघाटी से संबंधित हैं।

50. (C) 'जागीर' सामंत की निरपेक्ष, स्थायी और शर्तहीन निजी संपत्ति थी।
राजपूत व्यवस्था में जागीर सामंत की निरपेक्ष या शर्तहीन निजी संपत्ति नहीं होती थी। जागीर का स्वामित्व शासक की कृपा और सामंत के सैन्य दायित्वों ('चाकरी') की पूर्ति पर निर्भर करता था। यदि कोई जागीरदार राज्य के प्रति निष्ठा नहीं रखता था या अपनी सैन्य सेवाएँ देने में विफल रहता था, तो शासक को उसकी जागीर जब्त करने या किसी अन्य को हस्तांतरित करने का पूर्ण कानूनी अधिकार होता था, इसलिए यह असत्य है।

Click Here to Buy book on Flipkart

51. (C) परगना के स्थायी राजस्व रिकॉर्ड और कृषि आंकड़ों को बनाए रखना
मध्यकालीन राजपूत राजस्व प्रशासन में परगना स्तर पर 'कानूनगो' एक अत्यंत महत्वपूर्ण अधिकारी था। उसका मुख्य दायित्व परगने के अंतर्गत आने वाली सभी भूमियों, कृषि फसलों के प्रकार, भू-राजस्व की दरों और पुराने मालगुजारी रिकॉर्ड को स्थायी रूप से बनाए रखना था। कानूनगो राजस्व मापों और अभिलेखों की प्रामाणिकता सुनिश्चित करता था, जिससे आमिल और दीवान को राजस्व निर्धारण में सहायता मिलती थी।

52. (B) राणा कुंभा
मेवाड़ के महाराणा कुंभा को उनकी अद्वितीय सैन्य, स्थापत्य और साहित्यिक उपलब्धियों के लिए जाना जाता है। उन्होंने प्रसिद्ध कुंभलगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया और 'कुंभलगढ़ प्रशस्ति' उत्कीर्ण करवाई। वीर विनोद के अनुसार, मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 दुर्गों के निर्माण का श्रेय राणा कुंभा को दिया जाता है। वे कला और साहित्य के महान संरक्षक थे, जिन्हें 'अभिनव भारताचार्य' जैसी प्रतिष्ठित उपाधियों से सम्मानित किया गया था।

53. (C) औरंगजेब
17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुगल साम्राज्य और राजपूत राज्यों के बीच गंभीर संघर्ष मुगल सम्राट औरंगजेब की कट्टर और विस्तारवादी नीतियों के कारण शुरू हुआ। औरंगजेब द्वारा 1679 में पुन: 'जजिया' कर लगाना, मारवाड़ के उत्तराधिकार में सीधा हस्तक्षेप करना और जोधपुर को खालसा घोषित करना जैसे कदमों ने राजपूतों को आक्रोशित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप मेवाड़ और मारवाड़ ने मिलकर मुगलों के खिलाफ एक दीर्घकालिक संयुक्त प्रतिरोध आंदोलन शुरू किया।

54. (D) I, II और III
राजपूत राज्यों में भू-राजस्व निर्धारण की तीनों प्रणालियाँ प्रचलित थीं। कंकूत प्रणाली में खड़ी फसल का अनुमान लगाकर कर निश्चित किया जाता था। बटाई प्रणाली के अंतर्गत कटाई के पश्चात अनाज का भौतिक रूप से किसान और राज्य के मध्य विभाजन किया जाता था। वहीं मुकाता व्यवस्था एक संविदात्मक पट्टा प्रणाली थी जिसमें निश्चित राशि के बदले राजस्व संग्रहण का अधिकार दिया जाता था। इस प्रकार तीनों दिए गए विवरण पूरी तरह सही हैं।

55. (A) जब भी मांग की जाए, राज्य को घुड़सवारों का एक निश्चित दस्ता प्रदान करना
राजपूत सामंती व्यवस्था में 'चाकरी' का अर्थ जागीरदार द्वारा अपने शासक के प्रति अनिवार्य सैन्य सेवा का पालन करना था। जब भी राज्य को आवश्यकता होती थी या युद्ध की स्थिति उत्पन्न होती थी, तो जागीरदार अपनी स्वीकृत 'रेख' के अनुसार निश्चित संख्या में सुसज्जित घुड़सवार सैनिक लेकर शासक की सेवा में उपस्थित होने के लिए कानूनी रूप से बाध्य था। इस दायित्व के बिना जागीर का अधिकार सुरक्षित नहीं रहता था।

56. (C) चौथ
दिए गए करों में से 'चौथ' असंगत है क्योंकि यह राजपूत राज्यों द्वारा लगाया गया कोई आंतरिक कर नहीं था, बल्कि मराठों द्वारा पड़ोसी क्षेत्रों से वसूल किया जाने वाला एक चौथाई सैन्य उपकर था। इसके विपरीत, चंवरी कर (पुत्री के विवाह पर), तलवार बंधाई (उत्तराधिकार शुल्क) और न्योता कर विशेष अवसरों पर राजपूत शासकों और जागीरदारों द्वारा अपनी प्रजा पर लगाए जाने वाले पारंपारिक प्रशासनिक कर थे।

57. (B) करौली
ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1817 में शुरु की गई अधीनस्थ पार्थक्य नीति के तहत संधि पर हस्ताक्षर करने वाली राजपूताना की पहली रियासत करौली थी। करौली के महाराजा हरबक्ष पाल सिंह ने नवंबर 1817 में अंग्रेजों के साथ इस औपचारिक संधि पर हस्ताक्षर किए। इसके बाद कोटा, जोधपुर, उदयपुर और जयपुर जैसी अन्य रियासतों ने भी अंग्रेजों के साथ संधियाँ कीं, जिससे संपूर्ण राजपूताना पर ब्रिटिश औपनिवेशिक सर्वोपरिता का दौर प्रारंभ हो गया।

58. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजपूत राज्यों की पारंपरिक न्याय व्यवस्था में शासक का स्थान सर्वोच्च था। शासक का दरबार दीवानी और आपराधिक दोनों प्रकार के विवादों में अंतिम अपीलीय न्यायालय के रूप में कार्य करता था। वहीं, ग्रामीण और स्थानीय स्तर पर मुकदमों का निपटारा मुख्य रूप से स्थानीय रीति-रिवाजों और जाति पंचायतों के माध्यम से आपसी सहमति तथा मध्यस्थता से होता था। यह द्विस्तरीय व्यवस्था न्याय वितरण को त्वरित और सुलभ बनाए रखने में सहायक थी।

59. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
1527 के खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा के विशाल राजपूत संघ की पराजय का मुख्य कारण बाबर की श्रेष्ठ सैन्य तकनीक थी। बाबर के पास तोपखाना और बंदूकें थीं, जिनका भारत में नया प्रयोग हुआ था। इसके अतिरिक्त, बाबर ने उस्मानी युद्ध नीति तथा 'तुलुगमा' घेराबंदी पद्धति का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया। पारंपरिक राजपूत युद्ध पद्धतियाँ इस आधुनिक तोपखाने और सैन्य व्यूह-रचना का सामना करने में असमर्थ सिद्ध हुईं, जिससे बाबर को विजय मिली।

60. (B) शिशु राजकुमार अजीत सिंह के लिए मारवाड़ का सिंहासन सुरक्षित करना
मारवाड़ के स्वामीभक्त वीर दुर्गादास राठौड़ का ऐतिहासिक संघर्ष मुख्य रूप से महाराजा जसवंत सिंह के अल्पवयस्क पुत्र राजकुमार अजीत सिंह के अधिकारों की रक्षा के लिए था। औरंगजेब द्वारा जोधपुर पर कब्जा करने और अजीत सिंह को बंदी बनाने के प्रयासों के खिलाफ दुर्गादास ने लगभग तीस वर्षों तक मुगलों से छापामार युद्ध लड़ा। उनका एकमात्र लक्ष्य मारवाड़ का सिंहासन अजीत सिंह के लिए सुरक्षित करना और मारवाड़ की स्वतंत्रता बहाल करना था।

Downloaded from www.pdf.tube

और प्रशासनिक मामले आमतौर पर पंचकुल या ग्राम पंचायत द्वारा निपटाए जाते थे, जिसमें स्थानीय बुजुर्ग शामिल होते थे। इसके साथ ही, ग्राम स्तर पर 'पटवारी' नामक अधिकारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था, जिसका मुख्य दायित्व भू-राजस्व के रिकॉर्ड रखना, फसलों का विवरण दर्ज करना और राजस्व संग्रहण में प्रशासनिक सहयोग प्रदान करना था।

21. (A) भाटी राजवंश
भाटी राजवंश ने राजस्थान के सुदूर पश्चिमी थार मरुस्थल में स्थित जैसलमेर पर अपना दीर्घकालिक शासन स्थापित किया था। स्वयं को चंद्रवंशी परंपरा से जोड़ने वाले भाटी शासकों ने 1156 में जैसलमेर दुर्ग की स्थापना की। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण भाटी राजपूतों ने पश्चिमी सीमाओं की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उत्तर-पश्चिम से होने वाले विदेशी आक्रमणों का डटकर मुकाबला किया, जिससे उन्हें 'उत्तर भड़ किवाड़' की उपाधि भी प्राप्त हुई।

22. (D) सवाई जयसिंह द्वितीय - देबारी समझौता (1708)
देबारी समझौता 1708 में मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह द्वितीय, मारवाड़ के महाराजा अजीत सिंह और आमेर के सवाई जयसिंह द्वितीय के बीच हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगलों द्वारा छीने गए आमेर और मारवाड़ के राज्यों को पुनः प्राप्त करना था। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि पुरंदर की संधि मिर्जा राजा जयसिंह से जुड़ी है तथा बेसिन एवं इलाहाबाद की संधियाँ भिन्न ऐतिहासिक संदर्भों से संबंधित हैं।

23. (B) राजपूत जागीरदारी व्यवस्था कुल की नातेदारी और रक्त संबंधों (भाईबंट) पर आधारित थी।
राजपूत जागीरदारी व्यवस्था की मूल विशेषता इसका कुलगत और नातेदारी आधारित होना था, जिसे 'भाईबंट' प्रणाली कहा जाता था। इसके अंतर्गत जागीरदार स्वयं को शासक का केवल अधीनस्थ नहीं बल्कि उसी वंश और रक्त का सह-भागी मानते थे। यह व्यवस्था मुगल मनसबदारी प्रणाली से पूरी तरह भिन्न थी, क्योंकि मुगल मनसब गैर-वंशानुगत होते थे और मनसबदारों को नियमित स्थानांतरण के अधीन रखा जाता था, जबकि राजपूत जागीरें प्रायः वंशानुगत अधिकार में रहती थीं।

24. (C) केवल I, II और IV
1817-18 में राजपूत राज्यों और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच हस्ताक्षरित अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों के अनुसार राजपूत राज्यों ने अपनी विदेश नीति अंग्रेजों को सौंप दी और निश्चित वार्षिक खिराज देना स्वीकार किया। बदले में अंग्रेजों ने राज्यों की बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा का वचन दिया। इन संधियों के तहत राज्यों की आंतरिक प्रशासनिक स्वायत्तता सैद्धांतिक रूप से बनाए रखी गई थी, इसलिए तीसरा कथन इस संदर्भ में सही नहीं है।

25. (D) खींची - जैसलमेर
चौहान राजवंश की विभिन्न शाखाओं ने राजस्थान के विविध क्षेत्रों में शासन किया। हाड़ा चौहानों ने कोटा और बूंदी में, देवड़ा चौहानों ने सिरोही में और सोनगरा चौहानों ने जालौर में अपनी सत्ता स्थापित की थी। इसके विपरीत, खींची चौहानों का मुख्य सत्ता केंद्र गागरोन (झालावाड़) था, जबकि जैसलमेर पर भाटी राजवंश का शासन था। इसलिए खींची शाखा का संबंध जैसलमेर से जोड़ना पूरी तरह असंगत और ऐतिहासिक रूप से गलत है।

26. (A) एक कार्यकारी अधिकारी जो स्थानीय आपराधिक मामलों को संभालता था और कानून व्यवस्था बनाए रखता था
मध्यकालीन राजपूत प्रशासन में 'फौजदार' एक महत्वपूर्ण कार्यकारी और न्यायिक अधिकारी होता था। उसका मुख्य उत्तरदायित्व अपने अधिकार क्षेत्र या परगने में कानून और व्यवस्था बनाए रखना, आपराधिक मामलों का त्वरित निपटारा करना तथा शांति व्यवस्था को भंग करने वाले तत्वों को नियंत्रित करना था। वह सैन्य बल की सहायता से स्थानीय अपराधों पर अंकुश लगाता था और नागरिक प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने में राज्य की मदद करता था।

27. (B) 1727
आमेर के दूरदर्शी कछवाहा शासक सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1727 में नए नियोजित शहर जयपुर की स्थापना की थी। इस शहर की रूपरेखा प्रसिद्ध वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य ने भारतीय शिल्प शास्त्र और वास्तु सिद्धांतों के आधार पर तैयार की थी। ग्रिड प्रणाली पर आधारित इस शहर की चौड़ी सड़कों, चौपड़ों और व्यवस्थित आवासीय ब्लॉकों ने जयपुर को मध्यकालीन भारत के सबसे आधुनिक और सुंदर सुनियोजित शहरों में से एक बना दिया।

NODIA

28. (B) राजपूत राज्यों ने आंतरिक कूटनीति को विनियमित करने के लिए एक स्थायी रूप से एकीकृत केंद्रीय संघीय सरकार बनाए रखी।
मध्यकालीन राजपूत राज्यों में कोई एकीकृत या स्थायी केंद्रीय संघीय सरकार विद्यमान नहीं थी। प्रत्येक राजपूत रियासत पूरी तरह से संप्रभु और स्वतंत्र इकाई के रूप में कार्य करती थी। राज्यों के बीच संबंध वैवाहिक गठबंधनों, आपसी समझौतों और कूटनीतिक दूतों ('वकील') के माध्यम से संचालित होते थे। दो शासकों के बीच होने वाले औपचारिक पत्राचार को 'खरीता' कहा जाता था, परंतु अंतर-राज्यीय मामलों को विनियमित करने वाली कोई स्थायी केंद्रीय संस्था कभी नहीं रही।

29. (A) केवल I और II
राजपूत राजनीतिक व्यवस्था कुलगत अवधारणा पर आधारित थी जहाँ राज्य को शासक वंश की सामूहिक संपत्ति माना जाता था। शासक को निरंकुश स्वामी के बजाय अपने सामंतों के बीच 'समकक्षों में प्रथम' माना जाता था। हालाँकि, सामंतों को सैन्य दायित्वों से छूट नहीं थी; उन्हें 'चाकरी' प्रथा के अंतर्गत मांग किए जाने पर शासक को सैन्य सेवाएँ और निश्चित संख्या में सैनिक प्रदान करना अनिवार्य था, इसलिए तीसरा कथन असत्य है।

30. (C) मराठों द्वारा निरंतर हस्तक्षेप और वित्तीय वसूली (उगाही)
18वीं शताब्दी में राजपूत राज्यों के पतन का सबसे प्रमुख तात्कालिक कारण मराठों का निरंतर हस्तक्षेप और भारी वित्तीय वसूली थी। मुगल साम्राज्य के कमजोर होने के बाद मराठा पेशवाओं और सरदारों ने राजपूत राज्यों के आंतरिक

जयसिंह द्वितीय 18वीं शताब्दी (1688-1743) के शासक थे, जिनका समकालीन संबंध मुगल सम्राट औरंगजेब, मुहम्मद शाह तथा मराठों से था, न कि अफगान शासक शेरशाह सूरी से।

72. (B) महाराणा अमर सिंह प्रथम
1615 में मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह प्रथम ने मुगल सम्राट जहांगीर के साथ एक ऐतिहासिक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे दशकों से चला आ रहा मुगल-मेवाड़ संघर्ष समाप्त हो गया। इस संधि में मेवाड़ की संप्रभुता और सम्मान का ध्यान रखा गया था, जिसके तहत महाराणा को व्यक्तिगत रूप से मुगल दरबार में उपस्थित होने से छूट दी गई तथा चित्तौड़गढ़ दुर्ग की मरम्मत न करने की शर्त पर उसे वापस सौंपा गया।

73. (B) एक ऐसी व्यवस्था जहाँ राज्य शासक कुल की संयुक्त संपत्ति होता था, जिसमें सगे-संबंधी ठिकाने धारण करते थे
राजपूत समाज की सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था में 'भाईबंट' प्रणाली का अत्यंत विशिष्ट स्थान था। इस प्रणाली के तहत संपूर्ण राज्य को केवल शासक की व्यक्तिगत संपत्ति न मानकर पूरे शासक कुल या वंश की संयुक्त संपत्ति माना जाता था। इसके अनुसार शासक के सगे-संबंधी, भाई-बंधु और नजदीकी रिश्तेदार राज्य के विभिन्न इलाकों में ठिकाने और जागीरें धारण करते थे तथा राज्य प्रशासन में भागीदार बनते थे।

74. (B) केवल III
दिए गए युग्मों में केवल तीसरा युग्म असंगत है, क्योंकि 'मीर बख्शी' केंद्रीय सैन्य प्रशासन का प्रमुख अधिकारी होता था, न कि ग्राम पंचायत का मुखिया। ग्राम पंचायत के प्रमुख को आमतौर पर पटेल या चौधरी कहा जाता था। अन्य युग्म सही हैं: मुसाहिब राज्य के मुख्य सलाहकार या प्रधानमंत्री का पद था, खानसामा शाही कारखानों और घरेलू व्यवस्था का प्रभारी था तथा शिकदार स्थानीय सैन्य कमांडर होता था।

75. (C) मुहणोत नैणसी
17वीं शताब्दी के मारवाड़ के प्रसिद्ध इतिहासकार और जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के दीवान मुहणोत नैणसी ने "मारवाड़ रा परगना री विगत" नामक ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में मारवाड़ के प्रत्येक परगने की जनसंख्या, भू-राजस्व आंकड़ों, फसलों और सामाजिक स्थिति का इतना विस्तृत और प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया गया है कि इतिहासकार इसे बहुधा "राजपूताना का पहला गजेटियर" कहकर संबोधित करते हैं।

76. (C) शाही दरबारों में राज्य के स्थायी कूटनीतिक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना
मध्यकालीन राजपूत कूटनीतिक व्यवस्था में 'वकील' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती थी। वकील कोई आधुनिक कानूनी अधिवक्ता न होकर एक उच्च स्तरीय कूटनीतिक प्रतिनिधि होता था। उसे राजपूत रियासतों द्वारा मुगल दरबार या अन्य पड़ोसी राज्यों के दरबारों में अपने राज्य के हितों का प्रतिनिधित्व करने, संधियों पर वार्ता करने, राजनीतिक सूचनाएँ भेजने और कूटनीतिक संबंध सुदृढ़ बनाए रखने के लिए स्थायी रूप से नियुक्त किया जाता था।

77. (D) पृथ्वीराज तृतीय ने 1192 में तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गोरी को सफलतापूर्वक पराजित किया था।
अजमेर के चौहान इतिहास के संदर्भ में यह कथन असत्य है क्योंकि पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने 1191 में तराइन के प्रथम युद्ध में तो मोहम्मद गोरी को पराजित किया था, परंतु 1192 में हुए तराइन के द्वितीय युद्ध में उन्हें गोरी के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा था। अन्य सभी कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं, जैसे अजयराज द्वारा अजमेर की स्थापना, अर्णोराज द्वारा आना सागर झील का निर्माण और विग्रहराज चतुर्थ की दिल्ली विजय।

78. (C) राणा कुंभा
मेवाड़ के महान शासक महाराणा कुंभा ने 1437 में सारंगपुर के युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को बुरी तरह पराजित किया था। इस भव्य ऐतिहासिक विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में प्रसिद्ध 'विजय स्तंभ' (कीर्ति स्तंभ) का निर्माण करवाया था। नौ मंजिला यह स्थापत्य कलाकृतियों और हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित है, जिसे भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश भी कहा जाता है।

79. (D) I, II और III
16वीं और 17वीं शताब्दियों में मुगल-राजपूत संबंध जटिल रहे। औरंगजेब ने पूर्ववर्तियों की वैवाहिक नीति को लगभग बंद कर दिया था। अकबर, जहांगीर और शाहजहां के समय राजपूत शासकों को उच्च मनसब दिए गए और उन्हें महत्वपूर्ण प्रांतों का सूबेदार बनाया गया। इसके अतिरिक्त, राजपूत शासकों को अपनी पैतृक 'वतन जागीर' पर स्थायी अधिकार प्राप्त था, जो आम मुगल जागीरों की भांति आवधिक स्थानांतरण के अधीन नहीं थी।

80. (B) सम्मान और राजनीतिक निष्ठा के प्रतीक के रूप में शासक को औपचारिक रूप से दी जाने वाली भेंट (खिराज)
राजपूत प्रशासनिक और सामंती परंपरा में 'नजराना' एक औपचारिक वित्तीय या वस्तु रूपी भेंट थी। यह भेंट सामंतों, जागीरदारों, व्यापारियों या विदेशी प्रतिनिधियों द्वारा शासक के प्रति अपने सम्मान, अधीनता और राजनीतिक निष्ठा को प्रदर्शित करने के लिए विशेष अवसरों पर दी जाती थी। जैसे राज्याभिषेक, शाही जन्मदिवस, विजय उत्सवों या दरबार में उपस्थिति के समय नजराना देना एक स्थापित कूटनीतिक और प्रशासनिक शिष्टाचार माना जाता था।

81. (C) मेवाड़ का गुहिलौत/सिसोदिया राजवंश
मेवाड़ के गुहिलौत/सिसोदिया राजवंश ने मुगल साम्राज्य के निरंतर दबाव और सैन्य आक्रमणों के बावजूद अपनी स्वाभिमान और स्वतंत्रता की परंपरा को बनाए रखा। आमेर, बीकानेर और जैसलमेर जैसी रियासतों के विपरीत, मेवाड़ के सिसोदिया शासकों ने मुगल सम्राटों के साथ कोई भी वैवाहिक संबंध स्थापित करने से सख्त इंकार कर दिया। 1615 की संधि में भी महाराणा ने वैवाहिक संबंधों से मुक्त रहने की शर्त को मुगलों से स्वीकार करवा लिया था।

82. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
जैसलमेर का प्रसिद्ध सोनार किला भाटी शासकों का मुख्य केंद्र था, जो 1350 ईस्वी में अमीर अली के आक्रमण के समय

Click Here to Buy book on Amazon

हुए अपने प्रसिद्ध 'अर्द्ध-साका' (जहाँ केसरिया तो हुआ परंतु जौहर नहीं हो सका) के लिए जाना जाता है। हालाँकि, कथन II गलत है क्योंकि भाटी राजवंश पूर्वी उपजाऊ मैदानों में नहीं, बल्कि राजस्थान के सुदूर पश्चिमी शुष्क थार मरुस्थल क्षेत्र को नियंत्रित और प्रशासित करता था।

83. (B) किसी किसान की पुत्री के विवाह के समय
'चंवरी' कर राजपूताना के कुछ जागीरदारों द्वारा अपनी प्रजा पर लगाया जाने वाला एक अत्यंत अन्यायपूर्ण प्रशासनिक कर था। यह कर तब वसूला जाता था जब किसी किसान या प्रजाजन की पुत्री का विवाह होता था। किसान को अपनी बेटी के विवाह मंडप (चंवरी) की स्थापना से पूर्व जागीरदार को एक निश्चित कर राशि चुकानी पड़ती थी। बिजोलिया किसान आंदोलन के दौरान इस कर का किसानों ने व्यापक विरोध किया था।

84. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
18वीं शताब्दी में मराठों के बढ़ते प्रभुत्व और आक्रमणों के सामने राजपूत राज्य संगठित प्रतिरोध करने में असफल रहे। यद्यपि 1734 में हुरड़ा सम्मेलन के माध्यम से एक संयुक्त राजपूत मोर्चा बनाने का प्रयास किया गया था, परंतु आपसी ईर्ष्या, अविश्वास और आंतरिक उत्तराधिकार विवादों के कारण यह योजना विफल हो गई। इस संगठित एकता के अभाव का लाभ उठाकर मराठों ने राजपूत राज्यों से भारी चौथ वसूल की और उन्हें कमजोर किया।

85. (A) गाँव का मुखिया जो राजस्व संग्रहण और व्यवस्था बनाए रखने में सहायता करता था
मध्यकालीन राजस्थान की ग्रामीण प्रशासनिक व्यवस्था में 'पटेल' (जिसे चौधरी या मुकादम भी कहा जाता था) गाँव का पारंपरिक मुखिया होता था। पटेल का मुख्य कार्य ग्रामीण स्तर पर कानून और शांति व्यवस्था बनाए रखना, स्थानीय विवादों को सुलझाना तथा राज्य के अधिकारियों को भू-राजस्व एकत्र करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करना था। वह राज्य के प्रशासनिक तंत्र और ग्रामीण समुदाय के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका निभाता था।

86. (B) एक ऐसी व्यवस्था जहाँ एक निश्चित राशि के लिए कर वसूलने का अधिकार पट्टे पर दिया जाता था
18वीं शताब्दी में राजपूताना में 'इजारा' (जिसे मुकाता भी कहा जाता था) व्यवस्था का व्यापक प्रसार हुआ। यह एक प्रकार की राजस्व ठेकेदारी प्रणाली थी, जिसके अंतर्गत राज्य किसी विशेष परगने या गाँव से भू-राजस्व वसूल करने का अधिकार उच्चतम बोली लगाने वाले व्यक्ति या बिचौलिए को एक निश्चित राशि के पट्टे पर दे देता था। यद्यपि इससे राज्य को निश्चित आय मिलती थी, परंतु इससे किसानों का अत्यधिक शोषण होने लगा।

87. (A) खातोली का युद्ध (1517) - राणा सांगा बनाम इब्राहिम लोदी
खातोली का युद्ध 1517 में मेवाड़ के प्रतापी शासक महाराणा सांगा और दिल्ली के लोदी वंश के सुल्तान इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया था, जिसमें सांगा ने लोदी को करारी शिकस्त दी थी। अन्य विकल्प असत्य हैं क्योंकि 1519 का गागरोन युद्ध राणा सांगा और महमूद खिलजी द्वितीय के बीच हुआ था, 1544 का गिरि-सुमेल युद्ध मालदेव और शेरशाह सूरी के मध्य लड़ा गया था, जबकि 1747 का राजमहल युद्ध ईश्वरी सिंह से संबंधित था।

88. (B) राजपूत सामंतवाद ने केवल संविदात्मक कार्यकाल के बजाय कुल की नातेदारी और रक्त भाईचारे पर जोर दिया।
राजपूत सामंतवाद यूरोपीय सामंतवाद से अपनी मूल संरचना में पूरी तरह भिन्न था। जहाँ यूरोपीय सामंतवाद लॉर्ड और वासल के बीच संविदात्मक संबंधों और भूमि पट्टे पर आधारित था, वहीं राजपूत सामंतवाद कुलगत नातेदारी, एक ही वंश परंपरा और रक्त भाईचारे ('भाईबंट') पर आधारित था। राजपूत सामंत शासक को केवल अपना स्वामी न मानकर अपने ही कुल का 'समकक्षों में प्रथम' मानते थे, जो इस व्यवस्था की अनूठी विशेषता थी।

NODIA

89. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
राजपूत इतिहास के महत्वपूर्ण समझौतों का सही सुमेल इस प्रकार है। देबारी समझौता (1708) औरंगजेब की मृत्यु के बाद बहादुर शाह प्रथम के विरुद्ध बना राजपूत गठबंधन था। हुरड़ा सम्मेलन (1734) मराठा आक्रमणों के विरुद्ध राजपूतों का एक निष्फल प्रयास था। 1615 की संधि जहांगीर और महाराणा अमर सिंह के मध्य हुई, जिसने मुगल-मेवाड़ संघर्ष का अंत किया। वहीं 1817-18 की संधियों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सर्वोपरिता स्थापित की।

90. (C) स्थानीय खतरों से गाँव की सुरक्षा के बदले कर-मुक्त भूमि धारण करने वाले भूस्वामी
राजपूत ग्रामीण संरचना में 'भूमिया' एक विशिष्ट प्रकार के भूस्वामी होते थे। ये वे राजपूत योद्धा थे जिन्हें स्थानीय स्तर पर गाँव की रक्षा करने, लुटेरों से संपत्ति बचाने और शांति बनाए रखने के बदले कर-मुक्त भूमि (भूम) प्रदान की जाती थी। भूमिया किसान न होकर एक स्वाभिमानी रक्षक वर्ग था, जो वंशानुगत रूप से इस भूमि का उपभोग करता था और आवश्यकता पड़ने पर गाँव तथा राज्य के लिए अपने प्राण न्योछावर करता था।

91. (B) रावल लूणकरण
जैसलमेर दुर्ग का प्रसिद्ध 'अर्द्ध-साका' 16वीं शताब्दी में भाटी शासक रावल लूणकरण के शासनकाल के दौरान घटित हुआ था। जब कंधार के अपदस्थ शासक अमीर अली ने विश्वासघात करके दुर्ग पर आक्रमण किया, तो राजपूत वीरों ने भीषण युद्ध करते हुए केसरिया बाना पहनकर वीरतापूर्वक युद्ध किया। हालाँकि, राजपूतों की विजय होने के कारण महिलाओं द्वारा 'जौहर' अनुष्ठान नहीं किया गया, इसलिए इस ऐतिहासिक घटना को 'अर्द्ध-साका' कहा जाता है।

92. (D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
राजपूत सैन्य रणनीति में खुले मैदान की सीधी मुठभेड़ को दुर्ग के भीतर छिपने की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी जाती थी, इसलिए कथन I असत्य है। हालाँकि, कथन II पूर्णतः सत्य है

क्योंकि जब शत्रु की विशाल सेना दुर्ग को घेर लेती थी और रसद समाप्त होने पर हार बिल्कुल निश्चित हो जाती थी, तब स्त्रियाँ 'जौहर' (अग्नि स्नान) करती थीं और पुरुष केसरिया वस्त्र धारण कर 'साका' के लिए अंतिम युद्ध में उतरते थे।

93. (D) दार-उल-हरब
राजपूत राज्यों के केंद्रीय प्रशासनिक सचिवालय (दीवान खाना) में बख्शीखाना (सैन्य विभाग), मीर मुंशी (पत्र व्यवहार विभाग) और कारखाना (शाही आवश्यकताओं तथा उत्पादन का विभाग) जैसी प्रमुख शाखाएं शामिल होती थीं। इसके विपरीत, 'दार-उल-हरब' कोई प्रशासनिक विभाग या कार्यालय नहीं था, बल्कि यह एक इस्लामी धार्मिक-राजनीतिक शब्दावली थी जिसका उपयोग गैर-मुस्लिम शासित क्षेत्रों को संदर्भित करने के लिए किया जाता था, इसलिए यह सचिवालय का हिस्सा नहीं था।

94. (A) करौली - कोटा - जोधपुर - जयपुर
1817-18 के दौरान राजपूताना रियासतों द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ पार्थक्य की संधियों पर हस्ताक्षर करने का कालानुक्रमिक क्रम अत्यंत स्पष्ट है। सबसे पहले करौली ने नवंबर 1817 में संधि की। इसके पश्चात् कोटा ने दिसंबर 1817 में संधि पर हस्ताक्षर किए। तत्पश्चात् 1818 के प्रारंभ में जोधपुर (जनवरी 1818) और फिर जयपुर (अप्रैल 1818) ने अंग्रेजों के साथ अपनी औपचारिक रक्षात्मक संधियाँ संपन्न की थीं।

95. (B) राज्य के आंतरिक मामलों में क्रमिक हस्तक्षेप के साथ ब्रिटिश संरक्षण
1818 तक राजपूताना में स्थापित ब्रिटिश सर्वोपरिता का प्राथमिक परिणाम यह हुआ कि राजपूत राज्यों को बाहरी आक्रमणों से ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त हो गया। यद्यपि संधियों में राज्यों की आंतरिक स्वायत्तता का वादा किया गया था, परंतु व्यवहार में ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों ने धीरे-धीरे रियासतों के आंतरिक प्रशासन, उत्तराधिकार और वित्तीय मामलों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया, जिससे राजपूत शासकों की वास्तविक शक्ति और संप्रभुता का क्षरण होने लगा।

96. (D) राजपूत राज्यों ने एक अत्यधिक अनुशासित, आधुनिक यूरोपीय शैली की पैदल सेना बनाए रखी जिसने मराठा विजयों को रोका।
यह कथन निश्चित रूप से असत्य है क्योंकि राजपूत राज्यों ने समय पर आधुनिक यूरोपीय शैली की अनुशासित पैदल सेना और तोपखाने का विकास नहीं किया था। वे मुख्यतः अपनी पारंपरिक घुड़सवार सेना और सामंती दस्तों पर ही निर्भर रहे, जो मराठों तथा बाद में अंग्रेजों की आधुनिक सैन्य तकनीकों के सामने विफल सिद्ध हुए। गृहयुद्धों, मराठा शोषण और आर्थिक बदहाली से राजपूत राज्यों का सैन्य ढांचा और राजनीतिक प्रभाव पूरी तरह टूट चुका था।

97. (A) भरण-पोषण के लिए छोटी जागीरें पाने वाले छोटे भाई या पार्श्व संबंधी
राजपूत राजनीतिक और सामंती व्यवस्था में 'छुटभई' शब्द शासक या मुख्य जागीरदार के छोटे भाइयों और निकटतम पार्श्व संबंधियों को संदर्भित करता था। 'भाईबंट' प्रणाली के नियम के अनुसार, चूँकि ज्येष्ठाधिकार के तहत मुख्य राज्य या बड़ी जागीर सबसे बड़े पुत्र को मिलती थी, इसलिए छोटे भाइयों (छुटभई) को उनके जीवन-यापन और भरण-पोषण के लिए छोटी-छोटी जागीरें या गाँव आवंटित किए जाते थे, ताकि वे अपना जीवन यापन कर सकें।

98. (B) राव चंद्रसेन
मारवाड़ के स्वतंत्रप्रेमी शासक राव चंद्रसेन ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और पहाड़ियों से संघर्ष जारी रखा। मुगलों द्वारा जोधपुर पर अधिकार कर लेने के बाद, अकबर के निरंतर सैन्य दबाव के कारण राव चंद्रसेन की स्थिति कमजोर हुई। परिस्थितियों के कारण उनके भाई मोटा राजा उदय सिंह को मुगल दरबार में शामिल होना पड़ा, जिससे मारवाड़ का मुगलों के प्रति औपचारिक झुकाव और अधीनता का दौर प्रारंभ हुआ, जिसका चंद्रसेन ने अंत तक विरोध किया।

99. (B) केवल II, III और IV
राजपूत राज्यों की न्याय व्यवस्था में शक्तियों का कोई पृथक्करण नहीं था और शासक ही दीवानी व आपराधिक मामलों में सर्वोच्च न्यायाधीश होता था, इसलिए पहला कथन असत्य है। हालाँकि, अन्य तीनों कथन सत्य हैं। न्याय प्रशासन में हिंदू धर्मग्रंथों और प्रथागत प्रथाओं का पालन किया जाता था। ग्रामीण स्तर पर जाति पंचायतें दीवानी विवाद निपटाती थीं, जबकि परगना स्तर पर फौजदार और हाकिम शांति व्यवस्था व आपराधिक न्याय देखते थे।

100. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
आमेर के सवाई जयसिंह द्वितीय न केवल एक महान खगोलशास्त्री थे, बल्कि एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने राजपूत समाज में व्याप्त बालिका भ्रूणहत्या जैसी कुरीतियों को रोकने के उद्देश्य से विवाह में होने वाले अत्यधिक फिजूलखर्चों को नियंत्रित करने हेतु नियम बनाए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने आम जनता की सुविधा के लिए सराय और बावड़ियों का निर्माण कराया तथा विभिन्न हिंदू धार्मिक संप्रदायों के मध्य जारी सैद्धांतिक विवादों को सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

4. गोविंद देव जी मंदिर को संरक्षण

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

35. मध्यकालीन राजस्थान में कृषक वर्ग की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:

(A) उन्हें 'लाग-बाग' कहे जाने वाले अनेक मनमाने उपकरों और करों का सामना करना पड़ता था।
(B) भीषण सूखे के वर्षों के दौरान किसानों को भू-राजस्व देने से पूरी तरह से छूट प्राप्त थी।
(C) किसानों के पास भूमि पर निरपेक्ष स्वामित्व अधिकार थे और वे बेदखली से पूरी तरह सुरक्षित थे।
(D) स्वतंत्रता-पूर्व काल में राजपूताना में किसान आंदोलन पूरी तरह से अज्ञात थे।

36. मध्यकालीन राजस्थान की कृषि व्यवस्था में, राज्य का राजस्व अंश निर्धारित करने के लिए खड़ी फसल की उपज का अनुमान लगाने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता था?

(A) बटाई संग्रह प्रणाली
(B) मुकाता संग्रह प्रणाली
(C) हासिल संग्रह प्रणाली
(D) कूता या कूंता

37. राजस्थान में जागीरदारों द्वारा किसानों पर लगाए जाने वाले 'लाग-बाग' (उपकर) का एक विशिष्ट रूप निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं था?

(A) चंवरी कर (पुत्री के विवाह पर उपकर)
(B) जकात (आय पर धार्मिक कर)
(C) तलवार बंधाई (उत्तराधिकार शुल्क)
(D) कामठा लाग (किले या महल के निर्माण के लिए उपकर)

38. बिजोलिया किसान आंदोलन, जिसने किसानों की दुर्दशा को उजागर किया, के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह भारत में सबसे लंबे समय तक चलने वाला अहिंसक किसान आंदोलन था।
II. यह मुख्य रूप से सीधे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ निर्देशित था।
III. यह जागीरदार द्वारा 84 विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लगाए जाने के विरोध के रूप में शुरू हुआ था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

39. मध्यकालीन राजस्थान में राज्य और जनजातीय समुदायों (जैसे भील और मीणा) के बीच संबंधों के बारे में असत्य कथन की पहचान कीजिए:

(A) बाहरी आक्रमणकारियों के खिलाफ राजपूत शासकों के साथ जनजातीय समुदाय अक्सर छापामार युद्ध में शामिल होते थे।
(B) भील सरदारों के पास मेवाड़ के महाराणाओं के माथे पर राजतिलक करने का पारंपरिक अधिकार था।
(C) कछवाहा राजवंश के उदय से पहले मीणा सरदारों ने ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखा था।
(D) प्राथमिक व्यापारियों के रूप में जनजातीय आबादी शहरी व्यापार में पूरी तरह से एकीकृत थी।

40. मध्यकालीन राजस्थान में निम्नलिखित प्रकार के भू-स्वामित्व पर विचार कीजिए:

I. खालसा (शाही भूमि)
II. सासन/मुआफी (धर्मार्थ अनुदान)
III. जागीर (सामंती आवंटन)

निम्नलिखित में से कौन-सा प्रत्यक्ष राज्य नियंत्रण के सही अवरोही क्रम (सबसे अधिक नियंत्रित से कम नियंत्रित/दान की गई) को निरुपित करता है?

(A) I, III, II
(B) I, II, III
(C) III, I, II
(D) II, III, I

NODIA

41. राजस्थान के सामाजिक ढाँचे में, गोविंद गुरु द्वारा शुरू किए गए 'भगत आंदोलन' का मुख्य उद्देश्य किस समुदाय का सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान करना था?

(A) मेघवाल समुदाय
(B) भील समुदाय
(C) मीणा समुदाय
(D) सहरिया समुदाय

42. मध्यकाल में भील और मीणा जैसे जनजातीय समूहों द्वारा एकत्र किया जाने वाला 'रखवाली' का पारंपरिक अधिकार मूलतः क्या था?

(A) कृषि सुधार के लिए राज्य द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता
(B) यात्रियों और गाँवों पर लगाया जाने वाला एक सुरक्षा कर
(C) स्थानीय देवताओं को नियमित रूप से दिया जाने वाला एक अनिवार्य धार्मिक दान
(D) शाही शिकार अभियानों में भाग लेने के लिए सामंतों द्वारा दिया जाने वाला शुल्क

43. राजस्थान में जनजातीय समुदायों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. हलमा (या हिड़ा) प्रणाली आदिवासियों के बीच आपसी सहयोग और सामुदायिक श्रम की एक पारंपरिक प्रथा है।
II. दापा एक ऐसी प्रथा है जहाँ वर पक्ष वधू के परिवार को वधू-मूल्य देता है।
III. अंग्रेजों द्वारा पारित आपराधिक जनजाति अधिनियम से जनजातीय समुदायों को ऐतिहासिक रूप से छूट प्राप्त

4. एक विधवा जो अपने पति की पगड़ी या व्यक्तिगत प्रतीक को थामकर सती होती है

(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

8. राजस्थान के ऐतिहासिक संदर्भ में, सती प्रथा मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस सामाजिक समूह में देखी जाती थी?
(A) राजपूत अभिजात वर्ग और राजपरिवार
(B) ग्रामीण कृषक वर्ग
(C) पारंपरिक कारीगर समुदाय
(D) स्वदेशी जनजातीय आबादी

9. राजस्थान में सती प्रथा को आधिकारिक रूप से गैर-कानूनी (अवैध) घोषित करने वाली प्रथम रियासत कौन-सी थी?
(A) जयपुर (1844)
(B) बूंदी (1822)
(C) जोधपुर (1841)
(D) मेवाड़ (1860)

10. राजपूत इतिहास में 'साका' शब्द जौहर से गहराई से जुड़ा हुआ है। 'साका' से विशेष रूप से क्या तात्पर्य है?
(A) जौहर करने से पूर्व महिलाओं द्वारा किया जाने वाला औपचारिक अनुष्ठानिक स्नान
(B) जौहर के पश्चात राजपूत पुरुषों द्वारा किया जाने वाला अंतिम आत्मघाती युद्ध प्रहार
(C) जौहर को रोकने के लिए विरोधी सेनाओं के बीच हस्ताक्षरित औपचारिक शांति संधि
(D) जौहर के पश्चात वंश द्वारा मनाया जाने वाला अनिवार्य राजकीय शोक काल

11. राजस्थान में जौहर के निम्नलिखित ऐतिहासिक उदाहरणों पर विचार कीजिए:
I. रानी पद्मिनी के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का जौहर
II. रानी रंगदेवी के नेतृत्व में रणथंभौर का जौहर
III. रानी कर्मावती के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का जौहर
IV. सिवाना का जौहर
निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त घटनाओं के सही कालानुक्रमिक क्रम को निरूपित करता है?
(A) II, I, IV, III
(B) I, II, III, IV
(C) II, IV, I, III
(D) I, III, II, IV

12. रणथंभौर का जौहर (1301 ईस्वी) राजस्थान के इतिहास में अद्वितीय है क्योंकि इसे व्यापक रूप से किस रूप में दर्ज किया गया है?
(A) गैर-राजपूत महिलाओं द्वारा किया गया एकमात्र जौहर
(B) एक ऐसा जौहर जिसमें आक्रमणकारी राजा ने शोक में भाग लिया
(C) एक जल-जौहर (जल में आत्मदाह)
(D) एक जौहर जिसे शाही फरमान द्वारा आधा होने पर रोक दिया गया था

13. जौहर की प्रथा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) इसे आक्रमणकारी सेनाओं से महिलाओं के सम्मान और धर्म की रक्षा का अंतिम चरम उपाय माना जाता था।
(B) इसके साथ प्रायः अंतिम युद्ध के लिए पुरुषों द्वारा केसरिया वस्त्र धारण किया जाता था।
(C) चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक जौहर क्षेत्रीय भाट/चारण साहित्य में सबसे प्रसिद्ध घटनाओं में से हैं।
(D) मुगल साम्राज्य के उदय के पश्चात राजस्थान में यह पूरी तरह से समाप्त हो गया था।

14. मध्यकालीन राजस्थान में, पर्दा प्रथा महिलाओं के किस वर्ग के बीच सबसे सख्ती से लागू की जाती थी?
(A) खेतों में दैनिक कार्य में सक्रिय रूप से संलग्न कृषक महिलाएँ
(B) विभिन्न प्रवासी पशुपालक समुदायों से संबंधित महिलाएँ
(C) अभिजात राजपूत और प्रशासनिक परिवार
(D) शहरी व्यापार और कारीगर श्रेणियों से सक्रिय रूप से जुड़ी महिलाएँ

15. मध्यकालीन राजस्थान में पर्दा प्रथा के सामाजिक प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने औपचारिक सार्वजनिक शिक्षा तक महिलाओं की पहुँच को गंभीर रूप से सीमित कर दिया।
II. इसके कारण महलों में विशेष 'जनाना' कक्षों का स्थापत्य विकास हुआ।
III. इसने राजपरिवार की महिलाओं को अपने व्यक्तिगत वित्त के प्रबंधन से पूरी तरह से बाहर कर दिया।
IV. इसके परिणामस्वरूप बाहरी दुनिया से संवाद करने के लिए महिला दूतों और मध्यस्थों को नियुक्त किया गया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : मध्यकाल में राजपूत महलों की स्थापत्य कला की रूपरेखा में जटिल जालीदार काम और बंद आँगनों की सुविधाएँ तेजी से जोड़ी गईं।
कारण (R) : ये विशेषताएँ पर्दा प्रथा को समायोजित करने के लिए विकसित की गई थीं, जिससे राजपरिवार की महिलाएँ बिना दिखे दरबार की कार्यवाही और जुलूसों को देख सकें।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की

Click Here to Buy book on Flipkart

72. निम्नलिखित में से कौन-सी रियासत 1853 में 'डाकन प्रथा' (डायन प्रथा) को आधिकारिक रूप से प्रतिबंधित करने वाली पहली रियासत थी?
(A) मेवाड़ (उदयपुर)
(B) मारवाड़ (जोधपुर)
(C) हाड़ौती (बूंदी)
(D) ढूँढाड़ (जयपुर)

73. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सामाजिक सुधार कानून को उस रियासत के साथ सही ढंग से सुमेलित करता है जिसने इसे सबसे पहले लागू किया था?
(A) सती प्रथा पर प्रतिबंध - जयपुर राज्य
(B) त्याग प्रथा पर प्रतिबंध - जोधपुर
(C) समाधि प्रथा पर प्रतिबंध - मेवाड़ राज्य
(D) नर बलि पर प्रतिबंध - बीकानेर राज्य

74. 'बेगार' शब्द, जो सामंती राजस्थान में अत्यधिक प्रचलित था और किसान विद्रोहों का एक प्रमुख कारण बना, का अर्थ है:
(A) विशेष रूप से बटाईदारी के लिए किसान परिवारों को दी जाने वाली भूमि
(B) राज्य या जागीरदारों द्वारा कराया जाने वाला अवैतनिक बलपूर्वक श्रम
(C) केवल स्थानीय कारीगरों और बुनकरों पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर
(D) परकोटे वाले नगर में प्रवेश करने वाले व्यावसायिक व्यापारिक सामानों पर चुंगी कर

75. राजस्थान में जागीरदारी और जमींदारी प्रणालियों के बीच अंतर के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) जागीरदारी व्यवस्था के तहत, राजा को किसी भी परिस्थिति में भूमि जब्त करने का कोई अधिकार नहीं था।
(B) ब्रिटिश भारत में राजस्व वसूलने वाले जमींदारों के विपरीत, जागीरदारों के पास प्रशासनिक और न्यायिक शक्तियाँ थीं।
(C) जागीर मुख्य रूप से राज्य को दी जाने वाली सैन्य और प्रशासनिक सेवा के बदले दिया जाने वाला अनुदान था।
(D) भोमिया भू-स्वामियों का एक विशिष्ट वर्ग थे जो स्थानीय गाँव की रक्षा के बदले भूमि धारण करते थे।

76. 'चंवरी कर' एक विवादित कर था जिसने बिजोलिया किसान आंदोलन में महत्वपूर्ण असंतोष पैदा किया था। यह किस पर लगाया जाने वाला कर था?
(A) किसान द्वारा नए मकान के निर्माण पर
(B) सामान्य चरागाह भूमियों के उपयोग पर
(C) किसान की पुत्री के विवाह पर
(D) कृषि उपकरणों की खरीद पर

77. राजस्थान के गाँवों के सामाजिक-राजनीतिक पदानुक्रम में, 'पटेल' या 'चौधरी' की क्या भूमिका थी?
(A) घुमंतू गायक जो नियमित रूप से ऐतिहासिक महाकाव्य कविताओं का पाठ करते थे
(B) शाही ज्योतिषी जो कृषि बुआई का सटीक समय निर्धारित करते थे
(C) क्षेत्रीय घुड़सवार टुकड़ी का नेतृत्व करने वाले मुख्य सेनापति
(D) राजस्व संग्रह और व्यवस्था के लिए उत्तरदायी गाँव का मुखिया

78. राजस्थान के त्योहार अक्सर राज्य की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना को दर्शाते हैं। 'तीज' का त्योहार, जो मानसून की शुरुआत का प्रतीक है, मुख्य रूप से किसकी पूजा के लिए समर्पित है?
(A) भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी
(B) भगवान कृष्ण और राधा
(C) भगवान शिव और देवी पार्वती
(D) स्थानीय लोक देवता रामदेवजी

79. राजस्थान में 'गणगौर' के त्योहार के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) यह केवल राजपूत अभिजात वर्ग के पुरुष सदस्यों द्वारा मनाया जाता है।
(B) यह देवी गौरी की भक्ति का प्रतीक है और महिलाओं द्वारा मनाया जाता है।
(C) यह सर्दियों में कृषि फसल कटाई के मौसम के आधिकारिक अंत का प्रतीक है।
(D) अविवाहित लड़कियों को इसके अनुष्ठानों में भाग लेने से सख्ती से रोका जाता है।

80. राजस्थान के ग्रामीण इतिहास में 'आखा तीज' (अक्षय तृतीया) का महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय महत्व मुख्य रूप से इसलिए है क्योंकि:
(A) केवल यही एक विशिष्ट दिन था जब शासक राजा ऐतिहासिक रूप से आम लोगों से मिलते थे।
(B) प्रतिद्वंद्वी राज्यों के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू करने का पारंपरिक दिन।
(C) वह दिन जब ऋणदाताओं द्वारा किसानों के सभी कृषि ऋण माफ कर दिए जाते थे।
(D) एक शुभ दिन जिस दिन ऐतिहासिक रूप से बड़े पैमाने पर बाल विवाह होते थे।

81. विजयादशमी (दशहरा) के अवसर पर, राजस्थान में राजपूतों द्वारा पारंपरिक रूप से किस विशेष वृक्ष की पूजा की जाती है, जो युद्ध की तत्परता और समृद्धि का प्रतीक है?
(A) खेजड़ी (शमी)
(B) वट वृक्ष
(C) पीपल का वृक्ष
(D) नीम का वृक्ष

82. मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में, 'पिंगल' भाषा शैली राजस्थानी के किस अन्य भाषा के साथ सम्मिश्रण से बनी थी?
(A) गुजराती भाषा
(B) फारसी भाषा
(C) ब्रज भाषा
(D) मराठी भाषा

NODIA

(C) राजपूताना हरिजन सेवक संघ -> देश हितेषिणी सभा -> वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा
(D) वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा -> राजपूताना हरिजन सेवक संघ -> देश हितेषिणी सभा

27. 'चंडी' या 'त्रागा' की प्रथा, जिसमें व्यक्ति अपराधी पर दैवीय श्राप लाने के लिए स्वयं को घायल कर लेते थे या आत्मदाह कर लेते थे, माल की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए राजस्थान में विशिष्ट रूप से किस समुदाय से जुड़ी थी?
(A) चारण
(B) बंजारे
(C) महाजन
(D) भील

28. मध्यकालीन राजस्थान में महाजन समुदाय के संबंध में असंगत कथन की पहचान कीजिए:
(A) वे मुख्य रूप से व्यापार, साहूकारी और वाणिज्य में लगे हुए थे।
(B) किसी नगर में महाजन श्रेणी (गिल्ड) के प्रमुख को अक्सर 'नगर सेठ' कहा जाता था।
(C) वे सामाजिक रूप से हाशिए पर थे और प्रशासनिक भूमिकाओं से बाहर थे।
(D) उन्होंने युद्धों के दौरान राजपूत राज्यों को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान की।

29. मध्यकालीन राजस्थान की श्रेणी (गिल्ड) व्यवस्था के संदर्भ में, 'पंच-महाजन' संस्था मुख्य रूप से किस कार्य के लिए काम करती थी?
(A) स्थानीय व्यापारी वर्गों से राज्य सेना के लिए सैनिकों की भर्ती करना
(B) खालसा भूमियों के कृषि उत्पादन और राजस्व की देखरेख करना
(C) ग्रामीण किसानों की शिक्षा प्रणाली को नियंत्रित और प्रबंधित करना
(D) व्यापार को नियंत्रित करना तथा व्यापारियों और राज्य के बीच विवादों का निपटारा करना

30. राजस्थान में व्यापारिक समुदायों (महाजनों) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कई लोगों ने राजपूत दरबारों में दीवान और मुतसद्दी (प्रशासक) के रूप में कार्य किया।
II. वे मुख्य रूप से जैन और वैष्णव संप्रदायों से संबंधित थे।
III. उन्होंने भव्य मंदिरों और बावड़ियों के निर्माण को सक्रिय रूप से संरक्षण दिया।
IV. उन्हें अपनी-अपनी रियासतों की सीमाओं को पार करने से सख्ती से रोका गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

31. राजस्थान के महाजन समुदाय द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले सामाजिक-आर्थिक शब्द 'हुंडी' का तात्पर्य है:
(A) बिना शर्त भूमि हस्तांतरण का एक औपचारिक कानूनी दस्तावेज
(B) व्यापार में प्रयुक्त एक विनिमय पत्र (बिल ऑफ एक्सचेंज) या साख पत्र
(C) लंबी दूरी के व्यावसायिक कारवां पर लगाया जाने वाला एक आधिकारिक कर
(D) सीधे मंदिर में दिया जाने वाला एक स्वैच्छिक धार्मिक दान

32. निम्नलिखित में से कौन-सा मध्यकालीन राजस्थान में राजपूत शासकों की धार्मिक सहिष्णुता और संरक्षण को दर्शाता है?
(A) सभी प्रमुख राजपूत राजवंशों द्वारा शैव संस्थाओं को दिया गया विशेष संरक्षण
(B) राजपूताना की सीमाओं के भीतर सूफी दरगाहों पर पूर्ण प्रतिबंध
(C) स्वदेशी जनजातीय समुदायों का मुख्यधारा के हिंदू धर्म में बलपूर्वक धर्मांतरण
(D) जैन विद्वानों को पदों पर नियुक्त करना और जैन मंदिरों को वित्तपोषित करना

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : निष्ठावान हिंदू होने के बावजूद, राजस्थान के कई राजपूत शासकों ने अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह को अनुदान और संरक्षण प्रदान किया।
कारण (R) : राजपूत राजनीतिक विचारधारा के तहत जीवित रहने के लिए शासकों को प्रमुख साम्राज्य (मुगलों) के धर्म को अपनाना सख्ती से आवश्यक था।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
(D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।

34. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I (शासक/राजवंश)
P. महाराणा कुंभा
Q. सवाई जयसिंह II
R. बीकानेर के शासक
S. चौहान शासक (अजमेर)
सूची II (धार्मिक संरक्षण का उदाहरण)
1. देशनोक में करणी माता मंदिर को संरक्षण
2. अपने शासनकाल के दौरान रणकपुर जैन मंदिरों का निर्माण
3. पुष्कर में ब्रह्मा मंदिर को संरक्षण

NODIA

सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
(D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।

17. 20वीं शताब्दी के मध्य तक राजस्थान में प्रचलित 'सागड़ी प्रथा' मुख्य रूप से किसका एक रूप थी?
(A) बंधुआ मजदूरी और ऋण दासता
(B) पारंपरिक कृषि कराधान और राजस्व संग्रह
(C) कम उम्र में बाल विवाह की प्रथागत परंपरा
(D) किसानों के लिए अनिवार्य सैन्य भर्ती

18. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I (श्रम/दासता से संबंधित शब्द)
P. हाली
Q. बेगार
R. चाकर
S. गोला
सूची II (विवरण)
1. सामंती सरदारों द्वारा वसूल किया जाने वाला अवैतनिक, बलपूर्वक श्रम
2. जमींदार से जुड़ा हुआ एक कृषि सेवक
3. स्वामी के घर के भीतर पैदा हुआ एक पुरुष दास
4. किसी सेवक या अनुचर के लिए एक सामान्य शब्द
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

19. मध्यकालीन राजस्थान की बंधुआ मजदूरी प्रथाओं के तहत, कोई व्यक्ति आमतौर पर 'सागड़ी' प्रथा में कैसे गिरता था?
(A) किसी जमींदार से लिया गया ऋण चुकाने में विफल रहने पर
(B) राज्य के विरुद्ध कोई गंभीर धार्मिक अपराध करने पर
(C) विदेशी युद्धबंदी के रूप में बंदी बनाए जाने पर
(D) घोर राजद्रोह के नागरिक दंड के रूप में शाही फरमान द्वारा

20. राजस्थान सागड़ी प्रथा उन्मूलन अधिनियम, जिसने राज्य में पारंपरिक बंधुआ मजदूरी को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया, किस वर्ष पारित किया गया था?
(A) 1949
(B) 1956
(C) 1961
(D) 1975

21. राजस्थान के पारंपरिक समाज में भाट समुदाय का प्राथमिक कार्य क्या था?
(A) स्थायी राजपूत सेनाओं के लिए विशेष लोहे के हथियारों का निर्माण करना
(B) समुदायों के वंशावली अभिलेख (बहियाँ) बनाए रखना
(C) स्थानीय जागीरदार की ओर से वार्षिक कृषि राजस्व एकत्र करना
(D) राज्य के मंदिरों में विस्तृत वैदिक अनुष्ठान और यज्ञ आयोजित करना

22. मध्यकालीन राजस्थान में भाट और चारण समुदायों की तुलना करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जबकि भाट लगभग सभी जातियों की वंशावली रखते थे, वहीं चारण मुख्य रूप से राजपूत अभिजात वर्ग से जुड़े थे।
II. दोनों समुदायों को शासकों से भूमि अनुदान (सासन) प्राप्त करने से सख्ती से प्रतिबंधित किया गया था।
III. चारणों ने संधियों और कारवां के जमानतदार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

23. निम्नलिखित में से कौन-सा मध्यकालीन राजपूताना में चारण समुदाय को दिए जाने वाले विशेष सामाजिक विशेषाधिकार का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) राज्य के सिक्के ढालने का विशेष प्रशासनिक अधिकार
(B) नए शासक का आधिकारिक राजतिलक करने का एकमात्र अधिकार
(C) अनिवार्य सामंती सैन्य सेवा से पूर्ण छूट
(D) मृत्युदंड से छूट

24. भाट समुदाय द्वारा सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले शब्द 'बही' (बहीड़ा) का तात्पर्य है:
(A) पारिवारिक वंशावली युक्त एक रजिस्टर या बही-खाता
(B) पाठ/वाचन के दौरान उपयोग किया जाने वाला एक वाद्य यंत्र
(C) शाही सभाओं के दौरान पहना जाने वाला पारंपरिक साफ़ा
(D) कृषक वर्ग से एकत्र किया जाने वाला एक प्रकार का कर

25. राजस्थान का चारण साहित्य, जो अपने युद्धपरक और वीर रस के विषयों के लिए जाना जाता है, मुख्य रूप से किस साहित्यिक शैली में रचा गया था?
(A) पिंगल
(B) डिंगल
(C) ब्रज भाषा
(D) अपभ्रंश

26. निम्नलिखित में से कौन-सा औपनिवेशिक राजस्थान में सामाजिक सुधार संस्थाओं की स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम को निरुपित करता है?
(A) वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा -> देश हितेषिणी सभा -> राजपूताना हरिजन सेवक संघ
(B) देश हितेषिणी सभा -> वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा -> राजपूताना हरिजन सेवक संघ

Downloaded from www.pdf.tube

थी।

IV. बेणेश्वर मेला भील समुदाय के लिए एक प्रमुख सामाजिक-धार्मिक समागम है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

44. राजस्थान में विवाह की पारंपरिक प्रथाओं में, 'नाता' प्रथा का तात्पर्य है:

(A) अक्षय तृतीया पर राज्य द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित सामूहिक विवाह समारोह
(B) घोड़े पर सवार होकर विवाह स्थल पर पहुँचने वाले वर की विस्तृत अनुष्ठानिक प्रक्रिया
(C) कृषक जनजातियों के बीच सामाजिक रूप से स्वीकृत पुनर्विवाह प्रथा
(D) वधू और वर के परिवारों के बीच औपचारिक उपहारों का आदान-प्रदान

45. राजपूत वंश की राजनीति और विवाह संबंधी प्रथाओं के संदर्भ में, 'दस्तूर' शब्द क्या दर्शाता है?

(A) विवाह के तुरंत बाद बनने वाला औपचारिक सैन्य गठबंधन
(B) युद्ध के समय प्रतिद्वंद्वी वंश की राजकुमारी का बलपूर्वक अपहरण
(C) राजनीतिक गठबंधन टूटने पर महिलाओं का अनुष्ठानिक आत्मदाह
(D) शाही सगाई के दौरान आदान-प्रदान किए जाने वाले प्रथागत नियम और उपहार

46. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I (सामाजिक प्रथाएँ/रीति-रिवाज़)

P. मौसर
Q. टीका
R. मोर बांधिया
S. त्याग

सूची II (विवरण)

1. परिवार के किसी सदस्य के निधन के बाद आयोजित किया जाने वाला मृत्यु भोज
2. वर को भेजे जाने वाले उपहारों से जुड़ा सगाई समारोह
3. मुकुट (मोर) बाँधने से जुड़ी एक औपचारिक विवाह प्रथा
4. विवाह के अवसरों पर चारणों और भाटों को दिया जाने वाला अनिवार्य उपहार या दान

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

कथन (A) : वैवाहिक संबंधों ने मध्यकालीन राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कारण (R) : राजपूत शासकों ने मुगल साम्राज्य के खिलाफ सैन्य गठबंधन बनाने और अंतर-राज्यीय सीमा विवादों को सुलझाने के लिए अक्सर विवाहों का इस्तेमाल किया।

उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
(D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।

48. मध्यकालीन राजस्थान में, व्यापारी और ब्राह्मण बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर पारंपरिक शिक्षा मुख्य रूप से किस नाम की संस्थाओं में दी जाती थी?

(A) प्राथमिक मकतब या मदरसा
(B) शाही राजकीय कारखाने
(C) पारंपरिक सैन्य अखाड़े
(D) चटशालाएँ या पोशालें

49. राजस्थान में महाजन (व्यापारी) वर्ग द्वारा अपनी खाता-बही के लिए किस लिपि का मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता था क्योंकि यह निरंतर लेखन शैली वाली थी?

(A) मोड़िया (महाजनी)
(B) प्राचीन ब्राह्मी लिपि
(C) शास्त्रीय खरोष्ठी लिपि
(D) पारंपरिक शारदा लिपि

50. मध्यकाल के दौरान, राजस्थान में जैन उपाश्रय मुख्य रूप से किस रूप में कार्य करते थे?

(A) आपातकालीन अकाल के उपयोग के लिए बनाए गए दुर्गयुक्त अन्नागार
(B) अभिजात वस्त्र बुनकरों के लिए स्थापित गिल्ड गृह
(C) शिक्षा, पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बनाने और धर्मचर्चा के केंद्र
(D) राज्य सेना को रखने के लिए निर्दिष्ट शस्त्रागार

51. मध्यकालीन राजस्थान में शिक्षा प्रणाली के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:

(A) व्यावसायिक कौशल वंशानुगत श्रेणी (गिल्ड) शिक्षुता के माध्यम से पीढ़ियों तक पहुँचाए जाते थे।
(B) राज्य सभी वर्गों को औपचारिक शिक्षा का प्राथमिक और एकमात्र प्रदाता था।
(C) शिक्षा पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष थी और धार्मिक ग्रंथों से पृथक थी।
(D) 17वीं शताब्दी के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय व्यापक रूप से फैले हुए थे।

NODIA

52. मध्यकालीन राजस्थान के समाज में मंदिरों की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. मंदिरों ने महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्रों के रूप में कार्य किया, जो भू-स्वामी के रूप में कार्य करते थे और कभी-कभी ऋण भी प्रदान करते थे।

II. मंदिर केवल सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग तक ही सीमित विशेष स्थान थे।

III. मंदिर के प्रांगण स्थानीय मेलों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सामाजिक सभाओं के स्थल के रूप में कार्य करते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

53. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान में पाई जाने वाली प्रमुख मंदिर वास्तुकला शैलियों के सही कालानुक्रमिक विकास को निरुपित करता है?

(A) महा-मारू शैली -> मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली -> राजपूत-मुगल समन्वयात्मक शैली
(B) मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली -> महा-मारू शैली -> राजपूत-मुगल समन्वयात्मक शैली
(C) राजपूत-मुगल समन्वयात्मक शैली -> महा-मारू शैली -> मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली
(D) महा-मारू शैली -> राजपूत-मुगल समन्वयात्मक शैली -> मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली

54. धार्मिक संस्थाओं के संदर्भ में, नाथ संप्रदाय के 'मठों' ने 19वीं शताब्दी के दौरान विशेष रूप से किस रियासत में महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव रखा?

(A) मेवाड़ (उदयपुर)
(B) ढूँढाड़ (जयपुर)
(C) मारवाड़ (जोधपुर)
(D) हाड़ौती (बूंदी)

55. 'थंबे' धार्मिक शिक्षा और सामाजिक संगठन के प्राथमिक केंद्र हैं जो राजस्थान में निम्नलिखित में से किस संप्रदाय से जुड़े हैं?

(A) बिश्नोई संप्रदाय
(B) रामस्नेही संप्रदाय
(C) जसनाथी संप्रदाय
(D) दादू पंथ

56. राजस्थान का बिश्नोई समुदाय अपनी किस ऐतिहासिक सामाजिक-धार्मिक प्रतिबद्धता के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है?

(A) प्रकृति संरक्षण और वन्यजीव संरक्षण
(B) शास्त्रीय संगीत का सक्रिय संरक्षण और संवर्धन
(C) जातीय पदानुक्रम और भेदभाव का पूर्ण उन्मूलन
(D) बाहरी समुद्री व्यापार को बढ़ावा देना और वित्तपोषित करना

57. राजस्थान में सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय 'पीरों' की पूजा द्वारा सबसे अच्छी तरह से प्रदर्शित होता है। निम्नलिखित में से किस लोक देवता को हिंदुओं (क्षेत्रीय देवता के रूप में) और मुसलमानों ('रामसा पीर' के रूप में) दोनों द्वारा पूजित किया जाता है?

(A) पाबूजी
(B) रामदेवजी
(C) गोगाजी
(D) तेजाजी

58. मध्यकालीन राजस्थान में 'सिंलैदार' और 'सिकलीगर' कारीगर समुदाय मुख्य रूप से किस शिल्प से जुड़े थे?

(A) बेहतरीन क्षेत्रीय वस्त्रों की पारंपरिक बुनाई और रंगाई
(B) तलवारों और हथियारों का निर्माण एवं उन पर पॉलिश करना
(C) कुंदन कार्य के साथ सोने और चाँदी के उत्कृष्ट आभूषण बनाना
(D) महलों के लिए जटिल सजावटी पत्थर की जालियों की नक्काशी करना

59. राजस्थान के समाज पर भक्ति आंदोलन के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसने स्थानीय भाषाओं और लोक साहित्य (जैसे वाणी) के उपयोग को बढ़ावा दिया।

II. इसने अस्पृश्यता और जातिगत अनुष्ठानों के कड़े पालन को सुदृढ़ किया।

III. मीराबाई जैसी महिला संतों ने राजपूत समाज के पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी।

IV. इसने अपने अनुयायियों के बीच समतावाद की भावना को बढ़ावा दिया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, II और IV

60. राजपूत समाज पर मुगल संस्कृति के प्रभाव के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:

(A) राजपूत शासकों ने मुगल दरबारी शिष्टाचार, पोशाक और प्रशासनिक शब्दावली को अपनाया।
(B) अभिजात वर्ग की खान-पान की आदतों में नए व्यंजनों और शैलियों की शुरुआत देखी गई।
(C) इसके कारण पारंपरिक राजपूत चित्रकला शैलियों का पूर्ण परित्याग हो गया।
(D) शाही वास्तुकला में गुंबद, मेहराब और चारबाग जैसे तत्वों को शामिल किया गया।

61. राजस्थान में ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक संरचना की एक विशेषता 'जजमानी व्यवस्था' में मुख्य रूप से शामिल था:

(A) उच्चतम क्षेत्रीय बोलीदाता को भू-राजस्व संग्रह अधिकारों की नीलामी करना
(B) आसपास की जनजातीय पट्टियों से सीधे भाड़े के सैनिकों

की सक्रिय भर्ती
(C) नामित स्थानीय बुज़ुर्गों द्वारा गाँव के जल संसाधनों का सामूहिक प्रबंधन
(D) व्यावसायिक जातियों और किसानों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान करने वाली प्रणाली

62. राजस्थान में अभिजात वर्ग के बीच लोकप्रिय निम्नलिखित में से कौन-सा परिधान स्वदेशी और मुगल पोशाक शैलियों के प्रत्यक्ष संश्लेषण को दर्शाता है?
(A) पारंपरिक पट्टू
(B) सजावटी लुगड़ी
(C) अंगरखी / जामा
(D) क्षेत्रीय घाघरा

63. मुगलों द्वारा शुरु की गई मनसबदारी प्रणाली के तहत, राजपूत अभिजात वर्ग के लिए कौन-सा महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिणाम हुआ?
(A) राजपूत सरदारों ने अपनी पैतृक वतन जागीरों के सभी अधिकार स्थायी रूप से खो दिए।
(B) सैन्य अभियानों से प्राप्त धन ने राजस्थान में प्रमुख निर्माण परियोजनाओं को वित्तपोषित किया।
(C) राजपूत अभिजात वर्ग को उनके सैन्य दर्जे और शासन-संचालन की भूमिका से वंचित कर दिया गया।
(D) राजपूत राज्यों को अपने वंशों के भीतर सभी वैवाहिक संबंधों को पूरी तरह से तोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

64. राजपूत राजपरिवार के दाह-संस्कार स्थलों पर 'छतरियों' (स्मारकों) का निर्माण एक स्थापत्य कला प्रथा है जो मुख्य रूप से किसके कारण विकसित हुई?
(A) पारंपरिक जैन मंदिर वास्तुकला का सीधा संरचनात्मक प्रभाव
(B) यूरोपीय और ब्रिटिश औपनिवेशिक स्मारक डिज़ाइनों का सीधा अनुकरण
(C) प्राचीन मौर्य बौद्ध स्तूप वास्तुकला का पुनरुद्धार
(D) हिंदू स्मारक परंपराओं और इस्लामिक मकबरा परंपराओं का संश्लेषण

65. मेवात क्षेत्र (अलवर-भरतपुर) का मेव समुदाय सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है क्योंकि:
(A) वे मुसलमान हैं जिन्होंने कई हिंदू सामाजिक रीति-रिवाजों और गोत्रों को बनाए रखा है।
(B) वे जैन तपस्वी प्रथाओं और वैष्णव धर्म के एक अनूठे मिश्रण का पालन करते हैं।
(C) वे शुरुआती औपनिवेशिक संपर्क के कारण अंग्रेजी बोलने वाला एक जनजातीय समूह हैं।
(D) वे सिख सैन्य परंपराओं को मराठा प्रशासनिक प्रणालियों के साथ मिलाते हैं।

66. पश्चिमी राजस्थान के लंगा और मांगणियार समुदायों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) वे कृषि जातियाँ जो भीषण सूखे के कारण मरुस्थल में प्रवास कर गईं।
(B) केवल धार्मिक जप के लिए समर्पित महाजनों की एक उप-जाति।
(C) राजपूतों और व्यापारियों द्वारा संरक्षित वंशानुगत मुस्लिम संगीतकार।
(D) मारवाड़ के राठौड़ शासकों के पारंपरिक शाही अंगरक्षक।

67. 1889 में स्थापित 'वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा' का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित में से किस सामाजिक प्रथा में सुधार करना था?
(A) राजपूतों में विवाह के खर्चों को नियंत्रित करना और बाल विवाह को रोकना
(B) सभी ग्रामीण सामाजिक समूहों में अस्पृश्यता की प्रथा का उन्मूलन करना
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में बंधुआ मजदूरी की सागड़ी प्रथा को समाप्त करना
(D) सभी कृषि और शहरी जातियों में विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा देना

68. सामाजिक सुधार संस्था 'देश हितेषिणी सभा' की स्थापना 1877 में किसकी अध्यक्षता में की गई थी?
(A) जयपुर के महाराजा रामसिंह II
(B) बीकानेर राज्य के महाराजा गंगा सिंह
(C) स्वामी दयानंद सरस्वती
(D) मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह

NODIA

69. राजस्थान की कौन-सी रियासत 1832 में कन्या वध (बालिका शिशु हत्या) की प्रथा पर कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने वाली पहली रियासत थी?
(A) जयपुर
(B) कोटा
(C) जोधपुर
(D) बीकानेर

70. मध्यकालीन राजस्थान में 'त्याग' की सामाजिक प्रथा, जिसके कारण अक्सर अत्यधिक वित्तीय बोझ पड़ता था और अप्रत्यक्ष रूप से कन्या वध में योगदान मिलता था, मूलतः क्या थी?
(A) उच्च जाति की विधवाओं द्वारा पालन किया जाने वाला कठोर अनुष्ठानिक उपवास
(B) सामंती जागीरदार के छोटे बेटों द्वारा भूमि अधिकारों का परित्याग
(C) विवाह के समय चारणों और भाटों द्वारा माँगे जाने वाले अनिवार्य उपहार और नकद राशि
(D) स्थानीय गाँव के मंदिरों को कृषि भूमि का स्वैच्छिक दान

71. आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने उत्तर जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा राजस्थान में बिताया और अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना मुख्य रूप से किस नगर में की?
(A) जयपुर
(B) अजमेर
(C) जोधपुर
(D) उदयपुर

अध्याय 10

राजस्थान के इतिहास के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू

1. मध्यकालीन राजस्थान की सामाजिक संरचना में, विद्वत्तापूर्ण या धार्मिक सेवाओं के सम्मान में ब्राह्मणों, चारणों और भाटों को दिए जाने वाले भूमि अनुदान को दर्शाने के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस शब्द का प्रयोग किया जाता था?
(A) सासन
(B) खालसा
(C) भोम
(D) हवाला

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : मध्यकालीन राजस्थान में राजपूत समाज अत्यधिक स्तरीकृत था और कठोर वंश-आधारित पदानुक्रमित संरचनाओं द्वारा संचालित था।
कारण (R) : भाईबंध प्रणाली यह सुनिश्चित करती थी कि राजपूत वंश के सभी सदस्यों के पास राज्य के भीतर बिल्कुल समान राजनीतिक और आर्थिक अधिकार हों।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
(D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मध्यकालीन राजस्थान में जातिगत पदानुक्रम का असत्य वर्णन करता है?
(A) ग्रामीण सामाजिक संरचना पूरी तरह से समतावादी थी, जिसमें सभी व्यावसायिक समूहों की स्थिति समान थी।
(B) व्यापार और राज्य के वित्त पर अपने प्रभुत्वशाली नियंत्रण के कारण महाजनों को समाज में प्रमुख स्थान प्राप्त था।
(C) ब्राह्मण समाज में उच्च कर्मकांडीय स्थान रखते थे और अक्सर सम्मानित राज्य सलाहकारों और ज्योतिषियों के रूप में कार्य करते थे।
(D) गाँवों और नगरों दोनों में अस्पृश्यता और जाति-आधारित आवासीय पृथक्करण व्यापक रूप से प्रचलित थे।

4. मध्यकालीन राजपूत समाज में, 'डावर' या 'डावरिया' शब्द का संबंध निम्नलिखित में से किस प्रथा से था?
(A) केवल राजपूत विधवाओं द्वारा पहना जाने वाला पारंपरिक परिधान और साफ़ा
(B) स्वतंत्र महिला कारीगरों पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट प्रत्यक्ष प्रशासनिक कर
(C) प्रमुख धार्मिक त्योहारों के दौरान महिलाओं को पूर्णतः पर्दा/पृथक्करण में रखने का अनुष्ठान
(D) विवाह के अवसर पर राजकुमारी के साथ महिला परिचारिकाओं (दासियों) को भेजने की प्रथा

5. मध्यकालीन राजपूत समाज में महिलाओं की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजपरिवार की महिलाएँ प्रायः अपने निजी खर्चों के लिए दी जाने वाली बड़ी जागीरों का प्रबंधन करती थीं, जिन्हें 'हाथ-खर्च' कहा जाता था।
II. स्त्री शिक्षा पूरी तरह से प्रतिबंधित थी, और राजपरिवार की महिलाएँ सर्वभौमिक रूप से निरक्षर थीं।
III. संकट काल या उत्तराधिकारी के अल्पवयस्क होने के समय राजपूत महिलाओं ने कभी-कभी राजनीतिक कूटनीति और शासन-संचालन में भाग लिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

6. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रंथ मध्यकाल के दौरान मारवाड़ में सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन और महिलाओं की भूमिका की विस्तृत जानकारी प्रदान करता है?
(A) पद्मावत
(B) पृथ्वीराज रासो
(C) नैणसी री ख्यात
(D) वंश भास्कर

7. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I (मध्यकालीन प्रथाओं से संबंधित शब्द)
P. महा-सती
Q. अनुमरण
R. सती
S. जौहर
सूची II (उनके अर्थ)
1. अपने पति की चिता पर विधवा द्वारा आत्मदाह
2. बंदी बनाए जाने और अनादर से बचने के लिए महिलाओं द्वारा सामूहिक आत्मदाह
3. पति की किसी अन्य स्थान पर मृत्यु होने पर उसकी वस्तुओं के साथ विधवा द्वारा आत्मदाह

Downloaded from www.pdf.tube

83. राजस्थान की भाषाई बोलियों और उनके प्राथमिक क्षेत्र के असंगत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) मेवाती - उदयपुर और राजसमंद
(B) मारवाड़ी - जोधपुर और आसपास के क्षेत्र
(C) ढूँढाड़ी - जयपुर और आसपास के क्षेत्र
(D) हाड़ौती - कोटा, बूंदी, बाराँ, झालावाड़

84. राजस्थानी भाषाओं का पहला व्यापक वैज्ञानिक वर्गीकरण और भाषाई सर्वेक्षण किसके द्वारा किया गया था?
(A) एल.पी. तेस्सीतोरी
(B) कर्नल जेम्स टॉड
(C) कविराजा श्यामलदास
(D) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

85. राजपूत वंशों के बीच उत्तराधिकार की तुलनात्मक सामाजिक प्रथा में कभी-कभी स्पष्ट क्षेत्रीय भिन्नताएँ दिखाई देती थीं। उदाहरण के लिए, चूंडावतों और शक्तावतों के बीच प्रतिद्वंद्विता और भिन्न प्रोटोकॉल किस राज्य के अभिजात वर्ग के लिए विशिष्ट थे?
(A) मारवाड़
(B) मेवाड़
(C) बीकानेर
(D) आमेर

86. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान में 'पर्दा' प्रथा में क्षेत्रीय अंतर को सही ढंग से उजागर करता है?
(A) मरुस्थलीय क्षेत्रों में अभिजात वर्ग के बीच पर्दा प्रथा पूरी तरह से अनुपस्थित थी।
(B) पूरे दक्षिणी राजस्थान में सभी जातियों की महिलाओं द्वारा पर्दा प्रथा का सख्ती से पालन किया जाता था।
(C) जनजातीय क्षेत्रों की तुलना में उच्च अभिजात वर्ग के बीच पर्दा प्रथा का अधिक कड़ाई से पालन किया जाता था।
(D) अंग्रेजों ने 1857 में पूरे राजपूताना में पर्दा प्रथा को कानूनी रूप से प्रतिबंधित कर दिया था।

87. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : मध्यकालीन राजस्थान में कारीगरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पूरी तरह से स्वतंत्र बाजार की माँगों पर निर्भर थी।
कारण (R) : कारीगर जजमानी व्यवस्था और राज्य-प्रायोजित कारखानों में कसकर एकीकृत थे, जो उन्हें एक निश्चित निर्वाह और संरक्षण प्रदान करते थे।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
(D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।

88. राजस्थान में जनजातीय और ग्रामीण समुदायों के बीच पारंपरिक विवाद समाधान तंत्र, जहाँ गाँव के बुजुर्गों की परिषद सामाजिक-कानूनी मामलों पर निर्णय लेती है, को किस रूप में जाना जाता है?
(A) पंच-पटेल (या पंचायत)
(B) पारंपरिक चंवरी कर व्यवस्था
(C) शाही हाथ-खर्च भत्ता
(D) सामंती दस्तूर समारोह

89. मध्यकालीन अर्थव्यवस्था और समाज के संदर्भ में, 'जकात' क्या था?
(A) राज्य द्वारा माँगा जाने वाला अवैतनिक बलपूर्वक श्रम की एक अनिवार्य प्रणाली
(B) राज्य की सीमाओं के पार आवाजाही करने वाले माल पर लगाया जाने वाला एक आंतरिक पारगमन शुल्क
(C) शासकों द्वारा केवल हिंदू प्रजा से एकत्र किया जाने वाला एक धार्मिक कर
(D) राज्य के स्वामित्व वाले कुओं का उपयोग करने के लिए किसानों द्वारा दिया जाने वाला रखरखाव शुल्क

NODIA

90. राजपूत राज्यों के साथ ब्रिटिश संधियों (1818) द्वारा लाए गए सामाजिक परिवर्तन का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) इसके कारण किसानों का तत्काल लोकतांत्रिक सशक्तिकरण हुआ और जागीरदारी का अंत हो गया।
(B) इसने जागीरदारों पर शासकों की सैन्य निर्भरता को कम कर दिया, जिससे किसानों की सुरक्षा कमजोर हो गई।
(C) इसके कारण काम की तलाश में राजपूत अभिजात वर्ग का ब्रिटिश प्रेसीडेंसियों में सामूहिक प्रवास हुआ।
(D) इसने रातोंरात पारंपरिक गिल्ड प्रणालियों और बैंकिंग को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।

91. प्रसिद्ध 'मेवाड़ भील कोर' की स्थापना अंग्रेजों द्वारा 1841 में मुख्य रूप से किस उद्देश्य से की गई थी?
(A) भील और गरासिया जनजातियों के विद्रोहों को नियंत्रित करना और क्षेत्रीय व्यवस्था बनाए रखना
(B) भील जनजातियों के बीच पश्चिमी शैक्षणिक संस्थानों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना
(C) विदेशी ब्रिटिश युद्धों के लिए स्थानीय जनजातीय आबादी की व्यापक भर्ती करना
(D) स्वायत्त जनजातीय पट्टियों से सीधे कृषि भू-राजस्व एकत्र करना

92. 'चारण' और 'भाट' समुदायों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दोनों समुदायों का ऐतिहासिक और वंशावली अभिलेखों के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका के लिए अत्यधिक सम्मान किया जाता था।
II. उनका सामाजिक प्रभाव इतना महत्वपूर्ण था कि राजा अक्सर उनकी व्यंग्यात्मक कविता या श्रापों से डरते थे।
III. वे मुख्य रूप से एक कृषक जाति थे जो केवल एक मौसमी शौक के रूप में कविता का अभ्यास करते थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

93. राजस्थान के इतिहास में, राजपूत शासकों के अधीन 'कारखाना' प्रणाली क्या थी?
(A) राजनीतिक विद्रोहियों के लिए स्थापित एक केंद्रीकृत दंडात्मक कारागार प्रणाली
(B) आधिकारिक राजकीय टकसाल जहाँ सोने और चाँदी के सिक्के बनाए जाते थे
(C) क्षेत्रीय अकाल के दौरान उपयोग किया जाने वाला प्राथमिक राजकीय खाद्यान्न भंडारण भंडार
(D) राजपरिवार के लिए वस्तुओं और कला का उत्पादन करने वाली राज्य-संचालित कार्यशालाएँ

94. भील समुदाय के बीच, 'पाल' शब्द का संबंध किससे है?
(A) जनजातीय युद्ध में इस्तेमाल किया जाने वाला एक पारंपरिक विशेष हथियार
(B) क्षेत्रीय मेलों के दौरान पहना जाने वाला एक औपचारिक परिधान
(C) पहाड़ी क्षेत्रों में झोंपड़ियों का समूह या ग्रामीण बस्ती
(D) वर्षा और फसल के लिए पूजे जाने वाले एक प्रमुख स्थानीय देवता

95. ग्रामीण राजस्थान में 'चूनड़ी' की प्रथा ऐतिहासिक रूप से किससे जुड़ी हुई है?
(A) पारंपरिक वस्त्र बुनकरों द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला राज्य कर
(B) विधवा पुनर्विवाह का अनुष्ठान जिसमें एक नया वस्त्र दिया जाता है
(C) नवजात शिशु और माँ द्वारा लिया जाने वाला अनुष्ठानिक स्नान
(D) उच्च मूल्य वाली व्यावसायिक नकदी फसलों पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर

96. किसान संकट का मुख्य कारण क्या था जिसके कारण 20वीं शताब्दी की शुरुआत में राजस्थान में व्यापक कृषि आंदोलन हुए?
(A) नई ब्रिटिश प्रशासनिक और कर नीतियों का कड़ा क्रियान्वयन
(B) विदेशी मिशनों द्वारा किसानों का बलपूर्वक ईसाई धर्म में धर्मांतरण
(C) आधुनिक सिंचाई सुविधाओं और राज्य सहायता की भारी कमी
(D) मनमाने उपकरों (लाग-बाग), उच्च राजस्व और अवैतनिक बेगार का बोझ

97. राजस्थान में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं के संबंध में असंगत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) मौसर - पुत्र के जन्म के उत्सव में दिया जाने वाला भोज
(B) दापा - जनजातियों में वधू-मूल्य प्रथा
(C) नाता - किसी विधवा या परित्यक्त स्त्री का दूसरे पुरुष के साथ रहने की प्रथा
(D) हलमा - आपसी सहायता के लिए सामुदायिक सहयोगात्मक श्रम

98. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : 19वीं शताब्दी के राजस्थान में सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार के प्रयास बड़े पैमाने पर आम जनता के आंदोलनों के बजाय शासकों और अंग्रेजों की ओर से शुरू हुए थे।
कारण (R) : कठोर सामंती संरचना और जनसामान्य के बीच आधुनिक शिक्षा के अभाव ने सामाजिक सुधार का नेतृत्व करने के लिए मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवियों के शुरुआती उदय को रोका।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
(D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।

99. उदयपुर में 'मोती मगरी' और 'सहेलियों की बाड़ी' मध्यकालीन राजस्थान के किस सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू को दर्शाते हैं?
(A) राजपरिवार की महिलाओं के लिए विशेष मनोरंजन/विश्राम स्थल
(B) नगरों में सार्वजनिक स्थानों का अत्यधिक सैन्यीकरण
(C) संपूर्ण पहाड़ियों को जैन तपस्वी प्रथाओं के लिए समर्पित करना
(D) राजपूत इमारतों पर यूरोपीय वास्तुकला का प्रभाव

100. राजस्थान के मध्यकालीन सामाजिक पदानुक्रम में 'भोमिया' वर्ग का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) धनी व्यापारी बैंकर जो नियमित रूप से बड़े राज्य ऋण प्रदान करते थे
(B) बंधुआ कृषि मजदूर जो सीधे खालसा भूमियों पर काम करते थे
(C) राज्य के अनुष्ठानों को संचालित करने के लिए जिम्मेदार उच्च पदस्थ शाही पुरोहित
(D) गाँव की रक्षा और सुरक्षा के बदले भूमि धारण करने वाले छोटे भू-स्वामी

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) सासन
मध्यकालीन राजस्थान की सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था में विद्वानों, धार्मिक व्यक्तियों तथा चारण एवं भाट जैसे समुदायों को राज्य द्वारा भूमि दान में दी जाती थी। इस प्रकार की लगान-मुक्त भूमि अनुदान को सासन कहा जाता था। ऐसी भूमि का हस्तांतरण स्थायी होता था और इस पर किसी प्रकार का कर नहीं लगाया जाता था। यह व्यवस्था धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए शासकों द्वारा अपनाई गई।

2. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
मध्यकालीन राजस्थान में राजपूत समाज अत्यंत स्तरीकृत और कड़े वंश-आधारित पदानुक्रम पर आधारित था। इसमें सामाजिक स्थिति और अधिकारों का निर्धारण वंश परंपरा से होता था। यद्यपि भाईबंध प्रणाली राजपूत वंश के सदस्यों के बीच भ्रातृत्व और साझेदारी पर बल देती थी, किंतु इसके अंतर्गत सभी सदस्यों को समान राजनीतिक या आर्थिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। शासक और उच्च सामंतों के पास विशेष शक्तियाँ थीं।

3. (A) ग्रामीण सामाजिक संरचना पूरी तरह से समतावादी थी, जिसमें सभी व्यावसायिक समूहों की स्थिति समान थी।
मध्यकालीन राजस्थान की ग्रामीण सामाजिक संरचना समतावादी नहीं थी, बल्कि यह विभिन्न जातियों और व्यावसायिक समूहों में विभाजित थी। उच्च वर्णों जैसे राजपूतों, ब्राह्मणों और महाजनों का समाज पर वर्चस्व था, जबकि सेवादार एवं शिल्पी जातियाँ पदानुक्रम में निचले स्थान पर थीं। गाँवों में अस्पृश्यता और जातिगत पृथक्करण की व्यवस्था विद्यमान थी। महाजन व्यापार एवं राज्य के वित्त पर नियंत्रण रखते थे।

4. (D) विवाह के अवसर पर राजकुमारी के साथ महिला परिचारिकाओं (दासियों) को भेजने की प्रथा
मध्यकालीन राजपूत समाज में डावर या डावरिया एक पारंपरिक कुप्रथा थी। इसके अंतर्गत राजपूत राजकुमारियों के विवाह के समय उनके साथ दहेज के रूप में महिला परिचारिकाओं और दासियों को भेजा जाता था। इन परिचारिकाओं को डावरी कहा जाता था और वे जीवनभर ससुराल में राजकुमारी की सेवा करती थीं। यह प्रथा सामंती वैभव और प्रतिष्ठा के प्रदर्शन से जुड़ी हुई थी।

5. (C) केवल I और III
मध्यकालीन राजपूत समाज में राजपरिवार की महिलाओं के पास अपने निजी व्यय के संचालन हेतु हाथ-खर्च के रूप में विशेष जागीरें होती थीं। संकट के समय अथवा उत्तराधिकारी के वयस्क न होने की स्थिति में राजमाताएँ और रानी कूटनीतिक तथा प्रशासनिक निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। यद्यपि महिला शिक्षा औपचारिक विद्यालयों तक सीमित नहीं थी, फिर भी राजघराने की स्त्रियाँ साक्षर होती थीं।

6. (C) नैणसी री ख्यात
मुहणौत नैणसी द्वारा रचित नैणसी री ख्यात मध्यकालीन राजस्थान, विशेष रुप से मारवाड़ राज्य के इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन तथा महिलाओं की सामाजिक स्थिति का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और विस्तृत प्रामाणिक स्रोत है। इस ग्रंथ में तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था, जाति व्यवस्था, राजस्व संग्रह तथा विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं का तथ्यपरक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह राजस्थानी ख्यात साहित्य में प्रमुख मानी जाती है।

7. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
मध्यकालीन राजस्थान की सामाजिक प्रथाओं में विभिन्न रुपों का पालन किया जाता था। महा-सती वह विधवा कहलाती थी जो अपने मृत पति की पगड़ी या किसी व्यक्तिगत प्रतीक को साथ लेकर सती होती थी। अनुमरण की प्रक्रिया में पति की मृत्यु किसी दूरस्थ स्थान पर होने पर उसकी वस्तुओं के साथ आत्मदाह किया जाता था। सती प्रथा में विधवा पति की चिता पर बैठती थी।

8. (A) राजपूत अभिजात वर्ग और राजपरिवार
राजस्थान के ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में सती प्रथा का प्रचलन मुख्य रुप से राजपूत अभिजात वर्ग और राजवंशों की महिलाओं में अधिक देखा जाता था। यह प्रथा युद्ध क्षेत्र में पति की मृत्यु हो जाने पर वंश के सम्मान, व्यक्तिगत पवित्रता तथा शत्रुओं द्वारा बंदी बनाए जाने के भय से सुरक्षा के प्रतीक के रुप में जुड़ी हुई थी। यह सामंती परंपरा थी।

9. (B) बूंदी (1822)
राजस्थान में सती प्रथा को सर्वप्रथम गैर-कानूनी और गैर-इंसानी घोषित कर इस पर कानूनी प्रतिबंध लगाने वाली रियासत बूंदी थी। बूंदी के महाराव राजा रामसिंह के शासनकाल के दौरान सन 1822 में इस कुप्रथा के विरुद्ध सख्त कानून बनाया गया था। इसके बाद राजस्थान की अन्य रियासतों जैसे कोटा, जयपुर, जोधपुर और उदयपुर ने भी कानून बनाकर प्रतिबंध लागू किया। यह सामाजिक सुधार का कदम था।

10. (B) जौहर के पश्चात राजपूत पुरुषों द्वारा किया जाने वाला अंतिम आत्मघाती युद्ध प्रहार
राजपूत इतिहास में साका का संबंध उस पराक्रमी बलिदान से है जो दुर्ग के घिर जाने और पराजय की स्थिति में घटित होता था। जब महिलाएँ किले के भीतर जौहर कुंड में अग्निसमर्पण कर लेती थीं, तब राजपूत योद्धा केसरिया वस्त्र धारण कर अंतिम

Downloaded from www.pdf.tube

हेतु भूमि अनुदान एवं वित्तीय सहायता प्रदान की। यह धार्मिक सहिष्णुता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

33. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) असत्य है।
राजस्थान के राजपूत शासक स्वयं हिंदू धर्म के अनुयायी होने के बावजूद अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह को भूमि अनुदान और संरक्षण प्रदान करते थे। यह उनकी धार्मिक सहिष्णुता की नीति का अंग था। कारण असत्य है क्योंकि राजनीतिक अस्तित्व के लिए मुगलों का धर्म अपनाना उनके लिए कभी भी अनिवार्य नहीं था। राजपूतों ने अपनी धार्मिक स्वतंत्रता सुरक्षित रखी।

34. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान के विभिन्न शासकों ने धार्मिक स्थलों को संरक्षण प्रदान किया। मेवाड़ के महाराणा कुंभा के शासनकाल में रणकपुर जैन मंदिरों का निर्माण हुआ। जयपुर के सवाई जयसिंह द्वितीय ने गोविंद देव जी मंदिर को संरक्षण दिया। बीकानेर के शासकों ने देशनोक की करणी माता मंदिर को तथा चौहान शासकों ने पुष्कर के ब्रह्मा मंदिर को अत्यंत श्रद्धा से निरंतर संरक्षण प्रदान किया था।

35. (A) उन्हें 'लाग-बाग' कहे जाने वाले अनेक मनमाने उपकरों और करों का सामना करना पड़ता था।
मध्यकालीन राजस्थान में कृषक वर्ग की स्थिति अत्यंत कठिन थी। किसानों को नियमित भू-राजस्व के अलावा जागीरदारों द्वारा लगाए गए अनेक मनमाने उपकरों का सामना करना पड़ता था, जिन्हें लाग-बाग कहा जाता था। अकाल के वर्षों में भी राहत आसानी से नहीं मिलती थी। अत्यधिक कर भार और शोषक प्रथाओं के विरोध में आगे चलकर भीषण किसान आंदोलन प्रारंभ हुए।

36. (D) कूता या कूंता
मध्यकालीन राजस्थान की कृषि राजस्व व्यवस्था में खड़ी फसल की सम्भावित उपज का अनुमान लगाकर राज्य या जागीरदार का राजस्व अंश निर्धारित करने की पद्धति को कूता या कूंता कहा जाता था। इसके अंतर्गत राजस्व अधिकारी खेत में खड़ी फसल का निरीक्षण करके अनुमान लगाते थे कि कितना अनाज उत्पन्न होगा और उसी आधार पर कर तय किया जाता था, जो असंतोष बढ़ाता था।

37. (B) जकात (आय पर धार्मिक कर)
राजस्थान में जागीरदारों द्वारा किसानों पर विभिन्न प्रकार के स्थानीय लाग-बाग लगाए जाते थे, जैसे चंवरी कर, तलवार बंधाई और कामठा लाग। इसके विपरीत, जकात एक व्यापारिक पारगमन शुल्क या सीमा कर था, जो किसानों पर जागीरदारी लाग-बाग के रूप में नहीं वसूला जाता था। चंवरी कर पुत्री के विवाह पर तथा कामठा लाग निर्माण कार्यों हेतु लिया जाने वाला उपकर था।

38. (C) केवल I और III
बिजोलिया किसान आंदोलन भारत के इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाला पूर्णतः अहिंसक किसान आंदोलन था। यह आंदोलन बिजोलिया के जागीरदार द्वारा किसानों पर थोपे गए 84 प्रकार के अत्यधिक लाग-बाग और बेगार के खिलाफ शुरू हुआ था। यह सीधे ब्रिटिश कंपनी के विरुद्ध नहीं, बल्कि बिजोलिया के स्थानीय जागीरदार के शोषण और उत्पीडन के विरोध में संचालित हुआ था।

39. (D) प्राथमिक व्यापारियों के रूप में जनजातीय आबादी शहरी व्यापार में पूरी तरह से एकीकृत थी।
मध्यकालीन राजस्थान में भील और मीणा जैसे जनजातीय समुदाय मुख्य रूप से जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते थे। वे छापामार युद्ध में निपुण थे और युद्धों में राजपूतों का साथ देते थे। मेवाड़ में भीलों को राजतिलक का अधिकार प्राप्त था। किंतु वे प्राथमिक व्यापारियों के रूप में शहरी व्यापारिक गतिविधियों में पूरी तरह एकीकृत और शामिल नहीं हो पाए थे।

NODIA

40. (A) I, III, II
मध्यकालीन राजस्थान में भू-स्वामित्व पर प्रत्यक्ष राज्य नियंत्रण का अवरोही क्रम खालसा, जागीर और सासन है। खालसा भूमि सीधे राजा के प्रत्यक्ष नियंत्रण में होती थी, जहाँ से सीधे राजस्व एकत्र किया जाता था। जागीर भूमि सामंतों को सेवाओं के बदले दी जाती थी। सासन भूमि धार्मिक एवं चारण सेवाओं हेतु दी जाने वाली पूर्णतः लगान-मुक्त तथा हस्तांतरित न की जाने वाली भूमि मानी जाती थी।

41. (B) भील समुदाय
राजस्थान के वागड़ क्षेत्र में गोविंद गुरु द्वारा चलाया गया भगत आंदोलन मुख्य रूप से भील समुदाय के सामाजिक और नैतिक उत्थान के लिए समर्पित था। गोविंद गुरु ने सम्प सभा की स्थापना की और भीलों को मद्यपान, कुरीतियों तथा अंधविश्वास को त्यागकर सात्विक जीवन अपनाने और अधिकारों के प्रति जागरुक होने की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया था।

42. (B) यात्रियों और गाँवों पर लगाया जाने वाला एक सुरक्षा कर
मध्यकालीन राजस्थान में रखवाली का अधिकार भील और मीणा जनजातियों द्वारा वसूला जाने वाला एक सुरक्षा कर था। पहाड़ी तथा दुर्गम मार्गों से गुजरने वाले व्यापारियों, यात्रियों और गाँवों की सुरक्षा का दायित्व जनजातीय समुदाय लेते थे। इस सुरक्षा सेवा के बदले में वे निश्चित शुल्क एकत्र करते थे, जिससे मार्गों में लूटपाट का भय नहीं रहता था और सुरक्षा बनी रहती थी।

43. (B) I, II और IV
राजस्थान की जनजातियों में हलमा पारस्परिक सहयोग और सामुदायिक श्रम की परंपरा है। दापा प्रथा के अंतर्गत वर पक्ष द्वारा वधू मूल्य दिया जाता है, तथा बेणेश्वर मेला भील समाज का प्रमुख धार्मिक मेला है। अंग्रेजों द्वारा लागू आपराधिक जनजाति अधिनियम से जनजातियों को छूट प्राप्त नहीं थी, बल्कि उन्हें इस कानून के तहत कठोरता से पाबंद और नियंत्रित किया गया था।

अपनी बहियों में दर्ज करते थे। यह कार्य वंशावली संरक्षण एवं सामाजिक इतिहास बनाए रखने हेतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण था।

22. (C) केवल I और III
मध्यकालीन राजस्थान में भाट समुदाय प्रायः सभी जातियों की वंशावली रखते थे, जबकि चारण समुदाय मुख्य रूप से राजपूत शासकों और अभिजात वर्ग से जुड़ा हुआ था। चारणों की पवित्रता और विश्वसनीयता के कारण वे व्यापारिक कारवानों की सुरक्षा तथा राज्यों के मध्य संधियों में जमानतदार के रूप में कार्य करते थे। शासकों द्वारा दोनों को सासन भूमि दान में दी जाती थी।

23. (D) मृत्युदंड से छूट
मध्यकालीन राजपूताना में चारण समुदाय को अत्यंत पवित्र, सम्मानित और देवांशी माना जाता था। उनकी इसी धार्मिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण उन्हें विशेष सामाजिक-कानूनी विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिनमें मृत्युदंड से पूर्ण छूट सबसे प्रमुख थी। चारणों की हत्या या उन्हें शारीरिक क्षति पहुँचाना घोर पाप माना जाता था। इसी कारण वे व्यापारिक सुरक्षा और मध्यस्थता करने में पूरी तरह सक्षम थे।

24. (A) पारिवारिक वंशावली युक्त एक रजिस्टर या बही-खाता
राजस्थान में भाट और राव समुदायों द्वारा उपयोग किया जाने वाला शब्द बही या बहीड़ा एक विशेष प्रकार के हस्तलिखित रजिस्टर या बही-खाते को संदर्भित करता है। इस बही में वे अपने यजमान परिवारों की कई पीढ़ियों की वंशावली, पूर्वजों के नाम, जन्म, विवाह और प्रमुख घटनाओं का विवरण दर्ज करते थे। यह ऐतिहासिक और सामाजिक साक्ष्य के रूप में माना जाता है।

25. (B) डिंगल
राजस्थान का चारण साहित्य मुख्य रूप से डिंगल साहित्यिक शैली में रचा गया था। डिंगल मारवाड़ी भाषा का साहित्यिक रूप है, जो वीर रस, युद्ध वर्णन, शौर्य और पराक्रम की अभिव्यक्तियों के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता था। चारण कवियों ने इस शैली में अनेक वीर काव्य और ग्रंथों की रचना की। इसके विपरीत पिंगल शैली ब्रज भाषा से प्रभावित थी और इससे भिन्न थी।

26. (B) देश हितेषिणी सभा -> वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा -> राजपूताना हरिजन सेवक संघ
औपनिवेशिक राजस्थान में सामाजिक सुधार संस्थाओं की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम देश हितेषिणी सभा की स्थापना जुलाई 1877 में मेवाड़ में हुई थी। इसके पश्चात् वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा की स्थापना वर्ष 1889 में कर्नल वॉल्टर के प्रयासों से हुई। अंत में, महात्मा गांधी की प्रेरणा से राजपूताना हरिजन सेवक संघ की स्थापना वर्ष 1932 में की गई थी।

27. (A) चारण
राजस्थान में चंडी या त्रागा की प्रथा विशिष्ट रूप से चारण समुदाय से जुड़ी हुई थी। चारणों को समाज में पवित्र माना जाता था, इसलिए जब कोई व्यापारी कारवां उनकी देखरेख में यात्रा करता था और लुटेरे हमला करते थे, तो चारण स्वयं को चोट पहुँचाकर या आत्मदाह करके अपराधियों पर दैवीय श्राप लाते थे। इस भय से माल सुरक्षित रहता था।

28. (C) वे सामाजिक रूप से हाशिए पर थे और प्रशासनिक भूमिकाओं से बाहर थे।
मध्यकालीन राजस्थान में महाजन समुदाय सामाजिक रूप से हाशिए पर नहीं था, बल्कि समाज और प्रशासन में अत्यंत प्रभावशाली स्थान रखता था। महाजन न केवल व्यापार और साहूकारी का संचालन करते थे, बल्कि कई महाजन दीवान और मुतसद्दी जैसे उच्च प्रशासनिक पदों पर आसीन थे। नगर के महाजन संघ प्रमुख को नगर सेठ कहा जाता था। वे राज्यों को वित्तीय सहायता देते थे।

29. (D) व्यापार को नियंत्रित करना तथा व्यापारियों और राज्य के बीच विवादों का निपटारा करना
मध्यकालीन राजस्थान में व्यापारिक श्रेणियों का ढाँचा अत्यंत सुदृढ़ था, जिसमें पंच-महाजन नामक संस्था प्रमुख भूमिका निभाती थी। इस संस्था का मुख्य कार्य नगरों में व्यापारिक गतिविधियों को नियमित करना, वस्तुओं के मूल्य पर निगरानी रखना तथा व्यापारियों और राज्य के मध्य उत्पन्न विवादों का निपटारा करना था। यह संस्था आर्थिक स्थिरता एवं व्यापारिक स्वायत्तता को बनाए रखने हेतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी।

30. (A) I, II और III
राजस्थान के महाजन समुदाय ने राज्य प्रशासन में दीवान और मुतसद्दी के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे मुख्यतः जैन और वैष्णव संप्रदायों के अनुयायी थे और उन्होंने कला, स्थापत्य, भव्य मंदिरों तथा बावड़ियों के निर्माण को संरक्षण दिया। महाजनों की व्यावसायिक गतिविधियाँ सीमाओं तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे दूर-दराज के व्यापार में भी सक्रिय रूप से संलग्न रहते थे।

31. (B) व्यापार में प्रयुक्त एक विनिमय पत्र (बिल ऑफ एक्सचेंज) या साख पत्र
राजस्थान के महाजन और साहूकार समुदायों द्वारा हुंडी का व्यापक प्रयोग किया जाता था, जो वित्तीय लेनदेन का एक पारंपरिक विनिमय पत्र या साख पत्र था। इसके माध्यम से व्यापारी बिना नकद राशि ले जाए एक स्थान से दूसरे स्थान पर धन का हस्तांतरण सुगमता और सुरक्षा से कर सकते थे। इस प्रणाली ने व्यापार और वाणिज्य को अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया।

32. (D) जैन विद्वानों को पदों पर नियुक्त करना और जैन मंदिरों को वित्तपोषित करना
मध्यकालीन राजस्थान के राजपूत शासक अपनी धार्मिक सहिष्णुता और व्यापक संरक्षण नीति के लिए जाने जाते थे। इसका प्रमुख प्रमाण यह है कि उन्होंने जैन विद्वानों को अपने राजदरबारों में उच्च पदों पर नियुक्त किया। साथ ही, शासकों ने दिलवाड़ा और रणकपुर जैसे प्रसिद्ध जैन मंदिरों के निर्माण

Click Here to Buy book on Amazon

आत्मघाती युद्ध हेतु किले के द्वार खोल देते थे। शत्रुओं से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त करने को साका कहते थे।

11. (A) II, I, IV, III
राजस्थान के इतिहास में प्रमुख जौहर घटनाओं का कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम 1301 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय रानी रंगदेवी के नेतृत्व में रणथंभौर का जौहर हुआ। इसके पश्चात् 1303 ईस्वी में रानी पद्मिनी के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का प्रथम जौहर घटित हुआ। तदोपरांत 1308 ईस्वी में सिवाना का जौहर हुआ तथा 1535 ईस्वी में चित्तौड़गढ़ का द्वितीय जौहर हुआ।

12. (C) एक जल-जौहर (जल में आत्मदाह)
सन 1301 ईस्वी में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के रणथंभौर दुर्ग पर आक्रमण के समय हम्मीरदेव चौहान की रानी रंगदेवी और उनकी पुत्री पदमला के नेतृत्व में ऐतिहासिक जौहर हुआ था। राजस्थान के इतिहास में यह घटना अद्वितीय मानी जाती है क्योंकि ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार यहाँ अग्नि-जौहर के स्थान पर पद्मला तालाब में कूदकर जल-जौहर किया गया था। यह अनूठा दृष्टांत है।

13. (D) मुगल साम्राज्य के उदय के पश्चात राजस्थान में यह पूरी तरह से समाप्त हो गया था।
राजस्थान में जौहर की प्रथा केवल मध्यकाल के शुरुआती दौर तक सीमित नहीं रही, बल्कि मुगल साम्राज्य के उदय और विस्तार के बाद भी जारी रही। उदाहरण के तौर पर सन 1568 ईस्वी में अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ दुर्ग के घेराबंदी के दौरान पत्ता सिसोदिया की पत्नी रानी फूलकंवर के नेतृत्व में विशाल जौहर हुआ था। यह इतिहास में प्रसिद्ध उदाहरण के रूप में दर्ज है।

14. (C) अभिजात राजपूत और प्रशासनिक परिवार
मध्यकालीन राजस्थान में पर्दा प्रथा का सबसे कठोर एवं व्यापक पालन अभिजात राजपूत परिवारों, राजवंशों तथा उच्च प्रशासनिक अधिकारियों के घरों में किया जाता था। सामंती पदानुक्रम और प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में कुलीन महिलाएँ पूर्णतः पर्दे में रहती थीं। इसके विपरीत, कृषक, कारीगर, पशुपालक एवं जनजातीय समुदायों की महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों के कारण व्यावहारिक छूट प्राप्त रहती थी। यह सामाजिक यथार्थ था।

15. (B) I, II और IV
मध्यकालीन राजस्थान में पर्दा प्रथा ने महिलाओं के जीवन को गहराई से प्रभावित किया। इसने महिलाओं की औपचारिक सार्वजनिक शिक्षा तक पहुँच को बाधित किया तथा महलों में जनाना कक्षों और जालीदार झरोखों के स्थापत्य विकास को जन्म दिया। बाहरी संसार से संपर्क हेतु महिला दूतों और मध्यस्थों की नियुक्ति की जाती थी। हालाँकि, इसने महिलाओं को व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन से बाहर नहीं किया।

16. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
मध्यकालीन राजस्थान में राजपूत महलों की वास्तुकला सामाजिक रीति-रिवाजों से गहराई से प्रभावित थी। पर्दा प्रथा के कारण महलों में बारीक जालियों वाले झरोखे, बंद आँगन और विशेष जनाना महल बनाए गए। इन स्थापत्य सुविधाओं का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि राजपरिवार की महिलाएँ बाहर के लोगों की दृष्टि में आए बिना दरबार की कार्यवाहियों को देख सकें। अतः व्याख्या सही है।

17. (A) बंधुआ मजदूरी और ऋण दासता
राजस्थान में प्रचलित सागड़ी प्रथा बंधुआ मजदूरी और ऋण दासता का एक रूप थी। इस प्रथा के अंतर्गत जब कोई निर्धन किसान या मजदूर किसी स्थानीय साहूकार अथवा जमींदार से ऋण लेता था और उसे समय पर चुकाने में असमर्थ रहता था, तो उसे अथवा उसके परिवार के सदस्यों को ऋण के ब्याज के बदले साहूकार के घर या खेतों पर बिना वेतन के काम करना पड़ता था।

18. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
मध्यकालीन राजस्थान में श्रम और दासता से संबंधित शब्द विशिष्ट अर्थ रखते थे। हाली उस कृषि सेवक को कहा जाता था जो जमींदार के खेतों से बंधा होता था। बेगार सामंती सरदारों द्वारा लिया जाने वाला बिना मजदूरी का जबरन श्रम था। चाकर शब्द सामान्य रूप से सेवक के लिए तथा गोला स्वामी के घर पैदा हुए दास हेतु प्रयुक्त होता था।

19. (A) किसी जमींदार से लिया गया ऋण चुकाने में विफल रहने पर
मध्यकालीन एवं आधुनिक राजस्थान में सागड़ी या बंधुआ मजदूरी व्यवस्था में कोई व्यक्ति सामान्यतः तब फँसता था, जब वह महाजन, जमींदार या जागीरदार से लिया गया ऋण तथा उसका अत्यधिक ब्याज चुकाने में विफल रहता था। ऋण न चुका पाने की स्थिति में व्यक्ति को स्वयं अथवा अपने परिजनों को साहूकार के यहाँ बिना किसी पारिश्रमिक के बंधुआ श्रमिक के रूप में कार्य करना पड़ता था।

20. (C) 1961
राजस्थान सरकार ने राज्य में सदियों से चली आ रही शोषक बंधुआ मजदूरी प्रथा को समाप्त करने के लिए राजस्थान सागड़ी प्रथा उन्मूलन अधिनियम वर्ष 1961 में पारित किया था। इस ऐतिहासिक कानून के माध्यम से सागड़ी प्रणाली को पूरी तरह से गैर-कानूनी और दंडनीय अपराध घोषित कर दिया गया। बाद में इस कानून में संशोधन करके कठोर दंड के प्रावधान जोड़े गए।

21. (B) समुदायों के वंशावली अभिलेख (बहियाँ) बनाए रखना
राजस्थान के पारंपरिक सामाजिक ढाँचे में भाट समुदाय का प्राथमिक और विशिष्ट कार्य विभिन्न जातियों और परिवारों की वंशावली के अभिलेख तैयार करना तथा उन्हें पीढ़ियों तक संरक्षित रखना था। भाट अपने यजमानों के घर जाकर उनके पारिवारिक इतिहास, जन्म, विवाह और मृत्यु जैसी घटनाओं को

NODIA

44. (C) कृषक जनजातियों के बीच सामाजिक रूप से स्वीकृत पुनर्विवाह प्रथा
राजस्थान के ग्रामीण और जनजातीय समाजों में नाता प्रथा विवाह का एक सामाजिक रूप से स्वीकृत रूप है। यह मुख्यतः विधवा अथवा परित्यक्ता स्त्री के किसी अन्य पुरुष के साथ पुनर्विवाह या सहजीवन की परंपरा है। इसमें विस्तृत धार्मिक अनुष्ठानों की आवश्यकता नहीं होती है। यह प्रथा महिलाओं को सामाजिक स्वीकृति और जीवन-यापन का आधार प्रदान करती रही है।

45. (D) शाही सगाई के दौरान आदान-प्रदान किए जाने वाले प्रथागत नियम और उपहार
राजपूत राजवंशों में विवाह एवं सगाई के संदर्भ में दस्तूर शब्द का तात्पर्य उन प्रथागत नियमों, शिष्टाचारों तथा उपहारों के आदान-प्रदान से है जो सगाई अथवा विवाह के अवसर पर निभाए जाते थे। इसमें दोनों पक्षों द्वारा एक-दूसरे के सम्मान में दिए जाने वाले आभूषण, वस्त्र और उपहार शामिल होते थे। यह सामंती संबंधों और राजनीतिक गठबंधनों को अत्यंत मजबूत और सुदृढ़ बनाता था।

46. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
राजस्थान की सामाजिक परंपराओं में मौसर निधन पर आयोजित मृत्यु भोज है। टीका सगाई के अवसर पर वर को भेजे जाने वाले उपहारों से संबंधित है। मोर बांधिया विवाह के समय मुकुट बाँधने की प्रथा है। त्याग प्रथा विवाह के अवसर पर चारणों और भाटों को दिया जाने वाला अनिवार्य उपहार या दान था। ये सभी प्रथाएँ रीति-रिवाजों का प्रमुख और अटूट अंग थीं।

47. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
मध्यकालीन राजस्थान में वैवाहिक संबंधों ने राजनीतिक परिदृश्य और शक्ति संतुलन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजपूत शासकों ने सीमा विवादों को सुलझाने तथा कूटनीतिक मैत्री हेतु विवाहों का प्रयोग किया। मुगलों के साथ भी रणनीतिक वैवाहिक संबंध स्थापित किए गए। यद्यपि कथन और कारण दोनों सत्य हैं, किंतु कारण कथन की पूर्ण और सटीक व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।

48. (D) चटशालाएँ या पोशालें
मध्यकालीन राजस्थान में व्यापारी और ब्राह्मण बालकों को प्रारंभिक स्तर पर व्यावहारिक शिक्षा देने के लिए चटशालाएँ या पोशालें नामक संस्थाएँ संचालित होती थीं। इन पाठशालाओं में यति या गुरु बालकों को महाजनी लिपि, गणित, बही-खाता लेखन तथा नैतिक शिक्षा प्रदान करते थे। यह शिक्षा मुख्य रूप से व्यापारिक तथा व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अत्यंत उपयोगी और व्यावहारिक मानी जाती थी।

49. (A) मोड़िया (महाजनी)
राजस्थान में महाजन समुदाय अपनी खाता-बही और व्यापारिक पत्राचार के लिए मुख्य रूप से मोड़िया या महाजनी लिपि का प्रयोग करते थे। यह देवनागरी का ही एक त्वरित रूप था, जिसमें अक्षरों को बिना हाथ उठाए निरंतर लिखा जाता था। इसमें मात्राओं का प्रयोग कम होता था। यह लिपि त्वरित लेखन और व्यावसायिक गोपनीयता हेतु अत्यंत उपयोगी मानी जाती रही है।

50. (C) शिक्षा, पांडुलिपियों की प्रतिलिपि बनाने और धर्मचर्चा के केंद्र
मध्यकालीन राजस्थान में जैन उपाश्रय धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के प्रमुख केंद्र थे। इन स्थानों पर धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन, पांडुलिपियों की प्रतिलिपि निर्माण, उनका संरक्षण तथा विद्वानों के मध्य धर्मचर्चा और शास्त्रार्थ आयोजित किए जाते थे। जैसलमेर और बीकानेर के उपाश्रय ज्ञानभंडार के रूप में पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध थे। यह शैक्षणिक एवं बौद्धिक गतिविधियों का मुख्य आधार था।

51. (A) व्यावसायिक कौशल वंशानुगत श्रेणी (गिल्ड) शिक्षुता के माध्यम से पीढ़ियों तक पहुँचाए जाते थे।
मध्यकालीन राजस्थान में व्यावसायिक और शिल्प कौशल की शिक्षा पारिवारिक एवं वंशानुगत श्रेणी व्यवस्था तथा शिक्षुता के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित की जाती थी। बालक अपने पारंपरिक व्यवसाय में घर पर ही निपुणता प्राप्त करते थे। राज्य औपचारिक शिक्षा का एकमात्र प्रदाता नहीं था, बल्कि यह व्यवस्था सामाजिक-व्यावसायिक ढाँचे एवं परंपराओं पर ही पूर्णतः आधारित थी।

52. (C) केवल I और III
मध्यकालीन राजस्थान में मंदिर आर्थिक और सामाजिक जीवन के प्रमुख केंद्र थे। उन्हें विशाल भूमि अनुदान प्राप्त था, जिससे वे बड़े भू-स्वामी के रूप में कार्य करते थे और ऋण भी उपलब्ध कराते थे। मंदिर के प्रांगण स्थानीय मेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सामाजिक सभाओं के स्थल थे। मंदिर केवल शासक वर्ग तक सीमित न होकर समाज के सभी वर्गों से जुड़े थे।

53. (A) महा-मारु शैली -> मारु-गुर्जर (सोलंकी) शैली -> राजपूत-मुगल समन्वयात्मक शैली
राजस्थान में मंदिर स्थापत्य शैलियों का कालानुक्रमिक विकास इस प्रकार हुआ: सर्वप्रथम 8वीं से 10वीं शताब्दी में महा-मारु शैली का विकास हुआ। इसके पश्चात् 11वीं से 13वीं शताब्दी में मारु-गुर्जर शैली का अभ्युदय हुआ। तत्पश्चात् उत्तर-मध्यकाल में राजपूत-मुगल समन्वयात्मक शैली का विकास हुआ। यह क्रमिक ऐतिहासिक विकास राजस्थान की स्थापत्य कला और मंदिर निर्माण परंपरा की महान समृद्धि को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

54. (C) मारवाड़ (जोधपुर)
19वीं शताब्दी में नाथ संप्रदाय के मठों ने मारवाड़ रियासत में अत्यधिक सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव स्थापित किया। जोधपुर के महाराजा मानसिंह नाथ पंथ के अनन्य भक्त बन गए थे। उन्होंने जोधपुर में प्रसिद्ध महामंदिर का निर्माण करवाया तथा नाथ आचार्यों को राज्य प्रशासन और निर्णयों में व्यापक अधिकार प्रदान किए। इसके परिणामस्वरूप मारवाड़ के राजनीतिक परिदृश्य में नाथों का वर्चस्व स्थापित हो गया था।

Downloaded from www.pdf.tube

पहुँचाना था। वे गाँव में व्यवस्था बनाए रखने तथा स्थानीय विवादों को सुलझाने के लिए गठित ग्राम पंचायत का भी नेतृत्व करते थे। यह पद अत्यंत महत्त्वपूर्ण और पारंपरिक रूप से माना जाता था।

78. (C) भगवान शिव और देवी पार्वती
राजस्थान में श्रावण मास में मनाया जाने वाला तीज का त्योहार मानसून के आगमन और हरियाली का प्रतीक है। यह पर्व मुख्य रूप से भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा हेतु समर्पित है। महिलाएँ अपने सुहाग की रक्षा और दीर्घायु के लिए यह व्रत रखती हैं। जयपुर में इस अवसर पर तीज माता की अत्यंत भव्य सवारी पारंपरिक रूप से निकाली जाती है।

79. (B) देवी गौरी की भक्ति का प्रतीक है और महिलाओं द्वारा मनाया जाता है।
राजस्थान का प्रसिद्ध गणगौर त्योहार देवी गौरी और भगवान शिव की भक्ति एवं पूजा का प्रमुख पर्व है। यह त्योहार मुख्य रूप से महिलाओं और अविवाहित बालिकाओं द्वारा मनाया जाता है। महिलाएँ सुहाग की दीर्घायु तथा कन्याएँ योग्य वर प्राप्ति हेतु यह पूजन करती हैं। जयपुर और उदयपुर में गणगौर की भव्य सवारी सांस्कृतिक धरोहर का मुख्य आकर्षण सदियों से मानी जाती है।

80. (D) एक शुभ दिन जिस दिन ऐतिहासिक रूप से बड़े पैमाने पर बाल विवाह होते थे।
राजस्थान में आखा तीज या अक्षय तृतीया को एक स्वतःसिद्ध और अत्यंत शुभ अबूझ सावा माना जाता है। इसके समाजशास्त्रीय महत्त्व का एक नकारात्मक पहलू यह रहा कि ऐतिहासिक रूप से इस शुभ दिन ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बाल विवाह आयोजित कर दिए जाते थे। वर्तमान में प्रशासन इस दिन बाल विवाह रोकने हेतु सख्त विशेष अभियान चलाता है।

81. (A) खेजड़ी (शमी)
राजस्थान में विजयादशमी के अवसर पर राजपूतों द्वारा पारंपरिक रूप से खेजड़ी या शमी वृक्ष तथा अस्त्र-शस्त्रों की विशेष पूजा की जाती है। शमी वृक्ष को विजय और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। प्राचीन पौराणिक परंपराओं एवं राजपूती सैन्य संस्कृति में युद्ध अभियान से पूर्व इस वृक्ष की पूजा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यह राज्य का प्रसिद्ध वृक्ष है।

82. (C) ब्रज भाषा
मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य में पिंगल शैली राजस्थानी भाषा और ब्रज भाषा के सुंदर सम्मिश्रण से निर्मित हुई थी। इस शैली का प्रयोग मुख्य रूप से पूर्वी राजस्थान के कवियों और भाटों द्वारा चरित्र काव्यों, प्रशस्तियों तथा ग्रंथों की रचना में किया जाता था। डिंगल शैली पश्चिमी मारवाड़ी से प्रभावित थी, जबकि पिंगल में ब्रज भाषा का प्रभाव अत्यधिक स्पष्ट दिखाई देता है।

83. (A) मेवाती - उदयपुर और राजसमंद
राजस्थान की बोलियों में मेवाती बोली मुख्य रूप से पूर्वी राजस्थान के अलवर और भरतपुर जिलों में बोली जाती है। इसके विपरीत, उदयपुर और राजसमंद के क्षेत्रों में मेवाड़ी बोली का प्रयोग किया जाता है, जो मारवाड़ी की प्रमुख शाखा है। अतः मेवाती का उदयपुर और राजसमंद से संबंध असंगत एवं अशुद्ध है। मारवाड़ी जोधपुर में तथा हाड़ौती कोटा में प्रचलित है।

84. (D) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
राजस्थानी भाषा और इसकी विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों का प्रथम वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित भाषाई सर्वेक्षण सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा किया गया था। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थान की बोलियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया तथा इस क्षेत्र की भाषा हेतु राजस्थानी शब्द का प्रथम बार सर्वमान्य वैज्ञानिक प्रयोग किया था। यह भाषा-विज्ञान का अत्यंत महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है।

85. (B) मेवाड़
मेवाड़ राज्य के सामंती इतिहास में चूंडावत और शक्तावत वंशों के मध्य ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता और हरावल दस्ता में आगे रहने का संघर्ष मेवाड़ अभिजात वर्ग की विशिष्ट पहचान थी। चूंडावतों को मेवाड़ की सेना के हरावल का नेतृत्व करने का विशेषाधिकार प्राप्त था। ऊँटाला दुर्ग पर विजय के दौरान दोनों वंशों का अभूतपूर्व बलिदान मेवाड़ के इतिहास में स्वर्णिम माना जाता है।

NODIA

86. (C) जनजातीय क्षेत्रों की तुलना में उच्च अभिजात वर्ग के बीच पर्दा प्रथा का अधिक कड़ाई से पालन किया जाता था।
राजस्थान में पर्दा प्रथा का पालन सामाजिक श्रेणियों में भिन्न था। उच्च राजपूत अभिजात वर्ग और शाही परिवारों में पर्दा प्रथा का अत्यंत कड़ाई से पालन किया जाता था। इसके विपरीत, जनजातीय क्षेत्रों और कृषक समुदायों में महिलाओं पर ऐसा कठोर सामाजिक नियंत्रण नहीं था तथा वे आर्थिक गतिविधियों में भाग लेती थीं। यह स्पष्ट क्षेत्रीय एवं सामाजिक अंतर माना जाता था।

87. (D) कथन (A) असत्य है लेकिन कारण (R) सही है।
मध्यकालीन राजस्थान में कारीगरों की स्थिति स्वतंत्र बाजार की माँगों पर आश्रित नहीं थी, क्योंकि वे जजमानी प्रथा और राज्य-प्रायोजित कारखानों के ढाँचे में व्यवस्थित रूप से एकीकृत थे। ये व्यवस्थाएँ उन्हें सुरक्षा, निश्चित आजीविका और संरक्षण प्रदान करती थीं। इस कारण कथन असत्य है, जबकि दिया गया कारण पूर्णतः सत्य और तथ्यपरक है। यह तत्कालीन अर्थव्यवस्था का अत्यंत महत्त्वपूर्ण मुख्य आधार था।

88. (A) पंच-पटेल (या पंचायत)
राजस्थान के ग्रामीण और जनजातीय समुदायों में पारंपरिक विवाद समाधान की संस्था पंच-पटेल या ग्राम पंचायत थी। इस व्यवस्था में गाँव के सम्मानित बुज़ुर्ग और पटेल एकत्र होकर सामाजिक, पारिवारिक और भूमि संबंधी विवादों का

66. (C) राजपूतों और व्यापारियों द्वारा संरक्षित वंशानुगत मुस्लिम संगीतकार।
पश्चिमी राजस्थान के लंगा और मांगणियार समुदाय वंशानुगत मुस्लिम संगीतकार वर्ग से संबंधित हैं। इन समुदायों को ऐतिहासिक रूप से राजपूत सरदारों और व्यापारियों का संरक्षण प्राप्त था। वे अपने संरक्षक परिवारों के यहाँ अवसरों पर सारंगी, कामायचा और खड़ताल जैसे वाद्ययंत्रों के साथ उत्कृष्ट लोक संगीत प्रस्तुत करते हैं। यह उनकी पारंपरिक कलात्मक विशिष्ट एवं अमूल्य सांस्कृतिक पहचान मानी जाती है।

67. (A) राजपूतों में विवाह के खर्चों को नियंत्रित करना और बाल विवाह को रोकना
वर्ष 1889 में स्थापित वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा का मुख्य उद्देश्य राजपूत समाज की सामाजिक कुरीतियों में सुधार करना था। इस संस्था ने विवाह के अवसर पर होने वाले अत्यधिक व्यय और फिजूलखर्ची को नियंत्रित करने, त्याग दान की सीमा निर्धारित करने तथा बाल विवाह एवं बहुविवाह जैसी कुप्रथाओं पर रोक लगाने हेतु नियम बनाए थे। यह ऐतिहासिक सुधारवादी प्रयास था।

68. (D) मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह
सामाजिक सुधार संस्था देश हितेषिणी सभा की स्थापना 2 जुलाई 1877 को उदयपुर में मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह की अध्यक्षता में की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राजपूत समाज में विवाह पर होने वाले अत्यधिक व्यय को सीमित करना, त्याग प्रथा को नियंत्रित करना तथा बहुविवाह पर रोक लगाना था। महाराणा ने सामाजिक सुधारों को सक्रिय प्रोत्साहन प्रदान किया था।

69. (B) कोटा
राजस्थान में कन्या वध की अमानवीय प्रथा पर कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने वाली प्रथम रियासत कोटा थी। कोटा रियासत में सन 1832 में कन्या वध को अवैध और गैर-कानूनी घोषित किया गया। इसके पश्चात् राजस्थान की अन्य रियासतों जैसे बूंदी, बीकानेर, जोधपुर और जयपुर ने भी इस कुप्रथा पर रोक लगाने हेतु अपने राज्यों में कानून पारित कर लागू किए थे।

70. (C) विवाह के समय चारणों और भाटों द्वारा माँगे जाने वाले अनिवार्य उपहार और नकद राशि
मध्यकालीन राजस्थान में त्याग प्रथा एक शोषक सामाजिक रीति थी। इसके अंतर्गत राजपूतों में विवाह के अवसर पर चारणों और भाटों द्वारा अत्यधिक नकद राशि तथा उपहारों की माँग की जाती थी। इस अत्यधिक वित्तीय भार के कारण कन्या के विवाह पर भारी व्यय होता था, जिसके भय से अप्रत्यक्ष रूप से कन्या वध जैसी कुप्रथा को भी बढ़ावा मिलता रहता था।

71. (D) उदयपुर
आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने जीवन का एक महत्त्वपूर्ण समय राजस्थान में व्यतीत किया। उदयपुर प्रवास के दौरान मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह के अतिथ्य में उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना और लेखन कार्य मुख्य रूप से पूर्ण किया था। उदयपुर में स्थित नवलखा महल उनका प्रमुख वैचारिक चिंतन एवं निवास स्थल रहा था।

72. (A) मेवाड़ (उदयपुर)
राजस्थान में अंधविश्वास पर आधारित डाकन प्रथा को आधिकारिक रूप से प्रतिबंधित करने वाली प्रथम रियासत मेवाड़ थी। वर्ष 1853 में मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह के शासनकाल में खेरवाड़ा में इस कुप्रथा पर रोक लगाई गई थी। इसमें महिलाओं को डायन बताकर प्रताड़ित करने की अमानवीय क्रिया पर कानूनी दंड का प्रावधान किया गया था। यह एक महत्त्वपूर्ण प्रगतिशील कदम साबित हुआ।

73. (B) त्याग प्रथा पर प्रतिबंध - जोधपुर
राजस्थान में सामाजिक सुधार कानूनों के ऐतिहासिक संदर्भ में जोधपुर रियासत ने वर्ष 1841 में त्याग प्रथा पर सर्वप्रथम कानूनी प्रतिबंध लगाया था। इसके विपरीत, सती प्रथा पर पहला प्रतिबंध बूंदी में लगा था। समाधि प्रथा पर प्रतिबंध जयपुर राज्य ने तथा नर बलि पर प्रतिबंध कोटा राज्य ने लगाया था। अतः त्याग प्रथा और जोधपुर का संबंध पूरी तरह सही है।

74. (B) राज्य या जागीरदारों द्वारा कराया जाने वाला अवैतनिक बलपूर्वक श्रम
सामंती राजस्थान में बेगार एक अत्यधिक शोषक प्रथा थी, जिसके अंतर्गत राज्य और जागीरदारों द्वारा किसानों तथा मजदूरों से बिना कोई मजदूरी दिए जबरन काम करवाया जाता था। इसमें सामान ढोना, निर्माण कार्य और व्यक्तिगत सेवाएँ शामिल थीं। इस अवैतनिक श्रम के कारण किसानों का भारी शोषण होता था, जो आगे चलकर किसान विद्रोहों और जन-आंदोलनों का अत्यंत प्रमुख कारण बना था।

75. (A) जागीरदारी व्यवस्था के तहत, राजा को किसी भी परिस्थिति में भूमि जब्त करने का कोई अधिकार नहीं था।
राजस्थान में जागीरदारी व्यवस्था के तहत सर्वोच्च भू-स्वामी राजा ही होता था। यदि कोई जागीरदार राजद्रोह करता था या सैन्य कर्तव्य में विफल रहता था, तो राजा उसकी जागीर को जब्त कर सकता था। अतः यह कहना असत्य है कि राजा को भूमि जब्त करने का अधिकार नहीं था। जागीरदारों के पास अपने क्षेत्रों में न्याय और पुलिस शक्तियाँ भी होती थीं।

76. (C) किसान की पुत्री के विवाह पर
चंवरी कर बिजोलिया ठिकाने में राव कृष्ण सिंह द्वारा वर्ष 1903 में किसानों पर लगाया गया एक शोषक उपकर था। इसके अनुसार, जब भी कोई किसान अपनी पुत्री का विवाह करता था, तो उसे ठिकाने में 5 रुपये का कर जमा कराना अनिवार्य था। किसानों ने इस अपमानजनक कर का तीव्र विरोध किया, जिससे बिजोलिया किसान आंदोलन को नई दिशा प्राप्त हुई थी।

77. (D) राजस्व संग्रह और व्यवस्था के लिए उत्तरदायी गाँव का मुखिया
राजस्थान की ग्रामीण प्रशासनिक संरचना में पटेल या चौधरी गाँव के मुखिया होते थे। उनका मुख्य कार्य किसानों से भू-राजस्व और अन्य कर एकत्र करके राज्य या जागीरदार तक

Click Here to Buy book on Flipkart

55. (D) दादू पंथ
थंबे दादू पंथ में धार्मिक शिक्षा, आध्यात्मिक साधना तथा संगठन संचालन के प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र हैं। संत दादू दयाल के विचारों के प्रसार हेतु उनके शिष्यों ने विभिन्न स्थानों पर इन केंद्रों की स्थापना की थी। इन थंबों में साधु निवास करते थे, जहाँ ग्रंथों का पठन-पाठन तथा वाणी पाठ किया जाता था। नरेना दादू पंथ की प्रधान पीठ मानी जाती है।

56. (A) प्रकृति संरक्षण और वन्यजीव संरक्षण
राजस्थान का बिश्नोई समुदाय पर्यावरण, वृक्षों और वन्यजीवों के संरक्षण हेतु अपनी ऐतिहासिक प्रतिबद्धता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। 15वीं शताब्दी में संत जाम्भोजी द्वारा प्रतिपादित नियमों में वृक्षों की कटाई न करना और वन्यजीवों की रक्षा सर्वोपरि है। सन 1730 में खेजड़ली में अमृता देवी के नेतृत्व में 363 लोगों ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपना बलिदान दिया था। यह अद्वितीय मिसाल है।

57. (B) रामदेवजी
राजस्थान में लोक देवता बाबा रामदेवजी सामाजिक-सांस्कृतिक समन्वय और धार्मिक सद्भाव के प्रतीक माने जाते हैं। हिंदू समाज उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का अवतार मानकर पूजता है, जबकि मुस्लिम उन्हें रामसा पीर के रूप में पूजते हैं। रामदेवजी ने जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता का विरोध किया तथा चौबीस वाणियाँ ग्रंथ की रचना कर समतावादी समाज का संदेश पूरे क्षेत्र में प्रसारित किया था।

58. (B) तलवारों और हथियारों का निर्माण एवं उन पर पॉलिश करना
मध्यकालीन राजस्थान में सिंलैदार और सिकलीगर कारीगर समुदाय मुख्य रूप से अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण, ढलाई, धार लगाने तथा हथियारों पर पॉलिश करने के कार्य से जुड़े थे। युद्धप्रधान सामंती व्यवस्था में इन कारीगरों का अत्यंत महत्त्व था। वे राजाओं और सैनिकों के लिए तलवारें, कटारें तथा ढालें तैयार करते थे एवं उन पर नक्काशी का कार्य भी निपुणता से किया करते थे।

59. (B) केवल I, III और IV
भक्ति आंदोलन ने राजस्थान में सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया। संतों ने जनभाषा में वाणी साहित्य की रचना की। मीराबाई जैसी संत ने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देकर भक्ति मार्ग चुना। इस आंदोलन ने अस्पृश्यता और जातिगत अनुष्ठानों का विरोध कर समतावाद को प्रोत्साहित किया। इसने जातिवादी कड़ाई को सुदृढ़ नहीं किया, अतः दूसरा कथन पूर्णतः असंगत एवं असत्य सिद्ध होता है।

60. (C) इसके कारण पारंपरिक राजपूत चित्रकला शैलियों का पूर्ण परित्याग हो गया।
मुगल संपर्क के फलस्वरुप राजपूत शासकों ने मुगल शिष्टाचार, वेशभूषा तथा वास्तुकला को अपनाया। किंतु इसके कारण पारंपरिक राजपूत चित्रकला शैलियों का पूर्ण परित्याग नहीं हुआ, बल्कि स्थानीय शैलियों में मुगल प्रभाव के मिश्रण से एक समृद्ध समन्वयात्मक शैली का विकास हुआ। राजपूत चित्रकला ने अपनी मौलिकता और स्थानीय विशेषताओं को निरंतर बनाए रखा था। यह सांस्कृतिक विकास का एक नवीन युग था।

61. (D) व्यावसायिक जातियों और किसानों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान करने वाली प्रणाली
राजस्थान के ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक ढाँचे में जजमानी व्यवस्था एक पारंपरिक आत्मनिर्भर प्रणाली थी। इसके अंतर्गत गाँव की विभिन्न सेवादार एवं व्यावसायिक जातियाँ कृषक परिवारों को अपनी सेवाएँ और निर्मित वस्तुएँ प्रदान करती थीं। इसके बदले में किसानों द्वारा फसल कटाई के समय उन्हें अनाज या खाद्यान्न पारिश्रमिक के रूप में दिया जाता था। यह पारस्परिक आर्थिक निर्भरता का अत्यंत महत्त्वपूर्ण मुख्य आधार थी।

62. (C) अंगरखी / जामा
राजस्थान के अभिजात वर्ग में प्रचलित अंगरखी या जामा वस्त्र स्वदेशी राजस्थानी और मुगल वेशभूषा शैलियों के प्रत्यक्ष समन्वय को प्रदर्शित करता है। मुगलों के साथ सांस्कृतिक संपर्कों के कारण पारंपरिक अंगरखी में मुगल जामा की बनावट और शैली का समावेश हुआ। इस परिधान का प्रयोग राजपूत राजा और सामंत दरबार एवं उत्सवों में विशिष्ट वेशभूषा के रूप में शान से करते थे।

63. (B) सैन्य अभियानों से प्राप्त धन ने राजस्थान में प्रमुख निर्माण परियोजनाओं को वित्तपोषित किया।
मुगलों की मनसबदारी व्यवस्था में शामिल होने के बाद राजपूत सरदारों को साम्राज्य के विभिन्न सैन्य अभियानों में भेजा गया। शाही सेवा एवं अभियानों से प्राप्त धन और संसाधनों ने राजस्थान में भारी आर्थिक समृद्धि ला दी। इस वित्तीय संसाधन का उपयोग राजपूत शासकों ने अपने राज्यों में विशाल किलों, भव्य महलों, मंदिरों और जलाशयों के निर्माण को वित्तपोषित करने हेतु व्यापक स्तर पर किया।

64. (D) हिंदू स्मारक परंपराओं और इस्लामिक मकबरा परंपराओं का संश्लेषण
राजस्थान में राजपूत राजवंशों के दाह-संस्कार स्थलों पर निर्मित छतरियाँ एक विशिष्ट स्थापत्य कला हैं। यह शैली पारंपरिक हिंदू स्मारक परंपराओं तथा मुगल-इस्लामिक मकबरा वास्तुकला के सुंदर संश्लेषण से विकसित हुई। इसमें हिंदू स्थापत्य के स्तंभ एवं नक्काशीदार चबूतरे तथा इस्लामिक प्रभाव के गुंबद और मेहराबों का समन्वय मिलता है, जैसा कि आहाड़ तथा गेटोर की छतरियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

65. (A) वे मुसलमान हैं जिन्होंने कई हिंदू सामाजिक रीति-रिवाजों और गोत्रों को बनाए रखा है।
मेवात क्षेत्र का मेव समुदाय राजस्थान में सांस्कृतिक समन्वय का अनूठा उदाहरण है। यद्यपि मेव लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं, किंतु उन्होंने अपनी पारंपरिक हिंदू राजपूत सांस्कृतिक जड़ों, गोत्र व्यवस्था तथा विवाह संबंधी रीति-रिवाजों को बनाए रखा है। वे अपनी वंशावली में हिंदू पूर्वजों का स्मरण करते हैं और उनकी संस्कृति में दोनों परंपराओं का सुंदर सम्मिश्रण स्पष्ट दिखाई देता है।

NODIA

सर्वसम्मति से निपटारा करते थे। पंच-पटेलों के निर्णय को समाज में अंतिम और सर्वमान्य माना जाता था। यह स्वदेशी स्वायत्त न्याय प्रणाली का अत्यंत सुदृढ़ प्रमुख ढाँचा था।

89. (B) राज्य की सीमाओं के पार आवाजाही करने वाले माल पर लगाया जाने वाला एक आंतरिक पारगमन शुल्क
मध्यकालीन राजस्थान की राजस्व प्रणाली में जकात एक आंतरिक पारगमन शुल्क या सीमा कर था। यह राज्य की सीमाओं या नगरों में प्रवेश करने वाले व्यापारिक सामानों और कारवानों पर व्यापारियों से वसूला जाता था। इस कर से प्राप्त आय राज्य के खज़ाने को समृद्ध करती थी तथा व्यापारिक मार्गों पर सुरक्षा और सुविधाओं के प्रबंधन में सक्रिय रुप से उपयोग की जाती थी।

90. (B) इसने जागीरदारों पर शासकों की सैन्य निर्भरता को कम कर दिया, जिससे किसानों की सुरक्षा कमजोर हो गई।
1818 की ब्रिटिश संधियों के बाद राजस्थान में शासकों की जागीरदारों पर सैन्य निर्भरता घट गई, क्योंकि अंग्रेजों ने सुरक्षा का वचन दिया था। इसके परिणामस्वरुप जागीरदार अपने पारंपरिक कर्तव्यों से हटकर किसानों पर केवल कर वसूली का दबाव बनाने लगे। किसानों की सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा कमजोर हो गई और उन पर शोषण अत्यधिक बढ़ गया, जो प्रमुख कारण बना था।

91. (A) भील और गरासिया जनजातियों के विद्रोहों को नियंत्रित करना और क्षेत्रीय व्यवस्था बनाए रखना
वर्ष 1841 में ब्रिटिश सरकार द्वारा मेवाड़ भील कोर की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मेवाड़ के पहाड़ी क्षेत्रों में भील तथा गरासिया जनजातियों के विद्रोहों को नियंत्रित करना और शांति-व्यवस्था स्थापित करना था। इसका मुख्यालय खेरवाड़ा में बनाया गया था। इस बल के माध्यम से अंग्रेजों ने जनजातीय पट्टियों में अपने प्रशासनिक प्रभाव को सुदृढ़ किया और व्यवस्था निरंतर बनाए रखी थी।

92. (A) केवल I और II
राजस्थान में चारण और भाट समुदायों का ऐतिहासिक एवं वंशावली अभिलेखों के रक्षक के रूप में सर्वोच्च सम्मान था। उनकी काव्य प्रतिभा और श्राप के भय से राजा भी डरते थे। वे केवल मौसमी कृषक नहीं थे, बल्कि पूर्णकालिक कवि और इतिहासकार थे, जिन्हें सासन भूमियाँ प्राप्त थीं। अतः पहला और दूसरा कथन पूर्णतः सत्य एवं ऐतिहासिक रूप से प्रामाणिक हैं।

93. (D) राजपरिवार के लिए वस्तुओं और कला का उत्पादन करने वाली राज्य-संचालित कार्यशालाएँ
मध्यकालीन राजस्थान में कारखाना प्रणाली राजपरिवार और दरबार के लिए आवश्यक वस्तुओं, कलाकृतियों तथा हथियारों का उत्पादन एवं रखरखाव करने वाली राज्य-संचालित कार्यशालाएँ थीं। जयपुर में ऐसे 36 कारखाने कार्यरत थे, जिनमें चित्रकारी हेतु सूरतखाना और अस्त्र-शस्त्रों हेतु सिलेहखाना प्रसिद्ध थे। ये कारखाने राजस्थानी कला एवं शिल्पकला को रखने और संरक्षण प्रदान करने के अत्यंत महत्त्वपूर्ण मुख्य केंद्र थे।

94. (C) पहाड़ी क्षेत्रों में झोंपड़ियों का समूह या ग्रामीण बस्ती
राजस्थान के भील समुदाय में पाल शब्द का प्रयोग पहाड़ी और वनीय क्षेत्रों में स्थित झोंपड़ियों या गाँवों के समूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। कई छोटे फला मिलकर एक पाल का गठन करते हैं। इस पाल के नेता या मुखिया को गमेती या पालवी कहा जाता है, जो सामाजिक व्यवस्था को सफलतापूर्वक संचालित और नियंत्रित करता है।

95. (B) विधवा पुनर्विवाह का अनुष्ठान जिसमें एक नया वस्त्र दिया जाता है
राजस्थान की ग्रामीण सामाजिक परंपराओं में चूनड़ी ओढ़ाना विधवा पुनर्विवाह अथवा नाता प्रथा से जुड़ा एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान है। इस रीति के तहत जब कोई पुरुष किसी स्त्री से पुनर्विवाह करता है, तो वह उसे नए वस्त्र और चूनड़ी भेंट करता है। यह प्रक्रिया समाज के समक्ष पुनर्विवाह को औपचारिक स्वीकृति और मान्यता प्रदान करने का एक प्रमुख माध्यम मानी जाती है।

96. (D) मनमाने उपकरों (लाग-बाग), उच्च राजस्व और अवैतनिक बेगार का बोझ
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजस्थान में हुए प्रमुख किसान आंदोलनों का मूल कारण जागीरदारों द्वारा किसानों पर थोपे गए अत्यधिक मनमाने उपकर (लाग-बाग), भू-राजस्व की ऊँची दरें तथा बिना मजदूरी के कराया जाने वाला बेगार श्रम था। इस त्रिस्तरीय आर्थिक शोषण और सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध किसानों ने संगठित होकर बिजोलिया जैसे ऐतिहासिक आंदोलनों की अभूतपूर्व व्यापक शुरुआत की थी।

97. (A) मौसर - पुत्र के जन्म के उत्सव में दिया जाने वाला भोज
राजस्थान के रीति-रिवाजों में मौसर शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति के निधन पर दिया जाने वाला मृत्यु भोज होता है। इसे नुक्ता भी कहा जाता है। अतः इसे पुत्र जन्म के उत्सव से जोड़ना असंगत और गलत है। अन्य सभी युग्म पूरी तरह सुमेलित हैं, जिनमें दापा वधू-मूल्य, नाता पुनर्विवाह तथा हलमा पारस्परिक सामुदायिक श्रम की प्रथा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

NODIA

98. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
19वीं शताब्दी के राजस्थान में सामाजिक सुधार प्रयास मुख्य रूप से शासकों और अंग्रेजों द्वारा प्रारंभ किए गए थे। इसका मुख्य कारण यह था कि कड़े सामंती ढाँचे और आधुनिक शिक्षा के अभाव के कारण स्थानीय मध्यम वर्ग का शुरुआती विकास नहीं हो सका था। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण कथन की पूर्ण एवं सटीक व्याख्या करता है।

99. (A) राजपरिवार की महिलाओं के लिए विशेष मनोरंजन/विश्राम स्थल
उदयपुर में स्थित सहेलियों की बाड़ी का निर्माण महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय द्वारा राजपरिवार की महिलाओं और उनकी परिचारिकाओं के मनोरंजन तथा विश्राम हेतु करवाया गया था। यह स्थान महिलाओं को पर्दे के भीतर सुरक्षित और सुंदर वातावरण में प्राकृतिक सौंदर्य एवं जल-फव्वारों का आनंद लेने

(B) सुख निवास परिसर
(C) दीवान-ए-आम
(D) जस मंदिर मंडप

12. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : दुर्ग
P. मेहरानगढ़ दुर्ग
Q. जैसलमेर दुर्ग
R. चित्तौड़गढ़ दुर्ग
S. आमेर दुर्ग
सूची II : भौगोलिक स्थिति/पहाड़ी
1. त्रिकूट पहाड़ी
2. चिड़िया-टूँक पहाड़ी
3. काली खोह पहाड़ी
4. मेसा पठार
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

13. जैसलमेर दुर्ग को प्रायः 'जीवंत किला' (लिविंग फोर्ट) कहा जाता है, क्योंकि:
(A) इसके भीतर एक पूर्णतः सक्रिय सैन्य रेजिमेंट और परिचालन छावनी स्थित है।
(B) इसकी विशाल बलुआ पत्थर की दीवारों का रंग दिन भर परिवर्तित होता रहता है।
(C) इस परिसर में निरंतर संरचनात्मक विस्तार और वास्तुकला संबंधी संशोधन होते रहते हैं।
(D) इसके परकोटे के भीतर आज भी एक बड़ी जनसामान्य आबादी निवास करती है।

14. जैसलमेर दुर्ग को मुख्य रूप से किस कारण से 'सोनार किला' या 'गोल्डन फोर्ट' कहा जाता है?
(A) भाटी शासकों द्वारा शाही राजकोष में ऐतिहासिक रूप से रखे गए स्वर्ण का विशाल भंडार।
(B) इसके मुख्य प्रवेश द्वारों पर की गई स्वर्ण नक्काशी और परत।
(C) पीले बलुआ पत्थर की दीवारें जो सूर्य के प्रकाश में सोने की भाँति चमकती हैं।
(D) थार मरुस्थल के सुनहरे रेत के टीलों के बीच इसकी प्रमुख भौगोलिक स्थिति।

15. जैसलमेर दुर्ग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 12वीं शताब्दी में रावल जैसल द्वारा की गई थी।
II. दुर्ग में दोहरा परकोटा (सुरक्षा दीवार) है जिसे 'कमरकोट' कहा जाता है।
III. इसकी परिधि में 99 प्रमुख बुर्ज बने हुए हैं।
IV. दुर्ग की दीवारों के पत्थरों को जोड़ने के लिए चूने और गारे का अत्यधिक उपयोग किया गया था।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

16. जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव पारंपरिक रूप से किस पूज्य व्यक्तित्व द्वारा रखी गई मानी जाती है?
(A) भगवान जाम्भोजी
(B) लोक देवता पाबूजी
(C) बाबा रामदेवजी
(D) करणी माता

17. 'किलकिला', 'शंभूबाण' और 'गजनी खाँ' मेहरानगढ़ दुर्ग में पाई जाने वाली किस विशिष्ट ऐतिहासिक वस्तु के नाम हैं?
(A) दुर्ग की प्राचीर पर तैनात तोपें
(B) ऐतिहासिक राठौड़ शासकों की अनुष्ठानिक शाही तलवारें
(C) ऐतिहासिक मारवाड़ सेना की विशिष्ट घुड़सवार टुकड़ियाँ
(D) आंतरिक दीवार के साथ निर्मित प्रमुख किलेबंद बुर्ज

18. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
कथन (A) : मेहरानगढ़ दुर्ग को एक उत्कृष्ट गिरि दुर्ग (पहाड़ी किला) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
कारण (R) : इसका निर्माण 'चिड़िया-टूँक' नामक एक ऊँची चट्टानी पहाड़ी पर किया गया था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

19. मेहरानगढ़ दुर्ग का कौन-सा प्रसिद्ध महल अपनी अत्यधिक अलंकृत स्वर्ण नक्काशी और रंगीन काँच की खिड़कियों के लिए प्रसिद्ध है, जिसका निर्माण महाराजा सूर सिंह द्वारा करवाया गया था?
(A) फूल महल
(B) मोती महल
(C) चोखेलाव महल
(D) फतेह महल

20. प्रसिद्ध 'त्रिनेत्र गणेश मंदिर' किस दुर्ग के भीतर स्थित एक अनूठी वास्तुकला और आध्यात्मिक विशेषता है?
(A) अजमेर का तारागढ़ दुर्ग
(B) जयपुर का आमेर दुर्ग
(C) राजसमंद का कुंभलगढ़ दुर्ग
(D) रणथंभौर दुर्ग

21. रणथंभौर दुर्ग परिसर के भीतर कौन-सा ऐतिहासिक जलाशय स्थित है जो 1301 ई. के जौहर से संबंधित है?
(A) गौमुख कुंड

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 11

वास्तुकला, किले और स्मारक

1. पारंपरिक राजस्थानी महल और हवेली स्थापत्य कला की सबसे विशिष्ट विशेषताएँ कौन-से वास्तुकला घटक हैं?
   (A) झरोखे, छत्रियाँ और जालियाँ
   (B) नुकीले मेहराब और धारीदार गुंबद
   (C) ऊँचे गोपुरम और विशाल मंडप
   (D) बिना खंभों वाली बाहर निकली हुई (कॉर्बल्ड) छतें

2. चित्तौड़गढ़ दुर्ग निम्नलिखित में से किस भौगोलिक संरचना पर स्थित है?
   (A) त्रिकूट पहाड़ी
   (B) चिड़िया-टूँक पहाड़ी
   (C) मेसा पठार
   (D) काली खोह पहाड़ी

3. चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित प्रसिद्ध विजय स्तंभ के निर्माण का श्रेय निम्नलिखित में से किसे दिया जाता है?
   (A) राणा कुंभा
   (B) राणा सांगा
   (C) महाराणा प्रताप
   (D) राणा उदय सिंह

4. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रमुख पोल (द्वार) चित्तौड़गढ़ दुर्ग परिसर का भाग नहीं है?
   (A) राम पोल
   (B) हनुमान पोल
   (C) सूरज पोल
   (D) नौलखा पोल

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
   कथन (A) : चित्तौड़गढ़ दुर्ग को ऐतिहासिक रूप से राजस्थान का गौरव माना जाता है और यह राज्य का सबसे बड़ा दुर्ग है।
   कारण (R) : इसमें प्रसिद्ध कीर्ति स्तंभ स्थित है जो प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
   (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
   (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
   (D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

6. कुंभलगढ़ दुर्ग को घेरने वाले निरंतर परकोटे की अनुमानित लंबाई कितनी है?
   (A) 12 किलोमीटर
   (B) 24 किलोमीटर
   (C) 36 किलोमीटर
   (D) 48 किलोमीटर

NODIA

7. कुंभलगढ़ दुर्ग की जटिल वास्तुकला शैली का निर्माण मुख्य रूप से किस प्रसिद्ध वास्तुकार की देखरेख में किया गया था?
   (A) विद्याधर भट्टाचार्य
   (B) लालचंद उस्ताद
   (C) देपाक
   (D) मंडन

8. कुंभलगढ़ दुर्ग के सबसे आंतरिक और सर्वोच्च दुर्गम भाग का क्या नाम है, जो राणा कुंभा का व्यक्तिगत निवास स्थान था?
   (A) कटारगढ़
   (B) झालीबाव
   (C) बादल महल
   (D) नवलखा महल

9. कुंभलगढ़ दुर्ग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. इस दुर्ग की योजना (अभिकल्प) वास्तुकार मंडन द्वारा तैयार की गई थी।
   II. यह राजसमंद जिले में अरावली की पहाड़ियों पर स्थित है।
   III. 1442 में महमूद खिलजी द्वारा इस दुर्ग पर सफलतापूर्वक अधिकार कर इसे स्थायी रूप से अपने कब्जे में ले लिया गया था।
   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

10. आमेर दुर्ग के वर्तमान में मौजूद मुख्य ढाँचे का निर्माण किस शासक द्वारा प्रारंभ किया गया था?
    (A) सवाई जय सिंह II
    (B) राजा मान सिंह I
    (C) मिर्जा राजा जय सिंह
    (D) सवाई प्रताप सिंह

11. आमेर दुर्ग के भीतर कौन-सी संरचना अपनी उत्कृष्ट काँच की जड़ाई के लिए विश्व प्रसिद्ध है और जिसे सामान्यतः 'शीश महल' कहा जाता है?
    (A) शीश महल

त्रिकोणीय मैट्रिक्स
(C) उत्तर की ओर खुलने वाला अर्द्धचंद्राकार आकार
(D) नौ-वर्ग ग्रिड (नवग्रह मंडल)

78. जयपुर के नगर नियोजन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस शहर की स्थापना 1727 में महाराजा सवाई जय सिंह II द्वारा की गई थी।
II. इसकी योजना ने वास्तु शास्त्र और शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों का कड़ाई से पालन किया।
III. चारदीवारी युक्त शहर (परकोटा) में मूल रूप से ठीक सात मुख्य प्रवेश द्वार थे।
IV. प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत के लिए 1727 में स्थापना के समय ही शहर को मूल रूप से गुलाबी रंग से रंगा गया था।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल IV
(D) केवल III और IV

79. निम्नलिखित में से किसे जयपुर के चारदीवारी युक्त शहर के मूल मुख्य द्वारों में से एक माना जाता है?
(A) हाथी पोल
(B) चांदपोल
(C) पत्रिका गेट
(D) राम पोल

80. राजपूत दुर्गों में मुगल स्थापत्य कला का प्रभाव सबसे प्रमुख रूप से किस विशेषता को अपनाने से सिद्ध होता है?
(A) बिना नक्काशीदार लकड़ी की कड़ियों (बीम) का व्यापक उपयोग
(B) स्तंभ और धरन संरचनाओं के पक्ष में मेहराबों का पूर्ण त्याग
(C) सीधे शाही शयनकक्षों के भीतर बावड़ियों का निर्माण
(D) चारबाग (चार भागों वाले उद्यान) शैली और ज्यामितीय जल नालियों का समावेश

81. उत्तरवर्ती कुछ राजपूत महलों में दिखाई देने वाली पिएत्रा ड्यूरा (कीमती पत्थरों की जड़ाई का काम) तकनीक किस स्थापत्य कला का सीधा प्रभाव है?
(A) मुगल स्थापत्य कला
(B) ब्रिटिश औपनिवेशिक स्थापत्य कला
(C) पारंपरिक द्रविड़ मंदिर शैलियाँ
(D) सोलंकी स्थापत्य कला

82. निम्नलिखित स्मारकों के निर्माण का प्राचीनतम से नवीनतम सही कालानुक्रम चुनिए:
(A) हर्षत माता मंदिर (आभानेरी), दिलवाड़ा विमल वासाही, राणकपुर जैन मंदिर, हवा महल
(B) दिलवाड़ा विमल वासाही, हर्षत माता मंदिर (आभानेरी), हवा महल, राणकपुर जैन मंदिर
(C) हर्षत माता मंदिर (आभानेरी), राणकपुर जैन मंदिर, दिलवाड़ा विमल वासाही, हवा महल
(D) राणकपुर जैन मंदिर, दिलवाड़ा विमल वासाही, हर्षत माता मंदिर (आभानेरी), हवा महल

83. बीकानेर का जूनागढ़ दुर्ग राजस्थान के प्रमुख दुर्गों से भिन्न (विशिष्ट) है, क्योंकि यह:
(A) किसी ऊँची पहाड़ी के स्थान पर समतल मैदान पर निर्मित है
(B) अरावली श्रेणी की सबसे ऊँची चोटियों में से एक पर सामरिक रूप से स्थित है
(C) पूरी तरह से उच्च श्रेणी के आयातित सफेद संगमरमर के पत्थर से निर्मित है
(D) पूरी तरह से ब्रिटिश इंजीनियरों द्वारा निर्मित एकमात्र प्रमुख दुर्ग के रूप में मान्यता प्राप्त है

84. पारंपरिक राजस्थानी वास्तुकला में, 'अराइश' शब्द का तात्पर्य है:
(A) हाथियों के हमलों को रोकने के लिए किले के मुख्य प्रवेश द्वारों पर लगे भारी लोहे के रक्षात्मक भाले/कीलें
(B) महलों की जनाना खिड़कियों में व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली पत्थर की नक्काशीदार जाली का काम
(C) पूरे राजस्थान में दुर्ग परिसरों के भीतर निर्मित भूमिगत पक्के वर्षा जल भण्डारण टैंक
(D) भित्ति चित्रों के आधार के रूप में उपयोग की जाने वाली एक चिकनी प्लास्टर घोटाई तकनीक

85. जयपुर का जयगढ़ दुर्ग वास्तुकला और सैन्य दृष्टि से अपनी किस विशाल विशेषता के लिए प्रसिद्ध है?
(A) जनाना कक्षों की स्वर्ण चित्रित विस्तृत आंतरिक दीवारें
(B) जटिल जल संचयन प्रणाली और विशाल भूमिगत टांके
(C) आसपास की घाटियों को देखने वाले अनूठे पाँच मंजिला स्थापत्य काँच के मीनार
(D) इसकी प्राचीर को सीधे आमेर दुर्ग से जोड़ने वाले निर्मित सस्पेंशन पुल

86. राजस्थान की पारंपरिक जल संरक्षण वास्तुकला के संदर्भ में, 'झालरा' को सर्वोत्तम रूप से किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है?
(A) मवेशियों के लिए सतह के वर्षा जल को एकत्र करने के लिए बनाया गया एक छोटा, उथला, कच्चा गड्ढा
(B) किसी निजी हवेली के केंद्रीय प्रांगण के भीतर निर्मित एक ढका हुआ पक्का कुआँ
(C) सामुदायिक उपयोग के लिए रिसाव या झरने का जल एकत्र करने वाला एक सीढ़ीदार आयताकार जलाशय
(D) गहरी घाटियों में मीठा जल पहुँचाने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया एक ऊँचा पत्थर का जलसेतु (एक्वाडक्ट)

87. मारवाड़ क्षेत्र के किलों और पारंपरिक घरों में आमतौर पर पाया जाने वाला 'टांका' मुख्य रूप से किस कार्य के लिए उपयोग होता है?

Click Here to Buy book on Amazon

(B) पदमला तालाब
(C) झालीबाव बावड़ी
(D) रानीसर

22. गागरोन दुर्ग जल दुर्ग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, क्योंकि यह किन दो नदियों के संगम पर स्थित है?
(A) चंबल और बनास नदियाँ
(B) लूनी और सुकड़ी नदियाँ
(C) आहू और कालीसिंध नदियाँ
(D) माही और सोम नदियाँ

23. गागरोन दुर्ग के परिसर में किस प्रसिद्ध सूफी संत की दरगाह स्थित है?
(A) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
(B) हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया
(C) नरहड़ पीर
(D) मीठे शाह

24. राजस्थान के पहाड़ी दुर्गों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 2013 में राजस्थान के छह दुर्गों को यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था।
II. रणथंभौर दुर्ग इस सूची में शामिल छह दुर्गों में से एक है।
III. इस सूची में शामिल गागरोन दुर्ग को मुख्य रूप से धान्वन दुर्ग (मरुस्थलीय किला) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

25. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन-सा प्रमुख दुर्ग "राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग" की 2013 यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल नहीं है?
(A) आमेर दुर्ग
(B) मेहरानगढ़ दुर्ग
(C) जैसलमेर दुर्ग
(D) कुंभलगढ़ दुर्ग

26. निम्नलिखित दुर्गों की मूल स्थापना का प्राचीनतम से नवीनतम सही कालानुक्रम चुनिए:
(A) भटनेर दुर्ग, चित्तौड़गढ़ दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग, मेहरानगढ़ दुर्ग
(B) चित्तौड़गढ़ दुर्ग, भटनेर दुर्ग, मेहरानगढ़ दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग
(C) भटनेर दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग, चित्तौड़गढ़ दुर्ग, मेहरानगढ़ दुर्ग
(D) चित्तौड़गढ़ दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग, भटनेर दुर्ग, मेहरानगढ़ दुर्ग

27. गागरोन दुर्ग की विशाल सुरक्षा दीवार (परकोटा), जिसे तोपखाने के हमले से बचाने के लिए बनाया गया था, सामान्यतः किस नाम से जानी जाती है?
(A) जालिम कोट
(B) जौहर कोट
(C) रावणहत्था
(D) भैरव परकोटा

28. शुक्रनीति जैसे प्राचीन भारतीय वास्तुकला ग्रंथों के अनुसार, कौन-सी विशेषता मूलभूत रूप से 'धान्वन दुर्ग' को परिभाषित करती है?
(A) यह घने और अभेद्य वन क्षेत्रों के भीतर स्थित होता है।
(B) यह सामरिक रूप से किसी ऊँची पर्वत चोटी पर निर्मित होता है।
(C) यह मरुस्थल या शुष्क क्षेत्र के भीतर निर्मित होता है।
(D) यह जल से भरी एक गहरी खाई द्वारा सुरक्षित होता है।

29. उदयपुर में विशाल 'सिटी पैलेस' परिसर का प्रारंभिक निर्माण किसके द्वारा प्रारंभ किया गया था?
(A) महाराणा प्रताप सिंह I
(B) महाराणा कुंभकर्ण सिंह
(C) महाराणा फतेह सिंह बहादुर
(D) महाराणा उदय सिंह II

30. उदयपुर सिटी पैलेस के भीतर कौन-सा विशिष्ट प्रांगण रंगीन काँच से बनी मयूर (मोर) की जटिल पच्चीकारी के लिए प्रसिद्ध है?
(A) माणक चौक
(B) जनाना महल
(C) मोर चौक
(D) अमर विलास

31. उदयपुर सिटी पैलेस के उच्चतम बिंदु पर स्थित 'बड़ी महल' स्थापत्य कला की दृष्टि से अनूठा है, क्योंकि:
(A) यह पूरी तरह से मकराना की खदानों से लाए गए उच्च गुणवत्ता वाले शुद्ध सफेद संगमरमर से निर्मित था।
(B) इसमें पूर्ण विकसित वृक्षों वाला एक छत का बगीचा (रूफटॉप गार्डन) है।
(C) इसकी संरचना में यूरोपीय गॉथिक मेहराब शामिल हैं।
(D) खगोलीय वेधशाला के रूप में कार्य करने के लिए पूरे ढाँचे को बिना छत के छोड़ दिया गया था।

32. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : महल/संरचना
P. सिटी पैलेस, उदयपुर
Q. सिटी पैलेस, जयपुर
R. हवा महल, जयपुर
S. मुबारक महल, जयपुर
सूची II : मुख्य निर्माता
1. सवाई माधो सिंह II
2. सवाई प्रताप सिंह
3. सवाई जय सिंह II
4. महाराणा उदय सिंह II
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3

NODIA

(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

33. जयपुर सिटी पैलेस परिसर के भीतर स्थित सात मंजिला मुख्य शाही निवास किस नाम से जाना जाता है?
(A) चंद्र महल
(B) मुबारक महल
(C) सूर्य महल
(D) बादल महल

34. जयपुर सिटी पैलेस स्थित प्रीतम निवास चौक में चार जटिल रूप से चित्रित द्वार हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा विषय इन चार द्वारों में से एक द्वारा निरुपित नहीं होता है?
(A) मयूर/मोर (शरद ऋतु)
(B) कमल (ग्रीष्म ऋतु)
(C) हाथी (मानसून)
(D) गुलाब (शीत ऋतु)

35. जयपुर के हवा महल की वास्तुशिल्पीय रुपरेखा मुख्य रुप से किसके द्वारा तैयार की गई थी?
(A) लालचंद उस्ताद
(B) विद्याधर भट्टाचार्य
(C) सर सैमुअल स्विंटन जैकब
(D) मंडन

36. हवा महल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका निर्माण 1799 में सवाई प्रताप सिंह द्वारा करवाया गया था।
II. इस भवन में पाँच मंजिलें हैं।
III. इसे वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा डिज़ाइन किया गया था।
IV. इसका बाहरी भाग भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट के सदृश दिखाई देता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और IV
(D) केवल III और IV

37. नीचे से ऊपर की ओर हवा महल की पाँचों मंजिलों के नाम क्या हैं?
(A) शरद, रतन, विचित्र, प्रकाश, हवा
(B) रतन, शरद, प्रकाश, विचित्र, हवा
(C) हवा, प्रकाश, विचित्र, रतन, शरद
(D) शरद, प्रकाश, रतन, विचित्र, हवा

38. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
कथन (A) : हवा महल बिना किसी गहरी नींव के निर्मित पाँच मंजिला इमारत होने के बावजूद आश्चर्यजनक रुप से स्थिर खड़ा है।
कारण (R) : इसे विशेष रुप से शाही महिलाओं को बिना दिखे मार्ग के दैनिक जीवन और त्योहारों का अवलोकन करने की अनुमति देने के लिए निर्मित किया गया था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

39. उदयपुर सिटी पैलेस परिसर किस प्रसिद्ध झील के पूर्वी तट पर स्थित है?
(A) फतेह सागर झील
(B) उदय सागर झील
(C) जयसमंद झील
(D) पिछोला झील

40. जयपुर के जंतर मंतर में कौन-सा यंत्र विश्व की सबसे बड़ी पत्थर की धूपघड़ी के रूप में प्रसिद्ध है?
(A) सम्राट यंत्र
(B) जय प्रकाश यंत्र
(C) राम यंत्र
(D) नाड़ीवलय यंत्र

41. महाराजा सवाई जय सिंह II द्वारा पूरे भारत में कुल कितनी खगोलीय वेधशालाओं (जंतर मंतर) का निर्माण करवाया गया था?
(A) तीन
(B) चार
(C) पाँच
(D) छह

42. सवाई जय सिंह II ने निम्नलिखित में से किस शहर में जंतर मंतर वेधशाला का निर्माण नहीं करवाया था?
(A) वाराणसी
(B) आगरा
(C) उज्जैन
(D) मथुरा

43. जंतर मंतर वेधशालाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. महाराजा सवाई जय सिंह II ने भारत में पाँच खगोलीय वेधशालाएँ बनवाईं।
II. इनमें से सबसे बड़ी वेधशाला उज्जैन में स्थित है।
III. सम्राट यंत्र स्थानीय समय मापने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक विशाल धूपघड़ी है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल I और III
(D) केवल II और III

44. अपनी सटीक ज्यामितीय सीढ़ीदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध 'चाँद बावड़ी' राजस्थान के किस जिले में स्थित है?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) बूंदी
(B) टोंक
(C) दौसा
(D) सीकर

45. राजस्थान की बावड़ियों की रानी कही जाने वाली 'रानी जी की बावड़ी' का निर्माण 1699 में रानी नाथावती द्वारा किस नगर में करवाया गया था?
(A) झालावाड़
(B) कोटा
(C) सवाई माधोपुर
(D) बूंदी

46. हाड़ी रानी की बावड़ी, जो एक सुंदर बहुमंजिला सीढ़ीदार कुआँ (बावड़ी) है, कहाँ स्थित है?
(A) आभानेरी
(B) नीमराना
(C) टोडा रायसिंह
(D) शाहपुरा

47. राजस्थान के निम्नलिखित ऐतिहासिक दुर्गों पर विचार कीजिए:
I. भटनेर दुर्ग
II. कुंभलगढ़ दुर्ग
III. तारागढ़ दुर्ग (अजमेर)
IV. आमेर दुर्ग
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) I, IV, III, II
(B) I, II, III, IV
(C) IV, I, III, II
(D) I, IV, II, III

48. आभानेरी में चाँद बावड़ी के ठीक निकट स्थित प्राचीन मंदिर किस देवी/देवता को समर्पित है?
(A) सोमेश्वर महादेव
(B) करणी माता
(C) सच्चियाय माता
(D) हर्षत माता

49. अपनी सममित वर्गाकार सीढ़ियों के लिए प्रसिद्ध दर्शनीय सीढ़ीदार कुआँ 'पन्ना मीणा का कुंड' किस प्रमुख स्मारक के पास स्थित है?
(A) आमेर दुर्ग
(B) मेहरानगढ़ दुर्ग
(C) कुंभलगढ़ दुर्ग
(D) जूनागढ़ दुर्ग

50. शेखावाटी क्षेत्र को मुख्य रूप से किस कारण से "राजस्थान की ओपन-एयर आर्ट गैलरी" कहा जाता है?
(A) प्राचीन शिलालेखों और शाही अभिलेखों की प्रचुरता
(B) बाहरी संगमरमर की मूर्तियों और नक्काशियों का विशाल संग्रह
(C) हवेलियों की दीवारों पर जटिल भित्ति चित्रकला (फ्रेस्को)
(D) अरावली की तलहटी में पाई जाने वाली प्रागैतिहासिक गुफा चित्रकला

51. पटवों की हवेली, जो पाँच उत्कृष्ट हवेलियों का एक अनूठा समूह है, किस शहर के सबसे महत्वपूर्ण स्थापत्य स्थलों में से एक है?
(A) जैसलमेर
(B) बीकानेर
(C) मंडावा
(D) नवलगढ़

52. पटवों की हवेली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह जैसलमेर शहर में स्थित है।
II. इसका निर्माण गुमान चंद पटवा नामक एक धनी व्यापारी ने करवाया था।
III. यह पूरी तरह से शुद्ध सफेद मकराना संगमरमर से निर्मित है।
IV. यह वास्तव में पाँच भाइयों के लिए बनाई गई पाँच अलग-अलग हवेलियों का एक परिसर है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

NODIA

53. राजस्थान की कौन-सी प्रसिद्ध हवेली अपनी विशिष्ट ऊपरी मंजिलों के लिए जानी जाती है, जो जहाज या मोर के आकार में फैली हुई हैं और जिन्हें अक्सर 'जहाज महल' या 'मोती महल' कहा जाता है?
(A) रामपुरिया हवेली
(B) सलीम सिंह की हवेली
(C) नथमल जी की हवेली
(D) पुंगलिया हवेली

54. जैसलमेर स्थित नथमल जी की हवेली की स्थापत्य कला संबंधी विशेषता क्या है?
(A) निवासियों को मरुस्थल की भीषण गर्मी से बचाने के लिए पूरी बहुमंजिला संरचना पूरी तरह से भूमिगत बनाई गई थी।
(B) यह ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट है क्योंकि इसके डिज़ाइन में विशेष रूप से आयातित यूरोपीय गॉथिक मेहराब शामिल हैं।
(C) इसके दो भागों को दो अलग-अलग भाइयों, लालू और हाथी द्वारा तराशा गया था, जिससे इसके दोनों हिस्से असमान बने।
(D) धूल भरी आँधियों को अंदर आने से रोकने के लिए स्थापत्य योजना में सभी बाहरी दीवारों पर बाहरी खिड़कियों को पूरी तरह से हटा दिया गया था।

55. शेखावाटी क्षेत्र में हवेली निर्माण के उत्तरवर्ती काल (19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत) में, भित्ति चित्रों में स्पष्ट रूप से क्या दर्शाया जाने लगा?
(A) मध्यकालीन इस्लामी कला परंपराओं से सीधे ली गई केवल अमूर्त ज्यामितीय आकृतियाँ
(B) केवल प्राचीन हिंदू पौराणिक देवी-देवताओं और कथाओं को दर्शाने वाले पारंपरिक धार्मिक विषय
(C) केवल काले और सफेद प्राकृतिक खनिज रंगों का उपयोग करके बनाए गए एकरंगी सजावटी विषय
(D) यूरोपीय तत्व जैसे रेलगाड़ियाँ, मोटर कारें और ग्रामोफोन

56. बागौर की हवेली, जहाँ अब पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र स्थित है, किस झील के तट पर स्थित है?
(A) पिछोला झील
(B) नक्की झील
(C) पुष्कर झील
(D) आनासागर झील

57. 'सुनहरी कोठी', जो रंगीन काँच और सोने के वर्क के उत्कृष्ट आंतरिक अलंकरण के लिए प्रसिद्ध है, कहाँ स्थित है?
(A) अलवर
(B) टोंक
(C) भरतपुर
(D) धौलपुर

58. लाल बलुआ पत्थर से निर्मित तथा मुगल, विक्टोरियन और राजपूत स्थापत्य कला के मिश्रण को प्रदर्शित करने वाली रामपुरिया हवेलियाँ कहाँ का एक प्रमुख विरासत आकर्षण हैं?
(A) जोधपुर
(B) बीकानेर
(C) जयपुर
(D) जैसलमेर

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
कथन (A) : शेखावाटी क्षेत्र को राजस्थान की ओपन-एयर आर्ट गैलरी के रूप में जाना जाता है।
कारण (R) : इस क्षेत्र की शुष्क जलवायु ने स्थानीय कलाकारों द्वारा ताड़ के पत्तों पर बनाए गए हजारों लघु चित्रों को पूरी तरह से सुरक्षित रखा।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

60. माउण्ट आबू के दिलवाड़ा मंदिर परिसर में सबसे प्राचीन विमल वासाही मंदिर किस जैन तीर्थंकर को समर्पित है?
(A) नेमिनाथ (अरिष्टनेमि)
(B) महावीर (वर्धमान)
(C) आदिनाथ
(D) पार्श्वनाथ

61. दिलवाड़ा स्थित लून वासाही मंदिर का निर्माण वाघेला राजवंश के दो प्रमुख मंत्रियों द्वारा करवाया गया था, जिनके नाम थे:
(A) लालू और हाथी
(B) मंडन और उनका भाई जैता
(C) देपा और पोमा
(D) वस्तुपाल और तेजपाल

62. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : मंदिर
P. दिलवाड़ा मंदिर
Q. राणकपुर जैन मंदिर
R. एकलिंगजी मंदिर
S. हर्षत माता मंदिर
सूची II : स्थान/जिला
1. पाली
2. उदयपुर
3. माउण्ट आबू (सिरोही)
4. आभानेरी (दौसा)
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

63. राणकपुर जैन मंदिर अपनी वास्तुकला की जटिलता के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें संगमरमर के कितने नक्काशीदार खंभे शामिल हैं, जिनमें से कोई भी दो एक समान नहीं हैं?
(A) 1008
(B) 1111
(C) 1444
(D) 1555

64. वास्तुशिल्प की दृष्टि से, राणकपुर जैन मंदिर को 'चौमुखा' मंदिर के रूप में डिज़ाइन किया गया है, जिसका अर्थ है:
(A) मुख्य संरचना में शुद्ध सोने से मढ़े गए चार प्रमुख गुंबद हैं।
(B) बाहरी मंदिर परिसर में ठीक चार बड़ी आपस में जुड़ी हुई बावड़ियाँ शामिल हैं।
(C) विशाल मंदिर का निर्माण लगातार चार अलग-अलग शताब्दियों में किया गया था।
(D) मुख्य मूर्ति के चार मुख हैं जो चार दिशाओं की ओर हैं।

65. कैलाशपुरी में स्थित एकलिंगजी मंदिर परिसर मुख्य रूप से किस शैव संप्रदाय से आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ है?
(A) लकुलीश
(B) लिंगायत संप्रदाय
(C) कापालिक संप्रदाय
(D) कालामुख संप्रदाय

Click Here to Buy book on Flipkart

66. मेवाड़ राजवंश के कुलदेवता के सम्मान में निर्मित एकलिंगजी मंदिर की मूल स्थापना का श्रेय ऐतिहासिक रुप से किसे दिया जाता है?
(A) राणा कुंभा
(B) राणा सांगा
(C) बप्पा रावल
(D) महाराणा प्रताप

67. मंदिर स्थापत्य की महा-मारु शैली के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह गुर्जर-प्रतिहारों के शासनकाल के दौरान राजस्थान में विकसित हुई।
II. इस शैली के मंदिरों में आमतौर पर पंचायतन शैली की योजना होती है।
III. ओसियां का सच्चियाय माता मंदिर इस स्थापत्य शैली का एक प्रमुख उदाहरण है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

68. प्रतिहार स्थापत्य कला के विकास को प्रदर्शित करने वाले ओसियां (जोधपुर) में स्थित प्रारंभिक मध्यकालीन मंदिरों का समूह मुख्य रुप से किसे समर्पित है?
(A) केवल वर्तमान कालचक्र के चौबीस जैन तीर्थंकरों को
(B) केवल भगवान शिव के विभिन्न रुपों और अवतारों को
(C) विभिन्न लोकप्रिय स्थानीय लोक देवताओं को
(D) हिंदू देवी-देवताओं और जैन तीर्थंकरों को

69. बाड़मेर जिले के किस मंदिर समूह को अपनी जटिल कामुक मूर्तियों और शास्त्रीय स्थापत्य शैली के कारण प्रायः "राजस्थान का खजुराहो" कहा जाता है?
(A) भंड देवरा मंदिर
(B) किराडू मंदिर
(C) जगत अंबिका मंदिर
(D) अर्थूना मंदिर

70. मूसी महारानी की छतरी, जो लाल बलुआ पत्थर के निचले स्तर और सफेद संगमरमर के ऊपरी स्तर वाली एक सुंदर दो मंजिला छतरी है, कहाँ स्थित है?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) अलवर
(D) भरतपुर

71. राव राजा अनिरुद्ध सिंह द्वारा देवा की स्मृति में निर्मित प्रसिद्ध 84 खंभों की छतरी किस जिले में स्थित है?
(A) कोटा
(B) झालावाड़
(C) बारां
(D) बूंदी

72. मेवाड़ के सिसौदिया शासकों का शाही श्मशान और छतरी परिसर कहाँ स्थित है?
(A) आहड़
(B) गेटोर
(C) बड़ा बाग
(D) मंडोर

73. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : शाही छतरी परिसर
P. गेटोर की शाही छत्रियाँ
Q. आहड़ की शाही छत्रियाँ
R. बड़ा बाग की छत्रियाँ
S. जसवंत थड़ा / मंडोर
सूची II : संबंधित राजपूत राजवंश/राज्य
1. मारवाड़ के राठौड़
2. जैसलमेर के भाटी
3. मेवाड़ के सिसौदिया
4. आमेर/जयपुर के कछवाहा
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

74. जोधपुर का जसवंत थड़ा, जिसे प्रायः मारवाड़ का ताजमहल कहा जाता है और जो संगमरमर की एक नक्काशीदार छतरी है, किसके द्वारा बनवाया गया था?
(A) महाराजा जसवंत सिंह II
(B) महाराजा सरदार सिंह
(C) महाराजा तख्त सिंह
(D) महाराजा उम्मेद सिंह

75. केसर बाग की छत्रियाँ किस भूतपूर्व रियासत के शासकों का ऐतिहासिक शाही श्मशान स्थल हैं?
(A) बूंदी
(B) बीकानेर
(C) कोटा
(D) डूंगरपुर

76. जयपुर शहर का नगर नियोजन, जो अपनी ग्रिड प्रणाली और चौड़े मार्गों द्वारा विशेषीकृत है, वास्तुकला पर प्राचीन संस्कृत ग्रंथों से अत्यधिक प्रभावित था। इसके मुख्य वास्तुकार कौन थे?
(A) लालचंद उस्ताद
(B) मीर बख्शी
(C) विद्याधर भट्टाचार्य
(D) सवाई जय सिंह II

77. जयपुर के चारदीवारी युक्त नगर की मूल योजना किस ज्यामितीय प्रारुप पर आधारित है?
(A) बारह राशि क्षेत्रों में विभाजित एक पूर्ण वृत्त
(B) अरावली की रुपरेखा का अनुसरण करने वाला एक

Downloaded from www.pdf.tube

के लिए विशेष रूप से बनाया गया था। यह विशिष्ट सामंती जीवन-शैली का प्रतीक है।

100. (D) गाँव की रक्षा और सुरक्षा के बदले भूमि धारण करने वाले छोटे भू-स्वामी

राजस्थान के मध्यकालीन सामाजिक पदानुक्रम में भोमिया उन राजपूत भू-स्वामियों को कहा जाता था, जिन्होंने गाँव की रक्षा, जल स्रोतों या गोधन की सुरक्षा हेतु अपने प्राणों की बाजी लगाई थी। इस सेवा के बदले में उन्हें राज्य द्वारा भोम नामक भूमि का अधिकार दिया जाता था। वे गाँव के प्राथमिक संरक्षक और स्थानीय सुरक्षा के उत्तरदायी विशेष सम्मानित छोटे भू-स्वामी होते थे।

NODIA

(A) निगरानी के लिए एक ऊँचे सामरिक निरीक्षण मीनार के रूप में कार्य करना
(B) भीषण गर्मी के महीनों के दौरान एक भूमिगत ठंडा कक्ष प्रदान करना
(C) पशु शक्ति का उपयोग करके अनाज पीसने के लिए एक पारंपरिक यांत्रिक चक्की के रूप में काम करना
(D) भूमिगत पक्के कुंडों में वर्षा जल का भंडारण करना

88. निम्नलिखित में से कौन-सा दुर्ग लगभग 700 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें लंबी घेराबंदी से निपटने के लिए ऐतिहासिक रूप से इसकी दीवारों के भीतर कृषि की जाती थी?
(A) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(B) राजसमंद स्थित कुंभलगढ़ दुर्ग
(C) जैसलमेर दुर्ग
(D) तारागढ़ दुर्ग

89. राजस्थान के निम्नलिखित प्रसिद्ध दुर्गों पर विचार कीजिए:
I. जैसलमेर दुर्ग
II. मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)
III. आमेर दुर्ग (जयपुर)
IV. लोहागढ़ दुर्ग (भरतपुर)
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प पश्चिम से पूर्व की ओर सही भौगोलिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) I, II, III, IV
(B) I, III, II, IV
(C) II, I, IV, III
(D) IV, III, II, I

90. 'नौलखा दरवाजा' किस प्रसिद्ध दुर्ग का भव्य मुख्य प्रवेश द्वार है?
(A) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(B) रणथंभौर दुर्ग
(C) आमेर दुर्ग
(D) गागरोन दुर्ग

91. 'जालिम कोट' के नाम से जाना जाने वाला ऐतिहासिक परकोटा किसकी रक्षात्मक वास्तुकला से संबंधित है?
(A) गागरोन दुर्ग
(B) कुंभलगढ़ दुर्ग
(C) मेहरानगढ़ दुर्ग
(D) भटनेर दुर्ग

92. जैसलमेर दुर्ग ऐतिहासिक रूप से 'अर्द्ध साका' (आधा साका) के लिए प्रसिद्ध है। साके में महिलाओं द्वारा जौहर और पुरुषों द्वारा केसरिया शामिल होता है। जैसलमेर के 'अर्द्ध साका' के दौरान क्या हुआ था?
(A) कुलीन महिलाओं ने सफलतापूर्वक पवित्र जौहर अनुष्ठान किया, लेकिन रक्षा करने वाले पुरुष योद्धा घेराबंदी में जीवित बच गए।
(B) भारी घेराबंदी वाले दुर्ग ने अंततः अनुष्ठानिक जौहर या वीरतापूर्ण साका किए बिना शांतिपूर्वक आत्मसमर्पण कर दिया।
(C) पुरुषों ने केसरिया (साका) किया, लेकिन महिलाओं के पास जौहर करने के लिए समय नहीं बचा।
(D) दुर्ग की निवासी नागरिक आबादी के केवल लगभग आधे लोगों ने पारंपरिक रक्षा अनुष्ठानों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

93. पद्मिनी महल, जिसमें एक अनूठा जल महल है, जहाँ से अलाउद्दीन खिलजी ने कथित तौर पर रानी पद्मिनी का प्रतिबिंब देखा था, कहाँ स्थित है?
(A) राजसमंद स्थित कुंभलगढ़ दुर्ग
(B) गागरोन दुर्ग
(C) रणथंभौर दुर्ग
(D) चित्तौड़गढ़ दुर्ग

94. तीन मेहराबदार संगमरमर के द्वारों से निर्मित उदयपुर सिटी पैलेस परिसर का भव्य प्रवेश द्वार किस नाम से जाना जाता है?
(A) सूरज पोल
(B) बड़ी पोल
(C) त्रिपोलिया गेट
(D) गणेश पोल

95. 'झालीबाव बावड़ी' और 'मामादेव कुंड' किस दुर्ग के परिसर में स्थित महत्वपूर्ण जलाशय हैं?
(A) मेहरानगढ़ दुर्ग
(B) कुंभलगढ़ दुर्ग
(C) रणथंभौर दुर्ग
(D) तारागढ़ दुर्ग

96. राजस्थान के किस यूनेस्को विश्व धरोहर दुर्ग को हाल के दशकों में मुख्य रूप से अत्यधिक जल रिसाव और इसके भीतर आधुनिक बसावट के कारण उचित जल निकासी के अभाव की वजह से गंभीर संरक्षण चुनौतियों और संरचनात्मक क्षति का सामना करना पड़ा है?
(A) आमेर दुर्ग
(B) कुंभलगढ़ दुर्ग
(C) रणथंभौर दुर्ग
(D) जैसलमेर दुर्ग

97. मेहरानगढ़ दुर्ग के मोती महल के भीतर सोने के वर्क की विस्तृत नक्काशी जोधपुर के किस शासक द्वारा करवाई गई थी?
(A) महाराजा तख्त सिंह
(B) राव जोधा
(C) महाराजा सूर सिंह
(D) महाराजा जसवंत सिंह

98. दिलवाड़ा मंदिरों का असाधारण स्थापत्य सौंदर्य मुख्य रूप से किसमें निहित है?
(A) विशाल एकाश्मी आकार
(B) लाल बलुआ पत्थर और शुद्ध सफेद संगमरमर का व्यापक संरचनात्मक मिश्रण

Click Here to Buy book on Amazon

और मुगल स्थापत्य कला के अद्भुत मिश्रण को प्रदर्शित करता है, जो अपनी भव्यता तथा कलात्मक सुंदरता के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

11. (A) शीश महल
आमेर दुर्ग के जय मंदिर परिसर में स्थित शीश महल अपनी उत्कृष्ट काँच की जड़ाई और नक्काशी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इस महल की दीवारों और छतों पर बेल्जियम काँच के छोटे-छोटे टुकड़ों की अद्भुत पच्चीकारी की गई है। इस महल की विशेषता यह है कि केवल एक मोमबत्ती या छोटे प्रकाश स्रोत का प्रकाश पूरे कक्ष में परावर्तित होकर इसे असंख्य सितारों की भांति चमका देता है।

12. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
राजस्थान के प्रमुख दुर्ग विशिष्ट भौगोलिक संरचनाओं पर स्थित हैं। जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग चिड़िया-टूँक नामक ऊँची पहाड़ी पर बना है। जैसलमेर का प्रसिद्ध सोनार दुर्ग त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित है। चित्तौड़गढ़ का ऐतिहासिक दुर्ग मेसा पठार पर निर्मित किया गया है, जबकि आमेर दुर्ग जयपुर की काली खोह पहाड़ी श्रृंखला पर अवस्थित है। इन सभी दुर्गों की सामरिक अवस्थिति इन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में प्राकृतिक सुरक्षा तथा अद्वितीय स्थापत्य भव्यता प्रदान करती है।

13. (D) इसके परकोटे के भीतर आज भी एक बड़ी जनसामान्य आबादी निवास करती है।
जैसलमेर दुर्ग को 'जीवंत किला' या 'लिविंग फोर्ट' कहा जाता है क्योंकि इस विशाल किले की प्राचीन दीवारों के भीतर आज भी स्थानीय आबादी की एक बड़ी संख्या निवास करती है। चित्तौड़गढ़ के बाद यह राजस्थान का दूसरा ऐसा दुर्ग है जहाँ आम नागरिक, दुकानें, आवास और होटल सक्रिय रूप से संचालित होते हैं। मध्यकालीन स्थापत्य कला और जनजीवन का यह निरंतर सह-अस्तित्व इस दुर्ग को दुनिया भर में अत्यंत अनूठा और जीवंत बनाता है।

14. (C) पीले बलुआ पत्थर की दीवारें जो सूर्य के प्रकाश में सोने की भाँति चमकती हैं।
जैसलमेर दुर्ग को 'सोनार किला' या 'गोल्डन फोर्ट' की संज्ञा दी गई है क्योंकि इसका निर्माण पीले बलुआ पत्थरों से किया गया है। प्रातःकाल और संध्या के समय जब सूर्य की किरणें इन पत्थरों पर पड़ती हैं, तो पूरा दुर्ग सोने की तरह देदीप्यमान हो उठता है। थार मरुस्थल की पृष्ठभूमि में चमकती हुई यह पीली आभा इस दुर्ग को एक जादुई और स्वर्णिम दृश्य प्रदान करती है, जो पर्यटकों को अत्यधिक आकर्षित करती है।

15. (A) केवल I, II और III
जैसलमेर दुर्ग की स्थापना 12वीं शताब्दी में रावल जैसल ने की थी। इस दुर्ग में दोहरा सुरक्षा परकोटा है जिसे 'कमरकोट' या 'पाड़ा' कहा जाता है, तथा इसकी प्राचीर में 99 बुर्ज बने हैं। इस दुर्ग की सबसे बड़ी वास्तुकला विशेषता यह है कि इसके पत्थरों को जोड़ने के लिए चूने या गारे का उपयोग बिल्कुल नहीं किया गया, बल्कि पत्थरों को आपस में खानों (खांचों) द्वारा जोड़ा गया है।

16. (D) करणी माता
जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग की आधारशिला 1459 ईस्वी में राठौड़ शासक राव जोधा द्वारा रखी गई थी। लोक परंपराओं के अनुसार, इस भव्य दुर्ग की नींव की पूजा प्रसिद्ध लोक देवी रिद्धू बाई, जिन्हें करणी माता के नाम से जाना जाता है, के कर-कमलों द्वारा संपन्न करवाई गई थी। चिड़िया-टूँक पहाड़ी पर स्थित यह विशाल दुर्ग मारवाड़ राज्य की सैन्य शक्ति, स्थापत्य भव्यता और ऐतिहासिक विरासत का एक अद्वितीय प्रतीक माना जाता है।

NODIA

17. (A) दुर्ग की प्राचीर पर तैनात तोपें
'किलकिला', 'शंभूबाण' और 'गजनी खाँ' जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग की प्राचीर पर तैनात प्रसिद्ध ऐतिहासिक तोपों के नाम हैं। इनके अतिरिक्त कड़क बिजली, गुब्बार और नुसरत जैसी तोपें भी इस दुर्ग की सुरक्षा प्रणाली की पहचान रही हैं। इन तोपों का उपयोग मारवाड़ राज्य की रक्षा और सैन्य अभियानों में किया जाता था। धातु ढलाई कला और मारवाड़ के सैन्य इतिहास में इन ऐतिहासिक तोपों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

18. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
मेहरानगढ़ दुर्ग को भारतीय सैन्य स्थापत्य में एक उत्कृष्ट गिरि दुर्ग के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि यह दुर्ग जोधपुर में 'चिड़िया-टूँक' नामक एक अत्यधिक ऊँची और तीखी चट्टानी पहाड़ी पर निर्मित है। पहाड़ी स्थिति दुर्ग को प्राकृतिक सुरक्षा, दूर तक निगरानी की सुविधा और दुश्मनों से बचाव का सामरिक लाभ प्रदान करती है। अतः कारण, कथन की सही वास्तुकला व्याख्या प्रस्तुत करता है।

19. (A) फूल महल
मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थित फूल महल अपनी अत्यधिक अलंकृत स्वर्ण नक्काशी, सुंदर छतों और रंगीन काँच की खिड़कियों के लिए प्रसिद्ध है। इस भव्य राजसी महल का निर्माण महाराजा सूर सिंह द्वारा करवाया गया था, जबकि बाद में महाराजा अभय सिंह ने इसमें सोने के काम की विस्तृत सजावट करवाई। यह महल शाही दरबारियों और शासकों के व्यक्तिगत मनोरंजन तथा सांस्कृतिक आयोजनों के लिए एक भव्य कक्ष के रूप में प्रयुक्त होता था।

20. (D) रणथंभौर दुर्ग
प्रसिद्ध 'त्रिनेत्र गणेश मंदिर' सवाई माधोपुर जिले में स्थित ऐतिहासिक रणथंभौर दुर्ग के भीतर एक अत्यंत पवित्र धार्मिक स्थल है। इस मंदिर में भगवान गणेश की स्वयंभू मूर्ति स्थापित है, जिसमें उनके तीन नेत्र विराजमान हैं। भारतभर से श्रद्धालु किसी भी शुभ कार्य के प्रथम निमंत्रण पत्र और पत्र यहाँ भेजते हैं। यह मंदिर न केवल आध्यात्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि दुर्ग की सांस्कृतिक और स्थापत्य पहचान का अभिन्न अंग भी है।

21. (B) पदमला तालाब
रणथंभौर दुर्ग परिसर के भीतर स्थित पदमला तालाब एक ऐतिहासिक जलाशय है, जो 1301 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हुए प्रसिद्ध जौहर से जुड़ा है। जब

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) झरोखे, छत्रियाँ और जालियाँ
राजस्थान की पारंपरिक महल तथा हवेली स्थापत्य कला अपनी विशिष्ट शैली के लिए जानी जाती है। इसमें मुख्य रुप से झरोखे, छत्रियाँ और जालियाँ शामिल हैं। झरोखे हवेलियों को सुंदर दृश्य और वायु प्रवाह प्रदान करते हैं। छत्रियाँ राजपूत वास्तुकला में गरिमा की प्रतीक हैं, जबकि जालियाँ मरुस्थलीय जलवायु में प्रकाश और वायु को नियंत्रित करती हैं। ये घटक स्थापत्य की पहचान बनते हैं।

2. (C) मेसा पठार
चित्तौड़गढ़ दुर्ग राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में मेसा पठार पर निर्मित एक सुदृढ़ गिरि दुर्ग है। यह पठार लगभग 180 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जो इस दुर्ग को सामरिक और प्राकृतिक सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत अभेद्य बनाता है। बेड़च और गंभिरी नदियों के संगम के निकट स्थित यह दुर्ग स्थापत्य कला, विशालता तथा ऐतिहासिक महत्व का एक बेजोड़ नमूना माना जाता है।

3. (A) राणा कुंभा
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तंभ का निर्माण मेवाड़ के शासक महाराणा कुंभा द्वारा करवाया गया था। उन्होंने 1437 ईस्वी में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी पर अपनी ऐतिहासिक सारंगपुर विजय के उपलक्ष्य में इस भव्य स्मारक का निर्माण प्रारंभ कराया था। नौ मंजिला यह स्तंभ भारतीय स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है और इसे हिंदू देवशास्त्र का विशाल कोश भी माना जाता है। यह स्तंभ भगवान विष्णु को समर्पित एक अद्वितीय कृति है।

4. (D) नौलखा पोल
चित्तौड़गढ़ दुर्ग के प्रवेश मार्ग पर सात विशाल और सुदृढ़ ऐतिहासिक द्वार बने हुए हैं, जिन्हें पोल कहा जाता है। इनमें पाडन पोल, भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोडला पोल, लक्ष्मण पोल तथा राम पोल शामिल हैं। सूरज पोल भी दुर्ग के पूर्वी हिस्से का प्रमुख द्वार है। नौलखा पोल चित्तौड़गढ़ दुर्ग परिसर का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह रणथंभौर दुर्ग का प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मुख्य प्रवेश द्वार माना जाता है।

5. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
चित्तौड़गढ़ दुर्ग अपने विशाल क्षेत्रफल, ऐतिहासिक शौर्य और बलिदान के कारण राजस्थान का गौरव कहलाता है तथा यह राज्य का सबसे बड़ा आवासीय किला है। इस दुर्ग परिसर के भीतर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित सात मंजिला कीर्ति स्तंभ भी स्थित है। यद्यपि ये दोनों ऐतिहासिक तथ्य अपने आप में पूरी तरह सही हैं, परंतु कीर्ति स्तंभ की उपस्थिति इस दुर्ग के विशाल आकार या गौरव कहलाने का मुख्य कारण नहीं है।

6. (C) 36 किलोमीटर
राजसमंद जिले में स्थित कुंभलगढ़ दुर्ग अपनी अद्वितीय सुरक्षा प्राचीर के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस दुर्ग को घेरने वाले निरंतर परकोटे की कुल लंबाई लगभग 36 किलोमीटर है। इतनी विशाल परिधि और चौड़ाई के कारण इसे भारत की महान दीवार भी कहा जाता है। इस दीवार पर चार घुड़सवार एक साथ आसानी से चल सकते हैं। यह परकोटा अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं पर विस्तृत सुरक्षा घेरा प्रदान करता है।

7. (D) मंडन
कुंभलगढ़ दुर्ग की स्थापत्य योजना और निर्माण कार्य का निरीक्षण मेवाड़ के प्रसिद्ध प्रधान वास्तुकार मंडन की देखरेख में संपन्न हुआ था। महाराणा कुंभा ने 15वीं शताब्दी में अरावली की पहाड़ियों पर इस अभेद्य दुर्ग का पुनरुद्धार और निर्माण करवाया था। मंडन एक महान वास्तुशास्त्री थे, जिन्होंने 'देवमूर्ति प्रकरण' और 'प्रसाद मंडन' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की थी। उनकी दूरदर्शिता ने इस दुर्ग को एक असाधारण वास्तुकला रुप प्रदान किया।

8. (A) कटारगढ़
कुंभलगढ़ दुर्ग के उच्चतम और सबसे दुर्गम आंतरिक भाग को कटारगढ़ कहा जाता है। यह सीधा और ऊँचा बना हुआ एक छोटा आंतरिक दुर्ग है, जो महाराणा कुंभा का व्यक्तिगत निवास स्थान था। अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित होने के कारण यहाँ से आसपास के संपूर्ण मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्र की गतिविधियों पर आसानी से नज़र रखी जा सकती थी। इसी कारण कटारगढ़ को ऐतिहासिक रूप से 'मेवाड़ की आँख' भी कहा जाता है।

9. (A) केवल I और II
कुंभलगढ़ दुर्ग राजसमंद जिले में स्थित है और इसकी वास्तुकला योजना वास्तुकार मंडन द्वारा तैयार की गई थी। 1442 ईस्वी में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया था, परंतु वह इसे स्थायी रूप से जीतने में पूरी तरह असफल रहा था। इस प्रकार दुर्ग की स्थापना और भौगोलिक स्थिति से संबंधित तथ्य सही हैं, जबकि खिलजी द्वारा इस पर स्थायी अधिकार किए जाने का दावा ऐतिहासिक रूप से सत्य नहीं है।

10. (B) राजा मान सिंह I
जयपुर के आमेर दुर्ग के वर्तमान मुख्य वास्तुकला ढाँचे का निर्माण 1592 ईस्वी के आसपास आमेर के कछवाहा राजा मान सिंह प्रथम द्वारा प्रारंभ करवाया गया था। इसके पश्चात् मिर्जा राजा जय सिंह और सवाई जय सिंह द्वितीय ने भी इसमें कई भव्य महलों और प्रांगणों का विस्तार किया। यह दुर्ग राजपूत

Downloaded from www.pdf.tube

76. (C) विद्याधर भट्टाचार्य
1727 ईस्वी में स्थापित जयपुर शहर के अनूठे नगर नियोजन का श्रेय प्रसिद्ध बंगाली वास्तुकार और नगर नियोजक पंडित विद्याधर भट्टाचार्य को जाता है। उन्होंने महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के निर्देशन में प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र, मानसार (शिल्प शास्त्र) और ग्रिड प्रणाली के सिद्धांतों का उपयोग करके जयपुर की रूपरेखा तैयार की थी। शहर के चौड़े मार्ग और समकोण पर काटती गलियाँ उनकी महान वास्तुकला दूरदर्शिता की पहचान हैं।

77. (D) नौ-वर्ग ग्रिड (नवग्रह मंडल)
जयपुर के चारदीवारी युक्त ऐतिहासिक शहर की मूल नगर योजना प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र के 'नवग्रह मंडल' या नौ-वर्ग ग्रिड प्रारूप पर आधारित है। पूरे शहर की भूमि को नौ वर्गाकार ब्लॉकों (चौकड़ियों) में विभाजित किया गया था। इनमें से सात ब्लॉक आम जनता के आवासीय तथा व्यावसायिक उपयोग के लिए निर्धारित किए गए थे, जबकि दो केंद्रीय ब्लॉक शाही महलों और जंतर मंतर जैसी प्रशासनिक इमारतों के लिए आरक्षित रखे गए थे।

78. (C) केवल IV
जयपुर शहर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी और इसमें मूल रूप से सात मुख्य दरवाजे थे। हालाँकि, पूरे शहर को स्थापना के समय नहीं, बल्कि काफी बाद में 1876 ईस्वी में महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय द्वारा प्रिंस ऑफ वेल्स (एडवर्ड सप्तम) के आगमन पर गुलाबी रंग से रंगा गया था। अतः स्थापना के समय ही गुलाबी रंग से रंगे जाने से संबंधित चौथा कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

79. (B) चांदपोल
'चांदपोल' जयपुर के ऐतिहासिक चारदीवारी युक्त शहर के मूल मुख्य प्रवेश द्वारों में से एक है, जो शहर की पश्चिमी सीमा पर स्थित है। जयपुर के सुरक्षा परकोटे में मूल रूप से सात प्रमुख द्वार बनाए गए थे, जिनमें चांदपोल, सूरजपोल, अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट, घाट गेट, जोहरी बाज़ार पोल और ध्रुव पोल शामिल हैं। ये द्वार जयपुर के पारंपरिक स्थापत्य और सुरक्षा योजना के अभिन्न अंग रहे हैं।

80. (D) चारबाग (चार भागों वाले उद्यान) शैली और ज्यामितीय जल नालियों का समावेश
उत्तरवर्ती राजपूत दुर्गों और महलों की वास्तुकला में मुगल प्रभाव सबसे स्पष्ट रूप से ज्यामितीय रूप से विभाजित 'चारबाग' शैली के उद्यानों, बहती जल नालियों, फव्वारों और संगमरमर के संगमरमरी मंडपों को अपनाने से दिखाई देता है। आमेर दुर्ग का आराम बाग (केसर क्यारी) और जोधपुर व उदयपुर के महलों में निर्मित उद्यान मुगल ज्यामितीय जल-उद्यान स्थापत्य कला के राजपूत दुर्गों में सीधे समावेश के सबसे प्रमुख ऐतिहासिक प्रमाण हैं।

81. (A) मुगल स्थापत्य कला
उत्तरवर्ती राजपूत महलों की आंतरिक सजावट में दिखाई देने वाली 'पिएत्रा ड्यूरा' तकनीक सीधे तौर पर मुगल स्थापत्य कला का प्रभाव है। इस तकनीक के तहत संगमरमर या लाल बलुआ पत्थर की सतह पर तराशकर उसमें अकीक, लाजवर्द और फिरोजा जैसे कीमती तथा अर्ध-कीमती पत्थरों की सुंदर फूलों और लताओं की जड़ाई की जाती थी। आमेर और जयपुर के महलों में इस मुगल शिल्पकला का उत्कृष्ट उपयोग देखने को मिलता है।

82. (A) हर्षत माता मंदिर (आभानेरी), दिलवाड़ा विमल वासाही, राणकपुर जैन मंदिर, हवा महल
स्मारकों का प्राचीनतम से नवीनतम कालानुक्रम उनके निर्माण काल पर आधारित है। आभानेरी का हर्षत माता मंदिर 8वीं शताब्दी (प्रतिहार काल) में निर्मित हुआ। माउंट आबू का दिलवाड़ा विमल वासाही मंदिर 1031 ईस्वी में बना। पाली का राणकपुर जैन मंदिर 15वीं शताब्दी (1439 ईस्वी) में महाराणा कुंभा के काल में बना, जबकि जयपुर का हवा महल 1799 ईस्वी में सवाई प्रताप सिंह द्वारा बनवाया गया। अतः पहला क्रम पूर्णतः सही है।

NODIA

83. (A) किसी ऊँची पहाड़ी के स्थान पर समतल मैदान पर निर्मित है
बीकानेर का जूनागढ़ दुर्ग राजस्थान के अन्य अधिकांश प्रसिद्ध दुर्गों से भिन्न है, क्योंकि यह किसी पहाड़ी या ऊँचे पर्वत शिखर के बजाय पूरी तरह से समतल मैदानी भूभाग पर निर्मित किया गया है। 1589-1594 ईस्वी में राजा राय सिंह द्वारा निर्मित इस दुर्ग को 'धान्वन' और 'जमींदोज़' दुर्ग की श्रेणी में रखा जाता है। चारों ओर खाई से सुरक्षित यह दुर्ग अपनी स्थापत्य भव्यता और संगमरमर-बलुआ पत्थर के काम के लिए प्रसिद्ध है।

84. (D) भित्ति चित्रों के आधार के रूप में उपयोग की जाने वाली एक चिकनी प्लास्टर घोटाई तकनीक
पारंपरिक राजस्थानी वास्तुकला में 'अराइश' (या आलागीला) चूने के प्लास्टर की एक विशेष घोटाई तकनीक है। इस विधि में चूने, संगमरमर के चूरे और प्राकृतिक अवयवों के मिश्रण से दीवार पर एक अत्यंत चिकनी, चमकदार और संगमरमर जैसी सतह तैयार की जाती है। इस सतह पर बनाए गए भित्ति चित्र (फ्रेस्को) सदियों तक खराब नहीं होते। शेखावाटी की प्रसिद्ध हवेलियों और महलों में इस तकनीक का व्यापक उपयोग हुआ है।

85. (B) जटिल जल संचयन प्रणाली और विशाल भूमिगत टांके
जयपुर का जयगढ़ दुर्ग अपनी सामरिक वास्तुकला और विशाल वर्षा जल संचयन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग में आसपास की पहाड़ियों से वर्षा जल को एकत्र करने के लिए नालियों का विस्तृत संजाल और तीन विशाल भूमिगत पक्के टांके (जलाशय) बनाए गए थे। इनमें से सबसे बड़े टांके में लाखों लीटर पानी जमा करने की क्षमता थी, जिससे लंबी घेराबंदी के दौरान सैन्य बलों को निर्बाध जल आपूर्ति मिलती रहती थी।

हम्मीरदेव चौहान युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, तब रानी रंगदेवी और उनकी पुत्री पदमला ने इसी जलाशय में कूदकर राजस्थान के इतिहास का प्रसिद्ध जल जौहर किया था। यह तालाब दुर्ग के जल प्रबंधन और शौर्य गाथा का साक्षी है।

22. (C) आहू और कालीसिंध नदियाँ
झालावाड़ जिले में स्थित गागरोन दुर्ग भारतीय जल दुर्ग वास्तुकला का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह दुर्ग आहू और कालीसिंध नदियों के पवित्र संगम पर निर्मित है। तीन ओर से प्राकृतिक जलधाराओं से घिरा होने के कारण इसे बिना किसी विशाल नींव के सीधे चट्टानों पर खड़ा किया गया है। नदियों का यह संगम दुर्ग को अभेद्य प्राकृतिक सुरक्षा घेरा प्रदान करता है, जिससे यह स्थापत्य कला की दृष्टि से अनूठा बनता है।

23. (D) मीठे शाह
गागरोन दुर्ग परिसर के भीतर प्रसिद्ध सूफी संत हमीदुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है, जिन्हें सम्मानपूर्वक 'मीठे शाह' कहा जाता है। इस दरगाह का निर्माण मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा करवाया गया था। प्रतिवर्ष यहाँ उर्स का आयोजन होता है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालु भाग लेते हैं। यह स्थल गागरोन दुर्ग में धार्मिक सद्भाव, ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत और सूफी परंपरा के एक प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

24. (A) केवल I और II
वर्ष 2013 में यूनेस्को ने राजस्थान के छह पहाड़ी दुर्गों - चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, आमेर, जैसलमेर और गागरोन को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया था। रणथंभौर दुर्ग इस सूची का एक महत्वपूर्ण भाग है। हालाँकि, गागरोन दुर्ग को मरुस्थलीय (धान्वन) दुर्ग नहीं, बल्कि जल दुर्ग श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि यह नदियों से घिरा है। अतः गागरोन से संबंधित वर्गीकरण का कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

25. (B) मेहरानगढ़ दुर्ग
वर्ष 2013 में यूनेस्को द्वारा घोषित 'राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग' की विश्व धरोहर सूची में छह प्रमुख दुर्ग शामिल किए गए थे। इनमें आमेर दुर्ग, कुंभलगढ़ दुर्ग, चित्तौड़गढ़ दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग, रणथंभौर दुर्ग और गागरोन दुर्ग सम्मिलित हैं। जोधपुर का प्रसिद्ध मेहरानगढ़ दुर्ग, अपनी अपार स्थापत्य भव्यता और ऐतिहासिक महत्व के बावजूद, इस विशेष छह पहाड़ी दुर्गों की यूनेस्को सूची में स्थान प्राप्त करने से वंचित रह गया था।

26. (A) भटनेर दुर्ग, चित्तौड़गढ़ दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग, मेहरानगढ़ दुर्ग
राजस्थान के दुर्गों के निर्माण का सही कालानुक्रम उनके ऐतिहासिक कालखंड को दर्शाता है। हनुमानगढ़ के भटनेर दुर्ग का निर्माण तीसरी शताब्दी (लगभग 285 ईस्वी) में भाटी राजा भूपत द्वारा कराया गया था। चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण 7वीं-8वीं शताब्दी में मौर्य शासक चित्रांगद मौर्य ने कराया था। जैसलमेर दुर्ग की स्थापना 1156 ईस्वी में रावल जैसल ने की, जबकि जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण 1459 ईस्वी में राव जोधा द्वारा किया गया था।

27. (A) जालिम कोट
झालावाड़ के गागरोन दुर्ग को बाहरी तोपखाने के हमलों और सैन्य अभियानों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए एक विशाल सुरक्षा प्राचीर का निर्माण कराया गया था। इस प्रसिद्ध विशाल परकोटे को 'जालिम कोट' कहा जाता है। इसका निर्माण कोटा राज्य के दूरदर्शी सेनापति तथा प्रशासक जालिम सिंह झाला द्वारा करवाया गया था। यह परकोटा दुर्ग की स्थापत्य कला में सामरिक सुरक्षा वृद्धि और सैन्य मज़बूती का एक प्रमुख उदाहरण प्रस्तुत करता है।

28. (C) यह मरुस्थल या शुष्क क्षेत्र के भीतर निर्मित होता है।
शुक्रनीति तथा अन्य प्राचीन भारतीय वास्तुकला ग्रंथों के अनुसार, 'धान्वन दुर्ग' उस किलेबंदी को कहा जाता है जो चारों ओर से विशाल मरुस्थल, रेतीले टीलों या शुष्क बंजर भूमि से घिरा होता है। मरुस्थलीय परिवेश और जल की कमी के कारण शत्रु सेना के लिए ऐसे दुर्ग तक पहुँचना अत्यंत कठिन होता था। जैसलमेर का प्रसिद्ध सोनार दुर्ग भारतीय स्थापत्य कला में धान्वन दुर्ग का एक उत्कृष्ट और प्रामाणिक उदाहरण है।

29. (D) महाराणा उदय सिंह II
उदयपुर में पिछोला झील के तट पर स्थित विशाल 'सिटी पैलेस' परिसर के निर्माण का प्रारंभिक कार्य 1559 ईस्वी में मेवाड़ के शासक महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा प्रारंभ कराया गया था। उदयपुर शहर की स्थापना के साथ ही उन्होंने इस नए प्रशासनिक और शाही केंद्र की आधारशिला रखी थी। बाद के चार सौ वर्षों में मेवाड़ के विभिन्न महाराणाओं ने इस परिसर में कई भव्य महलों और प्रांगणों का निरंतर विस्तार किया।

30. (C) मोर चौक
उदयपुर सिटी पैलेस के भीतर स्थित 'मोर चौक' अपनी असाधारण काँच की पच्चीकारी के लिए विश्वप्रसिद्ध है। इस प्रांगण की दीवारों पर रंगीन और दीप्तिमान काँच के टुकड़ों का उपयोग करके मोर (मयूर) की अत्यंत जटिल तथा सजीव आकृतियाँ उकेरी गई हैं। ये आकृतियाँ वर्षा ऋतु की विभिन्न मुद्राओं को प्रदर्शित करती हैं। यह स्थापत्य कला मेवाड़ के कारीगरों की सूक्ष्म शिल्पकला और रंगात्मक सुंदरता का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करती है।

31. (B) इसमें पूर्ण विकसित वृक्षों वाला एक छत का बगीचा (रूफटॉप गार्डन) है।
उदयपुर सिटी पैलेस के सबसे ऊँचे भाग पर स्थित 'बड़ी महल' वास्तुकला की दृष्टि से अत्यंत अनूठा है। पहाड़ी की प्राकृतिक संरचना का लाभ उठाकर इसे इस प्रकार निर्मित किया गया है कि यह इमारत की ऊपरी मंजिल पर होने के बावजूद भू-स्तर जैसा प्रतीत होता है। इसमें एक विशाल प्राकृतिक प्रांगण है, जहाँ छायादार और पूर्ण विकसित वृक्षों से युक्त एक सुरम्य छत का बगीचा (रूफटॉप गार्डन) निर्मित किया गया है।

32. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान के प्रमुख महलों का निर्माण विभिन्न शासकों द्वारा कराया गया। उदयपुर के सिटी पैलेस का निर्माण महाराणा

Click Here to Buy book on Flipkart

उदय सिंह द्वितीय ने 1559 में शुरु कराया। जयपुर के सिटी पैलेस का निर्माण सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा 1727 में कराया गया। प्रसिद्ध हवा महल का निर्माण सवाई प्रताप सिंह ने 1799 में करवाया, जबकि जयपुर सिटी पैलेस के प्रवेश द्वार पर बने भव्य मुबारक महल का निर्माण सवाई माधो सिंह द्वितीय द्वारा कराया गया था।

33. (A) चंद्र महल
जयपुर के सिटी पैलेस परिसर के केंद्र में स्थित सात मंजिला विशाल शाही निवास 'चंद्र महल' के नाम से जाना जाता है। यह भव्य भवन कछवाहा राजवंश के पूर्व शासकों का मुख्य आवास रहा है। चंद्र महल की सात मंजिलों के अपने विशिष्ट नाम हैं, जिनमें सुख निवास, छवि निवास, श्री निवास और मुकुट महल शामिल हैं। इस इमारत का स्थापत्य राजपूत, मुगल और यूरोपीय शैलियों का एक सुंदर मिश्रण है।

34. (C) हाथी (मानसून)
जयपुर सिटी पैलेस के प्रीतम निवास चौक में चार अत्यंत कलात्मक और चित्रित द्वार बने हैं, जो चार ऋतुओं तथा हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित हैं। मयूर द्वार शरद ऋतु और भगवान विष्णु को, कमल द्वार ग्रीष्म ऋतु और भगवान शिव को, गुलाब द्वार शीत ऋतु और देवी देवी को, तथा लहरिया (हरित) द्वार वसंत ऋतु को निरुपित करता है। इस परिसर के द्वारों में हाथी द्वारा निरुपित विषय शामिल नहीं है।

35. (A) लालचंद उस्ताद
जयपुर के विश्वप्रसिद्ध हवा महल की वास्तुशिल्पीय रुपरेखा और नक्शा मुख्य रुप से प्रसिद्ध वास्तुकार लालचंद उस्ताद द्वारा तैयार किया गया था। सवाई प्रताप सिंह के शासनकाल में 1799 ईस्वी में निर्मित यह पाँच मंजिला इमारत अपनी अनूठी जालियों और झरोखों के लिए जानी जाती है। लालचंद उस्ताद ने इस भवन को इस प्रकार डिज़ाइन किया कि बिना नींव के भी यह हवा के दबाव को सहन करते हुए संतुलित बना रहता है।

36. (B) केवल III
हवा महल का निर्माण 1799 में सवाई प्रताप सिंह द्वारा करवाया गया था और यह पाँच मंजिला संरचना है, जिसका बाहरी अग्रभाग भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट के समान दिखाई देता है। हालाँकि, इसकी वास्तुकला का डिज़ाइन विद्याधर भट्टाचार्य ने नहीं, बल्कि लालचंद उस्ताद द्वारा तैयार किया गया था। विद्याधर भट्टाचार्य जयपुर शहर के मुख्य नगर नियोजक थे। अतः वास्तुकार से संबंधित केवल तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

37. (A) शरद, रतन, विचित्र, प्रकाश, हवा
जयपुर के हवा महल में पाँच मंजिलें हैं, जिनके नाम नीचे से ऊपर के क्रम में विशिष्ट हैं। सबसे निचली यानी पहली मंजिल को शरद मंदिर कहा जाता है। इसके ऊपर दूसरी मंजिल रतन मंदिर, तीसरी विचित्र मंदिर, चौथी प्रकाश मंदिर और सबसे ऊपरी यानी पाँचवीं मंजिल हवा मंदिर कहलाती है। इसी पाँचवीं मंजिल के नाम पर इस पूरी ऐतिहासिक इमारत का नाम 'हवा महल' प्रसिद्ध हुआ है।

38. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
हवा महल बिना किसी गहरी पारंपरिक नींव के निर्मित एक पाँच मंजिला पिरामिडनुमा इमारत है, जो अपने पिरामिड आकार और झुकाव के कारण अत्यधिक स्थिर खड़ी है। दूसरी ओर, इसका निर्माण पर्दा प्रथा का पालन करने वाली शाही महिलाओं के लिए किया गया था ताकि वे गलियों के उत्सव देख सकें। दोनों ऐतिहासिक कथन पूरी तरह सत्य हैं, परंतु महिलाओं का अवलोकन कारण इमारत की भौतिक स्थिरता की व्याख्या नहीं करता।

39. (D) पिछोला झील
उदयपुर का विशाल और ऐतिहासिक 'सिटी पैलेस' परिसर प्रसिद्ध पिछोला झील के पूर्वी तट पर स्थित है। 14वीं शताब्दी में निर्मित इस कृत्रिम झील के किनारे फैले महलों का दृश्य अत्यंत मनमोहक प्रतीत होता है। झील के शांत जल में सिटी पैलेस का परावर्तन इस स्थल की प्राकृतिक और वास्तुकलात्मक सुंदरता को कई गुना बढ़ा देता है, जिससे यह उदयपुर शहर का सबसे प्रमुख पर्यटन आकर्षण केंद्र बना हुआ है।

40. (A) सम्राट यंत्र
जयपुर के जंतर मंतर में स्थित 'सम्राट यंत्र' विश्व की सबसे बड़ी पत्थर से बनी धूपघड़ी के रूप में विख्यात है। लगभग 27 मीटर ऊँची यह विशाल संरचना सौर समय को अत्यधिक सटीकता के साथ मापने में सक्षम है। इसका निर्माण महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा खगोलीय पिंडों की गति और समय की गणना के लिए कराया गया था। यह यंत्र प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान का एक अद्भुत शिखर माना जाता है।

41. (C) पाँच
जयपुर के कछवाहा राजा महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय खगोल विज्ञान के महान संरक्षक थे। उन्होंने ग्रहों और नक्षत्रों की गति का शुद्ध अध्ययन करने के लिए संपूर्ण भारत में कुल पाँच खगोलीय वेधशालाओं (जंतर मंतर) का निर्माण करवाया था। ये वेधशालाएँ दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में स्थापित की गई थीं। इनमें से जयपुर की वेधशाला आकार में सबसे बड़ी और सबसे अधिक सुरक्षित स्थिति में विद्यमान है।

42. (B) आगरा
महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने भारत के पाँच प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक शहरों में जंतर मंतर वेधशालाओं की स्थापना की थी। ये शहर दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी तथा मथुरा हैं। उन्होंने आगरा शहर में किसी भी खगोलीय वेधशाला का निर्माण नहीं करवाया था। जयपुर स्थित वेधशाला को उनकी खगोलीय उत्कृष्टताओं के कारण 2010 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी।

43. (B) केवल II
सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा बनवाई गई पाँच खगोलीय वेधशालाओं में से सबसे बड़ी और सबसे सुसज्जित वेधशाला जयपुर में स्थित है, न कि उज्जैन में। इन वेधशालाओं में निर्मित सम्राट यंत्र एक विशाल धूपघड़ी है जो सौर गति के आधार पर

NODIA

स्थानीय समय की सटीक माप करती है। अतः केवल दूसरा कथन असत्य है, जबकि भारत में पाँच वेधशालाओं के निर्माण और सम्राट यंत्र के कार्य से संबंधित अन्य कथन पूरी तरह सही हैं।

44. (C) दौसा
अपनी अनूठी और सटीक ज्यामितीय सीढ़ीदार वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध 'चाँद बावड़ी' राजस्थान के दौसा जिले के आभानेरी गाँव में स्थित है। इसका निर्माण 8वीं-9वीं शताब्दी में निकुंभ राजवंश के राजा चंद्र द्वारा करवाया गया था। यह दुनिया के सबसे बड़े और सबसे गहरे सीढ़ीदार कुओं में से एक है। इसमें 13 मंजिलों में फैली लगभग 3,500 बारीक नक्काशीदार सीढ़ियाँ अत्यंत सममित पैटर्न में निर्मित की गई हैं।

45. (D) बूंदी
'रानी जी की बावड़ी' का निर्माण 1699 ईस्वी में बूंदी के राव राजा अनिरुद्ध सिंह की रानी नाथावती द्वारा करवाया गया था। अपनी अद्वितीय कलात्मक नक्काशी, सुंदर मेहराबों और शानदार मूर्तिकला के कारण इसे राजस्थान की बावड़ियों की रानी की उपाधि दी गई है। बूंदी शहर में स्थित यह बहुमंजिला सीढ़ीदार कुआँ जल संरक्षण स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट नमूना है, जो प्राचीन काल में सामुदायिक जल आपूर्ति का मुख्य केंद्र था।

46. (C) टोडा रायसिंह
हाड़ी रानी की बावड़ी राजस्थान के टोंक जिले के टोडा रायसिंह कस्बे में स्थित एक अत्यंत सुंदर और ऐतिहासिक बहुमंजिला सीढ़ीदार कुआँ है। इस बावड़ी का निर्माण सलंबर के राव रतन सिंह की पत्नी हाड़ी रानी की स्मृति और सम्मान में कराया गया था। इसमें पानी तक पहुँचने के लिए तीन ओर से सीढ़ियों की आकर्षक संरचना बनाई गई है, जो मध्यकालीन जल प्रबंधन स्थापत्य कला की श्रेष्ठता को उजागर करती है।

47. (A) I, IV, III, II
राजस्थान के दुर्गों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक क्रम उनके जिलों की स्थिति पर आधारित है। सबसे उत्तर में हनुमानगढ़ का भटनेर दुर्ग (I) स्थित है। इसके दक्षिण में जयपुर का आमेर दुर्ग (IV) आता है। मध्य राजस्थान में अजमेर का तारागढ़ दुर्ग (III) अवस्थित है, तथा सबसे दक्षिण में राजसमंद जिले का कुंभलगढ़ दुर्ग (II) स्थित है। अतः भौगोलिक दृष्टि से यह क्रम I, IV, III, II पूर्णतः सही है।

48. (D) हर्षत माता
दौसा जिले के आभानेरी में प्रसिद्ध चाँद बावड़ी के ठीक निकट स्थित प्राचीन मंदिर हर्षत माता को समर्पित है। 8वीं शताब्दी में प्रतिहार काल के दौरान निर्मित यह मंदिर स्थापत्य कला की महा-मारू शैली का एक सुंदर उदाहरण है। हर्षत माता को उल्लास, सुख और समृद्धि की देवी माना जाता है। मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों से क्षतिग्रस्त होने के बावजूद इस मंदिर की नक्काशीदार शिलाएँ अद्भुत कलात्मकता दर्शाती हैं।

49. (A) आमेर दुर्ग
अपनी वर्गाकार सीढ़ियों के सममित और कलात्मक पैटर्न के लिए प्रसिद्ध 'पन्ना मीणा का कुंड' राजस्थान के आमेर दुर्ग के निकट स्थित एक दर्शनीय बावड़ी है। 16वीं शताब्दी में निर्मित यह कुआँ जल संचयन के साथ-साथ स्थानीय समुदाय के सामाजिक मेलजोल का स्थान था। इसकी सीढ़ियों की बनावट इतनी जटिल है कि जिस सीढ़ी से पानी नीचे उतरते हैं, उसी से वापस ऊपर चढ़ना लगभग असंभव सा प्रतीत होता है।

50. (C) हवेलियों की दीवारों पर जटिल भित्ति चित्रकला (फ्रेस्को)
राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र को "ओपन-एयर आर्ट गैलरी" कहा जाता है, क्योंकि यहाँ की विशाल हवेलियों की अंदरूनी और बाहरी दीवारों पर विस्तृत भित्ति चित्रकला (फ्रेस्को कला) की गई है। 18वीं और 19वीं शताब्दी में धनी मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा निर्मित इन हवेलियों में धार्मिक, पौराणिक, सामाजिक और दैनिक जीवन से जुड़े दृश्यों को रंगों के माध्यम से उकेरा गया है। यह विशाल चित्रकला संग्रह इस क्षेत्र को अनूठी पहचान प्रदान करता है।

NODIA

51. (A) जैसलमेर
पटवों की हवेली जैसलमेर शहर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध स्थापत्य स्थल है। यह पाँच हवेलियों का एक अनूठा समूह है, जिसका निर्माण 19वीं शताब्दी की शुरुआत में धनी व्यापारी सेठ गुमान चंद पटवा ने अपने पाँच पुत्रों के लिए करवाया था। पीले बलुआ पत्थर पर की गई अत्यंत बारीक जालीदार नक्काशी और झरोखे इस हवेली को स्थापत्य कला का एक अद्भुत और अप्रतिम नमूना बनाते हैं।

52. (B) केवल I, II और IV
पटवों की हवेली जैसलमेर में स्थित है और इसका निर्माण व्यापारी गुमान चंद पटवा द्वारा अपने पाँच बेटों के लिए पाँच अलग-अलग इमारतों के समूह के रूप में करवाया गया था। हालाँकि, यह हवेली सफेद मकराना संगमरमर से नहीं, बल्कि जैसलमेर के स्थानीय पीले बलुआ पत्थर से निर्मित है। अतः संगमरमर के उपयोग वाला तीसरा कथन असत्य है, जबकि स्थान, निर्माता और संरचना संबंधी अन्य सभी कथन पूर्णतः प्रामाणिक हैं।

53. (B) सलीम सिंह की हवेली
जैसलमेर स्थित सलीम सिंह की हवेली अपनी विशिष्ट ऊपरी मंजिलों के लिए प्रसिद्ध है, जो जहाज अथवा नाचते हुए मोर के आकार में बाहर निकली हुई प्रतीत होती हैं। 300 वर्ष से अधिक पुरानी इस हवेली की सबसे ऊपरी मंजिल को 'जहाज महल' या 'मोती महल' के नाम से जाना जाता है। जैसलमेर के प्रधानमंत्री सलीम सिंह द्वारा निर्मित यह हवेली अपने अनूठे स्थापत्य और पत्थरों की नक्काशी के लिए पहचानी जाती है।

54. (C) इसके दो भागों को दो अलग-अलग भाइयों, लालू और हाथी द्वारा तराशा गया था, जिससे इसके दोनों हिस्से असमान बने।
जैसलमेर स्थित नथमल जी की हवेली की सबसे बड़ी स्थापत्य विशेषता यह है कि इसका निर्माण दो सगे भाइयों, लालू और

(C) संगमरमर की जटिल नक्काशी जो बारीक जालीदार काम जैसी दिखती है
(D) दो सौ फीट से अधिक स्थापत्य ऊँचाई वाला एक गगनचुंबी केंद्रीय शिखर

99. दिल्ली सल्तनत काल के दौरान हुए विनाश के बाद, एकलिंगजी मंदिर के वर्तमान मुख्य ढाँचे का बड़े पैमाने पर 15वीं शताब्दी में पुनर्निर्माण और जीर्णोद्धार किसके द्वारा किया गया था?
(A) महाराणा रायमल
(B) महाराणा प्रताप
(C) महाराणा संग्राम सिंह II
(D) महाराणा फतेह सिंह

100. प्राचीन वास्तुकला ग्रंथ 'शिल्प शास्त्र' के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन 'जल दुर्ग' को सर्वोत्तम रुप से परिभाषित करता है?
(A) एक किलेबंद परिसर जिसमें इसके मुख्य आंतरिक परिसर में एक विशाल कृत्रिम मीठे पानी की झील शामिल है।
(B) तटीय जहाजरानी मार्गों को शत्रु की नौसेना से बचाने के लिए विशेष रुप से निर्मित एक तटीय किलेबंदी।
(C) एक ऐसा दुर्ग जो अपनी प्राथमिक रक्षात्मक घेराबंदी प्रणाली के रूप में भूमिगत बावड़ियों और जल नालियों को शामिल करता है।
(D) तीन या अधिक ओर से गहरे जल निकायों या नदियों से घिरा दुर्ग।

Downloaded from www.pdf.tube

65. (A) लकुलीश
उदयपुर के निकट कैलाशपुरी में स्थित एकलिंगजी मंदिर परिसर मुख्य रूप से प्राचीन लकुलीश संप्रदाय से आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ है। लकुलीश को भगवान शिव के 28वें और अंतिम अवतार के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस मंदिर के गर्भगृह में काले संगमरमर की चार मुखों वाली (चतुर्मुखी) एकलिंगजी शिव प्रतिमा स्थापित है। यह मंदिर सदियों से पाशुपत और लकुलीश शैव मत का प्रमुख ऐतिहासिक धार्मिक केंद्र रहा है।

66. (C) बप्पा रावल
मेवाड़ के गुहिल राजवंश के संस्थापक बप्पा रावल (कालभोज) को ऐतिहासिक रूप से 8वीं शताब्दी (लगभग 734 ईस्वी) में एकलिंगजी मंदिर की मूल स्थापना का श्रेय दिया जाता है। एकलिंगजी को मेवाड़ राज्य का वास्तविक शासक माना जाता था, जबकि यहाँ के महाराणा स्वयं को उनका 'दीवान' मानकर शासन चलाते थे। बप्पा रावल ने अपने गुरु हारित ऋषि के आशीर्वाद से इस पवित्र मंदिर का निर्माण कैलाशपुरी में करवाया था।

67. (D) I, II और III
मंदिर वास्तुकला की महा-मारु शैली 8वीं से 11वीं शताब्दी के बीच गुर्जर-प्रतिहार शासकों के काल में राजस्थान में विकसित हुई। इस शैली के मंदिरों में मुख्य मंदिर के साथ चार सहायक देवालयों की पंचायतन योजना देखने को मिलती है। जोधपुर के ओसियां में स्थित सच्चियाय माता मंदिर और सूर्य मंदिर महा-मारु शैली के उत्कृष्ट और सुरक्षित उदाहरण हैं। अतः इस शैली से संबंधित तीनों प्रस्तुत कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

68. (D) हिंदू देवी-देवताओं और जैन तीर्थंकरों को
जोधपुर जिले के ओसियां में स्थित 8वीं से 11वीं शताब्दी के प्रारंभिक मध्यकालीन मंदिरों का समूह हिंदू और जैन दोनों धर्मों का एक सुंदर संगम प्रदर्शित करता है। यहाँ प्रतिहार कालीन स्थापत्य कला में बने वैष्णव, शैव और शाक्त संप्रदाय के सूर्य, विष्णु व सच्चियाय माता के हिंदू मंदिर स्थित हैं, साथ ही महावीर स्वामी को समर्पित प्राचीन जैन मंदिर भी मौजूद हैं। यह स्थान धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है।

69. (B) किराडू मंदिर
बाड़मेर जिले के हाथमा गाँव के पास स्थित किराडू मंदिर समूह को अपनी उत्कृष्ट सोलंकी वास्तुकला और दीवारों पर उकेरी गई जटिल कामुक मूर्तियों के कारण प्रायः "राजस्थान का खजुराहो" कहा जाता है। 11वीं-12वीं शताब्दी में निर्मित पाँच मंदिरों के इस समूह में सोमेश्वर मंदिर सबसे विशाल और कलात्मक है। पत्थर पर की गई सूक्ष्म नक्काशी और मूर्तियाँ इस स्थान को स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाती हैं।

70. (C) अलवर
मूसी महारानी की छतरी राजस्थान के अलवर जिले में सिटी पैलेस परिसर के पास स्थित एक अत्यंत सुंदर स्मारक है। इस दो मंजिला छतरी का निर्माण 1815 ईस्वी में महाराजा विनय सिंह द्वारा महाराजा बख्तावर सिंह और उनकी रानी मूसी की स्मृति में कराया गया था। इसकी निचली मंजिल लाल बलुआ पत्थर से बनी है, जबकि ऊपरी मंजिल शुद्ध सफेद संगमरमर की जालियों, खंभों और अलंकृत गुंबदों से निर्मित की गई है।

71. (D) बूंदी
प्रसिद्ध 84 खंभों की छतरी राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित एक भव्य स्मारकीय संरचना है। इस दो मंजिला छतरी का निर्माण 1683 ईस्वी में बूंदी के राव राजा अनिरुद्ध सिंह द्वारा अपने धाय भाई देवा की स्मृति में करवाया गया था। 84 अलंकृत स्तंभों पर टिकी यह छतरी एक ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है, जिसकी छतों और स्तंभों पर विभिन्न देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों तथा कामसूत्र से संबंधित आकृतियाँ उकेरी गई हैं।

72. (A) आहड़
उदयपुर के निकट स्थित 'आहड़' (महासत्यजी) स्थान मेवाड़ के सिसौदिया राजवंश के शासकों का शाही श्मशान स्थल और छतरी परिसर है। यहाँ महाराणा अमर सिंह प्रथम से लेकर मेवाड़ के उत्तरवर्ती सभी महाराणाओं की सफेद संगमरमर और पत्थरों से बनी सुंदर छत्रियाँ निर्मित हैं। महाराणा अमर सिंह प्रथम की छतरी इस परिसर की सबसे प्राचीन और कलात्मक छतरी मानी जाती है, जो राजपूत स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करती है।

73. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान के शाही श्मशान परिसर विशिष्ट राजपूत राजवंशों से संबंधित हैं। जयपुर के कछवाहा शासकों का श्मशान स्थल गेटोर की छत्रियाँ हैं। मेवाड़ के सिसौदिया राजवंश की छत्रियाँ उदयपुर के आहड़ में स्थित हैं। जैसलमेर के भाटी शासकों का शाही श्मशान बड़ा बाग में बना है, जबकि मारवाड़ के राठौड़ राजवंश की ऐतिहासिक छत्रियाँ जोधपुर के मंडोर तथा जसवंत थड़ा परिसर में स्थित हैं।

74. (B) महाराजा सरदार सिंह
जोधपुर स्थित जसवंत थड़ा का निर्माण 1899 ईस्वी में मारवाड़ के महाराजा सरदार सिंह द्वारा अपने पिता महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में करवाया गया था। मकराना के शुद्ध सफेद और बारीक नक्काशीदार संगमरमर के पत्थरों से निर्मित होने के कारण इसे "मारवाड़ का ताजमहल" भी कहा जाता है। संगमरमर की ये शिलाएँ इतनी पतली और पारदर्शी हैं कि सूर्य की किरणें इनसे छनकर हल्की आभा बिखेरती हैं।

75. (A) बूंदी
'केसर बाग' की छत्रियाँ राजस्थान की पूर्ववर्ती बूंदी रियासत के हाड़ा चौहान शासकों और उनके राजपरिवार का ऐतिहासिक शाही श्मशान स्थल हैं। बूंदी में स्थित इस परिसर में विभिन्न हाड़ा राजाओं और रानियों की लगभग 66 नक्काशीदार छत्रियाँ बनी हुई हैं। ये छत्रियाँ राजपूत स्थापत्य शैली, सुंदर गुंबदों और नक्काशीदार स्तंभों का बेहतरीन प्रदर्शन करती हैं, जो बूंदी के समृद्ध शाही इतिहास और कलात्मक परंपरा को उजागर करती हैं।

NODIA

हाथी द्वारा एक साथ प्रारंभ किया गया था। दोनों भाइयों ने हवेली के दाएँ और बाएँ भाग की नक्काशी स्वतंत्र रूप से की। यद्यपि बाहरी तौर पर देखने में दोनों भाग समान प्रतीत होते हैं, परंतु सूक्ष्म अवलोकन करने पर इनकी नक्काशी और डिजाइन में बारीक असमानताएँ तथा अनूठा संतुलन दिखाई देता है।

55. (D) यूरोपीय तत्व जैसे रेलगाड़ियाँ, मोटर कारें और ग्रामोफोन
19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में शेखावाटी की हवेलियों में भित्ति चित्रकला के विषयों में बड़ा बदलाव आया। ब्रिटिश शासन के बढ़ते प्रभाव और औपनिवेशिक संस्कृति के संपर्क के कारण स्थानीय चितेरों ने पारंपरिक धार्मिक विषयों के साथ-साथ आधुनिक यूरोपीय तत्वों जैसे भाप वाली रेलगाड़ियाँ, मोटर कारें, ग्रामोफोन, हवाई जहाज और यूरोपीय वेशभूषा वाले व्यक्तियों को हवेलियों की दीवारों पर चित्रित करना शुरु कर दिया था।

56. (A) पिछोला झील
उदयपुर में स्थित ऐतिहासिक बागौर की हवेली प्रसिद्ध पिछोला झील के गांगौर घाट के निकट तट पर निर्मित है। 18वीं शताब्दी में मेवाड़ के प्रधानमंत्री अमरचंद बड़वा द्वारा निर्मित यह हवेली अपने विशाल प्रांगणों, संगमरमर के काम और पारंपारिक स्थापत्य के लिए जानी जाती है। वर्तमान में यहाँ पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र का मुख्यालय स्थित है, जहाँ एक प्रसिद्ध लोक संग्रहालय और दुनिया की सबसे बड़ी पगड़ी प्रदर्शित की गई है।

57. (B) टोंक
'सुनहरी कोठी' राजस्थान के टोंक जिले में स्थित एक अत्यंत भव्य और अलंकृत ऐतिहासिक भवन है। इसे मूल रूप से 'शीश महल' के नाम से भी जाना जाता था। इस भवन के अंदरूनी भागों में संगमरमर की दीवारों पर रंगीन बेल्जियम काँच, सोने की पत्तियों (वर्क) और पच्चीकारी की इतनी विस्तृत सजावट की गई है कि यह अंदर से सोने की तरह चमकती है। यह नवाबों के शहर की अनूठी धरोहर है।

58. (B) बीकानेर
लाल बलुआ पत्थर से निर्मित रामपुरिया हवेलियाँ बीकानेर शहर का एक प्रमुख वास्तुकला और विरासत आकर्षण हैं। 19वीं शताब्दी में बीकानेर के समृद्ध रामपुरिया व्यापारी परिवार द्वारा निर्मित ये हवेलियाँ मुगल, राजपूत और विक्टोरियन स्थापत्य शैलियों के अद्भुत संगम को दर्शाती हैं। इन हवेलियों की दीवारों पर की गई बारीक पत्थर की नक्काशी, लकड़ी की नक्काशीदार खिड़कियाँ और जालीदार झरोखे बीकानेर की स्थापत्य कला के शिखर को प्रदर्शित करते हैं।

59. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
शेखावाटी क्षेत्र को हवेलियों की बाहरी दीवारों पर बनी विशाल भित्ति चित्रकला (फ्रेस्को) के कारण 'ओपन-एयर आर्ट गैलरी' कहा जाता है। अतः कथन सही है। परंतु इसका कारण ताड़ के पत्तों पर बने लघु चित्र नहीं हैं, बल्कि चूने के ताज़ा प्लास्टर पर प्राकृतिक रंगों से बनाई गई 'आरायाश' या 'आलागीला' तकनीक की भित्ति चित्रकला है जो शुष्क मौसम में सुरक्षित रही। इसलिए कारण पूरी तरह गलत है।

60. (C) आदिनाथ
सिरोही जिले के माउंट आबू में स्थित विश्वप्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर समूह का सबसे प्राचीन मंदिर 'विमल वासाही मंदिर' है। इसका निर्माण 1031 ईस्वी में सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम के मंत्री विमल शाह द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) को समर्पित है। शुद्ध सफेद मकराना संगमरमर पर की गई बारीक नक्काशी और गुंबदों की पच्चीकारी इस मंदिर को स्थापत्य का अद्भुत नमूना बनाती है।

61. (D) वस्तुपाल और तेजपाल
माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा मंदिर समूह के प्रसिद्ध 'लून वासाही मंदिर' का निर्माण गुजरात के वाघेला राजा वीरधवल के दो बुद्धिमान मंत्रियों, वस्तुपाल और तेजपाल द्वारा 1230 ईस्वी में करवाया गया था। यह मंदिर 22वें जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ को समर्पित है। इस मंदिर के मंडप की छत से लटकता हुआ संगमरमर का अलंकृत कमल का फूल (रंग मंडप) भारतीय संगमरमर नक्काशी कला का एक उत्कृष्ट और बेजोड़ उदाहरण माना जाता है।

62. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर विशिष्ट स्थानों पर स्थित हैं। दिलवाड़ा जैन मंदिर सिरोही जिले के माउंट आबू में स्थित हैं। राणकपुर का प्रसिद्ध चौमुखा जैन मंदिर पाली जिले में अरावली घाटी में स्थित है। मेवाड़ राजवंश के आराध्य देव एकलिंगजी का मंदिर उदयपुर जिले के कैलाशपुरी में निर्मित है, जबकि प्रतिहार कालीन स्थापत्य कला का प्रतीक हर्षत माता मंदिर दौसा जिले के आभानेरी गाँव में स्थित है।

63. (C) 1444
पाली जिले में अरावली पहाड़ियों की घाटी में स्थित राणकपुर जैन मंदिर अपनी अद्भुत स्थापत्य कला और स्तंभों की विशाल संख्या के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर परिसर को सहारा देने के लिए सफेद संगमरमर के 1444 नक्काशीदार खंभे बनाए गए हैं। इस वास्तुकला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन सभी खंभों पर की गई नक्काशी अलग-अलग है और कोई भी दो खंभे एक समान डिज़ाइन के नहीं हैं।

64. (D) मुख्य मूर्ति के चार मुख हैं जो चार दिशाओं की ओर हैं।
राणकपुर जैन मंदिर को स्थापत्य की भाषा में 'चौमुखा मंदिर' या धरणी विहार कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसके गर्भगृह में प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की चार संगमरमर की मूर्तियाँ एक-दूसरे की पीठ से सटाकर इस प्रकार स्थापित की गई हैं कि वे चारों दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) की ओर मुख किए हुए दिखाई देती हैं। यह अभिकल्प जैन दर्शन के सर्वतोभद्र रूप को दर्शाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

86. (C) सामुदायिक उपयोग के लिए रिसाव या झरने का जल एकत्र करने वाला एक सीढ़ीदार आयताकार जलाशय
राजस्थान की पारंपरिक जल संरक्षण वास्तुकला में 'झालरा' एक सीढ़ीदार आयताकार जलाशय होता है। इसका अपना स्वयं का कोई प्राकृतिक जल स्रोत नहीं होता, बल्कि यह किसी ऊपरी झील, तालाब या बावड़ी से होने वाले पानी के रिसाव (सीपेज) को एकत्र करता है। झालरा के जल का उपयोग मुख्य रूप से धार्मिक अनुष्ठानों, स्नान और सामुदायिक कार्यों के लिए किया जाता था। जोधपुर का महामंदिर झालरा इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है।

87. (D) भूमिगत पक्के कुंडों में वर्षा जल का भंडारण करना
मारवाड़ और थार मरुस्थलीय क्षेत्रों के किलों, हवेलियों तथा घरों में निर्मित 'टांका' एक पारंपरिक भूमिगत पक्का जल भंडारण कुंड होता है। छतों और पक्के आगौर (पायतान) से एकत्र होने वाले शुद्ध वर्षा जल को इस ढके हुए कुंड में जमा किया जाता है। मरुस्थल की भीषण गर्मी में वाष्पीकरण को रोकने और पूरे वर्ष पीने योग्य स्वच्छ जल सुरक्षित रखने के लिए टांका स्थापत्य जल प्रबंधन का अत्यंत कारगर साधन रहा है।

88. (A) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
चित्तौड़गढ़ दुर्ग लगभग 700 एकड़ के विशाल भूभाग में फैला हुआ राजस्थान का सबसे बड़ा किला है। इस दुर्ग की एक अनूठी वास्तुकलात्मक और सामरिक विशेषता यह थी कि इसके विशाल परिसर के भीतर विस्तृत कृषि भूमि उपलब्ध थी। शत्रु सेना द्वारा दुर्ग की लंबी घेराबंदी किए जाने की स्थिति में दुर्ग के भीतर रहने वाले सैनिकों और नागरिकों के लिए खाद्यान्न की कमी न हो, इसलिए दुर्ग की दीवारों के अंदर खेती की जाती थी।

89. (A) I, II, III, IV
राजस्थान के दुर्गों का पश्चिम से पूर्व की ओर सही भौगोलिक क्रम उनके जिलों के आधार पर निर्धारित होता है। सबसे पश्चिम में जैसलमेर दुर्ग (I) स्थित है। इसके पूर्व में जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग (II) आता है। आगे पूर्व की ओर बढ़ने पर जयपुर का आमेर दुर्ग (III) अवस्थित है, तथा राज्य की पूर्वी सीमा पर भरतपुर का लोहागढ़ दुर्ग (IV) स्थित है। अतः यह भौगोलिक क्रम I, II, III, IV पूरी तरह सही है।

90. (B) रणथंभौर दुर्ग
'नौलखा दरवाजा' सवाई माधोपुर जिले में स्थित प्रसिद्ध रणथंभौर दुर्ग का मुख्य और अत्यंत भव्य प्रवेश द्वार है। इस विशाल द्वार को 'नवलखा पोल' भी कहा जाता है। यह द्वार अपनी सुदृढ़ स्थापत्य संरचना, विशाल लकड़ी के किवाड़ों और सुरक्षात्मक बनावट के लिए जाना जाता है। इस द्वार से होकर ही यात्री और सैन्याधिकारी रणथंभौर दुर्ग के आंतरिक परिसर और प्रसिद्ध त्रिनेत्र गणेश मंदिर की ओर प्रवेश करते हैं।

91. (A) गागरोन दुर्ग
'जालिम कोट' के नाम से जाना जाने वाला प्रसिद्ध सुरक्षा परकोटा झालावाड़ के गागरोन जल दुर्ग की रक्षात्मक वास्तुकला से संबंधित है। इस विशाल बाहरी दीवार का निर्माण शत्रुओं के तोपखाने के हमलों से दुर्ग को बचाने के लिए कोटा के सेनापति और प्रशासक जालिम सिंह झाला द्वारा करवाया गया था। यह परकोटा दुर्ग को अतिरिक्त सैन्य सुरक्षा प्रदान करता है और गागरोन के सामरिक स्थापत्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक माना जाता है।

92. (C) पुरुषों ने केसरिया (साका) किया, लेकिन महिलाओं के पास जौहर करने के लिए समय नहीं बचा।
1550 ईस्वी में कंधार के अमीर अली के आक्रमण के समय जैसलमेर दुर्ग में प्रसिद्ध 'अर्द्ध साका' हुआ था। इस युद्ध में भाटी शासक रावल लणकरण और उनके राजपूत योद्धाओं ने अदम्य साहस दिखाते हुए केसरिया वस्त्र धारण कर युद्ध लड़ा और वीरगति प्राप्त की। परंतु अचानक हुए हमले के कारण कुलीन महिलाओं को जौहर कुंड की अग्नि प्रज्वलित करने का समय नहीं मिल सका। अतः केसरिया हुआ पर जौहर न होने से यह अर्द्ध साका कहलाया।

93. (D) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
रानी पद्मिनी का प्रसिद्ध महल चित्तौड़गढ़ दुर्ग के दक्षिणी भाग में एक सुंदर जलाशय के बीच निर्मित है। इस महल के परिसर में एक अनूठा जल महल बना हुआ है। ऐतिहासिक कथाओं के अनुसार, 1303 ईस्वी की घेराबंदी के दौरान दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी को इसी महल के पास बने एक भवन के दर्पण में रानी पद्मिनी का प्रतिबिंब दिखाया गया था। यह महल राजपूत स्थापत्य कला का एक आकर्षक केंद्र है।

94. (C) त्रिपोलिया गेट
उदयपुर स्थित सिटी पैलेस परिसर का मुख्य और भव्य प्रवेश द्वार 'त्रिपोलिया गेट' के नाम से जाना जाता है। तीन मेहराबदार संगमरमर के द्वारों से निर्मित इस ऐतिहासिक प्रवेश द्वार का निर्माण 1713 ईस्वी में महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया था। इस द्वार के सामने ही वह ऐतिहासिक स्थल स्थित है जहाँ मेवाड़ के शासक विशेष अवसरों पर सोने और चाँदी से स्वयं का तुलादान (तोलने की रस्म) करते थे।

95. (B) कुंभलगढ़ दुर्ग
'झालीबाव बावड़ी' और 'मामादेव कुंड' राजसमंद जिले में स्थित प्रसिद्ध कुंभलगढ़ दुर्ग परिसर के भीतर बने दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जलाशय हैं। मामादेव कुंड वही पवित्र स्थान है जहाँ मेवाड़ के महान शासक महाराणा कुंभा की हत्या उनके पुत्र उदा द्वारा की गई थी। ये दोनों जलाशय कुंभलगढ़ दुर्ग की उत्कृष्ट पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणाली और वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो दुर्ग वासियों को निर्बाध जल आपूर्ति प्रदान करते थे।

NODIA

96. (D) जैसलमेर दुर्ग
यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल जैसलमेर दुर्ग को हाल के वर्षों में गंभीर संरक्षण चुनौतियों और दीवारों के खिसकने का सामना करना पड़ा है। इसका मुख्य कारण दुर्ग के भीतर बढ़ती आधुनिक आबादी, होटल गतिविधियों, सीवेज जल के रिसाव और आधुनिक जल निकासी प्रणाली का अभाव है। पीले बलुआ पत्थर से बने इस दुर्ग के आधार में पानी रिसने से इसकी विशाल

28. समृद्ध मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा बनाई गई अत्यधिक भित्ति चित्रों वाली हवेलियों के उच्च संकेंद्रण के कारण, किस क्षेत्र को 'राजस्थान की खुली कला दीर्घा' कहा जाता है?
(A) मेवाड़
(B) मारवाड़
(C) शेखावाटी
(D) हाड़ौती

29. निम्नलिखित में से कौन सा विषय शेखावाटी हवेलियों के 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के भित्ति चित्रों में पाई जाने वाली विशेषता नहीं है?
(A) भगवान कृष्ण के जीवन के प्रसंगों को दर्शाने वाले पौराणिक आख्यानात्मक दृश्य
(B) भाप की ट्रेन, मोटरकार और ग्रामोफोन जैसे आधुनिक तकनीकी आविष्कारों का चित्रण
(C) समकालीन पश्चिमी पोशाक पहने यूरोपीय पुरुषों और महिलाओं के विस्तृत चित्र
(D) केवल गैर-आकृतिवादी इस्लामिक ज्यामितीय कैलीग्राफी का सख्ती से पालन

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : जयपुर की ब्लू पॉटरी अनूठी है क्योंकि यह सामान्य कुम्हारी मिट्टी (चिकनी मिट्टी) के उपयोग के बिना बनाई जाती है।
कारण (R) : इस पॉटरी में विशिष्ट नीला रंग कोबाल्ट ऑक्साइड से प्राप्त होता है, जिसे क्वाट्र्ज़ पत्थर के चूर्ण, कांच के पाउडर, मुल्तानी मिट्टी और सुहागा (बोरेक्स) के आटे की लोई में मिलाया जाता है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

31. दिल्ली और आगरा से कारीगरों को आमंत्रित करके जयपुर में ब्लू पॉटरी कला को औपचारिक रूप से स्थापित करने और व्यापक रूप से संरक्षण देने का श्रेय ऐतिहासिक रूप से किस शासक को दिया जाता है?
(A) महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय
(B) महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय
(C) महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम
(D) महाराजा मानसिंह प्रथम

32. जयपुर ब्लू पॉटरी के निर्माण के प्राथमिक चरणों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) लोई (आटा) तैयार करना -> सांचे में ढालना -> भट्टी में पकाना -> कांच चढ़ाना (ग्लेजिंग)
(B) सांचे में ढालना -> लोई (आटा) तैयार करना -> चित्रकारी -> भट्टी में पकाना
(C) चित्रकारी -> कांच चढ़ाना (ग्लेजिंग) -> लोई तैयार करना -> सांचे में ढालना
(D) लोई (आटा) तैयार करना -> सांचे में ढालना -> चित्रकारी -> कांच चढ़ाना (ग्लेजिंग) और भट्टी में पकाना

33. 20वीं शताब्दी के मध्य में जयपुर ब्लू पॉटरी का पुनरुद्धार करने और पारंपरिक नीले एवं हरे रंगों से इतर नए रंगों को पेश करने का नेतृत्व किस पद्मश्री प्राप्तकर्ता ने किया था?
(A) कृपाल सिंह शेखावत
(B) हिसामुद्दीन उस्ता
(C) कुदरत सिंह
(D) देवकीनंदन शर्मा

34. राजस्थान की बंधेज (बंधाई-रंगाई) कला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'मोठड़ा' नाम की जटिल डिज़ाइन तब बनती है जब रंगी हुई रेखाएं एक-दूसरे को काटती हुई चौकोर पैटर्न बनाती हैं।
II. 'लहरिया' की विशेषता तिरछी धारीदार डिजाइन है, जिसे पारंपरिक रूप से मानसून के त्यौहार तीज के दौरान पहना जाता है।
III. राजस्थान में बंधेज के कारीगर मुख्य रूप से नीलगर या रंगरेज समुदाय के हैं।
IV. 'एकडाली' पैटर्न में पूरे कपड़े को ढकने वाले बड़े, निरंतर ब्लॉक प्रिंट होते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

35. राजस्थानी वस्त्र परंपराओं में 'पीला' (या पोमचा) का क्या विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व है?
(A) लाल रंग के केंद्रीय वृत्त/कमल वाली पीली ओढ़नी, जो संतान जन्म के बाद प्रसूता मां को दी जाती है।
(B) ग्रामीण समुदायों में बुजुर्ग विधवाओं द्वारा पहनी जाने वाली एक पारंपरिक सफेद सूती शोक ओढ़नी।
(C) विवाह की रस्मों के दौरान केवल राजपूत दूल्हों द्वारा पहनी जाने वाली एक औपचारिक ब्लॉक-प्रिंटेड साफा।
(D) पारंपरिक फैब्रिक एप्लिक तकनीकों द्वारा निर्मित एक भारी, सजावटी रजाई।

36. राजस्थान का कौन सा शहर प्रमाणिक तरंगदार 'लहरिया' बंधेज कपड़ों के उत्पादन के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध है?
(A) बीकानेर
(B) उदयपुर
(C) जैसलमेर
(D) जयपुर

37. सांगानेरी और बगरु ब्लॉक प्रिंट के बीच मौलिक तकनीकी अंतर क्या है?
(A) सांगानेरी छपाई पूरी तरह से आधुनिक संश्लेषित रंगों पर निर्भर है, जबकि बगरु छपाई में सभी चरणों में रासायनिक

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 12

कला, पेंटिंग और हस्तशिल्प

1. 1916 में प्रकाशित महत्वपूर्ण कृति 'राजपूत पेंटिंग' के लेखक कौन हैं, जिसमें पहली बार राजस्थान की लघु चित्रकला शैलियों का व्यवस्थित रुप से वर्गीकरण किया गया था?
(A) आनंद कुमारस्वामी
(B) कार्ल खंडालवाला
(C) डब्ल्यू. जी. आर्चर
(D) हर्मन गोएत्ज

2. राजस्थानी चित्रकला शैलियों को मुख्य रूप से चार प्रमुख भौगोलिक और सांस्कृतिक भागों में वर्गीकृत किया गया है। निम्नलिखित में से कौन सा इन प्रमुख भागों में शामिल नहीं है?
(A) मेवाड़ शैली
(B) मारवाड़ शैली
(C) मालवा शैली
(D) ढूंढाड़ शैली

3. मेवाड़ और मारवाड़ चित्रकला शैलियों के प्रारंभिक विकास में एक प्रमुख अंतर कौन सा है?
(A) मेवाड़ शैली का विकास पहाड़ी इलाकों में हुआ जिसमें घाटी के दृश्यों का चित्रण है, जबकि मारवाड़ शैली का विकास शुष्क पश्चिमी मरुस्थलीय मैदानों में हुआ।
(B) मेवाड़ शैली का विकास हल्के रेतीले रंगों के उपयोग के साथ शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में हुआ, जबकि मारवाड़ शैली का विकास हरी-भरी पूर्वी पहाड़ियों में हुआ।
(C) मेवाड़ चित्रकला अपने शुरुआती चरण में पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष रही, जबकि मारवाड़ शैली का विकास विशेष रुप से धार्मिक कला के रूप में हुआ।
(D) मेवाड़ चित्रकला ने 1400 ईस्वी तक पूर्ववर्ती अपभ्रंश शैली का त्याग कर दिया था, जबकि मारवाड़ ने इसे 19वीं शताब्दी तक बनाए रखा।

4. मेवाड़ चित्रकला शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे राजस्थान की प्रमुख चित्रकला शैलियों में सबसे मौलिक और प्राचीन माना जाता है।
II. 'चावंड शैली' का एक विशिष्ट उप-शैली के रूप में उदय महाराणा प्रताप के शासनकाल के दौरान हुआ।
III. साहिबदीन और मनोहर 17वीं शताब्दी के प्रमुख लघु चित्रकार थे जिन्होंने 'रागमाला' और 'रामायण' के चित्र तैयार किए।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

5. 1628 ईस्वी में उदयपुर में चित्रित 'रागमाला' का प्रसिद्ध सचित्र ग्रंथ मेवाड़ शैली के किस प्रसिद्ध चित्रकार द्वारा बनाया गया था?
(A) निहालचंद
(B) साहिबदीन
(C) रुकनुद्दीन
(D) दलचंद

NODIA

6. निम्नलिखित में से कौन सा कथन नाथद्वारा उप-शैली के 'पिछवाई' चित्रों का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) ये मेवाड़ के राजाओं के विस्तृत लघु चित्र हैं जो विशेष रूप से हाथीदांत की पतली शीट पर बनाए जाते हैं।
(B) ये पवित्र आख्यानात्मक स्क्रॉल चित्र हैं जिन्हें भोपा लोक पुजारियों द्वारा रात्रि गायन के दौरान प्रदर्शित किया जाता है।
(C) ये श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे पृष्ठभूमि में लगाए जाने वाले कपड़े के पर्दे हैं, जिन पर कृष्ण के जीवन के प्रसंग चित्रित होते हैं।
(D) ये अरायश तकनीक द्वारा हवेलियों की बाहरी दीवारों पर बनाए गए बड़े भित्ति चित्र (फ्रेस्को) हैं।

7. मारवाड़ (जोधपुर) चित्रकला शैली किस शासक के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जिनके संरक्षण में 'शिव पुराण' और 'दुर्गा चरित्र' जैसे महान सचित्र ग्रंथों का निर्माण हुआ?
(A) राव मालदेव
(B) महाराजा जसवंत सिंह प्रथम
(C) महाराजा अजीत सिंह
(D) महाराजा मानसिंह

8. 'ढोला-मारु' की प्रसिद्ध प्रेम कथा किस राजस्थानी चित्रकला शैली का सबसे लोकप्रिय और बार-बार चित्रित विषय है?
(A) जोधपुर (मारवाड़) शैली
(B) कोटा शैली
(C) जयपुर शैली
(D) किशनगढ़ शैली

9. मारवाड़ लघु चित्रकला शैली में महिलाओं के चित्रण से जुड़ी प्रमुख शारीरिक विशेषता की पहचान कीजिए।
(A) मुगल शैली की अति अलंकृत पोशाक और गोल चेहरे
(B) बादाम की आकृति जैसी आंखें, उन्नत नासिका और

47. जबकि मकराना सफेद संगमरमर के लिए विश्व प्रसिद्ध है, राजस्थान में कौन सा विशिष्ट स्थान काले संगमरमर के खनन और नक्काशी का पारंपरिक केंद्र है?
(A) ऋषभदेव (उदयपुर)
(B) भैंसलाना (जयपुर)
(C) जैसलमेर
(D) किशनगढ़

48. डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्रों में 'सोमपुरा' समुदाय के मूर्तिकार ऐतिहासिक रूप से किसके लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) ऊंट के बालों के पारंपरिक कालीन और दरियां बुनने के लिए
(B) अत्यधिक जटिल पारंपरिक मीनाकारी सोने के आभूषण डिजाइन करने के लिए
(C) नक्काशीदार लकड़ी की धागा-कठपुतली बनाने के लिए
(D) पत्थर के मंदिरों की जटिल वास्तुकला और मूर्तियों की नक्काशी के लिए

49. चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बस्सी गांव किस पारंपरिक हस्तशिल्प के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है?
(A) पारंपरिक लकड़ी के खिलौने और कावड़
(B) हाथ से बनी टेराकोटा की अनुष्ठानिक घोड़ों की मूर्तियां
(C) हाथ से गुंथे हुए ऊनी फारसी कालीन
(D) पारंपरिक कढ़ाई वाली चमड़े की मोजड़ियां

50. राजस्थानी काष्ठ कला के संदर्भ में 'कावड़' वास्तव में क्या है?
(A) कपड़े की छपाई के लिए प्रयुक्त लकड़ी का नक्काशीदार ब्लॉक
(B) पारंपरिक हवेली का नक्काशीदार मुख्य द्वार
(C) कपाटों (किवाड़ों) वाला चित्रित लकड़ी का चल मंदिर जिसका उपयोग कथावाचन में होता है
(D) भेड़ की ऊन कातने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का एक पारंपरिक उपकरण

51. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (हस्तशिल्प)
P. तारकशी (लकड़ी में चांदी के तार की जड़ाई)
Q. थेवा कला (कांच पर सोने की सूक्ष्म नक्काशी)
R. उस्ता कला (ऊंट की खाल पर स्वर्ण चित्रकारी)
S. लकड़ी की कावड़ (चल मंदिर)
सूची II : (केंद्र)
1. बीकानेर
2. चित्तौड़गढ़
3. नाथद्वारा
4. प्रतापगढ़
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

52. 'मोजड़ी' के नाम से जाने जाने वाले पारंपरिक चमड़े के जूते मुख्य रूप से आधुनिक पश्चिमी जूतों से संरचनात्मक और शैलीगत रूप से भिन्न हैं क्योंकि:
(A) ये पूरी तरह से संश्लेषित परतों से बनाए जाते हैं जिन्हें हाथ से सिलने के बजाय आपस में चिपकाया जाता है।
(B) ये पूरी तरह से ऊंट की हड्डी के एक ठोस टुकड़े से तराशे जाते हैं।
(C) इनमें रेत पर चलने के लिए लकड़ी की भारी एड़ी लगी होती है।
(D) इनमें जरी की कढ़ाई होती है और इनमें दाएं-बाएं पैर का कोई अंतर नहीं होता है।

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : नई खरीदी गई पारंपरिक राजस्थानी मोजड़ी में दाएं और बाएं पैर का कोई भेद नहीं होता है।
कारण (R) : मोजड़ी के ऊपरी भाग के लिए सममित रूप से कटे हुए चमड़े का उपयोग किया जाता है, जिससे पहनने वाले के पैर का आकार लेने तक इसे किसी भी पैर में पहना जा सकता है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

54. नाग्रा जूतियां, जो जोधपुर और जयपुर में पाई जाने वाली राजस्थानी चमड़ा शिल्प का एक विशिष्ट रूप हैं, में आमतौर पर कौन सा विशिष्ट डिज़ाइन तत्व होता है?
(A) एक मोटी वल्कनीकृत रबर सोल लाइनिंग
(B) घुटने तक चमड़े के फीते (लेसिंग)
(C) आगे की ओर मुड़ी हुई नुकीली नोक (नोकरा)
(D) बिना हील कवर वाली खुली चप्पल संरचना

55. राजस्थानी कठपुतली कला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पारंपरिक कठपुतलियां धागे से चलने वाली कठपुतलियां होती हैं जिन्हें मुख्य रूप से आडू या आम की हल्की लकड़ी से तराशा जाता है।
II. इन कठपुतलियों में आमतौर पर पैर नहीं तराशे जाते हैं, पैरों का भ्रम पैदा करने के लिए लंबे लहंगों का उपयोग किया जाता है।
III. इस प्रदर्शन के दौरान आमतौर पर सीटी (बोली) नामक एक विशिष्ट बांस के वाद्य का उपयोग किया जाता है।
IV. पारंपरिक कठपुतली कलाकार केवल जैसलमेर के कालबेलिया समुदाय से संबंधित हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III और IV
(C) केवल IV

Click Here to Buy book on Flipkart

S. मेवाड़

सूची II : (विशेषता/विषय)

1. साहिबदीन की रागमाला श्रृंखला
2. मरुस्थलीय परिदृश्य और ढोला-मारु
3. हरी-भरी वनस्पति और मानसून के दृश्य
4. लंबे शारीरिक नैन-नक्श और बणी-ठणी

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

19. फड़ चित्रकला राजस्थान की एक पारंपरिक आख्यानात्मक स्क्रॉल कला है। इन जटिल स्क्रॉल चित्रों को बनाने के लिए मुख्य रूप से कौन सा पारंपरिक समुदाय उत्तरदायी है?
(A) शाहपुरा का जोशी वंश
(B) सांगानेर का छीपा ब्लॉक प्रिंट समुदाय
(C) बीकानेर का मथेरण फ्रेस्को समुदाय
(D) जैसलमेर का उस्ता ऊंट-चर्म शिल्पकार समुदाय

20. फड़ चित्रकला के पारंपरिक निर्माण में शामिल निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
1. सूती कपड़े पर कलफ लगा कर उसे घोटना (चिकना करना)
2. प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके मुख्य देवता और द्वितीयक आकृतियों को चित्रित करना
3. हल्के पीले रंग (कच्चा रंग) का उपयोग करके कैनवास को विशिष्ट भागों में विभाजित करना
4. मुख्य देवता की 'आंखें खोलना' (प्राण प्रतिष्ठा करना), जो फड़ के अभिषेक का प्रतीक है

उपर्युक्त चरणों का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन सा है?
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 3, 4, 2

21. 'पाबूजी की फड़' का वाचन करते समय भोपा द्वारा पारंपरिक रूप से अनिवार्य रूप से किस वाद्य यंत्र का उपयोग किया जाता है?
(A) जंतर
(B) रावणहत्था
(C) कमायचा
(D) मोरचंग

22. प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित श्री लाल जोशी और शांति लाल जोशी किस कला रूप के प्रसिद्ध सिद्धहस्त कलाकार हैं?
(A) ब्लू पॉटरी
(B) शेखावाटी फ्रेस्को
(C) फड़ चित्रकला
(D) उस्ता ऊंट कला

23. राजस्थान की पहली महिला फड़ चित्रकार होने का गौरव किसे प्राप्त है, जिन्होंने इस कला की पुरुष-प्रधान परंपरा को तोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(A) रमा देवी छीपा
(B) सीता देवी मथेरण
(C) गवरी देवी उस्ता
(D) पार्वती देवी जोशी

24. राजस्थानी लघु चित्रकला के तकनीकी संदर्भ में 'वासली' क्या है?
(A) आधार के रूप में प्रयुक्त हाथ से बना परतदार कागज़
(B) गिलहरी के मुलायम बालों से बनी एक विशेष नाजुक तुलिका
(C) स्थानीय पलाश के फूलों से निकाला गया जीवंत प्राकृतिक पीला रंग
(D) तैयार लघु चित्रों पर लगाई जाने वाली सुरक्षात्मक प्राकृतिक वार्निश की परत

25. राजस्थानी लघु चित्र बनाने में शामिल निम्नलिखित पारंपरिक चरणों पर विचार कीजिए:
1. घुटाई (चिकनाई सुनिश्चित करने के लिए अकीक पत्थर से सतह को घोटना)
2. खरका (प्रारंभिक हल्की रुपरेखा/रेखांकन तैयार करना)
3. रंग-भरना (मूल रंग और विस्तृत रंग भरना)
4. स्याही (अंतिम गाढ़ी रुपरेखा और सूक्ष्म विवरण देना)

उपर्युक्त चरणों का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन सा है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 2, 4, 1

26. राजस्थान में लघु चित्रकारों द्वारा 'घुटाई' प्रक्रिया के लिए किस पारंपरिक उपकरण का उपयोग किया जाता है, जिससे चित्र को चिकना और चमकदार रूप प्राप्त होता है?
(A) पीतल का रोलर
(B) पॉलिश किया गया अकीक पत्थर
(C) लकड़ी का हथौड़ा (मुंगरी)
(D) बारीक मलमल के कपड़े की गद्दी

27. शेखावाटी क्षेत्र की भित्ति चित्र परंपरा 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची। इन भित्ति चित्रों में मुख्य रूप से प्रयुक्त स्वदेशी 'अरायश' (या आला-गीला) तकनीक का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा कथन करता है?
(A) खनिज रंगों को गीले चूने के प्लास्टर पर लगाना ताकि वे स्थायी रूप से जुड़ सकें।
(B) पशु गोंद बाइंडिंग एजेंट के साथ जल-घुलनशील रंगों का उपयोग करके सूखे प्लास्टर पर चित्रकारी करना।
(C) त्रिविमीय प्रभाव पैदा करने के लिए पहले से चित्रित सतहों पर सोने का पतला वर्क चिपकाना।
(D) बारीक संगमरमर के चूने की चिकनी आधार परत पर सीधे तेल आधारित रंगों का प्रयोग करना।

Downloaded from www.pdf.tube

बुर्जों और दीवारों को नुकसान पहुँचा है, जिसके लिए विशेष संरक्षण प्रयास किए जा रहे हैं।

97. (A) महाराजा तख्त सिंह
जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थित मोती महल का निर्माण मूल रूप से राजा सूर सिंह ने करवाया था, परंतु इसके आंतरिक भाग में छत और पर्दों पर सोने के वर्क (लीफ) की विस्तृत अलंकृत नक्काशी 19वीं शताब्दी में मारवाड़ के महाराजा तख्त सिंह द्वारा करवाई गई थी। यह मोती महल अपने भव्य सोने के काम, आदमकद शीशों और नक्काशीदार लकड़ी के स्तंभों के लिए मारवाड़ राजशाही की अप्रतिम भव्यता को दर्शाता है।

98. (C) संगमरमर की जटिल नक्काशी जो बारीक जालीदार काम जैसी दिखती है
माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिरों का असाधारण स्थापत्य सौंदर्य उनके संगमरमर पर की गई अत्यंत सूक्ष्म और बारीक नक्काशी में निहित है। मकराना के सफेद संगमरमर की छतों, स्तंभों और मंडपों को इस प्रकार तराशा गया है कि वे पत्थर के बजाय बारीक लेस या जालीदार काम जैसी प्रतीत होती हैं। विशेष रूप से छतों से लटकते संगमरमर के अलंकृत झूमर और मूर्तियाँ भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में अद्वितीय मानी जाती हैं।

99. (A) महाराणा रायमल
दिल्ली सल्तनत के आक्रमणों के दौरान क्षतिग्रस्त होने के बाद उदयपुर के कैलाशपुरी स्थित एकलिंगजी मंदिर का व्यापक जीर्णोद्धार और वर्तमान मुख्य मंदिर का पुनर्निर्माण 15वीं शताब्दी के अंत में मेवाड़ के महाराणा रायमल द्वारा करवाया गया था। उन्होंने मंदिर में चार मुख वाली (चतुर्मुखी) काले संगमरमर की एकलिंगजी की मुख्य मूर्ति की पुनः प्रतिष्ठा करवाई और मंदिर परिसर को एक विशाल प्राकार तथा मंडप प्रदान कर इसकी स्थापत्य भव्यता को पुनर्स्थापित किया।

100. (D) तीन या अधिक ओर से गहरे जल निकायों या नदियों से घिरा दुर्ग।
प्राचीन वास्तुकला ग्रंथ 'शिल्प शास्त्र' और 'शुक्रनीति' के अनुसार, 'जल दुर्ग' (या औदक दुर्ग) उस किले को कहा जाता है जो प्राकृतिक रूप से तीन या चार ओर से विशाल जल निकायों, गहरी झीलों या सदापानी नदियों से घिरा होता है। जल का यह प्राकृतिक घेरा शत्रु की पैदल और घुड़सवार सेना के आक्रमण को रोकता है। राजस्थान में झालावाड़ का गागरोन दुर्ग जल दुर्ग श्रेणी का सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण माना जाता है।

NODIA

एज़ो रंगों का उपयोग होता है।
(B) सांगानेरी में पृष्ठभूमि हल्की (सफेद/ऑफ-व्हाइट) रखी जाती है, जबकि बगरू में दाबू (मिट्टी प्रतिरोध) के माध्यम से तैयार गहरे रंग की पृष्ठभूमि का उपयोग होता है।
(C) सांगानेरी ब्लॉक प्रिंटिंग बिना लकड़ी के ब्लॉक के हाथों से की जाती है, जबकि बगरू प्रिंटिंग तांबे की नक्काशीदार प्लेटों पर निर्भर करती है।
(D) सांगानेरी डिज़ाइन स्वदेशी जनजातीय रूपांकनों से अत्यधिक प्रभावित है, जबकि बगरू डिज़ाइन में विशेष रूप से शाही मुग़ल फूलों के पैटर्न शामिल हैं।

38. राजस्थान में स्वदेशी बगरू ब्लॉक प्रिंटिंग कार्य करने के लिए ऐतिहासिक रूप से कौन सा पारंपरिक समुदाय प्रसिद्ध है?
(A) मेघवाल समुदाय
(B) सालवी समुदाय
(C) छीपा समुदाय
(D) सोनी समुदाय

39. बगरू ब्लॉक प्रिंटिंग प्रक्रिया का सही पारंपरिक क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) ब्लॉक से छपाई -> कपड़े की धुलाई/सफाई (हरियाण) -> प्राकृतिक रंगों से रंगाई -> हरड़ा चढ़ाना (पीला करना)
(B) हरड़ा चढ़ाना (पीला करना) -> ब्लॉक से छपाई -> कपड़े की धुलाई (हरियाण) -> प्राकृतिक रंगों से रंगाई
(C) प्राकृतिक रंगों से रंगाई -> कपड़े की धुलाई (हरियाण) -> हरड़ा चढ़ाना (पीला करना) -> ब्लॉक से छपाई
(D) कपड़े की धुलाई/सफाई (हरियाण) -> हरड़ा चढ़ाना (पीला करना) -> ब्लॉक से छपाई -> प्राकृतिक रंगों से रंगाई

40. शुद्ध सूती कपड़े पर मुद्रित बारीक और गहरे रंग के फूलों के बूटे (बूटियों) के लिए प्रसिद्ध 'कैलिको' प्रिंटिंग शैली मुख्य रूप से राजस्थान के किस केंद्र से संबंधित है?
(A) सांगानेर
(B) बाड़मेर
(C) अकोला
(D) पाली

41. दाबू ब्लॉक प्रिंटिंग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक मिट्टी-प्रतिरोध प्रिंटिंग तकनीक है जिसमें काली मिट्टी, चूने और गेहूं की भूसी से बनी एक विशिष्ट लेई (पेस्ट) का उपयोग किया जाता है।
II. चित्तौड़गढ़ जिले का अकोला गांव प्रामाणिक दाबू प्रिंटिंग का एक अत्यंत प्रसिद्ध केंद्र है।
III. इस तकनीक का उपयोग मुख्य रूप से केवल रेशमी कपड़े पर चमकीले संश्लेषित फूलों के पैटर्न बनाने के लिए किया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

42. मीनाकारी, जो धातु की सतहों पर मीना (रंग) चढ़ाने की उत्कृष्ट कला है, को किस शासक के शासनकाल के दौरान लाहौर से जयपुर लाया गया था?
(A) महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय
(B) महाराजा मानसिंह प्रथम
(C) महाराणा प्रताप
(D) महाराजा रामसिंह द्वितीय

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मीनाकारी में भट्टी में उच्च तापमान पर गलाकर उत्कीर्ण धातु सतहों पर रंगीन कांच के मीने जमाए जाते हैं।
II. कुंदन आभूषणों में बिना तराशे हीरे और कीमती पत्थरों को जड़ने के लिए विशेष रूप से शुद्ध चांदी के वर्क का उपयोग किया जाता है।
III. आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम को लाहौर से मीनाकारी के विशेषज्ञ कारीगरों को लाने का श्रेय दिया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) केवल I और III

44. पारंपरिक कुंदन आभूषणों में बिना तराशे गए रत्नों को आधार धातु पर जड़ने और सुरक्षित रखने के लिए किस विशिष्ट सामग्री का अत्यधिक परिष्कृत रूप में उपयोग किया जाता है?
(A) अत्यधिक परिष्कृत तरल पारा अमलगम यौगिक
(B) पिघला हुआ स्टर्लिंग चांदी का बाइंडिंग तार
(C) शुद्ध 24-कैरेट सोने का वर्क (कुंदन)
(D) सुहागा (बोरेक्स) और तांबे के पेस्ट का गाढ़ा मिश्रण

45. राजस्थान में मीनाकारी कला को उत्कृष्ट ऊंचाइयों पर ले जाने में अपने आजीवन योगदान के लिए किस प्रसिद्ध शिल्पकार को पद्मश्री से सम्मानित किया गया था?
(A) कृपाल सिंह शेखावत
(B) हिसामुद्दीन उस्ता
(C) श्री लाल जोशी
(D) कुदरत सिंह

46. तराशे गए संगमरमर की सतहों पर लाजवर्द, अकीक और फिरोज़ा जैसे अर्ध-कीमती पत्थरों की जड़ाई की कला को राजस्थान में किस नाम से जाना जाता है?
(A) थेवा
(B) तारकशी
(C) पच्चीकारी (पिएट्रा ड्यूरा)
(D) कोफ्तगिरी

Click Here to Buy book on Amazon

सुगठित शारीरिक विशेषताएं
(C) नाटा कद और केवल सामने से दिखने वाले चेहरे (प्रोफाइल)
(D) कमल की पंखुड़ी जैसी लंबी, धनुषाकार आंखें और नुकीली ठोड़ी

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : बीकानेर लघु चित्रकला शैली में अन्य राजस्थानी शैलियों की तुलना में मुगल और फारसी प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
कारण (R) : मुगल दरबार के कई प्रमुख चित्रकार, जैसे उस्ता अली रज़ा और रुकनुद्दीन, बीकानेर आ गए और उन्हें यहाँ के शासकों द्वारा व्यापक संरक्षण मिला।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

11. बीकानेर का 'मथेरण' समुदाय ऐतिहासिक रूप से किस विशिष्ट कलात्मक योगदान के लिए प्रसिद्ध है?
(A) जैन धार्मिक चित्र और भित्ति चित्र (फ्रेस्को) बनाने के लिए
(B) ऊंट के चमड़े के पारंपरिक जीन (सैडल) और बैग बनाने के लिए
(C) जटिल बहु-किवाड़ वाली लकड़ी की कावड़ तराशने के लिए
(D) लोक आख्यानात्मक धागा-कठपुतली शो प्रदर्शित करने के लिए

12. किशनगढ़ चित्रकला शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजा सावंत सिंह के संरक्षण में फली-फूली, जिन्होंने 'नागरीदास' उपनाम से भक्तिपूर्ण कविताएं लिखी थीं।
II. चेहरे की विशेषताओं में अत्यधिक लंबे चेहरे, नुकीली नाक और धनुषाकार आंखें शामिल हैं।
III. निहालचंद मुख्य चित्रकार थे जिन्होंने विश्व प्रसिद्ध कलाकृति 'बणी-ठणी' चित्रित की थी।
IV. इस शैली के विषय पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष हैं, जिनमें वैष्णव या भक्ति प्रभाव पूरी तरह से अनुपस्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

13. 1973 में, भारत सरकार ने एक विशिष्ट राजस्थानी लघु चित्र के सम्मान में एक स्मरणीय डाक टिकट जारी किया, जिसे अक्सर 'भारत की मोनालिसा' कहा जाता है। वह कौन सा चित्र था?
(A) मेवाड़ की रागमाला
(B) जोधपुर का ढोला-मारु
(C) नाथद्वारा की श्रीनाथजी पिछवाई
(D) किशनगढ़ की बणी-ठणी

14. किशनगढ़ लघु चित्रों की पृष्ठभूमि में कौन सी विशिष्ट दृश्य-विशेषता बहुतायत में मौजूद है, जो एक रहस्यमयी और शांत वातावरण निर्मित करती है?
(A) विशाल मरुस्थलीय टीलों के बीच घनी कांटेदार झाड़ियां
(B) यूरोपीय शैली की शास्त्रीय पाषाण वास्तुकला और संगमरमर के आंगन
(C) कमल के फूलों और तैरती नौकाओं से युक्त विशाल झीलें
(D) प्रपात वाले झरनों से युक्त उबड़-खाबड़ पर्वतीय भूभाग

15. बूंदी चित्रकला शैली कला इतिहासकारों के बीच किसके असाधारण और जीवंत चित्रण के लिए सबसे अधिक प्रशंसित है?
(A) राजदरबार की आंतरिक कार्यवाहियों और दरबार के दृश्यों के जटिल चित्रण
(B) प्राकृतिक वनस्पति, पशु-पक्षी, मानसून के बादल और मूसलाधार बारिश
(C) अमूर्त ज्यामितीय पैटर्न और सममित टाइल डिज़ाइन
(D) आदमकद शाही चित्र और औपचारिक राजकीय आकृतियां

NODIA

16. कोटा-बूंदी शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बूंदी चित्रकला प्रकृति, विशेषकर हाथियों, पक्षियों और हरी-भरी वनस्पति के सटीक चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।
II. कोटा उप-शैली में अक्सर गतिशील शिकार के दृश्य होते हैं जिनमें शाही हस्तियों को घने जंगलों में जंगली जानवरों का पीछा करते हुए दिखाया गया है।
III. दोनों शैलियों के चित्रों में मुगल लघु चित्रकला परंपरा का प्रभाव पूरी तरह से अनुपस्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

17. चित्रकार 'रामलाल' और 'दालूराम' ऐतिहासिक रूप से किस विशिष्ट भित्ति और लघु चित्र परंपरा से जुड़े हैं?
(A) कोटा शैली
(B) बीकानेर शैली
(C) किशनगढ़ शैली
(D) मेवाड़ शैली

18. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (शैली)
P. किशनगढ़
Q. बूंदी
R. मारवाड़

(D) केवल I और IV

56. बोरुंदा में 'रुपायन संस्थान' की स्थापना किसके द्वारा की गई थी, जिसने कठपुतली सहित राजस्थान की लोक कलाओं के दस्तावेजीकरण और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) कोमल कोठारी और विजयदान देथा
(B) कृपाल सिंह शेखावत और रामगोपाल विजयवर्गीय
(C) आनंद कुमारस्वामी और कोमल कोठारी
(D) देवीलाल सामर और भवानी सिंह

57. किस जटिल कला रूप में विशेष रूप से संसाधित ऊंट की खाल पर शुद्ध सोने और चांदी के फूलों के पैटर्न की चित्रकारी और नक्काशी (उभरी हुई नक्काशी) शामिल है?
(A) थेवा कला
(B) उस्ता कला
(C) पच्चीकारी
(D) अरायश

58. बीकानेर के सिद्धहस्त कारीगरों द्वारा निर्मित एक अत्यधिक अलंकृत पारंपरिक वस्तु 'कुप्पी', ऐतिहासिक रूप से किसके लिए उपयोग की जाती है?
(A) मूल्यवान मसालों को रखने के लिए नक्काशीदार लकड़ी का डिब्बा
(B) तेल या इत्र रखने के लिए प्रयुक्त ऊंट की खाल से बनी बोतल/पात्र
(C) मंदिर के धार्मिक अनुष्ठानों में प्रयुक्त पीतल की थाली
(D) ताजे पान रखने के लिए कपड़े की सजावटी थैली

59. स्वर्गीय उस्ताद हिसामुद्दीन उस्ता को किस विशिष्ट राजस्थानी शिल्प में उत्कृष्ट महारत के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया था?
(A) ऊंट के चमड़े की उस्ता कला
(B) शेखावाटी फ्रेस्को चित्रकारी
(C) हाथीदांत पर लघु चित्रकारी
(D) ब्लू पॉटरी ग्लेजिंग

60. लोहे या स्टील की सतह पर सोने या चांदी के बारीक तारों की जड़ाई करने की परिष्कृत धातु शिल्प तकनीक, जिसका उपयोग ऐतिहासिक रूप से राजस्थान में तलवार की मूठों और ढालों को सजाने के लिए किया जाता था, किस नाम से जानी जाती है?
(A) तारकशी
(B) बिदरी
(C) कोफ्तगिरी
(D) मीनाकारी

61. राजस्थान के कौन से दो जिले ऐतिहासिक रूप से प्रामाणिक कोफ्तगिरी धातु शिल्प के निर्माण के लिए सबसे प्रमुख केंद्र हैं?
(A) जोधपुर और बीकानेर
(B) उदयपुर और राजसमंद
(C) कोटा और बूंदी
(D) जयपुर और अलवर

62. मारवाड़ का पारंपरिक 'बादला' एक अत्यंत उपयोगी शिल्प वस्तु है। निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 'बादला' का सटीक वर्णन करता है?
(A) मरुस्थलीय चरवाहों द्वारा पहनी जाने वाली ऊनी शॉल।
(B) ऊंट की सवारी के लिए चमड़े का सजावटी जीन (सैडल)।
(C) जस्ते (जिंक) से बना कपड़े से ढका पात्र जो पानी को ठंडा रखने के लिए उपयोग होता है।
(D) चांदी की जड़ाई वाली पीतल की सजावटी ढाल।

63. 1961 में स्थापित राजस्थान राज्य की कौन सी एजेंसी मुख्य रूप से अपने 'राजस्थली' एम्पोरियम नेटवर्क के माध्यम से स्वदेशी हस्तशिल्प के प्रचार, विकास और विपणन के लिए उत्तरदायी है?
(A) रीको
(B) राजसिको (राजस्थान लघु उद्योग निगम)
(C) आरएफसी (राजस्थान वित्त निगम)
(D) रुपायन

64. कारीगरों को व्यवस्थित बढ़ावा देने और हस्तशिल्प निर्यात को सुव्यवस्थित करने के लिए राजस्थान सरकार ने किस वर्ष अपनी पहली 'राजस्थान हस्तशिल्प नीति' जारी की?
(A) 2010
(B) 2015
(C) 2019
(D) 2022

65. स्थानीय कलाओं को बढ़ावा देने की सरकारी पहलों के तहत 'शिल्प ग्राम' स्थापित किए गए हैं। शिल्प ग्राम का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) ग्रामीण परिवेश में आने वाले पर्यटकों को क्षेत्रीय हस्तशिल्प कलाओं का सीधा प्रदर्शन करना।
(B) आधुनिक वस्त्रों के स्वचालित विनिर्माण के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र के रूप में कार्य करना।
(C) शहरी युवाओं को डिजिटल ग्राफिक डिजाइन और 3D प्रिंटिंग का प्रशिक्षण देना।
(D) प्राचीन लघु चित्रों को वैश्विक संग्रहालयों को बेचने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय नीलामी केंद्र के रूप में कार्य करना।

66. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : मोलेला गांव के टेराकोटा कारीगर अपनी प्रसिद्ध मिट्टी की पट्टिकाएं (मूर्तियां) बनाने के लिए मशीनीकृत सांचों का उपयोग करते हैं।
कारण (R) : मोलेला टेराकोटा के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मिट्टी मुख्य रूप से बनास नदी के तट से ली जाती है और पकने के दौरान दरारों को रोकने के लिए इसमें गधे की लीद/गोबर मिलाया जाता है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

67. राजस्थान का कौन सा जटिल आभूषण कला रूप, जो रंगीन बेल्जियम कांच पर शुद्ध 23-कैरेट सोने के वर्क की नक्काशी द्वारा पहचाना जाता है, भौगोलिक संकेत (जीआई टैग) प्राप्त है?
(A) थेवा कला
(B) कुंदन
(C) मीनाकारी
(D) जड़ाऊ

68. थेवा कला के गुप्त शिल्प कौशल रहस्य ऐतिहासिक रूप से राजस्थान के किस जिले के राजसोनी परिवार द्वारा संरक्षित रखे गए हैं?
(A) बीकानेर
(B) राजसमंद
(C) झालावाड़
(D) प्रतापगढ़

69. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (प्रिंट/कपड़ा)
P. अजरख प्रिंट
Q. दाबू प्रिंट
R. लहरिया
S. गोटा पत्ती
सूची II : (केंद्र)
1. अकोला
2. बाड़मेर
3. खंडेला
4. जयपुर
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

70. अजरख और मलीर दोनों ब्लॉक प्रिंट बाड़मेर क्षेत्र के प्रसिद्ध हस्तशिल्प हैं। जहाँ अजरख में मुख्य रूप से नील (इंडिगो) नीले और लाल रंग का उपयोग होता है, वहीं मलीर प्रिंट की मुख्य पृष्ठभूमि का रंग कौन सा होता है?
(A) चमकीला पीला
(B) शुद्ध सफेद
(C) गहरा भूरा या काला (कत्थई)
(D) हल्का हरा

71. कपड़े पर गोटे (धातु की पट्टी) को मोड़कर और सिलकर फूल-पत्ती या ज्यामितीय आकृतियां बनाने की कला, जो मुख्य रूप से खंडेला में केंद्रित है, किस नाम से जानी जाती है?
(A) जरदोजी
(B) मुकेश
(C) कशीदा
(D) गोटा पत्ती

72. राजस्थानी कलाओं के शाही संरक्षकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. महाराजा रामसिंह द्वितीय ने जयपुर में 'मदरसा-ए-हुनरी' (अब राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट) की स्थापना की।
II. महाराजा मानसिंह प्रथम लाहौर से मीनाकारी के कारीगरों को जयपुर लाए।
III. महाराणा जगत सिंह प्रथम ने मेवाड़ में 'चितेरों की ओवरी' नामक एक समर्पित चित्रशाला स्थापित की।
IV. महाराजा उम्मेद सिंह अपने फारसी चरण के दौरान बीकानेर चित्रकला शैली के प्रमुख संरक्षक थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

NODIA

73. वर्तमान पंजीकरण के आधार पर 'राजस्थानी कला रूप - जीआई (GI) टैग स्थिति' का कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग - जीआई टैग प्राप्त
(B) शेखावाटी फ्रेस्को पेंटिंग - जीआई टैग प्राप्त
(C) बीकानेरी भुजिया - जीआई टैग प्राप्त
(D) मकराना मार्बल - जीआई टैग प्राप्त

74. जबकि मेवाड़ शैली में धार्मिक और पौराणिक ग्रंथों का बहुतायत से चित्रण हुआ, किशनगढ़ शैली मुख्य रूप से किस मुख्य विषय-वस्तु द्वारा परिभाषित की गई थी?
(A) मराठा सेनाओं के खिलाफ सैन्य अभियानों का विस्तृत ऐतिहासिक चित्रण
(B) राधा और कृष्ण पर केंद्रित रहस्यमयी और श्रृंगारिक भक्ति
(C) राजप्रासाद वास्तुकला और नगर नियोजन का विस्तृत विवरण
(D) दैनिक ग्रामीण जीवन, कृषि और पारंपरिक ग्रामीण उत्सवों का चित्रण

75. कौन सी चित्रकला शैली अपने विस्तृत आदमकद चित्रों, शबीह (व्यक्तिचित्र) और दरबार के दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है, जो उत्तर-मुगल दरबार से ली गई दस्तावेजी शैली को दर्शाती है?
(A) जयपुर शैली
(B) बूंदी शैली
(C) नाथद्वारा शैली
(D) मेवाड़ शैली

76. 'मूमल' का प्रसिद्ध श्रृंगारिक लोक चित्र किस विशिष्ट राजस्थानी चित्रकला उप-शैली का प्रमुख विषय है?
(A) जोधपुर शैली
(B) नागौर शैली
(C) जैसलमेर शैली

(D) बीकानेर शैली

77. राजस्थान चित्रकला की कौन सी उप-शैली गणिकाओं के चित्रण, योगासनों के व्यापक प्रयोग और हाथीदांत की पट्टियों पर की गई चित्रकारी के लिए जानी जाती है?
(A) कोटा शैली
(B) किशनगढ़ शैली
(C) मेवाड़ शैली
(D) अलवर शैली

78. राजस्थान की ग्रामीण हस्तशिल्प परंपरा में 'कोठे' या 'सोहारी' की विशिष्ट उपयोगिता क्या है?
(A) पंचायत की बैठकों में बिछाई जाने वाली ऊनी दरियां
(B) कुओं से पानी निकालने के लिए प्रयुक्त चमड़े के थैले (चड़स)
(C) अनाज भंडारण के लिए ग्रामीण घरों में बनाई गई मिट्टी की चित्रित कोठियां/संरचनाएं
(D) महिलाओं द्वारा पैरों में पहने जाने वाले चांदी के भारी आभूषण

79. जयपुर का मनिहार समुदाय पारंपरिक रूप से मुख्य रूप से किस विशिष्ट हस्तशिल्प में संलग्न है?
(A) काले संगमरमर से धार्मिक मूर्तियों का निर्माण
(B) लाख की सुंदर चूड़ियां और आभूषण बनाना
(C) कोटा डोरिया साड़ियों की बुनाई
(D) धारदार तलवारें और कटार बनाना

80. कपड़े के आधार पर कांच/दर्पण के छोटे ज्यामितीय टुकड़ों को चिपकाकर सजावटी वस्तुएं बनाने की कला, जो जैसलमेर और बाड़मेर में व्यापक रूप से प्रचलित है, किस नाम से जानी जाती है?
(A) गोटा पत्ती
(B) बंधेज
(C) जरदोजी
(D) एप्लिक और कांच कार्य (मिरर वर्क)

81. पक्षियों के जीवंत और उत्कृष्ट चित्रण के लिए राजस्थान में किस प्रसिद्ध चित्रकार को 'पक्षियों का चित्रकार' कहा जाता है?
(A) देवकीनंदन शर्मा
(B) रामगोपाल विजयवर्गीय
(C) भवानी दास
(D) गोवर्धन लाल जोशी

82. बीकानेर और जोधपुर लघु चित्रकला शैलियों के बीच प्राथमिक अंतर निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) बीकानेर शैली केवल सूती कैनवास पर बनाई गई, जबकि जोधपुर शैली ताड़पत्रों पर।
(B) बीकानेर में मुगल प्रभाव नहीं था, जबकि जोधपुर में पूरी तरह से मुगल प्रभाव था।
(C) बीकानेर में बारीक रेखाओं और कोमल फारसी रंगों का उपयोग होता है, जबकि जोधपुर में सुगठित आकृतियां और चटकीले मरुस्थलीय रंग पाए जाते हैं।
(D) बीकानेर केवल ढोला-मारु पर केंद्रित है, जबकि जोधपुर केवल रागमाला पर।

83. हस्तशिल्प क्षेत्र में असाधारण कौशल और योगदान के लिए सिद्धहस्त कारीगरों को सम्मानित करने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च राज्य स्तरीय पुरस्कार किस नाम से जाना जाता है?
(A) राज्य स्तरीय हस्तशिल्प पुरस्कार (स्टेट मास्टर क्राफ्टपर्सन अवॉर्ड)
(B) राजस्थान रत्न पुरस्कार
(C) शिल्प गुरु पुरस्कार
(D) महाराणा प्रताप पुरस्कार

84. राजस्थान के हस्तशिल्प परिदृश्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कोटा डोरिया सूती और रेशमी धागों के मिश्रण से बुना जाने वाला एक विशेष हथकरघा कपड़ा है, जिसमें चौकोर (खाट) पैटर्न बनता है।
II. जैसलमेर का पोकरण लाल और सफेद रंग में चित्रित ज्यामितीय पैटर्न वाली टेराकोटा पॉटरी शैली के लिए प्रसिद्ध है।
III. लकड़ी पर चांदी के तार की जटिल जड़ाई का काम (तारकशी) मुख्य रूप से नाथद्वारा शहर में किया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

85. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (चित्रकार)
P. साहिबदीन
Q. निहालचंद
R. अली रज़ा
S. दालूराम
सूची II : (शैली)
1. बीकानेर
2. मेवाड़
3. किशनगढ़
4. अलवर
(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

86. देलवाड़ा में चित्रित प्रसिद्ध 'सुपासनाह चरियम' (1423 ई.) एक प्रारंभिक सचित्र ग्रंथ है जो किस चित्रकला शैली के संक्रमण काल को दर्शाता है?
(A) मारवाड़ शैली
(B) ढूंढाड़ शैली

Click Here to Buy book on Flipkart

हस्तशिल्प कलाओं का संरक्षण करना, नए शिल्प क्लस्टर विकसित करना तथा हर वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर हस्तशिल्प सप्ताह व प्रदर्शनियों का आयोजन करके बाजार उपलब्ध कराना है।

65. (A) ग्रामीण परिवेश में आने वाले पर्यटकों को क्षेत्रीय हस्तशिल्प कलाओं का सीधा प्रदर्शन करना।
राजस्थान में स्थापित 'शिल्प ग्राम' (जैसे उदयपुर का हवाला शिल्पग्राम) का प्राथमिक उद्देश्य पारंपरिक हस्तशिल्प कलाओं, लोक संस्कृति और ग्रामीण जीवनशैली को जीवंत रूप में प्रदर्शित करना है। यहाँ देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को कारीगरों द्वारा हस्तशिल्प वस्तुओं के निर्माण की प्रत्यक्ष प्रक्रिया देखने का अवसर मिलता है तथा कारीगरों को अपने उत्पादों को सीधे ग्राहकों को बेचने हेतु एक स्थाई मंच प्राप्त होता है।

66. (D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
राजसमंद जिले के मोलेला गांव के टेराकोटा कारीगर अपनी प्रसिद्ध मिट्टी की धार्मिक पट्टिकाएं और मूर्तियां पूरी तरह से अपने हाथों से बनाते हैं, वे किसी मशीनी सांचे का उपयोग नहीं करते, अतः अभिकथन गलत है। हालांकि, इस कला के लिए बनास नदी के तट की मिट्टी का प्रयोग होता है और पकाने पर दरारें रोकने के लिए उसमें गधे की लीद मिलाई जाती है, इसलिए कारण बिल्कुल सही है।

67. (A) थेवा कला
'थेवा कला' राजस्थान का एक अत्यंत विशिष्ट और दुर्लभ आभूषण शिल्प रूप है। इस कला में विशेष रूप से रंगीन बेल्जियम कांच के आधार पर शुद्ध 23-कैरेट सोने के अत्यंत बारीक वर्क को तराशकर जटिल चित्रांकन किया जाता है। इस अनूठी सजावटी कलात्मकता और भौगोलिक प्रामाणिकता के कारण प्रतापगढ़ की थेवा कला को भारत सरकार द्वारा आधिकारिक भौगोलिक संकेत (जीआई टैग) प्रदान किया गया है।

68. (D) प्रतापगढ़
थेवा कला का केंद्र राजस्थान का प्रतापगढ़ जिला है। इस कला के निर्माण का गुप्त शिल्प कौशल ऐतिहासिक रूप से केवल प्रतापगढ़ के 'राजसोनी' परिवार तक ही सीमित रहा है। इस परिवार के पुरुष सदस्य अपनी बेटियों को भी यह विद्या नहीं सिखाते ताकि इसका रहस्य बाहर न जाए। इस गुप्त पारंपरिक विधि से वे रंगीन कांच पर सोने के सुंदर दृश्यों की नक्काशी करते हैं।

69. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
अजरख प्रिंट मुख्य रूप से बाड़मेर की प्रसिद्ध हस्तशिल्प कला है। दाबू प्रिंट का प्रमुख केंद्र चित्तौड़गढ़ का अकोला गांव माना जाता है। लहरिया ओढ़नी और कपड़ों के निर्माण के लिए जयपुर पूरे भारत में प्रसिद्ध है। कपड़े पर धात्विक पट्टी मोड़ने वाली गोटा पत्ती कला का मुख्य केंद्र सीकर जिले का खंडेला कस्बा है। अतः यह सुमेल पूरी तरह सही और सटीक है।

70. (C) गहरा भूरा या काला (कत्थई)
बाड़मेर की प्रसिद्ध हस्त ब्लॉक छपाई शैली में 'अजरख' और 'मलीर' दोनों शामिल हैं। जहाँ अजरख प्रिंट में मुख्यतः नीले और लाल रंगों का प्रयोग ज्यामितीय पैटर्न में होता है, वहीं मलीर प्रिंट अपनी विशिष्ट पृष्ठभूमि के लिए पहचाना जाता है। मलीर प्रिंट में कपड़े की मुख्य पृष्ठभूमि का रंग कत्थई (गहरा भूरा या काला) रखा जाता है जिस पर काले और लाल रंग के बूटे छापे जाते हैं।

71. (D) गोटा पत्ती
'गोटा पत्ती' राजस्थान की एक पारंपरिक वस्त्र सजावट कला है, जिसका मुख्य केंद्र सीकर जिले का खंडेला कस्बा है। इस कला में सोने या चांदी के धात्विक गोटे (लेस) को मोड़कर तथा काटकर पत्तियों, फूलों या ज्यामितीय आकृतियों का रूप दिया जाता है और फिर उन्हें कपड़ों पर टंका जाता है। यह काम राजस्थानी पोशाकों, साड़ियों और ओढ़नियों की सुंदरता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होता है।

72. (A) केवल I, II और III
जयपुर में महाराजा रामसिंह द्वितीय ने 'मदरसा-ए-हुनरी' की स्थापना की, राजा मानसिंह प्रथम लाहौर से मीनाकारी लाए तथा मेवाड़ में महाराणा जगत सिंह प्रथम ने 'चितेरों की ओवरी' बनवाई, ये तीनों कथन सत्य हैं। चौथे कथन में महाराजा उम्मेद सिंह का फारसी चरण बीकानेर से जोड़ना गलत है, क्योंकि बीकानेर चित्रकला में फारसी-मुगल प्रभाव अनूप सिंह के समय बढ़ा था, अतः चौथा कथन असत्य है।

73. (B) शेखावाटी फ्रेस्को पेंटिंग - जीआई टैग प्राप्त
राजस्थान के कई प्रसिद्ध उत्पादों को भौगोलिक संकेत (जीआई टैग) मिल चुका है, जिनमें सांगानेरी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग, बीकानेरी भुजिया और मकराना मार्बल शामिल हैं। परंतु शेखावाटी क्षेत्र के प्रसिद्ध फ्रेस्को भित्ति चित्रों (शेखावाटी फ्रेस्को पेंटिंग) को वर्तमान तक आधिकारिक जीआई टैग प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए यह युग्म गलत सुमेलित है, जबकि अन्य तीनों विकल्प जीआई टैग प्राप्त प्रामाणिक उत्पाद हैं।

NODIA

74. (B) राधा और कृष्ण पर केंद्रित रहस्यमयी और श्रृंगारिक भक्ति
जबकि मेवाड़ शैली में रामायण, भागवत पुराण जैसे धार्मिक ग्रंथों का विस्तार से चित्रांकन हुआ, किशनगढ़ चित्रकला शैली की मुख्य पहचान राधा और कृष्ण के रहस्यमयी, प्रेमपूर्ण तथा श्रृंगारिक भक्ति दृश्यों से जुड़ी है। राजा सावंत सिंह (नागरीदास) के समय में यहाँ के लघु चित्रों में कृष्ण-राधा के अलौकिक प्रेम, वृंदावन के वनों और झील के सुंदर दृश्यों को मुख्य विषय बनाकर उकेरा गया था।

75. (A) जयपुर शैली
जयपुर चित्रकला शैली अपने बड़े आकार के आदमकद व्यक्तिचित्रों (लाइफ-साइज पोर्ट्रेट्स), शबीह और भव्य दरबारी दृश्यों के चित्रांकन के लिए विख्यात है। सवाई ईश्वर सिंह के समय प्रसिद्ध चित्रकार साहिब राम ने आदमकद चित्रों की परंपरा शुरु की थी। इस शैली पर उत्तर-मुगल दरबार का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है, जिसमें कपड़ों के पैटर्न, आभूषणों और

98. पारंपरिक ग्रामीण कारीगरों और आधुनिक वैश्विक ई-कॉमर्स बाजारों के बीच अंतर को पाटने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित किस संस्था का मुख्य कार्य 'राजस्थली' के माध्यम से हस्तशिल्प उत्पादों का विपणन करना है?
(A) राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
(B) राजफैड
(C) राजस्थान लघु उद्योग निगम (राजसिको)
(D) आरएसआरटीसी

99. पीतल की सुंदर जड़ाई वाले जटिल नक्काशीदार लकड़ी के फर्नीचर मुख्य रूप से कहाँ का प्रसिद्ध शिल्प हैं?
(A) तारानगर और जयपुर
(B) बाड़मेर
(C) नाथद्वारा
(D) जैसलमेर

NODIA

100. राजस्थानी लघु चित्रकला शैलियों के समग्र विकास का मूल्यांकन करते हुए, किस विशिष्ट ऐतिहासिक घटना को दिल्ली से क्षेत्रीय राजपूत दरबारों में सिद्धहस्त कलाकारों के व्यापक प्रवास का उत्प्रेरक माना जाता है, जिसने बीकानेर और जयपुर को गहराई से प्रभावित किया?
(A) सिकंदर के नेतृत्व में उत्तर-पश्चिम भारत पर प्राचीन सैन्य आक्रमण
(B) मध्यकालीन दिल्ली सल्तनत के शासकों की औपचारिक स्थापना और विस्तार
(C) 1857 में पूरे उत्तर भारत में सिपाही विद्रोह का व्यापक प्रसार
(D) औरंगजेब की कट्टरपंथी नीतियों के कारण मुगल कला संरक्षण का ह्रास

के पांच कुशल सिख कारीगरों को जयपुर लेकर आए थे। उनके संरक्षण में ही जयपुर में मीनाकारी उद्योग की नींव पड़ी, जिसके बाद जयपुर विश्व में सोने और चांदी के आभूषणों पर मीनाकारी का सबसे बड़ा केंद्र बन गया।

43. (B) केवल II
मीनाकारी में धातु की नक्काशी पर कांच का मीना पिघलाकर जम जाता है तथा महाराजा मानसिंह इसे लाहौर से जयपुर लाए थे, ये दोनों कथन पूरी तरह सत्य हैं। परंतु कुंदन आभूषणों में बिना तराशे रत्नों और हीरों को सोने के खांचों में कसने के लिए शुद्ध 24-कैरेट सोने के पतले वर्क (कुंदन) का उपयोग किया जाता है, न कि चांदी के वर्क का। इसलिए केवल दूसरा कथन गलत है।

44. (C) शुद्ध 24-कैरेट सोने का वर्क (कुंदन)
पारंपरिक कुंदन आभूषणों के निर्माण में बिना तराशे गए कीमती पत्थरों और माणिक-हीरों को आभूषण के सोने के ढांचे में कसकर स्थापित करने के लिए शुद्ध 24-कैरेट सोने की पतली पत्तियों (वर्क) का प्रयोग किया जाता है। अत्यधिक रिफाइंड और नरम होने के कारण यह शुद्ध सोना पत्थरों के किनारों पर दबकर उन्हें मजबूती से पकड़ लेता है, जिससे आभूषणों को कुंदन आभूषण का नाम दिया गया है।

45. (D) कुदरत सिंह
मीनाकारी कला के क्षेत्र में उनके इस बहुमूल्य जीवन पर्यंत योगदान और उत्कृष्ट शिल्प कौशल को सम्मानित करने के लिए भारत सरकार द्वारा उन्हें देश के प्रतिष्ठित पुरस्कार 'पद्मश्री' से अलंकृत किया गया था। कुदरत सिंह जयपुर की सुप्रसिद्ध मीनाकारी कला के महान शिल्पकार थे। उन्होंने अपने पुश्तैनी मीनाकारी शिल्प में असाधारण कुशलता प्रदर्शित करते हुए कई नए डिज़ाइनों का आविष्कार किया, जिससे यह कला विश्वभर में प्रसिद्ध हुई।

46. (C) पच्चीकारी (पिएट्रा ड्यूरा)
तराशे गए संगमरमर या अन्य पत्थरों की सतह पर खांचे बनाकर उनमें अकीक, लाजवर्द, फिरोज़ा और मूंगा जैसे कीमती एवं अर्ध-मूल्यवान पत्थरों के टुकड़ों को जड़ने की कला को 'पच्चीकारी' अथवा 'पिएट्रा ड्यूरा' कहा जाता है। राजस्थान के जयपुर और आगरा के निकटवर्ती क्षेत्रों में यह कला अत्यधिक विकसित हुई। इस कला का उपयोग राजप्रासादों, भवनों और सजावटी संगमरमर वस्तुओं को अलंकृत करने में किया जाता है।

47. (B) भैंसलाना (जयपुर)
राजस्थान में मकराना स्थान अपने सफेद संगमरमर के लिए जाना जाता है, जबकि जयपुर जिले का 'भैंसलाना' क्षेत्र काले संगमरमर के खनन और नक्काशी का प्रमुख केंद्र है। भैंसलाना में खदानों से प्राप्त होने वाले ठोस काले संगमरमर का उपयोग स्थानीय मूर्तिकारों द्वारा भगवान शिव तथा अन्य धार्मिक देव प्रतिमाओं और भव्य सजावटी कलाकृतियों के निर्माण के लिए पारंपरिक रूप से किया जाता है।

48. (D) पत्थर के मंदिरों की जटिल वास्तुकला और मूर्तियों की नक्काशी के लिए
इस समुदाय के पारंपरिक शिल्पकार प्राचीन काल से ही पत्थरों के भव्य मंदिरों के निर्माण, विशाल शिखरों की रचना तथा देवी-देवताओं की अत्यंत बारीक और शास्त्र सम्मत मूर्तियों की नक्काशी के लिए पूरे भारत में विख्यात रहे हैं। राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में निवास करने वाला 'सोमपुरा' समाज पारंपरिक रूप से वास्तुकला और पाषाण नक्काशी में अद्वितीय महारत एवं कुशलता रखता है।

49. (A) पारंपरिक लकड़ी के खिलौने और कावड़
चित्तौड़गढ़ जिले का 'बस्सी' गांव राजस्थानी काष्ठ कला (लकड़ी के हस्तशिल्प) का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है। यह गांव लकड़ी के पारंपरिक रंगीन खिलौने, गणगौर की मूर्तियाँ, बेवाण और विशेष रूप से कपाटों वाली चित्रित लकड़ी की 'कावड़' बनाने के लिए प्रसिद्ध है। बस्सी के काष्ठ शिल्पकार अपनी नक्काशी और प्राकृतिक रंगों से लकड़ी की वस्तुओं को अलंकृत करने के लिए जाने जाते हैं।

50. (C) कपाटों (किवाड़ों) वाला चित्रित लकड़ी का चल मंदिर जिसका उपयोग कथावाचन में होता है
'कावड़' राजस्थानी काष्ठ कला की एक अद्भुत और अनूठी देन है। यह कई कपाटों (किवाड़ों) वाला लकड़ी का एक छोटा सा चित्रित मंदिर होता है, जिसे आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है। कावड़िया भाट (कथावाचक) गाँव-गाँव जाकर इसके किवाड़ों को एक-एक करके खोलते हैं और उन पर चित्रित रामायण, महाभारत तथा लोक देवताओं की पौराणिक कथाओं का वर्णन बोलकर सुनाते हैं।

51. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
नाथद्वारा लकड़ी में चांदी के तार की जड़ाई (तारकशी) के लिए प्रसिद्ध है। प्रतापगढ़ कांच पर सोने की बारीक नक्काशी वाली थेवा कला का प्रमुख केंद्र है। बीकानेर ऊंट की खाल पर कुप्पी तथा स्वर्ण नक्काशी (उस्ता कला) के लिए जाना जाता है। चित्तौड़गढ़ का बस्सी गांव नक्काशीदार लकड़ी की कावड़ बनाने का मूल केंद्र है। अतः यह सुमेल पूरी तरह सही है।

52. (D) इनमें जरी की कढ़ाई होती है और इनमें दाएं-बाएं पैर का कोई अंतर नहीं होता है।
'मोजड़ी' राजस्थान के पारंपरिक चमड़े के जूतों को कहा जाता है जो अपनी विशिष्ट बनावट के लिए जाने जाते हैं। ये जूते पूरी तरह हाथ से सिले जाते हैं और इन पर रेशम या जरी के धागों से बारीक कढ़ाई की जाती है। मोजड़ी की सबसे बड़ी संरचनात्मक विशेषता यह होती है कि इसमें शुरुआत में दाएं और बाएं पैर का कोई भेद नहीं होता, पहनने पर यह स्वतः पैर का आकार ले लेती है।

53. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
नई खरीदी गई पारंपरिक राजस्थानी मोजड़ी में दाएं और बाएं पैर का कोई पूर्व-निर्धारित भेद नहीं होता है। इसका कारण यह है कि कारीगर मोजड़ी के ऊपरी हिस्से (अपर) और तले के लिए

Downloaded from www.pdf.tube

जैसे घाघरा, चोली और पारदर्शी ओढ़नी का प्रयोग चित्रों में अत्यधिक निखार लाता है, जो इस शैली की मुख्य पहचान है।

10. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
बीकानेर चित्रकला शैली पर मुगल और फारसी प्रभाव अत्यधिक गहराई से दिखाई देता है। इसका मुख्य कारण यह था कि बीकानेर के शासकों के मुगल दरबार से घनिष्ठ संबंध थे। जब दिल्ली और आगरा में मुगल कला का ह्रास हुआ, तब उस्ता अली रज़ा और रुकनुद्दीन जैसे प्रसिद्ध मुगल चित्रकार बीकानेर चले आए। यहाँ के महाराजाओं ने उन्हें पूर्ण संरक्षण प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप बीकानेर शैली में मुगल बारीकी और फारसी रंगों का समावेश हुआ।

11. (A) जैन धार्मिक चित्र और भित्ति चित्र (फ्रेस्को) बनाने के लिए
बीकानेर का 'मथेरण' समुदाय पारंपरिक रूप से धार्मिक कला और भित्ति चित्रों के निर्माण के लिए जाना जाता है। यह जैन समुदाय से जुड़े चित्रकारों का समूह है जो धार्मिक ग्रंथों, जैन तीर्थंकरों के चित्रों तथा मंदिरों व हवेलियों की दीवारों पर अरायश तकनीक से फ्रेस्को भित्ति चित्र बनाने में पारंगत रहा है। इनके द्वारा बनाए गए चित्रों में पारंपरिक राजस्थानी तथा बीकानेरी कला की बारीकियों का बहुत ही सुंदर संतुलन देखने को मिलता है।

12. (A) केवल I, II और III
किशनगढ़ चित्रकला शैली राजा सावंत सिंह के काल में चरम पर पहुँची, जिन्होंने 'नागरीदास' नाम से भक्ति रस की रचनाएँ कीं। इस शैली में चेहरे की विशेषता के रूप में लंबे चेहरे, नुकीली नाक और धनुषाकार आंखें प्रमुख हैं। प्रसिद्ध चित्रकार निहालचंद ने 'बणी-ठणी' का चित्र इसी शैली में बनाया था। हालांकि यह शैली धर्मनिरपेक्ष न होकर मुख्य रूप से कृष्ण-राधा की वैष्णव भक्ति से प्रेरित है, इसलिए चौथा कथन अनुचित है।

13. (D) किशनगढ़ की बणी-ठणी
किशनगढ़ शैली के विश्व प्रसिद्ध चित्र 'बणी-ठणी' को भारत की 'मोनालिसा' कहा जाता है। इस चित्र की रचना राजा सावंत सिंह के समय में प्रसिद्ध चित्रकार निहालचंद ने की थी। इस कलाकृति में सौंदर्य, लज्जा और भक्ति भावना का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इस महान चित्रकला कृति के सम्मान में भारत सरकार के डाक विभाग ने 5 मई 1973 को एक विशेष स्मारक डाक टिकट जारी किया था।

14. (C) कमल के फूलों और तैरती नौकाओं से युक्त विशाल झीलें
किशनगढ़ शैली के लघु चित्रों की पृष्ठभूमि में प्राकृतिक सौंदर्य का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया गया है। इन चित्रों में प्रायः विशाल शांत झीलें, जिनमें खिले हुए कमल के फूल, तैरती हुई नौकाएं, क्रीड़ा करते हंस और दूर दिखाई देते संगमरमर के महल चित्रित किए जाते हैं। यह पृष्ठभूमि चित्रों में एक रहस्यमयी, शांत और अलौकिक वातावरण का निर्माण करती है, जो राधा-कृष्ण की दिव्य प्रेम लीला को उजागर करती है।

15. (B) प्राकृतिक वनस्पति, पशु-पक्षी, मानसून के बादल और मूसलाधार बारिश
बूंदी चित्रकला शैली प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत और सजीव चित्रण के लिए जानी जाती है। इस शैली में सघन वनों, हरे-भरे वृक्षों, विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षियों, हाथियों की लड़ाई तथा बारिश से भरे काले बादलों का चित्रांकन अत्यंत जीवंतता से किया गया है। कला इतिहासकारों के अनुसार प्रकृति तथा ऋतुओं के ऐसे यथार्थवादी और मोहक दृश्य भारतीय लघु चित्रकला की किसी अन्य शैली में इतने स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते हैं।

16. (A) केवल I और II
हाड़ौती की बूंदी शैली प्रकृति, पशु-पक्षियों और प्राकृतिक दृश्यों के बारीक चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। इसी की उप-शैली कोटा में शिकार के दृश्यों को प्राथमिकता दी गई, जिसमें राजाओं और रानियों को घने जंगलों में जंगली जानवरों का शिकार करते हुए चित्रित किया गया। दोनों ही शैलियों पर मुगल दरबार का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, इसलिए तीसरा कथन पूरी तरह असत्य सिद्ध होता है।

17. (A) कोटा शैली
चित्रकार रामलाल और दालूराम का संबंध ऐतिहासिक रूप से कोटा चित्रकला शैली से है। कोटा शैली हाड़ौती स्कूल की एक प्रमुख शाखा मानी जाती है जो अपने शिकार दृश्यों और सघन प्राकृतिक परिदृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रकारों ने दरबार के दृश्यों, राजसी शिकार अभियानों तथा बारहमासा एवं रागमाला श्रृंखलाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिससे कोटा शैली को एक विशिष्ट पहचान प्राप्त हुई।

18. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
किशनगढ़ शैली अपने लंबे शारीरिक नैन-नक्श और बणी-ठणी चित्र के लिए जानी जाती है। बूंदी शैली में हरी-भरी वनस्पति और मानसून का सुंदर चित्रण मिलता है। मारवाड़ शैली में मरुस्थलीय वातावरण तथा ढोला-मारु के दृश्य प्रमुख हैं। मेवाड़ शैली में साहिबदीन द्वारा चित्रित रागमाला श्रृंखला अत्यंत प्रसिद्ध है। इस प्रकार सभी शैलियों का उनकी अपनी विशिष्ट विशेषताओं से पूरी तरह सटीक मिलान प्रदर्शित होता है।

19. (A) शाहपुरा का जोशी वंश
फड़ चित्रकला कपड़े के लंबे कैनवास पर बनाई जाने वाली राजस्थान की एक पारंपरिक लोक कला है। इस कला के संरक्षण और निर्माण में भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा का 'जोशी परिवार' ऐतिहासिक रूप से अग्रणी रहा है। इस परिवार के कलाकारों ने पीढ़ियों से पाबूजी, देवनारायण जी तथा अन्य लोक देवताओं की जीवन गाथाओं को प्राकृतिक रंगों से चित्रित करके फड़ कला की परंपरा को जीवित रखा है।

20. (A) 1, 3, 2, 4
फड़ निर्माण में सर्वप्रथम सूती कपड़े पर गोंद और मांड लगाकर उसकी घोटाई की जाती है ताकि सतह चिकनी हो जाए। इसके पश्चात हल्के पीले रंग से कैनवास का रेखांकन और विभाजन

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) आनंद कुमारस्वामी
डॉ. आनंद कुमारस्वामी ने वर्ष 1916 में अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'राजपूत पेंटिंग' का प्रकाशन किया था। इस ग्रंथ में उन्होंने पहली बार राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला शैलियों का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित वर्गीकरण प्रस्तुत किया। उन्होंने राजस्थानी चित्रकला को मुगल कला से पूरी तरह स्वतंत्र माना तथा इसके पारंपरिक स्वरुप को स्थापित किया। उनके इस अध्ययन ने भारतीय कला इतिहास में राजस्थानी लघु चित्रकला को एक विशिष्ट स्थान और अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में योगदान दिया।

2. (C) मालवा शैली
राजस्थानी चित्रकला को भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर मुख्य रुप से चार प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया गया है। इनमें मेवाड़ शैली, मारवाड़ शैली, हाड़ौती शैली तथा ढूंढाड़ शैली शामिल हैं। मालवा शैली का मुख्य संबंध मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र से है, इसलिए इसे राजस्थान के चार मूल भौगोलिक वर्गों में सम्मिलित नहीं किया जाता है। प्रत्येक राजस्थानी शैली का अपना स्वतंत्र क्षेत्रीय प्रभाव, विषय-वस्तु और विशिष्ट रंग योजना मौजूद रहती है।

3. (A) मेवाड़ शैली का विकास पहाड़ी इलाकों में हुआ जिसमें घाटी के दृश्यों का चित्रण है, जबकि मारवाड़ शैली का विकास शुष्क पश्चिमी मरुस्थलीय मैदानों में हुआ।
मेवाड़ और मारवाड़ चित्रकला शैलियों के शुरुआती विकास में भौगोलिक परिवेश का अंतर मुख्य कारण रहा है। मेवाड़ शैली का विकास अरावली पर्वत श्रृंखला की हरी-भरी पहाड़ियों और घाटियों वाले क्षेत्र में हुआ, जिससे इसमें सघन प्राकृतिक वनस्पतियों का चित्रण मिलता है। इसके विपरीत मारवाड़ शैली का विकास पश्चिमी राजस्थान के शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में हुआ, जहाँ रेतीले टीलों, पीले रंगों और विशाल प्राकृतिक मैदानों का प्रभाव प्रमुखता से दिखाई देता है।

4. (D) I, II और III
मेवाड़ चित्रकला शैली को राजस्थान की सभी चित्रकला शैलियों की जननी और सबसे प्राचीन माना जाता है। महाराणा प्रताप के शासनकाल में चावंड राजधानी बनने पर चावंड उप-शैली का उदय हुआ, जहाँ 1605 में 'रागमाला' चित्रित की गई। इसके बाद 17वीं शताब्दी में महाराणा जगत सिंह प्रथम के समय साहिबदीन और मनोहर जैसे महान चित्रकारों ने 'रागमाला', 'रामायण' और 'भागवत पुराण' पर प्रसिद्ध चित्र बनाए। अतः ये तीनों ऐतिहासिक तथ्य पूरी तरह सत्य हैं।

5. (B) साहिबदीन
साहिबदीन 17वीं शताब्दी के मेवाड़ शैली के अत्यंत प्रसिद्ध चित्रकार थे। उन्होंने 1628 ईस्वी में उदयपुर में महाराणा जगत सिंह प्रथम के समय 'रागमाला' ग्रंथ का भव्य चित्रांकन किया था। उन्होंने 'भागवत पुराण', 'रसिकप्रिया' और 'रामायण' के लिए भी उत्कृष्ट लघु चित्र तैयार किए। उनकी कला में गहरे चटकीले रंगों, लाल और पीले रंगों के प्रयोग तथा सूक्ष्म रेखांकन का सुंदर समावेश देखने को मिलता है, जो मेवाड़ शैली का प्रतीक माना जाता है।

6. (C) ये श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे पृष्ठभूमि में लगाए जाने वाले कपड़े के पर्दे हैं, जिन पर कृष्ण के जीवन के प्रसंग चित्रित होते हैं।
नाथद्वारा चित्रकला उप-शैली मेवाड़ शैली की एक अत्यंत प्रसिद्ध शाखा है, जो अपनी 'पिछवाई' कला के लिए विश्वविख्यात है। पिछवाई वास्तव में कपड़े पर बनाई गई धार्मिक चित्रकारी होती है, जिसे नाथद्वारा के मंदिर में श्रीनाथजी की मूर्ति के ठीक पीछे पृष्ठभूमि के रूप में लगाया जाता है। इन कपड़ों के पर्दों पर भगवान श्री कृष्ण के बाल जीवन, रासलीला और विभिन्न धार्मिक त्यौहारों के सुंदर प्रसंगों का सजीव चित्रांकन किया जाता है।

7. (D) महाराजा मानसिंह
मारवाड़ (जोधपुर) चित्रकला शैली का स्वर्णकाल महाराजा मानसिंह (1803-1843 ईस्वी) का शासनकाल माना जाता है। वे नाथ संप्रदाय के प्रबल अनुयायी थे, इसलिए उनके समय में चित्रकला में नाथ पंथ से जुड़े ग्रंथों का व्यापक चित्रण हुआ। उनके शासन में 'शिव पुराण', 'दुर्गा चरित्र', 'नाथ चरित्र' और 'पंचतंत्र' जैसे महान ग्रंथों पर आधारित भव्य चित्रों का निर्माण किया गया, जिनमें मारवाड़ी वेशभूषा और उग्र रंगों का सुंदर प्रयोग हुआ।

8. (A) जोधपुर (मारवाड़) शैली
'ढोला-मारु' की प्रसिद्ध लोक प्रेम कथा जोधपुर (मारवाड़) चित्रकला शैली का सबसे प्रिय और बार-बार चित्रित किया जाने वाला विषय है। इस प्रेम आख्यान में राजकुमार ढोला और राजकुमारी मारवणी के अमर प्रेम को दर्शाया जाता है। मारवाड़ के चित्रकारों ने ऊंट पर सवार ढोला और मारु के चित्रों को पीले एवं लाल रंगों की पृष्ठभूमि में अत्यधिक सुंदरता के साथ उकेरा है, जो पश्चिमी राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा को पूरी तरह प्रदर्शित करता है।

9. (B) बादाम की आकृति जैसी आंखें, उन्नत नासिका और सुगठित शारीरिक विशेषताएं
मारवाड़ (जोधपुर) लघु चित्रकला शैली में नारियों के चित्रण की विशिष्ट शारीरिक विशेषताएं पाई जाती हैं। इनमें महिलाओं का चेहरा बादाम के आकार की सुंदर आंखों, लंबी तथा उन्नत नासिका, पतले होंठों और सुगठित शारीरिक बनावट से सुसज्जित होता है। इसके साथ ही मारवाड़ी वेशभूषा

Click Here to Buy book on Amazon

(1835-1880 ईस्वी) को जाता है। उन्होंने इस कला के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली और आगरा से कुशल कारीगरों को जयपुर में आमंत्रित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्थानीय चित्रकारों को इस अनूठी चीनी मिट्टी की बर्तन कला का प्रशिक्षण लेने हेतु दिल्ली भेजा, जिससे जयपुर इस कला का प्रमुख केंद्र बन गया।

32. (D) लोई (आटा) तैयार करना -> सांचे में ढालना -> चित्रकारी -> कांच चढ़ाना (ग्लेजिंग) और भट्टी में पकाना
जयपुर ब्लू पॉटरी के निर्माण में सबसे पहले क्वार्ट्ज़ चूर्ण, कांच और मुल्तानी मिट्टी मिलाकर लोई (आटा) बनाई जाती है। फिर इस मिश्रण को सांचे में ढालकर वांछित बर्तन का आकार दिया जाता है। सुखाने के पश्चात बर्तन की सतह पर ऑक्साइड रंगों से नीली चित्रकारी की जाती है। अंतिम चरण में उस पर पारदर्शी कांच की परत चढ़ाकर भट्टी में उच्च तापमान पर पकाया जाता है।

33. (A) कृपाल सिंह शेखावत
पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत को जयपुर की विलुप्त हो रही ब्लू पॉटरी कला का पुनरुद्धार करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने पारंपरिक नीले और हरे रंगों के अलावा लगभग 25 नए रंगों का आविष्कार करके इस कला में क्रांति ला दी। उनके इस नवाचार और अद्भुत शिल्प कौशल के कारण ही उन्हें 'ब्लू पॉटरी का जादूगर' कहा गया तथा भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया था।

34. (A) केवल I, II और III
राजस्थान में बंधेज कला के अंतर्गत 'मोठड़ा' तब बनता है जब बंधाई की रेखाएं एक-दूसरे को क्रॉस करती हैं। 'लहरिया' की तिरछी धारियां तीज त्यौहार पर विशेष रूप से पहनी जाती हैं और इस कला के कारीगर मुख्यतः नीलगर या रंगरेज समुदाय के होते हैं। 'एकडाली' बंधेज का एक सूक्ष्म बिंदु वाला पैटर्न होता है, न कि बड़ा ब्लॉक प्रिंट, इसलिए चौथा कथन पूरी तरह असत्य है।

35. (A) लाल रंग के केंद्रीय वृत्त/कमल वाली पीली ओढ़नी, जो संतान जन्म के बाद प्रसूता मां को दी जाती है।
'पीला' (जिसे पोमचा भी कहा जाता है) राजस्थान की वस्त्र परंपरा में सौभाग्य और मातृत्व का प्रतीक माना जाता है। यह एक विशेष प्रकार की पीली ओढ़नी होती है जिसके केंद्र में लाल रंग का बड़ा कमल या गोल वृत्त अंकित होता है। पुत्र या पुत्री के जन्म के अवसर पर नवजात शिशु की माता को उसके पीहर पक्ष द्वारा यह पोमचा उपहार स्वरूप भेंट करने का पारंपरिक रिवाज है।

36. (D) जयपुर
तरंगदार और रंग-बिरंगी धारियों वाला 'लहरिया' कपड़ा राजस्थान के जयपुर शहर का सर्वाधिक प्रसिद्ध है। जयपुर के रंगरेज और नीलगर कारीगर सूती और रेशमी कपड़ों पर बांधकर प्राकृतिक रंगों से अत्यंत सुंदर लहरिया तैयार करते हैं। श्रावण मास और तीज पर्व के अवसर पर राजस्थान में लहरिया ओढ़नी तथा साफा पहनने की प्राचीन समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा रही है, जिसकी मांग पूरे देश में बनी रहती है।

37. (B) सांगानेरी में पृष्ठभूमि हल्की (सफेद/ऑफ-व्हाइट) रखी जाती है, जबकि बगरू में दाबू (मिट्टी प्रतिरोध) के माध्यम से तैयार गहरे रंग की पृष्ठभूमि का उपयोग होता है।
सांगानेरी और बगरू ब्लॉक प्रिंटिंग में मुख्य तकनीकी अंतर उनकी पृष्ठभूमि के रंगों का है। सांगानेरी प्रिंट में पृष्ठभूमि को आमतौर पर सफेद, ऑफ-व्हाइट या बहुत हल्का रखा जाता है जिस पर बारीक बूटे छापे जाते हैं। इसके विपरीत बगरू प्रिंटिंग में दाबू (मिट्टी के लेप) तकनीक का प्रयोग करके काले, लाल और मटमैले जैसे गहरे रंगों की पृष्ठभूमि तैयार की जाती है जो इसकी पहचान है।

38. (C) छीपा समुदाय
राजस्थान में बगरू और सांगानेर की पारंपरिक हस्त ब्लॉक प्रिंटिंग कला ऐतिहासिक रूप से 'छीपा' समुदाय द्वारा संचालित की जाती है। छीपा समुदाय के कारीगर पीढ़ियों से लकड़ी के नक्काशीदार ठप्पों (ब्लॉक्स) और प्राकृतिक वनस्पति रंगों का प्रयोग करके सूती वस्त्रों पर अलौकिक छाप प्रिंटिंग का काम करते आए हैं। बगरू के छीपा कारीगरों द्वारा बनाई गई दाबू प्रिंट साड़ियों और चादरों की मांग विश्वभर में पाई जाती है।

39. (D) कपड़े की धुलाई/सफाई (हरियाण) -> हरड़ा चढ़ाना (पीला करना) -> ब्लॉक से छपाई -> प्राकृतिक रंगों से रंगाई
बगरू प्रिंटिंग की प्रक्रिया में सबसे पहले कच्चे सूती कपड़े की धुलाई (हरियाण) करके उसकी अशुद्धियाँ हटाई जाती हैं। इसके पश्चात कपड़े को हरड़ा के घोल में डुबोकर पीला किया जाता है ताकि रंग पक्के चढ़ें। तीसरे चरण में लकड़ी के ब्लॉक (ठप्पों) से कपड़े पर डिज़ाइन छापे जाते हैं। अंत में कपड़े को उबलते पानी और प्राकृतिक रंगों के घोल में पकाकर पक्की रंगाई की जाती है।

NODIA

40. (A) सांगानेर
जयपुर के निकट स्थित सांगानेर कस्बा बारीक 'कैलिको' प्रिंटिंग शैली के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली में शुद्ध सफेद या हल्के पृष्ठभूमि वाले सूती कपड़े पर लाल, काले और हरे रंगों में अत्यंत बारीक फूलों, पत्तियों तथा बूटियों का मुद्रण लकड़ी के ठप्पों से किया जाता है। सांगानेरी कैलिको प्रिंट अपने सूक्ष्म विवरणों, सोबर रंगों और धुलाई के बाद भी रंग न छूटने की विशेषता के लिए पहचाना जाता है।

41. (A) केवल I और II
दाबू प्रिंटिंग एक पारंपरिक प्रतिरोध (प्रतिबंधक) छपाई कला है जिसमें काली मिट्टी, चूने और गेहूं के बीधन की लेई बनाकर छपाई की जाती है। चित्तौड़गढ़ जिले का अकोला गांव इस दाबू कला का सबसे प्रमुख केंद्र माना जाता है। यह तकनीक मुख्य रूप से सूती कपड़ों पर प्राकृतिक नील और मजीठ रंगों से की जाती है, न कि रेशम पर संश्लेषित रंगों से, अतः तीसरा कथन गलत है।

42. (B) महाराजा मानसिंह प्रथम
मीनाकारी धातु की सतह पर सुंदर रंगीन कांच पिघलाकर सजाने की एक उत्कृष्ट कला है। आमेर (जयपुर) के राजा महाराजा मानसिंह प्रथम 16वीं शताब्दी के अंत में लाहौर से मीनाकारी

(C) मेवाड़ शैली
(D) हाड़ौती शैली

87. राजस्थानी भित्ति चित्रों के संदर्भ में, 'फ्रेस्को-सेको' तकनीक मौलिक रूप से 'फ्रेस्को-बुओनो' (अरायश) से भिन्न है क्योंकि:
(A) फ्रेस्को-सेको केवल तेल आधारित रंगों का उपयोग करता है, जबकि फ्रेस्को-बुओनो आधुनिक एक्रिलिक रंगों का।
(B) फ्रेस्को-सेको में दीवार को खुरचकर डिज़ाइन बनाए जाते हैं, जबकि फ्रेस्को-बुओनो में शीशे जड़े जाते हैं।
(C) फ्रेस्को-सेको का प्रयोग केवल भीतरी छतों पर होता है, जबकि फ्रेस्को-बुओनो का बाहरी आंगनों में।
(D) फ्रेस्को-सेको सूखे प्लास्टर पर चित्रित किया जाता है, जबकि फ्रेस्को-बुओनो गीले चूने के प्लास्टर पर बनाया जाता है।

88. अत्यधिक सूक्ष्म और नाजुक कलाकृतियां बनाने के लिए प्रसिद्ध चंदन की नक्काशी (चंदन काष्ठ शिल्प), मुख्य रूप से किस जिले के कारीगरों में केंद्रित है?
(A) चूरू और जयपुर
(B) जैसलमेर
(C) बांसवाड़ा
(D) सिरोही

89. 17वीं शताब्दी में लघु चित्रकला को संस्थागत रूप देने के लिए स्थापित 'चितेरों की ओवरी' (जिसे 'तस्वीराँ रो कारखानो' भी कहा जाता है) की स्थापना किसके द्वारा की गई थी?
(A) महाराणा राजसिंह
(B) महाराणा जगत सिंह प्रथम
(C) महाराणा कुंभा
(D) महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय

90. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता आमतौर पर ढूंढाड़ (जयपुर) चित्रकला शैली से संबंधित नहीं है?
(A) आदमकद शाही व्यक्तिचित्रों के लिए बड़े कैनवास का व्यापक उपयोग
(B) पृष्ठभूमि में यूरोपीय परिदृश्यों और विक्टोरियन वास्तुकला का चित्रण
(C) सजावटी हाशियों (बॉर्डर) में असली सोने और चांदी के वर्क का व्यापक प्रयोग
(D) औपचारिक दरबार के दृश्यों और शाही वस्त्रों में प्रत्यक्ष और गहरा मुगल शैलीगत प्रभाव

91. 'गीत गोविंद' श्रृंखला (लगभग 1629 ई.) का प्रसिद्ध चित्रण प्रारंभिक मेवाड़ शैली की एक महान कृति माना जाता है। इस श्रृंखला के मुख्य चित्रकार कौन थे?
(A) साहिबदीन
(B) मनोहर
(C) जगन्नाथ
(D) नासिरुद्दीन

92. नागौर चित्रकला उप-शैली अपने हल्के/बुझे हुए रंगों के प्रयोग और किसमें असाधारण यथार्थवाद के लिए जानी जाती है?
(A) समुद्री नौसेना युद्धों के गतिशील ऐतिहासिक चित्र
(B) प्राचीन स्थानीय जनजातीय देवी-देवताओं के अमूर्त ज्यामितीय निरूपण
(C) झुर्रियों वाली त्वचा और पारदर्शी वस्त्रों के साथ वृद्धावस्था को दर्शाने वाले यथार्थवादी व्यक्तिचित्र
(D) पौराणिक उड़ने वाले रथों और दिव्य वाहनों के दरबारी चित्र

93. पारंपरिक फड़ चित्रकला में, आंतरिक विवरण और अंतिम काले रंग की रूपरेखा जोड़ने से पहले आकृतियों का प्रारंभिक रेखांकन आमतौर पर किस रंग से खींचा जाता है?
(A) गहरा नीला
(B) चमकीला लाल
(C) शुद्ध सफेद
(D) हल्का पीला (कच्चा रंग)

94. सीकर जिले का 'पीपलूद' या 'खंडेला' कस्बा किस पारंपरिक राजस्थानी वस्त्र सज्जा के निर्माण का प्रमुख भौगोलिक केंद्र है?
(A) सूती कपड़े पर अजरख हाथ ब्लॉक प्रिंटिंग
(B) क्वार्ट्ज़ आधारित ब्लू पॉटरी
(C) पारंपरिक गोटा पत्ती कार्य
(D) बहु-किवाड़ वाली लकड़ी की कावड़ नक्काशी

95. 'बादला' का जो संबंध जोधपुर से है, 'कुप्पी' का वही संबंध किससे है:
(A) जयपुर
(B) बीकानेर
(C) उदयपुर
(D) कोटा

96. राजस्थान की पारंपरिक ब्लॉक प्रिंटिंग तकनीक में लकड़ी के ब्लॉकों का उपयोग किया जाता है जिन्हें स्थानीय रूप से 'बंटा/ठप्पा' कहा जाता है। स्थायित्व और सूक्ष्म विवरण सुनिश्चित करने के लिए ये ब्लॉक मुख्य रूप से किस प्रकार की लकड़ी से तराशे जाते हैं?
(A) सूखी आम की लकड़ी
(B) स्थानीय बबूल की लकड़ी
(C) बांस का तना
(D) सागौन या रोहिड़ा की लकड़ी

97. 'साफा' और 'पगड़ी' शब्द पारंपरिक राजस्थानी पगड़ियों को संदर्भित करते हैं। युद्धकाल या बलिदान के समय राजपूत पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ियों से कौन सा बंधेज पैटर्न ऐतिहासिक रूप से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है?
(A) केसरिया बंधेज
(B) लहरिया
(C) मोठड़ा
(D) इंडिगो दाबू

Downloaded from www.pdf.tube

पूरी तरह सममित (सिमेट्रिकल) कटे चमड़े का प्रयोग करते हैं। जब कोई व्यक्ति मोजड़ी को कुछ दिनों तक लगातार पहनता है, तो चमड़ा लचीला होकर अपने आप उस पैर की बनावट के अनुसार ढल जाता है।

54. (C) आगे की ओर मुड़ी हुई नुकीली नोक (नोकरा)
नाग्रा जूतियाँ जोधपुर और जयपुर की चमड़ा शिल्प कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन जूतियों का मुख्य पहचान चिह्न आगे की ओर ऊपर उठी हुई और घूमी हुई नुकीली नोक होती है, जिसे स्थानीय भाषा में 'नोकरा' कहा जाता है। इन जूतियों पर मखमली कपड़े या चमड़े पर जरी, कसाब और रेशमी धागों से बारीक बेल-बूटों की कढ़ाई की जाती है, जो इन्हें शाही लुक देती है।

55. (C) केवल IV
राजस्थान की पारंपरिक धागा कठपुतली कला में कठपुतलियों को आडू की हल्की लकड़ी से बनाकर लंबे लहंगे पहनाए जाते हैं। प्रदर्शन के दौरान सीटी (बोली) वाद्य का प्रयोग किया जाता है। परंतु यह कला किसी एक विशिष्ट समुदाय तक सीमित न होकर मुख्य रूप से 'भाट' जाति के कलाकारों द्वारा प्रदर्शित की जाती है, न कि कालबेलिया समुदाय द्वारा। अतः केवल चौथा कथन पूरी तरह गलत है।

56. (A) कोमल कोठारी और विजयदान देथा
जोधपुर जिले के बोरुंदा गांव में 'रुपायन संस्थान' की स्थापना वर्ष 1960 में महान लोकसंस्कृतिविद कोमल कोठारी और प्रसिद्ध साहित्यकार विजयदान देथा द्वारा की गई थी। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य राजस्थान की विलुप्त होती लोक कलाओं, कठपुतली खेल, लोक संगीत, पारंपरिक वाद्य यंत्रों तथा लोक कथाओं का व्यापक शोध, दस्तावेजीकरण और संरक्षण करना है, जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है।

57. (B) उस्ता कला
बीकानेर की 'उस्ता कला' एक अत्यंत दुर्लभ और अलंकृत शिल्प कला है। इस कला में विशेष रूप से संसाधित ऊंट की खाल से बने बर्तनों, कुप्पियों तथा राजप्रासादों की छतों पर मुनावत (उभरी हुई नक्काशी) करके शुद्ध सोने के वर्क और रंगों से बारीक चित्रकारी की जाती है। यह कला रूप अपनी अद्वितीय स्वर्णिम सुंदरता और टिकाऊपन के कारण पूरी दुनिया में बीकानेर की विशेष पहचान है।

58. (B) तेल या इत्र रखने के लिए प्रयुक्त ऊंट की खाल से बनी बोतल/पात्र
बीकानेर के उस्ता कला विशेषज्ञों द्वारा निर्मित 'कुप्पी' ऊंट की खाल से बनाया जाने वाला एक पारंपरिक पात्र है। ऊंट की खाल को साफ करके और सांचों पर सुखाकर बोतल का आकार दिया जाता है। इसका उपयोग ऐतिहासिक रूप से तेल, इत्र या तरलमिश्रणों को सुरक्षित रखने के लिए किया जाता था। इन कुप्पियों की बाहरी सतह पर सोने के वर्क से भव्य उस्ता कला की चित्रकारी की जाती है।

59. (A) ऊंट के चमड़े की उस्ता कला
स्वर्गीय उस्ताद हिसामुद्दीन उस्ता बीकानेर की प्रसिद्ध ऊंट के चमड़े पर की जाने वाली 'उस्ता कला' (मुनावत काम) के अद्वितीय उस्ताद थे। उन्होंने ऊंट की खाल से बने पात्रों और लकड़ी पर सोने के वर्क की नक्काशी में असाधारण प्रवीणता दिखाई। इस पारंपरिक राजस्थानी शिल्प कला के उत्कृष्ट विकास और संरक्षण हेतु भारत सरकार ने उन्हें 1986 में प्रतिष्ठित 'पद्मश्री' सम्मान से अलंकृत किया था।

60. (C) कोफ्तगिरी
'कोफ्तगिरी' लोहे या इस्पात (स्टील) की कठोर धातु सतहों पर सोने या चांदी के पतले तारों की महीन जड़ाई करने की एक पारंपरिक हथियार-सज्जा कला है। राजस्थान में ऐतिहासिक रूप से इस कला का प्रयोग युद्ध कला के हथियारों, जैसे तलवारों की मूठ, ढालों, कटारों और खान्दों को अलंकृत करने के लिए किया जाता था। इस प्रक्रिया में पहले धातु को खुरचकर तार दबाए जाते हैं और फिर पॉलिश की जाती है।

61. (D) जयपुर और अलवर
राजस्थान में प्रामाणिक 'कोफ्तगिरी' धातु शिल्प कला के निर्माण के लिए ऐतिहासिक रूप से जयपुर और अलवर जिले सबसे प्रमुख केंद्र रहे हैं। इन जिलों के कुशल कारीगर लोहे के हथियारों, ढालों, तलवारों और सजावटी हस्तशिल्प वस्तुओं पर सोने व चांदी के तारों से बहुत ही जटिल एवं सुंदर ज्यामितीय व वानस्पतिक डिज़ाइनों की जड़ाई करने में विशेष विशेषज्ञता रखते हैं।

62. (C) जस्ते (जिंक) से बना कपड़े से ढका पात्र जो पानी को ठंडा रखने के लिए उपयोग होता है।
मारवाड़ (जोधपुर) का 'बादला' जस्ते (जिंक) धातु से निर्मित एक पारंपरिक जल-पात्र है। इसके बाहरी आवरण पर कपड़े या चमड़े की परत चढ़ाई जाती है और प्रायः सुंदर कढ़ाई भी की जाती है। जिंक धातु की प्राकृतिक शीतलन विशेषता के कारण इसमें रखा पानी तेज गर्म मरुस्थलीय गर्मियों में भी लंबे समय तक ठंडा बना रहता है, जो थार मरुस्थल का अत्यंत उपयोगी शिल्प है।

NODIA

63. (B) राजसिको (राजस्थान लघु उद्योग निगम)
'राजसिको' (राजस्थान लघु उद्योग निगम) की स्थापना वर्ष 1961 में हुई थी। यह एजेंसी राजस्थान के पारंपरिक हस्तशिल्प, हथकरघा वस्त्रों और ग्रामीण कारीगरों के उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है। राजसिको अपने प्रसिद्ध 'राजस्थली' एम्पोरियम के नेटवर्क के माध्यम से राज्य के हस्तशिल्प उत्पादों का विपणन, मानकीकरण और निर्यात प्रोत्साहन का कार्य देश-विदेश में व्यवस्थित रूप से संचालित करता है।

64. (D) 2022
राजस्थान सरकार ने राज्य के हस्तशिल्प क्षेत्र को सशक्त बनाने, कारीगरों को आर्थिक सुरक्षा देने और निर्यात को सुव्यवस्थित करने हेतु 17 सितंबर 2022 को अपनी पहली 'राजस्थान हस्तशिल्प नीति-2022' जारी की थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य

किया जाता है। तीसरे चरण में विभिन्न प्राकृतिक रंगों द्वारा देवताओं और अन्य आकृतियों को भरा जाता है। अंत में मुख्य देवता की आँखें बनाकर प्राण प्रतिष्ठा की जाती है, जो फड़ निर्माण का अंतिम और पवित्र चरण है।

21. (B) रावणहत्था
'पाबूजी की फड़' का वाचन करते समय नायक या भोपा जाति के गायकों द्वारा पारंपरिक रूप से 'रावणहत्था' वाद्य यंत्र का प्रयोग किया जाता है। रावणहत्था नारियल के खोल और बास की छड़ी से बना एक प्राचीन तत वाद्य है, जिसे गज़ की सहायता से बजाया जाता है। भोपा और भोपी रात्रि जागरण के दौरान फड़ के चित्रों के समक्ष रावणहत्था बजाते हुए पाबूजी की शौर्य गाथाओं का सजीव गायन करते हैं।

22. (C) फड़ चित्रकला
श्री लाल जोशी और शांति लाल जोशी राजस्थान की प्रसिद्ध 'फड़ चित्रकला' के महान और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त कलाकार हैं। श्री लाल जोशी को इस पारंपरिक कला को पुनर्जीवित करने और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाने के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनका पूरा परिवार शाहपुरा की फड़ चित्रकला परंपरा को समर्पित रहा है तथा उन्होंने इस कला में अनेक नए प्रयोग और संशोधन किए हैं।

23. (D) पार्वती देवी जोशी
पार्वती देवी जोशी को राजस्थान की प्रथम महिला फड़ चित्रकार होने का ऐतिहासिक गौरव प्राप्त है। पारंपरिक रूप से फड़ चित्रकला का कार्य केवल पुरुषों द्वारा ही किया जाता था और महिलाओं कोइसे बनाने की अनुमति नहीं थी। परंतु शाहपुरा के जोशी परिवार की बहू पार्वती देवी ने इस सामाजिक नियम को तोड़ते हुए फड़ चित्रकला में निपुणता हासिल की और महिलाओं के लिए इस कला के द्वार खोले।

24. (A) आधार के रूप में प्रयुक्त हाथ से बना परतदार कागज़
राजस्थानी लघु चित्रकला के निर्माण में 'वासली' एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार सामग्री होती है। यह हाथ से बने पतले कागजों की कई परतों को एक के ऊपर एक प्राकृतिक चिपकने वाले पदार्थ (जैसे मैदा या आटा) से जोड़कर तैयार किया जाने वाला एक मोटा कागज़ होता है। वासली की सतह पर चित्रकार आसानी से जल रंगों का प्रयोग करते हैं और यह लंबे समय तक टिकाऊ तथा सुरक्षित रहती है।

25. (B) 2, 3, 1, 4
राजस्थानी लघु चित्र बनाने की प्रक्रिया में सबसे पहले 'खरका' चरण आता है, जिसमें चित्र की हल्की रूपरेखा खींची जाती है। इसके पश्चात दूसरे चरण में चित्रों में मूल और सूक्ष्म रंग भरे जाते हैं। तीसरे चरण में अकीक के पत्थर से सतह की 'घुटाई' की जाती है ताकि रंगों में चमक और चिकनापन आए। अंत में चौथे चरण में काली स्याही से अंतिम रूपरेखा तथा बारीक विवरण उकेरे जाते हैं।

26. (B) पॉलिश किया गया अकीक पत्थर
राजस्थानी लघु चित्रकला में 'घुटाई' की प्रक्रिया के लिए पॉलिश किए गए अकीक (एक प्रकार का चिकना अर्ध-मूल्यवान पत्थर) का उपयोग किया जाता है। चित्र में रंग भरने के बाद कागज़ या वासली के पीछे अथवा आगे की सतह पर अकीक पत्थर को धीरे-धीरे रगड़ा जाता है। इस प्रक्रिया से रंग कागज़ के रेशों में गहराई से बैठ जाते हैं और चित्र की सतह अत्यंत चिकनी, चमकदार तथा टिकाऊ बन जाती है।

27. (A) खनिज रंगों को गीले चूने के प्लास्टर पर लगाना ताकि वे स्थायी रूप से जुड़ सकें।
'अरायश' अथवा 'आला-गीला' तकनीक शेखावाटी की एक पारंपरिक भित्ति चित्र पद्धति है। इस तकनीक में दीवार पर चूने का गीला प्लास्टर लगाया जाता है और प्लास्टर के पूरी तरह सूखने से पहले ही उस पर प्राकृतिक तथा खनिज रंगों से चित्रकारी की जाती है। ऐसा करने से रंग चूने के साथ रासायनिक रूप से जम जाते हैं और दीवार का हिस्सा बन जाते हैं, जिससे चित्र दशकों तक खराब नहीं होते।

28. (C) शेखावाटी
राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र (जिसमें सीकर, झुंझुनूं और नवलगढ़ शामिल हैं) को 'खुली कला दीर्घा' (ओपन आर्ट गैलरी) कहा जाता है। 18वीं और 19वीं शताब्दी में यहाँ के समृद्ध मारवाड़ी सेठों और व्यापारियों ने अपनी विशाल हवेलियों की बाहरी और भीतरी दीवारों पर अरायश पद्धति से अत्यधिक सुंदर एवं भव्य भित्ति चित्र बनवाए। इन चित्रों की विशालता और सुंदरता के कारण पूरा क्षेत्र कला प्रदर्शनी जैसा प्रतीत होता है।

29. (D) केवल गैर-आकृतिवादी इस्लामिक ज्यामितीय कैलीग्राफी का सख्ती से पालन
शेखावाटी की हवेलियों के भित्ति चित्रों में विषयों की विविधता देखने को मिलती है। इनमें एक ओर पौराणिक कथाओं, जैसे कृष्ण लीला और रामायण के चित्र हैं, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश काल के प्रभाव में भाप की ट्रेनें, मोटर गाड़ियाँ, हवाई जहाज, ग्रामोफोन और यूरोपीय वेशभूषा वाले पुरुषों-महिलाओं के चित्र प्रचुरता में बनाए गए हैं। केवल इस्लामिक कैलीग्राफी का पालन करना इस लोक भित्ति कला शैली का विषय कभी नहीं रहा।

30. (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
जयपुर की प्रसिद्ध ब्लू पॉटरी की मुख्य विशेषता यह है कि यह किसी भी प्रकार की सामान्य कुम्हारी मिट्टी के प्रयोग के बिना बनाई जाती है। इसका निर्माण मुख्य रूप से क्वार्ट्ज़ पत्थर के चूर्ण, कांच, मुल्तानी मिट्टी और गोंद के मिश्रण से होता है। इस बर्तन पर कोबाल्ट ऑक्साइड की सहायता से सुंदर नीला रंग चढ़ाया जाता है। यद्यपि दोनों तथ्य अपने स्थान पर पूर्णतः सही हैं, किंतु कारण अभिकथन की सही व्याख्या नहीं प्रस्तुत करता।

31. (B) महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय
जयपुर में ब्लू पॉटरी कला को संस्थागत रूप देने और उसे नए शिखर पर पहुँचाने का श्रेय महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय

Click Here to Buy book on Flipkart

दरबारी शिष्टाचार का बहुत बारीक एवं दस्तावेजी विवरण दर्ज किया गया है।

76. (C) जैसलमेर शैली
'मूमल' लोद्रवा (जैसलमेर) की राजकुमारी की प्रसिद्ध लोक प्रेम कहानी है, जो जैसलमेर चित्रकला शैली का सबसे प्रमुख और लोकप्रिय विषय है। जैसलमेर शैली की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह बाहरी या मुगल प्रभावों से पूरी तरह मुक्त रही और इसने अपना शुद्ध स्थानीय राजस्थानी स्वरुप बनाए रखा। इस शैली में मूमल के श्रृंगारिक सौंदर्य और आभूषणों का विस्तृत चित्रांकन देखने को मिलता है।

77. (D) अलवर शैली
राजस्थान की 'अलवर चित्रकला शैली' अपनी कुछ अत्यंत अनूठी और विशिष्ट विशेषताओं के लिए जानी जाती है। इस शैली में वेश्याओं (गणिकाओं) के चित्रों का प्रचुरता से निर्माण हुआ, योगासनों के विभिन्न मुद्राओं के चित्र बनाए गए तथा हाथीदांत की पतली पट्टियों पर बहुत ही सूक्ष्म लघु चित्र उकेरे गए। महाराजा शिवदान सिंह और विनय सिंह के शासनकाल में अलवर शैली में ये अद्वितीय विषय विशेष रूप से चित्रित किए गए थे।

78. (C) अनाज भंडारण के लिए ग्रामीण घरों में बनाई गई मिट्टी की चित्रित कोठियां/संरचनाएं
'कोठे' अथवा 'सोहारी' राजस्थान की ग्रामीण लोक कला का एक पारंपरिक हिस्सा हैं। ये ग्रामीण घरों में खाद्यान्न एवं अनाज को सुरक्षित रखने के लिए चिकनी मिट्टी, गोबर और भूसे के मिश्रण से बनाई जाने वाली बड़ी-बड़ी कोठियां होती हैं। ग्रामीण महिलाएँ इन कोठियों की बाहरी सतह पर चूने और गेरु से सुंदर लोक आकृतियाँ, मांडणे और ज्यामितीय डिज़ाइन बनाकर उन्हें आकर्षक रूप से सजाती हैं।

79. (B) लाख की सुंदर चूड़ियां और आभूषण बनाना
जयपुर का 'मनिहार' समुदाय पारंपरिक रूप से लाख के हस्तशिल्प काम में लगा हुआ है। इस समुदाय के कारीगर लाख को पिघलाकर, उसमें विभिन्न रंग मिलाकर अत्यंत सुंदर और चमकदार चूड़ियाँ, कड़े (जिन्हें स्थानीय भाषा में लहेरिया या कड़ा कहा जाता है) तथा सजावटी आभूषण बनाते हैं। जयपुर का 'मनिहारों का रास्ता' बाजार लाख की इन पारंपरिक सुंदर हस्तनिर्मित चूड़ियों के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है।

80. (D) एप्लिक और कांच कार्य (मिरर वर्क)
राजस्थान के पश्चिमी सीमावर्ती जिलों, विशेषकर जैसलमेर और बाड़मेर में सूती कपड़ों के आधार पर रंग-बिरंगे कपड़ों के टुकड़े जोड़कर (एप्लिक) तथा उन पर कांच के छोटे-छोटे ज्यामितीय टुकड़ों को टोंककर (मिरर वर्क) सजावटी वस्तुएं बनाई जाती हैं। यह पारंपरिक हस्तशिल्प ओढ़नियों, बिस्तरों, थैलों और दीवार के पर्दों को सजाने में प्रयोग होता है, जो मरुस्थलीय लोक जीवन की जीवंतता को प्रदर्शित करता है।

81. (A) देवकीनंदन शर्मा
प्रो. देवकीनंदन शर्मा को राजस्थान के कला जगत में 'पक्षियों का चित्रकार' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपने कला जीवन में विभिन्न पक्षियों, जैसे मोर, तोते और कौवों के प्राकृतिक परिवेश में अत्यंत जीवंत और सूक्ष्म चित्र बनाए। उनकी कलाकृति में पक्षियों के पंखों का प्राकृतिक रंग और उनकी गतियों का यथार्थवादी चित्रांकन इतना सटीक है कि उन्हें यह विशेष उपाधि प्रदान की गई।

82. (C) बीकानेर में बारीक रेखाओं और कोमल फारसी रंगों का उपयोग होता है, जबकि जोधपुर में सुगठित आकृतियां और चटकीले मरुस्थलीय रंग पाए जाते हैं।
बीकानेर और जोधपुर चित्रकला शैलियों में प्रमुख अंतर उनके रंगों और रेखाओं के प्रयोग में है। बीकानेर शैली में मुगल और फारसी प्रभाव के कारण अत्यंत कोमल रंगों, बारीक रेखाओं और मुलायम छायांकन का प्रयोग होता है। इसके विपरीत जोधपुर (मारवाड़) शैली में गहरे चटकीले मरुस्थलीय रंगों (जैसे लाल और पीला), सुगठित और गठीली मानवीय आकृतियों तथा बोल्ड रेखाओं का प्रयोग बहुतायत में देखने को मिलता है।

83. (A) राज्य स्तरीय हस्तशिल्प पुरस्कार (स्टेट मास्टर क्राफ्टपर्सन अवॉर्ड)
उद्योग एवं हस्तशिल्प विभाग द्वारा आयोजित इस वार्षिक पुरस्कार समारोह में चयनित मास्टर क्राफ्टपर्सन्स को नकद धनराशि, प्रमाण पत्र और अंगवस्त्र प्रदान करके राज्य स्तर पर प्रोत्साहित किया जाता है। राजस्थान सरकार द्वारा राज्य के सिद्धहस्त कारीगरों और शिल्पियों के असाधारण कौशल, उत्कृष्ट शिल्प कला तथा कला परंपरा के संरक्षण में उनके बहुमूल्य योगदान को सम्मानित करने के लिए 'राज्य स्तरीय हस्तशिल्प पुरस्कार' प्रदान किया जाता है।

84. (D) I, II और III
कोटा डोरिया कपड़ा अपने वर्गाकार खाट (चेक) पैटर्न के लिए विख्यात हथकरघा है। जैसलमेर का पोकरण लाल और सफेद चित्रित टेराकोटा पॉटरी के लिए जाना जाता है। नाथद्वारा शहर नक्काशीदार लकड़ी पर चांदी के तार की जड़ाई (तारकशी) के लिए पूरे राजस्थान में विख्यात है। इस प्रकार हस्तशिल्प परिदृश्य से जुड़े ये तीनों कथन ऐतिहासिक एवं भौगोलिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

85. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
साहिबदीन 17वीं शताब्दी के मेवाड़ शैली के प्रमुख चित्रकार थे। निहालचंद ने किशनगढ़ शैली में विश्व प्रसिद्ध बणी-ठणी का चित्र तैयार किया। उस्ता अली रज़ा बीकानेर शैली के प्रसिद्ध चित्रकार थे जिन्हें राजा अनूप सिंह का संरक्षण मिला। दालूराम का संबंध अलवर चित्रकला शैली से है जिन्होंने भित्ति चित्रों की रचना की। इस प्रकार यह मिलान पूरी तरह सही और सटीक है।

86. (C) मेवाड़ शैली
देलवाड़ा में 1423 ईस्वी में चित्रित 'सुपासनाह चरियम' (सुपार्श्वनाथ चरित्र) जैन धर्म से संबंधित एक अत्यंत महत्वपूर्ण

Downloaded from www.pdf.tube

44. 'वीर सतसई' की रचना किस प्रमुख ऐतिहासिक घटना के आसपास की औपनिवेशिक विरोधी भावना से गहराई से प्रेरित थी?
(A) राजस्थान में मराठों के आक्रमण
(B) 1818 में सहायक संधियों पर हस्ताक्षर
(C) 1857 की क्रांति
(D) 1948 में राजस्थान का एकीकरण

45. निम्नलिखित ऐतिहासिक राजस्थानी साहित्यिक हस्तियों को उनके काल के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. चंदबरदाई
2. दुरसा आढ़ा
3. सूर्यमल मिश्रण
निम्नलिखित में से कौन-सा सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

46. चंदबरदाई किस प्रसिद्ध भारतीय शासक के राजदरबारी कवि और करीबी विश्वासपात्र के रूप में कार्यरत थे?
(A) मेवाड़ के महाराणा प्रताप
(B) मेवाड़ के महाराणा सांगा
(C) पृथ्वीराज चौहान तृतीय
(D) मारवाड़ के राव जोधा

47. "चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण..." से शुरू होने वाला प्रसिद्ध काव्यात्मक दोहा ऐतिहासिक रूप से चंदबरदाई से संबंधित है। इसका पौराणिक उद्देश्य क्या था?
(A) दिल्ली में एक नए मंदिर के लिए सटीक वास्तुशिल्प माप और संरचनात्मक खाका प्रदान करना।
(B) दृष्टिहीन पृथ्वीराज चौहान को मोहम्मद गोरी पर बाण चलाने के लिए निर्देशित करना।
(C) आगामी शाही विवाह समारोह के लिए औपचारिक ज्योतिषीय भविष्यवाणी के रूप में कार्य करना।
(D) विस्तृत चौहान साम्राज्य की भौगोलिक सीमाओं को व्यापक रूप से दर्ज करना।

48. चंदबरदाई की साहित्यिक विरासत के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) उन्होंने सभी प्रकार के काव्य छंदों को पूरी तरह से खारिज करते हुए केवल पारंपरिक गद्य प्रारूप में लिखा।
(B) उन्हें केवल शाही फारसी प्रशासनिक ग्रंथों का स्थानीय क्षेत्रीय बोलियों में अनुवाद करने के लिए याद किया जाता है।
(C) उनकी मूल रचनाएँ समय के साथ पूरी तरह से खो गईं और आज कोई सत्यापित लिखित पांडुलिपि मौजूद नहीं है।
(D) उन्होंने पिंगल की नींव रखने के लिए व्याकरण के साथ स्थानीय अपभ्रंश को मिलाया।

49. राजस्थानी साहित्य के एक अत्यंत प्रमुख इतिहासकार और लेखक मुहणोत नैणसी ने किस शासक के दरबार में दीवान (मंत्री) के रूप में सेवा की?
(A) मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम
(B) मारवाड़ के राव मालदेव
(C) जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह
(D) मेवाड़ के महाराणा कुंभा

50. प्रमुख दरबारी कवियों और उनकी कृतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'सूरज प्रकाश' महाकाव्य की रचना करणीदान ने की थी।
II. 'राज रूपक' साहित्यिक कृति की रचना वीरभाण ने की थी।
III. 'नैणसी री ख्यात' को अक्सर राजस्थान का पहला व्यापक गजेटियर माना जाता है।
IV. 'पाबूजी रा छंद' की रचना सूर्यमल मिश्रण ने की थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) II, III और IV
(B) I, III और IV
(C) I, II और III
(D) I, II और IV

NODIA

51. मुंशी देवी प्रसाद ने उनके व्यवस्थित, विस्तृत ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण को पहचानते हुए किस साहित्यिक हस्ती को 'राजपूताने का अबुल फजल' की उपाधि प्रदान की?
(A) मुहणोत नैणसी
(B) सूर्यमल मिश्रण
(C) कविराजा श्यामलदास
(D) बांकीदास

52. मूल्यवान ऐतिहासिक ग्रंथ 'बांकीदास री ख्यात' मुख्य रूप से किस रियासत की घटनाओं और वंशावली के दस्तावेजीकरण से संबंधित है?
(A) मेवाड़ (उदयपुर)
(B) आमेर (जयपुर)
(C) बीकानेर (राठौड़)
(D) मारवाड़ (जोधपुर)

53. मेवाड़ के इतिहास का विवरण देने वाली प्रसिद्ध ऐतिहासिक कृति 'वीर विनोद' की रचना किस आदरणीय दरबारी इतिहासकार ने की थी?
(A) गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(B) कविराजा श्यामलदास
(C) दशरथ शर्मा
(D) मुहणोत नैणसी

54. पारंपरिक राजस्थानी लोक साहित्य के संदर्भ में, 'कहावत' या 'केवत' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) शाही दरबारी विद्वानों द्वारा हल की गई एक अत्यंत जटिल गणितीय पहेली
(B) मंदिरों में आयोजित 24 घंटे का निरंतर भक्ति गायन सत्र
(C) पारंपरिक ज्ञान को व्यक्त करने वाली एक संक्षिप्त

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY
PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

पगड़ी में मुख्य रूप से 'केसरिया बंधेज' पैटर्न का प्रयोग किया जाता था। युद्ध मैदान में केसरिया साफा पहनना शत्रुओं से अंतिम सांस तक लड़ने और धर्म व मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने के संकल्प को दर्शाता था।

98. (C) राजस्थान लघु उद्योग निगम (राजसिको)
राजस्थान लघु उद्योग निगम (राजसिको) राज्य की एक प्रमुख नोडल संस्था है, जो ग्रामीण कारीगरों के हस्तशिल्प उत्पादों को बाजार से जोड़ने का कार्य करती है। राजसिको अपने राज्यव्यापी एम्पोरियम नेटवर्क 'राजस्थली' के माध्यम से कारीगरों के हस्त निर्मित उत्पादों, जैसे लघु चित्रों, पॉटरी, चमड़ा शिल्प और वस्त्रों को सीधे खरीदकर देश-विदेश के पर्यटकों व ग्राहकों तक पहुँचाने का विपणन ढांचा प्रदान करती है।

99. (A) तारानगर और जयपुर
राजस्थान में लकड़ी के बने नक्काशीदार फर्नीचर पर पीतल के पतले तारों और पत्तियों की सुंदर जड़ाई करने का कार्य मुख्य रूप से चूरू जिले के तारानगर और जयपुर में किया जाता है। यहाँ के कुशल काष्ठ शिल्पकार शीशम अथवा सागौन की लकड़ी से बने मेज, कुर्सी, किवाड़ और अलमारियों पर पीतल की बहुत ही बारीक एवं आकर्षक जड़ाई करके उसे भव्य और राजसी स्वरूप प्रदान करते हैं।

100. (D) औरंगजेब की कट्टरपंथी नीतियों के कारण मुगल कला संरक्षण का ह्रास
मुगल सम्राट औरंगजेब के शासनकाल में उसकी ललित कलाओं के प्रति कट्टरपंथी और उपेक्षात्मक नीतियों के कारण दिल्ली के शाही मुगल दरबार में चित्रकला का संरक्षण समाप्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप मुगल दरबार के कई प्रतिभाशाली और सिद्धहस्त चित्रकार आजीविका की तलाश में प्रांतीय राजपूत दरबारों, विशेषकर बीकानेर, जयपुर और बूंदी राज्यों की ओर पलायन कर गए, जिससे इन क्षेत्रों की राजस्थानी लघु चित्रकला शैली समृद्ध हुई।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

23. किस प्रसिद्ध भाषाविद् और विद्वान ने ऐतिहासिक रूप से इस क्षेत्र की जनजातीय आबादी में इसके प्रचलन के कारण वागड़ी बोली को 'भीली' कहा था?
(A) गौरीशंकर हीराचंद ओझा
(B) एल. पी. टेसीटोरी
(C) सुनीति कुमार चटर्जी
(D) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

24. वागड़ी को राजस्थान के किस विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र की प्राथमिक पारंपरिक बोली के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(A) डूंगरपुर और बांसवाड़ा
(B) मत्स्य क्षेत्र
(C) गोडवाड़ क्षेत्र
(D) शेखावाटी क्षेत्र

25. वागड़ी बोली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से डूंगरपुर और बांसवाड़ा के दक्षिणी जिलों में बोली जाती है।
II. यह गुजराती भाषा से अत्यधिक ध्यान देने योग्य ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक प्रभाव दर्शाती है।
III. संत मावजी के भक्ति ग्रंथ और उपदेश इसी बोली में रचित हैं।
IV. यह पारंपरिक रूप से फारसी-अरबी लिपि का उपयोग करके दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) I, II और IV
(B) I, II और III
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

26. भौगोलिक और भाषाई रूप से, शेखावाटी बोली मुख्य रूप से किन दो प्रमुख बोलियों के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र के रूप में कार्य करती है?
(A) मेवाड़ी और हाड़ौती बोलियाँ
(B) मारवाड़ी और ढूंढाड़ी
(C) वागड़ी और मालवी बोलियाँ
(D) मेवाती और ब्रज बोलियाँ

27. शेखावाटी बोली संरचनात्मक रूप से किन आधुनिक जिलों को शामिल करने वाले सांस्कृतिक क्षेत्र में सबसे अधिक प्रचलित है?
(A) सीकर, झुंझुनूं और चूरू
(B) जोधपुर, पाली और नागौर जिले
(C) जयपुर, दौसा और टोंक जिले
(D) कोटा, बूंदी और बारां जिले

28. बोलचाल की शेखावाटी बोली में अक्सर देखी जाने वाली सामान्य व्याकरणिक या ध्वन्यात्मक विशेषता निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(A) दैनिक बोलचाल में सभी स्वर ध्वनियों का पूर्ण संरचनात्मक लोप
(B) शुद्ध संस्कृत संज्ञा रूपों और विभक्तियों का कठोर प्रयोग
(C) सहायक क्रियाओं के लिए 'छै' का बारंबार प्रयोग
(D) किसी भी हिंदी, गुजराती या मारवाड़ी मूल शब्दों की पूर्ण अनुपस्थिति

29. भाषाविद् एल. पी. टेसीटोरी के व्यापक वर्गीकरण के अनुसार, शेखावाटी को योजनाबद्ध रूप से किस प्राथमिक राजस्थानी बोली समूह की उप-शाखा के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) पूर्वी राजस्थानी
(B) दक्षिणी राजस्थानी
(C) दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी
(D) पश्चिमी राजस्थानी

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : डिंगल पश्चिमी राजस्थानी की एक सशक्त साहित्यिक शैली है जिसे मुख्य रूप से चारण कवियों द्वारा पोषित और इस्तेमाल किया गया था।
कारण (R) : डिंगल काव्य मुख्य रूप से योद्धाओं को प्रेरित करने, वीरगाथाओं को दर्ज करने और राजपूत राजाओं के शौर्य की प्रशंसा करने के लिए वीर रस में रचा गया था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

31. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता राजस्थान की पारंपरिक 'डिंगल' साहित्यिक परंपरा को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करती है?
(A) इसमें शास्त्रीय दरबारी नृत्य रूपों के लिए बनाई गई कोमल, प्रेमपूर्ण गद्य रचनाएँ शामिल हैं।
(B) यह ओजस्वी (वीरतापूर्ण) स्वर और सशक्त ध्वनियों द्वारा अभिलक्षित होती है।
(C) यह अत्यधिक ब्रजभाषा शब्दावली पर निर्भर करती है और केवल कृष्ण भक्ति परंपराओं पर केंद्रित है।
(D) यह एक प्राचीन मौखिक परंपरा है जिसे कभी भी ऐतिहासिक लिखित पांडुलिपियों में दर्ज नहीं किया गया था।

NODIA

32. किस प्रसिद्ध ऐतिहासिक कवि ने महाराणा प्रताप की स्वतंत्र भावना का गुणगान करते हुए डिंगल शैली में प्रसिद्ध कृति 'विरुद्ध छत्तरी' (बिरद छतरी) की रचना की?
(A) करणीदान
(B) मुहणोत नैणसी
(C) बांकीदास
(D) दुरसा आढ़ा

33. भगवान कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह को सुंदरता से चित्रित करने वाला अत्यंत श्रद्धेय महाकाव्य 'वेलि क्रिसण रुकमणी री' किस भाषाई शैली का एक उत्कृष्ट नमूना है?

(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

11. राजस्थान के किस प्रमुख मध्यकालीन शासक ने मेवाड़ी बोली के प्रयोग वाले कई नाटकों की रचना की?
(A) महाराणा कुंभा
(B) महाराणा प्रताप
(C) राव जोधा
(D) सवाई जयसिंह

12. किस प्रमुख भक्ति संत के उपदेश और दार्शनिक पद ढूंढाड़ी बोली में सबसे व्यापक रूप से संरक्षित हैं?
(A) संत जांभोजी
(B) संत जसनाथजी
(C) संत दादू दयाल
(D) संत रामचरण

13. वक्ताओं की कुल संख्या की दृष्टि से राजस्थान में किस प्रमुख बोली को सबसे अधिक बोली जाने वाली बोली माना जाता है?
(A) मारवाड़ी
(B) मेवाड़ी
(C) वागड़ी
(D) ढूंढाड़ी

14. तोरावाटी, राजावाटी और काठेड़ी किस प्रमुख राजस्थानी बोली समूह की प्रसिद्ध उप-बोलियाँ हैं?
(A) शेखावाटी
(B) मेवाती
(C) ढूंढाड़ी
(D) मारवाड़ी

15. सूची I में दी गई प्रमुख बोलियों को सूची II में दिए गए उनके प्राथमिक भौगोलिक क्षेत्रों से सुमेलित कीजिए:
सूची I : बोली
P. हाड़ौती
Q. वागड़ी
R. अहिरवाटी
S. गोडवाड़ी
सूची II : क्षेत्र
1. कोटा-बूंदी क्षेत्र
2. डूंगरपुर-बांसवाड़ा क्षेत्र
3. बहरोड़-कोटपूतली क्षेत्र
4. जालोर-पाली क्षेत्र
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

16. कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ क्षेत्रों की विशिष्ट बोली हाड़ौती के नाम से जानी जाती है। भाषाई दृष्टि से, यह किस बोली से सबसे निकटता से संबंधित है?
(A) बागड़ी
(B) थली
(C) मेवाती
(D) ढूंढाड़ी

17. बूंदी के राज्य कवि सूर्यमल मिश्रण की साहित्यिक रचनाओं में व्यापक रूप से प्रयुक्त बोली में पिंगल और किस क्षेत्रीय बोली का प्रमुख मिश्रण है?
(A) हाड़ौती
(B) मारवाड़ी
(C) मेवाड़ी
(D) वागड़ी

18. 1875 में हाड़ौती बोली की व्याकरणिक संरचना को पहली बार मानकीकृत करने और स्पष्ट रूप से दर्ज करने का श्रेय सामान्यतः किसे दिया जाता है?
(A) जॉर्ज ग्रियर्सन
(B) एल. पी. टेसीटोरी
(C) रेवरेंड जे. सी. केलॉग
(D) कर्नल जेम्स टॉड

19. संत चरणदास और लालदास का आध्यात्मिक साहित्य एवं उपदेश किस क्षेत्रीय बोली में प्रमुखता से संरक्षित हैं?
(A) मेवाती
(B) शेखावाटी
(C) वागड़ी
(D) मालवी

20. राजस्थान में पश्चिम से पूर्व की ओर यात्रा करने पर निम्नलिखित में से कौन-सा प्रमुख बोलियों का सही भौगोलिक क्रम दर्शाता है?
(A) मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाती
(B) मेवाती, मारवाड़ी, ढूंढाड़ी
(C) ढूंढाड़ी, मेवाती, मारवाड़ी
(D) मारवाड़ी, मेवाती, ढूंढाड़ी

21. मेवाती राजस्थानी भाषा और किस अन्य प्रमुख भाषाई परंपरा के बीच एक महत्वपूर्ण भाषाई संक्रमण और सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करती है?
(A) गुजराती भाषा
(B) ब्रज भाषा
(C) मराठी भाषा
(D) पंजाबी भाषा

22. निम्नलिखित में से किन आधुनिक जिलों में मेवाती बोली सबसे प्रमुखता से बोली जाती है?
(A) बीकानेर और चूरू
(B) उदयपुर और राजसमंद
(C) अलवर और भरतपुर
(D) जैसलमेर और बाड़मेर

Downloaded from www.pdf.tube

64. मीराबाई का जन्म किस प्रमुख राजपूत वंश में हुआ था, जिनकी स्थानीय बोली की जड़ों ने मेड़ता क्षेत्र में उनकी प्रारंभिक भाषाई पृष्ठभूमि को प्रभावित किया?
(A) सिसोदिया
(B) कछवाहा
(C) चौहान
(D) राठौड़

65. राजस्थानी साहित्य में 'ख्यात' परंपरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ख्यात ऐतिहासिक इतिवृत्त हैं जो मुख्य रूप से राजपूत शासकों की वंशावली, घटनाओं और उपलब्धियों का दस्तावेजीकरण करते हैं।
II. 'दयालदास री ख्यात' विशेष रूप से बीकानेर राज्य के इतिहास का विवरण देती है।
III. ख्यात बिना किसी स्थानीय गद्य के प्रयोग के सख्ती से शास्त्रीय पिंगल पद्य में रचित थीं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) I और II
(B) I, II और III
(C) II और III
(D) I और III

66. ऐतिहासिक वृत्तांतों के विशाल संग्रह में से, किस कृति को इतिहासकारों द्वारा सामान्यतः राजस्थानी साहित्य में उपलब्ध सबसे पुरानी ख्यात के रूप में मान्यता दी गई है?
(A) बांकीदास री ख्यात
(B) दयालदास री ख्यात
(C) नैणसी री ख्यात
(D) मुँधियाड़ री ख्यात

67. ऐतिहासिक ग्रंथ 'मुँधियाड़ री ख्यात' मुख्य रूप से किस राज्य के शासकों के इतिहास और प्रशासन का वर्णन करता है?
(A) मारवाड़
(B) मेवाड़ (सिसोदिया)
(C) आमेर (कछवाहा)
(D) बूंदी (हाड़ा)

68. राजस्थान में ऐतिहासिक लेखन की 'ख्यात' शैली की एक निर्णायक संरचनात्मक विशेषता क्या है?
(A) इसमें पूरी तरह से विस्तृत काल्पनिक पौराणिक कथाएँ, किंवदंतियाँ और जादुई लोककथाएँ शामिल हैं।
(B) यह कालानुक्रमिक ऐतिहासिक तिथियों को पूरी तरह से नजरअंदाज करता है और विशेष रूप से मंदिर वास्तुकला और अनुष्ठानों पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) यह मूल रूप से शाही फारसी प्रशासनिक और कृषि अभिलेखों का एक प्रत्यक्ष, शाब्दिक अनुवाद है।
(D) यह गद्य में इतिहास, शाही वंशावली और सामाजिक-राजनीतिक विवरणों को जोड़ता है।

69. पारंपरिक राजस्थानी गद्य परंपरा में, साहित्यिक शब्द 'बात' सीधे किसे संदर्भित करता है?
(A) युद्ध में प्रयुक्त एक विशिष्ट रक्षात्मक सैन्य व्यूहरचना
(B) एक कहानी सुनाने का प्रारूप या गद्य कथा
(C) राजा द्वारा जारी किया गया एक औपचारिक प्रशासनिक कर फरमान
(D) डिंगल में प्रयुक्त एक कठोर, पारंपरिक प्रकार का काव्य छंद

70. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प इन ऐतिहासिक राजस्थानी कृतियों के सबसे प्राचीन से सबसे नवीन तक सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) वंश भास्कर, पृथ्वीराज रासो, बातां री फुलवारी
(B) पृथ्वीराज रासो, वंश भास्कर, बातां री फुलवारी
(C) बातां री फुलवारी, पृथ्वीराज रासो, वंश भास्कर
(D) पृथ्वीराज रासो, बातां री फुलवारी, वंश भास्कर

71. 'वचनिका' राजस्थानी में एक अत्यंत विशिष्ट साहित्यिक रूप है। कौन-सा विकल्प इसकी संरचना का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) बिना किसी व्यापक आख्यान संदर्भ के प्रस्तुत किया जाने वाला एक विशुद्ध रूप से काव्यात्मक प्रेमपूर्ण लोक गीत।
(B) ऐतिहासिक रूप से राजदरबार की सभाओं में प्रस्तुत किया जाने वाला एक मूक नाटकीय अभिनय।
(C) विशेष रूप से राज्य कर लेखांकन पर लिखा गया एक अत्यधिक विस्तृत गणितीय ग्रंथ।
(D) लयात्मक गद्य की विशेषता वाला एक गद्य-पद्य मिश्रण (चंपू)।

72. गागरोन किले की घेराबंदी और साके का ओजस्वी वर्णन करने वाली प्रसिद्ध ऐतिहासिक कृति 'अचलदास खीची री वचनिका' किसके द्वारा लिखी गई थी?
(A) शिवदास गाडण
(B) करणीदान चारण
(C) कवि पदमनाभ
(D) दुरसा आढ़ा चारण

73. पारंपरिक राजस्थानी दरबारी साहित्य के अंतर्गत, 'दवावैत' का क्या अर्थ है?
(A) कालबेलिया समुदाय द्वारा पारंपरिक रूप से प्रस्तुत किया जाने वाला एक अत्यधिक ऊर्जावान विशेष लोक नृत्य।
(B) उर्दू और फारसी शब्दावली से युक्त लयात्मक गद्य।
(C) ऐतिहासिक रूप से और विशेष रूप से कुलीन चारण योद्धाओं द्वारा उपयोग की जाने वाली एक विशेष घुमावदार लोहे की तलवार।
(D) पैतृक स्थानीय लोक देवताओं को समर्पित एक निरंतर भक्ति भजन सत्र।

74. आधुनिक राजस्थान के महानतम साहित्यिक दिग्गजों में से एक माने जाने वाले सूर्यमल मिश्रण किस रियासत के प्रतिष्ठित राज्य कवि (राजकवि) थे?
(A) कोटा

NODIA

(A) डिंगल
(B) पिंगल
(C) मेवाती
(D) मालवी

34. राजस्थानी साहित्य के संदर्भ में, 'पिंगल' शैली को पूर्वी राजस्थानी (ढूंढाड़ी/भरतपुर बोलियों) और किस अन्य भाषा का साहित्यिक सम्मिश्रण माना जाता है?
(A) गुजराती
(B) पंजाबी
(C) ब्रज भाषा
(D) मराठी

35. सूची I में दी गई साहित्यिक परंपराओं/बोलियों को सूची II में दी गई उनकी प्राथमिक संबद्धता के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : साहित्यिक परंपरा / बोली
P. डिंगल
Q. पिंगल
R. जैन साहित्य
S. संत साहित्य
सूची II : प्राथमिक संबद्धता
1. ब्रज-प्रभावित पूर्वी राजस्थान
2. पश्चिमी राजस्थान की चारण परंपरा
3. मुख्य रूप से साधुक्कड़ी और स्थानीय ग्रामीण बोलियों से जुड़ा हुआ
4. मुख्य रूप से मारवाड़ी और प्राकृत रूपों का उपयोग करके लिखा गया
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

36. जबकि चारण डिंगल के प्राथमिक रचनाकार थे, राजस्थान में पारंपरिक पिंगल साहित्य की रचना में किन ऐतिहासिक समुदायों ने सबसे प्रमुख भूमिका निभाई?
(A) लंगा और मंगणियार
(B) जैन और ओसवाल
(C) कालबेलिया और भील
(D) भाट और ब्राह्मण

37. दलपत विजय द्वारा लिखित ऐतिहासिक साहित्यिक ग्रंथ 'खुमाण रासो' ऐसे भाषाई गुण प्रदर्शित करता है जो इसे मुख्य रूप से किस परंपरा के अनुकूल बनाते हैं?
(A) शुद्ध डिंगल
(B) पिंगल
(C) आधुनिक मेवाती
(D) वागड़ी

38. प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' को विद्वानों द्वारा व्यापक रूप से किस साहित्यिक परंपरा का पहला प्रमुख महाकाव्य माना जाता है?
(A) मराठी
(B) शुद्ध डिंगल
(C) पिंगल
(D) संस्कृत

39. महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' का केंद्रीय आख्यान विषय क्या है?
(A) चौहान राजवंश की कृषि पद्धतियाँ, प्रशासनिक कर प्रणाली और मौसमी त्योहार।
(B) मध्यकालीन भक्ति संतों के बीच आदान-प्रदान किए गए दार्शनिक संवाद और भक्ति उपदेश।
(C) मेवाड़ क्षेत्र में आध्यात्मिक यात्राएँ, तीर्थयात्रा मार्ग और प्रमुख मंदिर निर्माण।
(D) राजा पृथ्वीराज तृतीय का जीवन, प्रेम और सैन्य अभियान।

40. 'पृथ्वीराज रासो' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी रचना पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चंदबरदाई ने की थी।
II. यह पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गोरी के बीच ऐतिहासिक युद्धों का दस्तावेजीकरण करता है।
III. यह बिना किसी स्थानीय बोली के प्रभाव के विशेष रूप से शास्त्रीय संस्कृत भाषा में लिखा गया है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) I और II
(B) I, II और III
(C) II और III
(D) I और III

41. 'पृथ्वीराज रासो' की रचना में, किस विशिष्ट काव्य छंद का सबसे प्रमुखता और निपुणता से उपयोग किया गया है, जिसने इसके रचयिता को 'छंदों का राजा' की उपाधि दिलाई?
(A) दोहा
(B) छप्पय
(C) सोरठा
(D) चौपाई

42. प्रसिद्ध राजस्थानी काव्य कृति 'वीर सतसई' के रचयिता कौन हैं?
(A) बांकीदास
(B) सूर्यमल मिश्रण
(C) करणीदान
(D) कविराजा श्यामलदास

43. जैसा कि शीर्षक से पता चलता है, 'वीर सतसई' के काव्यात्मक पद्य में चित्रित प्राथमिक रस है:
(A) वीर रस (शौर्य और वीरता)
(B) श्रृंगार रस (प्रेम)
(C) करुण रस (दु:ख और त्रासदी)
(D) हास्य रस (हास्य और व्यंग्य)

Click Here to Buy book on Flipkart

प्रारंभिक चित्रित ग्रंथ है। यह ग्रंथ पश्चिमी भारतीय अपभ्रंश शैली से स्वतंत्र राजस्थानी 'मेवाड़ चित्रकला शैली' में संक्रमण काल को प्रदर्शित करता है। इसमें प्रयुक्त रंग योजना, चेहरे की बनावट और प्राकृतिक दृश्य मेवाड़ शैली के शुरुआती चरण के विकास को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

87. (D) फ्रेस्को-सेको सूखे प्लास्टर पर चित्रित किया जाता है, जबकि फ्रेस्को-बुओनो गीले चूने के प्लास्टर पर बनाया जाता है।
भित्ति चित्रकला में 'फ्रेस्को-सेको' और 'फ्रेस्को-बुओनो' दो अलग-अलग तकनीकें हैं। फ्रेस्को-बुओनो (जिसे अरायश या आला-गीला भी कहते हैं) में चित्रकारी दीवार पर लगाए गए ताजे गीले चूने के प्लास्टर पर की जाती है जिससे रंग पक्के जुड़ते हैं। इसके विपरीत फ्रेस्को-सेको तकनीक में दीवार का प्लास्टर पूरी तरह सूख जाने के बाद उसकी सूखी सतह पर जल-घुलनशील रंगों से चित्र बनाए जाते हैं।

88. (A) चूरू और जयपुर
सुगंधित एवं कीमती चंदन की लकड़ी पर अत्यंत सूक्ष्म, नाजुक और जटिल नक्काशी करने का पारंपरिक काष्ठ शिल्प मुख्य रूप से राजस्थान के चूरू और जयपुर जिलों में केंद्रित है। यहाँ के कुशल काष्ठ शिल्पकार चंदन की लकड़ी से जालीदार आकृतियाँ, धार्मिक प्रतिमाएँ, नक्काशीदार पंखे और छोटी-छोटी सजावटी वस्तुएँ तैयार करने में पूरे देश में अपनी विशेष विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं।

89. (B) महाराणा जगत सिंह प्रथम
मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह प्रथम (1628-1652 ईस्वी) का शासनकाल मेवाड़ चित्रकला का स्वर्णकाल माना जाता है। उन्होंने चित्रकला को प्रोत्साहन देने और संस्थागत रूप प्रदान करने के लिए उदयपुर के राजप्रासाद में 'चितेरों की ओवरी' नामक एक अलग चित्रशाला की स्थापना करवाई, जिसे 'तस्वीराँ रो कारखानो' भी कहा जाता था। यहाँ साहिबदीन जैसे चित्रकारों ने कई कालजयी ग्रंथों का चित्रण किया था।

90. (B) पृष्ठभूमि में यूरोपीय परिदृश्यों और विक्टोरियन वास्तुकला का चित्रण
ढूंढाड़ (जयपुर) चित्रकला शैली अपनी समृद्ध विशेषताओं के लिए जानी जाती है, जिनमें आदमकद व्यक्तिचित्र, हाशियों में सोने-चांदी के वर्क का प्रयोग और गहरा मुगल प्रभाव शामिल है। परंतु इस शैली के पारंपरिक चित्रों की पृष्ठभूमि में यूरोपीय परिदृश्यों या विक्टोरियन वास्तुकला का चित्रण सामान्य विशेषता के रूप में नहीं पाया जाता, बल्कि इसमें राजपूत वास्तुकला, बाग-बगीचों और भारतीय प्राकृतिक दृश्यों की ही प्रधानता रही है।

91. (A) साहिबदीन
'गीत गोविंद' ग्रंथ पर आधारित लघु चित्रों की प्रसिद्ध श्रृंखला (लगभग 1629 ईस्वी) मेवाड़ चित्रकला शैली की एक अनमोल धरोहर मानी जाती है। इस भव्य चित्र श्रृंखला के मुख्य चित्रकार साहिबदीन थे। उन्होंने महाराणा जगत सिंह प्रथम के शासनकाल में जयदेव रचित गीत गोविंद के भक्ति और श्रृंगार रस से परिपूर्ण श्लोकों को अत्यंत मनमोहक रंगों और सूक्ष्म आकृतियों के माध्यम से चित्रों में ढाला था।

92. (C) झुर्रियों वाली त्वचा और पारदर्शी वस्त्रों के साथ वृद्धावस्था को दर्शाने वाले यथार्थवादी व्यक्तिचित्र
मारवाड़ स्कूल की नागौर चित्रकला उप-शैली अपने बुझे हुए (हल्के/पेस्टल्स) रंगों के प्रयोग के लिए जानी जाती है। इस शैली की सबसे बड़ी और अनोखी विशेषता वृद्ध व्यक्तियों के यथार्थवादी व्यक्तिचित्र (पोर्ट्रेट) बनाना है। चित्रकारों ने वृद्धों के चेहरों पर झुर्रियों, पारदर्शी वस्त्रों और शारीरिक शिथिलता का इतने सूक्ष्म यथार्थवाद के साथ चित्रण किया है कि यह राजस्थानी कला में अद्वितीय स्थान रखता है।

93. (D) हल्का पीला (कच्चा रंग)
पारंपरिक फड़ चित्रकला के निर्माण की शुरुआत में सूती कैनवास पर मुख्य देवताओं, पात्रों और कथा के विभिन्न प्रसंगों का प्रारंभिक ढांचा या रेखांकन सबसे पहले हल्के पीले रंग (जिसे कच्चा रंग कहा जाता है) से खींचा जाता है। यह प्रारंभिक रेखांकन चित्रकार को रचना का सही संतुलन बनाने में मदद करता है। इसके बाद अन्य प्राकृतिक रंग भरे जाते हैं और अंत में काले रंग से अंतिम रूपरेखा दी जाती है।

NODIA

94. (C) पारंपरिक गोटा पत्ती कार्य
सीकर जिले में स्थित खंडेला कस्बा राजस्थान में पारंपरिक 'गोटा पत्ती' उद्योग का सबसे बड़ा और प्रमुख केंद्र है। खंडेला के कारीगर पीढ़ियों से लप्पा, लप्पी, किरण और बांकड़ी जैसे विभिन्न प्रकार के गोटे तथा सुनहरे-रुपहले पत्तीदार गोटा वर्क का निर्माण करते आ रहे हैं। यहाँ निर्मित गोटा वर्क का प्रयोग राजस्थानी ओढ़नियों, लहंगों और साड़ियों को अलंकृत करने के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है।

95. (B) बीकानेर
जिस प्रकार 'बादला' (जस्ते से बना कपड़ा मढ़ा शीतल जल पात्र) जोधपुर शहर की एक विशिष्ट पहचान है, ठीक उसी प्रकार 'कुप्पी' बीकानेर का एक प्रसिद्ध पारंपरिक हस्तशिल्प है। बीकानेर के उस्ता कलाकारों द्वारा ऊंट की खाल से बनाई जाने वाली कुप्पी पर सोने के वर्क की अत्यंत सुंदर और जटिल नक्काशी (उस्ता कला) की जाती है, जिसका उपयोग तेल अथवा इत्र रखने के लिए होता था।

96. (D) सागौन या रोहिड़ा की लकड़ी
राजस्थान में कपड़ों पर हाथ से छपाई (हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग) करने के लिए प्रयुक्त लकड़ी के गुटकों या ठप्पों को स्थानीय भाषा में 'बंटा' कहा जाता है। छपाई में सूक्ष्म विवरण उकेरने और बार-बार पानी व रंगों के संपर्क में आने के बावजूद ठप्पों को टिकाऊ बनाए रखने के लिए इन्हें मुख्य रूप से सागौन या रोहिड़ा की कठोर और नक्काशी-अनुकूल लकड़ी से ही तराशा जाता है।

97. (A) केसरिया बंधेज
राजस्थानी संस्कृति में केसरिया रंग शौर्य, बलिदान और वीरता का प्रतीक माना गया है। युद्धकाल या साका (बलिदान) के समय राजपूत योद्धाओं द्वारा सिर पर धारण की जाने वाली

लोकोक्ति या कहावत
(D) राजदरबार द्वारा सीधे जारी किया गया एक औपचारिक प्रशासनिक फरमान

55. सूची I में दिए गए राजस्थानी साहित्यिक/गद्य रूपों को सूची II में दी गई उनकी परिभाषित विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : गद्य रूप
P. बात
Q. वचनिका
R. ख्यात
S. दवावैत
सूची II : परिभाषित विशेषता
1. तुकांत गद्य-पद्य मिश्रित शैली (चंपू काव्य)
2. राज्य की वंशावली और उपलब्धियों को दर्ज करने वाला ऐतिहासिक इतिवृत्त
3. पारंपरिक गद्य कहानी विधा या आख्यानात्मक कथा
4. उर्दू-फारसी शब्दावली का अत्यधिक उपयोग करने वाला लयात्मक गद्य
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

56. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प अधिकांश पारंपरिक राजस्थानी कहावतों (लोकोक्तियों) की संरचनात्मक प्रकृति और स्रोत का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वे दैनिक ग्रामीण जीवन से ली गई संक्षिप्त अभिव्यक्तियाँ हैं।
(B) वे विशेष रूप से शाही पुजारियों द्वारा रचित और संरक्षित विस्तृत बहु-पृष्ठीय दार्शनिक निबंध हैं।
(C) वे आधुनिक सरकार द्वारा सख्ती से लागू किए गए औपचारिक रूप से संहित संहिताबद्ध कानूनी नियम और विधायी कानून हैं।
(D) वे अत्यंत संरचित, जटिल संस्कृत श्लोक हैं जो पूरी तरह से अकादमिक विद्वानों और धर्मशास्त्रियों तक सीमित हैं।

57. एक प्रसिद्ध और बहुप्रयुक्त राजस्थानी कहावत, "तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार," किस दुर्ग के शासक की ऐतिहासिक हठ और अदम्य वीरता का बखान करती है?
(A) चित्तौड़गढ़
(B) रणथंभौर
(C) कुंभलगढ़
(D) जालोर

58. भाषाविज्ञान में, एक पारंपरिक राजस्थानी 'मुहावरा' किस आधार पर मुख्य रूप से एक 'कहावत' से भिन्न है?
(A) मुहावरे सख्ती से औपचारिक गद्य पाठों में लिखे जाते हैं, जबकि कहावतें हमेशा पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ लयात्मक रूप से गाई जाती हैं।
(B) मुहावरा एक अपूर्ण लाक्षणिक वाक्यांश है, जबकि कहावत ज्ञान व्यक्त करने वाला एक पूर्ण वाक्य है।
(C) कहावत में हमेशा उच्च फारसी शब्दावली शामिल होती है, जबकि मुहावरा पूरी तरह से शुद्ध, अमिश्रित शास्त्रीय हिंदी जड़ों पर निर्भर करता है।
(D) पारंपरिक राजस्थानी लोक साहित्य में दोनों अवधारणाओं के बीच बिल्कुल कोई संरचनात्मक, व्याकरणिक या कार्यात्मक अंतर नहीं है।

59. सामान्य राजस्थानी मुहावरा "हवा में लठ मारना" वैचारिक रूप से निम्नलिखित में से किस कार्य को दर्शाता है?
(A) व्यर्थ, निरर्थक या बेबुनियाद प्रयास करना
(B) एक अत्यंत सफल व्यावसायिक उद्यम में संलग्न होना
(C) असाधारण वीरता के साथ भौतिक युद्ध लड़ना
(D) रेगिस्तान में लंबी दूरी की तीव्र यात्रा करना

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजस्थान की शास्त्रीय साहित्यिक परंपरा ने औपचारिक कविता में स्थानीय मुहावरेदार अभिव्यक्तियों (मुहावरों) के प्रयोग को पूरी तरह से खारिज कर दिया।
कारण (R) : मुहावरे सख्त शाही फरमान के बजाय आम भाषाई समुदाय की दैनिक सामाजिक-आर्थिक और भौगोलिक वास्तविकताओं से स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

61. मीराबाई की प्रसिद्ध भक्तिपूर्ण कविताएँ (पदावलियाँ) भगवान कृष्ण के प्रति किस प्राथमिक भावनात्मक भक्ति से गहराई से ओत-प्रोत हैं?
(A) दास्य भाव (दास भक्ति)
(B) वात्सल्य भाव (मातृ स्नेह और प्रेम)
(C) सख्य भाव (मित्रतापूर्ण सहचर्य भक्ति)
(D) माधुर्य भाव (कांता/प्रेमी भाव भक्ति)

62. भाषाई रूप से, मीराबाई की प्रमाणिक काव्यात्मक रचनाओं को आमतौर पर मारवाड़ी और किस अन्य क्षेत्रीय भाषा का मधुर मिश्रण माना जाता है?
(A) अवधी
(B) पंजाबी
(C) ब्रज भाषा
(D) भोजपुरी

NODIA

63. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रमुख साहित्यिक कृति पारंपरिक रूप से मीराबाई से संबंधित मानी जाती है?
(A) वेलि क्रिसण रुकमणी री
(B) राग गोविंद
(C) सूरज प्रकाश
(D) वंश भास्कर

अध्याय 13

राजस्थानी साहित्य और बोलियाँ

1. निम्नलिखित में से कौन-सा विद्वान अपने ऐतिहासिक ग्रंथ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में राजस्थानी भाषा का वैज्ञानिक वर्गीकरण करने वाला पहला विद्वान था?
   (A) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
   (B) एल. पी. टेसीटोरी
   (C) मोतीलाल मेनारिया
   (D) सुनीति कुमार चटर्जी

2. मानक भाषाई वर्गीकरण के अनुसार, राजस्थानी भाषा का विकास मुख्य रूप से किस प्राचीन अपभ्रंश से हुआ?
   (A) मागधी अपभ्रंश
   (B) महाराष्ट्री अपभ्रंश
   (C) शौरसेनी (गुर्जरी) अपभ्रंश
   (D) पैशाची अपभ्रंश

3. राजस्थानी बोलियों के सामान्य वर्गीकरण के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
   (A) मेवाती, राजस्थानी और गुजराती के बीच एक भाषाई सेतु के रूप में कार्य करती है।
   (B) पश्चिमी राजस्थानी में मुख्य रूप से मारवाड़ी, मेवाड़ी और वागड़ी शामिल हैं।
   (C) पूर्वी राजस्थानी में मुख्य रूप से ढूंढाड़ी और हाड़ौती शामिल हैं।
   (D) जॉर्ज ग्रियर्सन ने राजस्थानी को पाँच प्रमुख बोली समूहों में वर्गीकृत किया था।

4. राजस्थानी भाषा निम्नलिखित में से किस बृहत् भाषा-परिवार से संबंधित है?
   (A) द्रविड़ भाषा-परिवार
   (B) चीनी-तिब्बती भाषा-परिवार
   (C) ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा-परिवार
   (D) हिंद-आर्य भाषा-परिवार

5. मारवाड़ी बोली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. अन्य बोलियों की तुलना में यह राजस्थान के सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाती है।
   II. राजस्थान का अधिकांश पारंपरिक जैन साहित्य इसी बोली में रचित है।
   III. इसमें उप-बोलियों का पूर्णतः अभाव है और यह पूरे राज्य में एक समान है।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
   (A) II और III
   (B) I और II
   (C) I और III
   (D) I, II और III

6. मारवाड़ी की मान्यता प्राप्त उप-बोलियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा असंगत है?
   (A) थली
   (B) गोडवाड़ी
   (C) अहिरवाटी
   (D) ढाटकी

7. मानक मारवाड़ी, जिसे पश्चिमी राजस्थानी का सबसे प्रमुख साहित्यिक रूप माना जाता है, मुख्य रूप से किन प्रमुख जिलों में और उनके आसपास बोली जाती है?
   (A) जयपुर और दौसा
   (B) कोटा और बूंदी
   (C) अलवर और भरतपुर
   (D) जोधपुर और बाड़मेर

8. पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजस्थानी ग्रंथ 'वेलि क्रिसण रुकमणी री' मुख्य रूप से किस भाषाई शैली में लिखा गया है?
   (A) डिंगल
   (B) पिंगल
   (C) ढूंढाड़ी
   (D) मालवी

9. मेवाड़ी बोली मुख्य रूप से आधुनिक जिलों के किस समूह में मूल निवासियों द्वारा बोली जाती है?
   (A) जोधपुर, पाली और जालोर जिले
   (B) उदयपुर, भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़
   (C) चूरू, सीकर और झुंझुनूं जिले
   (D) कोटा, बूंदी और झालावाड़ जिले

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   कथन (A) : मेवाड़ी को ऐतिहासिक रूप से मारवाड़ी के साथ पश्चिमी राजस्थानी बोलियों की व्यापक श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।
   कारण (R) : मेवाड़ी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश के बजाय विशेष रूप से महाराष्ट्री प्राकृत से हुआ।
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
   (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) बूंदी
(C) जोधपुर
(D) जयपुर

75. सूर्यमल मिश्रण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्हें राजस्थान के राज्य कवि (राजकवि) के रूप में व्यापक रूप से सम्मानित किया जाता है।
II. उन्होंने प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य 'वंश भास्कर' की रचना की।
III. उन्होंने 1857 की क्रांति के दौरान राष्ट्रवादी भावनाओं को जगाने के लिए 'वीर सतसई' की रचना की।
IV. उन्होंने अपने जीवनकाल में 'वंश भास्कर' को व्यक्तिगत रूप से पूरा किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

76. विस्तृत महाकाव्य ग्रंथ 'वंश भास्कर' मुख्य रूप से किस क्षेत्र के हाड़ा चौहान शासकों के इतिहास और उपलब्धियों का विवरण देता है?
(A) मेवाड़
(B) मारवाड़
(C) हाड़ौती
(D) शेखावाटी

77. सूर्यमल मिश्रण की मृत्यु के बाद प्रसिद्ध ग्रंथ 'वंश भास्कर' अधूरा रह गया था। इसे पूरा करने का श्रेय किस साहित्यिक हस्ती को दिया जाता है?
(A) कविराजा श्यामलदास
(B) बांकीदास
(C) मुहणोत नैणसी
(D) मुरारीदान

78. 'बातां री फुलवारी' राजस्थानी लोक कथाओं का एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित और विस्तृत संग्रह है, जिसके रचयिता हैं:
(A) कन्हैयालाल सेठिया
(B) कोमल कोठारी
(C) विजयदान देथा
(D) सीताराम लालस

79. राजस्थानी लोक कथाओं के विशाल संग्रह 'बातां री फुलवारी' में मूल रूप से कितने खंड शामिल हैं?
(A) 5
(B) 14
(C) 9
(D) 20

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : विजयदान देथा की कहानियाँ ग्रामीण राजस्थानी लोककथाओं में गहराई से रची-बसी हैं लेकिन उनमें सार्वभौमिक मानवीय विषय-वस्तु शामिल हैं।
कारण (R) : उनकी कई मूल राजस्थानी लोक कथाओं को 'पहेली' और 'दुविधा' जैसी प्रमुख भारतीय फिल्मों में सफलतापूर्वक रुपांतरित किया गया है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

81. राजस्थान में प्रेमपूर्ण त्रासदियों की पारंपरिक मौखिक कथा-वाचन में अक्सर कौन-सा प्रसिद्ध क्षेत्रीय किस्सा शामिल होता है जो एक गहन प्रेम कहानी पर जोर देता है?
(A) ढोला-मारु
(B) हीर-राँझा
(C) लैला-मजनूँ
(D) रोमियो-जूलियट

82. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थानी लोक नाट्य या रंगमंच का मान्यता प्राप्त पारंपरिक रुप नहीं है?
(A) रम्मत
(B) गवरी
(C) फड़
(D) तमाशा

NODIA

83. 'गवरी' एक प्राचीन पारंपरिक, अनुष्ठानिक लोक नाट्य है जो एक महीने से अधिक समय तक प्रस्तुत किया जाता है, यह मुख्य रूप से मेवाड़ के किस जनजातीय समुदाय से संबंधित है?
(A) भील
(B) सहरिया
(C) गरासिया
(D) कालबेलिया

84. 'तूर्रा-कलंगी' लोक नाट्य मूल रुप से ऐतिहासिक रुप से दो गुटों के बीच एक प्रतिस्पर्धी काव्यात्मक संवाद (दंगल) का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रतीक हैं:
(A) राम और रावण
(B) कृष्ण और कंस
(C) इंद्र और अग्नि
(D) शिव और पार्वती

85. सूची I में दिए गए पारंपरिक राजस्थानी लोक नाट्य रुपों को सूची II में दिए गए उनके प्रमुख क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : लोक नाट्य रुप
P. तमाशा

के सहयोग से) और 'गर्बा गीत' भी मीराबाई की काव्य परंपरा से जुड़ी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम, भक्ति भावना और दार्शनिक विचारों का अति सुंदर समावेश देखने को मिलता है।

64. (D) राठौड़
मीराबाई का जन्म 16वीं शताब्दी में कुड़की गाँव (वर्तमान पाली जिला) में प्रसिद्ध राठौड़ राजवंश में हुआ था। वे मेड़ता के राव दूदाजी के पौत्र और रतन सिंह राठौड़ की पुत्री थीं। मेड़ता और नागौर का यह क्षेत्र मारवाड़ सांस्कृतिक अंचल का भाग था, जहाँ मारवाड़ी बोली का प्रभाव था। इस राठौड़ वंशीय पृष्ठभूमि और क्षेत्रीय परिवेश ने मीराबाई की प्रारंभिक भाषाई समझ और उनकी काव्य अभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया था।

65. (A) I और II
राजस्थानी साहित्य में 'ख्यात' ऐसे ऐतिहासिक इतिवृत्त हैं जो मुख्यतः राजपूत शासकों की वंशावली, युद्धों और राज्य की घटनाओं को दर्ज करते हैं। 'दयालदास री ख्यात' विशेष रुप से बीकानेर के राठौड़ शासकों का इतिहास प्रस्तुत करती है। ख्यात केवल पिंगल पद्य में नहीं, बल्कि मुख्य रुप से राजस्थानी गद्य में लिखी गई थीं। इसलिए पहला और दूसरा कथन सही हैं, जबकि तीसरा कथन भाषाई रुप से असत्य है।

66. (C) नैणसी री ख्यात
ऐतिहासिक वृत्तांतों के विशाल संग्रह में से 'नैणसी री ख्यात' को इतिहासकारों द्वारा राजस्थानी साहित्य में उपलब्ध सबसे प्राचीन, विस्तृत और प्रामाणिक ख्यात माना गया है। इसकी रचना 17वीं शताब्दी में मारवाड़ के दीवान मुहणोत नैणसी ने की थी। इसमें केवल मारवाड़ ही नहीं, बल्कि मेवाड़, बीकानेर, ढूंढार, सिरोही तथा मध्य भारत के विभिन्न राज्यों के राजवंशों और सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ का ऐतिहासिक ब्योरा गद्य में मिलता है।

67. (A) मारवाड़
ऐतिहासिक ग्रंथ 'मुँधियाड़ री ख्यात' मुख्य रुप से मारवाड़ (जोधपुर) राज्य के राठौड़ शासकों के इतिहास, उनकी वंशावली, युद्धों और प्रशासनिक व्यवस्था का विवरण प्रदान करता है। यह ख्यात नागौर के समीप स्थित मुँधियाड़ गाँव के चारणों द्वारा लिखी गई थी। मारवाड़ के मध्यकालीन इतिहास, सामंती व्यवस्था और राठौड़ वंश की विविध शाखाओं के अध्ययन के लिए इस ख्यात को एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत स्वीकार किया गया है।

68. (D) यह गद्य में इतिहास, शाही वंशावली और सामाजिक-राजनीतिक विवरणों को जोड़ता है।
राजस्थान में ऐतिहासिक लेखन की 'ख्यात' शैली की सबसे निर्णायक संरचनात्मक विशेषता यह है कि यह मुख्य रुप से गद्य भाषा में इतिहास, राजवंशों की वंशावलियाँ, युद्ध अभियानों और राज्य की सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं को एक साथ पिरोती है। यद्यपि इसमें कहीं-कहीं काव्यात्मक छंद भी मिलते हैं, परंतु इसका मुख्य आधार व्यावहारिक राजस्थानी गद्य है, जो घटनाओं को तिथिवार और क्रमबद्ध रुप से प्रस्तुत करने में सक्षम होता है।

69. (B) एक कहानी सुनाने का प्रारुप या गद्य कथा
पारंपरिक राजस्थानी गद्य साहित्य में 'बात' शब्द प्रत्यक्ष रुप से कहानी सुनाने के पारंपरिक प्रारुप या गद्य कथा विधा को संदर्भित करता है। राजस्थानी लोक साहित्य में ऐतिहासिक वीरों, पौराणिक पात्रों, प्रेम प्रसंगों और नैतिक शिक्षाओं पर आधारित अनगिनत 'बातां' रचित हैं। यह विधा मौखिक कथा वाचन परंपरा का लिखित रुप है जिसमें रोचकता, स्थानीय मुहावरों और प्रवाहपूर्ण गद्य शैली का अत्यंत सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है।

70. (B) पृथ्वीराज रासो, वंश भास्कर, बातां री फुलवारी
इन कृतियों का सही कालानुक्रमिक क्रम 'पृथ्वीराज रासो', 'वंश भास्कर' और 'बातां री फुलवारी' है। चंदबरदाई रचित 'पृथ्वीराज रासो' 12वीं शताब्दी की रचना है। सूर्यमल मिश्रण रचित 'वंश भास्कर' 19वीं शताब्दी की प्रसिद्ध कृति है। विजयदान देथा द्वारा संकलित 'बातां री फुलवारी' 20वीं शताब्दी की आधुनिक लोक साहित्य रचना है। अतः प्राचीन से नवीन का यह क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्णतः सत्य और तर्कसंगत है।

71. (D) लयात्मक गद्य की विशेषता वाला एक गद्य-पद्य मिश्रण (चंपू)।
'वचनिका' राजस्थानी साहित्य की एक अत्यंत विशिष्ट और तुकांत विधा है, जिसे संस्कृत साहित्य के चंपू काव्य की भाँति गद्य और पद्य का सुंदर मिश्रण माना जाता है। इसमें गद्य पंक्तियों के अंत में तुकांत और लयात्मकता पाई जाती है, जिससे इसे ढोल या वाद्ययंत्रों के साथ ओजस्वी शैली में गाया या पढ़ा जा सकता है। इसका प्रयोग मुख्यतः युद्धों, वीरों की प्रशंसा और ऐतिहासिक घटनाओं के सजीव वर्णन हेतु किया जाता था।

72. (A) शिवदास गाडण
झालावाड़ स्थित गागरोन दुर्ग की प्रसिद्ध घेराबंदी, मांडू के सुल्तान होशंगशाह के विरुद्ध युद्ध और अचलदास खींची के ऐतिहासिक साके का सजीव एवं ओजस्वी वर्णन करने वाली प्रसिद्ध कृति 'अचलदास खीची री वचनिका' की रचना चारण कवि शिवदास गाडण ने की थी। 15वीं शताब्दी में रचित यह ग्रंथ राजस्थानी गद्य-पद्य (चंपू) साहित्य और वचनिका विधा का सबसे प्राचीन तथा सर्वोत्कृष्ट उदाहरण स्वीकार किया जाता है।

73. (B) उर्दू और फारसी शब्दावली से युक्त लयात्मक गद्य।
पारंपरिक राजस्थानी दरबारी साहित्य के अंतर्गत 'दवावैत' उस गद्य शैली को कहा जाता है जिसमें उर्दू और फारसी भाषा की शब्दावली का प्रचुर प्रयोग होता है तथा जिसकी वाक्य संरचना लयात्मक एवं तुकांत होती है। दवावैत कला में राजाओं, युद्धों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों की प्रशंसा फारसी प्रभावित राजस्थानी भाषा में की जाती थी। यह विधा मध्यकालीन दरबारी संस्कृति और मुस्लिम भाषाई संपर्कों के प्रभाव को स्पष्ट रुप से दर्शाती है।

(C) बीकानेर
(D) जोधपुर

95. राजस्थान की निम्नलिखित प्रमुख साहित्यिक अकादमियों को उनके मुख्यालयों के आधार पर उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
2. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी
3. राजस्थान साहित्य अकादमी

निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम है?
(A) 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

96. उदयपुर स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी की आधिकारिक पत्रिका के रूप में कौन-सी प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है?
(A) जागती जोत
(B) मरुवाणी
(C) परंपरा
(D) मधुमती

97. मासिक साहित्यिक पत्रिका 'जागती जोत' किस सांस्कृतिक संस्थान का प्रमुख आधिकारिक प्रकाशन है?
(A) बीकानेर स्थित राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
(B) उदयपुर स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी
(C) जयपुर स्थित राजस्थान सिंधी साहित्य अकादमी
(D) बोरुंदा स्थित रुपायण संस्थान

98. भौगोलिक रूप से उत्तर प्रदेश की सीमा से लगी किस राजस्थानी बोली में ब्रजभाषा के साथ सबसे मजबूत व्याकरणिक और शब्दावली समानता दिखाई देती है?
(A) मारवाड़ी
(B) मेवाड़ी
(C) मेवाती
(D) वागड़ी

99. जबकि मारवाड़ी को पश्चिमी राजस्थानी के मानक प्रतिनिधि के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है, कौन-सी प्रमुख बोली पूर्वी राजस्थानी के प्राथमिक प्रतिनिधि मानक के रूप में कार्य करती है?
(A) ढूंढाड़ी
(B) शेखावाटी
(C) थली
(D) अहिरवाटी

100. प्रमुख राजस्थानी बोलियों की तुलनात्मक विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ढूंढाड़ी बोली में सहायक क्रिया 'छै' का व्यापक प्रयोग होता है।
II. मारवाड़ी की एक प्रमुख ध्वन्यात्मक विशेषता 'स' ध्वनि के स्थान पर अक्सर 'ह' ध्वनि का प्रयोग होना है।
III. वागड़ी बोली गुजराती से एक ध्यान देने योग्य ध्वन्यात्मक और शब्दावली प्रभाव प्रदर्शित करती है।
IV. पंजाब से निकटता के कारण मेवाती बोली में पंजाबी व्याकरणिक संरचनाओं की प्रमुखता पाई जाती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) I, III और IV
(B) II, III और IV
(C) I, II, III और IV
(D) I, II और III

www.nodia.in

NODIA

Q. रम्मत
R. भवाई
S. कुचामनी ख्याल

सूची II : प्रमुख क्षेत्र
1. जयपुर
2. बीकानेर / जैसलमेर
3. मेवाड़ क्षेत्र
4. नागौर क्षेत्र

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

86. ऐतिहासिक रूप से, राजस्थान में पारंपरिक व्यावसायिक अभिलेख, बही-खाते और अनौपचारिक संचार मुख्य रूप से किस व्यावहारिक लिपि में लिखे जाते थे?
(A) ब्राह्मी
(B) खरोष्ठी
(C) महाजनी
(D) फारसी-अरबी

87. ऐतिहासिक महाजनी (मोड़िया) लिपि के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) यह लिखे गए प्रत्येक शब्द के ऊपर एक सख्त ऊपरी क्षैतिज रेखा (शिरोरेखा) पर पूरी तरह निर्भर करती है।
(B) यह पारंपरिक ऐतिहासिक प्रशासनिक रजिस्टरों में नीचे से ऊपर की ओर लंबवत लिखी जाती है।
(C) यह ऐतिहासिक रूप से और विशेष रूप से पवित्र, उच्च-स्तरीय मंदिर ग्रंथों और भजनों को लिखने तक सीमित थी।
(D) यह त्वरित प्रवाहमयी लेखन को आसान बनाने के लिए शिरोरेखा का लोप करती है।

88. आज, मानक राजस्थानी साहित्य, आधिकारिक राज्य प्रकाशन और आधुनिक साहित्यिक पत्रिकाएँ सर्वत्र किस लिपि का उपयोग करके प्रकाशित की जाती हैं?
(A) देवनागरी
(B) गुरुमुखी
(C) गुजराती
(D) मोड़ी

89. संवैधानिक मान्यता के लंबे समय से चले आ रहे प्रयास में, राजस्थानी भाषा आंदोलन भारतीय संविधान की किस विशिष्ट अनुसूची में इसे शामिल करने की वकालत करता है?
(A) पाँचवीं अनुसूची
(B) आठवीं अनुसूची
(C) नौवीं अनुसूची
(D) दसवीं अनुसूची

90. राजस्थानी भाषा की संवैधानिक स्थिति और मान्यता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान राज्य विधानसभा ने 2003 में केंद्र से राजस्थानी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने का आग्रह करते हुए एक सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया।
II. 2023 तक, राजस्थानी को आधिकारिक तौर पर आठवीं अनुसूची की 22 भाषाओं में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।
III. राष्ट्रीय साहित्य अकादमी ने 1974 में ही राजस्थानी को एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता दे दी थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) I और II
(B) I और III
(C) II और III
(D) I, II और III

91. 2003 में भारत सरकार द्वारा किस आधिकारिक समिति का गठन किया गया था, जिसने बाद में राजस्थानी (भोजपुरी के साथ) को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की सिफारिश की थी?
(A) महापात्र समिति
(B) न्यायमूर्ति सरकारिया आयोग
(C) शिक्षा कोठारी आयोग
(D) न्यायमूर्ति लोढ़ा समिति

92. राजस्थानी के तीव्र मानकीकरण और अनुसूची में शामिल करने के लिए भाषाई समितियों द्वारा ऐतिहासिक चुनौती के रूप में कौन-सा संरचनात्मक तर्क सबसे अक्सर उद्धृत किया जाता है?
(A) इसका उपयोग ऐतिहासिक रूप से कभी भी औपचारिक लिखित काव्य, लोक साहित्य या क्षेत्रीय गीतों की रचना या संरक्षण के लिए नहीं किया गया है।
(B) इसमें किसी भी दर्ज प्राचीन साहित्यिक ग्रंथ, शाही पांडुलिपि, शास्त्रीय महाकाव्य या सत्यापित ऐतिहासिक वृत्तांत का अभाव है।
(C) इसकी विविध बोलियों के बीच एक एकल मानकीकृत रूप का अभाव संहितीकरण को चुनौतीपूर्ण बनाता है।
(D) यह आधिकारिक लेखन के लिए मानक देवनागरी लिपि को अपनाने या उपयोग करने से सक्रिय और पूरी तरह से इनकार करती है।

93. राज्य में साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष रूप से स्थापित 'राजस्थान साहित्य अकादमी' का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) उदयपुर

94. राजस्थानी भाषा के संरक्षण और संवर्धन के लिए विशेष रूप से समर्पित शीर्ष राज्य संस्थान, 'राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी' कहाँ स्थित है?
(A) जयपुर
(B) उदयपुर

Downloaded from www.pdf.tube

किया गया है। इसका विकास अन्य राजस्थानी बोलियों की भाँति शौरसेनी अपभ्रंश के गुर्जरी रूप से हुआ है, न कि महाराष्ट्री प्राकृत से। महाराष्ट्री प्राकृत से मुख्य रूप से मराठी भाषा का विकास हुआ था। अतः मेवाड़ी का पश्चिमी राजस्थानी से संबंध सत्य है, परंतु महाराष्ट्री प्राकृत से इसके विकास का दावा पूर्णतः निराधार है।

11. (A) महाराणा कुंभा
मेवाड़ के महान शासक महाराणा कुंभा एक महान योद्धा होने के साथ-साथ उच्च कोटि के विद्वान और साहित्यकार थे। उन्होंने संगीतराज, संगीत मीमांसा और सूड़ प्रबंध जैसी विद्वतापूर्ण कृतियों की रचना की। महाराणा कुंभा ने चंडीशतक और गीत गोविंद पर टीकाएँ लिखने के अलावा मेवाड़ी बोली के प्रयोग वाले कई प्रसिद्ध नाटकों की रचना की, जिससे स्थानीय मेवाड़ी बोली को दरबारी और साहित्यिक संरक्षण प्राप्त हुआ।

12. (C) संत दादू दयाल
प्रसिद्ध भक्ति संत दादू दयाल और उनके शिष्यों की आध्यात्मिक रचनाएँ, उपदेश एवं दार्शनिक पद मुख्य रूप से ढूंढाड़ी बोली में संरक्षित हैं। दादू दयाल ने सांभर और नरेना को अपना मुख्य केंद्र बनाया था, जो ढूंढाड़ क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। आम जनता तक अपने भक्ति संदेश पहुँचाने के लिए उन्होंने स्थानीय ढूंढाड़ी भाषा का प्रयोग किया, जिससे ढूंढाड़ी साहित्य को अत्यधिक समृद्धि और व्यापक जनस्वीकार्यता प्राप्त हुई।

13. (D) ढूंढाड़ी
राजस्थान में वक्ताओं की कुल संख्या के दृष्टिकोण से ढूंढाड़ी को सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली बोली माना जाता है। यह बोली जयपुर, दौसा, टोंक और अजमेर के पूर्वी भागों में विस्तृत जनसमूह द्वारा बोली जाती है। हालाँकि भौगोलिक क्षेत्रफल के हिसाब से मारवाड़ी सबसे बड़े क्षेत्र में फैली है, परंतु जयपुर और आसपास के घने आबादी वाले क्षेत्रों के कारण ढूंढाड़ी वक्ताओं की संख्या सबसे अधिक दर्ज की गई है।

14. (C) ढूंढाड़ी
तोरावाटी, राजावाटी, काठेड़ी, चौरासी और नागरचोल प्रसिद्ध पूर्वी राजस्थानी बोली समूह ढूंढाड़ी की प्रमुख उप-बोलियाँ हैं। तोरावाटी मुख्यतः कांतली नदी के प्रवाह क्षेत्र सीकर और जयपुर के उत्तरी भागों में बोली जाती है। राजावाटी जयपुर के पूर्वी भागों में तथा काठेड़ी जयपुर के दक्षिणी भागों में प्रचलित है। ये सभी उप-बोलियाँ ढूंढाड़ी बोली के क्षेत्रीय विस्तार और उसकी विविध व्याकरणिक विशेषताओं को दर्शाती हैं।

15. (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
हाड़ौती बोली मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिलों में बोली जाती है। वागड़ी बोली दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में प्रचलित है। अहिरवाटी बोली कोटपूतली-बहरोड़ और अलवर क्षेत्र में बोली जाती है, जबकि गोडवाड़ी बोली जालोर और पाली जिलों के गोडवाड़ क्षेत्र में बोली जाती है। यह सुमेलित क्रम राजस्थान के विभिन्न भाषाई क्षेत्रों और उनकी विशिष्ट क्षेत्रीय बोलियों के सटीक भौगोलिक वितरण को प्रस्तुत करता है।

16. (D) ढूंढाड़ी
कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ क्षेत्रों में बोली जाने वाली हाड़ौती बोली भाषाई और व्याकरणिक दृष्टि से ढूंढाड़ी बोली से सबसे निकटता से संबंधित है। भाषाविज्ञानियों के अनुसार हाड़ौती को ढूंढाड़ी की ही एक प्रमुख क्षेत्रीय शाखा या उप-बोली माना जाता है। इसमें सहायक क्रिया 'छै' का प्रयोग ढूंढाड़ी की भाँति ही होता है, जिससे दोनों बोलियों के मध्य गहरा संरचनात्मक और शब्दावली संबंधी साम्य स्पष्ट झलकता है।

17. (A) हाड़ौती
बूंदी के प्रसिद्ध राजकवि सूर्यमल मिश्रण की उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं में पिंगल शैली के साथ क्षेत्रीय हाड़ौती बोली का अद्भुत और ओजस्वी मिश्रण देखने को मिलता है। उनकी प्रसिद्ध कृतियों जैसे 'वंश भास्कर' और 'वीर सतसई' में हाड़ौती बोली के स्थानीय शब्दों, मुहावरों और लयात्मकता का प्रभावशाली प्रयोग किया गया है। इस भाषाई समन्वय ने उनकी रचनाओं को एक विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान और साहित्यिक गरिमा प्रदान की है।

18. (C) रेवरेंड जे. सी. केलॉग
वर्ष 1875 में ईसाई मिशनरी रेवरेंड जे. सी. केलॉग ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ए ग्रामर ऑफ द हिंदी लैंग्वेज' में हाड़ौती बोली की व्याकरणिक संरचना को पहली बार मानकीकृत करके लिखित रूप में दर्ज किया था। उन्होंने हाड़ौती के व्याकरण, वाक्य विन्यास और शब्द रूपों का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस कार्य से हाड़ौती बोली के भाषाई अध्ययन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्पष्ट पहचान और मानकीकरण प्राप्त हुआ।

19. (A) मेवाती
प्रसिद्ध निर्गुण भक्ति संत चरणदास और संत लालदास के आध्यात्मिक ग्रंथ, उपदेश और रचनाएँ मुख्य रूप से मेवाती बोली में संरक्षित हैं। चरणदासी और लालदासी संप्रदाय का मुख्य कार्यक्षेत्र अलवर और मेवात क्षेत्र रहा, जहाँ की आम जनता की बोली मेवाती थी। इन संतों ने अपने धार्मिक और सामाजिक सुधार संबंधी संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए मेवाती को सशक्त साहित्यिक एवं उपदेशात्मक माध्यम बनाया।

NODIA

20. (A) मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाती
राजस्थान में पश्चिम से पूर्व की ओर यात्रा करने पर बोलियों का सही भौगोलिक क्रम मारवाड़ी, ढूंढाड़ी और मेवाती है। मारवाड़ी राज्य के पश्चिमी थार मरुस्थलीय भाग (जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर) में बोली जाती है। मध्य-पूर्वी भाग (जयपुर, दौसा, टोंक) में ढूंढाड़ी बोली का प्रभाव है। सबसे पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भाग (अलवर, भरतपुर) में मेवाती बोली जाती है। यह क्रम राज्य के प्रादेशिक भाषाई विस्तार को दर्शाता है।

21. (B) ब्रज भाषा
मेवाती बोली राजस्थानी भाषा और उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध भाषाई परंपरा ब्रजभाषा के बीच एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने ऐतिहासिक भाषाई अध्ययन ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थानी भाषा का पहला वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया था। उन्होंने वर्ष 1912 में राजस्थानी बोलियों का गहन विश्लेषण करके इन्हें पाँच प्रमुख समूहों में विभाजित किया। इस ग्रंथ के प्रकाशन के बाद राजस्थानी भाषा को एक स्वतंत्र भाषाई पहचान मिली, जिससे इस क्षेत्र के भाषावैज्ञानिक अध्ययनों और अनुसंधान कार्यों को व्यापक दिशा प्राप्त हुई।

2. (C) शौरसेनी (गुर्जरी) अपभ्रंश
मानक भाषाई वर्गीकरण के अनुसार राजस्थानी भाषा का उद्भव मुख्य रूप से शौरसेनी अपभ्रंश के गुर्जरी रूप से हुआ माना जाता है। छठी से दसवीं शताब्दी के दौरान अपभ्रंश भाषाओं के विकास क्रम में गुर्जरी अपभ्रंश से राजस्थानी और गुजराती भाषाओं का निकास हुआ। इस भाषाई परंपरा ने राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक संरचना, शब्द भंडार और मौलिक ध्वन्यात्मक विशेषताओं को स्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. (A) मेवाती, राजस्थानी और गुजराती के बीच एक भाषाई सेतु के रूप में कार्य करती है।
मेवाती भाषा राजस्थान के अलवर और भरतपुर क्षेत्र में बोली जाती है तथा यह राजस्थानी और पश्चिमी हिंदी या ब्रजभाषा के मध्य भाषाई सेतु का कार्य करती है। वागड़ी बोली राजस्थानी और गुजराती के बीच एक संपर्क सेतु के रूप में जानी जाती है। पश्चिमी राजस्थानी में मारवाड़ी, मेवाड़ी और वागड़ी शामिल हैं, जबकि पूर्वी समूह में ढूंढाड़ी और हाड़ौती आती हैं। जॉर्ज ग्रियर्सन ने राजस्थानी बोलियों को पाँच प्रमुख वर्गों में विभाजित किया था।

4. (D) हिंद-आर्य भाषा-परिवार
राजस्थानी भाषा ऐतिहासिक और भाषावैज्ञानिक रूप से बृहत् हिंद-आर्य भाषा-परिवार की एक प्रमुख शाखा है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं के अंतर्गत वैदिक संस्कृत से शुरू होकर लौकिक संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से राजस्थानी भाषा का विकास हुआ। यह भाषा मध्य भारत और उत्तर-पश्चिम भारत की अन्य आर्य भाषाओं जैसे हिंदी, गुजराती, मराठी और पंजाबी के साथ घनिष्ठ व्याकरणिक तथा शब्दावली संबंधी ऐतिहासिक संबंध साझा करती है।

5. (B) I और II
मारवाड़ी बोली राजस्थान के सबसे विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र में बोली जाने वाली प्रमुख बोली है। ऐतिहासिक दृष्टि से राजस्थान का अधिकांश पारंपरिक एवं प्राचीन जैन साहित्य मारवाड़ी तथा इसके प्राचीन साहित्यिक रूप में रचा गया है। मारवाड़ी में अनेक क्षेत्रीय उप-बोलियाँ पाई जाती हैं, जिनमें थली, गोडवाड़ी, ढाटकी और बीकानेरी सम्मिलित हैं। इसलिए यह पूरे राज्य में पूर्णतः एक समान नहीं है, बल्कि इसमें क्षेत्रीय भिन्नताएँ विद्यमान हैं।

6. (C) अहिरवाटी
अहिरवाटी बोली मारवाड़ी की उप-बोली न होकर पूर्वी राजस्थानी और मेवाती समूह की एक प्रमुख बोली है, जो मुख्यतः कोटपूतली-बहरोड़, अलवर तथा हरियाणा के सीमावर्ती अहीरवाल क्षेत्र में बोली जाती है। इसके विपरीत थली, गोडवाड़ी और ढाटकी पश्चिमी राजस्थानी के अंतर्गत मारवाड़ी बोली की प्रामाणिक एवं स्थापित उप-बोलियाँ हैं। थली बीकानेर-जैसलमेर में, गोडवाड़ी जालोर-पाली में और ढाटकी बाड़मेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।

7. (D) जोधपुर और बाड़मेर
मानक मारवाड़ी को पश्चिमी राजस्थानी का सबसे प्रमुख और समृद्ध साहित्यिक रूप माना जाता है। यह मुख्यतः जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर और पाली जिलों तथा उनके आसपास के क्षेत्रों में व्यापक रूप से बोली जाती है। ऐतिहासिक रूप से जोधपुर (मारवाड़) इस बोली का केंद्रीय सांस्कृतिक और साहित्यिक केंद्र रहा है, जहाँ से इस बोली के मानक व्याकरणिक और साहित्यिक रूपों का निरंतर विकास और संरक्षण हुआ।

8. (A) डिंगल
राठौड़ राजकुमार पृथ्वीराज द्वारा रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ 'वेलि क्रिसण रुकमणी री' पश्चिमी राजस्थानी के साहित्यिक रूप डिंगल में लिखा गया है। यह ग्रंथ गागरोन दुर्ग में प्रवास के दौरान रचा गया था और इसे राजस्थानी साहित्य की उत्कृष्ट कृति माना जाता है। दुरसा आढ़ा ने इस काव्य ग्रंथ की असाधारण काव्यात्मक उत्कृष्टता, भाषा शैली और पौराणिक महत्व के कारण इसे 'पाँचवाँ वेद और उन्नीसवाँ पुराण' की संज्ञा दी थी।

9. (B) उदयपुर, भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़
मेवाड़ी बोली राजस्थान के मेवाड़ सांस्कृतिक क्षेत्र के अंतर्गत उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद और प्रतापगढ़ जिलों में मूल निवासियों द्वारा बोली जाती है। यह मारवाड़ी के बाद पश्चिमी राजस्थानी वर्ग की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बोली मानी जाती है। इसमें मारवाड़ी जैसी ध्वन्यात्मक समानताएँ पाई जाती हैं, परंतु इसके उच्चारण और स्थानीय शब्दावली में मेवाड़ की भौगोलिक तथा ऐतिहासिक परंपराओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

10. (C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
मेवाड़ी को भाषाई आधार पर मारवाड़ी के साथ पश्चिमी राजस्थानी बोलियों की व्यापक श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत

Click Here to Buy book on Flipkart

32. (D) दुरसा आढ़ा
सिक्सवीं-सत्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध डिंगल कवि दुरसा आढ़ा ने 'विरुद्ध छत्तरी' (बिरद छतरी) नामक प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ में उन्होंने मेवाड़ के महाराणा प्रताप के अद्वितीय स्वाभिमान, देशभक्ति और मुगलों के विरुद्ध उनके निरंतर संघर्ष का ओजस्वी डिंगल शैली में गुणगान किया है। दुरसा आढ़ा मुगल सम्राट अकबर के समकालीन थे, परंतु उन्होंने महाराणा प्रताप की स्वतंत्रता की अडिग भावना की निर्भीक प्रशंसा की।

33. (A) डिंगल
'वेलि क्रिसण रुकमणी री' ग्रंथ भगवान कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह तथा पौराणिक आख्यान का वर्णन करने वाला एक प्रसिद्ध महाकाव्य है। यह ग्रंथ पश्चिमी राजस्थानी की डिंगल साहित्यिक शैली में रचित एक सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसकी रचना बीकानेर के राजकुमार पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा 1580 ईस्वी के आसपास की गई थी। इस ग्रंथ में भक्ति और श्रृंगार रस के साथ डिंगल की काव्यात्मक भव्यता का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलता है।

34. (C) ब्रज भाषा
राजस्थानी साहित्य के संदर्भ में 'पिंगल' शैली को पूर्वी राजस्थानी बोलियों (जैसे ढूंढाड़ी, मेवाती) और उत्तर प्रदेश की ब्रज भाषा का साहित्यिक सम्मिश्रण माना जाता है। डिंगल जहाँ कठोर और ओजपूर्ण शैली थी, वहीं पिंगल अपेक्षाकृत कोमल, मधुर और लयात्मक शैली थी। पिंगल शैली का प्रयोग मुख्य रूप से भाट और ब्राह्मण कवियों द्वारा प्रबंध काव्यों, धार्मिक ग्रंथों और राजाओं की प्रशंसात्मक कविताओं की रचना हेतु किया जाता था।

35. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
डिंगल पश्चिमी राजस्थान की चारण काव्य परंपरा से संबंधित है। पिंगल पूर्वी राजस्थान में ब्रजभाषा प्रभावित साहित्यिक शैली है। पारंपरिक जैन साहित्य मुख्यतः मारवाड़ी के प्राचीन रूपों और अपभ्रंश प्राकृत में लिखा गया। संत साहित्य मुख्य रूप से स्थानीय लोक बोलियों और साधुक्कड़ी भाषा में रचा गया। यह सुमेलित व्यवस्था राजस्थानी साहित्यिक विधाओं के मुख्य सामाजिक और प्रादेशिक आधारों को यथार्थ रूप से निरुपित करती है।

36. (D) भाट और ब्राह्मण
राजस्थान की पारंपरिक पिंगल साहित्यिक परंपरा के विकास और संवर्धन में भाट और ब्राह्मण समुदायों ने सबसे प्रमुख भूमिका निभाई। जहाँ चारण कवियों ने मुख्य रूप से मारवाड़ी आधारित डिंगल शैली में वीर रस के काव्य रचे, वहीं भाट और ब्राह्मण कवियों ने ब्रजभाषा से प्रभावित पिंगल शैली में ऐतिहासिक महाकाव्यों, वंशावलियों और भक्ति रचनाओं का सृजन किया। इन दोनों काव्य शैलियों ने राजस्थानी साहित्य को विविधता प्रदान की।

37. (B) पिंगल
कवि दलपत विजय द्वारा रचित प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ 'खुमाण रासो' में प्रयुक्त भाषाई गुण और शैली इसे मुख्य रूप से पिंगल परंपरा के अनुकूल बनाते हैं। इस ग्रंथ में मेवाड़ के शासक खुमाण के युद्धों, वीरता और ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें पूर्वी राजस्थानी और ब्रजभाषा के तत्वों का सम्मिश्रण दिखाई देता है, जो पिंगल साहित्यिक शैली की मुख्य पहचान माना जाता है।

38. (C) पिंगल
प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' को विद्वानों और इतिहासकारों द्वारा पिंगल साहित्यिक परंपरा का प्रथम प्रमुख और विशाल महाकाव्य माना जाता है। यह ग्रंथ अपभ्रंश, प्रारंभिक हिंदी और ब्रजभाषा मिश्रित पिंगल शैली में रचित है। इसमें छंदों की विविधता, काव्यात्मक अलंकार और प्रबंध काव्य की शास्त्रीय संरचना विद्यमान है, जिसने आने वाले समय में संपूर्ण उत्तर भारत की हिंदी और पिंगल काव्य परंपरा को अत्यधिक प्रभावित किया।

39. (D) राजा पृथ्वीराज तृतीय का जीवन, प्रेम और सैन्य अभियान।
महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' का केंद्रीय आख्यान विषय अजमेर और दिल्ली के चौहान सम्राट पृथ्वीराज तृतीय का जीवन चरित्र है। इसमें उनके बाल्यकाल, राजकुमारी संयोगिता के साथ उनके प्रेम और विवाह तथा शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी के साथ उनके ऐतिहासिक सैन्य अभियानों का विस्तृत वर्णन है। यह ग्रंथ तत्कालीन राजपूतकालीन संस्कृति, युद्ध नीति, दरबारी वातावरण और वीरता के आदर्शों को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत करने वाला एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है।

40. (A) I और II
'पृथ्वीराज रासो' की रचना पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि और मित्र चंदबरदाई ने की थी और यह पृथ्वीराज तथा मोहम्मद गोरी के बीच हुए ऐतिहासिक युद्धों का विस्तार से वर्णन करता है। यह ग्रंथ शास्त्रीय संस्कृत में नहीं, बल्कि अपभ्रंश मिश्रित पिंगल भाषा में लिखा गया है जिसमें स्थानीय बोलियों का प्रभाव है। अतः पहला और दूसरा कथन पूर्णतः सत्य हैं, जबकि तीसरा कथन भाषाई रूप से गलत है।

41. (B) छप्पय
'पृथ्वीराज रासो' महाकाव्य में चंदबरदाई ने 'छप्पय' छंद का अत्यंत कुशल, विविध और प्रभावशाली प्रयोग किया है। छप्पय छंद पर उनके असाधारण अधिकार और उत्कृष्ट काव्यात्मक नियंत्रण के कारण ही उन्हें साहित्य जगत में 'छप्पय का राजा' या 'छंदों का राजा' की उपाधि दी गई। यद्यपि ग्रंथ में दोहा, तोमर और त्रोटक जैसे अन्य छंद भी प्रयुक्त हुए हैं, परंतु छप्पय का प्रयोग इस ग्रंथ की प्रमुख काव्यात्मक विशेषता है।

42. (B) सूर्यमल मिश्रण
प्रसिद्ध राजस्थानी काव्य कृति 'वीर सतसई' के रचयिता बूंदी के महान राजकवि सूर्यमल मिश्रण हैं। उन्होंने इस ग्रंथ की रचना 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौर में की थी। इस कृति में दोहा छंद में रचित 700 से अधिक वीरतापूर्ण पद्य शामिल करने

Downloaded from www.pdf.tube

और भाषाई संक्रमण सेतु का कार्य करती है। यह राजस्थान के अलवर और भरतपुर जिलों में बोली जाती है, जिसकी भौगोलिक सीमाएँ उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र से लगती हैं। इसी कारण मेवाती में राजस्थानी की व्याकरणिक संरचना के साथ-साथ ब्रजभाषा की मधुर शब्दावली और ध्वन्यात्मक विशेषताओं का समावेश देखने को मिलता है।

22. (C) अलवर और भरतपुर
मेवाती बोली आधुनिक राजस्थान के अलवर, भरतपुर, डीग और कोटपूतली-बहरोड़ जिलों में मुख्य रूप से बोली जाती है। यह संपूर्ण क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से 'मेवात' नाम से जाना जाता है, जहाँ मेव समुदाय की बहुलता रही है। इस भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ की बोली पर राजस्थानी और ब्रजभाषा दोनों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है, जिससे मेवाती इस क्षेत्र की एक विशिष्ट सांस्कृतिक और भाषाई पहचान बन गई है।

23. (D) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
प्रसिद्ध भाषाविद् जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने प्रसिद्ध भाषाई सर्वेक्षण में वागड़ी बोली को 'भीली' नाम से संबोधित किया था। उन्होंने यह नामकरण डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र की विशाल जनजातीय भील आबादी द्वारा इस बोली के बहुल प्रयोग के कारण किया था। ग्रियर्सन ने वागड़ी के व्याकरणिक व्याकरण और उच्चारण में भीली बोली तथा गुजराती भाषा के तत्वों का गहरा प्रभाव रेखांकित किया था।

24. (A) डूंगरपुर और बांसवाड़ा
वागड़ी बोली राजस्थान के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों की प्राथमिक पारंपरिक बोली है। इस भौगोलिक क्षेत्र को ऐतिहासिक रूप से 'वागड़' के नाम से जाना जाता है। गुजरात राज्य की भौगोलिक सीमा के समीप होने के कारण वागड़ी बोली पर गुजराती भाषा का अत्यंत गहरा ध्वन्यात्मक, व्याकरणिक और शब्दावली संबंधी प्रभाव देखा जाता है, जो इसे अन्य राजस्थानी बोलियों से अलग करता है।

25. (B) I, II और III
वागड़ी बोली डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में प्रचलित है और इस पर गुजराती भाषा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। निष्कलंक संप्रदाय के संस्थापक संत मावजी के भक्ति ग्रंथ और उपदेश (चौपड़ा) इसी वागड़ी बोली में रचित हैं। वागड़ी बोली देवनागरी लिपि में बाएँ से दाएँ लिखी जाती है, न कि फारसी-अरबी लिपि में। इसलिए प्रथम तीन कथन सत्य हैं, जबकि चौथा कथन भाषाई लिपि के संदर्भ में सर्वथा असत्य है।

26. (B) मारवाड़ी और ढूंढाड़ी
शेखावाटी बोली भौगोलिक और भाषाई दृष्टि से पश्चिमी राजस्थानी की मारवाड़ी और पूर्वी राजस्थानी की ढूंढाड़ी बोलियों के बीच एक मध्यवर्ती या संक्रमणकालीन क्षेत्र के रूप में कार्य करती है। शेखावाटी में मारवाड़ी का बुनियादी ढाँचा और शब्दावली विद्यमान है, जबकि इस पर पूर्वी पड़ोसी ढूंढाड़ी का व्याकरणिक प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। यह स्थिति इसे दोनों प्रमुख बोली समूहों का एक सुंदर भाषाई संगम बनाती है।

27. (A) सीकर, झुंझुनूं और चूरू
शेखावाटी बोली राजस्थान के प्रसिद्ध शेखावाटी सांस्कृतिक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सीकर, झुंझुनूं, चूरू और नीम का थाना जिलों में सबसे अधिक प्रचलित है। इस क्षेत्र के ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक ताने-बाने ने शेखावाटी बोली को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालाँकि इसे भाषावैज्ञानिक रूप से मारवाड़ी की उप-बोली माना जाता है, परंतु इसकी अपनी विशिष्ट ध्वन्यात्मक लयात्मकता और प्रादेशिक पहचान कायम है।

28. (C) सहायक क्रियाओं के लिए 'छै' का बारंबार प्रयोग
बोलचाल की शेखावाटी बोली में सहायक क्रिया के रूप में 'छै' या 'छैं' का बारंबार प्रयोग एक प्रमुख ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक विशेषता है। यह लक्षण इसे पास स्थित ढूंढाड़ी बोली के समीप लाता है। मारवाड़ी की उप-बोली होने के बावजूद शेखावाटी में मारवाड़ी की 'है' या 'हो' के बजाय ढूंढाड़ी शैली की सहायक क्रियाओं का प्रभाव दिखाई देता है, जो इसके मध्यवर्ती भाषाई स्वरुप को स्पष्ट रुप से दर्शाती है।

29. (D) पश्चिमी राजस्थानी
इटली के प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. एल. पी. टेसीटोरी ने राजस्थानी बोलियों को दो मुख्य भागों पश्चिमी और पूर्वी राजस्थानी में बाँटा था। उनके वर्गीकरण के अनुसार शेखावाटी बोली को मारवाड़ी की एक प्रमुख उप-शाखा मानते हुए पश्चिमी राजस्थानी वर्ग के अंतर्गत रखा गया है। शेखावाटी का मुख्य व्याकरणिक ढाँचा, सर्वनाम और संज्ञा रुप मारवाड़ी से अत्यधिक साम्य रखते हैं, जिससे इसका पश्चिमी समूह में वर्गीकरण प्रामाणिक सिद्ध होता है।

30. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
डिंगल पश्चिमी राजस्थानी का एक समृद्ध साहित्यिक रूप है जिसे मुख्य रूप से चारण कवियों द्वारा विकसित और पोषित किया गया। डिंगल शैली की रचनाएँ मुख्यतः वीर रस से ओत-प्रोत होती थीं, जिनका उद्देश्य युद्ध के मैदान में योद्धाओं में उत्साह भरना, उनके पराक्रम का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करना और राजपूत शासकों के शौर्य की प्रशंसा करना था। अतः कथन और कारण दोनों पूर्णतः सही हैं तथा कारण कथन की सटीक व्याख्या करता है।

31. (B) यह ओजस्वी (वीरतापूर्ण) स्वर और सशक्त ध्वनियों द्वारा अभिलक्षित होती है।
डिंगल शैली राजस्थानी साहित्य की एक ऐसी काव्य परंपरा है जो अपने ओजस्वी, वीरतापूर्ण स्वर और कठोर, सशक्त ध्वनियों के लिए जानी जाती है। इस शैली में संयुक्त वर्णों, द्वित्व ध्वनियों और छप्पय जैसे छंदों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता था जो युद्ध के दृश्यों को सजीव बना देते थे। यह शैली चारण परंपरा का मुख्य आधार थी और इसका प्रयोग मुख्य रूप से युद्ध, वीरता और राजाओं के पराक्रम वर्णन हेतु किया जाता था।

NODIA

53. (B) कविराजा श्यामलदास
मेवाड़ रियासत के विस्तृत और प्रामाणिक इतिहास का विवरण देने वाली प्रसिद्ध ऐतिहासिक कृति 'वीर विनोद' की रचना आदरणीय दरबारी इतिहासकार कविराजा श्यामलदास ने की थी। उन्होंने मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह के निर्देश पर इस वृहद ग्रंथ का लेखन प्रारंभ किया था। यह ग्रंथ केवल मेवाड़ ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के इतिहास, राजवंशों और स्थापत्य कला का एक बहुमूल्य और प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज़ माना जाता है।

54. (C) पारंपरिक ज्ञान को व्यक्त करने वाली एक संक्षिप्त लोकोक्ति या कहावत
पारंपरिक राजस्थानी लोक साहित्य के संदर्भ में 'कहावत' या 'केवत' शब्द का अर्थ लोक जीवन में प्रचलित संक्षिप्त लोकोक्ति या सूक्ति है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होती है। इन कहावतों में जनसामान्य के सदियों के व्यावहारिक अनुभवों, नैतिक मूल्यों, कृषि ज्ञान, मौसम संबंधी भविष्यवाणियों और सामाजिक जीवन की गहरी सच्चाइयों को संक्षिप्त, लयात्मक और प्रभावशाली वाक्यों में व्यक्त किया जाता है।

55. (D) P-3, Q-1, R-2, S-4
'बात' राजस्थानी साहित्य में पारंपरिक गद्य कहानी या कथा रूप है। 'वचनिका' तुकांत गद्य-पद्य मिश्रित शैली (चंपू काव्य) है। 'ख्यात' राज्यों की वंशावली और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्ज करने वाला इतिवृत्त है। 'दवावैत' उर्दू-फारसी शब्दावली से युक्त लयात्मक गद्य विधा है। यह सुमेलित वर्गीकरण राजस्थानी गद्य साहित्य के विविध रूपों की संरचनात्मक विशेषताओं और उनकी साहित्यिक पहचान को स्पष्ट रूप से निरूपित करता है।

56. (A) वे दैनिक ग्रामीण जीवन से ली गई संक्षिप्त अभिव्यक्तियाँ हैं।
अधिकांश पारंपरिक राजस्थानी कहावतों की संरचनात्मक प्रकृति और स्रोत दैनिक ग्रामीण जीवन, कृषि कार्य, पशुपालन और प्रादेशिक सामाजिक अनुभवों से गहराई से जुड़े हैं। ये कहावतें किसी एकल विद्वान द्वारा संकलित औपचारिक कानून नहीं हैं, बल्कि आम ग्रामीणों के व्यावहारिक जीवन, नैतिक बोध और सदियों के अनुभवों से स्वाभाविक रूप से उपजी संक्षिप्त, सारगर्भित और जनप्रिय अभिव्यक्तियाँ हैं जो मौखिक रूप से समाज में जीवित रहती हैं।

57. (B) रणथंभौर
प्रसिद्ध राजस्थानी कहावत "तिरिया तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार" रणथंभौर दुर्ग के चौहान शासक हम्मीर देव चौहान की ऐतिहासिक हठ, शरणगत वत्सलता और अदम्य वीरता का बखान करती है। हम्मीर देव ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही मंगोल सेनापति मोहम्मद शाह को अपने दुर्ग में शरण दी थी और शरणार्थी की रक्षा के लिए अपने संपूर्ण राज्य तथा प्राणों की आहुति दे दी, पर अपना वचन नहीं तोड़ा।

58. (B) मुहावरा एक अपूर्ण लाक्षणिक वाक्यांश है, जबकि कहावत ज्ञान व्यक्त करने वाला एक पूर्ण वाक्य है।
भाषाविज्ञान में मुहावरा और कहावत संरचनात्मक रूप से भिन्न होते हैं। मुहावरा एक अपूर्ण वाक्य या लाक्षणिक वाक्यांश होता है जिसका प्रयोग वाक्य के अंत या मध्य में क्रिया के साथ स्वतंत्र रूप से किया जाता है। इसके विपरीत कहावत एक पूर्ण और स्वतंत्र वाक्य होती है जो अपने आप में जीवन के किसी शाश्वत सत्य, अनुभव या नैतिक संदेश को व्यक्त करती है और इसे किसी अन्य वाक्य पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं होती।

59. (A) व्यर्थ, निरर्थक या बेबुनियाद प्रयास करना
सामान्य राजस्थानी मुहावरा "हवा में लठ मारना" वैचारिक रूप से किसी ऐसे कार्य को निरुपित करता है जो पूरी तरह से व्यर्थ, निरर्थक, बेबुनियाद या बिना किसी सोच-विचार के किया गया हो। जिस प्रकार हवा में लाठी चलाने से कोई परिणाम प्राप्त नहीं होता, उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति बिना किसी योजना या स्पष्ट लक्ष्य के निरर्थक प्रयास करता है, तब इस मुहावरे का प्रयोग उसकी निष्फल गतिविधियों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

60. (D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।
राजस्थान की शास्त्रीय और लोक साहित्यिक परंपरा ने कविताओं तथा गद्य में स्थानीय मुहावरों का बहुलता से प्रयोग किया है, अतः कथन गलत है। कारण सही है क्योंकि मुहावरे किसी शाही आदेश से नहीं, बल्कि आम जनता की दैनिक सामाजिक-आर्थिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक वास्तविकताओं के बीच स्वाभाविक रूप से जन्म लेते हैं। अतः कथन असत्य है परंतु कारण पूर्णतः सत्य और प्रामाणिक है।

61. (D) माधुर्य भाव (कांता/प्रेमी भाव भक्ति)
संत शिरोमणि मीराबाई की प्रसिद्ध भक्तिपूर्ण कविताएँ और पद (पदावलियाँ) भगवान श्रीकृष्ण के प्रति 'माधुर्य भाव' या कांता भाव की भक्ति से ओत-प्रोत हैं। मीराबाई ने श्रीकृष्ण को अपना एकमात्र पति, प्रियतम और सर्वस्व मानकर अपनी भक्ति व्यक्त की। उनकी रचनाओं में प्रिय से मिलन की उत्कट अभिलाषा, विरह की तीव्र वेदना और अनन्य समर्पण का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो माधुर्य भक्ति का सर्वोत्तम रूप है।

62. (C) ब्रज भाषा
भाषाई दृष्टि से संत मीराबाई की प्रामाणिक काव्यात्मक रचनाओं को मारवाड़ी और ब्रजभाषा का एक अत्यंत मधुर तथा सुरम्य सम्मिश्रण माना जाता है। मीराबाई का जन्म और प्रारंभिक जीवन राजस्थान (मेड़ता और मेवाड़) में बीता जहाँ मारवाड़ी का प्रभाव था, जबकि उनका उत्तरार्द्ध जीवन वृंदावन और द्वारका में व्यतीत हुआ। इस यात्रा के कारण उनकी पदावली में पश्चिमी राजस्थानी के साथ-साथ ब्रजभाषा की कोमल शब्दावली का प्रचुर समन्वय देखने को मिलता है।

63. (B) राग गोविंद
'राग गोविंद' प्रमुख साहित्यिक कृति है जो पारंपरिक रूप से भक्त शिरोमणि मीराबाई द्वारा रचित मानी जाती है। इसके अतिरिक्त 'मीराबाई री पदावली', 'नरसी जी रो मायरो' (उमादे

Click Here to Buy book on Amazon

की योजना थी, हालाँकि यह पूर्ण न हो सकी। फिर भी इसके उपलब्ध दोहे राजस्थानी वीर काव्य के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण माना जाता हैं।

43. (A) वीर रस (शौर्य और वीरता)
'वीर सतसई' ग्रंथ में चित्रित प्राथमिक रस 'वीर रस' है। इसके दोहों में मातृभूमि की रक्षा, आत्मसम्मान, युद्धभूमि में शौर्य और राजपूत वीरों तथा वीरांगनाओं के अदम्य साहस का ओजस्वी वर्णन किया गया है। सूर्यमल मिश्रण ने इस कृति के माध्यम से निराशा के युग में जनमानस और सामंतों के भीतर स्वाभिमान तथा वीरता की ज्वाला प्रज्वलित करने का अद्भुत प्रयास किया, जिससे यह वीर रस का अनुपम ग्रंथ बना।

44. (C) 1857 की क्रांति
सूर्यमल मिश्रण द्वारा रचित 'वीर सतसई' की मूल प्रेरणा 1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश शासन के विरुद्ध पनपी तीव्र औपनिवेशिक विरोधी भावना थी। ब्रिटिश सत्ता के बढ़ते हस्तक्षेप और भारतीय शासकों की अधीनता से दुःखी होकर कवि ने इस ग्रंथ की रचना की। इसका मुख्य उद्देश्य राजपूताना के शासकों और जनता को अपनी प्राचीन वीर परंपराओं की याद दिलाकर उन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के लिए जागृत करना था।

45. (A) 1, 2, 3
ऐतिहासिक साहित्यिक हस्तियों का सही कालानुक्रमिक क्रम चंदबरदाई, दुरसा आढ़ा और सूर्यमल मिश्रण है। चंदबरदाई 12वीं शताब्दी में पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे। दुरसा आढ़ा 16वीं-17वीं शताब्दी में अकबर और महाराणा प्रताप के समकालीन थे। सूर्यमल मिश्रण 19वीं शताब्दी में बूंदी के रामसिंह के दरबारी कवि थे जिन्होंने 1857 की क्रांति का प्रत्यक्ष काल देखा। अतः कालानुक्रम 1, 2, 3 पूर्णतः सही है।

46. (C) पृथ्वीराज चौहान तृतीय
कवि चंदबरदाई 12वीं शताब्दी के प्रसिद्ध चौहान शासक पृथ्वीराज चौहान तृतीय के राजदरबारी कवि, बालसखा और परम विश्वासपात्र सलाहकार थे। उन्होंने पृथ्वीराज के जीवन, विजयों और संघर्षों को निकटता से देखा तथा उनके सम्मान में अमर महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की। चंदबरदाई केवल एक कवि ही नहीं थे, बल्कि युद्ध कौशल, कूटनीति और राजनीति में भी राजा पृथ्वीराज के साथ निरंतर सहयोगी की भूमिका निभाते थे।

47. (B) दृष्टिहीन पृथ्वीराज चौहान को मोहम्मद गोरी पर बाण चलाने के लिए निर्देशित करना।
"चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण..." दोहा पौराणिक आख्यानों के अनुसार चंदबरदाई द्वारा रचित है। इसका उद्देश्य गजनी की कैद में दृष्टिहीन किए गए पृथ्वीराज चौहान को सुल्तान मोहम्मद गोरी की बैठने की सटीक ऊँचाई और दूरी का संकेत देना था। इस काव्यात्मक माप के आधार पर पृथ्वीराज चौहान ने शब्दभेदी बाण चलाकर मोहम्मद गोरी का वध किया था। यह कथा राजस्थानी वीर गाथा परंपरा का प्रसिद्ध अंग है।

48. (D) उन्होंने पिंगल की नींव रखने के लिए व्याकरण के साथ स्थानीय अपभ्रंश को मिलाया।
चंदबरदाई की साहित्यिक विरासत का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने शास्त्रीय अपभ्रंश को स्थानीय राजस्थानी और ब्रज भाषा के व्याकरणिक रूपों के साथ मिलाकर पिंगल साहित्यिक परंपरा की सुदृढ़ नींव रखी। उनका महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' उत्तर भारत में प्रबंध काव्य और पिंगल भाषा का पथप्रदर्शक ग्रंथ सिद्ध हुआ, जिसने आने वाली कई शताब्दियों तक हिंदी और राजस्थानी साहित्य के विकासात्मक स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया।

49. (A) मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम
मुहणोत नैणसी 17वीं शताब्दी के महान इतिहासकार, लेखक और प्रशासक थे। उन्होंने मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ शासक महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के दरबार में दीवान (प्रधानमंत्री) के उच्च पद पर सेवाएँ दी थीं। अपने प्रशासनिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए नैणसी ने राज्य के राजस्व, भू-व्यवस्था और इतिहास से संबंधित गहन आँकड़े एकत्र किए, जिसके आधार पर उन्होंने 'नैणसी री ख्यात' जैसे कालजयी ग्रंथ की रचना की।

50. (C) I, II और III
'सूरज प्रकाश' की रचना करणीदान ने और 'राज रुपक' की रचना वीरभाण ने की थी। 'नैणसी री ख्यात' को विस्तृत विवरणों के कारण राजस्थान का पहला गजेटियर माना जाता है। चौथा कथन असत्य है क्योंकि 'पाबूजी रा छंद' की रचना मेहाजी चारण ने की थी, सूर्यमल मिश्रण ने नहीं। अतः प्रथम, द्वितीय और तृतीय कथन सही हैं, जबकि चौथा कथन ऐतिहासिक तथ्य की दृष्टि से सर्वथा गलत है।

51. (A) मुहणोत नैणसी
प्रसिद्ध इतिहासकार मुंशी देवी प्रसाद ने 17वीं शताब्दी के मारवाड़ी विद्वान मुहणोत नैणसी को उनके अत्यंत विस्तृत, निष्पक्ष और व्यवस्थित ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण से प्रभावित होकर 'राजपूताने का अबुल फजल' की उपाधि दी थी। नैणसी की कृतियों 'नैणसी री ख्यात' और 'मारवाड़ रा परगना री विगत' में संपूर्ण राजस्थान और पड़ोसी राज्यों का जो व्यापक ऐतिहासिक व प्रशासनिक ब्योरा मिलता है, उसकी तुलना अबुल फजल के 'आईन-ए-अकबरी' से की जाती है।

52. (D) मारवाड़ (जोधपुर)
'बांकीदास री ख्यात' प्रसिद्ध चारण कवि और इतिहासकार बांकीदास आसिया द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ मुख्य रुप से मारवाड़ (जोधपुर) रियासत के राठौड़ शासकों की वंशावली, राजनीतिक घटनाओं, प्रशासनिक निर्णयों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के दस्तावेजीकरण से संबंधित है। बांकीदास जोधपुर के महाराजा मानसिंह के राजकवि थे, इसलिए उनकी ख्यात मारवाड़ के इतिहास को समझने का अत्यंत प्रामाणिक और प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत मानी जाती है।

NODIA

74. (B) बूंदी
आधुनिक राजस्थान के महानतम साहित्यिक दिग्गजों में अग्रणी सूर्यमल मिश्रण बूंदी रियासत के प्रसिद्ध हाड़ा शासक महाराज राव राजा रामसिंह के प्रतिष्ठित राज्य कवि (राजकवि) थे। उन्होंने बूंदी राजदरबार में रहकर अपनी कालजयी रचनाओं जैसे 'वंश भास्कर', 'वीर सतसई', 'बलवंत विलास' और 'छंदोमयूख' की रचना की। अपनी निर्भीक राष्ट्रभक्ति और ओजस्वी लेखन के कारण वे राजस्थानी साहित्य के इतिहास में सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हैं।

75. (A) I, II और III
सूर्यमल मिश्रण राजस्थान के राज्य कवि हैं, उन्होंने महाकाव्य 'वंश भास्कर' और 1857 की क्रांति पर 'वीर सतसई' की रचना की। हालाँकि, वे अपने जीवनकाल में 'वंश भास्कर' को पूर्ण नहीं कर सके थे, इसे बाद में उनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने पूरा किया था। अतः प्रथम तीन कथन पूर्णतः सत्य हैं, जबकि चौथा कथन ऐतिहासिक तथ्य की दृष्टि से गलत है क्योंकि यह ग्रंथ कवि की मृत्यु के समय अधूरा था।

76. (C) हाड़ौती
विस्तृत महाकाव्य ग्रंथ 'वंश भास्कर' मुख्य रूप से हाड़ौती क्षेत्र की प्रसिद्ध बूंदी रियासत के हाड़ा चौहान शासकों के इतिहास, वंशावली और उनकी युद्ध उपलब्धियों का विस्तृत ब्योरा देता है। इस ग्रंथ में बूंदी के इतिहास के साथ-साथ संपूर्ण राजपूताना और भारत के अन्य राजवंशों का प्रामाणिक ऐतिहासिक संदर्भ भी पिंगल और हाड़ौती भाषा में काव्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है, जो इसे एक अनूठा ऐतिहासिक महाकाव्य बनाता है।

77. (D) मुरारीदान
सूर्यमल मिश्रण के निधन के पश्चात उनका विशाल ऐतिहासिक महाकाव्य 'वंश भास्कर' अधूरा रह गया था। इस प्रसिद्ध ग्रंथ को पूरा करने और इसे अंतिम रूप देने का श्रेय सूर्यमल मिश्रण के योग्य दत्तक पुत्र और शिष्य मुरारीदान को दिया जाता है। मुरारीदान ने अपने पिता की काव्य शैली, भाषा प्रवाह और ऐतिहासिक दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए इस अपूर्ण ग्रंथ को कुशलतापूर्वक पूर्ण किया और इसे भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया।

78. (C) विजयदान देथा
'बातां री फुलवारी' राजस्थानी लोक कथाओं का एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित और विशाल संग्रह है, जिसके रचयिता प्रसिद्ध आधुनिक राजस्थानी साहित्यकार विजयदान देथा (बिज्जी) हैं। उन्होंने राजस्थान की मौखिक लोक कथाओं को अत्यंत जीवंत, सरस और प्रामाणिक साहित्यिक रूप में संकलित किया। इस महान साहित्यिक कार्य के लिए उन्हें पद्मश्री और साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा गया।

79. (B) 14
विजयदान देथा द्वारा संकलित एवं रचित राजस्थानी लोक कथाओं के बहुचर्चित और विशाल संग्रह 'बातां री फुलवारी' में मूल रूप से कुल 14 खंड (भाग) शामिल हैं। इस वृहद ग्रंथ में राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में प्रचलित सैकड़ों पारंपरिक लोक कथाओं, कहावतों और किंवदंतियों को साहित्यिक देवनागरी राजस्थानी में संकलित किया गया है। यह संग्रह राजस्थानी लोक साहित्य के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है।

80. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
विजयदान देथा की कहानियाँ ग्रामीण लोककथाओं में बसी होने के साथ-साथ सार्वभौमिक मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं। उनकी लोक कथाओं पर 'दुविधा' और 'पहेली' जैसी प्रसिद्ध फिल्में भी बनी हैं। यहाँ कथन और कारण दोनों स्वतंत्र रूप से पूर्णतः सही तथ्य हैं, परंतु फिल्मों का निर्माण कहानियों के सार्वभौमिक मानवीय विषय-वस्तु होने का मुख्य कारण या व्याख्या नहीं है, बल्कि यह उनकी लोकप्रियता का परिणाम है।

81. (A) ढोला-मारू
राजस्थान में प्रेमपूर्ण त्रासदियों और अमर प्रेम कथाओं के मौखिक तथा काव्यात्मक वाचन में 'ढोला-मारु री बात' सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय क्षेत्रीय किस्सा है। यह नरवर के राजकुमार ढोला और पूंगल की राजकुमारी मारवणी के अमिट प्रेम, विरह वेदना और अंततः पुनर्मिलन की अति सुंदर कथा है। राजस्थानी लोक गायकों और ढाढ़ी-लंगा कलाकारों द्वारा ढोला-मारु के दोहे आज भी संपूर्ण राजस्थान में बड़े चाव से गाए जाते हैं।

82. (C) फड़
'फड़' लोक नाट्य का रूप न होकर राजस्थान की एक प्रसिद्ध पारंपरिक लोक चित्रकला और मौखिक गाथा वाचन परंपरा है, जिसमें कपड़े के लंबे पट पर पाबूजी या देवनारायणजी जैसे लोक देवताओं का जीवन चरित्र चित्रित किया जाता है। इसके विपरीत रम्मत, गवरी और तमाशा राजस्थान के मान्यता प्राप्त और अत्यंत समृद्ध पारंपरिक लोक नाट्य (रंगमंच) रूप हैं, जिनका मंचन कलाकारों द्वारा अभिनय के साथ किया जाता है।

83. (A) भील
'गवरी' जिसे 'राई नृत्य' भी कहा जाता है, मेवाड़ क्षेत्र के भील जनजातीय समुदाय का एक प्राचीन, अनुष्ठानिक और धार्मिक लोक नाट्य है। यह लोक नाट्य रक्षाबंधन के अगले दिन से प्रारंभ होकर लगभग 40 दिनों तक भील पुरुषों द्वारा पूरे क्षेत्र में प्रस्तुत किया जाता है। गवरी लोक नाट्य पूरी तरह से शिव और भस्मासुर की कथा पर आधारित होता है जिसमें केवल पुरुष कलाकार ही भाग लेते हैं।

84. (D) शिव और पार्वती
'तूर्रा-कलंगी' मेवाड़ और मालवा क्षेत्र का एक प्रसिद्ध पारंपरिक ख्याल लोक नाट्य है जो दो अखाड़ों (गुटों) के बीच काव्यात्मक संवाद और दंगल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें 'तूर्रा' पक्ष भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है जो केसरिया ध्वज का प्रयोग करता है, जबकि 'कलंगी' पक्ष माता पार्वती का प्रतीक है जो हरा ध्वज धारण करता है। यह लोक नाट्य शिव-पार्वती के दार्शनिक विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) बाड़मेर
(D) चूरू

42. बीकानेर का ऊंट महोत्सव सामान्यतः पर्यटन विभाग द्वारा किस माह में आयोजित किया जाता है?
(A) अप्रैल
(B) जनवरी
(C) अगस्त
(D) नवंबर

43. कौन सी अनूठी गतिविधि विशेष रूप से बीकानेर के ऊंट महोत्सव का एक मुख्य आकर्षण है?
(A) ऊंट के बालों की कतरन प्रतियोगिताएं
(B) प्रासाद के मैदानों पर शाही हाथी पोलो मैच
(C) स्थानीय लोगों द्वारा ऐतिहासिक पशु चोरी का नाट्य रुपांतरण
(D) मरुस्थलीय मार्गों पर पारंपरिक बैलगाड़ी दौड़

44. ऊंट महोत्सव जैसे विशिष्ट पशु-विषयक उत्सवों के आयोजन में राज्य सरकार का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) विदेशी बाजारों में मरुस्थलीय पशुधन के व्यापक व्यावसायिक वध और निर्यात को सुविधाजनक बनाना।
(B) क्षेत्रीय कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विदेशी पर्यटकों से महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष कर राजस्व उत्पन्न करना।
(C) सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना और ऊंट की आर्थिक भूमिका को रेखांकित करना।
(D) स्थानीय ग्रामीण आबादी को पारंपरिक पशुपालन से व्यवस्थित रूप से विस्थापित करना।

45. गोगाजी मेले के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह हनुमानगढ़ जिले के गोगामेड़ी में आयोजित होता है।
II. यह भाद्रपद मास में मनाया जाता है।
III. यह मेला सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है क्योंकि गोगाजी की पूजा हिंदू और मुस्लिम दोनों करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

46. गोगाजी मेले के दौरान, श्रद्धालु पारंपरिक रूप से स्वयं को और अपने पशुधन को किस विशिष्ट संकट से बचाने के लिए प्रार्थना करते हैं?
(A) अकाल
(B) टिड्डी दल का आक्रमण
(C) सर्पदंश
(D) आकस्मिक बाढ़

47. गोगामेड़ी का स्थान, जहाँ मेला आयोजित होता है, सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ:
(A) गोगाजी का जन्म इस गांव में एक प्रमुख राजपरिवार में हुआ था।
(B) युद्ध में गोगाजी का धड़ गिरा था (धुर मेड़ी)।
(C) भीषण युद्ध के दौरान गोगाजी का कटा हुआ सिर गिरा था (शीर्ष मेड़ी)।
(D) गोगाजी ने एक पवित्र खेजड़ी के वृक्ष के नीचे ध्यान लगाते हुए आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया था।

48. मेले के दौरान गोगामेड़ी धाम में पूजा-अर्चना करने वाले पुजारी पारंपरिक रूप से किस पृष्ठभूमि से आते हैं?
(A) पूर्णतः हिंदू ब्राह्मण जो पूरे वर्ष सभी अनुष्ठानों की अध्यक्षता करते हैं।
(B) आसपास के मरुस्थलीय क्षेत्रों के भील जनजातीय भोपे।
(C) केवल स्थानीय मठीय परंपराओं से जुड़े पूज्य जैन मुनि जो मंदिर के पास रहते हैं।
(D) हिंदू पुजारी और मुस्लिम चायल बारी-बारी से धाम का प्रबंधन करते हैं।

49. प्रसिद्ध तेजाजी पशु मेला, जो आय की दृष्टि से राजस्थान के सबसे बड़े मेलों में से एक है, किस स्थान पर आयोजित होता है?
(A) पर्वतसर (नागौर)
(B) तिलवाड़ा (बालोतरा)
(C) कोलायत (बीकानेर)
(D) झालरापाटन (झालावाड़)

50. पाबूजी को समर्पित मेला, जिन्हें ऊंटों के रक्षक के रूप में पूजा जाता है और मारवाड़ में ऊंट लाने का श्रेय दिया जाता है, मुख्य रूप से किस स्थान पर आयोजित होता है?
(A) आसींद (भीलवाड़ा)
(B) रुणीचा (जैसलमेर)
(C) कोलू मण्ड
(D) देदाड़ (बाड़मेर)

NODIA

51. गुर्जर समुदाय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण देवनारायण जी का मेला मुख्य रूप से किस जिले में आयोजित होता है?
(A) भीलवाड़ा
(B) सीकर
(C) झुंझुनू
(D) दौसा

52. राजस्थान के लोक-देवता मेलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रामदेवरा मेला जैसलमेर जिले में आयोजित होता है।
II. तेजाजी मेला नागोरी नस्ल के मवेशियों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।
III. पाबूजी का मुख्य मेला चैत्र अमावस्या को आयोजित होता है।
IV. देवनारायण मेला मूर्ति के स्थान पर नीम की पत्तियों और ईंटों की पूजा से जुड़ा है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III

में स्थित है। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर (दक्षिण) में स्थित है। अतः उत्तर से दक्षिण की ओर इन अकादमियों के मुख्यालयों का सही भौगोलिक क्रम 1, 2, 3 है। यह क्रम राजस्थान के मानचित्र पर उत्तर में बीकानेर, मध्य में जयपुर और दक्षिण में उदयपुर की भौगोलिक स्थिति को सटीक रूप से निरूपित करता है।

96. (D) मधुमती
उदयपुर स्थित राजस्थान साहित्य अकादमी की आधिकारिक पत्रिका के रूप में 'मधुमती' नाम से एक प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जाता है। यह पत्रिका राज्य और देश भर के साहित्यकारों की उत्कृष्ट रचनाओं, निबंधों, कविताओं और समीक्षाओं को प्रकाशित करके हिंदी तथा राजस्थानी साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसे राजस्थान की एक अत्यंत प्रतिष्ठित और स्तरीय साहित्यिक पत्रिका माना जाता है।

97. (A) बीकानेर स्थित राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
मासिक साहित्यिक पत्रिका 'जागती जोत' बीकानेर स्थित 'राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी' का प्रमुख और आधिकारिक प्रकाशन है। यह पत्रिका विशेष रूप से राजस्थानी भाषा में रचित कविताओं, कहानियों, शोध आलेखों और सांस्कृतिक निबंधों को समर्पित है। इसके माध्यम से राज्य के नए और स्थापित राजस्थानी लेखकों को एक सशक्त मंच प्राप्त होता है, जिससे राजस्थानी भाषा और साहित्य के विकास को निरंतर गति मिलती है।

98. (C) मेवाती
भौगोलिक रूप से उत्तर प्रदेश की सीमा से लगी राजस्थानी बोली 'मेवाती' में ब्रजभाषा के साथ सबसे मजबूत व्याकरणिक और शब्दावली समानताएँ दिखाई देती हैं। मेवाती बोली राजस्थान के अलवर, भरतपुर और डीग जिलों में बोली जाती है जिनकी सीमाएँ उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र से निकटता से जुड़ी हैं। इस निकटता के कारण मेवाती पर ब्रजभाषा का गहरा प्रभाव पड़ा है, जिससे यह दोनों भाषाई परंपराओं का एक सुंदर संगम बन गई है।

99. (A) ढूंढाड़ी
जिस प्रकार मारवाड़ी को पश्चिमी राजस्थानी के मानक प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया गया है, उसी प्रकार 'ढूंढाड़ी' बोली पूर्वी राजस्थानी समूह के प्राथमिक प्रतिनिधि मानक के रूप में कार्य करती है। ढूंढाड़ी जयपुर, दौसा, टोंक और आसपास के विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है। इस बोली की अपनी विशिष्ट व्याकरणिक संरचना है, जिसमें सहायक क्रिया के रूप में 'छै' का प्रयोग होता है, जो इसे पूर्वी समूह में प्रमुखता प्रदान करता है।

100. (D) I, II और III
ढूंढाड़ी में 'छै' का प्रयोग होता है, मारवाड़ी में 'स' के स्थान पर 'ह' का उच्चारण होता है तथा वागड़ी पर गुजराती का प्रभाव है। चौथा कथन गलत है क्योंकि मेवाती पर ब्रजभाषा का प्रभाव है, न कि पंजाबी का, क्योंकि मेवात क्षेत्र उत्तर प्रदेश के पास स्थित है न कि पंजाब के। अतः प्रथम, द्वितीय और तृतीय कथन पूर्णतः सत्य हैं, जबकि चौथा कथन प्रादेशिक भूगोल और भाषाई प्रभाव की दृष्टि से असत्य है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

63. कौन सा स्थानीय हस्तशिल्प उद्योग प्रत्यक्ष उपभोक्ता बिक्री के लिए धार्मिक और पशु मेलों द्वारा जुटने वाली भीड़ पर अत्यधिक निर्भर करता है?
(A) भारी औद्योगिक मशीनरी निर्माण क्षेत्र
(B) टेराकोटा, पीतल के बर्तन और चर्म शिल्प
(C) सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर सेवाएं क्षेत्र
(D) सिंथेटिक रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक उद्योग

64. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A) : परिवहन और संचार में आधुनिक प्रगति के बावजूद, पारंपरिक पशु मेले राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में प्रासंगिकता बनाए हुए हैं।
कारण (R) : वे नस्लों के आनुवंशिक चयन, पशुधन के थोक व्यापार और संबंधित संबद्ध कृषि व्यापारों के लिए एक एकीकृत मंच प्रदान करते हैं जिसे दूरस्थ ग्रामीण बाजार समर्थन नहीं दे सकते।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

65. सहरिया जनजाति का सबसे बड़ा सामाजिक-धार्मिक समागम माना जाने वाला सीताबाड़ी मेला किस जिले में आयोजित होता है?
(A) बारां
(B) डूंगरपुर
(C) प्रतापगढ़
(D) बांसवाड़ा

66. चौथ का बरवाड़ा मेला सवाई माधोपुर क्षेत्र में मुख्य रूप से किस समुदाय के लिए महत्वपूर्ण एक प्रमुख सामाजिक-धार्मिक कार्यक्रम है?
(A) गरासिया
(B) भील
(C) मीणा
(D) काठोड़ी

67. दक्षिण राजस्थान के कई जनजातीय मेलों में, जैसे गरासियों का गौर मेला, धार्मिक पूजा के साथ-साथ पारंपरिक रुप से किस विशिष्ट सामाजिक प्रथा को सुगम बनाया जाता है?
(A) वैवाहिक संबंधों को अंतिम रूप देना
(B) सामुदायिक कृषि भूमि की आधिकारिक सार्वजनिक नीलामी
(C) स्थानीय गांव के सरपंच के लिए लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया
(D) क्षेत्रीय सशस्त्र दस्ते में गांव के युवाओं की अनिवार्य भर्ती

68. आर्थिक रूप से, बेणेश्वर और सीताबाड़ी जैसे जनजातीय मेले किस विशिष्ट प्रकार की वस्तु के व्यापार के लिए महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करते हैं?
(A) बहुमूल्य हीरे और रत्न
(B) आयातित उच्च-तकनीक उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक सामान
(C) व्यावसायिक समुद्री और प्रसंस्कृत तटीय समुद्री भोजन उत्पाद
(D) लघु वन उपज और स्थानीय फसल उपज

69. पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राजस्थान के सांस्कृतिक मेलों और त्योहारों के विपणन के लिए मुख्य रूप से कौन सी राज्य एजेंसी उत्तरदायी है?
(A) राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम और राजमार्ग प्राधिकरण
(B) आरटीडीसी और पर्यटन विभाग
(C) देवस्थान विभाग
(D) स्वायत्त शासन विभाग

NODIA

70. राजस्थान में पर्यटन के लिए मेलों को बढ़ावा देने में राज्य सरकार की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सरकार पुष्कर और मरु महोत्सव जैसे प्रमुख कार्यक्रमों के दौरान तंबू आवास के साथ "पर्यटक ग्राम" स्थापित करती है।
II. विशेष पर्यटक ट्रेनें और पैकेज्ड यात्रा कार्यक्रम मेलों की तिथियों के साथ समन्वित किए जाते हैं।
III. विदेशी पर्यटकों के लिए विशिष्टता सुनिश्चित करने के लिए सरकार मेलों में स्थानीय लोगों की भागीदारी पर स्थायी रुप से प्रतिबंध लगाती है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

71. राष्ट्रीय पर्यटन अभियानों में पुष्कर और जैसलमेर मरु महोत्सव जैसे मेलों को रणनीतिक रूप से सम्मिलित करना राज्य के लिए किस व्यापक आर्थिक उद्देश्य को पूरा करता है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में कुल राज्य कृषि उपज को व्यवस्थित रुप से कम करना।
(B) घनी शहरी आबादी को दूरस्थ ग्रामीण मरुस्थलीय बस्तियों में स्थायी रुप से विस्थापित करना।
(C) ऐतिहासिक धार्मिक संस्थानों और प्राचीन मंदिर न्यासों का पूर्णतः निजीकरण करना।
(D) विदेशी मुद्रा अर्जित करना और आतिथ्य क्षेत्र में रोजगार बढ़ाना।

72. जयपुर में पर्यटन विभाग द्वारा पारंपरिक रूप से आयोजित किस वसंत उत्सव में अलंकृत हाथियों की एक भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है?
(A) हाथी महोत्सव
(B) उदयपुर का मेवाड़ महोत्सव

9. कोलायत मेला मुख्य रूप से किस पूज्य ऋषि के आश्रम से जुड़ा हुआ है?
(A) महर्षि दधीचि
(B) कपिल मुनि
(C) महर्षि वशिष्ठ
(D) महर्षि वाल्मीकि

10. कोलायत मेले से जुड़ा एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान झील में प्रज्वलित दीपों को प्रवाहित करना है। इस अनुष्ठान को क्या कहा जाता है?
(A) आरती
(B) दीपदान
(C) जलझूलनी
(D) पिंड दान

11. राजस्थान में किस समुदाय के अनुयायी करणी माता के वंश से जुड़ी एक ऐतिहासिक दुखद घटना के कारण पारंपरिक रूप से कोलायत मेले में जाने से परहेज करते हैं?
(A) चारण
(B) बिश्नोई
(C) राजपूत
(D) मेघवाल

12. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A) : कोलायत मेले और पुष्कर मेले के मुख्य धार्मिक अनुष्ठानों में अत्यधिक समानताएं हैं।
कारण (R) : दोनों मेले कार्तिक पूर्णिमा को आयोजित होते हैं और दोनों में दीपदान तथा पवित्र झील में स्नान का अनुष्ठान सम्मिलित है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

13. राजस्थान के किस नगर में वसंत के आगमन का स्वागत करने के लिए पारंपरिक रूप से मेवाड़ महोत्सव मनाया जाता है?
(A) जोधपुर
(B) चित्तौड़गढ़
(C) राजसमंद
(D) उदयपुर

14. मेवाड़ महोत्सव का एक अनूठा दृश्य आकर्षण अलंकृत मूर्तियों की शोभायात्रा है। पारंपरिक रूप से इन मूर्तियों को विसर्जन के लिए कहाँ ले जाया जाता है?
(A) फतेह सागर झील
(B) जयसमंद झील
(C) पिछोला झील
(D) उदय सागर झील

15. मेवाड़ महोत्सव के दौरान पूजी जाने वाली और शोभायात्रा में निकाली जाने वाली मूर्तियाँ किस दिव्य युगल का प्रतिनिधित्व करती हैं?
(A) राधा और कृष्ण
(B) ईसर और गौरी
(C) सीता और राम
(D) ब्रह्मा और सावित्री

NODIA

16. गणगौर त्योहार के साथ मेवाड़ महोत्सव के संबंध का सबसे उपयुक्त विवरण क्या है?
(A) इसका गणगौर से कोई संबंध नहीं है और यह पारंपरिक रूप से पूरी तरह से अलग ऋतु में मनाया जाता है।
(B) यह गणगौर के पूर्ण प्रतिस्थापन के रूप में कार्य करता है क्योंकि अविवाहित महिलाओं के सम्मिलित होने पर कठोर मनाही है।
(C) इसकी शुरुआत एक विशिष्ट जनजातीय सभा के रूप में हुई थी जो केवल ऐतिहासिक संयोग से गणगौर के साथ मेल खाती थी।
(D) यह मेवाड़ की सांस्कृतिक कलाओं का उत्सव मनाने वाला गणगौर त्योहार का ही एक जीवंत, स्थानीय विस्तार है।

17. श्रावणी तीज पारंपरिक रूप से हिंदू पंचांग के किस मास के शुक्ल पक्ष के दौरान मनाई जाती है?
(A) श्रावण
(B) चैत्र
(C) ज्येष्ठ
(D) भाद्रपद

18. राजस्थान में विवाहित महिलाओं के लिए तीज त्योहार का प्राथमिक धार्मिक महत्व क्या है?
(A) पुत्र रत्न की प्राप्ति और उसके उत्तम स्वास्थ्य के लिए भक्तिपूर्वक प्रार्थना करना
(B) प्रचुर कृषि समृद्धि और पारिवारिक धन की कामना करना
(C) अपने पतियों की दीर्घायु और कल्याण के लिए प्रार्थना करना
(D) निरंतर पारिवारिक शांति बनाए रखने के लिए कुलदेवताओं की पूजा करना

19. राजस्थान में श्रावणी तीज त्योहार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मानसून के आगमन का प्रतीक है।
II. नवविवाहित महिलाओं को 'सिंजारा' भेजने की पारंपरिक प्रथा इस त्योहार का एक अभिन्न अंग है।
III. इसकी विशेषता वृक्षों पर टंगे अलंकृत झूलों पर महिलाओं का झूलना है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

20. भव्य रूप से सजाए गए हाथियों, ऊंटों और लोक कलाकारों से सुसज्जित देवी तीज की शाही सवारी किस नगर का प्रमुख पर्यटक आकर्षण है?
(A) बीकानेर
(B) जैसलमेर
(C) कोटा
(D) जयपुर

21. राजस्थान में होली के अगले दिन से आरंभ होकर पारंपरिक गणगौर त्योहार सामान्यतः कितने दिनों तक मनाया जाता है?
(A) 9 दिन
(B) 16 दिन
(C) 18 दिन
(D) 21 दिन

22. गणगौर त्योहार से जुड़े निम्नलिखित अनुष्ठानों को उनके पारंपरिक क्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. विवाहित और अविवाहित महिलाओं द्वारा मूर्तियों की पूजा करना
II. होलिका दहन की भस्म एकत्र करना और गेहूं/जौ के बीज बोना
III. नगर में देवों की भव्य शोभायात्रा
IV. जल निकाय में मूर्तियों का विसर्जन
(A) II, I, III, IV
(B) I, II, IV, III
(C) II, III, I, IV
(D) I, IV, II, III

23. अनूठा "धींगा गवर" त्योहार, जो गणगौर का ही एक रूप है जहाँ महिलाएँ स्वांग रचती हैं और पुरुषों को लाठियों से मारती हैं, किन नगरों से प्रसिद्ध रूप से जुड़ा है?
(A) जयपुर और चित्तौड़गढ़
(B) बीकानेर और झुंझुनू
(C) अजमेर और भीलवाड़ा
(D) जोधपुर और उदयपुर

24. राजस्थान का कौन सा नगर ईसर (भगवान शिव) की मूर्ति के बिना केवल गवर (गौरी) की पूजा करके गणगौर मनाने के लिए जाना जाता है?
(A) जैसलमेर
(B) बीकानेर
(C) बाड़मेर
(D) झालावाड़

25. जबकि श्रावणी तीज जयपुर में प्रसिद्ध है, कजली तीज (जिसे बड़ी तीज या सातुड़ी तीज भी कहा जाता है) किस जिले में अनोखे ढंग से धूमधाम से मनाई जाती है?
(A) कोटा
(B) बूंदी
(C) सवाई माधोपुर
(D) टोंक

26. कजली तीज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है।
II. बूंदी में नवल सागर गेट से देवी की एक भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है।
III. महिलाएँ संध्या के अनुष्ठान के भाग के रूप में नीम के वृक्ष की पूजा करती हैं।
IV. यह त्योहार अविवाहित महिलाओं द्वारा सत्तू के सेवन को प्रतिबंधित करता है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल IV
(D) केवल II और IV

27. कजली तीज का समय मानक श्रावणी तीज से मौलिक रूप से किस प्रकार भिन्न है?
(A) कजली तीज भाद्रपद कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है, जबकि श्रावणी तीज श्रावण शुक्ल पक्ष में मनाई जाती है।
(B) कजली तीज केवल भीषण ग्रीष्म ऋतु में मनाई जाती है, जबकि श्रावणी तीज शीत ऋतु के अंत में होती है।
(C) कजली तीज केवल चैत्र में रात्रि के समय मनाई जाती है, जबकि श्रावणी तीज दिवस के समय होती है।
(D) कजली तीज एक शुभ अधिमॉस त्योहार है जो हिंदू पंचांग में प्रति चार वर्ष में केवल एक बार आता है।

28. कजली तीज त्योहार के दौरान किस वृक्ष का विशेष धार्मिक महत्व है और पारंपरिक रूप से उसकी पूजा की जाती है?
(A) पीपल
(B) बरगद
(C) नीम
(D) खेजड़ी

29. बेणेश्वर मेला किन तीन नदियों के पवित्र संगम पर आयोजित होता है?
(A) बनास, बेड़च और मेनाल
(B) चंबल, बनास और सीप
(C) लूनी, सुकड़ी और जवाई
(D) माही, सोम और जाखम

30. कौन सा जनजातीय समुदाय बेणेश्वर मेले को अपना सबसे बड़ा समागम मानता है, जिसे प्रायः 'आदिवासियों का कुंभ' कहा जाता है?
(A) सहरिया
(B) गरासिया
(C) भील
(D) मीणा

31. बेणेश्वर स्थित शिव मंदिर की अनूठी धार्मिक विशेषता क्या है?
(A) गर्भगृह में शुद्ध ठोस स्वर्ण से निर्मित एक प्राचीन शिवलिंग स्थापित है।

Downloaded from www.pdf.tube

(B) इस अनूठे मंदिर में खंडित शिवलिंग की पूजा की जाती है।
(C) मुख्य गर्भगृह के देवता की पूजा पारंपरिक रूप से केवल महिला श्रद्धालुओं द्वारा की जाती है।
(D) संपूर्ण गर्भगृह वर्ष भर निरंतर जल में मग्न रहता है।

32. बेणेश्वर मेले का मुख्य स्नान अनुष्ठान और चरमोत्कर्ष किस चंद्र मास में होता है?
(A) कार्तिक पूर्णिमा
(B) चैत्र अमावस्या
(C) श्रावण पूर्णिमा
(D) माघ पूर्णिमा

33. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : मेला
P. पुष्कर मेला
Q. गणगौर
R. बेणेश्वर मेला
S. श्रावणी तीज
सूची II : आयोजन का पारंपरिक चंद्र मास
1. माघ
2. कार्तिक
3. श्रावण
4. चैत्र
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

34. निम्नलिखित में से कौन सा उस मुख्य धार्मिक कार्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है जो कार्तिक पूर्णिमा के दौरान लाखों श्रद्धालुओं को पुष्कर और कोलायत खींच लाता है?
(A) क्षेत्रीय लोक-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशु बलि देना
(B) अग्निस्नान अनुष्ठान के दौरान प्रज्वलित अंगारों पर नंगे पैर चलना
(C) पापों के प्रक्षालन हेतु पवित्र झील में स्नान करना
(D) स्थानीय प्रमुख को सीधे ताज़ा कटे गेहूं के दाने अर्पित करना

35. पुष्कर मेले में प्रमुख धार्मिक अनुष्ठानों के समापन के लिए चंद्रमा की किस विशिष्ट तिथि को अत्यंत शुभ माना जाता है?
(A) पूर्णिमा
(B) अमावस्या
(C) अष्टमी
(D) एकादशी

36. उस मेले की पहचान कीजिए जो कार्तिक पूर्णिमा को समाप्त नहीं होता है।
(A) पुष्कर मेला
(B) कोलायत मेला
(C) चंद्रभागा मेला
(D) बेणेश्वर मेला

37. थार मरुस्थल की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाला विश्व प्रसिद्ध मरु महोत्सव (डेजर्ट फेस्टिवल) प्रतिवर्ष किस नगर में आयोजित किया जाता है?
(A) बाड़मेर
(B) जैसलमेर
(C) बीकानेर
(D) जोधपुर

38. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A) : जैसलमेर के मरु महोत्सव में मिस्टर डेजर्ट, साफा बांधने की प्रतियोगिता और ऊंट पोलो जैसी गैर-धार्मिक सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का प्रमुखता से आयोजन किया जाता है।
कारण (R) : यह उत्सव धार्मिक तीर्थयात्रा के रूप में आरंभ होने के स्थान पर, विशेष रुप से क्षेत्रीय विरासत को प्रदर्शित करने और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित एक राज्य-प्रायोजित कार्यक्रम है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

39. कौन सी प्रतिष्ठित भौगोलिक विशेषता मरु महोत्सव की समापन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के लिए पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है?
(A) नक्की झील
(B) मेहरानगढ़ दुर्ग
(C) अरावली पहाड़ियाँ
(D) सम के धोरे (बालुका स्तूप)

40. जनवरी से आरंभ होने वाले एक मानक कैलेंडर वर्ष में सामान्यतः आयोजित होने वाले निम्नलिखित पर्यटन उत्सवों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(A) ऊंट महोत्सव (बीकानेर), मरु महोत्सव (जैसलमेर), मेवाड़ महोत्सव (उदयपुर), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)
(B) मरु महोत्सव (जैसलमेर), ऊंट महोत्सव (बीकानेर), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर), मेवाड़ महोत्सव (उदयपुर)
(C) मेवाड़ महोत्सव (उदयपुर), मरु महोत्सव (जैसलमेर), ऊंट महोत्सव (बीकानेर), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)
(D) ऊंट महोत्सव (बीकानेर), मेवाड़ महोत्सव (उदयपुर), मरु महोत्सव (जैसलमेर), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)

41. अंतरराष्ट्रीय ऊंट महोत्सव राजस्थान के किस जिले में आयोजित होने वाला एक वार्षिक कार्यक्रम है?
(A) जैसलमेर
(B) बीकानेर

NODIA

85. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
तमाशा लोक नाट्य जयपुर का प्रसिद्ध पारंपरिक रूप है। रम्मत मुख्यतः बीकानेर और जैसलमेर क्षेत्रों में होली के अवसर पर आयोजित की जाती है। भवाई नाट्य व्यावसायिक लोक नाट्य शैली है जो मेवाड़ क्षेत्र में अधिक प्रचलित है। कुचामनी ख्याल नागौर क्षेत्र के कुचामन और आसपास के अंचलों से संबंधित है। यह सुमेलित क्रम राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य रूपों और उनके मूल सांस्कृतिक क्षेत्रों को दर्शाता है।

86. (C) महाजनी
ऐतिहासिक रूप से राजस्थान में व्यापारियों, महाजनों और साहूकारों द्वारा बही-खाते, व्यावसायिक अभिलेख और अनौपचारिक पत्र-व्यवहार लिखने के लिए जिस व्यावहारिक लिपि का प्रयोग किया जाता था, उसे 'महाजनी' या 'मोड़िया' लिपि कहा जाता है। यह लिपि तीव्र गति से बिना हाथ उठाए लिखने के लिए विकसित की गई थी। मध्यकालीन और रियासती काल में संपूर्ण राजपूताना के व्यापारिक लेनदेन और वित्तीय अभिलेख इसी महाजनी लिपि में सुरक्षित रखे जाते थे।

87. (D) यह त्वरित प्रवाहमयी लेखन को आसान बनाने के लिए शिरोरेखा का लोप करती है।
ऐतिहासिक महाजनी (मोड़िया) लिपि की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि यह त्वरित और प्रवाहमयी लेखन को आसान बनाने के लिए शब्दों के ऊपर खींची जाने वाली क्षैतिज रेखा यानी शिरोरेखा का पूरी तरह से लोप करती है। इसमें अक्षरों को मोड़कर लिखा जाता था जिससे कलम उठाए बिना तेजी से लिखा जा सके। यह लिपि मुख्यतः महाजनों और व्यापारियों द्वारा हिसाब-किताब रखने हेतु प्रयुक्त होती थी, न कि मंदिर ग्रंथों के लिए।

88. (A) देवनागरी
वर्तमान समय में मानक राजस्थानी साहित्य, आधिकारिक राज्य प्रकाशन, शोध पत्र और आधुनिक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ सर्वत्र 'देवनागरी' लिपि का उपयोग करके ही प्रकाशित की जाती हैं। यद्यपि प्राचीन काल में महाजनी लिपि का प्रयोग व्यापारिक कार्यों में होता था, परंतु आधुनिक काल में मानकीकरण, मुद्रण की सुगमता और व्यापक पठनीयता को ध्यान में रखते हुए देवनागरी लिपि को ही राजस्थानी भाषा की मुख्य और आधिकारिक लिपि के रूप में अपनाया गया है।

89. (B) आठवीं अनुसूची
राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता प्रदान करने के लंबे समय से चले आ रहे भाषा आंदोलन के अंतर्गत इसे भारतीय संविधान की 'आठवीं अनुसूची' में शामिल करने की निरंतर मांग और वकालत की जा रही है। संविधान की आठवीं अनुसूची भारत की आधिकारिक मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची प्रस्तुत करती है। राजस्थानी को इसमें शामिल करने से इसे राष्ट्रीय स्तर पर भाषाई दर्जा, संरक्षण और प्रशासनिक स्वीकृति प्राप्त हो सकेगी।

90. (B) I और III
राजस्थान विधानसभा ने 2003 में राजस्थानी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने हेतु सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया था और केंद्रीय साहित्य अकादमी ने 1974 में ही इसे स्वतंत्र साहित्यिक भाषा की मान्यता दे दी थी। परंतु 2023 तक राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची की 22 आधिकारिक भाषाओं में शामिल नहीं किया गया है। अतः पहला और तीसरा कथन सही हैं, जबकि दूसरा कथन वर्तमान संवैधानिक स्थिति के संदर्भ में असत्य है।

91. (A) महापात्र समिति
वर्ष 2003 में भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा सीताकांत महापात्र की अध्यक्षता में आधिकारिक महापात्र समिति का गठन किया गया था। इस समिति का मुख्य कार्य आठवीं अनुसूची में नई भाषाओं को शामिल करने के मानकों का अध्ययन करना था। महापात्र समिति ने अपनी रिपोर्ट में राजस्थानी और भोजपुरी भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की स्पष्ट और सकारात्मक सिफारिश की थी।

92. (C) इसकी विविध बोलियों के बीच एक एकल मानकीकृत रूप का अभाव संहितीकरण को चुनौतीपूर्ण बनाता है।
राजस्थानी भाषा के मानकीकरण और इसे आठवीं अनुसूची में शामिल करने के मार्ग में भाषाई समितियों द्वारा सबसे बड़ा संरचनात्मक तर्क यह दिया जाता है कि इसकी विविध क्षेत्रीय बोलियों (जैसे मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाती, हाड़ौती) के बीच एक सर्वमान्य मानकीकृत रूप का अभाव है। इस विविधता के कारण संपूर्ण राज्य के लिए एक सर्वसम्मत व्याकरणिक और साहित्यिक संहिता तैयार करना एक कठिन और जटिल भाषाई चुनौती सिद्ध हो रहा है।

93. (D) उदयपुर
राज्य में साहित्य के विकास, प्रोत्साहन और संरक्षण के लिए स्थापित 'राजस्थान साहित्य अकादमी' का मुख्यालय उदयपुर शहर में स्थित है। इस संस्था की स्थापना जनवरी 1958 में की गई थी। यह अकादमी हिंदी और राजस्थानी साहित्य की विविध विधाओं के संवर्धन हेतु पुरस्कार प्रदान करती है, संगोष्ठियों का आयोजन करती है और अपनी प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका 'मधुमती' का नियमित प्रकाशन करती है, जिससे प्रादेशिक साहित्य को नई दिशा मिलती है।

94. (C) बीकानेर
राजस्थानी भाषा, साहित्य और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए विशेष रूप से समर्पित शीर्ष राज्य संस्थान 'राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी' बीकानेर शहर में स्थित है। इस अकादमी की स्थापना जनवरी 1983 में की गई थी। यह संस्था राजस्थानी भाषा में मौलिक लेखन, शोध और अनुवाद को बढ़ावा देने के लिए 'जागती जोत' नाम से एक प्रसिद्ध मासिक पत्रिका का संपादन और प्रकाशन भी करती है।

95. (B) 1, 2, 3
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर (उत्तर) में स्थित है। राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर (मध्य)

Click Here to Buy book on Amazon

(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) I, II, III और IV

53. बाबा रामदेवजी को समर्पित रामदेवरा मेला रुणीचा में आयोजित होता है। यह स्थान वर्तमान में किस जिले के अंतर्गत आता है?
(A) जोधपुर
(B) जैसलमेर
(C) बीकानेर
(D) बाड़मेर

54. रामदेवरा मेले की सबसे प्रमुख सामाजिक विशेषता क्या है जो बाबा रामदेवजी की विरासत को अलग पहचान देती है?
(A) यह मुख्य मंदिर प्रांगण में वंचित वर्गों के प्रवेश और भागीदारी को सख्ती से रोकता है।
(B) यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा मेला है जहाँ प्राचीन परंपरा द्वारा धार्मिक पशु बलि औपचारिक रूप से अनिवार्य है।
(C) यह हिंदू-मुस्लिम सद्भाव और अस्पृश्यता के निवारण का प्रतीक है।
(D) यह बिना किसी धार्मिक या आध्यात्मिक संदर्भ के विशेष रूप से एक कृषि-आर्थिक सभा के रूप में कार्य करता है।

55. रामदेवरा मेले के दौरान कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा भूमि पर बैठकर कौन सा विशिष्ट पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किया जाता है?
(A) कालबेलिया नृत्य
(B) घूमर नृत्य
(C) भवाई नृत्य
(D) तेरह ताली

56. रामदेवरा मेला चंद्र पंचांग की किस विशिष्ट अवधि के दौरान आयोजित होता है?
(A) भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी
(B) चैत्र शुक्ल एकादशी से चैत्र पूर्णिमा
(C) कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा से कार्तिक अमावस्या
(D) माघ शुक्ल पंचमी से माघ पूर्णिमा

57. चंद्रभागा मेला झालावाड़ जिले के किस नगर में आयोजित होने वाला एक महत्वपूर्ण पशु एवं धार्मिक मेला है?
(A) भवानी मंडी
(B) झालरापाटन
(C) पिड़ावा
(D) अकलेरा

58. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : मेला
P. बेणेश्वर मेला
Q. चंद्रभागा मेला
R. कोलायत मेला
S. पुष्कर मेला
सूची II : संबंधित नदी/जल निकाय
1. कपिल मुनि झील
2. माही नदी संगम
3. पुष्कर झील
4. चंद्रभागा नदी
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

59. चंद्रभागा मेले का पशु व्यापार खंड विशेष रूप से कृषि कार्य के लिए उपयुक्त मवेशियों की किस नस्ल के क्रय-विक्रय के लिए प्रसिद्ध है?
(A) मालवी
(B) साहीवाल
(C) मुर्रा
(D) थारपारकर

60. चैत्र से आरंभ होने वाले हिंदू चंद्र पंचांग के आधार पर निम्नलिखित पारंपरिक त्योहारों और मेलों को उनके आयोजित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. गणगौर
II. पुष्कर मेला
III. श्रावणी तीज
IV. गोगाजी मेला
(A) I, IV, III, II
(B) III, I, II, IV
(C) I, III, IV, II
(D) IV, I, III, II

NODIA

61. राजस्थान के ग्रामीण मेलों द्वारा निभाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण स्थानीय आर्थिक कार्य क्या है?
(A) वे ग्रामीण क्षेत्रों में संस्थागत शेयर बाजार के रूप में कार्य करते हैं।
(B) वे व्यक्तिगत राज्य आयकर के आकलन और संग्रहण के लिए प्रशासनिक तंत्र के रूप में कार्य करते हैं।
(C) वे मुख्य रूप से स्थानीय रूप से उत्पादित नकदी फसलों को सीधे विदेशी अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात करने का कार्य करते हैं।
(D) वे पशुधन, उपकरणों के व्यापार और ग्रामीण ऋण के केंद्रीय केंद्र हैं।

62. राजस्थान के प्रमुख ग्रामीण मेलों के दौरान लगाए जाने वाले अस्थायी बाजार, जो स्थानीय शिल्पकारों को नित्य उपयोग की वस्तुएं बेचने का मंच प्रदान करते हैं, पारंपरिक रूप से क्या कहलाते हैं?
(A) मंडियां
(B) चौपालें
(C) हाट बाजार
(D) विशेष आर्थिक क्षेत्र

अध्याय 14

राजस्थान के मेले और त्योहार

1. राजस्थान के पारंपरिक मेले और त्योहार मुख्य रूप से किस पंचांग प्रणाली के अनुसार आयोजित किए जाते हैं?
(A) विक्रम संवत चंद्र पंचांग
(B) ग्रेगोरियन पंचांग
(C) शक संवत सौर पंचांग
(D) हिजरी पंचांग

2. त्योहार की तुलना में राजस्थान में एक पारंपरिक "मेले" की सबसे सटीक पारिभाषिक विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) त्योहार विशेष रूप से धार्मिक होता है, जबकि मेला विशेष रूप से आर्थिक होता है।
(B) मेलों का आयोजन पूरी तरह से राज्य सरकार द्वारा किया जाता है, जबकि त्योहारों का प्रबंधन स्थानीय समुदायों द्वारा किया जाता है।
(C) मेले में व्यापार, धर्म या उत्सव के लिए किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान पर एक बड़ी जनसभा सम्मिलित होती है, जबकि त्योहार प्रायः घरेलू स्तर पर मनाया जाता है।
(D) मेले केवल मानसून के मौसम में होते हैं, जबकि त्योहार पूरे वर्ष फैले रहते हैं।

3. राजस्थान के सांस्कृतिक संदर्भ में, प्रसिद्ध कहावत "तीज त्योंहारा बावड़ी, ले डूबी गणगौर" त्योहारों के चक्र के बारे में क्या दर्शाती है?
(A) त्योहारों की शुरुआत श्रावणी तीज से होती है और अंत गणगौर से होता है।
(B) त्योहारों की शुरुआत गणगौर से होती है और अंत तीज से होता है।
(C) तीज और गणगौर दोनों विशेष रूप से जल विसर्जन अनुष्ठानों से जुड़ी हैं।
(D) तीज और गणगौर के बीच कृषि फसल की कटाई के कारण त्योहारों का समय बाधित होता है।

4. राजस्थान में मेलों के सामान्य वर्गीकरण के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(A) मेलों को मोटे तौर पर धार्मिक मेलों, पशु मेलों और जनजातीय मेलों में वर्गीकृत किया गया है।
(B) मौसमी मेलों का आयोजन कृषि चक्रों के परिवर्तन और जलवायु परिवर्तनों को चिह्नित करने के लिए किया जाता है।
(C) लोक-देवता मेले क्षेत्रीय नायकों के बलिदान या चमत्कारों की स्मृति में आयोजित होने वाले स्थानीय समागम हैं।
(D) व्यावसायिक पशु मेले मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र में केंद्रित हैं।

5. पुष्कर मेले का धार्मिक महत्व किस प्रमुख देवता को समर्पित मंदिर की उपस्थिति से गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसे भारत में अत्यंत दुर्लभ माना जाता है?
(A) भगवान शिव
(B) भगवान ब्रह्मा
(C) भगवान विष्णु
(D) भगवान सूर्य

6. पुष्कर मेले में मुख्य धार्मिक स्नान अनुष्ठान किस चंद्र मास के दौरान होता है?
(A) चैत्र
(B) श्रावण
(C) कार्तिक
(D) माघ

7. पुष्कर मेले के पशु व्यापार घटक में ऊंटों और घोड़ों के व्यापक व्यापार के साथ-साथ मवेशियों की किस विशिष्ट नस्ल को मुख्य रूप से सम्मिलित किया जाता है?
(A) थारपारकर
(B) कांकरेज
(C) राठी
(D) गिर

8. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : मेला
P. पुष्कर मेला
Q. मल्लीनाथ मेला
R. नागौर मेला
S. चंद्रभागा मेला
सूची II : प्राथमिक व्यापार/पशु केंद्रित
1. नागोरी मवेशी
2. मालवी मवेशी
3. थारपारकर मवेशी
4. गिर मवेशी और ऊंट
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

Downloaded from www.pdf.tube

(C) अंतरराष्ट्रीय ऊंट महोत्सव
(D) जोधपुर का मारवाड़ महोत्सव

73. राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता मेलों का एक बड़ा सांद्रण, जिसमें रामदेवजी, गोगाजी और तेजाजी के मेले सम्मिलित हैं, भाद्रपद मास द्वारा चिह्नित किस पारंपरिक ऋतु के दौरान होता है?
(A) भीषण शीत ऋतु
(B) वर्षा ऋतु / मानसूनोत्तर काल
(C) वसंत ऋतु
(D) ग्रीष्म ऋतु

74. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में एक प्रमुख वसंतोत्सव माना जाता है, जो शीत ऋतु के अंत और रबी की फसल की कटाई का संकेत देता है?
(A) कजली तीज
(B) गणगौर
(C) बेणेश्वर मेला
(D) ऊंट महोत्सव

75. जोधपुर में मारवाड़ महोत्सव पारंपरिक रूप से शरद ऋतु में आने वाली किस सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण चंद्र तिथि से मेल खाने के लिए निर्धारित किया जाता है?
(A) शरद पूर्णिमा
(B) चैत्र अमावस्या
(C) मकर संक्रांति
(D) वसंत पंचमी

76. त्योहारों के मौसमी वर्गीकरण में, उदयपुर में शिल्पग्राम उत्सव पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए किस अवधि में आयोजित किया जाता है?
(A) मध्य-ग्रीष्म (जून)
(B) मुख्य मानसून काल (अगस्त)
(C) दिसंबर का अंतिम सप्ताह (शीत ऋतु)
(D) हिंदू नव वर्ष का प्रारंभ (मार्च/अप्रैल)

77. मेले और जिस मास में यह मनाया जाता है, उसके संबंध में असत्य युग्म की पहचान कीजिए।
(A) बेणेश्वर मेला – माघ
(B) पुष्कर मेला – कार्तिक
(C) श्रावणी तीज – श्रावण
(D) कोलायत मेला – चैत्र

78. राजस्थान में मेलों, उनके स्थानों, तिथियों और मुख्य देवताओं या आकर्षणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सीताबाड़ी मेला – बारां – ज्येष्ठ – सहरिया कुंभ
II. खाटू श्यामजी मेला – सीकर – फाल्गुन – भगवान कृष्ण स्वरुप
III. महावीरजी मेला – करौली – चैत्र – जैन तीर्थंकर
IV. कैला देवी मेला – सवाई माधोपुर – कार्तिक – लक्खी मेला

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

79. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख लोक-देवता मेला अनूठा है क्योंकि यह चैत्र और आश्विन नवरात्रों से तालमेल बिठाते हुए वर्ष में दो बार आयोजित किया जाता है?
(A) बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर जिला)
(B) करणी माता मेला (देशनोक)
(C) गोगाजी मेला (हनुमानगढ़ जिला)
(D) रामदेवरा मेला (जैसलमेर जिला)

80. नव वर्ष के आरंभ से हिंदू चंद्र पंचांग में आने वाले निम्नलिखित लोक-देवता मेलों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(A) रामदेवरा मेला, तेजाजी मेला, पाबूजी मेला
(B) तेजाजी मेला, पाबूजी मेला, रामदेवरा मेला
(C) पाबूजी मेला, रामदेवरा मेला, तेजाजी मेला
(D) पाबूजी मेला, तेजाजी मेला, रामदेवरा मेला

NODIA

81. तिलवाड़ा का मल्लीनाथ पशु मेला विशेष रूप से मवेशियों और घोड़ों की किन दो विशिष्ट नस्लों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है?
(A) थारपारकर मवेशी और मालानी घोड़े
(B) मालवी भारवाही मवेशी और काठियावाड़ी नस्ल के घोड़े
(C) गिर दुधारू मवेशी और मारवाड़ी देशी घोड़े
(D) नागोरी बैल मवेशी और सिंधी नस्ल के घोड़े

82. उदयपुर में पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (WZCC) द्वारा विशेष रूप से पारंपरिक ग्रामीण हस्तशिल्प और प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा देने के लिए किस सांस्कृतिक कार्यक्रम की स्थापना की गई थी?
(A) मेवाड़ महोत्सव
(B) चंद्रभागा मेला
(C) शिल्पग्राम उत्सव
(D) बेणेश्वर मेला

83. पुष्कर मेला पशुपालन से स्वाभाविक रूप से जुड़ी हस्तशिल्प कलाकृतियों की किस विशिष्ट श्रेणी के लिए एक विशाल विशेष बाजार के रूप में कार्य करता है?
(A) चमड़े का जीन और पशुओं का साज-सामान
(B) सूक्ष्म समुद्री मोती और सीप आभूषण शिल्प
(C) भारी ढाले हुए पीतल के तोप और तोपखाने के सामान
(D) औद्योगिक जूट कपड़ा बुनाई उत्पाद

84. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : हस्तशिल्प / व्यापार वस्तु
P. मालानी घोड़े
Q. ऊंट की खाल की कलाकृतियां (उस्ता कला का प्रभाव)
R. कृषि संबंधी पीतल/लोहे के उपकरण

67. (A) वैवाहिक संबंधों को अंतिम रुप देना
दक्षिण राजस्थान के विभिन्न जनजातीय मेलों, जैसे सिरोही क्षेत्र में आयोजित होने वाले गरासियों के गौर मेले में धार्मिक पूजा-अर्चना के साथ-साथ एक विशिष्ट सामाजिक प्रथा का निर्वहन किया जाता है। इन मेलों में युवा एक-दूसरे को पसंद करते हैं तथा जनजातीय परंपराओं के अनुसार वैवाहिक संबंधों और जीवनसाथी के चयन को अंतिम रुप दिया जाता है। यह परंपरा जनजातीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

68. (D) लघु वन उपज और स्थानीय फसल उपज
बेणेश्वर और सीताबाड़ी जैसे जनजातीय मेले आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि ये मेले जनजातीय लोगों द्वारा एकत्र की जाने वाली लघु वन उपज (जैसे महुआ, शहद, गोंद, जड़ी-बूटियाँ) और स्थानीय कृषि फसलों के क्रय-विक्रय के मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। इन मेलों में व्यापारी सीधे आदिवासियों से इन प्राकृतिक संसाधनों को खरीदते हैं, जिससे जनजातीय परिवारों को उचित नकद आय प्राप्त होती है।

69. (B) आरटीडीसी और पर्यटन विभाग
राजस्थान में पर्यटकों को आकर्षित करने, राज्य की सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार-प्रसार करने तथा प्रमुख मेलों और त्योहारों के विपणन के लिए मुख्य रूप से राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) और राज्य पर्यटन विभाग उत्तरदायी हैं। ये एजेंसियां घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञापन अभियानों, हेरिटेज महोत्सवों के आयोजन तथा होटल आवास और परिवहन सुविधाओं के विकास का कार्य व्यवस्थित रुप से करती हैं।

70. (A) केवल I और II
राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए सरकार मेलों के दौरान अस्थायी तंबू आवास युक्त 'पर्यटक ग्राम' स्थापित करती है और विशेष पर्यटक ट्रेनों तथा भ्रमण पैकेजों का समन्वय करती है। हालाँकि, सरकार स्थानीय लोगों की भागीदारी पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाती, बल्कि स्थानीय संस्कृति और जनसहभागिता ही इन मेलों का मुख्य आकर्षण होती है। अतः इस संबंध में पहला और दूसरा कथन पूरी तरह सत्य है।

71. (D) विदेशी मुद्रा अर्जित करना और आतिथ्य क्षेत्र में रोजगार बढ़ाना।
राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन अभियानों में पुष्कर मेले तथा जैसलमेर मरु महोत्सव जैसे सांस्कृतिक आयोजनों को रणनीतिक रूप से शामिल करने का मुख्य आर्थिक उद्देश्य राज्य में विदेशी पर्यटकों की आवक बढ़ाना है। इससे भारी मात्रा में विदेशी मुद्रा का अर्जन होता है तथा स्थानीय आतिथ्य, परिवहन, हस्तशिल्प और गाइड सेवाओं जैसे क्षेत्रों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के व्यापक अवसर उत्पन्न होते हैं।

72. (A) हाथी महोत्सव
जयपुर में पर्यटन विभाग द्वारा वसंत ऋतु के अवसर पर पारंपरिक रुप से 'हाथी महोत्सव' का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव का मुख्य आकर्षण अलंकृत और चित्रित हाथियों की एक अत्यंत भव्य शोभायात्रा होती है। आमेर दुर्ग की पृष्ठभूमि में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में हाथियों का श्रृंगार, हाथी दौड़ तथा हाथी पोलो जैसी मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन पर्यटकों के आनंद हेतु किया जाता है।

73. (B) वर्षा ऋतु / मानसूनोत्तर काल
राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता मेलों का एक बड़ा जमघट, जिसमें बाबा रामदेवरा, गोगाजी, तेजाजी तथा देव नारायण जी के मेले शामिल हैं, भाद्रपद मास में आयोजित होता है। यह अवधि पारंपरिक रुप से वर्षा ऋतु अथवा मानसूनोत्तर काल से मेल खाती है। कृषि बुवाई के पश्चात् और फसल पकने के बीच का यह समय ग्रामीण जनों के लिए धार्मिक तीर्थयात्राओं और उत्सवों को मनाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है।

74. (B) गणगौर
राजस्थान में गणगौर पर्व को एक प्रमुख वसंतोत्सव के रूप में मनाया जाता है। चैत्र मास में आयोजित होने वाला यह पर्व शीत ऋतु के समापन और रबी फसल की कटाई के समय का संकेत देता है। प्रकृति में नए फूल खिलने और मौसम सुहावना होने पर यह त्योहार नवजीवन तथा उमंग का संदेश लाता है। महिलाएँ और कन्याएँ इसे अत्यंत हर्षोल्लास एवं भक्तिभाव से मनाती हैं।

75. (A) शरद पूर्णिमा
जोधपुर का प्रसिद्ध मारवाड़ महोत्सव पारंपरिक रुप से आश्विन मास में आने वाली शरद पूर्णिमा की तिथि से मेल खाने के लिए निर्धारित किया जाता है। इस दो दिवसीय उत्सव में मारवाड़ क्षेत्र की वीरता, मांड संगीत, लोक नृत्य तथा सांस्कृतिक धरोहर का भव्य प्रदर्शन किया जाता है। उम्मेद भवन और मेहरानगढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में आयोजित यह महोत्सव पर्यटकों को आकर्षित करता है।

76. (C) दिसंबर का अंतिम सप्ताह (शीत ऋतु)
उदयपुर में स्थित शिल्पग्राम में आयोजित होने वाला प्रसिद्ध 'शिल्पग्राम उत्सव' प्रतिवर्ष दिसंबर के अंतिम सप्ताह (21 दिसंबर से 30 दिसंबर) में शीत ऋतु के दौरान आयोजित किया जाता है। इस दस दिवसीय हस्तशिल्प मेले में भारत के विभिन्न राज्यों से आए शिल्पकार, बुनकर और लोक कलाकार अपनी कला तथा हस्तशिल्प उत्पादों का प्रदर्शन करते हैं, जो शीतकालीन पर्यटन का प्रमुख केंद्र बनता है।

77. (D) कोलायत मेला – चैत्र
राजस्थान के मेलों और उनके आयोजन मासों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि बेणेश्वर मेला माघ मास में, पुष्कर मेला कार्तिक पूर्णिमा को तथा श्रावणी तीज श्रावण मास में आयोजित होती है। इसके विपरीत बीकानेर का कोलायत मेला चैत्र मास में न होकर कार्तिक पूर्णिमा को आयोजित होता है। अतः कोलायत मेला और चैत्र मास का यह युग्म पूरी तरह असत्य तथा असंगत है।

78. (A) केवल I, II और III
राजस्थान के मेलों से संबंधित विवरणों में सीताबाड़ी मेला (बारां, ज्येष्ठ, सहरिया कुंभ), खाटू श्यामजी मेला (सीकर, फाल्गुन) तथा महावीरजी मेला (करौली, चैत्र, जैन तीर्थंकर) के कथन सत्य हैं। परंतु कैला देवी का प्रसिद्ध लक्खी मेला सवाई

Click Here to Buy book on Flipkart

95. प्रमुख मेलों के प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन और सरकार की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. प्रशासन जन-नियंत्रण, अस्थायी बैरिकेडिंग और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी है।

II. स्वास्थ्य विभाग रोगों के प्रकोप को रोकने के लिए अस्थायी चिकित्सा एवं पशु चिकित्सालय स्थापित करता है।

III. स्थानीय नगर निकाय या पंचायतें स्वच्छता और स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था का प्रबंधन करती हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

96. कौन सी एक महत्वपूर्ण आधुनिक प्रशासनिक चुनौती है जो कभी-कभी राज्य सरकार को पशु मेलों को पूरी तरह से निरस्त या प्रतिबंधित करने के लिए विवश करती है?

(A) शीत ऋतु के दौरान राज्य में आने वाले विदेशी पर्यटकों की भारी कमी।
(B) पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पूर्णतः अंतर्देशीय मत्स्य पालन में परिवर्तित हो जाना।
(C) सभी देशी नस्लों पर प्रतिबंध लगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय पशु अधिकार समूहों द्वारा औपचारिक मांगें।
(D) लंपी त्वचा रोग जैसी संक्रामक पशुधन बीमारियों का फैलना।

97. पर्वतसर का वीर तेजाजी राज्य पशु मेला और मेड़ता सिटी का बलदेव पशु मेला मुख्य रूप से किस माध्यम से राज्य के लिए महत्वपूर्ण राजस्व उत्पन्न करते हैं?

(A) पशुधन विक्रय और परिवहन पर लगाया जाने वाला मेला कर
(B) आने वाले विदेशी पर्यटकों से एकत्र की गई अनिवार्य प्रवेश टिकट बिक्री
(C) क्षेत्रीय रूप से निर्मित हस्तशिल्प पर लगाई गई उच्च निर्यात शुल्क दरें
(D) प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों द्वारा प्रदान की जाने वाली पर्याप्त कॉर्पोरेट प्रायोजन निधि

98. सरकारी विभागों और मेला प्रबंधन में उनकी पारंपरिक भूमिकाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. पर्यटन विभाग: वैश्विक विपणन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

II. देवस्थान विभाग: धार्मिक मेलों के दौरान राज्य के स्वामित्व वाले प्रमुख मंदिरों का प्रबंधन और रखरखाव।

III. पुलिस विभाग: यातायात विनियमन, सुरक्षा और जन-नियंत्रण।

IV. लोक निर्माण विभाग (PWD): धार्मिक फरमान जारी करना और मंदिर के अनुष्ठानों को संचालित करना।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

99. राजस्थान सरकार का देवस्थान विभाग धार्मिक मेलों के दौरान एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक भूमिका निभाता है। इसका प्राथमिक अधिकार क्षेत्र क्या है?

(A) राज्य-सहायता प्राप्त मंदिरों, न्यासों और बंदोबस्ती का प्रशासन करना।
(B) पूरे राज्य में सभी ग्रामीण कृषि उपज बाजारों और मंडियों का प्रबंधन और विनियमन करना।
(C) विशेष रूप से विदेशी तीर्थयात्रियों के लिए अंतरराष्ट्रीय उड़ान बुकिंग और यात्रा वीजा का प्रबंधन करना।
(D) पारंपरिक कुटीर उद्योग हस्तशिल्प के व्यावसायिक उत्पादन और बिक्री को विनियमित करना।

100. कठोर राष्ट्रीय पशु कल्याण नियमों (जैसे पशु क्रूरता निवारण अधिनियम) के कार्यान्वयन ने राजस्थान में पारंपरिक मेलों के प्रशासनिक प्रबंधन को किस प्रकार प्रभावित किया है?

(A) इसके कारण पूरे राज्य में सभी ग्रामीण पशु मेलों का प्रत्यक्ष रूप से पूर्ण, स्थायी विधायी उन्मूलन हुआ है।
(B) इसके तहत कानूनी रूप से सभी व्यापारिक पशुधन को तुरंत स्थानांतरित कर राज्य द्वारा संचालित शहरी चिड़ियाघरों में रखना आवश्यक है।
(C) इसने पशु मेलों के प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र को राज्य सरकार से सीधे संयुक्त राष्ट्र में स्थानांतरित कर दिया है।
(D) यह पशु कल्याण निगरानी, परिवहन नियमों को अनिवार्य बनाता है और क्रूरतापूर्ण क्रीड़ाओं पर प्रतिबंध लगाता है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

22. (A) II, I, III, IV
गणगौर पर्व के अनुष्ठानों में एक निश्चित क्रमिक व्यवस्था पाई जाती है। सर्वप्रथम होली दहन की भस्म एकत्र कर उसमें जौ के बीज बोए जाते हैं। इसके पश्चात् महिलाओं द्वारा 16 दिनों तक प्रतिदिन ईसर-गौरी की प्रतिमाओं की पूजा की जाती है। उत्सव के अंतिम दिनों में नगर में देवों की भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है और अंत में पवित्र जल निकाय में मूर्तियों का विसर्जन किया जाता है।

23. (D) जोधपुर और उदयपुर
धींगा गवर उत्सव गणगौर का ही एक अनूठा और विशिष्ट सांस्कृतिक रूप है, जो मुख्य रूप से जोधपुर और उदयपुर नगरों में प्रसिद्ध है। इस उत्सव के दौरान महिलाएँ विभिन्न स्वांग रचती हैं और रात्रि में लाठियाँ लेकर निकलती हैं। मार्ग में आने वाले पुरुषों को सांकेतिक रूप से लाठियों से मारने की अनूठी परंपरा इस त्योहार की प्रमुख पहचान है, जो इसे अत्यंत जीवंत और रोचक बनाती है।

24. (A) जैसलमेर
जैसलमेर नगर अपनी एक अनूठी ऐतिहासिक घटना के कारण बिना ईसर की केवल गवर (गौरी) की पूजा करने के लिए जाना जाता है। ऐतिहासिक वृत्तांतों के अनुसार गणगौर शोभायात्रा के समय बीकानेर के शासकों द्वारा ईसर की मूर्ति छीन ली गई थी। तभी से जैसलमेर में केवल गवर की प्रतिमा सजाकर शोभायात्रा निकाली जाती है। यह परंपरा चैत्र शुक्ल चतुर्थी को विशेष रूप से निभाई जाती है।

25. (B) बूंदी
राजस्थान के बूंदी जिले में कजली तीज (जिसे बड़ी तीज या सातुड़ी तीज भी कहा जाता है) अत्यंत अनोखे और भव्य ढंग से मनाई जाती है। जहाँ जयपुर श्रावणी तीज के लिए प्रसिद्ध है, वहीं बूंदी अपनी कजली तीज की भव्य शोभायात्रा और लोक उत्सवों के लिए जाना जाता है। इस अवसर पर पूरा नगर सांस्कृतिक रंगों में सराबोर हो जाता है और माता तीज की सवारी निकाली जाती है।

26. (C) केवल IV
कजली तीज भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया को मनाई जाती है। बूंदी में नवल सागर से तीज की भव्य शोभायात्रा निकलती है और महिलाएँ नीम के वृक्ष की पूजा करती हैं। इस व्रत में सत्तू का सेवन किया जाता है तथा अविवाहित कन्याओं पर सत्तू खाने पर कोई प्रतिबंध नहीं होता। अतः यह कथन असत्य है कि इस पर्व में अविवाहित महिलाओं द्वारा सत्तू का सेवन प्रतिबंधित होता है।

27. (A) कजली तीज भाद्रपद कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है, जबकि श्रावणी तीज श्रावण शुक्ल पक्ष में मनाई जाती है।
कजली तीज और श्रावणी तीज के आयोजन समय में मुख्य पंचांगीय अंतर पाया जाता है। श्रावणी तीज श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है, जिसे छोटी तीज भी कहते हैं। इसके विपरीत कजली तीज भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है, जिसे बड़ी तीज भी कहा जाता है। दोनों के मनाए जाने के पक्ष और मास परस्पर भिन्न हैं।

28. (C) नीम
कजली तीज त्योहार के दौरान नीम के वृक्ष का विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व होता है। इस दिन व्रत रखने वाली महिलाएँ शाम को चंद्रोदय से पूर्व नीम की टहनी (नीमड़ी) की स्थापना कर उसकी जल, रोली और अक्षत से विधिवत पूजा करती हैं। पूजा के पश्चात् नीमड़ी के दर्शन कर अर्घ्य दिया जाता है और सत्तू खाकर व्रत खोला जाता है, जो इस पर्व का मुख्य विधान है।

29. (D) माही, सोम और जाखम
डूंगरपुर जिले के नवाटापुरा स्थान पर आयोजित होने वाला प्रसिद्ध बेणेश्वर मेला तीन नदियों के पवित्र संगम पर स्थित है। ये तीन नदियाँ माही, सोम और जाखम हैं। इस त्रिवेणी संगम को अत्यंत पवित्र तीर्थ माना जाता है। माघ पूर्णिमा के अवसर पर इन तीनों नदियों के पावन संगम में स्नान करने और शिव मंदिर में दर्शन करने के लिए भारी संख्या में श्रद्धालु एवं जनजातीय लोग एकत्रित होते हैं।

30. (C) भील
बेणेश्वर मेले को भील जनजातीय समुदाय का सबसे बड़ा और पवित्र समागम माना जाता है। इसी कारण इस मेले को 'आदिवासियों का कुंभ' कहा जाता है। राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के दूर-दराज के क्षेत्रों से भील समुदाय के हज़ारों लोग अपने सांस्कृतिक परिधानों में यहाँ आते हैं। वे त्रिवेणी संगम में अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं और लोक संस्कृति का उत्सव मनाते हैं।

31. (B) इस अनूठे मंदिर में खंडित शिवलिंग की पूजा की जाती है।
बेणेश्वर स्थित बेणेश्वर महादेव मंदिर की सबसे अनूठी धार्मिक विशेषता यह है कि यहाँ खंडित शिवलिंग की पूजा की जाती है। सामान्य हिंदू धर्मशास्त्रों में खंडित मूर्तियों की पूजा वर्जित मानी जाती है, परंतु इस स्थान पर पाँच स्थानों से खंडित शिवलिंग की पूजा अत्यंत श्रद्धापूर्वक की जाती है। माना जाता है कि संत मावजी की तपस्या से जुड़े होने के कारण इस शिवलिंग का धार्मिक महत्त्व अक्षुण्ण है।

32. (D) माघ पूर्णिमा
बेणेश्वर मेले का मुख्य धार्मिक स्नान अनुष्ठान और चरमोत्कर्ष माघ पूर्णिमा के दिन संपन्न होता है। यद्यपि मेले का आयोजन माघ शुक्ल एकादशी से प्रारंभ हो जाता है, परंतु माघ पूर्णिमा का दिन सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। इस दिन श्रद्धालु त्रिवेणी संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं, भगवान शिव की पूजा करते हैं और अपने पित्रों की शांति हेतु धार्मिक अनुष्ठान संपन्न करते हैं।

33. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान के प्रमुख मेले और त्योहार विशिष्ट चंद्र मासों में आयोजित किए जाते हैं। पुष्कर मेला कार्तिक मास में आयोजित होता है, जबकि गणगौर का त्योहार चैत्र मास में मनाया जाता

NODIA

11. (A) चारण
राजस्थान में चारण समुदाय के लोग पारंपरिक रुप से बीकानेर के कोलायत मेले में जाने से परहेज करते हैं। इसके पीछे एक ऐतिहासिक मान्यता जुड़ी है, जिसके अनुसार करणी माता के दत्तक पुत्र लखन की अकाल मृत्यु कोलायत झील में डूबने से हो गई थी। इस दुखद घटना के कारण चारण समाज कोलायत सरोवर को शोक का प्रतीक मानता है और वहाँ आयोजित होने वाले मेले में भाग नहीं लेता।

12. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
कोलायत मेला और पुष्कर मेला दोनों ही राजस्थान की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा में समान स्थान रखते हैं। दोनों मेलों का आयोजन एक ही दिन यानी कार्तिक पूर्णिमा को किया जाता है। इसके अतिरिक्त दोनों स्थानों पर पवित्र सरोवर में धार्मिक स्नान करने और जल में दीपदान करने का विधान है। अतः इन दोनों मेलों के मुख्य अनुष्ठानों में पाई जाने वाली अत्यधिक समानता का मूल आधार उनका समान तिथिक्रम है।

13. (D) उदयपुर
मेवाड़ महोत्सव राजस्थान के झीलों के नगर उदयपुर में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला एक प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव है। यह उत्सव वसंत ऋतु के आगमन का स्वागत करने के लिए बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दौरान नगर को सुंदरता से सजाया जाता है और स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी जाती हैं। यह आयोजन क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को प्रदर्शित करता है।

14. (C) पिछोला झील
उदयपुर में मेवाड़ महोत्सव के दौरान अलंकृत मूर्तियों की एक भव्य और आकर्षक शोभायात्रा निकाली जाती है। स्थानीय महिलाएँ और श्रद्धालु पारंपरिक परिधानों में सजी मूर्तियों को सिर पर रखकर नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए ले जाते हैं। इस शोभायात्रा का अंतिम गंतव्य प्रसिद्ध पिछोला झील का गणगौर घाट होता है, जहाँ धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार मूर्तियों का विसर्जन झील के पवित्र जल में किया जाता है।

15. (B) ईसर और गौरी
मेवाड़ महोत्सव तथा गणगौर पर्व के दौरान पूजी जाने वाली और शोभायात्रा में निकाली जाने वाली मूर्तियाँ दिव्य युगल ईसर और गौरी का प्रतिनिधित्व करती हैं। ईसर भगवान शिव के प्रतीक हैं और गौरी माता पार्वती का स्वरुप मानी जाती हैं। श्रद्धालु दांपत्य जीवन में सुख, समृद्धि और अखंड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इन दिव्य प्रतिमाओं की विशेष पूजा-अर्चना करते हैं तथा शोभायात्रा आयोजित करते हैं।

16. (D) यह मेवाड़ की सांस्कृतिक कलाओं का उत्सव मनाने वाला गणगौर त्योहार का ही एक जीवंत, स्थानीय विस्तार है।
मेवाड़ महोत्सव मूलतः गणगौर त्योहार का ही एक भव्य और विस्तृत रुप है, जिसे उदयपुर की स्थानीय कला, संगीत और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ जोड़ा गया है। गणगौर के धार्मिक अवसरों पर आयोजित होने वाले अनुष्ठानों को यह महोत्सव एक बड़े मंच पर प्रस्तुत करता है। इसमें लोक नृत्य, संगीत और पारंपरिक शोभायात्राओं का समायोजन होता है, जिससे यह क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाता है।

17. (A) श्रावण
श्रावणी तीज, जिसे छोटी तीज भी कहा जाता है, हिंदू पंचांग के श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है। यह त्योहार विशेष रुप से वर्षा ऋतु के आगमन की खुशी में मनाया जाता है। प्राकृतिक सौंदर्य और हरियाली के बीच मनाया जाने वाला यह पर्व महिलाओं के लिए अत्यंत हर्षोल्लास का अवसर होता है, जिसमें प्रकृति पूजन तथा सांस्कृतिक परंपराओं का निर्वहन किया जाता है।

18. (C) अपने पतियों की दीर्घायु और कल्याण के लिए प्रार्थना करना
राजस्थान में विवाहित महिलाओं के लिए श्रावणी तीज का अत्यंत उच्च धार्मिक महत्त्व है। इस दिन महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु, स्वास्थ्य तथा सुखी दांपत्य जीवन के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और देवी पार्वती की पूजा करती हैं। यह पर्व अखंड सौभाग्य की कामना से जुड़ा हुआ है। महिलाएँ नए वस्त्र और आभूषण धारण करके पारंपरिक गीतों के साथ इस उत्सव को भक्तिभाव से मनाती हैं।

19. (D) I, II और III
श्रावणी तीज राजस्थान का एक प्रमुख लोक पर्व है जो मानसून के आगमन का प्रतीक है। इस अवसर पर नवविवाहित महिलाओं को उनके ससुराल से 'सिंजारा' भेजा जाता है, जिसमें श्रृंगार सामग्री, वस्त्र और मिठाइयाँ होती हैं। इसके साथ ही बगीचों में पेड़ों पर अलंकृत झूले डाले जाते हैं, जिन पर महिलाएँ झूलते हुए पारंपरिक तीज के गीत गाती हैं। अतः इस पर्व से संबंधित सभी पारंपरिक तथ्य सत्य हैं।

20. (D) जयपुर
जयपुर नगर में श्रावणी तीज के अवसर पर माता तीज की एक अत्यंत भव्य और शाही शोभायात्रा निकाली जाती है। इस शोभायात्रा में सजाए गए हाथी, ऊंट, घोड़े और लोक कलाकारों के दल सम्मिलित होते हैं। जनानी ड्योढ़ी से निकलने वाली यह शोभायात्रा त्रिपोलिया बाजार से होती हुई आगे बढ़ती है। इस अद्वितीय सांस्कृतिक नजारे को देखने के लिए बड़ी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक जयपुर आते हैं।

21. (C) 18 दिन
राजस्थान में पारंपरिक गणगौर त्योहार होली के अगले दिन अर्थात् चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से प्रारंभ होता है। यह पर्व कुल 18 दिनों की अवधि तक अत्यंत उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दौरान अविवाहित कन्याएँ मनोवांछित वर प्राप्त करने के लिए तथा विवाहित महिलाएँ अपने अखंड सुहाग की रक्षा के लिए गवर (पार्वती) और ईसर (शिव) की प्रतिमाओं की प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना करती हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) विक्रम संवत चंद्र पंचांग
राजस्थान में सांस्कृतिक परंपराओं, धार्मिक आयोजनों तथा पारंपरिक त्योहारों का निर्धारण मुख्य रूप से विक्रम संवत चंद्र पंचांग प्रणाली के आधार पर किया जाता है। इस पंचांग में तिथि, पक्ष, नक्षत्र तथा चंद्रमा की कलाओं की गणना के अनुसार मेलों और पर्वों की तिथियां निश्चित की जाती हैं। स्थानीय समुदाय वैदिक परंपरा से चली आ रही इस कालगणना प्रणाली का पालन करते हुए अपने रीति-रिवाजों का संपादन करते हैं।

2. (C) मेले में व्यापार, धर्म या उत्सव के लिए किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान पर एक बड़ी जनसभा सम्मिलित होती है, जबकि त्योहार प्रायः घरेलू स्तर पर मनाया जाता है।
राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा में मेले और त्योहार में स्पष्ट अंतर है। मेला किसी विशेष भौगोलिक स्थान पर जनसामान्य के एकत्रीकरण का मंच होता है, जहाँ धार्मिक अनुष्ठानों के साथ व्यापारिक गतिविधियाँ तथा सांस्कृतिक उत्सव संचालित होते हैं। इसके विपरीत त्योहार मुख्यतः पारिवारिक स्तर पर घरेलू अनुष्ठानों, व्रत तथा आचरण के साथ संपन्न किए जाते हैं। इस प्रकार मेले की प्रमुख पहचान विस्तृत सार्वजनिक समागम है।

3. (A) त्योहारों की शुरुआत श्रावणी तीज से होती है और अंत गणगौर से होता है।
राजस्थान में "तीज त्योंहारा बावड़ी, ले डूबी गणगौर" एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है, जो वार्षिक त्योहारों के चक्र को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि राज्य में पर्व उत्सव चक्र का शुभारंभ श्रावण मास की तीज से होता है तथा इसका समापन चैत्र मास में आयोजित गणगौर पर्व के साथ होता है। यह लोकोक्ति राजस्थानी संस्कृति में त्योहारों के कालक्रम की सुंदर व्याख्या प्रस्तुत करती है।

4. (D) व्यावसायिक पशु मेले मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र में केंद्रित हैं।
राजस्थान में व्यावसायिक पशु मेले केवल दक्षिण-पूर्वी पठारी भाग तक सीमित न होकर राज्य के पश्चिमी, मध्य और उत्तरी मैदानी तथा मरुस्थलीय जिलों में व्यापक रूप से फैले हुए हैं। नागौर, बाड़मेर तथा हनुमानगढ़ जैसे जिले प्रमुख पशु मेलों के केंद्र हैं। मेलों का वर्गीकरण धार्मिक, मौसमी, जनजातीय तथा लोक-देवता श्रेणियों में किया जाता है, जो सामाजिक एवं कृषि चक्रों से सीधे संबद्ध होते हैं।

5. (B) भगवान ब्रह्मा
अजमेर जिले में स्थित पुष्कर झील के तट पर भगवान ब्रह्मा का अत्यंत प्राचीन और प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। हिंदू धार्मिक मान्यताओं में भगवान ब्रह्मा के समर्पित मंदिर विश्व भर में दुर्लभ माने जाते हैं, जिनमें से पुष्कर का मंदिर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। पुष्कर मेले का मुख्य धार्मिक आधार इसी इतिहास प्रसिद्ध मंदिर से जुड़ा है, जहाँ वार्षिक आयोजन पर लाखों श्रद्धालु दर्शन हेतु एकत्रित होते हैं।

6. (C) कार्तिक
पुष्कर मेले का मुख्य धार्मिक अनुष्ठान हिंदू पंचांग के अनुसार कार्तिक मास में संपन्न होता है। यह मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से प्रारंभ होकर कार्तिक पूर्णिमा तक आयोजित किया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन पुष्कर झील में पवित्र स्नान करना अत्यंत शुभ और पुण्यदायी माना जाता है। इस अवसर पर देश भर से आए तीर्थयात्री महास्नान और दीपदान कर अपनी धार्मिक आस्था व्यक्त करते हैं।

7. (D) गिर
पुष्कर मेले के व्यावसायिक तथा पशु मेला घटक में ऊंटों और घोड़ों के साथ-साथ गिर नस्ल की गायों का प्रमुखता से व्यापार किया जाता है। गिर मवेशी मूलतः अपनी उच्च दुग्ध उत्पादन क्षमता और विशिष्ट शारीरिक बनावट के लिए जाने जाते हैं। मेले में पशुपालक इन पशुओं की खरीद-बिक्री के लिए एकत्रित होते हैं, जिससे यह आयोजन क्षेत्र की पशुधन अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

8. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
राजस्थान के विभिन्न प्रसिद्ध मेलों में विशिष्ट पशु नस्लों का क्रय-विक्रय होता है। पुष्कर मेला गिर मवेशियों और ऊंटों के व्यापार के लिए जाना जाता है, जबकि तिलवाड़ा का मल्लीनाथ मेला थारपारकर नस्ल के लिए प्रसिद्ध है। नागौर मेला नागोरी नस्ल के मवेशियों का मुख्य व्यापारिक केंद्र है। इसी प्रकार झालरापाटन का चंद्रभागा मेला मालवी नस्ल के पशुओं की खरीद-बिक्री के लिए प्रसिद्ध माना जाता है।

9. (B) कपिल मुनि
बीकानेर जिले में स्थित कोलायत मेला सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल मुनि के ऐतिहासिक आश्रम से जुड़ा हुआ है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कपिल मुनि ने इस पवित्र स्थल पर कठिन तपस्या की थी। इस कारण यह स्थान धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र माना जाता है। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है, जहाँ हज़ारों श्रद्धालु दर्शन करने पहुँचते हैं।

10. (B) दीपदान
कोलायत मेले के दौरान संध्या के समय झील में जलते हुए दीपकों को प्रवाहित करने का एक पारंपरिक और पवित्र अनुष्ठान किया जाता है, जिसे दीपदान कहा जाता है। कार्तिक पूर्णिमा की पावन तिथि पर श्रद्धालु अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति और आध्यात्मिक पुण्य की प्राप्ति के लिए सरोवर के जल में जलते हुए मिट्टी के दीये प्रवाहित करते हैं। यह दृश्य अत्यंत मनोरम और भक्तिमय वातावरण निर्मित करता है।

NODIA

है। आदिवासियों का बेणेश्वर मेला माघ मास में संपन्न होता है तथा श्रावणी तीज का आयोजन श्रावण मास में किया जाता है। ये सभी तिथियां विक्रम संवत के अनुसार निर्धारित की जाती हैं और इनका महान सांस्कृतिक महत्त्व है।

34. (C) पापों के प्रक्षालन हेतु पवित्र झील में स्नान करना
कार्तिक पूर्णिमा की पावन तिथि पर पुष्कर और कोलायत में आयोजित होने वाले विशाल मेलों का मुख्य धार्मिक आकर्षण पवित्र झीलों में स्नान करना है। श्रद्धालुओं की यह दृढ़ आस्था है कि इस दिन पुष्कर सरोवर तथा कोलायत झील में डुबकी लगाने से समस्त पापों का विनाश होता है और आत्मा की शुद्धि होती है। स्नान के पश्चात् दीपदान कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

35. (A) पूर्णिमा
पुष्कर मेले में धार्मिक अनुष्ठानों की पूर्णाहुति के लिए कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को सर्वाधिक शुभ और पवित्र माना जाता है। कार्तिक शुक्ल एकादशी से प्रारंभ होने वाले इस मेले का चरमोत्कर्ष पूर्णिमा के दिन होता है। इस दिन ब्रह्म मुहूर्त से ही पवित्र पुष्कर सरोवर के घाटों पर महास्नान, तर्पण और दीपदान के अनुष्ठान किए जाते हैं, जिससे संपूर्ण क्षेत्र भक्तिमय वातावरण से भर जाता है।

36. (D) बेणेश्वर मेला
पुष्कर मेला, कोलायत मेला तथा चंद्रभागा मेला - ये तीनों मेले कार्तिक पूर्णिमा की पावन तिथि को अपने मुख्य स्नान अनुष्ठानों के साथ संपन्न होते हैं। इसके विपरीत बेणेश्वर मेले का मुख्य धार्मिक स्नान और समापन माघ पूर्णिमा को होता है। अतः आयोजन तिथि के आधार पर बेणेश्वर मेला अन्य तीन मेलों से भिन्न है क्योंकि इसका मुख्य आयोजन माघ मास में त्रिवेणी संगम पर संपन्न होता है।

37. (B) जैसलमेर
थार मरुस्थल की अनूठी सांस्कृतिक विरासत, लोक कलाओं और जीवनशैली को प्रदर्शित करने वाला विश्व प्रसिद्ध मरु महोत्सव (डेजर्ट फेस्टिवल) प्रतिवर्ष जैसलमेर जिले में आयोजित किया जाता है। राज्य पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित इस उत्सव में मरुस्थलीय संस्कृति के विविध रूपों का प्रदर्शन किया जाता है। मेले के दौरान लोक संगीत, नृत्य तथा विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जो पर्यटकों को आकर्षित करता है।

38. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
जैसलमेर के मरु महोत्सव का आयोजन पर्यटन विभाग द्वारा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने और मरुस्थलीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु किया जाता है। यह किसी पारंपरिक धार्मिक तीर्थयात्रा से उद्भूत नहीं हुआ है। यही कारण है कि इस उत्सव में मिस्टर डेजर्ट, साफा बांधने और ऊंट पोलो जैसी गैर-धार्मिक प्रतियोगिताएं प्रमुख रूप से आयोजित की जाती हैं। अतः कथन और कारण दोनों परस्पर सुसंगत हैं।

39. (D) सम के धोरे (बालुका स्तूप)
जैसलमेर के मरु महोत्सव के समापन सांस्कृतिक कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण समारोह के लिए 'सम के धोरे' (सम के बालुका स्तूप) प्राकृतिक पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करते हैं। मरुस्थल के विशाल रेत के टीलों पर ढलते सूरज और चांदनी रात में आयोजित होने वाले लोक संगीत व नृत्य के कार्यक्रम पर्यटकों को अत्यंत मंत्रमुग्ध करते हैं। यह स्थान थार मरुस्थल का प्रतिनिधित्व करता है।

40. (A) ऊंट महोत्सव (बीकानेर), मरु महोत्सव (जैसलमेर), मेवाड़ महोत्सव (उदयपुर), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)
राजस्थान में आयोजित होने वाले पर्यटन उत्सवों का अंग्रेजी कैलेंडर वर्ष में एक निश्चित कालानुक्रमिक क्रम होता है। अंतर्राष्ट्रीय ऊंट महोत्सव (बीकानेर) का आयोजन जनवरी माह में किया जाता है। इसके पश्चात् मरु महोत्सव (जैसलमेर) फरवरी माह में आयोजित होता है। इसके बाद वसंत के आगमन पर मेवाड़ महोत्सव (उदयपुर) मार्च या अप्रैल में मनाया जाता है, जबकि शरद ऋतु में मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर) सितंबर-अक्टूबर माह में संपन्न होता है।

41. (B) बीकानेर
अंतर्राष्ट्रीय ऊंट महोत्सव राजस्थान के बीकानेर जिले में आयोजित होने वाला एक प्रसिद्ध वार्षिक पर्यटन कार्यक्रम है। बीकानेर का इतिहास और मरुस्थलीय जीवन ऊंटों से गहराई से जुड़ा रहा है। बीकानेर के प्रसिद्ध जूनागढ़ दुर्ग की पृष्ठभूमि में पर्यटन विभाग द्वारा इस महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जहाँ ऊंटों के प्रदर्शन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से क्षेत्र की कला को प्रदर्शित किया जाता है।

42. (B) जनवरी
बीकानेर के अंतर्राष्ट्रीय ऊंट महोत्सव का आयोजन राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा सामान्यतः प्रतिवर्ष जनवरी माह में किया जाता है। शीत ऋतु के इस समय में बीकानेर में मरुस्थलीय मौसम अत्यंत सुहावना होता है। इस दो दिवसीय उत्सव में देश और विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक भाग लेने पहुँचते हैं, जहाँ वे ऊंटों की दौड़, कलात्मक सज्जा, लोक नृत्य तथा विभिन्न हस्तशिल्प प्रदर्शनियों का आनंद प्राप्त करते हैं।

43. (A) ऊंट के बालों की कतरन प्रतियोगिताएं
बीकानेर के ऊंट महोत्सव का एक विशिष्ट और अनूठा आकर्षण ऊंटों के बालों की कतरन (बाल काटना) प्रतियोगिता है। इस कला में कुशल कारीगर ऊंट के शरीर पर बालों को विशेष रूप से काटकर अत्यंत जटिल और सुंदर ज्यामितीय व कलात्मक आकृतियां उभारते हैं। इसे उस्ता कला का ही एक रूप माना जाता है। यह प्रतियोगिता दर्शकों और पर्यटकों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय एवं प्रशंसित है।

44. (C) सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना और ऊंट की आर्थिक भूमिका को रेखांकित करना।
राज्य सरकार द्वारा ऊंट महोत्सव जैसे विशिष्ट पशु-विषयक उत्सवों के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य मरुस्थलीय सांस्कृतिक पर्यटन को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना है। इसके

Downloaded from www.pdf.tube

साथ ही, थार मरुस्थल के कठिन जीवन में ऊंट की ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक भूमिका को रेखांकित करना है। ये आयोजन पारंपरिक पशुपालन पद्धतियों को संरक्षण प्रदान करते हैं और स्थानीय कारीगरों तथा पालकों को आय के अवसर प्रदान करते हैं।

45. (D) I, II और III
गोगाजी मेला हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के गोगामेड़ी में आयोजित होने वाला एक प्रमुख लोक-देवता मेला है। यह मेला भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में मनाया जाता है। गोगाजी महाराज को सांपों के देवता के रूप में पूजा जाता है। इस मेले की सबसे बड़ी विशेषता सांप्रदायिक सद्भाव है, क्योंकि हिंदू श्रद्धालु उन्हें गोगाजी और मुस्लिम श्रद्धालु उन्हें 'जाहर पीर' के रूप में पूजते हैं।

46. (C) सर्पदंश
गोगाजी मेले के दौरान श्रद्धालु पारंपरिक रूप से स्वयं को तथा अपने पशुधन को सर्पदंश के जानलेवा संकट से बचाने के लिए प्रार्थना करते हैं। राजस्थान की लोक मान्यताओं में गोगाजी को नागराज का अवतार और सर्पदंश से मुक्ति दिलाने वाले रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है। लोग अपने खेतों और घरों में सुरक्षा हेतु गोगाजी की राख तथा तागा (राखी) बांधने की परंपरा का पालन करते हैं।

47. (B) युद्ध में गोगाजी का धड़ गिरा था (धुर मेड़ी)।
हनुमानगढ़ स्थित गोगामेड़ी का स्थान सांस्कृतिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पौराणिक आख्यानों के अनुसार विदेशी आक्रांता महमूद गजनवी के साथ युद्ध करते समय गोगाजी का धड़ इसी स्थान पर गिरा था। इसी कारण इस स्थल को 'धुर मेड़ी' कहा जाता है। वहीं उनका सिर चूरू जिले के ददरेवा में गिरा था जिसे 'शीर्ष मेड़ी' कहा जाता है। गोगामेड़ी में ही गोगाजी की मुख्य समाधि स्थित है।

48. (D) हिंदू पुजारी और मुस्लिम चायल बारी-बारी से धाम का प्रबंधन करते हैं।
गोगामेड़ी धाम में पूजा-अर्चना और व्यवस्था का प्रबंधन हिंदू पुजारियों तथा मुस्लिम चायल समुदाय के सेवादारों द्वारा बारी-बारी से किया जाता है। गोगाजी के मुख्य मंदिर की बनावट एक मकबरे जैसी है जिसके मुख्य द्वार पर 'बिस्मिल्लाह' अंकित है। वर्ष के 11 महीनों में चायल मुस्लिम पुजारी सेवा करते हैं जबकि भाद्रपद मेले के दौरान हिंदू राजपूत अथवा मेघवाल पुजारी पूजा का संचालन करते हैं।

49. (A) पर्वतसर (नागौर)
प्रसिद्ध वीर तेजाजी पशु मेला नागौर जिले के पर्वतसर में आयोजित होता है। यह मेला राजस्थान के सबसे बड़े पशु मेलों में से एक है और राज्य सरकार को आय की दृष्टि से सर्वाधिक राजस्व प्रदान करने वाले मेलों में गिना जाता है। भाद्रपद शुक्ल दशमी (तेजा दशमी) के अवसर पर आयोजित होने वाले इस मेले में प्रसिद्ध नागोरी नस्ल के बैलों और अन्य पशुओं का भारी व्यापार होता है।

50. (C) कोलू मण्ड
लोक-देवता पाबूजी को समर्पित मुख्य मेला जोधपुर जिले की फलोदी तहसील के कोलू मण्ड गाँव में आयोजित होता है। पाबूजी को ऊंटों के रक्षक देवता माना जाता है और मारवाड़ क्षेत्र में सर्वप्रथम ऊंट लाने का श्रेय भी उन्हें ही दिया जाता है। जब भी कोई ऊंट बीमार होता है तो पाबूजी की मन्नत मांगी जाती है। चैत्र अमावस्या को कोलू मण्ड में उनका वार्षिक मेला भरता है।

51. (A) भीलवाड़ा
गुर्जर समुदाय के परम पूज्य लोक-देवता भगवान श्री देवनारायण जी का मुख्य मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद के पास स्थित सवाई भोज में आयोजित होता है। देवनारायण जी को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को आयोजित होने वाले इस मेले में गुर्जर समाज के लोग भारी संख्या में एकत्रित होकर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और भक्ति संगीतमय फड़ वाचन का आयोजन करते हैं।

NODIA

52. (D) I, II, III और IV
राजस्थान के लोक-देवता मेलों से संबंधित सभी कथन सत्य हैं। बाबा रामदेवरा मेला जैसलमेर के रुणीचा में लगता है। तेजाजी मेला पर्वतसर में नागोरी बैलों के व्यापार हेतु प्रसिद्ध है। पाबूजी का मेला चैत्र अमावस्या को कोलू मण्ड में भरता है। इसके अतिरिक्त देवनारायण जी के मंदिरों में मूर्ति के स्थान पर नीम की पत्तियों और ईंटों की पूजा की पारंपरिक प्रथा प्रचलित है।

53. (B) जैसलमेर
लोक-देवता बाबा रामदेवजी को समर्पित विश्व प्रसिद्ध रामदेवरा मेला पोकरण के पास रुणीचा में आयोजित होता है। यह स्थल प्रशासनिक रूप से राजस्थान के जैसलमेर जिले के अंतर्गत आता है। रामदेवजी महाराज ने इसी स्थान पर जीवित समाधि ली थी। प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में यहाँ लगने वाले मेले में देश के विभिन्न राज्यों से लाखों पैदल यात्री बाबा के दर्शन हेतु रुणीचा धाम पहुँचते हैं।

54. (C) यह हिंदू-मुस्लिम सद्भाव और अस्पृश्यता के निवारण का प्रतीक है।
रामदेवरा मेले की सबसे प्रमुख सामाजिक विशेषता यह है कि यह हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक समरसता और अस्पृश्यता के निवारण का सबसे बड़ा प्रतीक है। बाबा रामदेवजी ने आजीवन सामाजिक भेदभाव और छुआछूत का विरोध किया था। हिंदू उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का अवतार मानते हैं जबकि मुस्लिम उन्हें 'रामशाह पीर' के रूप में पूजते हैं। इस मेले में सभी जातियों के लोग एक साथ आते हैं।

55. (D) तेरह ताली
रामदेवरा मेले के दौरान कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा प्रसिद्ध 'तेरह ताली' नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य बैठकर किया जाने वाला एक अनूठा लोक नृत्य है, जिसमें नृत्यांगनाएं अपने शरीर के विभिन्न अंगों पर तेरह मंजीरे बांधकर अद्भुत शारीरिक संतुलन और लयबद्ध तालमेल के साथ प्रस्तुति देती हैं। यह

नृत्य बाबा रामदेवजी के यशगान और भक्ति में कामड़ पंथ के अनुयायियों द्वारा किया जाता है।

56. (A) भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी
रामदेवरा मेले का आयोजन हिंदू चंद्र पंचांग के अनुसार भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि (बाबे री बीज) से प्रारंभ होकर एकादशी तिथि तक होता है। भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को बाबा रामदेवजी का जन्मोत्सव मनाया जाता है और एकादशी को उनकी समाधि तिथि के रूप में स्मरण किया जाता है। इन दस दिनों की अवधि में संपूर्ण रुणीचा धाम में अद्वितीय भक्तिमय माहौल रहता है।

57. (B) झालरापाटन
चंद्रभागा मेला झालावाड़ जिले के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर झालरापाटन में आयोजित होने वाला एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण धार्मिक और व्यावसायिक पशु मेला है। यह मेला चंद्रभागा नदी के तट पर कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर भरता है। यहाँ श्रद्धालु चंद्रभागा नदी में पवित्र स्नान करते हैं तथा साथ ही मालवी नस्ल के पशुओं का विशाल व्यापारिक आदान-प्रदान होता है, जो हाड़ौती क्षेत्र की पहचान है।

58. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान के प्रमुख मेले पवित्र नदियों और झीलों से जुड़े हुए हैं। बेणेश्वर मेला डूंगरपुर में माही, सोम व जाखम के संगम पर आयोजित होता है। चंद्रभागा मेला झालावाड़ की चंद्रभागा नदी के तट पर भरता है। कोलायत मेला बीकानेर की कपिल मुनि झील से संबद्ध है, जबकि पुष्कर मेला अजमेर की ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र पुष्कर झील के घाटों पर संपन्न होता है।

59. (A) मालवी
झालरापाटन में आयोजित चंद्रभागा मेले का पशु व्यापार खंड विशेष रुप से मालवी नस्ल के मवेशियों के क्रय-विक्रय के लिए प्रसिद्ध है। मालवी नस्ल के पशु मुख्यतः हाड़ौती और मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये बैल अत्यंत शक्तिशाली, सहनशील तथा कठोर कृषि कार्यों और भारी बोझा ढोने के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। मेले में इनकी भारी मांग रहती है।

60. (C) I, III, IV, II
चैत्र मास से प्रारंभ होने वाले हिंदू नव वर्ष के अनुसार त्योहारों और मेलों का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: चैत्र शुक्ल तृतीया को सबसे पहले गणगौर पर्व मनाया जाता है। इसके बाद श्रावण शुक्ल तृतीया को श्रावणी तीज आती है। भाद्रपद मास में गोगाजी मेला आयोजित होता है। अंत में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर प्रसिद्ध पुष्कर मेला संपन्न होता है।

61. (D) वे पशुधन, उपकरणों के व्यापार और ग्रामीण ऋण के केंद्रीय केंद्र हैं।
राजस्थान के ग्रामीण मेलों द्वारा निभाया जाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण स्थानीय आर्थिक कार्य यह है कि वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन, कृषि उपकरणों, हस्तशिल्प वस्तुओं के क्रय-विक्रय तथा पारस्परिक ग्रामीण लेनदेन के केंद्रीय केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। दूर-दराज के किसान और पशुपालक इन मेलों में आकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और कृषि कार्य हेतु उत्तम नस्ल के मवेशी खरीदते हैं।

62. (C) हाट बाजार
राजस्थान के प्रमुख ग्रामीण और धार्मिक मेलों के दौरान लगाए जाने वाले अस्थायी बाजार, जो स्थानीय शिल्पकारों, कुम्हारों और बुनकरों को दैनिक उपयोग की वस्तुएं बेचने का सीधा मंच प्रदान करते हैं, पारंपरिक रूप से 'हाट बाजार' कहलाते हैं। इन हाट बाजारों में हस्तनिर्मित बर्तन, कपड़े, लकड़ी के औजार तथा घरेलू सामग्री का व्यापक क्रय-विक्रय होता है, जिससे ग्रामीण हस्तशिल्प और स्थानीय अर्थव्यवस्था को अत्यंत बल मिलता है।

63. (B) टेराकोटा, पीतल के बर्तन और चर्म शिल्प
राजस्थान के स्थानीय हस्तशिल्प उद्योग, जैसे टेराकोटा की मूर्तियां, पीतल के बर्तन, मिट्टी के सामान तथा चमड़े का चर्म शिल्प (जूतियाँ व पशु साज-सामान), प्रत्यक्ष बिक्री के लिए मेलों द्वारा जुटने वाली भीड़ पर अत्यधिक निर्भर करते हैं। मेलों के अवसर पर ग्रामीण और शहरी ग्राहक इन पारंपरिक हस्तशिल्पों को बड़े पैमाने पर खरीदते हैं, जिससे स्थानीय कारीगरों को प्रत्यक्ष रोजगार और जीविका प्राप्त होती है।

64. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक परिवहन और संचार के साधनों का विकास होने के पश्चात् भी राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पारंपरिक पशु मेलों का महत्त्व यथावत बना हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि ये मेले उन्नत नस्लों के आनुवंशिक चयन, पशुधन की प्रत्यक्ष थोक खरीद-बिक्री तथा संबद्ध कृषि व्यापारों के लिए एक एकीकृत मंच प्रदान करते हैं, जिसकी सुविधा दूरस्थ ग्रामीण हाट-बाजारों में आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाती।

65. (A) बारां
सीताबाड़ी मेला राजस्थान के बारां जिले की शाहबाद तहसील के सीताबाड़ी नामक स्थान पर आयोजित होने वाला एक प्रमुख सामाजिक और धार्मिक मेला है। इस मेले को सहरिया जनजातीय समुदाय का सबसे बड़ा समागम माना जाता है, इसलिए इसे 'सहरिया जनजाति का कुंभ' भी कहा जाता है। ज्येष्ठ अमावस्या को आयोजित होने वाले इस मेले में सहरिया लोग धार्मिक स्नान और पूर्वजों का तर्पण करते हैं।

66. (C) मीणा
सवाई माधोपुर जिले में स्थित चौथ का बरवाड़ा में चौथ माता का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। यहाँ आयोजित होने वाला चौथ का बरवाड़ा मेला मुख्य रूप से मीणा समुदाय के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण सामाजिक-धार्मिक कार्यक्रम है। माघ कृष्ण चतुर्थी (करवा चौथ/तिल चतुर्थी) के अवसर पर आयोजित इस मेले में मीणा जनजाति के लोग भारी संख्या में आकर देवी की पूजा करते हैं और पारिवारिक सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

Click Here to Buy book on Flipkart

S. टेराकोटा मूर्तियां
सूची II : संबंधित मेला / क्षेत्र
1. नागौर मेला
2. मल्लीनाथ मेला (तिलवाड़ा)
3. स्थानीय मेवाड़ मेलों में मोलेला के कारीगर
4. ऊंट महोत्सव (बीकानेर)
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

85. पुष्कर मेले में एक महत्वपूर्ण तीर्थ अनुष्ठान में पवित्र झील और नगर के चारों ओर एक वृत्ताकार पथ पर चलना सम्मिलित है। इस अनुष्ठान को क्या कहा जाता है?
(A) पवित्र स्नान अनुष्ठान
(B) परिक्रमा
(C) दीपदान
(D) अभिषेक

86. सीकर का खाटू श्यामजी मेला किस चंद्र मास के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ आकर्षित करता है, जो एकादशी और द्वादशी को संपन्न होता है?
(A) श्रावण मास
(B) आषाढ़ मास
(C) फाल्गुन
(D) कार्तिक मास

87. चूरू का सालासर बालाजी मेला मुख्य रूप से भगवान हनुमान की जयंती मनाने के लिए आयोजित किया जाता है। यह तीर्थयात्रा किस तिथि को होती है?
(A) माघ पूर्णिमा
(B) भाद्रपद अमावस्या
(C) कार्तिक पूर्णिमा
(D) चैत्र पूर्णिमा

88. चित्तौड़गढ़ जिले की राशमी पंचायत समिति में आयोजित होने वाले किस मेले को पूर्वजों की अस्थियों के विसर्जन के महत्व के कारण प्रायः 'राजस्थान का हरिद्वार' कहा जाता है?
(A) मातृकुंडिया मेला
(B) घोटिया अंबा धाम मेला
(C) सीताबाड़ी जनजातीय मेला
(D) बेणेश्वर पवित्र मेला

89. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन (A) : राजस्थान में मेले अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, जैसे कि लोक संगीत, मौखिक महाकाव्य और पारंपरिक नृत्यों के अस्तित्व और हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
कारण (R) : राज्य सरकार का संरक्षण ही एकमात्र और विशिष्ट कारण है कि ये कला रूप जीवित बचे हैं, क्योंकि स्थानीय ग्रामीण समुदायों ने इन्हें पूरी तरह से त्याग दिया है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

90. कौन सी पारंपरिक आख्यान कला शैली, जिसमें एक चित्रित पट और भोपा एवं भोपी द्वारा प्रस्तुति सम्मिलित है, पाबूजी या देवनारायण जी के वीरतापूर्ण कार्यों का वाचन करने के लिए स्थानीय लोक-देवता मेलों के दौरान प्रायः प्रदर्शित की जाती है?
(A) पिछवाई
(B) फड़
(C) बनी-ठनी
(D) मांडणा

91. यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त कालबेलिया नृत्य किस प्रमुख मरुस्थलीय मेले में पर्यटकों के लिए प्रायः प्रस्तुत किया जाने वाला एक प्रमुख सांस्कृतिक आकर्षण है?
(A) पुष्कर मेला
(B) बेणेश्वर मेला
(C) सीताबाड़ी मेला
(D) चंद्रभागा मेला

NODIA

92. काष्ठ की छड़ें लिए पुरुषों द्वारा मेवाड़ और बाड़मेर क्षेत्रों से जुड़े मेलों के दौरान जीवंत 'गैर' नृत्य प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाता है। मूल रूप से यह नृत्य किस व्यापक त्योहार के समय से जुड़ा हुआ है?
(A) दिवाली
(B) तीज
(C) होली
(D) रक्षाबंधन

93. राज्य स्तर पर, राजस्थान में प्रमुख व्यावसायिक पशु मेलों को आधिकारिक रूप से मान्यता देने, प्रबंधित करने और विनियमित करने की प्रशासनिक जिम्मेदारी किस विभाग की है?
(A) पर्यटन एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग
(B) देवस्थान विभाग
(C) राजस्व एवं भू-अभिलेख विभाग
(D) पशुपालन विभाग

94. पशु व्यापार के लिए राजस्थान सरकार के नोडल विभाग द्वारा लगभग कितने प्रमुख राज्य-स्तरीय पशु मेलों को आधिकारिक रूप से मान्यता, प्रायोजन और प्रत्यक्ष प्रबंधन प्रदान किया जाता है?
(A) 2
(B) 10
(C) 25
(D) 50

माधोपुर में न होकर करौली जिले में चैत्र नवरात्र के दौरान आयोजित होता है। अतः चौथा कथन असत्य है और प्रथम तीन कथन सही हैं।

79. (B) करणी माता मेला (देशनोक)
बीकानेर जिले के देशनोक में स्थित प्रसिद्ध करणी माता का मेला राजस्थान का ऐसा अनूठा लोक-देवी मेला है जो वर्ष में दो बार आयोजित किया जाता है। यह मेला चैत्र नवरात्र तथा आश्विन नवरात्र के पावन अवसरों पर भरता है। करणी माता को चूहों वाली देवी (काबा) के रूप में जाना जाता है। इन दोनों नवरात्रों के समय हज़ारों श्रद्धालु माता के दर्शन और आशीर्वाद हेतु मंदिर पहुँचते हैं।

80. (D) पाबूजी मेला, तेजाजी मेला, रामदेवरा मेला
हिंदू चंद्र पंचांग के अनुसार चैत्र नव वर्ष से आरंभ होने वाले लोक-देवता मेलों का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम चैत्र अमावस्या को पाबूजी का मेला (कोलू मण्ड) आयोजित होता है। इसके पश्चात् भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी तक बाबा रामदेवरा मेला (रुणीचा) लगता है। अंत में भाद्रपद शुक्ल दशमी के पावन अवसर पर वीर तेजाजी पशु मेला (पर्वतसर) भव्य रूप से आयोजित होता है।

81. (A) थारपारकर मवेशी और मालानी घोड़े
बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा में लूनी नदी के तट पर आयोजित होने वाला मल्लीनाथ पशु मेला राजस्थान का सबसे प्राचीन पशु मेला माना जाता है। यह मेला विशेष रूप से थारपारकर नस्ल की दुधारू गायों तथा मालानी नस्ल के उत्कृष्ट घोड़ों के व्यापार के लिए संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध है। चैत्र कृष्ण एकादशी से आयोजित होने वाले इस मेले में पशुपालकों का बड़ा समागम होता है।

82. (C) शिल्पग्राम उत्सव
उदयपुर स्थित पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (WZCC) द्वारा पारंपरिक ग्रामीण हस्तशिल्प, कुटीर उद्योगों तथा प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए 'शिल्पग्राम उत्सव' की स्थापना की गई थी। उदयपुर के निकट स्थित यह ग्रामीण शिल्प परिसर देश भर के पारंपरिक शिल्पकारों और लोक कलाकारों को अपनी कला का सीधे प्रदर्शन करने तथा अपने हस्तशिल्प उत्पादों को बेचने का अनूठा मंच प्रदान करता है।

83. (A) चमड़े का जीन और पशुओं का साज-सामान
पुष्कर मेला अपने विशाल पशु व्यापार के कारण पशुपालन से स्वाभाविक रूप से जुड़ी हस्तशिल्प कलाकृतियों, विशेष रूप से चमड़े के जीन, मोहरी, घंटी, काठी तथा ऊंटों व घोड़ों के अलंकृत साज-सामान के लिए एक विशाल विशेष बाजार के रूप में कार्य करता है। मेले में देश भर से आए पशुपालक अपने मवेशियों और ऊंटों को सजाने के लिए इन पारंपरिक हस्तशिल्प सामग्रियों की भारी खरीदारी करते हैं।

84. (D) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान की व्यापारिक वस्तुओं और संबंधित मेलों का सही सुमेल इस प्रकार है: मालानी घोड़ों का व्यापार तिलवाड़ा के मल्लीनाथ मेले में होता है। ऊंट की खाल पर कलाकृतियां (उस्ता कला) बीकानेर के ऊंट महोत्सव से जुड़ी हैं। कृषि संबंधी पीतल व लोहे के औजारों का व्यापार नागौर मेले में होता है, जबकि टेराकोटा मूर्तियों के निर्माण हेतु मोलेला के कारीगर स्थानीय मेवाड़ मेलों से जुड़े हैं।

85. (B) परिक्रमा
पुष्कर मेले में तीर्थयात्रियों द्वारा एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किया जाता है, जिसमें पवित्र पुष्कर झील और ऐतिहासिक मंदिर नगर के चारों ओर एक निश्चित वृत्ताकार पथ पर पैदल चला जाता है। इस धार्मिक पदयात्रा को 'परिक्रमा' कहा जाता है। श्रद्धालु ईश्वर के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व्यक्त करने और मनोकामना पूर्ति के लिए पवित्र मंत्रोच्चार के साथ झील की परिक्रमा पूरी करते हैं।

86. (C) फाल्गुन
सीकर जिले में स्थित प्रसिद्ध खाटू श्यामजी का मेला हिंदू चंद्र पंचांग के फाल्गुन मास में आयोजित होता है। यह मेला फाल्गुन शुक्ल षष्ठी से द्वादशी तक भरता है, जिसका मुख्य आकर्षण एकादशी और द्वादशी तिथियाँ होती हैं। भगवान श्रीकृष्ण के स्वरूप माने जाने वाले बर्बरीक (शीश के दानी खाटू श्यामजी) के दर्शन हेतु देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु पदयात्रा करते हुए खाटू धाम पहुँचते हैं।

NODIA

87. (D) चैत्र पूर्णिमा
चूरू जिले में स्थित प्रसिद्ध सालासर बालाजी मेला मुख्य रूप से भगवान हनुमान जी की जयंती मनाने के लिए आयोजित किया जाता है। यह प्रसिद्ध धार्मिक मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की पूर्णिमा तिथि को अत्यंत धूमधाम के साथ आयोजित होता है। इसके अतिरिक्त आश्विन पूर्णिमा को भी यहाँ मेला भरता है। दाढ़ी-मूंछ वाले हनुमान जी के इस अनूठे रूप के दर्शन के लिए हज़ारों श्रद्धालु सालासर आते हैं।

88. (A) मातृकुंडिया मेला
चित्तौड़गढ़ जिले की राशमी तहसील में बनास नदी के तट पर स्थित मातृकुंडिया मंदिर परिसर में आयोजित होने वाले मेले को 'राजस्थान का हरिद्वार' कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस पवित्र जलकुंड में स्नान करने से व्यक्ति पापों से मुक्त हो जाता है। यहाँ लोग अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं। वैशाख पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ एक विशाल मेले का आयोजन होता है।

89. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
राजस्थान के पारंपरिक मेले अमूर्त सांस्कृतिक विरासत जैसे लोक संगीत, मौखिक गाथाओं और पारंपरिक नृत्यों को जीवित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, कारण में यह कहना गलत है कि केवल सरकारी संरक्षण ही इनके जीवित रहने का एकमात्र कारण है और स्थानीय समुदायों ने इन्हें त्याग

61. राजस्थान के किस ऊर्जावान लोक नृत्य में सफेद कुर्ता पहने पुरुष तेजी से चक्कर लगाते हैं जिससे शानदार ढंग से घेरदार घाघरे का रूप बनता है और वे मुख्य रूप से एक बड़े घेरे में घूमते हैं?
(A) कच्छी घोड़ी
(B) चरी
(C) घूमर
(D) गैर

62. 'चंग' मुख्य रूप से होली के त्योहार के दौरान बजाया जाने वाला एक बड़ा वृत्ताकार अवनद्ध वाद्य है। राजस्थान का कौन-सा क्षेत्र 'चंग नृत्य' के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है?
(A) वागड़ क्षेत्र
(B) हाड़ौती क्षेत्र
(C) शेखावाटी
(D) मेवाड़ क्षेत्र

63. 'चिरमी' एक अत्यधिक भावनात्मक राजस्थानी लोकगीत है। गीत के बोल के संदर्भ में 'चिरमी' शाब्दिक रूप से किसे संदर्भित करती है?
(A) शुष्क परिदृश्य को पार करने वाला एक विशिष्ट प्रकार का प्रवासी मरुस्थलीय पक्षी
(B) अपने पीहर (मायके) की याद में तड़प रही नववधू द्वारा संबोधित एक छोटा पौधा
(C) विशेष रूप से कुएं से पानी लाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक पारंपरिक पीतल का जल पात्र
(D) एकांत यात्रियों की रक्षा करने वाला एक पूज्य स्थानीय ग्राम देवता

64. 'हिचकी' मेवात क्षेत्र से उत्पन्न एक प्रसिद्ध लोकगीत है। राजस्थान के सांस्कृतिक संदर्भ में, 'हिचकी' आने के बारे में गाने का पारंपरिक अर्थ है:
(A) मरुस्थल की कठोर हवाओं के कारण शारीरिक बीमारी से पीड़ित होना
(B) परिवार में पुत्र रत्न की प्राप्ति का उत्सव मनाना
(C) आने वाले रेतीले तूफान के बारे में साथी ग्रामीणों को चेतावनी देना
(D) दूर रहने वाले किसी प्रियजन द्वारा तीव्रता से याद किया जाना

65. जालौर का पारंपरिक 'ढोल' नृत्य प्रायः नृत्य प्रारंभ करने के लिए विशाल ढोल बजाने की एक विशिष्ट लय या शैली का प्रयोग करता है। ढोल वादन की इस पारंपरिक शैली का नाम क्या है?
(A) थाकना शैली
(B) सवाई शैली
(C) कहरवा शैली
(D) दादरा शैली

66. राजस्थान संगीत नाटक अकादमी राज्य में प्रदर्शन कलाओं के प्रचार-प्रसार के लिए नोडल सरकारी एजेंसी के रूप में कार्य करती है। इसका स्थायी मुख्यालय कहां स्थित है?
(A) जयपुर
(B) उदयपुर
(C) जोधपुर
(D) बीकानेर

67. राजस्थानी संगीत संकल्पना के सही अनुप्रयोग को समझने के लिए, लोक संगीत परंपराओं में 'लय' अनिवार्य रूप से किसका प्रतिनिधित्व करती है?
(A) संगीतमय रचना की लयबद्ध गति
(B) एक जटिल तार वाले वाद्य की विस्तृत भौतिक संरचना
(C) एक शास्त्रीय मांड गीत की काव्यात्मक तुकबंदी योजना और छंद
(D) अलगोजा बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सूखी लकड़ी की विशिष्ट किस्म

68. 'कच्छी घोड़ी' नृत्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें नर्तक बांस, कपड़े और कागज़ की लुगदी से बनी नकली घोड़ी की पोशाक पहनते हैं।
II. नर्तक प्रायः फूलों के खिलने और बंद होने का अनुकरण करते हुए सममित पैटर्न बनाते हैं।
III. यह पारंपरिक रूप से कामड़ समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
IV. 'झांझ' और 'ढोल' इसके प्रमुख सहयोगी संगीत वाद्ययंत्र हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

69. 'झोरावा' लोकगीत मूल रूप से एक विरह गीत है। यह मुख्य रूप से राजस्थान के किस जिले/क्षेत्र के सांस्कृतिक परिदृश्य से संबंधित है?
(A) कोटा जिला
(B) जैसलमेर
(C) धौलपुर जिला
(D) अजमेर जिला

70. निम्नलिखित में से किस वाद्य यंत्र को 'घन वाद्य' के रूप में वर्गीकृत किया गया है और कालबेलियों तथा जोगियों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है?
(A) अलगोजा
(B) कामायचा
(C) चिमटा
(D) नड़

71. 'तेजा' और 'गोगा' राजस्थान में किसानों द्वारा उत्साहपूर्वक गाए जाने वाले पारंपरिक कृषि लोकगीत हैं, जो मुख्य रूप से किस उद्देश्य से गाए जाते हैं?
(A) खेतों के कीटों को अनजाने में मारने के लिए प्रकृति से क्षमा मांगने हेतु

Downloaded from www.pdf.tube

100. (D) यह पशु कल्याण निगरानी, परिवहन नियमों को अनिवार्य बनाता है और क्रूरतापूर्ण क्रीड़ाओं पर प्रतिबंध लगाता है। कठोर राष्ट्रीय पशु कल्याण नियमों (जैसे पशु क्रूरता निवारण अधिनियम) के कार्यान्वयन ने राजस्थान में पारंपरिक पशु मेलों के प्रशासनिक प्रबंधन को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। अब मेलों में पशुओं के साथ मानवीय व्यवहार, अनिवार्य पशु चिकित्सा जांच, छाया व पानी की उचित व्यवस्था और सुरक्षित परिवहन नियमों का पालन अनिवार्य कर दिया गया है, जिससे पशु क्रूरता पर पूर्ण रोक लग सकी है।

NODIA

www.nodia.in

(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) केवल I, III और IV

21. 'गैर' नृत्य, जो अपनी गतिशील वृत्ताकार चालों और लकड़ी की छड़ियों के लयबद्ध टकराव के लिए जाना जाता है, मुख्य रूप से किस प्रमुख त्योहार के दौरान किया जाता है?
(A) दीपावली
(B) होली
(C) तीज
(D) मकर संक्रांति

22. राजस्थान का 'भवाई' नृत्य अपने शानदार संतुलन कृत्यों के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध है। निम्नलिखित में से कौन इस जटिल कला रूप को लोकप्रिय बनाने में अग्रणी थे?
(A) सादिक खान मांगणियार
(B) पद्मश्री देवीलाल सामर
(C) रुपसिंह शेखावत
(D) पद्मश्री कोमल कोठारी

23. राजस्थानी लोक संगीत के संरक्षण, दस्तावेजीकरण और प्रचार-प्रसार के लिए बोरुंदा में पद्मश्री कोमल कोठारी और विजयदान देथा द्वारा किस प्रमुख संस्थान की स्थापना की गई थी?
(A) जवाहर कला केंद्र
(B) भारतीय लोक कला मण्डल
(C) राजस्थान संगीत नाटक अकादमी
(D) रुपायन संस्थान

24. राजस्थान का पारंपरिक कठपुतली नृत्य आमतौर पर भाट समुदाय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। ये पारंपरिक कठपुतलियां मुख्य रूप से किस श्रेणी से संबंधित हैं?
(A) धागा कठपुतली
(B) छाया कठपुतली
(C) दस्ताना कठपुतली
(D) छड़ कठपुतली

25. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (लोक नृत्य)
P. बम नृत्य
Q. ढोल नृत्य
R. अग्नि नृत्य
S. बिन्दौरी नृत्य
सूची II : (प्रमुख क्षेत्र/जिला)
1. झालावाड़
2. जालौर
3. बीकानेर
4. भरतपुर
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

26. 'अग्नि नृत्य' एक दर्शनीय और धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण प्रस्तुति है जो मुख्य रूप से राजस्थान में किस संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा की जाती है?
(A) बिश्नोई संप्रदाय
(B) जसनाथी संप्रदाय
(C) दादू पंथ
(D) रामस्नेही संप्रदाय

27. जालौर के ऊर्जावान 'ढोल नृत्य' को राजस्थान के किस पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा प्रमुख रूप से प्रोत्साहित, प्रलेखित और राष्ट्रीय स्तर पर लाया गया था?
(A) जयनारायण व्यास
(B) मोहन लाल सुखाड़िया
(C) भैरोंसिंह शेखावत
(D) हरिदेव जोशी

28. भील समुदाय द्वारा लगातार 40 दिनों तक प्रस्तुत किया जाने वाला अनुष्ठानिक लोक नाट्य 'गवरी', मुख्य रूप से किस पौराणिक कथा के इर्द-गिर्द घूमता है?
(A) भगवान कृष्ण और राधा
(B) भगवान राम और रावण
(C) भगवान शिव और भस्मासुर
(D) पाबूजी और जिंदराव खींची

29. राजस्थानी लोक परंपराओं के संदर्भ में, 'गोरबंद' को एक विशिष्ट कार्य गीत के माध्यम से गाया जाता है। 'गोरबंद' स्पष्ट रूप से किसे संदर्भित करता है?
(A) खेती के दौरान आदिवासी महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली चांदी की भारी पायल
(B) मक्खन मथने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक विशिष्ट लकड़ी का उपकरण
(C) नवजात शिशु को बांधा जाने वाला एक सुरक्षात्मक ताबीज
(D) ऊंट की गर्दन का एक सजावटी आभूषण

30. निम्नलिखित राजस्थानी सांस्कृतिक संस्थानों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर
II. रूपायन संस्थान, बोरुंदा
III. जवाहर कला केंद्र, जयपुर
निम्नलिखित में से कौन-सा इन संस्थानों की स्थापना के कालानुक्रमिक क्रम (सबसे पहले से सबसे बाद) के आधार पर सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) I, II, III
(B) II, I, III
(C) I, III, II
(D) III, II, I

Click Here to Buy book on Amazon

10. लोक वाद्य 'ढोलक' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक अवनद्ध वाद्य है जिसका उपयोग राजस्थान में विभिन्न समुदायों द्वारा व्यापक रूप से किया जाता है।
II. इसमें एक बड़े धातु के गोलाकार ढांचे पर तना हुआ एक ही बजाने वाला मुख होता है।
III. इसका उपयोग अक्सर ऊर्जावान लोक गायन और उत्सव नृत्यों की संगति के लिए किया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

11. अपनी समृद्ध संगीतमय विरासत के लिए प्रसिद्ध राजस्थान का मांगणियार समुदाय मुख्य रूप से किस भौगोलिक क्षेत्र में केंद्रित है?
(A) बाड़मेर और जैसलमेर के पश्चिमी मरुस्थलीय जिले
(B) भरतपुर और धौलपुर के पूर्वी सीमावर्ती जिले
(C) डूंगरपुर और बांसवाड़ा का दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र
(D) कोटा और बूंदी का दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती क्षेत्र

12. लंगा और मांगणियार समुदाय संगीत की कई समानताओं को साझा करते हैं, फिर भी वे अपने विशिष्ट वाद्यों में भिन्न हैं। निम्नलिखित में से किस गज-वाद्य (कमानी वाले वाद्य) को लंगा समुदाय की विशिष्ट विशेषता माना जाता है?
(A) कामायचा
(B) रावणहत्था
(C) सिंधी सारंगी
(D) मोरचंग

13. मांगणियार संगीत में एक अनिवार्य गज-वाद्य कामायचा, अपने बड़े गोलाकार अनुनादक (तूंबे) द्वारा पहचाना जाता है। यह अनुनादक पारंपरिक रूप से किससे ढका होता है?
(A) गोह की खाल
(B) ऊंट की खाल
(C) भेड़ की खाल
(D) बकरी की खाल

14. राजस्थान का विश्व प्रसिद्ध 'घूमर' नृत्य राजपूत राजघराने द्वारा अपनाए जाने से पहले मूल रूप से किस स्वदेशी समुदाय में विकसित हुआ माना जाता है?
(A) कालबेलिया
(B) सहरिया
(C) भील
(D) गरासिया

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : राजस्थान के कालबेलिया नृत्य को 2010 में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया था।
कारण (R) : कालबेलिया नृत्य में मुख्य रूप से तलवारबाजी के साथ सिर पर कई पीतल के बर्तनों का जटिल संतुलन बनाना शामिल है।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

16. वैश्विक मंच पर कालबेलिया नृत्य की सबसे प्रसिद्ध प्रतिपादक निम्नलिखित में से कौन हैं?
(A) रीमा हूजा
(B) अल्लाह जिलाई बाई
(C) शन्नो खुराना
(D) गुलाबो सपेरा

17. 'कच्छी घोड़ी' लोक नृत्य ऐतिहासिक रूप से राजस्थान के किस क्षेत्र के लोक-नायकों और स्थानीय उत्सवों से जुड़ा है?
(A) शेखावाटी
(B) मेवाड़ क्षेत्र
(C) मारवाड़ क्षेत्र
(D) वागड़ क्षेत्र

18. लोक नृत्य और उसके पारंपरिक रूप से जुड़े समुदाय का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) तेरह ताली - कामड़ समुदाय
(B) चरी - गुर्जर समुदाय
(C) वालर - कालबेलिया समुदाय
(D) गवरी - भील समुदाय

19. तेरह ताली महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक जटिल भक्ति नृत्य है। यह मुख्य रूप से राजस्थान के किस लोक देवता की आराधना को समर्पित है?
(A) रामदेवजी
(B) गोगाजी महाराज
(C) तेजाजी महाराज
(D) पाबूजी राठौड़

20. 'चरी' नृत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से किशनगढ़ क्षेत्र की गुर्जर समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
II. नर्तकियां प्रस्तुति के दौरान अपने सिर पर पीतल के बर्तनों (चरी) का कुशलतापूर्वक संतुलन बनाती हैं।
III. लपटें पैदा करने के लिए सबसे ऊपर वाले बर्तन में तेल में डुबोए गए बिनोले (कपास के बीज) को जलाया जाता है।
IV. यह ऐतिहासिक रूप से एक युद्ध नृत्य है जो विशेष रूप से युद्ध की तैयारी करने वाले पुरुषों द्वारा किया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III

NODIA

दिया है। वास्तव में, स्थानीय ग्रामीण समुदायों की आस्था और सक्रिय भागीदारी ही इन लोक कलाओं का मुख्य आधार है।

90. (B) फड़
राजस्थान में कपड़े अथवा कैनवास पर लोक-देवताओं के जीवन और वीरतापूर्ण गाथाओं का चित्रांकन 'फड़' कहलाता है। local लोक-देवता मेलों के दौरान नायक भोपा और भोपी पारंपरिक वाद्ययंत्र रावणहत्था या जंतर के साथ फड़ को फैलाकर पाबूजी तथा देवनारायण जी के लोक महाकाव्यों का रात्रिकालीन वाचन करते हैं। यह राजस्थान की एक अत्यंत प्रतिष्ठित और प्राचीन मौखिक तथा दृश्य आख्यान कला शैली मानी जाती है।

91. (A) पुष्कर मेला
यूनेस्को द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त कालबेलिया लोक नृत्य प्रसिद्ध पुष्कर मेले में पर्यटकों के लिए प्रस्तुत किया जाने वाला एक मुख्य सांस्कृतिक आकर्षण है। कालबेलिया सपेरा समुदाय की महिलाओं द्वारा पारंपरिक काले परिधानों में प्रस्तुत किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तीव्र शारीरिक लचक और बीन की धुन पर लयबद्ध गतियों के लिए विश्व भर में विख्यात और प्रशंसित है।

92. (C) होली
हाथ में काष्ठ (लकड़ी) की छड़ें लेकर पुरुषों द्वारा गोल घेरे में प्रस्तुत किया जाने वाला जीवंत 'गैर' नृत्य मुख्य रूप से मेवाड़ और बाड़मेर क्षेत्रों में प्रसिद्ध है। मूल रूप से इस पारंपरिक लोक नृत्य का आयोजन वसंत ऋतु में मनाए जाने वाले होली त्योहार के अवसर से जुड़ा हुआ है। होली के अगले दिन से प्रारंभ होकर यह नृत्य कई दिनों तक मेलों और उत्सवों में उत्साहपूर्वक किया जाता है।

93. (D) पशुपालन विभाग
राज्य स्तर पर राजस्थान में प्रमुख व्यावसायिक और राज्य-स्तरीय पशु मेलों को आधिकारिक रूप से मान्यता देने, उनका आयोजन करने, स्वास्थ्य व्यवस्था देखने तथा विनियमित करने की प्रशासनिक जिम्मेदारी राजस्थान सरकार के पशुपालन विभाग की है। यह विभाग मेलों में पशुओं की खरीद-बिक्री के पंजीयन, टीकाकरण, पशु चिकित्सकों की तैनाती और निरीक्षण तथा मेला मैदान की व्यवस्थाओं का प्रत्यक्ष संचालन एवं प्रशासनिक प्रबंधन संभालता है।

94. (B) 10
राजस्थान सरकार के पशुपालन विभाग द्वारा राज्य भर में आधिकारिक रूप से 10 प्रमुख राज्य-स्तरीय पशु मेलों को मान्यता, वित्तीय प्रायोजन और प्रत्यक्ष प्रशासनिक प्रबंधन प्रदान किया जाता है। इन 10 मेलों में नागौर का श्री रामदेव पशु मेला, पर्वतसर का तेजाजी मेला, तिलवाड़ा का मल्लीनाथ मेला तथा झालरापाटन का चंद्रभागा मेला शामिल हैं, जो राज्य की पशुधन अर्थव्यवस्था के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं।

95. (D) I, II और III
राजस्थान में प्रमुख मेलों के कुशल प्रशासनिक प्रबंधन के लिए विभिन्न सरकारी विभाग मिलकर कार्य करते हैं। स्थानीय पुलिस और जिला प्रशासन कानून-व्यवस्था तथा जन-नियंत्रण संभालते हैं। स्वास्थ्य और पशुपालन विभाग मनुष्यों व पशुओं के इलाज हेतु अस्थायी अस्पताल स्थापित करते हैं। वहीं स्थानीय नगर निकाय अथवा ग्राम पंचायतें मेला क्षेत्र में सफाई और पेयजल की व्यवस्था करती हैं। अतः सभी कथन सत्य हैं।

96. (D) लंपी त्वचा रोग जैसी संक्रामक पशुधन बीमारियों का फैलना।
हाल के वर्षों में एक गंभीर प्रशासनिक और स्वास्थ्य चुनौती के रूप में लंपी त्वचा रोग (Lumpy Skin Disease) जैसी अत्यधिक संक्रामक पशुधन बीमारियों का प्रसार उभरकर सामने आया है। ऐसे संक्रामक रोगों के प्रकोप के समय राज्य सरकार और पशुपालन विभाग को पशुओं के एकत्रीकरण को रोकने तथा बीमारी को फैलने से बचाने के लिए पारंपरिक पशु मेलों को पूरी तरह से निरस्त या प्रतिबंधित करना पड़ता है।

97. (A) पशुधन विक्रय और परिवहन पर लगाया जाने वाला मेला कर
नागौर जिले में आयोजित होने वाले पर्वतसर के वीर तेजाजी राज्य पशु मेले और मेड़ता सिटी के बलदेव पशु मेले राज्य सरकार के लिए राजस्व प्राप्ति के बड़े स्रोत हैं। यह राजस्व मुख्य रूप से मेले में होने वाले पशुधन क्रय-विक्रय के पंजीयन शुल्क, पशु रवन्ना (परिवहन पास) तथा मेले में लगाए जाने वाले अस्थायी व्यावसायिक मेला करों के माध्यम से आधिकारिक रूप से एकत्र किया जाता है।

98. (A) केवल I, II और III
मेला प्रबंधन में सरकारी विभागों की भूमिकाओं के संदर्भ में प्रथम तीन कथन सत्य हैं। पर्यटन विभाग विपणन का कार्य करता है, देवस्थान विभाग राज्य सहायता प्राप्त मंदिरों का प्रबंधन संभालता है तथा पुलिस विभाग सुरक्षा व्यवस्था देखता है। चौथे कथन में लोक निर्माण विभाग (PWD) का कार्य धार्मिक फरमान जारी करना नहीं, बल्कि बुनियादी ढांचे का निर्माण और सड़कों का रखरखाव करना होता है।

99. (A) राज्य-सहायता प्राप्त मंदिरों, न्यासों और बंदोबस्ती का प्रशासन करना।
राजस्थान सरकार का देवस्थान विभाग धार्मिक मेलों और उत्सवों के दौरान अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक भूमिका निभाता है। इस विभाग का प्राथमिक अधिकार क्षेत्र राज्य के स्वामित्व वाले अथवा राज्य-सहायता प्राप्त प्राचीन मंदिरों, धार्मिक न्यासों, बंदोबस्त संपत्ति और तीर्थस्थलों का प्रशासनिक प्रबंधन और रखरखाव करना है। मेले के समय यह विभाग श्रद्धालुओं के लिए बुनियादी सुविधाओं और सुगम दर्शन व्यवस्था का सुचारु प्रबंधन सुनिश्चित करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

31. सम्मानित लोक कलाकार 'साकर खान' ऐतिहासिक रूप से किस राजस्थानी लोक वाद्य पर पूर्ण महारत के लिए जुड़े हुए हैं?
(A) खड़ताल
(B) कामायचा
(C) मोरचंग
(D) नड़

32. 'तेरह ताली' नृत्य की पारंपरिक प्रस्तुति में, नर्तकियां लयबद्ध रूप से 'मंजीरे' बजाती हैं। मुख्य नर्तकी के शरीर पर पारंपरिक रूप से कुल कितने मंजीरे बांधे जाते हैं?
(A) 9
(B) 11
(C) 13
(D) 15

33. राजस्थान के निम्नलिखित लोक नृत्यों में से कौन-सा विशिष्ट रूप से केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है, जिसमें नर्तक नकली घोड़ों पर नकली लड़ाई का स्वांग करने के लिए हाथों में तलवारें थामते हैं?
(A) कच्छी घोड़ी
(B) चरी लोक नृत्य
(C) कालबेलिया लोक नृत्य
(D) घूमर लोक नृत्य

34. एक प्रवासी पक्षी के नाम पर गाया जाने वाला पारंपरिक लोकगीत 'कुरजां', मुख्य रूप से किस भावना को व्यक्त करने के लिए गाया जाता है?
(A) प्रचुर कृषि फसल की अत्यधिक प्रसन्नता
(B) भक्ति आंदोलन के संतों की गहरी धार्मिक भक्ति
(C) अपने दूरस्थ पति के लिए तड़पती महिला की विरह-व्यथा
(D) युद्ध के मैदान से राजपूत योद्धाओं की विजयमयी वापसी

35. राजस्थान के 'लंगा' समुदाय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे पेशेवर लोक संगीतकार हैं जो मुख्य रूप से पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों से आते हैं।
II. वे अपने गायन की संगति के लिए मुख्य रूप से सिंधी सारंगी और अलगोजा बजाते हैं।
III. वे अपनी प्रस्तुतियों को कड़ाई से केवल हिंदू राजपूत राजघरानों तक ही सीमित रखते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

36. 'जंतर' एक प्राचीन तत वाद्य (तार वाला वाद्य) है जो पारंपरिक रूप से भोपों द्वारा किस लोक देवता की महागाथा का वाचन करते समय बजाया जाता है?
(A) श्री रामदेवजी महाराज
(B) श्री पाबूजी महाराज
(C) श्री गोगाजी महाराज
(D) देवनारायणजी

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : 'भवाई' नृत्य में असाधारण संतुलन के कृत्य शामिल हैं, जैसे तलवारों की धार पर या पीतल की थाली के किनारे पर नृत्य करना।
कारण (R) : भवाई ऐतिहासिक रूप से एक औपचारिक युद्ध नृत्य है जो शांति काल के दौरान युद्ध की चपलता को निखारने के लिए राजपूत सैनिकों के बीच विकसित हुआ था।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

38. 'बम रसिया' या 'बम' नृत्य बड़े नगाड़ों का उपयोग करके किया जाने वाला एक शक्तिशाली समूह नृत्य है। यह वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है और यह किस क्षेत्र का मूल नृत्य है?
(A) बीकानेर - चुरु
(B) उदयपुर - राजसमंद
(C) भरतपुर - अलवर
(D) बाड़मेर - जैसलमेर

39. बम नृत्य के दौरान ताल बनाए रखने के लिए विशाल 'बम' नगाड़े के साथ पारंपरिक रूप से कौन-सा वाद्य बजाया जाता है?
(A) कामायचा और सारंगी
(B) रावणहत्था और मोरचंग
(C) नड़ और अलगोजा
(D) थाली और चिमटा

40. प्रज्वलित पीतल के बर्तनों का संतुलन बनाने पर अत्यधिक निर्भर 'चरी' नृत्य, अवधारणात्मक रूप से ग्रामीण राजस्थानी महिलाओं की किस कठिन दैनिक गतिविधि से अपनी उत्पत्ति जोड़ता है?
(A) दूर के मरुस्थलीय कुओं से पीने का पानी लाना
(B) प्रातःकाल ताजे दूध से मक्खन मथना
(C) दूर के कांटेदार वनों से सूखी जलाऊ लकड़ी एकत्र करना
(D) खुले खेतों में गेहूं और बाजरे की फसल काटना

41. 'वालर' नृत्य गरासिया जनजाति की एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषता है। अन्य लोक नृत्यों की तुलना में इसकी सबसे विशिष्ट और असामान्य विशेषता क्या है?
(A) यह भारी धातु की तलवारें और लकड़ी की ढालें लेकर किया जाता है।
(B) यह बिना किसी वाद्य यंत्र की संगति के किया जाता है।
(C) यह केवल जनजातीय समुदाय के वयोवृद्ध पुरुषों द्वारा

NODIA

अध्याय 15

राजस्थान का लोक संगीत और लोक नृत्य

1. राजस्थान की पारंपरिक 'मांड' गायन शैली का सर्वोत्तम वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा करता है?
   (A) मुख्य रूप से राजपूत राजदरबारों में विकसित एक शास्त्रीय शैलीयुक्त लोक गायन
   (B) त्योहारों के अवसरों के लिए अत्यधिक लयबद्ध लोक नृत्य संगत
   (C) दक्षिणी राजस्थान में विशेष रूप से भील समुदाय द्वारा गाया जाने वाला भक्तिपूर्ण सामूहिक गान
   (D) गेहूं की कटाई के मौसम में गाया जाने वाला एक विशिष्ट कृषि कार्य गीत

2. लोकगीत 'पणियारी' पारंपरिक रूप से राजस्थानी संस्कृति में निम्नलिखित में से किस विषय से संबंधित है?
   (A) ऐतिहासिक युद्धों में स्थानीय सरदारों की वीरता
   (B) एक महिला द्वारा अपने पति से कार्य हेतु प्रदेश न जाने की विनती
   (C) जल लाने वाली महिलाओं के संघर्ष और पतिव्रता धर्म
   (D) सफल मानसून और उसके बाद होने वाली फसल का उत्सव

3. राजस्थान की अत्यंत सम्मानित लोक कलाकार अल्लाह जिलाई बाई को मुख्य रूप से किस संगीत परंपरा में उनके महान योगदान के लिए जाना जाता है?
   (A) मांड शास्त्रीय लोक गायन
   (B) मांगणियार लोक गायन
   (C) तेरह ताली प्रस्तुति
   (D) लंगा लोक संगीत

4. राजस्थानी लोक संगीत में 'सारंगी' का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। पारंपरिक भारतीय वाद्य वर्गीकरण के अनुसार, यह किस श्रेणी के वाद्य यंत्रों से संबंधित है?
   (A) सुषिर वाद्य (फूंक वाद्य)
   (B) अवनद्ध वाद्य (ताल वाद्य)
   (C) घन वाद्य (ठोस धातु/काष्ठ वाद्य)
   (D) तत वाद्य (तार वाद्य)

5. 'रावणहत्था' लोक वाद्य के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
   (A) यह मुख्य रूप से पाबूजी की फड़ का वाचन करते समय भोपा समुदाय द्वारा बजाया जाता है।
   (B) यह एक स्वदेशी सुषिर वाद्य है जिसे बजाने के लिए गहन श्वास नियंत्रण की आवश्यकता होती है।
   (C) इस वाद्य का निर्माण बकरी की खाल से ढके नारियल के खोखले खोल (अनुनादक) से किया जाता है।
   (D) इसकी लकड़ी की कमानी (गज) में आमतौर पर घोड़े के बाल लगे होते हैं और अक्सर छोटी घंटी (घुंघरु) लगी होती है।

6. राजस्थान का एक लोकप्रिय और प्राचीन लोक वाद्य 'अलगोजा' सर्वोत्तम रूप से वर्णित है:
   (A) विशेष रूप से तेरह ताली नृत्य में प्रयुक्त एक धातु का अवनद्ध/घन वाद्य
   (B) मुड़ी हुई लकड़ी की कमानी से बजाया जाने वाला एक-तार वाला वाद्य
   (C) एक ही कलाकार द्वारा एक साथ बजाया जाने वाला दोहरी बांसुरी वाला सुषिर वाद्य
   (D) लयबद्ध ध्वनि के लिए दांतों के बीच रखा जाने वाला एक छोटा मोरचंग

7. राजस्थान के किस प्रसिद्ध कलाकार को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों मंचों पर अलगोजा को लोकप्रिय बनाने का मुख्य श्रेय दिया जाता है?
   (A) सादिक खान मांगणियार
   (B) कोमल कोठारी
   (C) करना भील
   (D) रामनाथ चौधरी

8. राजस्थानी लोक वाद्यों में 'मोरचंग' की विशिष्ट विशेषता यह है कि यह:
   (A) दांतों के बीच दबाकर उंगली से बजाया जाने वाला लोहे का एक छोटा वाद्य है
   (B) राज्य का सबसे बड़ा सुषिर वाद्य है, जो पीतल से जटिल एवं पारंपरिक रूप से निर्मित है
   (C) होली के त्योहार के दौरान विशेष रूप से पुरुषों द्वारा बजाया जाने वाला एक बड़ा पारंपरिक अवनद्ध वाद्य (ढोल) है
   (D) एक तार वाला वाद्य है जिसमें किसी गज (कमानी) का उपयोग नहीं होता, बल्कि मिजराब से बजाया जाता है

9. मांगणियार संगीत में एक अनिवार्य लयबद्ध संगति 'खड़ताल' पारंपरिक रूप से निम्नलिखित में से किस सामग्री से बनाई जाती है?
   (A) गुंजायमान गुटकों में बनाई गई कठोर और पकी हुई टेराकोटा मिट्टी
   (B) ठोस लकड़ी के टुकड़े, आमतौर पर शीशम या सागौन
   (C) मोटे बीजों और सूखी फलियों से भरे खोखले बांस के तने
   (D) ढलवां लोहा या भारी पीतल की पट्टियां जिन्हें लयबद्ध रूप से एक साथ टकराया जाता है

Click Here to Buy book on Flipkart

साथ टकराती हैं
(D) अपनी कमर पर कई छोटे पीतल के घुंघरू बांधती हैं

52. राजस्थान में 'चरकुला' नृत्य, यद्यपि उत्तर प्रदेश के पड़ोसी ब्रज क्षेत्र से अत्यधिक प्रभावित है, कभी-कभी पूर्वी सीमावर्ती जिलों में देखा जाता है। इसमें शामिल है:
(A) मानसूनी हवाओं का अनुकरण करने के लिए मोर के पंखों से बने एक बड़े पंखे का उपयोग करना
(B) दराती से कृषि कटाई की क्रियाओं का नाटकीय अनुकरण करना
(C) एक हाथी की सजाई गई पीठ पर साहसी कलाबाज़ियां करना
(D) तेल के दीपकों से प्रज्वलित बहु-स्तरीय लकड़ी के पिरामिड (चरकुला) का संतुलन बनाना

53. निम्नलिखित में से कौन-सा तथ्य पश्चिमी राजस्थान में मांगणियार संगीत समुदाय के एक अनूठे समाजशास्त्रीय पहलू को उजागर करता है?
(A) वे सख्ती से हिंदू धर्म से संबंधित हैं लेकिन विशेष रूप से मुस्लिम संरक्षकों के लिए संगीत प्रस्तुत करते हैं।
(B) वे मुस्लिम हैं जो पारंपरिक रूप से हिंदू राजपूत संरक्षकों के लिए भक्ति गीत गाते हैं।
(C) उन्हें कानूनी और सांस्कृतिक रूप से राजस्थान राज्य से बाहर अपने पारंपरिक वंशानुगत संगीत को प्रस्तुत करने से मना किया गया है।
(D) वे पर्युषण पर्व के वार्षिक दिनों के दौरान विशेष रूप से पवित्र जैन मंदिरों के अंदर प्रस्तुति देते हैं।

54. 'नड़', लंबवत फूंक मारकर बजाया जाने वाला बांसुरी जैसा एक लंबा लकड़ी का लोक वाद्य, किस महान राजस्थानी लोक कलाकार के साथ सबसे प्रसिद्ध रूप से जुड़ा हुआ है?
(A) सादिक खान
(B) रामनाथ चौधरी
(C) करना भील
(D) साकर खान

55. राजस्थान के निम्नलिखित लोक नृत्यों पर विचार कीजिए:
I. अग्नि नृत्य
II. बम नृत्य
III. गवरी नृत्य
राजस्थान में उनके प्राथमिक भौगोलिक उद्गम के अनुसार लगभग उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए, निम्नलिखित में से कौन-सा इन लोक नृत्यों का सही क्रम दर्शाता है?
(A) I, II, III
(B) II, I, III
(C) III, I, II
(D) I, III, II

56. 'मशक' राजस्थान का एक स्वदेशी लोक वाद्य है जो अवधारणात्मक रूप से स्कॉटिश बैगपाइप जैसा दिखता है। ध्वनि उत्पादन की अपनी विधि के आधार पर, यह किस वर्गीकरण के अंतर्गत आता है?
(A) सुषिर वाद्य
(B) तत वाद्य
(C) घन वाद्य
(D) अवनद्ध वाद्य

57. 'भपंग' मुख्य रूप से जोगियों से जुड़ा एक अनूठा एक-तारी वाद्य है। यह राजस्थान के किस क्षेत्र में सांस्कृतिक रूप से निहित है?
(A) बाड़मेर (मारवाड़)
(B) अलवर (मेवात)
(C) बांसवाड़ा (वागड़)
(D) कोटा (हाड़ौती)

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : 'गवरी' लोक नाट्य विशेष रूप से भील समुदाय के पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
कारण (R) : गवरी भगवान शिव (भैरव) और देवी पार्वती की पूजा से जुड़ा एक गहरा धार्मिक अनुष्ठान है, और कड़े प्रथागत नियम महिलाओं को प्रस्तुति में भाग लेने से रोकते हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

59. प्रसिद्ध राजस्थानी लोकगीत 'सुपना रो' विशेष रूप से निम्नलिखित में से किस विषय से संबंधित है?
(A) अपने पति से अलग हुई महिला द्वारा वर्णित एक स्वप्न
(B) मरुस्थल के एक दिवंगत राजा की वीरता का वर्णन करने वाली एक वीर ऐतिहासिक गाथा
(C) राजघरानों में शिशुओं को सुलाने के लिए गाया जाने वाला एक मधुर पारंपरिक लोरी गीत
(D) कच्चे कपास की कताई के साथ गाया जाने वाला एक लयबद्ध कार्य गीत

60. लोक वाद्य 'सुरिंदा' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह तत वाद्य के रूप में वर्गीकृत एक गज-वाद्य (कमानी वाला तार वाद्य) है।
II. यह पश्चिमी राजस्थान के लंगा समुदाय से निकटता से जुड़ा हुआ है।
III. यह आमतौर पर संगीत की गंभीरता प्रदान करने के लिए सिंधी सारंगी के साथ बजाया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

Downloaded from www.pdf.tube

किया जाता है।
(D) इसमें सहभागी दहकते अंगारों पर नंगे पैर नृत्य करते हैं।

42. कालबेलिया नृत्य को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने में उनके अपार योगदान के लिए निम्नलिखित में से किस प्रमुख राजस्थानी लोक कलाकार को 2012 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था?
(A) बतूल बेगम जयपुरी
(B) गुलाबो सपेरा
(C) गवरी देवी जोधपुर
(D) इला अरुण राजस्थानी

43. राजस्थान की 'कठपुतली' परंपरा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए कठपुतलियां पारंपरिक रूप से पूरी तरह से मिट्टी और धातु से बनाई जाती हैं।
II. भाट समुदाय इस कला रूप का प्राथमिक पारंपरिक अभ्यासकर्ता और संरक्षक है।
III. कठपुतली नचाने वाले द्वारा विशिष्ट ध्वनियां उत्पन्न करने के लिए प्रायः 'बोली' (सीटी) नामक बांस के यंत्र का उपयोग किया जाता है।
IV. अमर सिंह राठौड़ की ऐतिहासिक कथा सबसे अधिक प्रस्तुत किए जाने वाले कठपुतली नाटकों में से एक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) केवल I, II और IV

44. शास्त्रीय लोक गायन शैली 'मांड' अपनी परिष्कृत मधुर संरचना के लिए जानी जाती है। निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रतिष्ठित गीत आमतौर पर मांड गायन शैली से जुड़ा है?
(A) बिछूड़ो लोकगीत
(B) पटेल्या लोकगीत
(C) केसरिया बालम
(D) लालर लोकगीत

45. 'घूमर' नृत्य में पारंपरिक रूप से नर्तकियां एक बड़े घेरे में अंदर और बाहर घूमती हैं। आठ-मात्रा की ताल के साथ तालमेल बिठाने वाले इस नृत्य के विशिष्ट चक्करदार चरण (लहराव) को किस नाम से जाना जाता है?
(A) फुड्डी
(B) चक्करी
(C) घेर
(D) सवाई

46. 'पूंगी' या 'बीन' कालबेलिया समुदाय द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण सुषिर वाद्य है। इसका मुख्य गुंजायमान कक्ष (तूंबा) पारंपरिक रूप से किससे बनाया जाता है?
(A) बारीक नक्काशीदार प्राकृतिक चंदन
(B) बकरी का खोखला और पॉलिश किया हुआ सींग
(C) सूखी खोखली लौकी (तूंबा)
(D) पकी हुई प्राकृतिक नदी की मिट्टी

NODIA

47. जोधपुर में जन्मीं और राजस्थान के सांस्कृतिक इतिहास में प्रसिद्ध गवरी देवी किस प्रदर्शन कला की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित प्रतिपादक थीं?
(A) तेरह ताली नृत्य
(B) मांड गायन
(C) कालबेलिया नृत्य
(D) रावणहत्था वादन

48. राजस्थानी लोक संगीत में, गज-वाद्य 'कामायचा' एक गहरी, गंभीर धुन का निर्माण करता है। पारंपरिक कामायचा के मुख्य बजाने वाले तार विशिष्ट रूप से किससे बने होते हैं?
(A) मुड़ा हुआ तांबे का तार
(B) रेशम के धागे
(C) नायलॉन की डोरी
(D) पशु की आंत (तांत)

49. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (लोक वाद्य)
P. मोरचंग
Q. कामायचा
R. खड़ताल
S. ढोलक
सूची II : (वर्गीकरण श्रेणी)
1. घन वाद्य (ठोस)
2. अवनद्ध वाद्य (झिल्लीयुक्त/ताल)
3. सुषिर वाद्य (फूंक वाद्य)
4. तत वाद्य (तार वाद्य)
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

50. भारतीय लोक कला मण्डल, जो लोक कलाओं और कठपुतली के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्था है, की स्थापना 1952 में उदयपुर में किसके द्वारा की गई थी?
(A) कोमल कोठारी
(B) विजयदान देथा
(C) देवीलाल सामर
(D) रामप्रसाद दाधीच

51. लोक नृत्य 'घुड़ला' मुख्य रूप से मारवाड़ क्षेत्र में मनाया जाता है। इसमें महिलाएं लयबद्ध रूप से नृत्य करती हैं जबकि वे:
(A) अपने सिर पर जलते हुए दीपक वाला छिद्रित मिट्टी का घड़ा (मटका) संतुलित करती हैं
(B) अपने सिर पर एक जलता हुआ पीतल का घड़ा संतुलित करती हैं
(C) एक घेरे में घूमते हुए चित्रित लकड़ी की छड़ियों को एक

(B) प्रचुर शरद ऋतु की फसल के मौसम के समापन का उत्सव मनाने हेतु
(C) ग्रीष्मकालीन दोपहर के समय छोटे बच्चों का मनोरंजन करने हेतु
(D) खेतों को जोतते समय स्वयं को प्रेरित करने और आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु

72. 'झालर', 'मंजीरा', 'घुंघरू' और 'रमझोल' सभी राजस्थानी लोक संगीत में कौन-सी समान संरचनात्मक विशेषता साझा करते हैं?
(A) वे सभी धातु के ठोस ताल वाद्य (घन वाद्य) हैं।
(B) वे सभी सपेरों द्वारा विशेष रूप से उपयोग किए जाने वाले सुषिर वाद्य हैं।
(C) वे सभी मिट्टी के बर्तनों पर तनी हुई पशुओं की झिल्लियों से बने होते हैं।
(D) वे सभी एक विशिष्ट लकड़ी की कमानी से बजाए जाने वाले तार वाले वाद्य हैं।

73. 'मांदल' एक पारंपरिक मृदा-आधारित अवनद्ध वाद्य है जिसका उपयोग निम्नलिखित में से किस प्रतिष्ठित लोक प्रस्तुति में अत्यधिक किया जाता है?
(A) कच्छी घोड़ी नृत्य
(B) गवरी लोक नाट्य
(C) बम नृत्य
(D) चरी नृत्य

74. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (प्रसिद्ध लोक कलाकार)
P. अल्लाह जिलाई बाई
Q. सादिक खान
R. गुलाबो सपेरा
S. रुपसिंह शेखावत
सूची II : (संबद्ध कला रूप)
1. भवाई नृत्य
2. कालबेलिया नृत्य
3. मांड गायन
4. खड़ताल वादन
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

75. 'ढप' नृत्य, जो डफली जैसे वाद्य यंत्र के साथ प्रस्तुत किया जाने वाला एक जीवंत सामुदायिक नृत्य है, किस क्षेत्र में वसंत ऋतु (बसंत पंचमी) के आगमन से निकटता से जुड़ा हुआ है?
(A) शेखावाटी
(B) मेवाड़ क्षेत्र
(C) वागड़ क्षेत्र
(D) मेवात क्षेत्र

76. 'घूमर' नृत्य के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) इसका नाम 'घूमना' शब्द से लिया गया है, जो नर्तकियों की सुंदर चक्करदार गति को संदर्भित करता है।
(B) यह विशेष रूप से महिलाओं द्वारा किया जाता है और राजपूत सांस्कृतिक तथा वैवाहिक उत्सवों के केंद्र में है।
(C) यह मूल रूप से शिकार से पहले भील योद्धाओं द्वारा विशेष रूप से किया जाने वाला एक हिंसक युद्ध नृत्य था।
(D) शालीनता बनाए रखते हुए नृत्य की गति धीरे-धीरे चरम की ओर बढ़ती है।

77. 'गींदड़' नृत्य होली के त्योहार तक के दिनों में आयोजित किया जाने वाला एक प्रमुख लोक नृत्य है। यह सांस्कृतिक रूप से किस क्षेत्र का मूल नृत्य है?
(A) मारवाड़ मरुस्थलीय क्षेत्र
(B) हाड़ौती पट्टी
(C) ढूंढाड़ क्षेत्र
(D) शेखावाटी

78. राजस्थानी लोक संस्कृति के संदर्भ में, 'भोपे' मुख्य रूप से किस रूप में परिभाषित किए जाते हैं?
(A) कुशल कारीगर जो जटिल कामायचा तत वाद्य का निर्माण करते हैं
(B) पेशेवर कठपुतली कलाकार जो विशेष रूप से पारंपरिक भाट जाति से संबंधित हैं
(C) फड़ का उपयोग करके लोक देवताओं की गाथाओं का वाचन करने वाले पुजारी-गायक
(D) वार्षिक गवरी उत्सव के आयोजन और नेतृत्व के लिए जिम्मेदार जनजातीय मुखिया

79. निम्नलिखित में से कौन 'तेरह ताली' नृत्य के पारंपरिक निष्पादन का सबसे उपयुक्त वर्णन प्रस्तुत करता है?
(A) एक पारंपरिक खड़ा नृत्य जहां महिलाएं अपने सिर पर तेरह पीतल के बर्तनों के ढेर को संतुलित करती हैं
(B) एक बैठकर किया जाने वाला नृत्य जहां महिलाएं अपने शरीर से बंधे तेरह मंजीरों को बजाती हैं
(C) एक अत्यधिक ऊर्जावान उत्सव समूह नृत्य जिसमें तेरह पुरुष कलाकार बड़े नगाड़ों को बजाते हैं
(D) युवा अविवाहित लड़कियों द्वारा चंद्र मास के तेरहवें दिन विशेष रूप से किया जाने वाला एक जनजातीय नृत्य

80. उनके पारंपरिक कलाकारों के प्राथमिक लिंग के आधार पर निम्नलिखित राजस्थानी लोक नृत्यों के सही क्रम का चयन कीजिए: केवल पुरुष, केवल महिला, मिश्रित-समूह (क्रमशः)।
(A) घूमर नृत्य, चरी नृत्य, गैर नृत्य
(B) कच्छी घोड़ी, तेरह ताली, रणबाजा
(C) भवाई नृत्य, घूमर नृत्य, चरी नृत्य
(D) कालबेलिया नृत्य, गैर नृत्य, गवरी नृत्य

81. 'मूमल' लोकगीत, जो राजकुमारी मूमल के शारीरिक सौंदर्य और मार्मिक प्रेम कथा का वर्णन करता है, किस विशिष्ट स्थान से उत्पन्न हुआ?

Click Here to Buy book on Amazon

(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

www.nodia.in

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

91. सांस्कृतिक इतिहास में राजस्थान में आधुनिक 'भवाई' नृत्य प्रारूप के संस्थापक का श्रेय किसे दिया जाता है, जो ऐतिहासिक रूप से अजमेर के केकड़ी से आते थे?
(A) बाघोजी जाट
(B) रूपसिंह शेखावत
(C) दयाराम
(D) सादिक खान

92. 'रसिया' लोकगीत पूर्वी राजस्थान (भरतपुर-धौलपुर क्षेत्र) के सांस्कृतिक ताने-बाने में गहराई से समाए हुए हैं। वे मुख्य रूप से किसकी कथाओं और दिव्य प्रेम का वर्णन करते हैं?
(A) शिव और पार्वती
(B) राम और सीता
(C) राधा और कृष्ण
(D) पाबूजी और देवल चारणी

93. 'कठपुतली' परंपरा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पारंपरिक रूप से आडू की हल्की लकड़ी से तराशी गई धागा कठपुतलियों पर निर्भर करता है।
II. कठपुतली कलाकार मुख्य रूप से नट या भाट समुदायों से संबंधित हैं।
III. यह प्रस्तुति पूरी तरह से मूक होती है जिसमें कोई संगीतमय या स्वर संगति नहीं होती है।
IV. 'पुतली का खेल' अक्सर ऐतिहासिक चरित्रों और राजपूत शौर्य को उजागर करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

94. 'रणबाजा' लोक नृत्य एक दुर्लभ मिश्रित नृत्य है जहां पुरुष और महिलाएं दोनों उत्साहपूर्वक एक साथ भाग लेते हैं। यह सांस्कृतिक रूप से किस समुदाय के लिए विशिष्ट है?
(A) मेवाड़ का भील समुदाय
(B) मारवाड़ का बिश्नोई समुदाय
(C) मेवात का मेव समुदाय
(D) हाड़ौती का सहरिया समुदाय

95. राजस्थान के 'गैर' नृत्य के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह वार्षिक तीज त्योहार के दौरान विशेष रूप से स्थानीय महिलाओं द्वारा किया जाता है।
(B) इसमें पुरुष लकड़ी की छड़ियों को टकराते हुए एक घेरे में नृत्य करते हैं।
(C) यह बिना किसी संगीतमय वाद्य यंत्र के पूरी तरह से प्रस्तुत किया जाता है।
(D) इसकी उत्पत्ति जयपुर के ऐतिहासिक राजदरबारों में फसल उत्सव के रूप में हुई थी।

96. 'चकरी' नृत्य एक तीव्र गति वाला, घूमता हुआ लोक नृत्य है जो पारंपरिक रूप से हाड़ौती क्षेत्र में किस समुदाय की अविवाहित महिलाओं द्वारा ढोलक की ताल पर प्रस्तुत किया जाता है?
(A) कालबेलिया
(B) गरासिया
(C) मीणा
(D) कंजर

97. बोरुंदा स्थित 'रुपायन संस्थान' ने राजस्थानी लोक संगीत के संकलन और संरक्षण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। वे प्रसिद्ध लोक-साहित्यकार और लेखक कौन थे जिन्होंने इस परियोजना पर कोमल कोठारी के साथ सह-संस्थापक के रूप में कार्य किया?
(A) विजयदान देथा
(B) देवीलाल सामर
(C) कन्हैयालाल सेठिया
(D) सूर्यमल्ल मीसण

98. राजस्थान की 'मांड' गायन शैली मुख्य रूप से मुख्यधारा के भारतीय शास्त्रीय संगीत से भिन्न है क्योंकि:
(A) यह मधुर संगति के लिए किसी भी पारंपरिक तार वाले वाद्य का उपयोग नहीं करती है।
(B) यह विशेष रूप से सामूहिक गान के रूप में प्रस्तुत की जाती है और कभी भी एकल प्रस्तुति के रूप में नहीं दी जाती है।
(C) इसमें शास्त्रीय रागों के कठोर समय संबंधी प्रतिबंधों का अभाव होता है।
(D) यह पूरी प्रस्तुति के दौरान किसी भी भारी ताल वाद्य के उपयोग से कड़ाई से बचती है।

99. 'इंडोणी', 'संकारिया', 'पणियारी' और 'बागड़िया' किस व्यापक पारंपरिक लोक नृत्य शैली के प्रमुख प्रकार हैं?
(A) कालबेलिया
(B) घूमर
(C) तेरह ताली
(D) भवाई

100. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (जनजातीय/लोक समुदाय)
P. गरासिया
Q. कंजर
R. कामड़
S. गुर्जर
सूची II : (विशिष्ट नृत्य)
1. चकरी
2. वालर
3. चरी
4. तेरह ताली
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4

Downloaded from www.pdf.tube

गति और लय के साथ बजाते हैं। यह घन वाद्य श्रेणी में आता है।

10. (B) केवल I और III

ढोलक एक अत्यंत लोकप्रिय अवनद्ध (झिल्लीदार) ताल वाद्य है जिसका उपयोग सम्पूर्ण राजस्थान में उत्सवों और लोक गायन में किया जाता है। इसकी संरचना लकड़ी के बेलनाकार खोल से बनी होती है, जिसके दोनों छोर पर चमड़े की झिल्ली लगी होती है। इसमें केवल एक धातु का गोलाकार ढांचा नहीं होता, बल्कि दोनों सिरों पर चमड़े की पूड़ी होती है जिसे डोरियों या छल्लों से कसा जाता है। अतः पहला और तीसरा विवरण बिल्कुल सत्य है।

11. (A) बाड़मेर और जैसलमेर के पश्चिमी मरुस्थलीय जिले

मांगणियार समुदाय राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय सीमावर्ती जिलों, मुख्य रूप से बाड़मेर और जैसलमेर में निवास करने वाला एक पारंपरिक मुस्लिम संगीतकार समुदाय है। ये कलाकार सदियों से वंशानुगत रूप से लोक संगीत का संवर्धन कर रहे हैं। इनके मुख्य संरक्षकों में स्थानीय हिंदू राजपूत और संपन्न परिवार शामिल रहे हैं। कामायचा और खड़ताल का प्रयोग करते हुए यह समुदाय रेगिस्तानी संस्कृति की समृद्ध संगीतमय धरोहर को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवंत बनाए हुए है।

12. (C) सिंधी सारंगी

पश्चिमी राजस्थान के लंगा और मांगणियार समुदाय यद्यपि कई सांगीतिक समानताएं रखते हैं, परंतु उनके वाद्यों में स्पष्ट अंतर है। लंगा समुदाय का मुख्य और विशिष्ट गज-वाद्य 'सिंधी सारंगी' है। यह रोहिड़ा की लकड़ी से बनाई जाती है और इसमें कई अनुकंपी तार होते हैं जो गायन को अत्यंत गूंज और जीवंतता प्रदान करते हैं। इसके विपरीत, मांगणियार समुदाय मुख्य रूप से कामायचा का प्रयोग करता है, जो उन्हें लंगा गायकों से अलग पहचान देता है।

13. (D) बकरी की खाल

कामायचा मांगणियार संगीत परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राचीन गज-वाद्य (तत वाद्य) है। इसमें आड़ू या आम की लकड़ी से बना एक बड़ा, गोल और खोखला अनुनादक (तूंबा) होता है। इस गोलाकार तूंबे के अग्र भाग को पारंपरिक रूप से बकरी की सुकाई गई खाल से मढ़ा जाता है। बकरी की खाल का यह आवरण यंत्र को एक गहरी, गंभीर और गुंजायमान ध्वनि प्रदान करता है जो मरुस्थल की ध्वन्यात्मक पहचान मानी जाती है।

14. (C) भील

घूमर राजस्थान का राज्य नृत्य है, जिसे लोक नृत्यों का सिरमौर माना जाता है। ऐतिहासिक शोधों के अनुसार, यह नृत्य मूल रूप से भील जनजातीय समुदाय में विकसित हुआ था। भील समुदाय में यह देवी सरस्वती और माता अम्बा की पूजा-अर्चना के अवसर पर प्रस्तुत किया जाता था। कालान्तर में, राजपूत राजघरानों ने इस नृत्य की शालीनता, लयबद्धता और लालित्य को स्वीकार करते हुए इसे अपनाया, जिसके बाद यह पूरे राजस्थान का शाही प्रतीक बन गया।

15. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।

कालबेलिया नृत्य और गीतों को वर्ष 2010 में यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया गया था। यह नृत्य सपेरा समुदाय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जिसमें नर्तकियां सांप की भांति लोचदार और चपलतापूर्ण अंग संचालन करती हैं। सिर पर पीतल के बर्तनों का संतुलन बनाना और तलवारबाजी करना 'भवाई' नृत्य की प्रमुख विशेषता है, न कि कालबेलिया की। इसलिए पहला कथन सही है परंतु दिया गया कारण पूरी तरह गलत है।

NODIA

16. (D) गुलाबो सपेरा

गुलाबो सपेरा राजस्थान के कालबेलिया नृत्य की वैश्विक स्तर पर सबसे प्रसिद्ध और अग्रणी प्रतिपादक हैं। अजमेर में जन्मी गुलाबो ने अत्यधिक सामाजिक संघर्षों के बावजूद इस पारंपरिक सपेरा नृत्य को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक नई और गौरवपूर्ण पहचान दिलाई। उनके इस अद्भुत समर्पण और कलात्मक योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा उन्हें वर्ष 2016 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके प्रयासों से ही कालबेलिया नृत्य को विश्वभर में पहचान मिली।

17. (A) शेखावाटी

'कच्छी घोड़ी' राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनू, चुरु) का एक अत्यंत लोकप्रिय और व्यावसायिक लोक नृत्य है। यह ऐतिहासिक रूप से शेखावाटी के लोक-नायकों, बावरियों तथा डाकुओं से रक्षा करने वाले स्थानीय शूरवीरों की गाथाओं से जुड़ा है। इसमें केवल पुरुष कलाकार भाग लेते हैं जो लकड़ी और कागज़ की बनी नकली घोड़ी पर सवार होकर हाथों में नंगी तलवारें लिए युद्ध कला का शानदार और लयबद्ध स्वांग रचाते हैं।

18. (C) वालर - कालबेलिया समुदाय

'वालर' नृत्य कालबेलिया समुदाय का नहीं, बल्कि गरासिया जनजाति का एक अत्यंत प्रसिद्ध और पारंपरिक लोक नृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से सिरोही और आबू रोड क्षेत्र में गरासिया पुरुषों और महिलाओं द्वारा बिना किसी वाद्य यंत्र के धीमी गति में किया जाता है। अन्य सभी सुमेलित युग्म सही हैं: तेरह ताली नृत्य कामड़ समुदाय द्वारा, चरी नृत्य गुर्जर महिलाओं द्वारा तथा गवरी लोक नाट्य भील समुदाय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

19. (A) रामदेवजी

'तेरह ताली' नृत्य राजस्थान के प्रमुख लोक देवता बाबा रामदेवजी की आराधना में कामड़ समुदाय की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला एक प्रसिद्ध भक्ति नृत्य है। इस नृत्य की मुख्य विशेषता यह है कि नर्तकियां बैठकर अपने शरीर के विभिन्न अंगों पर 13 मंजीरे बांधती हैं और हाथों में मंजीरे लेकर अद्भुत लय और शारीरिक संतुलन के साथ प्रदर्शन करती हैं। रामदेवरा मेले के दौरान यह नृत्य भक्ति का प्रमुख केंद्र होता है।

20. (A) केवल I, II और III

चरी नृत्य अजमेर और किशनगढ़ क्षेत्र की गुर्जर समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक प्रसिद्ध पारंपरिक लोक नृत्य है। इसमें नर्तकियां सिर पर पीतल की चरी (मटका)

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) मुख्य रुप से राजपूत राजदरबारों में विकसित एक शास्त्रीय शैलीयुक्त लोक गायन
राजस्थान की मांड गायन शैली एक अत्यंत विशिष्ट और परिष्कृत संगीत परंपरा है। यह शैली ऐतिहासिक रूप से जैसलमेर और बीकानेर क्षेत्र के राजपूत राजदरबारों में पल्लवित एवं विकसित हुई। यह लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का एक सुंदर समन्वय है, जिसमें शास्त्रीय रागों के कड़े नियमों का कठोर बंधन नहीं होता। इसमें शाही दरबारों की भव्यता, भक्ति, मरुस्थलीय जीवन की संवेदनाओं और प्रेम को अत्यंत मधुर स्वर में अभिव्यक्त किया जाता है।

2. (C) जल लाने वाली महिलाओं के संघर्ष और पतिव्रता धर्म
'पणियारी' राजस्थान का एक अत्यंत लोकप्रिय और पारंपरिक लोकगीत है, जो मरुस्थलीय संस्कृति के दैनिक जीवन से गहराई से जुड़ा है। यह गीत पानी भरकर लाती हुई महिलाओं द्वारा गाया जाता है। इसमें जल संकट के बीच मरुस्थल की नारियों के त्याग, उनके कठिन संघर्ष और निष्ठावान पतिव्रता धर्म का सुंदर चित्रण किया जाता है। इस गीत के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति में नैतिक मूल्यों, पारिवारिक निष्ठा और जल के अमूल्य महत्व को सहज रुप से उभारा गया है।

3. (A) मांड शास्त्रीय लोक गायन
अल्लाह जिलाई बाई राजस्थान की बीकानेर रियासत की महान लोक गायिका थीं। उन्हें मुख्य रुप से 'मांड' गायन शैली में उनके अतुलनीय योगदान के लिए विश्वभर में जाना जाता है। उन्होंने राजस्थानी लोकगीत "केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देस" को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलाई। संगीत के क्षेत्र में उनकी इस महान सेवा और समर्पण के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा वर्ष 1982 में प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

4. (D) तत वाद्य (तार वाद्य)
भरतमुनि के नाट्यशास्त्र और पारंपरिक भारतीय संगीत वर्गीकरण प्रणाली के अनुसार, वे वाद्य यंत्र जिनमें ध्वनि का उत्पादन तारों या तांत के कंपन से होता है, 'तत वाद्य' कहलाते हैं। सारंगी एक प्रमुख गज-वाद्य है जिसे कमानी (गज) से बजाया जाता है। इसमें मुख्य तारों के साथ-साथ कई अनुकंपी तार लगे होते हैं। राजस्थानी लोक संगीत में लंगा और मांगणियार समुदाय इसका अत्यधिक उपयोग करते हैं, जो गायन को मधुरता प्रदान करता है।

5. (B) यह एक स्वदेशी सुषिर वाद्य है जिसे बजाने के लिए गहन श्वास नियंत्रण की आवश्यकता होती है।
रावणहत्था एक प्राचीन तार वाद्य (तत वाद्य) है, न कि फूंक मारकर बजाया जाने वाला सुषिर वाद्य। इसका निर्माण आधे कटे हुए नारियल के खोल से किया जाता है, जिस पर बकरी की खाल मढ़ी जाती है। इसमें बांस का दंड लगा होता है जिस पर तार बंधे होते हैं। इसे घोड़े के बाल से बनी कमानी (गज) की सहायता से बजाया जाता है। राजस्थान में नायक या भोपा समुदाय के लोग पाबूजी की फड़ का वाचन करते समय इसे बजाते हैं।

6. (C) एक ही कलाकार द्वारा एक साथ बजाया जाने वाला दोहरी बांसुरी वाला सुषिर वाद्य
अलगोजा राजस्थान का एक अत्यंत प्रसिद्ध पारंपरिक सुषिर वाद्य है। इसमें बांस की दो नलियां (बांसुरियां) जुड़ी होती हैं, जिन्हें एक ही वादक द्वारा अपने मुंह में रखकर एक साथ बजाया जाता है। एक बांसुरी से मुख्य मधुर धुन निकाली जाती है जबकि दूसरी बांसुरी से निरंतर एक स्वर (ड्रोन) कायम रखा जाता है। यह वाद्य यंत्र मरुस्थलीय क्षेत्रों में चरवाहों, मीणा, भील और मांगणियार लोक कलाकारों द्वारा अत्यधिक उत्साह से बजाया जाता है।

7. (D) रामनाथ चौधरी
जयपुर जिले के पदमपुरा गांव से ताल्लुक रखने वाले रामनाथ चौधरी अलगोजा वादन के महान उस्ताद माने जाते हैं। उन्होंने इस पारंपरिक राजस्थानी सुषिर वाद्य को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। उनकी सबसे अनूठी कलात्मक विशेषता यह है कि वे नाक से एक साथ दो अलगोजे बजाने में सिद्धहस्त हैं। उनके इस असाधारण कौशल और प्रदर्शन ने अलगोजा को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

8. (A) दांतों के बीच दबाकर उंगली से बजाया जाने वाला लोहे का एक छोटा वाद्य है
मोरचंग राजस्थान का एक अत्यधिक सूक्ष्म और अनूठा लोक वाद्य है जो लोहे या पीतल की धातु से बना होता है। इसे वादक द्वारा अपने दांतों के बीच कसकर दबाया जाता है और इसकी मध्य वाली पतली धातु की जीभ को उंगली की चोट से कम्पित किया जाता है। मुंह का खोखला भाग अनुनादक का कार्य करता है। यह लोक वाद्यों के वर्गीकरण में सुषिर वाद्य के समान कार्य करता है और मरुस्थलीय संगीत में अद्भुत लय पैदा करता है।

9. (B) ठोस लकड़ी के टुकड़े, आमतौर पर शीशम या सागौन
खड़ताल राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय संगीत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य लयबद्ध संगति है। यह धातु का न होकर ठोस लकड़ी के आयताकार टुकड़ों से बनाया जाता है, जिसके लिए शीशम, सागौन या आडू की मजबूत लकड़ी का प्रयोग होता है। मांगणियार समुदाय के कलाकार इसे अपने एक हाथ की उंगलियों और अंगूठे के बीच रखकर अत्यंत तीव्र

Click Here to Buy book on Flipkart

संगीत के क्षेत्र में उनके अप्रतिम योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। वे कामायचा के अंतिम स्तंभ माने जाते थे।

32. (C) 13
तेरह ताली नृत्य कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा बैठकर किया जाने वाला एक अनूठा भक्ति नृत्य है। इस नृत्य की पारंपरिक प्रस्तुति में मुख्य नर्तकी अपने शरीर पर कुल 13 मंजीरे बांधती है। इनमें से 9 मंजीरे दाएं पैर पर, 2 मंजीरे कोहनियों पर तथा 2 मंजीरे दोनों हाथों में थामे जाते हैं। नर्तकी गति और ताल के साथ इन तेरह मंजीरों को परस्पर टकराकर अत्यंत सुरीली ध्वनि उत्पन्न करती है।

33. (A) कच्छी घोड़ी
'कच्छी घोड़ी' राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र का एक प्रसिद्ध व्यावसायिक लोक नृत्य है जो केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें नर्तक बांस और कपड़े से बनी नकली घोड़ी की पोशाक पहनते हैं और कमर पर बांधकर सवार का स्वांग रचते हैं। नर्तक हाथों में नंगी तलवारें लेकर युद्ध की व्यूह रचना तथा नकली लड़ाई का जीवंत प्रदर्शन करते हैं। यह नृत्य ढोल, बांकिया और झांझ वाद्यों की लय पर प्रस्तुत होता है।

34. (C) अपने दूरस्थ पति के लिए तड़पती महिला की विरह-व्यथा
'कुरजां' राजस्थान का एक अत्यंत लोकप्रिय और मार्मिक विरह लोकगीत है। 'कुरजां' वास्तव में साइबेरिया से सर्दियों में मारवाड़ आने वाले एक प्रवासी पक्षी (डेमोइसेल क्रेन) का नाम है। इस गीत में मरुस्थल की एक विरहिणी नायिका इस पक्षी को अपना संदेशवाहक मानकर विदेश (दूरस्थ स्थान) गए अपने पति तक अपना प्रेम संदेश और विरह की व्यथा पहुँचाने की भावुक प्रार्थना करती है। यह गीत गहरी मानवीय संवेदनाओं से भरा है।

35. (B) केवल I और II
लंगा समुदाय राजस्थान के पश्चिमी जिलों (बाड़मेर, जैसलमेर) का एक पेशेवर मुस्लिम संगीतकार वर्ग है। वे अपने पारंपरिक गायन में सिंधी सारंगी, सुरिंदा और अलगोजा जैसे वाद्यों का प्रमुखता से प्रयोग करते हैं। वे केवल हिंदू राजपूतों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उनके संरक्षकों में सिंध और मारवाड़ के सिंधी मुस्लिम, राजपूत और अन्य स्थानीय संपन्न परिवार भी शामिल रहे हैं। अतः पहला और दूसरा कथन पूरी तरह सत्य है।

36. (D) देवनारायणजी
'जंतर' राजस्थान का एक बहुत ही प्राचीन और पवित्र तत वाद्य (तार वाद्य) है। इसमें दो बड़े कद्दू (तूंबे) लगे होते हैं जिन्हें एक बांस के दंड से जोड़ा जाता है। यह वाद्य यंत्र विशेष रूप से गुर्जर समुदाय के 'गुर्जर भोपों' द्वारा लोक देवता भगवान श्री देवनारायणजी की फड़ का वाचन और कथा गायन करते समय बजाया जाता है। इसे गले में लटकाकर उंगलियों पर मिजराब पहनकर अत्यंत श्रद्धा से बजाया जाता है।

37. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
भवाई नृत्य अपनी असाधारण शारीरिक कलाबाज़ियों, सिर पर मटकों का संतुलन बनाने, कांच के टुकड़ों, नंगी तलवारों की धार और थाली के किनारों पर पैर रखकर नृत्य करने के लिए विख्यात है। हालाँकि, यह कोई ऐतिहासिक राजपूत युद्ध नृत्य नहीं है; इसका विकास व्यावसायिक लोक नाट्यकारों और मटका-वाहक समुदायों द्वारा सामाजिक मनोरंजन के लिए हुआ था। इसलिए पहला कथन पूरी तरह सही है, लेकिन इसके पीछे दिया गया कारण असत्य है।

38. (C) भरतपुर - अलवर
'बम नृत्य' या 'बम रसिया' राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र, विशेष रूप से भरतपुर और अलवर (मेवात) जिलों का एक अत्यंत प्रसिद्ध और ऊर्जावान लोक नृत्य है। यह नृत्य फाल्गुन माह में नई फसल (गेहूं और चना) के आगमन और वसंत ऋतु के स्वागत की खुशी में पुरुषों द्वारा किया जाता है। इसमें 'बम' नाम का एक विशालकाय नगाड़ा बजाया जाता है जिसके साथ रसिया लोकगीत गाए जाते हैं।

39. (D) थाली और चिमटा
भरतपुर और अलवर क्षेत्र के 'बम नृत्य' में मुख्य केंद्र बिंदु 'बम' नामक विशाल नगाड़ा होता है, जिसे दो बड़े लकड़ी के डंडों से बजाया जाता है। इस विशाल नगाड़े की भारी आवाज के साथ संगति और ताल को संतुलित बनाए रखने के लिए पारंपरिक रूप से थाली, चिमटा, मंजीरा और खड़ताल जैसे घन वाद्यों का उपयोग किया जाता है। ये वाद्य नृत्य की गति और गायकों के रसिया गीतों को लय प्रदान करते हैं।

40. (A) दूर के मरुस्थलीय कुओं से पीने का पानी लाना
'चरी' नृत्य की वैचारिक उत्पत्ति मरुस्थलीय राजस्थान की महिलाओं के कठिन दैनिक जीवन से जुड़ी है। शुष्क मरुस्थल में महिलाओं को पीने का पानी लाने के लिए भीषण गर्मी में कई किलोमीटर दूर कुओं तक जाना पड़ता था। जल से भरी चरी (पीतल का बर्तन) को सिर पर रखकर लौटने की इस दैनिक प्रक्रिया, उनकी कुशलता और खुशी को इस नृत्य में दर्शाया गया है, जिसमें चरी पर जलती लपटें उम्मीद का प्रतीक हैं।

41. (B) यह बिना किसी वाद्य यंत्र की संगति के किया जाता है।
'वालर' नृत्य सिरोही क्षेत्र की गरासिया जनजाति का एक अत्यंत प्रसिद्ध और पारंपरिक लोक नृत्य है। अन्य लोक नृत्यों की तुलना में इसकी सबसे अनूठी और असामान्य विशेषता यह है कि यह बिना किसी वाद्य यंत्र की संगति के प्रस्तुत किया जाता है। पुरुष और महिलाएं एक अर्धवृत्त बनाकर धीमी गति में अपने हाथों की तालियां, पैरों की थपकियां और गीतों की लय पर बहुत ही शांत और सुंदर शैली में नृत्य करते हैं।

42. (B) गुलाबो सपेरा
राजस्थान की प्रसिद्ध लोक नर्तकी गुलाबो सपेरा को कालबेलिया नृत्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने और बढ़ावा देने में उनके असाधारण योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2016 में प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने अत्यंत कठिन सामाजिक परिस्थितियों

NODIA

संतुलित करती हैं, जिसके सबसे ऊपरी बर्तन में तेल में भिगोए गए बिनोले जलाए जाते हैं। यह कोई युद्ध नृत्य नहीं है, बल्कि यह खुशी के अवसरों और मेहमानों के स्वागत के लिए किया जाता है। अतः पहला, दूसरा और तीसरा कथन सत्य है।

21. (B) होली
'गैर' नृत्य राजस्थान का एक अत्यंत प्राचीन और ऊर्जावान लोक नृत्य है, जो मुख्य रूप से मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्रों में भील तथा राजपूत पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से होली के अवसर पर तथा दुलहंडी से शुरु होकर अगले कुछ दिनों तक किया जाता है। इसमें नर्तक पारंपरिक खांडा कपड़े पहनकर हाथ में लकड़ी की छड़ियां (खांडा) लेकर एक गोल घेरे में लयबद्ध तरीके से टकराते हुए नृत्य करते हैं।

22. (C) रुपसिंह शेखावत
राजस्थान का 'भवाई' नृत्य अपनी अद्भुत शारीरिक कलाबाज़ियों, संतुलन और रोमांचक कृत्यों के लिए प्रसिद्ध है। जयपुर निवासी रुपसिंह शेखावत इस जटिल नृत्य शैली के महान प्रतिपादक माने जाते हैं। उन्होंने सिर पर कई मटके रखकर, कांच के टुकड़ों, नंगी तलवार की धार और थाली के किनारों पर नृत्य करने की कला को निखारा। उनके निरंतर प्रयासों और उत्कृष्ट प्रदर्शनों ने भवाई नृत्य को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अत्यधिक प्रसिद्धि दिलाई।

23. (D) रुपायन संस्थान
जोधुपर जिले के बोरुंदा गांव में वर्ष 1960 में 'रुपायन संस्थान' की स्थापना की गई थी। इसके संस्थापक महान लोक-संस्कृतिविद् पद्मश्री कोमल कोठारी तथा प्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यकार विजयदान देथा थे। इस संस्थान का प्राथमिक उद्देश्य राजस्थानी लोक संगीत, वाद्यों, गीतों और विलुप्त होती मरुस्थलीय लोक कलाओं का गहन दस्तावेजीकरण, संरक्षण और अनुसंधान करना है। इसने मांगणियार और लंगा गायकों को विश्व मंच पर स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई।

24. (A) धागा कठपुतली
राजस्थान की पारंपरिक कठपुतली कला विश्व प्रसिद्ध है, जिसका संचालन मुख्य रूप से 'भाट' समुदाय के कलाकारों द्वारा किया जाता है। यह कला मूल रूप से 'धागा कठपुतली' (स्ट्रिंग पपेट) की श्रेणी में आती है। इसमें अरडू की लकड़ी से तराशे गए और कपड़ों से सजे पात्रों को बारीक काले धागों की सहायता से उंगलियों से नचाया जाता है। अमर सिंह राठौड़ की ऐतिहासिक गाथाएं इस कठपुतली मंचन का मुख्य आकर्षण होती हैं।

25. (A) P-4, Q-2, R-3, S-1
राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्यों का उनके क्षेत्रीय उद्गम से सही मिलान इस प्रकार है: 'बम नृत्य' भरतपुर और अलवर क्षेत्र का प्रसिद्ध नगाड़ा नृत्य है। 'ढोल नृत्य' जालौर जिले में विवाह एवं शुभ अवसरों पर किया जाता है। 'अग्नि नृत्य' बीकानेर के कतरियासर में जसनाथी सिद्धों द्वारा अंगारों पर प्रस्तुत किया जाता है। 'बिन्दौरी नृत्य' झालावाड़ जिले का एक गैर-शैली का लोकप्रिय लोक नृत्य है जो शादी-विवाह में होता है।

26. (B) जसनाथी संप्रदाय
'अग्नि नृत्य' राजस्थान का एक अत्यंत अद्भुत और धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण लोक नृत्य है। इसका उद्गम बीकानेर जिले के कतरियासर गांव में हुआ था। यह नृत्य जसनाथी संप्रदाय के सिद्ध पुरुषों द्वारा अपने गुरु जसनाथ जी की स्मृति में किया जाता है। इसमें नर्तक 'फतेह-फतेह' के धार्मिक उद्घोष के साथ जलते हुए धुधकते अंगारों (धूंणा) पर नंगे पैर बैठकर और चलकर हैरतअंगेज कलाबाज़ियां तथा नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

27. (A) जयनारायण व्यास
जालौर का 'ढोल नृत्य' राजस्थान का एक अत्यंत प्रसिद्ध और ऊर्जावान लोक नृत्य है, जो पुरुषों द्वारा विवाह और मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। इस पारंपरिक नृत्य को पहचान दिलाने और इसे राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का मुख्य श्रेय राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री और महान स्वतंत्रता सेनानी 'लोकनायक' जयनारायण व्यास को जाता है। उन्होंने इस कला रूप का दस्तावेजीकरण करवाया और इसे राजस्थानी सांस्कृतिक विरासत में ऊंचा दर्जा दिलाया।

28. (C) भगवान शिव और भस्मासुर
'गवरी' (या राई) राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में भील जनजाति द्वारा भाद्रपद और आश्विन माह में लगातार 40 दिनों तक खेला जाने वाला अनुष्ठानिक लोक नाट्य है। यह पूरा नाट्य पौराणिक कथा 'भगवान शिव और भस्मासुर' के प्रसंग पर आधारित होता है। इसमें मुख्य पात्र शिव (बुढ़िया) और पार्वती (गवरी) होते हैं। यह केवल पुरुषों द्वारा खेला जाता है जिसमें वे अपनी धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं।

29. (D) ऊंट की गर्दन का एक सजावटी आभूषण
'गोरबंद' राजस्थान की मरुस्थलीय संस्कृति का एक अत्यंत प्रसिद्ध लोकगीत है। इसमें 'गोरबंद' शब्द का वास्तविक अर्थ ऊंट की गर्दन में बांधे जाने वाले एक सुंदर और सजावटी श्रृंगारिक आभूषण से है। मरुस्थल में ऊंट को अत्यंत प्यार से कौड़ियों, काच, पट्टियों और रंग-बिरंगे धागों से सजाया जाता है। ग्रामीण महिलाएं ऊंट का श्रृंगार करते समय अत्यंत भावुक और मधुर स्वर में यह लोकगीत सामूहिक रूप से गाती हैं।

30. (A) I, II, III
राजस्थानी सांस्कृतिक संस्थानों की स्थापना का कालानुक्रम इस प्रकार है: देवीलाल सामर द्वारा उदयपुर में 'भारतीय लोक कला मण्डल' की स्थापना वर्ष 1952 में की गई थी। इसके बाद कोमल कोठारी और विजयदान देथा द्वारा बोरुंदा में 'रुपायन संस्थान' की स्थापना वर्ष 1960 में हुई। जयपुर में स्थित 'जवाहर कला केंद्र' का उद्घाटन वर्ष 1993 में हुआ था। अतः सही कालानुक्रमिक क्रम पहला, दूसरा और फिर तीसरा संस्थान है।

31. (B) कामायचा
पद्मश्री साकर खान मांगणियार राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र के एक महान लोक संगीतकार थे। उन्हें पारंपरिक गज-वाद्य 'कामायचा' पर उनकी असाधारण महारत और निपुणता के लिए जाना जाता है। उन्होंने कामायचा की स्वर-लहरियों को भारत के साथ-साथ विदेशों में भी फैलाया। वर्ष 2012 में

NODIA

मुस्लिम हैं, लेकिन वे पारंपरिक रूप से अपने हिंदू राजपूत संरक्षकों (जजमानों) के लिए वंशानुगत रूप से संगीत प्रस्तुत करते हैं। वे हिंदू देवी-देवताओं, लोक-नायकों और भक्ति पदों को उतनी ही श्रद्धा से गाते हैं जितना कि सूफी संगीत। यह परंपरा राजस्थान की गंगा-जमुनी तहज़ीब और सामाजिक सौहार्द का एक बेहतरीन उदाहरण है।

54. (C) करना भील
'नड़' राजस्थान का एक अत्यंत दुर्लभ और प्राचीन लंबवत सुषिर वाद्य है जो कंगोर की लकड़ी से बनाया जाता है। यह वाद्य यंत्र जैसलमेर के विख्यात और ऐतिहासिक लोक कलाकार 'करना भील' से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। करना भील अपनी विशाल मूंछों और नड़ वादन के अद्भुत कौशल के लिए विश्व प्रसिद्ध थे। वे नड़ बजाने के साथ-साथ सांस पर नियंत्रण रखकर स्वर उच्चारण करने की अनोखी कला में निपुण थे।

55. (A) I, II, III
उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक उद्गम के आधार पर लोक नृत्यों का सही क्रम इस प्रकार है: 'अग्नि नृत्य' का उद्गम बीकानेर जिले के कतरियासर में हुआ, जो सबसे उत्तर में स्थित है। इसके बाद 'बम नृत्य' पूर्वी राजस्थान के भरतपुर-अलवर क्षेत्र में केंद्रित है। अंत में 'गवरी' लोक नाट्य दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ (उदयपुर, राजसमंद) क्षेत्र में भील जनजाति द्वारा खेला जाता है। अतः पहला विकल्प सही है।

56. (A) सुषिर वाद्य
'मशक' राजस्थान का एक पारंपरिक लोक वाद्य है जो देखने और ध्वनि उत्पादन में यूरोपीय स्कॉटिश बैगपाइप से काफी समानता रखता है। यह वाद्य चमड़े के एक थैले से बना होता है जिसमें फूंक मारकर हवा भरी जाती है और दो नलियों के माध्यम से निरंतर ध्वनि निकाली जाती है। हवा के दबाव और फूंक से बजाए जाने के कारण इसे भारतीय वाद्य वर्गीकरण प्रणाली के तहत 'सुषिर वाद्य' (वायु वाद्य) श्रेणी में रखा जाता है।

57. (B) अलवर (मेवात)
'भपंग' राजस्थान का एक अत्यंत अनूठा तत वाद्य (तार वाद्य) है, जो आकार में डमरू जैसा दिखता है। यह वाद्य सांस्कृतिक रूप से पूर्वी राजस्थान के मेवात क्षेत्र (मुख्य रूप से अलवर जिला) से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र के मेव जोगी और मुस्लिम कलाकार जोगी गाथाओं, लोक कथाओं और पांडुन का कड़ा गाते समय भपंग का कुशलतापूर्वक प्रयोग करते हैं। जहूर खान मेवाती इसके सबसे महान कलाकार माने जाते थे।

58. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
गवरी लोक नाट्य केवल भील समुदाय के पुरुषों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसमें महिलाएं भाग नहीं लेती हैं और महिला पात्रों (जैसे राई, पार्वती) की भूमिका भी पुरुष कलाकार ही स्त्रियों के वस्त्र पहनकर निभाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि गवरी भगवान शिव और पार्वती की आराधना का एक कठोर 40-दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान है जिसमें शुद्धता और नियमों का पालन अनिवार्य होता है। अतः कथन और कारण दोनों सही हैं।

59. (A) अपने पति से अलग हुई महिला द्वारा वर्णित एक स्वप्न
'सुपना रो' (स्वप्न) राजस्थान का एक अत्यंत भावुक और प्रसिद्ध लोकगीत है। यह गीत विरह रस से ओत-प्रोत है जिसमें एक विरहिणी नायिका अपने दूर परदेस गए पति से बिछोह की पीड़ा को व्यक्त करती है। वह रात में देखे गए एक स्वप्न का वर्णन करती है जिसमें उसका पति वापस लौट आया था, परंतु अचानक नींद खुल जाने पर वह स्वयं को अकेला पाती है और उसकी विरह वेदना और अधिक बढ़ जाती है।

60. (D) I, II और III
'सुरिंदा' पश्चिमी राजस्थान में उपयोग किया जाने वाला एक पारंपरिक गज-वाद्य (तत वाद्य) है। यह वाद्य विशेष रूप से पश्चिमी मरुस्थल के लंगा मुस्लिम संगीतकार समुदाय से जुड़ा हुआ है। लंगा कलाकार गायन की गंभीरता और मधुरता को बढ़ाने के लिए सिंधी सारंगी के साथ पूरक वाद्य के रूप में सुरिंदा बजाते हैं। यह आडू की लकड़ी से बना होता है। अतः दिए गए तीनों कथन पूर्णतः सत्य और सटीक हैं।

61. (D) गैर
राजस्थान का 'गैर' नृत्य मेवाड़ और मारवाड़ का एक बहुत ही लोकप्रिय लोक नृत्य है। इसमें नर्तक (पुरुष) सफ़ेद रंग का कुर्ता और घेरदार अंगरखा पहनते हैं। जब वे तेजी से गोल घेरे में घूमते हैं, तो उनका घाघरा एक सुंदर वृत्ताकार रूप ले लेता है। हाथों में लकड़ी की छड़ियां (खांडा) लेकर एक लय में आपस में टकराते हुए पुरुषों द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य देखने में अत्यंत दर्शनीय और ऊर्जावान होता है।

62. (C) शेखावाटी
'चंग' एक बड़ा वृत्ताकार अवनद्ध वाद्य (डफली जैसा) होता है जो एक तरफ से चमड़े से मढ़ा जाता है। राजस्थान का 'शेखावाटी' क्षेत्र (सीकर, झुंझुनू, चुरु) चंग नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। होली के आगमन पर महाशिवरात्रि से लेकर दुलहंडी तक शेखावाटी में पुरुषों द्वारा चंग बजाते हुए धमाल गाए जाते हैं। इसमें नर्तक चंग को एक हाथ से थामकर दूसरे हाथ से बजाते हुए लयबद्ध रूप से नृत्य करते हैं।

63. (B) अपने पीहर (मायके) की याद में तड़प रही नववधू द्वारा संबोधित एक छोटा पौधा
'चिरमी' राजस्थान का एक अत्यंत भावुक लोकगीत है। शाब्दिक रूप से 'चिरमी' मरुस्थल में पाई जाने वाली एक औषधीय बेल या छोटे पौधे (गुंजा) को संदर्भित करती है। इस गीत में एक नवविवाहित वधू अपने ससुराल में रहकर अपने पीहर (मायके) के सदस्यों, विशेषकर अपने पिता और भाई की याद में चिरमी के पौधे को संबोधित करती हुई अपनी विरह वेदना, घर लौटने की आस और पारिवारिक स्नेह को व्यक्त करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

से निकलकर इस पारंपरिक सपेरा नृत्य शैली को वैश्विक सांस्कृतिक मंचों पर स्थापित किया और राज्य का नाम रोशन किया।

43. (B) केवल II, III और IV
राजस्थान की पारंपरिक कठपुतलियां पूरी तरह से मिट्टी या धातु की नहीं बनी होतीं, बल्कि उन्हें अरडू की हल्की लकड़ी, कपड़े और रुई से बनाया जाता है। इनका संचालन पारंपरिक भाट जाति के कलाकारों द्वारा किया जाता है। प्रदर्शन के दौरान कठपुतली नचाने वाला 'सीटी' (बोली) नामक यंत्र का उपयोग करता है। इसमें वीर अमर सिंह राठौड़ की ऐतिहासिक कथाएं सबसे लोकप्रिय हैं। अतः कथन दो, तीन और चार बिल्कुल सही हैं।

44. (C) केसरिया बालम
"केसरिया बालम आओ नी, पधारो म्हारे देस" राजस्थान का सबसे विख्यात और आधिकारिक पर्यटन लोकगीत है, जो पारंपरिक रूप से 'मांड' गायन शैली में गाया जाता है। यह प्रसिद्ध गीत अपनी परिष्कृत शास्त्रीय-लोक धुन के लिए जाना जाता है। इसमें मरुस्थल में अपने प्रियतम के आगमन का इंतज़ार कर रही नायिका के आतिथ्य सत्कार, प्रेम और विरह के भावों का अत्यंत सुंदर और भावुक वर्णन किया गया है।

45. (D) सवाई
'घूमर' नृत्य राजस्थान का सिरमौर नृत्य है जो महिलाओं द्वारा एक बड़े घेरे में किया जाता है। इस नृत्य में आठ मात्राओं का एक विशेष लयबद्ध ताल चक्र होता है, जिसे स्थानीय राजस्थानी भाषा में 'सवाई' कहा जाता है। नर्तकियां इस सवाई ताल पर अपने घाघरे के घेर को लहराते हुए अत्यंत शालीनता से चक्कर लगाती हैं और पैरों का थिरकना इस आठ-मात्रा की लय के साथ पूरी तरह सुमेलित होता है।

46. (C) सूखी खोखली लौकी (तूंबा)
'पूंगी' या 'बीन' कालबेलिया और जोगी समुदाय द्वारा बजाया जाने वाला एक पारंपरिक सुषिर वाद्य है। इसका मुख्य गुंजायमान कक्ष (तूंबा) विशेष रूप से सुकाई गई खोखली लौकी (तुम्बा) से बनाया जाता है। इस लौकी के निचले हिस्से में बांस की दो छोटी नलियां (नली) मोम से जोड़ी जाती हैं, जिनमें से एक में स्वर छिद्र होते हैं। फूंक मारने पर तूंबे के अंदर हवा गूंजकर मधुर स्वर उत्पन्न करती है।

47. (B) मांड गायन
जोधपुर में जन्मीं गवरी देवी राजस्थान की एक प्रसिद्ध और सम्मानित लोक गायिका थीं। उन्हें मुख्य रूप से 'मांड' गायन शैली की महान और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित प्रतिपादक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने सुरम्य मांड गायन के माध्यम से देश-विदेश के मंचों पर राजस्थानी कला का गौरव बढ़ाया। उन्हें संगीत में उत्कृष्ट योगदान के लिए राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा अन्य कई प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान प्रदान किए गए थे।

48. (D) पशु की आंत (तांत)
मांगणियार समुदाय का प्रमुख गज-वाद्य 'कामायचा' अपनी गहरी और गूंज़दार ध्वनि के लिए प्रसिद्ध है। कामायचा के मुख्य तीन बजाने वाले तार पारंपरिक रूप से बकरे या अन्य पशुओं की सुखाई गई आंत (तांत या गट) से बनाए जाते हैं। इन आंत से बने तारों पर जब घोड़े के बालों से बनी कमानी (गज) को रगड़ा जाता है, तो अत्यंत गंभीर और आत्मीय स्वर उत्पन्न होते हैं जो रेगिस्तानी संगीत की मुख्य जान हैं।

49. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थानी लोक वाद्यों का उनके सही वर्गीकरण के अनुसार मिलान इस प्रकार है: मोरचंग को फूंक मारकर बजाए जाने वाले 'सुषिर वाद्य' में शामिल किया जाता है। कामायचा तारों वाला 'तत वाद्य' है। खड़ताल शीशम की लकड़ी के दो टुकड़ों से बना 'घन वाद्य' है। ढोलक चमड़े से मढ़ा हुआ ताल वाद्य होने के कारण 'अवनद्ध वाद्य' की श्रेणी में आता है। यह चारों वाद्यों का सटीक सांगीतिक विभाजन है।

NODIA

50. (C) देवीलाल सामर
'भारतीय लोक कला मण्डल' राजस्थान के उदयपुर शहर में स्थित एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त सांस्कृतिक संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1952 में महान लोक कला अनुरागी पद्मश्री देवीलाल सामर द्वारा की गई थी। इस संस्थान की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राजस्थानी लोक कलाओं, लोक नृत्यों, कठपुतली परंपरा और लोक संगीत का दस्तावेजीकरण करना, उन्हें संरक्षण देना तथा देश-विदेश में उनका प्रचार-प्रसार करना था।

51. (A) अपने सिर पर जलते हुए दीपक वाला छिद्रित मिट्टी का घड़ा (मटका) संतुलित करती हैं
'घुड़ला' नृत्य राजस्थान के मारवाड़ (जोधपुर) क्षेत्र का एक अत्यंत ऐतिहासिक लोक नृत्य है, जो चैत्र मास में मनाया जाता है। इसमें महिलाएं और कुंवारी लड़कियां अपने सिर पर एक छिद्रित मिट्टी का घड़ा रखती हैं, जिसके भीतर एक जलता हुआ दीपक रखा होता है। इस जलते दीपक वाले घड़े को सिर पर संतुलित करते हुए वे गोल घेरे में नृत्य करती हैं। यह नृत्य राव सातलदेव की विजय की याद में किया जाता है।

52. (D) तेल के दीपकों से प्रज्वलित बहु-स्तरीय लकड़ी के पिरामिड (चरकुला) का संतुलन बनाना
'चरकुला' नृत्य राजस्थान के पूर्वी सीमावर्ती भरतपुर जिले में लोकप्रिय है, जो उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक छाप रखता है। इस नृत्य में नर्तकियां अपने सिर पर तेल के जलते हुए दीपकों से सजे एक बहु-स्तरीय लकड़ी के ढांचे या रथ के पहिए (चरकुला) को रखकर संतुलित करती हैं। वे सिर पर भारी वजन के बावजूद कृष्ण भक्ति के गीतों पर अत्यंत शालीनता और संतुलन के साथ थिरकती हैं।

53. (B) वे मुस्लिम हैं जो पारंपरिक रूप से हिंदू राजपूत संरक्षकों के लिए भक्ति गीत गाते हैं।
पश्चिमी राजस्थान के मांगणियार समुदाय का एक अनूठा समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक पहलू यह है कि वे धर्म से

(A) लोद्रवा (जैसलमेर)
(B) ओसियां (जोधपुर)
(C) आमेर (जयपुर)
(D) कुंभलगढ़ (राजसमंद)

82. किस गज-वाद्य को प्रायः 'राजस्थानी लोक वाद्यों की रानी' कहा जाता है जिसमें इस्पात और पीतल के लगभग 27 अनुकंपी (सहानुभूतिपूर्ण) तार होते हैं?
(A) रावणहत्था वाद्य
(B) जंतर वाद्य
(C) सिंधी सारंगी
(D) भपंग वाद्य

83. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : लंगा और मांगणियार विशिष्ट, पृथक संगीतमय समुदाय हैं जो पश्चिमी राजस्थान में अतिव्यापन के बावजूद अपनी अलग परंपराओं को बनाए रखते हैं।
कारण (R) : लंगा मुख्य रूप से कामायचा का उपयोग करते हैं, जबकि मांगणियार मुख्य गज-वाद्य के रूप में केवल सिंधी सारंगी का उपयोग करते हैं।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

84. राजस्थान के स्वदेशी लोक नृत्यों में से, 'लूर' नृत्य मुख्य रूप से होली के त्योहार के दौरान किस जनजातीय समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है?
(A) सहरिया
(B) मीणा
(C) गुर्जर
(D) गरासिया

85. राजस्थान के निम्नलिखित लोक वाद्यों पर विचार कीजिए:
I. खड़ताल
II. अलगोजा
III. कामायचा
IV. ढोलक
सुषिर (फूंक) -> अवनद्ध (झिल्ली) -> तत (तार) -> घन (ठोस) के क्रम में उनके वर्गीकरण प्रकारों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा इन वाद्यों का सही क्रम दर्शाता है?
(A) II, IV, III, I
(B) II, III, IV, I
(C) III, IV, I, II
(D) IV, II, III, I

86. 'सुवटिया' मेवाड़ क्षेत्र का एक मार्मिक लोकगीत है। गीत के सांस्कृतिक आख्यान के भीतर, यह आमतौर पर किसके द्वारा गाया जाता है?
(A) दुर्ग में विजयी सैनिकों का गर्व से स्वागत करती एक राजपूत रानी
(B) मरुस्थल की कठोर सर्दी में अपने छोटे बच्चे को सुलाती एक समर्पित मां
(C) तोते के माध्यम से अपने अनुपस्थित पति को संदेश भेजती एक भील महिला
(D) अकाल को समाप्त करने के लिए स्थानीय वर्षा देवता का आह्वान करता एक पारंपरिक मांगणियार कलाकार

87. पारंपरिक 'पाबूजी की फड़' प्रस्तुति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक महाकाव्यीय आख्यान है जो पारंपरिक रूप से रावणहत्था वाद्य की संगति के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
II. वस्त्र-चित्र (फड़) पर चित्रित दृश्यों को क्रमिक रूप से रोशन करने के लिए यह मुख्य रूप से रात्रि में प्रस्तुत किया जाता है।
III. मुख्य भोपा गाता है और वाचन करता है जबकि उसकी पत्नी (भोपी) तेल के दीपक से फड़ को रोशन करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

88. राजस्थान की किस जनजातीय समुदाय को मुख्य रूप से 'शिकारी' नृत्य के संरक्षण का श्रेय दिया जाता है, जो जीवंत रूप से शिकार के दृश्यों का अनुकरण करता है?
(A) सहरिया
(B) भील जनजाति
(C) गरासिया जनजाति
(D) डामोर जनजाति

89. 'झांझ' एक बड़ा, धातु से बना घन वाद्य है। इसका उपयोग निम्नलिखित में से किस लोक नृत्य के लिए मुख्य रूप से किया जाता है?
(A) कालबेलिया नृत्य
(B) कच्छी घोड़ी
(C) वालर लोक नृत्य
(D) चरी लोक नृत्य

90. निम्नलिखित में से कौन-सा पारंपरिक राजस्थानी लोकगीत आमतौर पर विरह या किसी प्रियजन की प्रतीक्षा के विषय से संबंधित नहीं है?
(A) कुरजां गीत
(B) रसिया
(C) झोरावा गीत
(D) कागा गीत

Click Here to Buy book on Amazon

64. (D) दूर रहने वाले किसी प्रियजन द्वारा तीव्रता से याद किया जाना
'हिचकी' मुख्य रूप से मेवात क्षेत्र (अलवर-भरतपुर) का एक प्रसिद्ध लोकगीत है। राजस्थानी लोक मान्यताओं और सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार, अचानक हिचकी आने का अर्थ यह माना जाता है कि दूर परदेस में बैठा कोई प्रियजन या सगा-संबंधी आपको बहुत ही तीव्रता और प्रेम से याद कर रहा है। यह गीत विरह और स्मृति की इसी भावना को मधुर और भावुक स्वरों में प्रस्तुत करता है।

65. (A) थाकना शैली
जालौर का 'ढोल नृत्य' केवल पुरुषों द्वारा विवाह और शुभ अवसरों पर प्रस्तुत किया जाने वाला एक प्रसिद्ध नृत्य है। इस नृत्य की सबसे विशिष्ट विशेषता यह है कि ढोल वादक इसे 'थाकना शैली' में बजाना शुरु करता है। थाकना ढोल बजाने की एक गंभीर और लयबद्ध शैली है जो नर्तकों में जोश और उत्साह भरती है। जैसे ही थाकना समाप्त होता है, नर्तक हाथों में तलवार या रुमाल लेकर नृत्य शुरु करते हैं।

66. (C) जोधपुर
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी राज्य में लोक संगीत, नृत्य, नाटक और पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन के लिए सर्वोच्च स्वायत्तशासी संस्था है। इस अकादमी की स्थापना वर्ष 1957 में की गई थी और इसका स्थायी मुख्यालय जोधपुर शहर में स्थित है। यह संस्था राज्य के वरिष्ठ और उभरते लोक कलाकारों को छात्रवृत्ति, पुरस्कार और सांस्कृतिक मंच प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

67. (A) संगीतमय रचना की लयबद्ध गति
भारतीय और राजस्थानी लोक संगीत संकल्पना में 'लय' का अर्थ किसी भी संगीतमय रचना या प्रस्तुति की समान और निरंतर लयबद्ध गति (टैंपो) से है। यह ताल की समय-सीमा और दो मात्राओं के बीच के अंतराल की नियमितता को दर्शाती है। संगीत में लय तीन प्रकार की होती है - विलंबित (धीमी), मध्य (सामान्य) और द्रुत (तेज)। लोक संगीत और नृत्य दोनों को संतुलित और मनमोहक बनाए रखने में लय की भूमिका मौलिक होती है।

68. (B) केवल I, II और IV
कच्छी घोड़ी शेखावाटी का पुरुष प्रधान व्यावसायिक नृत्य है, जिसमें बांस और कपड़े से बनी नकली घोड़ी का प्रयोग होता है। इसमें नर्तक पंखुड़ियों के खिलने और बंद होने जैसी सममित आकृतियां बनाते हैं। झांझ, ढोल और बांकिया इसके मुख्य वाद्य हैं। यह कामड़ समुदाय की महिलाओं द्वारा नहीं किया जाता (कामड़ महिलाएं तेरह ताली करती हैं)। अतः कथन पहला, दूसरा और चौथा सही हैं, जबकि तीसरा कथन पूरी तरह गलत है।

69. (B) जैसलमेर
'झोरावा' राजस्थान के जैसलमेर जिले का एक अत्यंत प्रसिद्ध और पारंपरिक विरह लोकगीत है। यह गीत जैसलमेर के मरुस्थलीय वातावरण में महिलाओं द्वारा तब गाया जाता है जब उनके पति व्यापार या जीविकोपार्जन के लिए दूर परदेस चले जाते हैं। झोरावा गीत के माध्यम से पत्नी अपने एकाकीपन, पीड़ा और पति के प्रति अगाध प्रेम को अभिव्यक्त करती है। यह मरुस्थलीय विरह परंपरा का एक प्रमुख सांस्कृतिक उदाहरण है।

70. (C) चिमटा
चिमटा लोहे का बना एक ठोस धातु वाद्य है, जिसे भारतीय संगीत वाद्य वर्गीकरण में 'घन वाद्य' के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसमें धातु की दो पट्टियां जुड़ी होती हैं जिन पर छोटी-छोटी पीतल की छगलियां लगी होती हैं। कालबेलिया, जोगी और साधु-संत अपने भक्ति संगीत, भजनों और कालबेलिया नृत्य की लयबद्ध संगति के लिए चिमटे का व्यापक रूप से प्रयोग करते हैं। यह प्रहार से ध्वनि पैदा करता है।

71. (D) खेतों को जोतते समय स्वयं को प्रेरित करने और आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु
'तेजा' और 'गोगा' राजस्थान के कृषि समाज द्वारा गाए जाने वाले अत्यंत पवित्र और पारंपरिक कृषि लोकगीत हैं। किसान मानसून के दौरान खेतों की जुताई शुरु करते समय लोक देवता तेजाजी और गोगाजी महाराज के भक्ति गीत गाते हैं। इन गीतों का मुख्य उद्देश्य कड़ी मेहनत के दौरान स्वयं को ऊर्जावान और प्रेरित रखना तथा अच्छी फसल, वर्षा एवं सर्पदंश से रक्षा के लिए लोक देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करना होता है।

NODIA

72. (A) वे सभी धातु के ठोस ताल वाद्य (घन वाद्य) हैं।
झालर, मंजीरा, घुंघरू और रमझोल - ये सभी वाद्य यंत्र राजस्थानी लोक संगीत में 'घन वाद्य' (ठोस धातु वाद्य) श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। इन सभी का निर्माण कांसा, पीतल या लोहे जैसी धातुओं से किया जाता है। इन वाद्यों में किसी तार या झिल्ली का उपयोग नहीं होता, बल्कि धातु के आपस में टकराने या आघात होने से स्पष्ट लयबद्ध ध्वनि उत्पन्न होती है। इनका उपयोग लोक नृत्यों में ताल देने के लिए होता है।

73. (B) गवरी लोक नाट्य
'मांदल' एक पारंपरिक अवनद्ध वाद्य है जिसका ढांचा पकी हुई मिट्टी (मृदा) से बेलनाकार बनाया जाता है और दोनों सिरों पर बकरी का चमड़ा मढ़ा जाता है। यह वाद्य यंत्र मेवाड़ क्षेत्र के भील समुदाय द्वारा खेले जाने वाले प्रसिद्ध 40-दिवसीय अनुष्ठानिक 'गवरी' लोक नाट्य में मुख्य ताल वाद्य के रूप में बजाया जाता है। थाली और मांदल की जुगलबंदी गवरी नाटक का प्रमुख संगीतमय आधार होती है।

74. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
प्रसिद्ध लोक कलाकारों और उनकी कलाओं का सही सुमेल इस प्रकार है: बीकानेर की अल्लाह जिलाई बाई 'मांड गायन' की महान गायिका थीं। सादिक खान मांगणियार प्रसिद्ध 'खड़ताल' वादक थे जिन्होंने इस वाद्य को पहचान दिलाई। गुलाबो सपेरा विश्व विख्यात 'कालबेलिया नृत्य' की नर्तकी हैं। रुपसिंह शेखावत सिर पर कई मटके रखकर किए जाने वाले अद्भुत 'भवाई नृत्य' के जाने-माने उस्ताद हैं।

दर्शाता है।

45. राजस्थान की गरासिया जनजातीय संस्कृति में, आपसी सहायता के माध्यम से कृषि और सामाजिक कार्यों में समुदाय के सदस्यों की सहायता के लिए एक अनूठी सहकारी संस्था मौजूद है। इस संस्था का स्थानीय नाम क्या है?
(A) हेलरू
(B) मोटा
(C) गवरी
(D) कोतवाल

46. राजस्थान में मीणा समुदाय ऐतिहासिक रूप से दो प्राथमिक सामाजिक-व्यावसायिक समूहों में विभाजित है। निम्नलिखित में से कौन-सा इन दो प्रमुख विभाजनों की सटीक पहचान करता है?
(A) उजली मीणा और मैली मीणा गोत्र
(B) भील मीणा और सहरिया मीणा गोत्र
(C) जमींदार मीणा और चौकीदार मीणा
(D) राजपूत मीणा और ब्राह्मण मीणा गोत्र

47. गरासिया जनजाति में पारंपरिक विवाह के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) वे भागकर विवाह करने (पलायन विवाह) सहित विवाह के कई रूपों का पालन करते हैं।
(B) माउंट आबू में वार्षिक नक्की झील मेला युवा गरासियों के लिए अपने जीवनसाथी को चुनने का एक महत्वपूर्ण स्थान है।
(C) 'मोर बांधिया' को समुदाय के भीतर एक अत्यधिक औपचारिक और सम्मानजनक प्रकार का विवाह माना जाता है।
(D) गरासिया संस्कृति में वधू मूल्य (दापा) देने की प्रथा पूरी तरह से अनुपस्थित है और सख्ती से प्रतिबंधित है।

48. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : जनजाति
P. सहरिया
Q. गरासिया
R. भील
S. मीणा
सूची II : सांस्कृतिक पहचान/क्षेत्र
1. माउंट आबू की नक्की झील से गहरा संबंध
2. मुख्य रूप से बारां की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में पाई जाती है
3. मत्स्य अवतार (मछली अवतार) से ऐतिहासिक वंश का दावा
4. ऐतिहासिक रूप से डूंगरपुर के बेणेश्वर मेले से जुड़े हैं
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

49. राजस्थान की भाषाई विविधता को 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में ऐतिहासिक ग्रन्थ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में व्यवस्थित रूप से प्रलेखित और वर्गीकृत किया गया था। इस व्यापक अध्ययन के लेखक कौन थे?
(A) कर्नल जेम्स टॉड
(B) जी.ए. ग्रियर्सन
(C) एल.पी. टेसीटोरी
(D) सूर्यमल्ल मिश्रण

50. एक प्रमुख राजस्थानी बोली और उस भौगोलिक क्षेत्र जहाँ यह मुख्य रूप से बोली जाती है, के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) मेवाती - जोधपुर और बीकानेर क्षेत्र
(B) ढूंढाड़ी - उदयपुर और राजसमंद क्षेत्र
(C) मालवी - अलवर और भरतपुर क्षेत्र
(D) वागड़ी - डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र

51. राजस्थान के साहित्यिक और बोली के इतिहास के संदर्भ में, 'डिंगल' क्या है?
(A) मारवाड़ी और साहित्यिक शैली के मिश्रण वाली पश्चिमी राजस्थान की एक काव्य शैली
(B) पूर्वी राजस्थान में रहने वाले मीणा समुदायों द्वारा बोली जाने वाली एक स्थानीय जनजातीय बोली
(C) माउंट आबू के मंदिरों में रहने वाले जैन भिक्षुओं द्वारा विशेष रूप से उपयोग की जाने वाली एक प्राचीन धार्मिक लिपि
(D) मुख्य रूप से भरतपुर क्षेत्र में बोली जाने वाली ब्रजभाषा से अत्यधिक प्रभावित एक क्षेत्रीय बोली

52. शिक्षा और प्रशासन में भाषा के मानकीकरण के कारण राजस्थान में बोलीगत विविधता के समक्ष आधुनिक चुनौती का सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन करता है?
(A) मारवाड़ी और मेवाड़ी जैसी स्थानीय बोलियों ने राज्य सरकार के सभी आधिकारिक दस्तावेजों में मानक लिखित हिंदी को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया है।
(B) मानक अंग्रेजी पूरे राज्य में स्थित सभी ग्रामीण परिवारों में बोली जाने वाली प्राथमिक मातृभाषा बन गई है।
(C) मानक हिंदी के कारण स्थानीय राजस्थानी बोलियों की शब्दावली और दैनिक उपयोग का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है।
(D) ग्रामीण समुदायों के बीच बिलकुल नई क्षेत्रीय भाषाओं के स्वतः उभरने से भाषाई विविधता तेजी से बढ़ रही है।

53. राजस्थान में पारंपरिक खेलों और क्रीड़ाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'सितोलिया' (या सतोलिया) सात चपटे पत्थरों और एक गेंद का उपयोग करके खेला जाने वाला एक लोकप्रिय पारंपरिक खेल है।
II. 'चौपड़' कुश्ती के समान एक प्राचीन मैदानी, शारीरिक रूप से कठिन खेल है।
III. 'गिल्ली डंडा' एक पारंपरिक ग्रामीण खेल है जिसमें हाथ और आँख के समन्वय की आवश्यकता होती है और

Downloaded from www.pdf.tube

86. (C) तोते के माध्यम से अपने अनुपस्थित पति को संदेश भेजती एक भील महिला
'सुवटिया' राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र का एक अत्यंत मार्मिक और प्रसिद्ध लोकगीत है। शाब्दिक रूप से 'सुवटिया' का अर्थ तोता होता है। इस गीत में पर्वतीय मेवाड़ क्षेत्र की एक भील स्त्री अपने दूर परदेस गए पति की याद में तोते (सुवा) को माध्यम बनाकर अपना विरह संदेश भेजती है। वह तोते से प्रार्थना करती है कि वह उसके पति तक उसकी पीड़ा और जल्द घर लौटने का आग्रह पहुंचा दे।

87. (D) I, II और III
पाबूजी की फड़ राजस्थान की सबसे लोकप्रिय फड़ है। यह नायक जाति के भोपे द्वारा रावणहत्था वाद्य यंत्र की संगति में बांची जाती है। कपड़े पर चित्रित दृश्यों को रात के अंधेरे में स्पष्ट देखने के लिए प्रस्तुति केवल रात्रि में होती है। इसमें मुख्य भोपा गाता और बजाता है जबकि उसकी पत्नी (भोपी) हाथ में दीया (दीपक) लेकर फड़ के चित्रों पर प्रकाश डालती है। अतः तीनों कथन सत्य हैं।

88. (A) सहरिया
'शिकारी' नृत्य राजस्थान के बारां जिले के किशनगंज और शाहबाद तहसीलों में निवास करने वाली 'सहरिया' जनजाति का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह नृत्य सहरिया पुरुषों द्वारा किया जाता है जिसमें वे हाथों में धनुष-बाण, भाले और तलवारें लेकर जंगल में शिकार करने के विभिन्न दृश्यों और दांव-पेचों का सजीव व नाट्य रूप में अनुकरण करते हैं। यह नृत्य उनकी पारंपरिक जनजातीय जीवन शैली को दर्शाता है।

89. (B) कच्छी घोड़ी
'झांझ' कांसा या पीतल धातु से बना एक बड़ा और भारी घन वाद्य है जो आकार में मंजीरे से काफी बड़ा होता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से शेखावाटी क्षेत्र के प्रसिद्ध 'कच्छी घोड़ी' नृत्य में लय और जोश उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। जब नर्तक नकली घोड़ी पर तलवारबाजी का स्वांग रचाते हैं, तब ढोल और बांकिया के साथ झांझ की तीव्र झनकार नृत्य की गति को बढ़ाती है।

90. (B) रसिया
'रसिया' लोकगीत विरह या किसी प्रियजन की प्रतीक्षा से संबंधित नहीं है। यह गीत पूर्वी राजस्थान (भरतपुर, धौलपुर) के ब्रज क्षेत्र में गाया जाता है जो मुख्य रूप से भगवान श्रीकृष्ण और राधा के दिव्य प्रेम, वसंत ऋतु के आगमन और होली के उल्लास को समर्पित है। जबकि 'कुरजां', 'झोरावा' और 'कागा' तीनों ही गीत मरुस्थलीय महिलाओं द्वारा दूर परदेस गए पतियों की याद में गाए जाने वाले प्रसिद्ध विरह गीत हैं।

91. (A) बाघोजी जाट
राजस्थान की प्रसिद्ध नाट्य और नृत्य शैली 'भवाई' का आधुनिक रूप में जनक और संस्थापक अजमेर जिले के केकड़ी निवासी 'बाघोजी जाट' को माना जाता है। उन्होंने लगभग चार सौ वर्ष पूर्व जाट और भवाई जाति की परंपराओं को मिलाकर इस अनूठी लोक नृत्य शैली की नींव रखी थी। उन्होंने व्यावसायिक कलाबाज़ियों, संतुलन और सामाजिक प्रसंगों को जोड़कर इसे एक नई पहचान दी जो आज विश्व प्रसिद्ध है।

92. (C) राधा और कृष्ण
'रसिया' लोकगीत पूर्वी राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर और करौली जिलों का एक अत्यंत प्रिय सांस्कृतिक हिस्सा है, जो उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र से सटा हुआ है। ये गीत मुख्य रूप से भगवान श्री कृष्ण और श्री राधाजी के पावन प्रेम, उनकी बाल लीलाओं, रासलीला और होली उत्सव का मधुर वर्णन करते हैं। बम नृत्य के दौरान रसिया गीतों को बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ गाया जाता है।

93. (A) केवल I, II और IV
राजस्थान की कठपुतली परंपरा में अरडू की लकड़ी का प्रयोग होता है और इसका संचालन नट या भाट समुदाय करते हैं। अमर सिंह राठौड़ की कथाएं इसका मुख्य विषय हैं। यह प्रस्तुति मूक नहीं होती; इसमें ढोलक की ताल, गीतों और सीटी (बोली) की संगति निरंतर बनी रहती है। अतः पहला, दूसरा और चौथा कथन पूरी तरह सही हैं, जबकि तीसरा कथन असत्य है।

94. (C) मेवात का मेव समुदाय
'रणबाजा' नृत्य राजस्थान के मेवात क्षेत्र (अलवर और भरतपुर) में निवास करने वाले 'मेव' समुदाय का एक बहुत ही लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह एक दुर्लभ और सुंदर युगल नृत्य है जिसमें मेव समुदाय के पुरुष और महिला नर्तक एक साथ भाग लेते हैं। वे पारंपरिक मेवाती वेशभूषा पहनकर ढोलक और अन्य लोक वाद्यों की ताल पर अत्यंत लयबद्ध गति से नृत्य और गायन प्रस्तुत करते हैं।

95. (B) इसमें पुरुष लकड़ी की छड़ियों को टकराते हुए एक घेरे में नृत्य करते हैं।
'गैर' नृत्य के बारे में यह कथन बिल्कुल सही है कि इसमें भील और राजपूत पुरुष हाथों में खांडा (लकड़ी की छड़ियां) लेकर एक गोल घेरे में घूमते हुए नृत्य करते हैं। वे छड़ियों को आपस में लयबद्ध तरीके से टकराते हैं। यह नृत्य मुख्य रूप से होली के अवसर पर किया जाता है। इसमें ढोल, बांकिया और मांदल वाद्यों का प्रयोग होता है। अतः दूसरा विकल्प सही उत्तर है।

NODIA

96. (D) कंजर
'चकरी' नृत्य राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां) का एक अत्यंत प्रसिद्ध और तीव्र गति वाला लोक नृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से 'कंजर' जाति की अविवाहित युवतियों द्वारा किया जाता है। इसमें नर्तकियां 80 कली का घाघरा पहनकर ढोलक, मंजीरा और नगारे की तेज ताल पर लट्टू की तरह गोल-गोल घूमती हैं। चकरी नृत्य की गति और अंग-संचालन दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

97. (A) विजयदान देथा
जोधपुर के बोरुंदा में स्थित 'रुपायन संस्थान' की स्थापना वर्ष 1960 में पद्मश्री कोमल कोठारी और प्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यकार 'विजयदान देथा' (बिज्जी) द्वारा संयुक्त रूप से की गई थी। विजयदान देथा राजस्थानी भाषा के महान कथाकार

9. पारंपरिक राजस्थानी आभूषणों में, 'तिमणिया' मुख्य रूप से शरीर के किस अंग पर पहना जाने वाला आभूषण है?
(A) मस्तक
(B) कमर
(C) टखना
(D) गला

10. निम्नलिखित में से कौन-सा पारंपरिक आभूषण ग्रामीण राजस्थान में महिलाओं के लिए वैवाहिक स्थिति के प्रतीक के रूप में सार्वभौमिक रूप से पहचाना जाता है, जो आमतौर पर माथे पर बालों की मांग के पास पहना जाता है?
(A) बोरला
(B) करड़ा
(C) हंसली
(D) तगड़ी

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : राजस्थान में पारंपरिक रूप से सोने के आभूषण मुख्य रूप से शरीर के ऊपरी भाग में पहने जाते हैं, जबकि पैरों के लिए मुख्य रूप से चांदी को प्राथमिकता दी जाती है।
कारण (R) : सोना सांस्कृतिक रूप से श्रद्धेय है और समृद्धि के देवताओं से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे शरीर के सबसे निचले भाग में पहनना अनादर माना जाता है।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

12. पारंपरिक राजस्थानी आभूषण और शरीर के जिस अंग पर इसे पहना जाता है, उसके गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) सुरलिया - कान की लौ (कर्णपालि)
(B) कंदोरा - कलाई
(C) चूंफ - सामने के दांत
(D) नेवरी - टखना

13. मारवाड़ क्षेत्र में आमतौर पर खाया जाने वाला पारंपरिक राजस्थानी व्यंजन 'पंचकूटा' का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यह पांच प्रमुख सामग्रियों का उपयोग करके बनाया जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सा पंचकूटा का एक आवश्यक घटक है?
(A) कैर और सांगरी
(B) बाजरा और ज्वार
(C) बेसन और दही
(D) गेहूं और गुड़

14. राजस्थानी खाद्य संरक्षण और संस्कृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'राबड़ी' छाछ और अनाज पर आधारित एक शीतलक पेय है जो पारंपरिक रूप से भीषण गर्मी के दौरान पीया जाता है।
II. धूप में सुखाना सांगरी और कुमटिया जैसी सब्जियों के संरक्षण की एक प्रमुख पारंपरिक विधि है।
III. 'बड़ी' या 'मंगोड़ी' धूप में सुखाई गई दाल की बड़ियाँ हैं जो शुष्क जलवायु में लंबे समय तक सुरक्षित रहती हैं।
IV. 'राब' पारंपरिक रूप से बाजरे से बना एक शीतकालीन पेय है जो शरीर को गर्म रखता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

15. राजस्थानी व्यंजनों में 'बाजरा' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह मुख्य रूप से सर्दियों का मुख्य भोजन है, जिसे अक्सर गुड़ और घी के साथ खाया जाता है।
(B) बाजरे की रोटी ग्रामीण मारवाड़ के आहार का एक मूलभूत और दैनिक घटक है।
(C) 'सोगरा' बाजरे से बनी मोटी रोटी के लिए व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला स्थानीय शब्द है।
(D) इसे ठीक से उगने के लिए अत्यधिक उपजाऊ मृदा और प्रचुर वर्षा की आवश्यकता होती है।

16. पारंपरिक मिठाई 'घेवर', जो मैदा से बनी और चाशनी में डुबोई गई एक चक्राकार जालिदार व्यंजन है, किस राजस्थानी त्योहार से सबसे दृढ़ता से जुड़ी है?
(A) दीपावली
(B) होली
(C) तीज
(D) मकर संक्रांति

17. राजस्थान के पारंपरिक सामाजिक ढांचे में, 'खानदान' शब्द का तात्पर्य है:
(A) स्थानीय भूमि विवादों को सुलझाने के लिए जिम्मेदार एक पारंपरिक ग्राम परिषद
(B) एक ही पूर्वज से जुड़ा एक विस्तृत पितृवंशीय परिवार
(C) पारंपरिक कृषि श्रम से सख्ती से जुड़ा एक विशिष्ट समुदाय
(D) स्थानीय कारीगरों को कम ब्याज पर ऋण देने वाली एक ग्रामीण वित्तीय संस्था

18. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : प्रथा/परंपरा
P. नाता प्रथा
Q. मोसर
R. सगाई
S. आन
सूची II : विवरण

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 16

संस्कृति, परंपरा, विरासत

1. सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
   (A) पृथक्कृत जनजातीय समूहों वाला एक पूर्णतः कृषि-आधारित समाज
   (B) सैन्य परंपराओं, पशुपालक यायावर जीवन और गहरे लोक विश्वासों से युक्त समन्वयात्मक संस्कृति
   (C) तीव्र औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप एक अत्यधिक समरूप शहरी संस्कृति
   (D) समुद्री व्यापार से अत्यधिक प्रभावित एक तटीय व्यापारिक समाज

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान के भूगोल और इसकी पारंपरिक संस्कृति के बीच संबंध को सही ढंग से रेखांकित करता है?
   (A) सदा नीरा नदियों की प्रचुरता के कारण एक ऐसी संस्कृति का विकास हुआ जो पूर्णतः जल-गहन त्योहारों पर निर्भर थी।
   (B) राज्य भर में घने सदाबहार वनों के कारण मुख्य रूप से लकड़ी पर आधारित स्थापत्य विरासत का निर्माण हुआ।
   (C) उच्च तुंगता वाली आल्प्स जैसी जलवायु ने ऊनी वस्त्र परंपराओं और ऋतु-प्रवास कृषि को जन्म दिया।
   (D) कठोर मरुस्थलीय भू-भाग ने जीवंत वस्त्रों और विस्तृत जल संरक्षण अनुष्ठानों की संस्कृति को पोषित किया।

3. राजस्थान को मोटे तौर पर विशिष्ट सांस्कृतिक-भाषाई क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। निम्नलिखित में से किसे राजस्थान के प्राथमिक पारंपरिक सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है?
   (A) मगध
   (B) मारवाड़
   (C) मेवाड़
   (D) मालवा

4. राजस्थान में हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों द्वारा रामदेवजी और गोगाजी जैसे स्थानीय लोक देवताओं की व्यापक पूजा किस सांस्कृतिक परिघटना का प्राथमिक उदाहरण है?
   (A) सांस्कृतिक पृथकतावाद
   (B) सांस्कृतिक समरूपता
   (C) सांस्कृतिक समन्वयवाद
   (D) सांस्कृतिक विनियोग

5. पारंपरिक राजस्थानी पुरुष परिधान के संदर्भ में, 'अंगरखी' क्या है?
   (A) शरीर के ऊपरी भाग में छाती से सटाकर पहना जाने वाला वस्त्र
   (B) भव्य विवाहों के दौरान कसकर बांधी जाने वाली रंगीन पगड़ी
   (C) कंधे पर सुरुचिपूर्ण ढंग से डाला जाने वाला एक लंबा बिना सिला कपड़ा
   (D) जटिल कढ़ाई वाला एक पारंपरिक चमड़े का जूता

6. राजस्थान में पारंपरिक पगड़ियाँ (साफे या पगड़ियाँ) क्षेत्र के अनुसार काफी भिन्न होती हैं। ठेठ मेवाड़ी पगड़ी और मारवाड़ी साफे के बीच प्राथमिक अवधारणात्मक अंतर क्या है?
   (A) मेवाड़ी पगड़ी केवल राजघराने के लिए आरक्षित है, जबकि मारवाड़ी साफे का उपयोग आम लोगों द्वारा किया जाता है।
   (B) मेवाड़ी पगड़ी केवल महीन रेशम से बनाई जाती है, जबकि मारवाड़ी साफा केवल सूती कपड़े से बनता है।
   (C) कोई संरचनात्मक अंतर नहीं है; इन दोनों पारंपरिक शब्दों का प्रयोग पूरे राज्य में एक-दूसरे के स्थान पर किया जाता है।
   (D) मेवाड़ी पगड़ी चपटी और भारी बांधी जाती है, जबकि मारवाड़ी साफा अपेक्षाकृत ऊंचा और हल्का होता है।

7. राजस्थान में महिलाओं के पारंपरिक परिधान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. 'घाघरा' मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पहनी जाने वाली एक घेरादार, चुनटदार पोशाक है।
   II. 'कुर्ती' और 'कांचली' एक समान वस्त्र हैं जिन्हें एक-दूसरे के विकल्प के रूप में पहना जाता है।
   III. 'ओढ़नी' एक सजावटी वस्त्र और सामाजिक तथा वैवाहिक स्थिति के सूचक दोनों रूप में कार्य करती है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल I और III
   (C) केवल II और III
   (D) I, II और III

8. निम्नलिखित में से तीन शब्द राजस्थानी ओढ़नियों में उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट पारंपरिक बंधेज (बंधाई और रंगाई) प्रकारों को निरुपित करते हैं। कौन-सा एक असंगत है?
   (A) मोठड़ा
   (B) लहरिया
   (C) जूती
   (D) पोमचा

Downloaded from www.pdf.tube

लिए काले धागे या विशिष्ट ताबीज का उपयोग किया जाता है।

28. ग्रामीण राजस्थान में 'देवरा' या 'थान' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे केवल सफेद संगमरमर से बने बड़े, बहुमंजिला संरचनात्मक मंदिर हैं।
II. वे क्षेत्रीय लोक देवताओं और पूर्वजों की आत्माओं को समर्पित स्थानीय पूजा स्थलों या खुले चबूतरों के रूप में कार्य करते हैं।
III. वे अक्सर मन्नत (मनौती) और स्थानीय पुजारियों द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट उपचार अनुष्ठानों से जुड़े होते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

29. 'पधारो म्हारे देस' वाक्यांश का प्रयोग अक्सर राजस्थान के संदर्भ में किया जाता है। सांस्कृतिक परंपरा के संदर्भ में, यह सबसे सटीक रूप से किसे दर्शाता है?
(A) राज्य की स्वागत भावना और आतिथ्य सत्कार
(B) ऐतिहासिक राजपूत सेनाओं द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला पारंपरिक युद्ध घोष
(C) वन अधिकारों की मांग करने वाले स्थानीय मूल निवासियों का सामूहिक विरोध का नारा
(D) राज्य कृषि सब्सिडी को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया आधिकारिक सरकारी नारा

30. किसी दावत या भोज के दौरान 'मनुहार' की पारंपरिक राजस्थानी अवधारणा का तात्पर्य है:
(A) दावत के दौरान खाना खाते समय पुरुषों और महिलाओं का सख्त पारंपरिक सामाजिक पृथक्करण
(B) एक ही बड़ी सामूहिक थाली में खाना खाने की पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथा
(C) मेजबान द्वारा मेहमानों को अधिक भोजन कराने के लिए स्नेहपूर्वक किया जाने वाला आग्रह
(D) सम्मानित अतिथियों को भोजन परोसने से पहले उनके पैर धोने का औपचारिक स्वागत अनुष्ठान

31. मारवाड़ क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से प्रचलित 'रियाण' परंपरा को सबसे अच्छी तरह से किस रूप में वर्णित किया गया है?
(A) स्थानीय गांव में सबसे मजबूत युवा का निर्धारण करने के लिए प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली एक पारंपरिक ग्रामीण खेल प्रतियोगिता
(B) मानसून के औपचारिक आगमन को चिह्नित करने के लिए गांव के बुजुर्गों द्वारा जलाई जाने वाली एक पवित्र सामूहिक अनुष्ठानिक अग्नि
(C) एक औपचारिक दरबारी समारोह जहां ऐतिहासिक रूप से शाही भाटों और दरबारी कवियों को भूमि अनुदान जारी किया जाता था
(D) एक ऐसी सभा जहां आतिथ्य के प्रतीक के रूप में अफीम (अमल) औपचारिक रूप से परोसी जाती थी

32. पारंपरिक राजस्थानी आतिथ्य में, आने वाले अतिथि को 'साफा' (पगड़ी) पहनाने का प्राथमिक महत्व क्या है?
(A) मेहमान को घर वापस जाने की लंबी यात्रा के दौरान मरुस्थल की तेज धूप से बचाना
(B) गांव की सीमाओं के भीतर स्थानीय सांस्कृतिक पहनावे का कड़ाई से पालन कराना
(C) अतिथि के प्रति उच्च आदर व्यक्त करना और उन्हें सम्मान प्रदान करना
(D) स्थानीय गाँव के मुखिया के प्रति आगंतुक अतिथि की राजनीतिक अधीनता का स्पष्ट प्रतीक होना

33. राजस्थान में एक पारंपरिक जाति-आधारित पेशे और उसके प्राथमिक व्यवसाय के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) सिकलीगर - महीन सूती कपड़े की पारंपरिक हथकरघा बुनाई
(B) लंगा और मांगणियार - लोक संगीत और गायन
(C) कुम्हार - पारंपरिक चमड़ा पकाना और जूते बनाना
(D) छीपा - भारी लोहारगिरी और पारंपरिक हथियार निर्माण

NODIA

34. 'फड़' चित्रकारी बनाने का पारंपरिक व्यवसाय ऐतिहासिक रूप से राजस्थान के किस विशिष्ट कारीगर परिवार से जुड़ा है?
(A) बीकानेर का उस्ता परिवार
(B) प्रतापगढ़ का सोनी परिवार
(C) जैसलमेर का मथेरणा परिवार
(D) शाहपुरा का जोशी परिवार

35. राजस्थान में निम्नलिखित कारीगर समुदायों और उनके पारंपरिक व्यवसायों पर विचार कीजिए:
I. साल्वी - बुनाई
II. छीपा - हस्त-ठप्पा छपाई
III. ठठेरा - पीतल और तांबे के बर्तन बनाना
IV. सरगरा - पारंपरिक तीरंदाजी और हथियार निर्माण
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) केवल I, II और IV

36. निम्नलिखित में से कौन-सा एक पारंपरिक जाति-आधारित व्यवसाय नहीं है जो राजस्थान के सांस्कृतिक इतिहास में गहराई से निहित हो?
(A) विशेष रूप से राजसोनी समुदाय द्वारा किया जाने वाला पारंपरिक थेवा आभूषण निर्माण
(B) ढाढ़ी समुदाय द्वारा किया जाने वाला वीर लोकगाथाओं का वंशानुगत गायन
(C) तटीय श्रेणियों द्वारा सूक्ष्म हीरा तराशने का काम
(D) रैगर समुदाय द्वारा पारंपरिक चमड़े का काम और मोजड़ी जूता निर्माण

1. एक पारंपरिक मृत्यु भोज या शोक अनुष्ठान
2. वफादारी की शपथ या एक दृढ़ प्रतिज्ञा
3. एक महिला द्वारा नए साथी के साथ रहने की एक अनौपचारिक प्रथा
4. औपचारिक सगाई या वाग्दान समारोह

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-1, Q-3, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

19. राजस्थान में कुछ समुदायों के बीच प्रचलित 'नाता प्रथा' की पारंपरिक प्रथा मूल रूप से किसे सुगम बनाने की एक व्यवस्था है?
(A) बिना औपचारिक धार्मिक अनुष्ठानों के विधवा पुनर्विवाह
(B) पारंपरिक कम उम्र में सगाई के माध्यम से बाल विवाह
(C) स्थानीय कुलों के बीच लंबे समय से चली आ रही रंजिशों का शांतिपूर्ण समाधान
(D) सबसे बड़े बेटे को पैतृक कृषि भूमि का कानूनी हस्तांतरण

20. राजस्थान के शहरीकृत क्षेत्रों में संयुक्त परिवार प्रणाली के क्रमिक पतन का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव क्या है?
(A) शहरी क्षेत्रों में जाति-आधारित पहचानों का पूर्ण उन्मूलन
(B) व्यक्तिगत परिवारों पर पारंपरिक ग्राम पंचायतों के अधिकार में वृद्धि
(C) मौखिक परंपराओं और लोक ज्ञान के हस्तांतरण में कमी
(D) न्यायालयीय विवाह के पक्ष में विवाह के सभी पारंपरिक अनुष्ठानों का पूर्ण त्याग

21. एक पारंपरिक राजस्थानी विवाह में, 'तोरण मारना' समारोह में शामिल है:
(A) दूल्हे द्वारा तलवार से वधू के गृह-प्रवेश द्वार पर लगे लकड़ी के प्रतीक (तोरण) को छूना
(B) वर और वधू द्वारा पवित्र अग्नि के चारों ओर पारंपरिक सात फेरे लेना
(C) पुरोहित द्वारा पवित्र विवाह ग्रंथि (गठबंधन) का औपचारिक अनुष्ठान
(D) मामा द्वारा वधू के परिवार को पारंपरिक उपहार और कपड़े (मायरा) भेंट करना

22. राजस्थानी विवाह परंपराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : 'बिंदोली' (या बिंदोरा) विवाह से पूर्व की एक शोभायात्रा है जिसमें वर या वधू को पारंपरिक रूप से घोड़ी या वाहन पर बैठाकर बस्ती में घुमाया जाता है।
कथन II : 'सामेला' वधू के अपने पति के घर जाते समय उसे अंतिम भावुक विदाई देने का अनुष्ठान है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

23. राजस्थान में पारंपरिक राजपूत विवाह रीतियों के संदर्भ में, 'मायरा' या 'भात' समारोह की सबसे अच्छी व्याख्या क्या है?
(A) मुख्य विवाह दिवस से पहले महिला रिश्तेदारों द्वारा की जाने वाली वधू का अनुष्ठानिक शुद्धिकरण
(B) विवाह के लिए मामा द्वारा अपनी बहन के परिवार को दिया जाने वाला पारंपरिक सहयोग
(C) वधू के सम्मानित पिता द्वारा आने वाले वर पक्ष के सदस्यों का भव्य औपचारिक स्वागत
(D) वर पक्ष द्वारा सभी आमंत्रित ग्रामीणों के लिए आयोजित विवाह पश्चात का उत्सव भोज

24. निम्नलिखित में से कौन पारंपरिक राजस्थानी विवाह अनुष्ठानों के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(A) पीठी, तोरण, सगाई, फेरा
(B) सगाई, पीठी, तोरण, फेरा
(C) सगाई, तोरण, पीठी, फेरा
(D) तोरण, सगाई, फेरा, पीठी

25. राजस्थान की ग्रामीण लोक मान्यताओं में, 'भोपा' को मुख्य रूप से किस रूप में जाना जाता है?
(A) एक पारंपरिक स्वदेशी चिकित्सक जो आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों का उपयोग करके बीमारियों का इलाज करता है
(B) स्थानीय कर संग्रह के लिए नामित और जिम्मेदार एक प्रमुख गांव का मुखिया
(C) एक घुमंतू व्यापारी जो सुरक्षात्मक ताबीज बेचकर अपनी आजीविका कमाता है
(D) लोक देवताओं से जुड़ा एक स्थानीय पुजारी और गायक/साधक

26. 'खेजड़ी' (प्रोसोपिस सिनेरेरिया) वृक्ष को राजस्थानी लोक मान्यता में अत्यधिक पूजनीय माना जाता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सर्वोच्च बलिदान की कौन-सी ऐतिहासिक घटना सीधे इस वृक्ष से जुड़ी है?
(A) अमृता देवी से जुड़ा खेजड़ली का ऐतिहासिक बलिदान
(B) मानगढ़ धाम का ऐतिहासिक भील जनजातीय विद्रोह
(C) लंबे समय से चला आ रहा बिजोलिया किसान आंदोलन
(D) नेता मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में आदिवासी अधिकार विद्रोह

27. राजस्थान में ग्रामीण लोक अंधविश्वासों और शकुनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यात्रा शुरु करते समय पानी से भरा घड़ा देखना व्यापक रूप से एक बहुत ही शुभ शकुन माना जाता है।
(B) आधुनिक शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन के बाद राजस्थान से लोक अंधविश्वास पूरी तरह से समाप्त हो गए हैं।
(C) किसी विशिष्ट पक्षी की बोली या कुछ जानवरों द्वारा रास्ता काटने का उपयोग ऐतिहासिक रूप से किसी कार्य की सफलता की भविष्यवाणी करने के लिए किया जाता है।
(D) 'बुरी नजर' में विश्वास प्रचलित है, और इसे दूर करने के

Click Here to Buy book on Amazon

थे जिन्होंने लोककथाओं का संकलन किया। उन्होंने कोमल कोठारी के साथ मिलकर मरुस्थलीय क्षेत्र के विलुप्त होते लोक संगीत, वाद्यों और लोक-साहित्य के वृहद संरक्षण और दस्तावेजीकरण में ऐतिहासिक योगदान दिया।

98. (C) इसमें शास्त्रीय रागों के कठोर समय संबंधी प्रतिबंधों का अभाव होता है।
राजस्थान की 'मांड' गायन शैली भारतीय शास्त्रीय संगीत (जैसे ख्याल या ध्रुपद) से मुख्य रुप से इसलिए भिन्न है क्योंकि इसमें शास्त्रीय रागों के कठोर समय चक्र और सख्त गायन नियमों का कड़ा बंधन नहीं होता। मांड गायक लोक संगीत की सहजता और शास्त्रीय रागों की मधुरता का मिश्रण करते हुए अपनी सुविधानुसार रागों में परिवर्तन कर सकते हैं। यह लचीलापन ही मांड को अत्यधिक लोकप्रिय और सुरीला बनाता है।

99. (A) कालबेलिया
इंडोणी, संकारिया, पणियारी और बागड़िया - ये सभी राजस्थान के विश्व प्रसिद्ध 'कालबेलिया' लोक नृत्य के प्रमुख पारंपरिक प्रकार हैं। 'संकारिया' प्रेम कथा पर आधारित युगल नृत्य है; 'इंडोणी' गोल घेरे में मंजीरा बजाते हुए किया जाता है; 'पणियारी' पानी भरने की थीम पर आधारित है; तथा 'बागड़िया' केवल महिलाओं द्वारा भीख मांगते समय बजाए जाने वाले चंग वाद्य के साथ प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य है।

NODIA

100. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
जनजातीय समुदायों और उनके विशिष्ट नृत्यों का सही सुमेल इस प्रकार है: गरासिया जनजाति का मुख्य बिना वाद्य वाला नृत्य 'वालर' है। कंजर समुदाय की युवतियों द्वारा तेज गति से किया जाने वाला नृत्य 'चकरी' है। कामड़ समुदाय की महिलाओं द्वारा बैठकर किया जाने वाला भक्ति नृत्य 'तेरह ताली' है। गुर्जर समुदाय की महिलाओं द्वारा सिर पर जलती चरी रखकर किया जाने वाला नृत्य 'चरी' नृत्य है।

37. राजस्थान में ग्रामीण बनाम शहरी सांस्कृतिक विविधताओं के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सी परिघटना सबसे स्पष्ट रूप से शहरीकरण से जुड़ी है?
(A) सांस्कृतिक समरुपता और अखिल भारतीय जीवन शैली के रुझानों की ओर झुकाव
(B) शहरों में पारंपरिक जाति-आधारित व्यावसायिक कठोरता का व्यवस्थित सुदृढ़ीकरण
(C) दैनिक आर्थिक लेनदेन करने के लिए पारंपरिक वस्तु-विनिमय प्रणालियों पर बढ़ती निर्भरता
(D) आधुनिक महानगरों के भीतर पारंपरिक संयुक्त परिवार सामाजिक संरचनाओं का पुनरुत्थान

38. ग्रामीण और शहरी राजस्थान के बीच भाषाई अंतर के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) शहरी केंद्र मुख्य रूप से शुद्ध साहित्यिक डिंगल में बातचीत करते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र केवल आधुनिक मानक हिंदी का उपयोग करते हैं।
(B) कोई क्षेत्रीय विविधता नहीं है; मानक अंग्रेजी ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सभी स्थानीय बोलियों को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया है।
(C) ग्रामीण आबादी ने दैनिक बातचीत के लिए मानक लिखित हिंदी के पक्ष में स्थानीय बोली जाने वाली बोलियों को पूरी तरह से छोड़ दिया है।
(D) ग्रामीण क्षेत्र शहरी केंद्रों की तुलना में मारवाड़ी या मेवाड़ी जैसी स्थानीय बोलियों को अधिक संरक्षित रखते हैं।

39. राजस्थान में निम्नलिखित पारंपरिक मानव बस्ती प्रकारों को उनके स्थानिक आकार, जनसंख्या और सामाजिक-आर्थिक जटिलता के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. कस्बा
II. ढाणी
III. शहर
IV. गांव
निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
(A) II, IV, I, III
(B) IV, II, I, III
(C) II, I, IV, III
(D) I, II, IV, III

40. राजस्थान में ग्रामीण से शहरी परिवेश में लोक संस्कृति के परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : शहरी और वैश्विक उपभोक्ता बाजारों को पूरा करने के लिए पारंपरिक ग्रामीण लोक कलाओं और शिल्पों का तेजी से बाजारीकरण किया जा रहा है।
कथन II : शहरीकरण ने राजस्थान के शहरों में त्योहारों और विवाहों के दौरान पारंपरिक परिधानों की मांग को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

41. 'गवरी' पौराणिक कथाओं में गहराई से निहित 40 दिवसीय प्रसिद्ध पारंपरिक लोक नृत्य-नाट्य है। यह राजस्थान के किस जनजातीय समुदाय द्वारा विशेष रूप से किया जाता है?
(A) सहरिया
(B) गरासिया
(C) मीणा
(D) भील

42. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : पारंपरिक भील संस्कृति वन पारिस्थितिकी के साथ गहराई से जुड़ी हुई है, जो आजीविका, अनुष्ठानों और आवास के लिए स्थानीय वनस्पति का उपयोग करती है।
कारण (R) : भील समुदाय ऐतिहासिक रूप से घने जंगलों वाली अरावली श्रेणियों में निवास करता था, जिससे उन्होंने वन अस्तित्व पर केंद्रित एक स्वदेशी ज्ञान प्रणाली विकसित की।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

43. राजस्थान में भील जनजातीय परंपराओं के संदर्भ में, 'दजिया' और 'चीमाता' शब्द किसे संदर्भित करते हैं?
(A) सामूहिक मौसमी शिकार अनुष्ठानों के दौरान विशेष रूप से उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक हस्तनिर्मित हथियार
(B) क्रमशः मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में की जाने वाली स्थानांतरित कृषि के प्रकार
(C) ऐतिहासिक भगत सामाजिक-धार्मिक आंदोलन के दौरान बजाए जाने वाले अनूठे स्वदेशी वाद्य यंत्र
(D) मूल निवासी समुदायों के बीच मान्यता प्राप्त विशिष्ट प्रकार के पारंपरिक जनजातीय विवाह

44. 'भील' शब्द की सबसे व्यापक रूप से स्वीकार्य व्युत्पत्तिगत उत्पत्ति और पारंपरिक अर्थ क्या है, जो उनकी ऐतिहासिक सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है?
(A) यह एक प्राचीन संस्कृत शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'घुमंतू', जो सीधे उनकी ऐतिहासिक खानाबदोश जीवन शैली को दर्शाता है।
(B) यह 'धनुष' अर्थ वाले द्रविड़ शब्द से निकला है, जो तीरंदाजी में प्रवीणता को दर्शाता है।
(C) यह ऐतिहासिक काल में बोली जाने वाली प्राचीन प्राकृत भाषा में 'पर्वत राजा' की उपाधि का सीधा अनुवाद है।
(D) इसका अर्थ है 'कपड़े का बुनकर', जो शुरुआती ग्रामीण समाज में उनके प्राथमिक ऐतिहासिक व्यवसाय को

Downloaded from www.pdf.tube

75. (A) शेखावाटी
'ढप' नृत्य (डफ नृत्य) राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनू, चुरु) का एक बहुत ही लोकप्रिय लोक नृत्य है। यह नृत्य वसंत ऋतु के आगमन यानी बसंत पंचमी के दिन से शुरु होकर होली के त्योहार तक पुरुषों के समूह द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पुरुष अपने एक हाथ में ढप (डफली) लेकर उसे बजाते हुए गोल घेरे में नृत्य करते हैं और वसंत व प्रेम के गीत गाते हैं।

76. (C) यह मूल रूप से शिकार से पहले भील योद्धाओं द्वारा विशेष रूप से किया जाने वाला एक हिंसक युद्ध नृत्य था।
घूमर नृत्य के संबंध में यह कथन गलत है कि यह शिकार से पूर्व किया जाने वाला हिंसक युद्ध नृत्य था। वास्तव में, घूमर राजस्थान का अत्यंत शालीन, लालित्यपूर्ण और मांगलिक राज्य नृत्य है। यद्यपि इसका उद्गम भील जनजाति में माँ सरस्वती की पूजा से माना जाता है, लेकिन यह कभी हिंसक युद्ध नृत्य नहीं रहा। यह राजपूत महिलाओं द्वारा वैवाहिक और त्यौहारी अवसरों पर खुशी प्रकट करने के लिए किया जाता है।

77. (D) शेखावाटी
'गींदड़' नृत्य राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र (सीकर, झुंझुनू) का सबसे प्रसिद्ध और पारंपरिक लोक नृत्य है। यह नृत्य होली के अवसर पर डांडा रोपण से लेकर होली दहन तक पुरुषों द्वारा रात भर किया जाता है। इसमें समाज के सभी वर्गों के पुरुष भाग लेते हैं जो हाथों में छोटी डंडियां लेकर नगाड़े की ताल पर नृत्य करते हैं। इसमें कई पुरुष स्वांग (वेशभूषा) रचकर भी शामिल होते हैं।

78. (C) फड़ का उपयोग करके लोक देवताओं की गाथाओं का वाचन करने वाले पुजारी-गायक
राजस्थानी लोक संस्कृति में 'भोपे' पारंपरिक पुजारी-गायक होते हैं जो लोक देवताओं (जैसे पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी आदि) की पूजा-अर्चना और उनकी गाथाओं का वाचन करते हैं। ये भोपे कपड़े पर चित्रित 'फड़' (चित्रपट) को फैलाकर रावणहत्था या जंतर जैसे वाद्यों की संगति के साथ पूरी रात लोक देवता के जीवन की घटनाओं और चमत्कारों को गाकर सुनाते हैं। इनकी पत्नियों को 'भोपी' कहा जाता है।

79. (B) एक बैठकर किया जाने वाला नृत्य जहां महिलाएं अपने शरीर से बंधे तेरह मंजीरों को बजाती हैं
तेरह ताली नृत्य की सबसे उपयुक्त व्याख्या यह है कि यह मुख्य रूप से बैठकर प्रस्तुत किया जाने वाला एक भक्ति नृत्य है। इसे कामड़ जाति की कुशल महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसमें नर्तकियां अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों (दाएं पैर, कोहनी, हाथ) पर कुल तेरह मंजीरे बांधती हैं। वे बैठकर ही लयबद्ध रूप से मंजीरों को टकराते हुए, मुंह में तलवार दबाकर या सिर पर चरी रखकर संतुलन का प्रदर्शन करती हैं।

80. (B) कच्छी घोड़ी, तेरह ताली, रणबाजा
दिए गए क्रम (केवल पुरुष -> केवल महिला -> मिश्रित समूह) के अनुसार नृत्यों का सही विकल्प इस प्रकार है: 'कच्छी घोड़ी' केवल पुरुषों द्वारा नकली घोड़ी पर किया जाने वाला नृत्य है। 'तेरह ताली' केवल कामड़ समुदाय की महिलाओं द्वारा बैठकर किया जाने वाला नृत्य है। 'रणबाजा' मेवात क्षेत्र के मेव समुदाय के पुरुषों और महिलाओं द्वारा एक साथ किया जाने वाला मिश्रित लोक नृत्य है।

81. (A) लोद्रवा (जैसलमेर)
'मूमल' राजस्थान का एक अत्यंत विख्यात और ऐतिहासिक लोकगीत है। यह गीत जैसलमेर की प्राचीन राजधानी लोद्रवा की खूबसूरत राजकुमारी 'मूमल' और अमरकोट के राजा 'महेंद्र' की अमर परंतु दुखद प्रेम कथा पर आधारित है। इसमें मूमल के असीम शारीरिक सौंदर्य का नख-शिख वर्णन किया गया है। लोद्रवा की काक नदी के तट पर स्थित मूमल का मेड़ी (महल) आज भी इस प्रेम कथा का गवाह माना जाता है।

82. (C) सिंधी सारंगी
'सिंधी सारंगी' को इसकी असाधारण मधुरता, गूंज और सुरीली ध्वनि के कारण प्रायः 'राजस्थानी लोक वाद्यों की रानी' कहा जाता है। यह रोहिड़ा की ठोस लकड़ी से बनाई जाती है। इसमें मुख्य तारों के अलावा नीचे इस्पात और पीतल के लगभग 27 अनुकंपी (सिम्पैथेटिक) तार लगे होते हैं। लंगा समुदाय के गायक अपने शास्त्रीय लोक गायन की संगति के लिए सिंधी सारंगी का दक्षतापूर्वक प्रयोग करते हैं।

83. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
लंगा और मांगणियार पश्चिमी राजस्थान के दो अलग मुस्लिम सांगीतिक समुदाय हैं जो अपनी विशिष्ट परंपराएं बनाए रखते हैं। परंतु दिया गया कारण गलत है, क्योंकि लंगा समुदाय का मुख्य गज-वाद्य 'सिंधी सारंगी' और 'सुरिंदा' है, जबकि मांगणियार समुदाय का प्रमुख वाद्य 'कामायचा' और 'खड़ताल' है। कारण में वाद्यों का परस्पर विपरीत वर्णन दिया गया है। इसलिए कथन सही है परंतु कारण पूरी तरह असत्य है।

NODIA

84. (D) गरासिया
'लूर' नृत्य राजस्थान की गरासिया जनजाति का एक प्रमुख और सुंदर लोक नृत्य है। यह नृत्य मुख्य रूप से होली के उत्सव के दौरान गरासिया समुदाय की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इस नृत्य में गरासिया महिलाएं दो समूहों में बंटकर एक-दूसरे से गीतों के माध्यम से प्रश्नोत्तर करती हैं और गोल घेरा बनाकर नृत्य करती हैं। इसमें वर पक्ष द्वारा वधु पक्ष से रिश्ते की मांग का सुंदर चित्रण होता है।

85. (A) II, IV, III, I
वाद्यों का वर्गीकरण (सुषिर -> अवनद्ध -> तत -> घन) के अनुसार सही क्रम इस प्रकार है: अलगोजा दो बांसुरियों वाला फूंक वाद्य (सुषिर) है। ढोलक चमड़े की झिल्ली वाला ताल वाद्य (अवनद्ध) है। कामायचा कमानी से बजाया जाने वाला तार वाद्य (तत) है। खड़ताल शीशम की लकड़ी के दो टुकड़ों से बना ठोस आघात वाद्य (घन) है। अतः सही क्रम दूसरा, चौथा, तीसरा और पहला है।

इसमें विभिन्न आकारों की लकड़ी की दो छड़ियों का उपयोग किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

54. राजस्थान में राजघरानों और आम लोगों दोनों द्वारा ऐतिहासिक रूप से खेला जाने वाला पारंपरिक बोर्ड गेम, जिसमें पासे (कौड़ियों) और क्रॉस के आकार के कपड़े के बोर्ड का उपयोग किया जाता है, किस नाम से जाना जाता है?
(A) कबड्डी
(B) खो-खो
(C) रुमाल झपट्टा
(D) चौपड़

55. ग्रामीण राजस्थान में बच्चों द्वारा आमतौर पर खेला जाने वाला एक पारंपरिक टीम-आधारित खेल कौन-सा है जिसमें एक कपड़े का उपयोग किया जाता है?
(A) मार दड़ी
(B) रुमाल झपट्टा
(C) आड़ा-पेड़ा
(D) कंचे

56. निम्नलिखित में से तीन ग्रामीण राजस्थान में अनौपचारिक रूप से खेले जाने वाले पारंपरिक लोक खेल हैं। कौन-सा एक असंगत है, जो एक औपचारिक आधुनिक अंतरराष्ट्रीय खेल है?
(A) कंचे
(B) सितोलिया
(C) जिम्नास्टिक
(D) गिल्ली डंडा

57. त्योहारों का पारंपरिक राजस्थानी पंचांग हिंदू चंद्र-सौर प्रणाली (विक्रम संवत) का अनुसरण करता है। इस पंचांग के अनुसार, नया वर्ष (नव संवत्सर) आधिकारिक तौर पर किस तिथि को शुरु होता है?
(A) कार्तिक कृष्ण अमावस्या तिथि
(B) श्रावण पूर्णिमा तिथि
(C) माघ कृष्ण चतुर्थी तिथि
(D) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

58. 'आखा तीज' (अक्षय तृतीया) के त्योहार का राजस्थान में अत्यधिक सांस्कृतिक महत्व है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी प्राथमिक सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषता क्या है?
(A) यह एक शुभ 'अबूझ सावा' का दिन है जिसमें बड़ी संख्या में विवाह संपन्न होते हैं।
(B) यह सर्दियों की औपचारिक शुरुआत और वार्षिक बाजरा कटाई के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है।
(C) यह एक पारंपरिक दिन है जो पूरी तरह से मृत पूर्वजों की आत्माओं के सम्मान और शोक के लिए समर्पित है।
(D) यह एक ऐतिहासिक त्योहार है जो केवल मेवाड़ के सत्ताधारी शाही परिवार के सदस्यों द्वारा मनाया जाता है।

59. एक पारंपरिक राजस्थानी त्योहार और जिस हिंदू महीने में यह मुख्य रूप से मनाया जाता है, उसके गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) तीज (छोटी तीज) - श्रावण
(B) दीपावली - वैशाख
(C) गणगौर - चैत्र
(D) होली - फाल्गुन

60. राजस्थानी सांस्कृतिक पंचांग में 'श्रावण' (सावन) का महीना किन प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है?
(A) बिना पानी के निरंतर उपवास के साथ अत्यधिक ग्रीष्मकालीन गर्मी का चरम
(B) मानसून का आगमन, पेड़ों पर झूले और हरियाली का उत्सव
(C) पारंपरिक वित्तीय वर्ष का औपचारिक अंत और बही-खातों की पूजा
(D) खेतों में गेहूं और सरसों जैसी प्रमुख रबी (शीतकालीन) फसलों की व्यापक कटाई

61. राजस्थान राज्य सरकार ने निर्मित विरासत के संरक्षण के लिए विशिष्ट नीतियां लागू की हैं। राज्य भर में असुरक्षित ऐतिहासिक भवनों और विरासत स्थलों के संरक्षण के लिए विशेष रुप से तैयार की गई कानूनी रुपरेखा को किस नाम से जाना जाता है?
(A) राजस्थान स्मारक, अवशेष एवं पुरातत्व अधिनियम
(B) राजस्थान आधुनिक अवसंरचना विकास एवं संरक्षण अधिनियम
(C) राजस्थान जनजातीय भूमि अधिकार एवं विरासत संरक्षण अधिनियम
(D) राजस्थान शहरी भूमि सीमा एवं नियोजन नियमन अधिनियम

62. राजस्थान सरकार की विरासत संरक्षण नीतियों और पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सरकार पुराने किलों और हवेलियों के अनुकूलनशील पुनरुप्रयोग और रखरखाव को सुनिश्चित करने के लिए 'हेरिटेज होटलों' को बढ़ावा देती है।
II. 'मुख्यमंत्री लोक कलाकार प्रोत्साहन योजना' का उद्देश्य राज्य की अमूर्त लोक कलाओं और कलाकारों को वित्तीय सहायता देना तथा उनका संरक्षण करना है।
III. राजस्थान धरोहर संरक्षण प्राधिकरण केवल पुराने स्मारकों को बदलने के लिए नए आधुनिक कंक्रीट स्मारकों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।
IV. राज्य की नीतियां प्राचीन पांडुलिपियों और ऐतिहासिक अभिलेखों के दस्तावेजीकरण और डिजिटलीकरण को सक्रिय रुप से बढ़ावा देती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV

Click Here to Buy book on Flipkart

93. 'राजस्थान साहित्य अकादमी', जो राजस्थान में साहित्य के प्रचार और संरक्षण के लिए शीर्ष राज्य संस्था है, का मुख्यालय किस शहर में है?
(A) उदयपुर
(B) जयपुर
(C) जोधपुर
(D) बीकानेर

94. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : राजस्थान में सरकारी सांस्कृतिक अकादमियां विलुप्त हो रही कलाओं और साहित्य को संस्थागत संरक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
कारण (R) : स्वतंत्रता के बाद देशी रियासतों के उन्मूलन ने उस पारंपरिक शाही संरक्षण को समाप्त कर दिया जिसने ऐतिहासिक रूप से इन कलाकारों और विद्वानों को जीवित रखा था।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

95. राज्य में संगीत, नृत्य और नाटक के क्षेत्रों में गतिविधियों को बढ़ावा देने और समन्वय स्थापित करने के लिए स्थापित 'राजस्थान संगीत नाटक अकादमी' कहाँ स्थित है?
(A) अजमेर शहर
(B) कोटा शहर
(C) अलवर शहर
(D) जोधपुर

96. राजस्थान में किसी सरकारी सांस्कृतिक अकादमी/संस्थान को उसके प्राथमिक आवधिक प्रकाशन से जोड़ने वाले गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) राजस्थान साहित्य अकादमी - मधुमती
(B) राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी - जागती जोत
(C) राजस्थान संस्कृत अकादमी - सुजस
(D) मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान - नख्ल-ए-दर्पण

97. राजस्थान के सांस्कृतिक भूगोल के भीतर, 'अहीरवाटी' (या राठ) सांस्कृतिक क्षेत्र मुख्य रूप से किस क्षेत्र में स्थित है, जो यादव समुदाय से अत्यधिक प्रभावित है?
(A) बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जिलों को शामिल करने वाले दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र
(B) अलवर के हिस्सों सहित उत्तर-पूर्वी क्षेत्र
(C) जैसलमेर और बाड़मेर को कवर करने वाले पश्चिमी अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र
(D) कोटा और झालावाड़ जिलों को शामिल करने वाले दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र

98. 'मेरवाड़ा' क्षेत्र राजस्थान में एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान रखता है, जो पारंपरिक रूप से किन दो प्रमुख ऐतिहासिक राज्यों के बीच एक मध्यवर्ती और सांस्कृतिक संक्रमण क्षेत्र के रूप में कार्य करने वाली अपनी भौगोलिक स्थिति की विशेषता रखता है?
(A) ढूंढाड़ और हाड़ौती
(B) मेवात और ब्रज
(C) वागड़ और मालवा
(D) मारवाड़ और मेवाड़

99. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान के मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्रों के बीच तुलनात्मक सांस्कृतिक अंतर को सबसे अच्छी तरह से रेखांकित करता है?
(A) मेवाड़ की संस्कृति पहाड़ी इलाके और पत्थर की कला से आकार लेती है, जबकि मारवाड़ मरुस्थलीय विस्तार और बलुआ पत्थर के किलों से परिभाषित होता है।
(B) मेवाड़ भौगोलिक रूप से विशाल शुष्क रेत के टीलों और ऊंट पालन द्वारा परिभाषित होता है, जबकि मारवाड़ घने जंगलों वाला है और सघन धान की खेती द्वारा परिभाषित होता है।
(C) मेवाड़ केवल पारंपरिक इस्लामिक चंद्र पंचांग का पालन करता है, जबकि मारवाड़ सभी त्योहारों के लिए विशेष रूप से पश्चिमी ग्रेगोरियन पंचांग का पालन करता है।
(D) राज्य भर के दो ऐतिहासिक सांस्कृतिक क्षेत्रों के बीच भाषाई, पहनावे या कलात्मकता में कोई ध्यान देने योग्य अंतर नहीं है।

100. राजस्थान का 'ब्रज' सांस्कृतिक क्षेत्र, जिसमें भरतपुर और धौलपुर जैसे क्षेत्र शामिल हैं, मुख्य रूप से किस पड़ोसी राज्य की विरासत के साथ अपनी गहरी सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक आत्मीयता से परिभाषित होता है?
(A) पड़ोसी मध्य प्रदेश राज्य की जनजातीय वन संस्कृति और स्वदेशी परंपराएँ
(B) पश्चिमी गुजरात राज्य की तटीय समुद्री व्यापारिक परंपराएं और व्यापारी संस्कृति
(C) उत्तर प्रदेश (मथुरा क्षेत्र) की कृष्ण सांस्कृतिक परंपराएं
(D) उत्तरी पंजाब राज्य की समृद्ध कृषि सामाजिक रीति-रिवाज और सूफी लोक संस्कृति

NODIA

के लिए एक अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य मंच के रूप में कार्य करना
(D) सभी स्थानीय और आगंतुक आबादियों के बीच समान धार्मिक समरुपता को सख्ती से लागू करना

72. राजस्थान में पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत के अंतर-संबधों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) पर्यटन निजी हेरिटेज हवेलियों के निरंतर रखरखाव के लिए अनिवार्य आर्थिक सहायता प्रदान करता है।
(B) ग्रामीण पर्यटन पहल स्थानीय रोजगार पैदा करके युवाओं के सामूहिक पलायन को रोकने में प्रभावी रुप से मदद करती है।
(C) पर्यटकों के आगमन ने मरुस्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों पर पड़ने वाले नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(D) पर्यटन स्थानीय निवासियों के बीच गर्व की एक नई भावना पैदा करता है, जिससे सांस्कृतिक हस्तांतरण को प्रोत्साहन मिलता है।

73. युवाओं के बीच पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति के संरक्षण के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा एक महत्वपूर्ण आधुनिक चुनौती का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) रुढ़िवादी ग्राम पंचायतों द्वारा लागू आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का पूर्ण प्रतिबंध
(B) राज्य भर के गहरे जंगलों की जनजातीय बस्तियों में शहरी आबादी का जबरन सरकारी पुनर्वास
(C) आधुनिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में पारंपरिक ग्रामीण वस्तु-विनिमय प्रणालियों पर अत्यधिक, व्यावहारिक रुप से असंभव निर्भरता
(D) वैश्वीकृत आधुनिक मीडिया जिसके कारण पारंपरिक जीवन शैली से दूर आकांक्षात्मक बदलाव हो रहा है

74. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : पारंपरिक कला/शिल्प
P. हस्त-ठप्पा छपाई
Q. कठपुतली
R. पारंपरिक लोक गाथाएँ (फड़ वाचन)
S. मिट्टी के बर्तन (मृद्भांड)
सूची II : आधुनिक चुनौती
1. सिनेमाई और आधुनिक मनोरंजन विकल्पों के कारण पारंपरिक संरक्षण का ह्रास
2. मौखिक परंपराओं में गिरावट और आधुनिक दर्शकों का ध्यान केंद्रित करने की अवधि में कमी
3. सस्ते, बड़े पैमाने पर उत्पादित रासायनिक रंगों और स्क्रीन छपाई से प्रतिस्पर्धा
4. टिकाऊ और सस्ते प्लास्टिक तथा स्टील के घरेलू बर्तनों द्वारा प्रतिस्थापन
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

75. आधुनिक राजस्थान में सामाजिक रीति-रिवाजों की चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : रोजगार के लिए ग्रामीण राजस्थान से बड़े पैमाने पर बाहर पलायन के कारण पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का निरंतर विघटन हो रहा है।
कथन II : महानगरों में पलायन करने वाली युवा पीढ़ी सार्वभौमिक रुप से पारंपरिक जाति-आधारित वंशानुगत व्यवसायों का कड़ाई से पालन करना जारी रखती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

76. राजस्थानी लोक संस्कृति के संबंध में आधुनिक संचार माध्यमों द्वारा निभाई जाने वाली दोहरी भूमिका का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(A) यह केवल ग्रामीण युवाओं में पश्चिमी लोकप्रिय संगीत को बढ़ावा देकर प्रामाणिक पारंपरिक संस्कृति को पूरी तरह से नष्ट करता है।
(B) युवाओं को वैश्विक रुझानों से अवगत कराने के साथ-साथ, यह लोक कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने के लिए एक मंच प्रदान करता है।
(C) यह ग्रामीण राजस्थान की सामाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलता को प्रभावित करने में बिल्कुल भी कोई सार्थक भूमिका नहीं निभाता है।
(D) इसका उपयोग राज्य सरकार द्वारा पारंपरिक लोक प्रदर्शनों पर प्रतिबंध लगाने के लिए विशुद्ध रुप से एक प्रशासनिक उपकरण के रुप में किया जाता है।

NODIA

77. 'रुपायन संस्थान' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थानी लोक साहित्य (लोकवार्ता), कला और मौखिक परंपराओं के संरक्षण के लिए समर्पित एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान है।
II. इसकी सह-स्थापना कोमल कोठारी और विजयदान देथा द्वारा की गई थी।
III. यह जोधपुर जिले के बोरुंदा गांव में स्थित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

78. विजयदान देथा (जिन्हें प्यार से 'बिज्जी' कहा जाता है) ने मुख्य रुप से किस माध्यम से राजस्थानी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) मेवाड़ में स्थित कई जर्जर मध्यकालीन किलों का भौतिक रुप से जीर्णोद्धार और नवीनीकरण करके
(B) जयपुर ब्लू पॉटरी की नवीन आधुनिक शिल्प तकनीकों

(C) केवल I, III और IV
(D) केवल I, II और III

63. राजस्थान में विरासत संरक्षण के संदर्भ में, 'अनुकूलनशील पुनरुप्रयोग' का सबसे अच्छा विवरण क्या है?
(A) उच्च-स्तरीय वाणिज्यिक आवास बनाने के लिए जर्जर पुरानी ऐतिहासिक संरचनाओं को ध्वस्त करना
(B) आगे के क्षय को रोकने के लिए प्राचीन ऐतिहासिक खंडहरों को पूरी तरह से अछूता और अगम्य छोड़ देना
(C) आधुनिक सरकारी कार्यालयों के निर्माण के लिए प्राचीन किलों के सटीक वास्तुशिल्प की नकल करना
(D) पुरानी हवेलियों के वास्तुशिल्प को संरक्षित रखते हुए उन्हें होटलों या संग्रहालयों के रूप में पुन: उपयोग में लाना

64. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) ने विरासत को पर्यटन के साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। RTDC द्वारा संचालित कौन-सी प्रसिद्ध शाही पर्यटक ट्रेन अपनी ब्रांडिंग के लिए राजस्थान की शाही सांस्कृतिक विरासत का अत्यधिक उपयोग करती है?
(A) वंदे भारत एक्सप्रेस
(B) शताब्दी एक्सप्रेस
(C) पैलेस ऑन व्हील्स
(D) राजधानी एक्सप्रेस

65. राजस्थान के निम्नलिखित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों को विश्व धरोहर सूची में शामिल किए जाने के वर्ष के आधार पर कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए (सबसे पहले से सबसे नवीनतम):
I. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
II. जयपुर शहर, राजस्थान
III. जंतर मंतर, जयपुर
IV. राजस्थान के पहाड़ी किले
निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
(A) I, III, IV, II
(B) I, IV, III, II
(C) III, I, IV, II
(D) IV, III, II, I

66. "राजस्थान के पहाड़ी किले" यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में अंकित एक क्रमिक सांस्कृतिक संपत्ति है। निम्नलिखित में से कौन-सा किला इस विशिष्ट यूनेस्को नामांकन का हिस्सा नहीं है?
(A) कुंभलगढ़ दुर्ग
(B) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(C) रणथंभौर दुर्ग
(D) मेहरानगढ़ दुर्ग

67. राजस्थान की निम्नलिखित में से किस पारंपरिक प्रदर्शन कला को 2010 में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया था?
(A) कालबेलिया गीत और नृत्य
(B) पारंपरिक घूमर लोक नृत्य
(C) करतब-आधारित भवाई लोक नृत्य
(D) भक्तिपूर्ण तेरह ताली अनुष्ठानिक नृत्य

68. जयपुर के ऐतिहासिक परकोटा शहर को 2019 में मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस मानदंड के लिए यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई थी?
(A) विश्व के सबसे पुराने निरंतर बसे हुए शहरी शहर के रूप में इसकी ऐतिहासिक स्थिति
(B) प्राकृतिक रूप से निर्मित भूमिगत गुफा मंदिरों और जल प्रणालियों का इसका विशाल नेटवर्क
(C) इसकी जालनुमा (चौपड़ शैली) नगर योजना और समन्वयात्मक स्थापत्य शैली
(D) मरुस्थलीय वातावरण में विशुद्ध रूप से यूरोपीय स्थापत्य शैलियों का इसका अनूठा ऐतिहासिक उपयोग

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : राजस्थान में सांस्कृतिक पर्यटन ने पारंपरिक कलाओं और शिल्पों को संरक्षित करने के लिए आर्थिक प्रोत्साहन प्रदान किया है, लेकिन इसके कारण संस्कृति का 'बाजीरीकरण' भी हुआ है।
कारण (R) : कारीगर अक्सर विदेशी और घरेलू पर्यटकों की थोक-बाजार की प्राथमिकताओं के अनुरूप अपने पारंपरिक, अत्यधिक प्रतीकात्मक रुपांकनों में बदलाव करते हैं।
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

70. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध 'मरु महोत्सव', जो पगड़ी बांधने की प्रतियोगिताओं, ऊंट दौड़ और लोक संगीत सहित पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति का प्रदर्शन करता है, प्रतिवर्ष किस शहर में आयोजित किया जाता है?
(A) बीकानेर शहर
(B) जोधपुर शहर
(C) बाड़मेर शहर
(D) जैसलमेर

71. आज राजस्थान में मारवाड़ महोत्सव और पुष्कर मेले जैसे राज्य प्रायोजित सांस्कृतिक उत्सवों के आयोजन की प्राथमिक सामाजिक-आर्थिक भूमिका क्या है?
(A) पारंपरिक जनजातीय सीमाओं को औपचारिक रूप से चिह्नित करना और क्षेत्रीय सीमा विवादों को स्थायी रूप से हल करना
(B) पर्यटन को बढ़ावा देना, लोक कलाकारों का समर्थन करना और स्थानीय हस्तशिल्प अर्थव्यवस्था को बनाए रखना
(C) वैश्विक हथियारों के व्यापार और रक्षा आदान-प्रदान

Downloaded from www.pdf.tube

तैयार किया जाता है।
(D) यह चिकनी मिट्टी के बजाय पिसे हुए क्वार्ट्ज़, कांच, मुल्तानी मिट्टी और बोरेक्स का उपयोग करती है।

87. राजस्थान की 'कावड़' कला रुप का सबसे अच्छा वर्णन इस प्रकार है:
(A) स्थानीय शासक राजवंशों के संपूर्ण क्षेत्रीय इतिहास के साथ सूक्ष्मता से उकेरा गया एक विशाल, भारी पत्थर का एकाश्मक
(B) कहानियों से चित्रित एक सुवाह्य (चल) बहु-किवाड़ी लकड़ी का ढांचा/पेटी, जिसका उपयोग कहानीकारों द्वारा किया जाता है
(C) शाही शिकार के दृश्यों को विस्तार से दर्शाने वाली एक बड़ी, जटिल हाथ से बुनी हुई सजावटी कालीन
(D) वार्षिक फसल उत्सवों के दौरान महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक नाज़ुक, हस्तनिर्मित चांदी का तारकशी शरीर आभूषण

88. राजस्थान में निम्नलिखित शिल्पों और उनके संबंधित प्रतीकात्मक या धार्मिक संदर्भों पर विचार कीजिए:
I. पिछवाई - नाथद्वारा में श्रीनाथजी (कृष्ण) के मंदिर में पृष्ठभूमि के रूप में उपयोग किए जाने वाले कपड़े के विस्तृत चित्र।
II. मोलेला टेराकोटा - मुख्य रूप से देवनारायण जैसे स्थानीय देवताओं को दर्शाने वाली मृण्मूर्तियाँ (टेराकोटा फलक), जो ऐतिहासिक रूप से जनजातीय और ग्रामीण समुदायों द्वारा अर्पित की जाती हैं।
III. थेवा कला - रंगीन कांच पर सोने का सूक्ष्म चित्रांकन, जिसमें पारंपरिक रूप से किसी भी धार्मिक प्रतीकवाद का अभाव है और इसका उपयोग विशुद्ध रूप से धर्मनिरपेक्ष यूरोपीय हथियारों के लिए किया जाता है।
IV. उस्ता कला - ऊंट की खाल पर सोने का उभरा हुआ काम (मीनाकारी), जो मुगल और वनस्पति ज्यामितीय प्रतीकवाद से अत्यधिक प्रभावित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

89. राजस्थान की मौखिक परंपरा में, 'पाबूजी की फड़' नामक वीर गाथा पारंपरिक रूप से भोपा समुदाय द्वारा किस प्राथमिक वाद्य यंत्र का उपयोग करके गाई जाती है?
(A) सितार
(B) तबला
(C) शहनाई
(D) रावणहत्था

90. राजस्थान में सांस्कृतिक हस्तांतरण में मौखिक परंपरा की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : 'बगड़ावत' गुर्जर समुदाय का एक विशाल मौखिक महाकाव्य है, जो लिखित पाठ पर निर्भर हुए बिना पीढ़ियों तक ऐतिहासिक चेतना और धार्मिक मूल्यों को स्थानांतरित करने के लिए आवश्यक है।
कथन II : मौखिक परंपराएं पूरी तरह से स्थिर हैं; भाट/गायक आधुनिक दर्शकों के अनुकूल अपने प्रदर्शनों को कभी भी अनुकूलित या संदर्भित नहीं करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

91. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : लोक गाथा/कथा
P. पाबूजी की फड़
Q. देवनारायण जी की फड़
R. ढोला मारू
S. निहालदे
सूची II : संबंधित समुदाय/क्षेत्र
1. गुर्जर समुदाय की धार्मिक परंपरा में गहराई से जुड़ी हुई
2. मुख्य रूप से मारवाड़ क्षेत्र से जुड़ी एक अत्यधिक प्रेमपूर्ण (रोमांटिक) कथा
3. ऐतिहासिक रूप से राइका/रेबारी समुदाय द्वारा ऊंटों के रक्षक के रूप में पूजनीय
4. पूर्वी राजस्थान/मेवात में प्रचलित वीरता और प्रेम की एक लोकप्रिय लोक कथा
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

92. केवल लिखित ऐतिहासिक दरबारी अभिलेखों पर निर्भर रहने के बजाय, राजस्थान की संपूर्ण सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए 'मौखिक इतिहास' का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?
(A) मौखिक इतिहास हमेशा प्रमुख ऐतिहासिक युद्धों के लिए अत्यधिक सटीक पंचांग तिथियां प्रदान करता है, जो आधिकारिक दरबारी अभिलेखों में पूरी तरह से अनुपस्थित हैं।
(B) मौखिक इतिहास वंचित/हाशिए के जातियों, जनजातियों और ग्रामीण आबादी को आवाज देता है।
(C) आधिकारिक दरबारी अभिलेख पूरी तरह से अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं में रचे गए थे, जिससे वे स्थानीय विद्वानों के लिए पूरी तरह से अपठनीय हो गए।
(D) मौखिक इतिहास को राष्ट्रव्यापी आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं द्वारा प्रयोगात्मक साक्ष्य के रूप में विशिष्ट रूप से मान्य और आधिकारिक तौर पर समर्थित किया गया है।

NODIA

पश्चिमी राजस्थान के प्रसिद्ध वंशानुगत संगीतकार हैं, जिनका मुख्य व्यवसाय लोक संगीत एवं गायन है। वे कमायचा तथा खड़ताल जैसे पारम्परिक वाद्य यंत्र बजाते हैं। कुम्हार बर्तन बनाते हैं तथा छीपा छपाई करते हैं, इसलिए लंगा और मांगणियार का संगीतमय संबंध बिल्कुल सही है।

34. (D) शाहपुरा का जोशी परिवार
'फड़' कपड़े के लंबे परदे पर बनाई जाने वाली एक पारंपरिक लोक चित्रकला है, जिसमें लोक देवताओं के जीवन एवं गाथाओं को दर्शाया जाता है। यह अनूठी चित्रकला शैली ऐतिहासिक रुप से शाहपुरा के 'जोशी परिवार' द्वारा पीढ़ियों से की जा रही है। इस कला में श्रीलाल जोशी जैसे प्रसिद्ध कलाकारों ने महत्वपूर्ण योगदान देकर इसे विश्व भर में ख्याति दिलाई है।

35. (A) केवल I, II और III
राजस्थान में कारीगर समुदायों के अपने पारंपरिक व्यवसाय रहे हैं। साल्वी समुदाय पारंपरिक बुनाई का कार्य करता है। छीपा समुदाय कपड़ों पर हस्त-ठप्पा छपाई के लिए जाना जाता है। ठठेरा जाति पीतल के बर्तन बनाने में निपुण है। सरगरा समुदाय ढोल बजाने से जुड़ा है, न कि तीरंदाजी से। अतः केवल प्रथम, द्वितीय और तृतीय कथन ही पूर्णतः सही एवं सटीक हैं।

36. (C) तटीय श्रेणियों द्वारा सूक्ष्म हीरा तराशने का काम
राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास विभिन्न पारंपरिक व्यावसायिक समुदायों से समृद्ध है। सोनी परिवार थेवा आभूषण बनाता है, ढाढ़ी समुदाय गाथाएँ गाता है, तथा रैगर समाज चमड़े का कार्य करता है। तटीय श्रेणियों द्वारा हीरा तराशने का काम राजस्थान की पारंपरिक संस्कृति से नहीं जुड़ा है क्योंकि राजस्थान एक स्थलरुद्ध राज्य है जहाँ तटीय क्षेत्र मौजूद नहीं हैं, अतः यह असंगत है।

37. (A) सांस्कृतिक समरुपता और अखिल भारतीय जीवन शैली के रुझानों की ओर झुकाव
राजस्थान में बढ़ते शहरीकरण के कारण सामाजिक-सांस्कृतिक ढाँचे में व्यापक बदलाव आए हैं। शहरों में आधुनिक शिक्षा और मीडिया के प्रभाव से सांस्कृतिक समरुपता बढ़ रही है। शहरी क्षेत्रों में लोग अखिल भारतीय जीवन शैली, आधुनिक पहनावे और उपभोक्तावादी रुझानों को अपना रहे हैं, जिससे पारंपरिक क्षेत्रीय भिन्नताएँ धीरे-धीरे घट रही हैं और सांस्कृतिक एकरुपता निरंतर बढ़ रही है।

38. (D) ग्रामीण क्षेत्र शहरी केंद्रों की तुलना में मारवाड़ी या मेवाड़ी जैसी स्थानीय बोलियों को अधिक संरक्षित रखते हैं।
राजस्थान में भाषाई विविधता का वितरण स्पष्ट है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग दैनिक बातचीत हेतु अपनी स्थानीय बोलियों जैसे मारवाड़ी या मेवाड़ी का प्रयोग करते हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में मानक हिंदी का प्रभाव अधिक है। अतः ग्रामीण क्षेत्र शहरी केंद्रों की तुलना में अपनी स्थानीय बोलियों और भाषाई पहचान को अधिक संरक्षित तथा जीवंत रखते हुए निरंतर प्रयोग करते हैं।

39. (A) II, IV, I, III
राजस्थान के पारंपरिक मानव बसावटों के क्रम में ढाणी सबसे छोटी बस्ती होती है, जो खेतों के पास बसी होती है। इसके पश्चात 'गांव' आता है, जो एक संगठित ग्रामीण समुदाय है। गांव से बड़ा 'कस्बा' होता है जो व्यापारिक केंद्र के रुप में कार्य करता है। सबसे अंत में विशाल आकार तथा जनसंख्या वाला 'शहर' आता है। अतः सही क्रम II, IV, I, III है।

40. (C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
आधुनिक समय में राजस्थान की लोक कलाओं और शिल्पों का शहरी बाज़ार हेतु तेज़ी से बाजारीकरण हो रहा है। हालाँकि, शहरीकरण ने त्योहारों और विवाहों में पारंपरिक परिधानों की मांग को समाप्त नहीं किया है, बल्कि उत्सवों पर साफा और पारंपरिक वस्त्रों का प्रयोग आज भी बड़े पैमाने पर होता है। अतः कथन I सही है तथा कथन II पूरी तरह गलत है।

41. (D) भील
'गवरी' राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में भील जनजाति द्वारा किया जाने वाला एक प्रसिद्ध 40 दिवसीय पारंपरिक लोक नृत्य-नाट्य है। यह धार्मिक मान्यताओं पर आधारित है, जिसमें भगवान शिव और माता पार्वती की कथाओं का मंचन किया जाता है। भील समुदाय के पुरुष रक्षाबंधन के पश्चात चालीस दिनों तक विभिन्न गाँवों में जाकर इसका अनुष्ठानिक प्रदर्शन श्रद्धापूर्वक करते हुए अपनी कला को सहेजते हैं।

42. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की भील जनजाति ऐतिहासिक रुप से अरावली की पर्वतमालाओं और घने वनों में निवास करती आई है। उनका संपूर्ण जीवन, आजीविका और अनुष्ठान वन पारिस्थितिकी के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। इस कारण उन्होंने वनों पर आधारित एक अनूठी स्वदेशी ज्ञान प्रणाली विकसित की है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण इसकी सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

43. (B) क्रमशः मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में की जाने वाली स्थानांतरित कृषि के प्रकार
राजस्थान में भील जनजाति द्वारा की जाने वाली पारंपरिक स्थानांतरित कृषि को दो भागों में बाँटा जाता है। 'चीमाता' पहाड़ी ढलों पर जंगलों को साफ करके की जाने वाली खेती है। जबकि 'दजिया' समतल मैदानी क्षेत्रों में वनों को काटकर की जाने वाली स्थानांतरित कृषि को कहा जाता है। ये दोनों शब्द स्वदेशी कृषि प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करते हुए पहचान बनाते हैं।

44. (B) यह 'धनुष' अर्थ वाले द्रविड़ शब्द से निकला है, जो तीरंदाजी में प्रवीणता को दर्शाता है।
'भील' शब्द की व्युत्पत्ति द्रविड़ भाषा के शब्द 'बील' से मानी जाती है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'धनुष' होता है। यह नाम इस जनजाति की तीरंदाजी में पारंगतता और धनुष-बाण के प्रयोग में निपुणता को दर्शाता है। ऐतिहासिक रुप से भील समुदाय

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सैन्य परंपराओं, पशुपालक यायावर जीवन और गहरे लोक विश्वासों से युक्त समन्वयात्मक संस्कृति
राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान ऐतिहासिक रूप से विविध सामाजिक, भौगोलिक तथा राजनीतिक तत्वों के समन्वय से निर्मित हुई है। यहाँ की वीरगाथाएँ और सैन्य परंपराएँ ऐतिहासिक राजवंशों के संरक्षण में विकसित हुईं। कठोर शुष्क पर्यावरण के कारण पशुपालक यायावर समुदायों का जीवन विकसित हुआ। लोक देवताओं तथा स्थानीय मान्यताओं के प्रति विश्वास समाज को जोड़ता है, जिससे एक समन्वयात्मक और जीवंत लोक संस्कृति का पोषण होता है।

2. (D) कठोर मरुस्थलीय भू-भाग ने जीवंत वस्त्रों और विस्तृत जल संरक्षण अनुष्ठानों की संस्कृति को पोषित किया।
राजस्थान का एक बड़ा भाग थार मरुस्थल से आच्छादित है, जहाँ की विषम भौगोलिक परिस्थितियों ने जनजीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इस शुष्क वातावरण की नीरसता को दूर करने के लिए स्थानीय निवासियों ने गहरे और जीवंत रंगों वाले वस्त्रों तथा बंधेज कला को अपनाया। इसके साथ ही, जल की कमी के कारण बावड़ियों तथा टांकों जैसे पारंपरिक जल संरक्षण अनुष्ठानों का विकास हुआ।

3. (A) मगध
राजस्थान को ऐतिहासिक और भौगोलिक आधार पर मारवाड़, मेवाड़, ढूंढाड़, हाड़ौती, मालवा तथा वागड़ जैसे प्रमुख सांस्कृतिक-भाषाई क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इन क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट बोलियाँ, वेशभूषा, खान-पान और लोक परंपराएँ हैं। इसके विपरीत, मगध प्राचीन भारत का एक ऐतिहासिक क्षेत्र है, जो वर्तमान बिहार राज्य में स्थित है। इसका संबंध मौर्य और गुप्त साम्राज्य से रहा है, न कि राजस्थान से।

4. (C) सांस्कृतिक समन्वयवाद
राजस्थान की लोक संस्कृति में रामदेवजी, गोगाजी, पाबूजी और हड़बूजी जैसे लोक देवताओं का विशेष स्थान है। इन लोक देवताओं की पूजा हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों द्वारा समान श्रद्धा के साथ की जाती है। उदाहरण के लिए, रामदेवजी को मुस्लिम समाज द्वारा 'रामसा पीर' के रूप में पूजा जाता है। भिन्न-भिन्न धार्मिक मान्यताओं के इस मेल को सांस्कृतिक समन्वयवाद कहा जाता है, जो आपसी सद्भाव बढ़ाता है।

5. (A) शरीर के ऊपरी भाग में छाती से सटाकर पहना जाने वाला वस्त्र
अंगरखी पारंपरिक राजस्थानी पुरुषों का एक प्रमुख ऊपरी परिधान है, जिसे छाती से सटाकर शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाता है। यह आमतौर पर बिना बटन वाला वस्त्र होता है, जिसे कसने के लिए धागों या डोरी का प्रयोग किया जाता है। इसके विभिन्न रूप जैसे बुगतरी या मिर्जई भी ग्रामीण क्षेत्रों में काफी प्रचलित हैं। यह वस्त्र सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक माना जाता है।

6. (D) मेवाड़ी पगड़ी चपटी और भारी बांधी जाती है, जबकि मारवाड़ी साफा अपेक्षाकृत ऊंचा और हल्का होता है।
राजस्थान में पगड़ी या साफा केवल एक सिर का वस्त्र नहीं है, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा और क्षेत्रीय पहचान का प्रतीक है। मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्रों में बांधने की शैली तथा बनावट में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। मेवाड़ी पगड़ी आकार में अपेक्षाकृत चपटी और भारी होती है, जिसे सिर पर कसकर बांधा जाता है। इसके विपरीत, मारवाड़ी साफा अपेक्षाकृत ऊंचा और हल्का होता है।

7. (B) केवल I और III
पारंपरिक राजस्थानी महिला परिधान में घाघरा, कुर्ती, कांचली और ओढ़नी शामिल हैं। घाघरा कमर से नीचे पहना जाने वाला एक विस्तृत घेरादार वस्त्र है जो ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक लोकप्रिय है। ओढ़नी सिर और कंधे पर ली जाती है, जो वैवाहिक स्थिति तथा सांस्कृतिक पहचान का सूचक है। कुर्ती और कांचली ऊपरी शरीर पर एक साथ पहने जाने वाले दो भिन्न वस्त्र हैं।

8. (C) जूती
राजस्थान में बंधेज वस्त्रों की एक प्रसिद्ध पारंपरिक कला है। लहरिया, मोठड़ा और पोमचा बंधेज शैली के अंतर्गत तैयार की जाने वाली प्रमुख ओढ़नियाँ हैं। लहरिया में तिरछी धारियों का पैटर्न होता है, मोठड़ा में धारियाँ एक-दूसरे को काटती हैं, तथा पोमचा मातृत्व का प्रतीक है। इसके विपरीत, जूती पैरों में पहना जाने वाला चमड़े का आभूषण या पादुका है, जो बंधेज तकनीक से अलग है।

9. (D) गला
तिमणिया राजस्थान का एक अत्यंत लोकप्रिय और पारंपरिक आभूषण है, जिसे महिलाएँ गले में पहनती हैं। यह सोने या चाँदी से बना होता है, जिसमें छोटे-छोटे मोती और विभिन्न नगीने जड़े होते हैं। यह आभूषण आमतौर पर एक भारी कंठहार का रूप लेता है और विशेष अवसरों, त्योहारों तथा विवाह समारोहों के दौरान पहना जाता है। यह सौंदर्य और वैवाहिक समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

10. (A) बोरला
बोरला राजस्थान का एक विशिष्ट पारंपरिक आभूषण है जिसे महिलाएँ माथे के मध्य भाग में बालों की मांग के पास पहनती हैं। यह गोल आकार का होता है और इसके ऊपर जटिल नक्काशी तथा मीनाकारी की जाती है। विशेष रूप से ग्रामीण राजस्थान में, बोरला विवाहित महिलाओं की वैवाहिक स्थिति

NODIA

और सौभाग्य का एक सार्वभौमिक रूप से पहचाना जाने वाला प्रमुख प्रतीक माना जाता है।

11. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति में आभूषण पहनने के नियम धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित हैं। सोने को अत्यंत पवित्र तथा समृद्धि की देवी से जुड़ा माना जाता है। सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार, सोने को शरीर के निचले भाग में पहनना अनादर माना जाता है। इसीलिए सोने के आभूषण मुख्य रूप से कमर से ऊपर पहने जाते हैं, और पैरों में चाँदी प्राथमिकता दी जाती है।

12. (B) कंदोरा - कलाई
पारंपरिक राजस्थानी आभूषणों के अपने निश्चित स्थान हैं। सुरलिया कान की लौ में पहना जाने वाला आभूषण है, चूंफ दांतों में जड़ा जाता है, और नेवरी टखने में पहनी जाती है। कंदोरा कलाई पर नहीं, बल्कि कमर पर बांधा जाने वाला एक प्रमुख आभूषण है, जिसे करधनी भी कहा जाता है। अतः कंदोरा को कलाई का आभूषण बताना अनुचित और गलत युग्म दर्शाता है।

13. (A) कैर और सांगरी
पंचकूटा मारवाड़ और पश्चिमी राजस्थान की एक अत्यंत प्रसिद्ध पारंपरिक सब्जी है, जो मरुस्थल में पाई जाने वाली पाँच विशिष्ट वनस्पतियों से मिलकर बनती है। इसके मुख्य घटकों में कैर, सांगरी, कुमटिया, गूंदा और अमचूर शामिल हैं। यह व्यंजन शुष्क वातावरण में भी बिना खराब हुए लंबे समय तक सुरक्षित रहता है। यह स्थानीय पारिस्थितिकी के साथ भोजन के अनूठे संतुलन को दर्शाता है।

14. (D) I, II, III और IV
राजस्थान के पारंपरिक खाद्य पदार्थों में मौसम और स्थानीय परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। राबड़ी छाछ और अनाज के मिश्रण से बनी ठंडक देने वाली पेय है। सांगरी जैसी सब्जियों को धूप में सुखाकर संरक्षित करना प्रमुख विधि है। बड़ी या मंगोड़ी सुखाकर रखी जाने वाली दाल की बड़ियाँ हैं। राब बाजरे से बना शीतकालीन पेय है जो शरीर को गर्माहट देता है।

15. (D)इसे ठीक से उगने के लिए अत्यधिक उपजाऊ मृदा और प्रचुर वर्षा की आवश्यकता होती है।
बाजरा राजस्थान की एक प्रमुख और पारंपरिक खाद्यान्न फसल है जो विशेष रूप से शुष्क मारवाड़ क्षेत्र में उगाई जाती है। इसे 'सोगरा' के रूप में मोटी रोटी बनाकर खाया जाता है। बाजरे की फसल को कम पानी और रेतीली मिट्टी की आवश्यकता होती है, इसलिए यह मरुस्थलीय क्षेत्रों के अनुकूल है। इसे अत्यधिक उपजाऊ मृदा और प्रचुर जल की आवश्यकता बिल्कुल नहीं होती।

16. (C) तीज
घेवर मैदा, घी और चाशनी से तैयार की जाने वाली राजस्थान की एक अत्यंत प्रसिद्ध पारंपरिक मिठाई है। इसका सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व श्रावण महीने में आने वाले 'तीज' के त्योहार से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। तीज पर नवविवाहित महिलाओं और बेटियों को सिंजारा भेजा जाता है जिसमें घेवर का होना अनिवार्य माना जाता है। यह उत्सवों में मिठास का प्रतीक माना जाता है।

17. (B) एक ही पूर्वज से जुड़ा एक विस्तृत पितृवंशीय परिवार
पारंपरिक राजस्थानी सामाजिक व्यवस्था में 'खानदान' शब्द एक विस्तृत परिवार या वंश को निरूपित करता है, जो एक ही पूर्वज से जुड़े होते हैं। यह एक ही पितृवंशीय रेखा के व्यक्तियों का समूह होता है जहाँ रिश्तेदारी और पारिवारिक संबंध अत्यंत मजबूत होते हैं। सामाजिक आयोजनों, विवाहों तथा अनुष्ठानों में खानदान की सामूहिक सहमति और प्रतिष्ठा अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

18. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
नाता प्रथा एक पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था है जिसमें महिला नए साथी के साथ बिना औपचारिक फेरों के रहती है। मोसर मृत्यु के पश्चात आयोजित होने वाला पारंपरिक मृत्यु भोज है। सगाई विवाह से पूर्व का औपचारिक वाग्दान समारोह है। आन वफादारी की शपथ या मर्यादा की प्रतिज्ञा को दर्शाती है। अतः दिए गए कूटों में P-3, Q-1, R-4 और S-2 का सही मिलान बनता है।

19. (A) बिना औपचारिक धार्मिक अनुष्ठानों के विधवा पुनर्विवाह
नाता प्रथा राजस्थान के कुछ ग्रामीण समुदायों में प्रचलित एक प्राचीन सामाजिक व्यवस्था है। इसके तहत विधवा या परित्यक्ता महिला को बिना विस्तृत और औपचारिक धार्मिक अनुष्ठानों के किसी नए पुरुष के साथ जीवनयापन करने की सामाजिक स्वीकृति मिलती है। इसमें नए साथी द्वारा हर्जाना राशि दी जाती है, जिससे बिना जटिलताओं के विधवा पुनर्विवाह की प्रक्रिया सुगम हो जाती है तथा स्वीकृति मिलती है।

20. (C) मौखिक परंपराओं और लोक ज्ञान के हस्तांतरण में कमी
राजस्थान में तीव्र शहरीकरण के कारण पारंपरिक संयुक्त परिवार तेजी से एकांकी परिवारों में बदल रहे हैं। संयुक्त परिवारों में बुजुर्गों से नई पीढ़ियों को मिलने वाली मौखिक गाथाएँ, लोककथाएँ और पारंपरिक लोक ज्ञान का पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण काफी कम हो गया है। इस विघटन से युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों और मौखिक ज्ञान से दूर हो रही है। यह एक प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव है।

21. (A) दूल्हे द्वारा तलवार से वधू के गृह-प्रवेश द्वार पर लगे लकड़ी के प्रतीक (तोरण) को छूना
तोरण मारना राजस्थानी विवाह में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतीकात्मक रस्म है। इस रस्म में जब दूल्हा बारात लेकर वधू के द्वार पर पहुँचता है, तो वह घोड़ी पर बैठे-बैठे ही अपनी तलवार या छड़ी से वधू के मुख्य प्रवेश द्वार पर लटके काष्ठ के तोरण

Downloaded from www.pdf.tube

को छूता है। ऐतिहासिक रूप से यह रस्म दूल्हे के शौर्य तथा गृह-प्रवेश का प्रतीक मानी जाती है।

22. (C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
राजस्थानी विवाह समारोहों में कई पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है। बिंदोली विवाह से पहले निकाली जाने वाली एक शोभायात्रा है जिसमें वर या वधू को सजाकर घुमाया जाता है। इसके विपरीत, सामेला वधू पक्ष द्वारा आने वाली बारात का किया जाने वाला औपचारिक स्वागत अनुष्ठान है। यह विदाई का अनुष्ठान नहीं है, अतः केवल पहला कथन ही सत्य है।

23. (B) विवाह के लिए मामा द्वारा अपनी बहन के परिवार को दिया जाने वाला पारंपरिक सहयोग
मायरा या भात भरना राजस्थानी विवाह परंपरा का एक अत्यंत भावुक और महत्वपूर्ण अंग है। इस रस्म में वधू या वर के मामा तथा उनका परिवार विवाह के अवसर पर अपनी बहन के घर आते हैं। वे अपनी बहन तथा परिवार के सदस्यों के लिए वस्त्र, आभूषण और उपहार लाते हैं। यह प्रथा आर्थिक सहयोग और भाई-बहन के रिश्ते का प्रतीक है।

24. (B) सगाई, पीठी, तोरण, फेरा
पारंपरिक राजस्थानी विवाह में अनुष्ठानों का एक निश्चित कालानुक्रमिक क्रम होता है। सर्वप्रथम 'सगाई' द्वारा सम्बन्ध तय किया जाता है। इसके पश्चात विवाह से पूर्व शरीर पर हल्दी और उबटन लगाने की 'पीठी' रस्म होती है। बारात आगमन पर द्वार पर 'तोरण' मारा जाता है, और अंत में मण्डप में सात 'फेरा' अनुष्ठान संपन्न किया जाता है। यह सही क्रम निरुपित करता है।

25. (D) लोक देवताओं से जुड़ा एक स्थानीय पुजारी और गायक/साधक
ग्रामीण राजस्थान में 'भोपा' लोक देवताओं जैसे पाबूजी और देवनारायणजी के पारंपरिक पुजारी, साधक और गायक होते हैं। भोपा लोक देवताओं के थान पर पूजा-अर्चना करते हैं तथा रावणहत्था या जंतर जैसे वाद्य यंत्रों के साथ फड़ का गायन करते हैं। वे ग्रामीण समाज में धार्मिक अनुष्ठान कराने और लोक मान्यताओं को पीढ़ियों तक पहुँचाने वाले माध्यम के रूप में कार्य करते हैं।

26. (A) अमृता देवी से जुड़ा खेजड़ली का ऐतिहासिक बलिदान
खेजड़ी राजस्थान का राज्य वृक्ष है और मरुस्थलीय लोक जीवन में इसका अत्यंत पूजनीय स्थान है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सर्वोच्च बलिदान वर्ष 1730 में जोधपुर के खेजड़ली गाँव में घटित हुआ था। बिश्नोई समाज की अमृता देवी के नेतृत्व में 363 लोगों ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपने प्राणों का बलिदान दिया था। यह घटना वृक्षों के प्रति अगाध श्रद्धा दर्शाती है।

27. (B) आधुनिक शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन के बाद राजस्थान से लोक अंधविश्वास पूरी तरह से समाप्त हो गए हैं।
ग्रामीण राजस्थान में शकुन, अपशकुन और लोक अंधविश्वास सदियों से सामाजिक जीवन का अंग रहे हैं। यात्रा पर निकलते समय जल भरा घड़ा देखना शुभ माना जाता है, तथा बुरी नजर से बचाव हेतु ताबीज पहना जाता है। आधुनिक शैक्षिक नीतियों और प्रसार के बावजूद, ये लोक अंधविश्वास समाज से पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। अतः पूर्ण समाप्ति का दावा गलत है।

28. (B) केवल II और III
ग्रामीण राजस्थान में 'देवरा' या 'थान' छोटे पूजा स्थल या चबूतरे होते हैं, जो स्थानीय लोक देवताओं और पूर्वजों को समर्पित होते हैं। ये भव्य संगमरमर के बहुमंजिला मंदिर नहीं होते, बल्कि अत्यंत साधारण संरचनाएँ होती हैं। यहाँ मन्नतें माँगी जाती हैं तथा स्थानीय पुजारियों द्वारा पारंपरिक अनुष्ठान किए जाते हैं। इसलिए केवल द्वितीय और तृतीय कथन ही पूर्णतः सत्य एवं सटीक हैं।

29. (A) राज्य की स्वागत भावना और आतिथ्य सत्कार
'पधारो म्हारे देस' राजस्थानी लोक संस्कृति का एक अत्यंत प्रसिद्ध वाक्य है जो राज्य की आतिथ्य सत्कार परंपरा को व्यक्त करता है। यह राजस्थान की अतिथि देवो भवः की भावना, सौहार्द और आगंतुकों का स्वागत करने की पारंपरिक मानसिकता को प्रदर्शित करता है। इसका उपयोग राज्य के स्वागत योग्य वातावरण और सांस्कृतिक मूल्यों को उजागर करने के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।

30. (C) मेजबान द्वारा मेहमानों को अधिक भोजन कराने के लिए स्नेहपूर्वक किया जाने वाला आग्रह
राजस्थानी आतिथ्य परंपरा में 'मनुहार' की अवधारणा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। जब कोई अतिथि भोजन हेतु आता है, तो मेजबान उसे केवल भोजन परोसता ही नहीं, बल्कि अत्यधिक प्रेम और आदर के साथ पुनः भोजन लेने का आग्रह करता है। इस स्नेहपूर्ण आग्रह को ही मनुहार कहते हैं। यह परंपरा अतिथि के प्रति सम्मान और स्नेह की भावना को दर्शाती है।

NODIA

31. (D) एक ऐसी सभा जहां आतिथ्य के प्रतीक के रूप में अफीम (अमल) औपचारिक रूप से परोसी जाती थी
मारवाड़ क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से प्रचलित 'रियाण' एक विशिष्ट सामाजिक सभा की परंपरा थी। इस परंपरा में गाँव के बुजुर्ग और अतिथि एकत्र होते थे। रियाण के दौरान आतिथ्य के प्रतीक के रूप में अफीम (अमल) को घोलकर औपचारिक रूप से परोसा जाता था। यह सभा आपसी संबंधों को सुदृढ़ करने और विचार-विमर्श करने का एक प्रमुख जरिया मानी जाती थी।

32. (C) अतिथि के प्रति उच्च आदर व्यक्त करना और उन्हें सम्मान प्रदान करना
पारंपरिक राजस्थानी आतिथ्य में आने वाले अतिथि को 'साफा' पहनाना सम्मान की सर्वोच्च अभिव्यक्ति माना जाता है। साफा संस्कृति में प्रतिष्ठा, स्वाभिमान और गौरव का प्रतीक है। जब किसी आगंतुक को साफा पहनाया जाता है, तो इसका मूल उद्देश्य उसे समाज में उच्च दर्जा देना तथा उसके प्रति अपनी श्रद्धा एवं आदर की भावना को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना होता है।

33. (B) लंगा और मांगणियार - लोक संगीत और गायन
राजस्थान की पारंपरिक समाज व्यवस्था में विभिन्न जातियों के अपने व्यवसाय निर्धारित थे। लंगा और मांगणियार समुदाय

का आविष्कार और लोकप्रिय बनाकर

(C) साहित्यिक रुप में राजस्थानी लोक कथाओं का संकलन और पुनः वर्णन करके

(D) एक अलग जनजातीय राज्य की स्थापना की मांग को लेकर बड़े राजनीतिक आंदोलनों का नेतृत्व करके

79. 'भारतीय लोक कला मण्डल', जो राजस्थान की लोक कलाओं, कठपुतली और संस्कृति के अनुसंधान, संरक्षण और संवर्धन में अपने अग्रणी कार्य के लिए प्रसिद्ध संस्थान है, कहाँ स्थित है?

(A) जयपुर

(B) बीकानेर

(C) अजमेर

(D) उदयपुर

80. जयपुर में 'जवाहर कला केंद्र' (JKK) मुख्य रुप से किस रुप में कार्य करता है?

(A) अंतरराष्ट्रीय पुरावशेष तस्करों को हिरासत में लेने के लिए विशेष रुप से स्थापित एक उच्च सुरक्षा वाली राज्य जेल

(B) राज्य पुलिस बल के सांस्कृतिक प्रभाग की सभी गतिविधियों का प्रबंधन करने वाला मुख्य प्रशासनिक मुख्यालय

(C) एक आधुनिक स्थान में प्रदर्शन कलाओं, दृश्य कलाओं और शिल्पों को बढ़ावा देने वाला एक केंद्रीय केंद्र

(D) उपचार के लिए केवल पारंपरिक स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली का उपयोग करने वाला एक विशेष राज्य अस्पताल

81. राजस्थानी लोक नाट्य के संदर्भ में, 'ख्याल' क्या है?

(A) बिना किसी वाद्य यंत्र का उपयोग किए निष्पादित एक मूक अभिनय प्रदर्शन

(B) पौराणिक कथाओं, इतिहास और सामाजिक विषयों को मिलाने वाला एक पारंपरिक संगीतमय लोक नाट्य

(C) युद्धों के दौरान केवल प्रशिक्षित राजपूत योद्धाओं द्वारा प्रदर्शित किया जाने वाला पारंपरिक युद्ध कला का एक विशिष्ट रुप

(D) प्राचीन राजाओं के राजदरबारों में प्रस्तुत किया जाने वाला अभिजात संस्कृत नाटक का एक शास्त्रीय रुप

82. एक विशिष्ट विशेषता और उससे संबंधित पारंपरिक राजस्थानी लोक प्रदर्शन के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।

(A) पृष्ठ-प्रकाशित सफेद पर्दे के पीछे नाजुक छाया कठपुतलियों का उपयोग करके पौराणिक लोक कहानियों को सुनाना - रम्मत

(B) जीवन के आकार की जोडदार लकड़ी की गुड़ियों का उपयोग करके विशेष रुप से रामायण की महाकाव्य कथाओं का प्रदर्शन करना - तेरह ताली

(C) गर्म अंगारों पर नंगे पैर चलते हुए संत कबीर के गहरे दार्शनिक भक्ति पदों को गाना - ख्याल

(D) तलवार की धार पर खड़े होकर सिर पर पीतल के मटकों को संतुलित करना - भवाई

83. राजस्थान की 'तमाशा' लोक नाट्य परंपरा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(A) यह पूरी तरह से थार मरुस्थल की स्वदेशी कला थी और बाद में मराठा साम्राज्य को निर्यात की गई थी।

(B) यह मुख्य रुप से जयपुर क्षेत्र में लोकप्रिय है।

(C) यह शास्त्रीय संगीत, कविता और अभिनय के तत्वों का सम्मिश्रण है।

(D) इसे सवाई प्रताप सिंह के शासनकाल में जयपुर के राजदरबार से ऐतिहासिक रुप से महत्वपूर्ण संरक्षण मिला था।

84. एक भोपा द्वारा पारंपरिक 'फड़ वाचन' (चित्रपट पठन) प्रदर्शन के विशिष्ट प्रक्रियात्मक क्रम का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व निम्नलिखित में से कौन करता है?

(A) गोधूलि बेला में पाठ का समापन, फड़ को खोलना, मौन ध्यान, और भोर में फड़ को नष्ट करना।

(B) महाकाव्य का गायन, देवता का शुद्धिकरण, फड़ को खोलना, और तुरंत उसमें आग लगा देना।

(C) गोधूलि बेला में फड़ को स्थापित करना, देवता का शुद्धिकरण/आवाहन, वाद्य यंत्र के साथ महाकाव्य का गायन, और भोर में पाठ का समापन।

(D) भोर में देवता का आह्वान, दोपहर में फड़ स्थापित करना, मौन पठन, और गोधूलि बेला में समापन।

85. राजस्थान में कला का एक पारंपरिक रुप 'मांडणा', मूल रुप से निम्नलिखित में से किस प्रतीकात्मक उद्देश्य को पूरा करता है?

(A) त्योहारों के दौरान खड़िया (चौक) और गेरु का उपयोग करके बनाया गया एक शुभ फर्श/दीवार चित्र

(B) बहादुर योद्धाओं की भुजाओं पर ऐतिहासिक पूर्वजों के नामों को स्थायी रुप से गोदने की एक जटिल पारंपरिक विधि

(C) लकड़ी के मंदिर के दरवाजों पर सीधे जटिल धार्मिक प्रतीकों को हाथ से तराशने की पवित्र शिल्प कौशल प्रक्रिया

(D) ऊंट के बालों के भारी कंबलों में विशेष रुप से उपयोग किया जाने वाला प्राचीन ज्यामितीय वस्त्र बुनाई प्रारुप का एक विशिष्ट प्रकार

86. जयपुर की प्रसिद्ध 'ब्लू पॉटरी' पक्षियों, फूलों और जानवरों सहित प्रकृति से प्रेरित रुपांकनों पर अत्यधिक निर्भर करती है। अपनी मूलभूत सामग्री संरचना के संबंध में ब्लू पॉटरी को राजस्थान में पारंपरिक ग्रामीण टेराकोटा मिट्टी के बर्तनों से क्या अलग करता है?

(A) यह केवल उपजाऊ लूनी नदी बेसिन से प्राप्त उच्च श्रेणी की प्राकृतिक नदी किनारे की मिट्टी का उपयोग करती है।

(B) यह स्थानीय लाल मिट्टी के साथ पूरी तरह से मिश्रित विशुद्ध रुप से परिष्कृत चांदी की राख के विशेष मिश्रण का उपयोग करती है।

(C) यह महीन पिसे हुए संगमरमर की धूल का उपयोग करती है जिसे बिना किसी ताप या पकाने की प्रक्रियाओं के

Click Here to Buy book on Flipkart

के लोग श्रेष्ठ धनुर्धर तथा वनों के संरक्षक माने जाते थे, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान निर्मित एवं सुदृढ़ हुई है।

45. (A) हेलरु
राजस्थान की गरासिया जनजाति में सामूहिक सहयोग और आपसी सहायता की एक अनूठी संस्था है जिसे 'हेलारु' कहा जाता है। इसके माध्यम से गाँव के लोग कृषि कार्यों, मकान बनाने या सामाजिक अवसरों पर एक-दूसरे का हाथ बटाते हैं। यह संस्था बिना किसी आर्थिक लेन-देन के सहकारिता की भावना से कार्य करती है और सामाजिक ताने-बाने को काफी मजबूत करती है।

46. (C) जमींदार मीणा और चौकीदार मीणा
राजस्थान में मीणा जनजाति ऐतिहासिक रूप से दो प्रमुख सामाजिक-व्यावसायिक वर्गों में विभाजित है: जमींदार मीणा और चौकीदार मीणा। जमींदार मीणा मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन का कार्य करते थे। जबकि चौकीदार मीणा वे थे जिन्हें किलों और गांवों की सुरक्षा एवं चौकीदारी का दायित्व सौंपा गया था। ये दोनों विभाजन उनके पारंपरिक व्यवसायों को स्पष्ट रूप से निरूपित करते हैं।

47. (D) गरासिया संस्कृति में वधू मूल्य (दापा) देने की प्रथा पूरी तरह से अनुपस्थित है और सख्ती से प्रतिबंधित है।
गरासिया जनजाति में विवाह के कई रूप प्रचलित हैं, जैसे मोर बांधिया और भागकर विवाह। माउंट आबू का नक्की झील मेला जीवनसाथी चुनने का प्रमुख अवसर होता है। गरासिया समाज में वर पक्ष द्वारा वधू के पिता को 'दापा' (वधू मूल्य) देने की सामाजिक परंपरा अनिवार्य रूप से विद्यमान है। अतः दापा प्रथा को अनुपस्थित बताना पूरी तरह असत्य कथन है।

48. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
राजस्थान की जनजातियों का विशिष्ट भौगोलिक तथा सांस्कृतिक संबंध है। सहरिया जनजाति बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज में निवास करती है। गरासिया जनजाति नक्की झील से जुड़ी है। भील डूंगरपुर के बेणेश्वर मेले से जुड़े हैं। तथा मीणा जनजाति मत्स्य अवतार से अपना संबंध मानती है। अतः P-2, Q-1, R-4 और S-3 का सुमेल बिल्कुल सही उत्तर प्रदान करता है।

49. (B) जी.ए. ग्रियर्सन
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में प्रसिद्ध भाषाविद जॉर्ज एब्राहम ग्रियर्सन ने भारत की बोलियों का वैज्ञानिक अध्ययन किया। उन्होंने अपने ग्रंथ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में राजस्थानी बोलियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। ग्रियर्सन ने ही पहली बार इस क्षेत्र की बोलियों के समूह के लिए 'राजस्थानी' शब्द का प्रयोग कर इसे स्वतंत्र पहचान प्रदान करने का ऐतिहासिक कार्य किया था।

50. (D) वागड़ी - डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र
राजस्थान में बोलियों का वितरण भौगोलिक क्षेत्रों से संबद्ध है। वागड़ी बोली मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के वागड़ क्षेत्र, यानी डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में बोली जाती है। इस बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। मेवाती अलवर में तथा ढूंढाड़ी जयपुर क्षेत्र में बोली जाती है, अतः वागड़ी का डूंगरपुर-बांसवाड़ा से युग्म पूर्णतः सही एवं सटीक सुमेलित है।

51. (A) मारवाड़ी और साहित्यिक शैली के मिश्रण वाली पश्चिमी राजस्थान की एक काव्य शैली
'डिंगल' पश्चिमी राजस्थान की एक प्रमुख ऐतिहासिक काव्य शैली है, जो मारवाड़ी के साहित्यिक रूप का मिश्रण है। इसका उपयोग मध्यकालीन कवियों द्वारा राजाओं की वीरगाथाओं और युद्धों का सजीव वर्णन करने हेतु किया जाता था। डिंगल शैली में वीर रस की प्रधानता होती है तथा यह राजस्थानी की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध बनाती आई है।

52. (C) मानक हिंदी के कारण स्थानीय राजस्थानी बोलियों की शब्दावली और दैनिक उपयोग का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है।
आधुनिक शिक्षा प्रणाली और प्रशासनिक कार्यों में मानक हिंदी के बढ़ते प्रयोग के कारण राजस्थान की स्थानीय बोलियों के समक्ष चुनौती उत्पन्न हुई है। मानक हिंदी के व्यापक उपयोग से मारवाड़ी, मेवाड़ी जैसी बोलियों की पारंपरिक शब्दावली और दैनिक प्रयोग में धीरे-धीरे कमी आ रही है। यह बदलाव स्थानीय बोलियों के संरक्षण हेतु चिंताजनक स्थिति उत्पन्न करता प्रतीत होता है।

53. (C) केवल I और III
राजस्थान में पारंपरिक खेल ग्रामीण जीवन का महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। 'सितोलिया' सात पत्थरों और गेंद का प्रयोग करके खेला जाने वाला खेल है। 'गिल्ली डंडा' विभिन्न आकार की दो लकड़ियों से खेला जाता है। चौपड़ कुश्ती का खेल नहीं, बल्कि एक पारंपरिक इनडोर बोर्ड गेम है। अतः प्रथम और तृतीय कथन सत्य हैं, जबकि द्वितीय कथन असत्य है।

54. (D) चौपड़
'चौपड़' राजस्थान का एक प्राचीन पारंपरिक बोर्ड गेम है, जिसे राजाओं और आम लोगों दोनों द्वारा खेला जाता रहा है। इसमें क्रॉस के आकार के कपड़े के बोर्ड और कौड़ियों का उपयोग किया जाता है। खिलाड़ी पासों की मदद से अपनी गोटियों को आगे बढ़ाते हैं। यह खेल प्राचीन काल से मनोरंजन तथा बौद्धिक क्षमता बढ़ाने का माध्यम माना जाता रहा है।

55. (B) रुमाल झपट्टा
'रुमाल झपट्टा' ग्रामीण राजस्थान में बच्चों का एक अत्यंत लोकप्रिय टीम-आधारित पारंपरिक खेल है। इस खेल में एक कपड़े या रुमाल का उपयोग किया जाता है जिसे मैदान के बीच में रखा जाता है। दोनों टीमों के खिलाड़ी विरोधी से बचकर उस कपड़े को झपटने की कोशिश करते हैं। यह खेल बच्चों में फुर्ती, एकाग्रता और गतिशीलता को बढ़ावा देता है।

56. (C) जिम्नास्टिक
कंचे, सितोलिया और गिल्ली डंडा राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में अनौपचारिक रूप से खेले जाने वाले पारंपरिक खेल हैं। इनमें स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया जाता है। इसके विपरीत, जिम्नास्टिक एक अंतरराष्ट्रीय और औपचारिक आधुनिक खेल है

Downloaded from www.pdf.tube

80. (C) एक आधुनिक स्थान में प्रदर्शन कलाओं, दृश्य कलाओं और शिल्पों को बढ़ावा देने वाला एक केंद्रीय केंद्र
'जवाहर कला केंद्र' जयपुर में स्थित एक प्रमुख सांस्कृतिक संस्थान है। यह प्रदर्शन कलाओं, दृश्य कलाओं, नाटक और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने वाले एक आधुनिक केंद्र के रूप में कार्य करता है। प्रसिद्ध वास्तुकार द्वारा निर्मित यह केंद्र कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने हेतु उत्कृष्ट वातावरण तथा आधुनिक मंच निरंतर प्रदान करता है।

81. (B) पौराणिक कथाओं, इतिहास और सामाजिक विषयों को मिलाने वाला एक पारंपरिक संगीतमय लोक नाट्य
'ख्याल' राजस्थानी लोक नाट्य का एक पारंपरिक संगीतमय रूप है। इसमें पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों को गीतों, संगीत तथा अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। राज्य में कुचामनी, शेखावाटी और हेला ख्याल जैसी कई क्षेत्रीय शैलियाँ प्रसिद्ध हैं। यह लोक मनोरंजन तथा सांस्कृतिक चेतना के प्रसार का एक सशक्त पारंपरिक माध्यम लंबे समय से रहा है।

82. (D) तलवार की धार पर खड़े होकर सिर पर पीतल के मटकों को संतुलित करना - भवाई
'भवाई' राजस्थान का एक प्रसिद्ध और रोमांचक व्यावसायिक लोक नृत्य है। इस नृत्य में कलाकार सिर पर अनेक पीतल के मटकों को संतुलित करते हैं तथा तलवार की धार या काँच के टुकड़ों पर नंगे पैर खड़े होकर अद्भुत संतुलन का प्रदर्शन करते हैं। अतः तलवार की धार पर मटके संतुलित करने का संबंध भवाई नृत्य से बिल्कुल सही एवं सटीक है।

83. (A) यह पूरी तरह से थार मरुस्थल की स्वदेशी कला थी और बाद में मराठा साम्राज्य को निर्यात की गई थी।
राजस्थान की 'तमाशा' लोक नाट्य परंपरा मुख्य रूप से जयपुर क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इसे महाराजा सवाई प्रताप सिंह का ऐतिहासिक संरक्षण प्राप्त हुआ। इसमें शास्त्रीय संगीत और अभिनय का मिश्रण होता है। यह थार मरुस्थल की मूल स्वदेशी कला नहीं थी, अतः इसे मरुस्थल की स्वदेशी कला बताना पूरी तरह असत्य एवं गलत कथन निरूपित होता है।

84. (C) गोधूलि बेला में फड़ को स्थापित करना, देवता का शुद्धिकरण/आवाहन, वाद्य यंत्र के साथ महाकाव्य का गायन, और भोर में पाठ का समापन।
भोपा द्वारा 'फड़ वाचन' प्रदर्शन का एक विशिष्ट धार्मिक क्रम होता है। सर्वप्रथम गोधूलि बेला में फड़ को स्थापित किया जाता है। इसके बाद पवित्रता हेतु देवता का आह्वान एवं पूजन होता है। तत्पश्चात रावणहत्था जैसे वाद्य यंत्रों के साथ रात भर गाथा का गायन किया जाता है। अंततः भोर के समय इस पाठ का विधिवत समापन किया जाता है।

85. (A) त्योहारों के दौरान खड़िया (चौक) और गेरू का उपयोग करके बनाया गया एक शुभ फर्श/दीवार चित्र
'मांडणा' राजस्थान की एक अत्यंत प्राचीन और शुभ लोक चित्रकला परंपरा है। इसमें त्योहारों और उत्सवों के अवसर पर घर के आँगन तथा दीवारों पर खड़िया और गेरू की सहायता से सुंदर आकृतियाँ बनाई जाती हैं। यह आलेखन घर में शुभता, समृद्धि और पवित्रता लाने के प्रतीकात्मक उद्देश्य से किया जाता है। यह राजस्थानी लोक कला की सुंदर पहचान मानी जाती है।

86. (D) यह चिकनी मिट्टी के बजाय पिसे हुए क्वार्ट्ज़, कांच, मुल्तानी मिट्टी और बोरेक्स का उपयोग करती है।
जयपुर की 'ब्लू पॉटरी' अपनी विशिष्ट सामग्री के कारण पारंपरिक ग्रामीण टेराकोटा बर्तनों से अलग है। साधारण मिट्टी के बर्तनों के विपरीत, इसमें चिकनी मिट्टी का उपयोग नहीं होता। ब्लू पॉटरी बनाने में पिसे हुए क्वार्ट्ज़, काँच, मुल्तानी मिट्टी और बोरेक्स के मिश्रण का प्रयोग किया जाता है। यह विशिष्टता इसे एक अद्वितीय हस्तशिल्प का दर्जा दिलाती है।

87. (B) कहानियों से चित्रित एक सुवाह्य (चल) बहु-किवाड़ी लकड़ी का ढांचा/पेटी, जिसका उपयोग कहानीकारों द्वारा किया जाता है
'कावड़' राजस्थान की एक अनूठी पारंपरिक काष्ठ कला है। यह लकड़ी से निर्मित एक सुवाह्य (चल) बहु-किवाड़ी मंदिरनुमा ढांचा होता है, जिसके कपाटों पर धार्मिक चित्र बने होते हैं। कहानीकार (कावड़िया भाट) इन किवाड़ों को खोलते हुए लोक कथाओं का वाचन करते हैं। यह कला धार्मिक आख्यानों को जन-जन तक पहुँचाने का एक अत्यंत सुंदर माध्यम है।

NODIA

88. (A) केवल I, II और IV
राजस्थान के शिल्पों में पिछवाई श्रीनाथजी के कृष्ण चित्रों से जुड़ी है। मोलेला टेराकोटा में देवनारायणजी जैसे देवताओं के फलक बनते हैं। उस्ता कला ऊंट की खाल पर की जाने वाली मीनाकारी है। थेवा कला में भी धार्मिक प्रतीकों का भरपूर उपयोग होता है, अतः इसे धर्मनिरपेक्ष बताना गलत है। इसलिए केवल I, II और IV कथन ही पूर्णतः सही एवं सटीक हैं।

89. (D) रावणहत्था
राजस्थान की मौखिक परंपरा में 'पाबूजी की फड़' का वाचन भोपा समुदाय द्वारा किया जाता है। इस फड़ के गायन के दौरान प्राथमिक वाद्य यंत्र के रूप में 'रावणहत्था' का प्रयोग किया जाता है। रावणहत्था एक प्राचीन तारवाला (तंतुक) वाद्य यंत्र है। इसकी मधुर धुन फड़ के लोक आख्यानों को जीवंत और प्रभावकारी बनाने में मुख्य भूमिका निरंतर निभाती है।

90. (C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
'बगड़ावत' गुर्जर समुदाय का एक महान मौखिक महाकाव्य है जो सांस्कृतिक चेतना को पीढ़ियों तक पहुँचाता है। परंतु यह मानना असत्य है कि मौखिक परंपराएँ स्थिर होती हैं; लोक गायक दर्शकों और समय के अनुसार प्रस्तुति में सामयिक परिवर्तन करते रहते हैं। अतः प्रथम कथन सही है और द्वितीय कथन पूरी तरह से असत्य तथा गलत है।

91. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान की लोक गाथाओं का विशेष सामाजिक और क्षेत्रीय महत्व है। पाबूजी की फड़ रेबारी समुदाय से जुड़ी है। देवनारायण जी की फड़ गुर्जर समाज से संबंधित है। ढोला मारु

शैली का बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसकी व्यापारिक और सांस्कृतिक बनावट इसे वैश्विक पहचान दिलाती आई है।

69. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में सांस्कृतिक पर्यटन ने लोक कलाओं को आर्थिक संबल दिया है, लेकिन इसके साथ ही बाजारीकरण भी बढ़ा है। पर्यटकों की माँग पूरी करने के लिए कारीगर अपने पारंपरिक डिजाइनों और प्रतीकों में परिवर्तन कर रहे हैं। इससे कला की मूल सांस्कृतिक प्रामाणिकता पर प्रभाव पड़ रहा है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण सही स्पष्टीकरण है।

70. (D) जैसलमेर
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध 'मरु महोत्सव' प्रतिवर्ष जैसलमेर जिले में आयोजित किया जाता है। थार मरुस्थल के सम के टीलों पर आयोजित होने वाले इस उत्सव में पगड़ी बांधने की प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ तथा लोक संगीत का प्रदर्शन होता है। यह आयोजन राजस्थानी संस्कृति और मरुस्थलीय जीवन शैली को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करने का कार्य सफलतापूर्वक करता है।

71. (B) पर्यटन को बढ़ावा देना, लोक कलाकारों का समर्थन करना और स्थानीय हस्तशिल्प अर्थव्यवस्था को बनाए रखना
राजस्थान में मारवाड़ महोत्सव और पुष्कर मेले जैसे राज्य प्रायोजित उत्सवों की प्राथमिक सामाजिक-आर्थिक भूमिका पर्यटन को गति देना है। ये आयोजन स्थानीय लोक कलाकारों और हस्तशिल्पकारियों को रोजगार तथा बाज़ार उपलब्ध कराते हैं। इससे पारंपरिक कलाओं का संरक्षण होता है तथा स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। अतः पर्यटन और कला का समर्थन ही मुख्य सामाजिक उद्देश्य है।

72. (C) पर्यटकों के आगमन ने मरुस्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों पर पड़ने वाले नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
राजस्थान में पर्यटन से विरासत संरक्षण और स्थानीय रोजगार को सहायता मिलती है। यह सांस्कृतिक गौरव को भी बढ़ावा देता है। परंतु यह दावा पूरी तरह असत्य है कि पर्यटकों के आगमन ने पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को समाप्त कर दिया है। अत्यधिक पर्यटन से मरुस्थलीय पारिस्थितिकी पर विपरीत प्रभाव पड़ा है, अतः C गलत कथन निरुपित है।

73. (D) वैश्वीकृत आधुनिक मीडिया जिसके कारण पारंपरिक जीवन शैली से दूर आकांक्षात्मक बदलाव हो रहा है
आधुनिक युग में राजस्थान की पारंपरिक संस्कृति के संरक्षण हेतु सबसे बड़ी चुनौती वैश्वीकरण और आधुनिक मीडिया का प्रभाव है। डिजिटल माध्यमों के कारण युवा पीढ़ी अपनी स्थानीय बोलियों, पारंपरिक कलाओं और रीति-रिवाजों से दूर हो रही है। युवाओं का झुकाव आधुनिक आकांक्षात्मक जीवन शैली की ओर बढ़ रहा है, जिससे लोक संस्कृति के संरक्षण पर गहरा संकट उत्पन्न हो रहा है।

74. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
पारंपरिक राजस्थानी कलाओं के सामने आधुनिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। हस्त-ठप्पा छपाई को सस्ते रासायनिक रंगों से चुनौती मिल रही है। कठपुतली कला आधुनिक मनोरंजन से पिछड़ रही है। फड़ वाचन मौखिक परंपराओं के ह्रास से प्रभावित है। मृद्भांड का स्थान प्लास्टिक बर्तनों ने लिया है। अतः P-3, Q-1, R-2 और S-4 का मिलान पूरी तरह सही उत्तर स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

75. (C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
ग्रामीण राजस्थान से रोजगार हेतु शहरों में पलायन के कारण पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हो रहा है। परंतु, शहरों में जाने वाली युवा पीढ़ी वंशानुगत जाति-आधारित व्यवसायों का कड़ाई से पालन नहीं करती, बल्कि नए आधुनिक क्षेत्रों में काम ढूंढती है। अतः कथन I पूरी तरह सत्य है और कथन II पूरी तरह से असत्य तथा गलत है।

76. (B) युवाओं को वैश्विक रुझानों से अवगत कराने के साथ-साथ, यह लोक कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने के लिए एक मंच प्रदान करता है।
आधुनिक संचार माध्यम राजस्थानी लोक संस्कृति के लिए एक दोहरी भूमिका का निर्वहन करते हैं। एक ओर ये युवाओं को वैश्वीकृत संस्कृति से जोड़ते हैं, वहीं दूसरी ओर ये स्थानीय लोक कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचने हेतु नया मंच उपलब्ध कराते हैं। इससे पारंपरिक कलाओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान और विस्तार प्राप्त हो रहा है।

77. (D) I, II और III
'रुपायन संस्थान' राजस्थानी लोक साहित्य, कला और मौखिक परंपराओं के संरक्षण हेतु एक अंतरराष्ट्रीय संस्थान है। इसकी स्थापना कोमल कोठारी और विजयदान देथा द्वारा की गई थी। यह संस्थान जोधपुर जिले के बोरुंदा गाँव में स्थित है। अतः दिए गए तीनों कथन I, II और III पूरी तरह से सही तथा ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

78. (C) साहित्यिक रुप में राजस्थानी लोक कथाओं का संकलन और पुनः वर्णन करके
विजयदान देथा ('बिज्जी') राजस्थानी साहित्य के एक महान मूर्धन्य लेखक थे। उन्होंने राजस्थान की मौखिक लोक कथाओं का गहन संकलन किया और उन्हें 'बातां री फुलवारी' जैसी कृतियों के माध्यम से साहित्यिक रुप में लिपिबद्ध किया। उनके इस अमूल्य कार्य ने राज्य की मौखिक सांस्कृतिक धरोहर को हमेशा के लिए अमर और संरक्षित बना दिया है।

79. (D) उदयपुर
'भारतीय लोक कला मण्डल' उदयपुर शहर में स्थित एक अग्रणी सांस्कृतिक संस्थान है। इसकी स्थापना देवीलाल सामर द्वारा की गई थी। यह संस्थान राजस्थान की लोक कलाओं, लोक नृत्यों और विशेषकर कठपुतली कला के अनुसंधान, संरक्षण और संवर्धन में अग्रणी भूमिका निभाता आ रहा है। यह उदयपुर का एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक केंद्र माना जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

जिसके अपने कड़े नियम तथा वैश्विक प्रतियोगिताएँ होती हैं। अतः दिए गए विकल्पों में जिम्नास्टिक एक असंगत विकल्प के रूप में स्पष्ट उभरता है।

57. (D) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
राजस्थान का पारंपरिक पंचांग हिंदू विक्रम संवत प्रणाली का अनुसरण करता है। इस पंचांग के अनुसार नए वर्ष (नव संवत्सर) की आधिकारिक शुरुआत चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) तिथि को होती है। इस दिन से वसंत नवरात्र भी प्रारंभ होते हैं। राज्य भर में इस दिन को नए साल के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

58. (A) यह एक शुभ 'अबूझ सावा' का दिन है जिसमें बड़ी संख्या में विवाह संपन्न होते हैं।
'आखा तीज' वैशाख शुक्ल तृतीया को मनाया जाने वाला राजस्थान का एक अत्यंत पवित्र त्योहार है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे 'अबूझ सावा' माना जाता है, जिसका अर्थ है कि इस दिन बिना मुहूर्त निकाले कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है। इस दिन राज्य भर में बड़ी संख्या में विवाह संपन्न कराए जाते हैं तथा कृषि कार्य आरंभ होते हैं।

59. (B) दीपावली - वैशाख
राजस्थान के त्योहार हिंदू पंचांग की विशिष्ट तिथियों पर मनाए जाते हैं। छोटी तीज श्रावण मास में, गणगौर चैत्र मास में तथा होली फाल्गुन मास में आती है। इसके विपरीत, दीपावली का त्योहार वैशाख में नहीं, बल्कि कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है। अतः दीपावली का वैशाख से संबंध दर्शाने वाला युग्म पूरी तरह असत्य एवं गलत सुमेलित है।

60. (B) मानसून का आगमन, पेड़ों पर झूले और हरियाली का उत्सव
राजस्थानी सांस्कृतिक पंचांग में 'श्रावण' का महीना वर्षा ऋतु और प्रकृति के पुनर्जीवन से जुड़ा हुआ है। मरुस्थलीय भूमि पर मानसून के आगमन के साथ ही चारों तरफ हरियाली छा जाती है। इस महीने में पेड़ों पर झूले डाले जाते हैं तथा तीज जैसा प्रमुख हरियाली उत्सव मनाया जाता है। यह समय लोक जीवन में उमंग और उल्लास लेकर आता है।

61. (A) राजस्थान स्मारक, अवशेष एवं पुरातत्व अधिनियम
राजस्थान सरकार ने राज्य की ऐतिहासिक विरासत और पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण हेतु कानूनी ढाँचा बनाया है। इसके तहत 'राजस्थान स्मारक, अवशेष एवं पुरातत्व अधिनियम' लागू किया गया है। यह अधिनियम प्राचीन इमारतों को क्षति पहुँचाने से रोकता है तथा उनके वैज्ञानिक रखरखाव एवं जीर्णोद्धार के लिए कानूनी अधिकार प्रदान करता है। यह राज्य की अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखता है।

62. (A) केवल I, II और IV
राजस्थान सरकार की नीतियों में हवेलियों को हेरिटेज होटल में बदलना शामिल है। लोक कलाकारों हेतु प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जा रही हैं तथा पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण हो रहा है। परंतु, धरोहर प्राधिकरण कंक्रीट के नए स्मारक बनाने पर ध्यान केंद्रित नहीं करता, बल्कि पुरानी इमारतों को संरक्षित करता है। अतः कथन I, II और IV सही हैं, जबकि III असत्य है।

63. (D) पुरानी हवेलियों के वास्तुशिल्प को संरक्षित रखते हुए उन्हें होटलों या संग्रहालयों के रूप में पुनः उपयोग में लाना
विरासत संरक्षण में 'अनुकूलनशील पुनरुप्रयोग' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पुरानी ऐतिहासिक हवेलियों और महलों के वास्तुशिल्प को सुरक्षित रखा जाता है। संरचना को नुकसान पहुँचाए बिना उन्हें हेरिटेज होटलों या संग्रहालयों के रूप में पुनः उपयोग में लाया जाता है। इससे ऐतिहासिक धरोहरों का रखरखाव भी होता है और पर्यटन को बढ़ावा भी सुचारु रूप से मिलता है।

64. (C) पैलेस ऑन व्हील्स
राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित 'पैलेस ऑन व्हील्स' एक प्रसिद्ध शाही पर्यटक ट्रेन है। यह ट्रेन पर्यटकों को राजस्थान के ऐतिहासिक किलों, महलों और सांस्कृतिक स्थलों की यात्रा कराती है। इसकी आंतरिक सजावट और सेवाएँ राजस्थान के पूर्व शाही राजवंशों की जीवन शैली, आतिथ्य और सांस्कृतिक वैभव का सजीव प्रतिनिधित्व करती हैं। यह पर्यटन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देती है।

65. (A) I, III, IV, II
राजस्थान के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित है: सर्वप्रथम 1985 में केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान शामिल हुआ। इसके बाद 2010 में जंतर मंतर शामिल किया गया। तत्पश्चात 2013 में राजस्थान के छह पहाड़ी किलों को स्थान मिला। तथा अंत में 2019 में जयपुर शहर शामिल हुआ। अतः क्रम I, III, IV, II बिल्कुल सही और सटीक उत्तर है।

66. (D) मेहरानगढ़ दुर्ग
2013 में यूनेस्को ने "राजस्थान के पहाड़ी किले" के तहत राज्य के छह किलों को विश्व धरोहर घोषित किया। इनमें चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर और जैसलमेर शामिल हैं। जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग इस विशिष्ट यूनेस्को सूची का हिस्सा नहीं है। अतः मेहरानगढ़ इस समूह से बाहर है तथा सही उत्तर के रूप में पहचाना जाता है।

67. (A) कालबेलिया गीत और नृत्य
राजस्थान के कालबेलिया समुदाय के 'कालबेलिया गीत एवं नृत्य' को वर्ष 2010 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया था। यह नृत्य सपेरा समुदाय की अनूठी अभिव्यक्ति है जिसमें नर्तकियाँ बीन और डफ की धुन पर लयात्मक तथा तीव्र शारीरिक गति के साथ प्रदर्शन करती हैं। यह राज्य की गौरवशाली लोक कला का प्रतीक है।

68. (C) इसकी जालनुमा (चौपड़ शैली) नगर योजना और समन्वयात्मक स्थापत्य शैली
जयपुर के ऐतिहासिक परकोटा शहर को 2019 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिया गया। इसका मुख्य कारण इसकी अनूठी चौपड़ शैली पर आधारित ग्रिड नगर योजना है। यह शहर प्राचीन भारतीय नगर नियोजन और समन्वयात्मक स्थापत्य

NODIA

मारवाड़ की प्रेम कथा है। तथा निहालदे मेवात क्षेत्र की प्रसिद्ध गाथा है। अतः P-3, Q-1, R-2 और S-4 का मिलान पूरी तरह सही उत्तर निरूपित करता प्रतीत होता है।

92. (B) मौखिक इतिहास वंचित/हाशिए के जातियों, जनजातियों और ग्रामीण आबादी को आवाज देता है।
ऐतिहासिक दरबारी अभिलेख मुख्य रूप से शासकों और युद्धों का ही विवरण देते हैं। इसके विपरीत, मौखिक इतिहास समाज के वंचित वर्गों, जनजातियों और ग्रामीण आबादी के अनुभवों तथा लोक जीवन को अभिव्यक्ति देता है। यह इतिहास के उन पहलुओं को सामने लाता है जो लिखित दस्तावेजों में छूट गए थे। इसलिए इसका संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

93. (A) उदयपुर
'राजस्थान साहित्य अकादमी' राज्य में साहित्य के प्रचार-प्रसार और संवर्धन हेतु सर्वोच्च संस्था है। इस संस्था का मुख्यालय उदयपुर शहर में स्थित है। यह अकादमी साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने हेतु मीरा पुरस्कार प्रदान करती है तथा साहित्यिक पत्रिकाओं का निरंतर प्रकाशन करती है। इसकी गतिविधियाँ राजस्थानी भाषा और साहित्य के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान निरंतर देती आ रही हैं।

94. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के पश्चात देशी रियासतों के उन्मूलन से कलाकारों को मिलने वाला पारंपरिक शाही संरक्षण समाप्त हो गया था। इस शून्यता को दूर करने हेतु राज्य में सरकारी सांस्कृतिक अकादमियों की स्थापना की गई जो अब कलाओं को संस्थागत संरक्षण दे रही हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण अभिकथन की सही व्याख्या प्रस्तुत करता प्रतीत होता है।

95. (D) जोधपुर
'राजस्थान संगीत नाटक अकादमी' राज्य में संगीत, नृत्य और नाट्य कलाओं को बढ़ावा देने वाली शीर्ष संस्था है। यह अकादमी जोधपुर शहर में स्थित है। यह संस्थान कलाकारों को प्रोत्साहन और वित्तीय सहायता प्रदान करता है तथा लोक प्रदर्शनों का आयोजन करके राज्य की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निरंतर निभाता आ रहा है।

96. (C) राजस्थान संस्कृत अकादमी - सुजस
राजस्थान में सांस्कृतिक अकादमियाँ अपनी विशिष्ट पत्रिकाओं का प्रकाशन करती हैं। 'मधुमती' साहित्य अकादमी की और 'जागती जोत' बीकानेर अकादमी की पत्रिका है। इसके विपरीत, 'सुजस' संस्कृत अकादमी का प्रकाशन नहीं है, बल्कि यह सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की राज्य पत्रिका है। अतः राजस्थान संस्कृत अकादमी को सुजस से जोड़ना एक गलत और असंगत युग्म माना जाता है।

97. (B) अलवर के हिस्सों सहित उत्तर-पूर्वी क्षेत्र
राजस्थान के सांस्कृतिक भूगोल में 'अहीरवाटी' (राठ) क्षेत्र मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी भाग में अलवर और आसपास के जिलों में स्थित है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से यादव (अहीर) समुदाय के प्रभाव के लिए जाना जाता है। यहाँ बोली जाने वाली अहीरवाटी बोली हरियाणवी और मेवाती का अनूठा सम्मिश्रण प्रस्तुत करती है। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान हमेशा रखता है।

98. (D) मारवाड़ और मेवाड़
'मेरवाड़ा' क्षेत्र राजस्थान के अजमेर और आसपास के पहाड़ी भू-भाग में स्थित है। भौगोलिक रूप से यह क्षेत्र मारवाड़ और मेवाड़ के दो बड़े ऐतिहासिक राज्यों के बीच एक मध्यवर्ती तथा सांस्कृतिक संक्रमण क्षेत्र के रूप में कार्य करता आया है। यहाँ इन दोनों प्रमुख क्षेत्रों की बोलियों और रीति-रिवाजों का स्पष्ट प्रभाव हमेशा दिखाई देता आया है।

99. (A) मेवाड़ की संस्कृति पहाड़ी इलाके और पत्थर की कला से आकार लेती है, जबकि मारवाड़ मरुस्थलीय विस्तार और बलुआ पत्थर के किलों से परिभाषित होता है।
राजस्थान के मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्रों के मध्य स्पष्ट सांस्कृतिक और भौगोलिक अंतर पाया जाता है। मेवाड़ की संस्कृति पहाड़ी भू-भाग, वनों और पाषाण कला से निर्मित हुई है। जबकि मारवाड़ की पहचान शुष्क मरुस्थलीय विस्तार, रेतीले टीलों और बलुआ पत्थर के किलों से निर्धारित होती है। यह भिन्नता दोनों क्षेत्रों के वास्तुकला और जीवन शैली में स्पष्ट रूप से झलकती है।

100. (C) उत्तर प्रदेश (मथुरा क्षेत्र) की कृष्ण सांस्कृतिक परंपराएं
राजस्थान का 'ब्रज' सांस्कृतिक क्षेत्र भरतपुर और धौलपुर जिलों में विस्तृत है। यह क्षेत्र पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश के मथुरा क्षेत्र की कृष्ण भक्ति परंपराओं, ब्रजभाषा और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के साथ अपनी गहरी आत्मीयता रखता है। यहाँ के लोक संगीत और त्योहारों पर ब्रज संस्कृति की स्पष्ट छाप दिखाई देती है, जो इसे एक विशिष्ट पहचान हमेशा प्रदान करती है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

46. प्रश्न 46. वह विशिष्ट स्थान जहाँ नाग को दिए अपने वचन को पूरा करते हुए तेजाजी को सर्प ने डसा था, किस नाम से जाना जाता है?
(A) परबतसर
(B) सैंदरिया
(C) सुरसुरा
(D) पनेर

47. प्रश्न 47. वीर तेजाजी की स्मृति में प्रतिवर्ष भाद्रपद माह में एक विशाल राज्य स्तरीय पशु मेले का आयोजन निम्नलिखित में से किस स्थान पर किया जाता है?
(A) मेड़ता सिटी
(B) पुष्कर
(C) तिलवाड़ा
(D) परबतसर

48. प्रश्न 48. लोक देवता तेजाजी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनकी मुख्य रूप से भगवान विष्णु के अवतार के रूप में पूजा की जाती है।
II. चित्रों में उन्हें आमतौर पर घोड़े पर सवार एक योद्धा के रूप में दिखाया गया है जिसकी जीभ को एक सर्प डस रहा है।
III. राजस्थान के कृषक समुदाय खेतों की जुताई करते समय अक्सर उनका आह्वान करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

49. प्रश्न 49. मारवाड़ की सांस्कृतिक परंपरा में लोक देवता पाबूजी को मुख्य रूप से किस पौराणिक पात्र के अवतार के रूप में पूजा जाता है?
(A) राम
(B) लक्ष्मण
(C) भरत
(D) हनुमान

50. प्रश्न 50. पाबूजी किसकी गायों की रक्षा करते हुए अपने बहनोई, जायल के जिंदराव खींची के विरुद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे?
(A) लाछां गूजरी
(B) कर्मा बाई
(C) मीरा बाई
(D) देवल चारणी

51. प्रश्न 51. पाबूजी की फड़ पारंपरिक रूप से भोपा समुदाय द्वारा निम्नलिखित में से किस वाद्य यंत्र का उपयोग करके गाई जाती है?
(A) रावणहत्था
(B) जंतर
(C) कामायचा
(D) मोरचंग

52. प्रश्न 52. राजस्थान में जब भी कोई ऊंट बीमार होता है, तो ग्रामीण जनता पारंपरिक रूप से किस लोक देवता की मन्नत माँगती है?
(A) गोगाजी
(B) तेजाजी
(C) पाबूजी
(D) रामदेवजी

53. प्रश्न 53. पाबूजी पर रचित प्रसिद्ध आख्यान ग्रंथ "पाबूप्रकाश" के रचयिता निम्नलिखित में से कौन थे?
(A) आशिया मोड़जी
(B) कवि मान सिंह
(C) बांकीदास
(D) पृथ्वीराज राठौड़

NODIA

54. प्रश्न 54. देवनारायण जी अत्यंत पूजनीय लोक देवता हैं, जो मुख्य रूप से राजस्थान के किस समुदाय से संबंधित हैं?
(A) जाट
(B) राजपूत
(C) मीणा
(D) गुर्जर

55. प्रश्न 55. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनिए:
कथन (A) : देवनारायण जी की फड़ (चित्रित वस्त्र) राजस्थान के सभी लोक देवताओं की फड़ों में सबसे लंबी और सबसे प्राचीन होने का गौरव रखती है।
कारण (R) : भारत सरकार ने 1992 में देवनारायण जी की फड़ पर एक विशेष डाक टिकट जारी कर इसके सांस्कृतिक महत्त्व को स्वीकार किया था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

56. प्रश्न 56. देवनारायण जी के मुख्य मंदिर की एक विशेष विशेषता यह है कि यहाँ किसी मूर्ति की पूजा नहीं की जाती है। इसके स्थान पर भक्त पूजा करते हैं:
(A) एक पवित्र अनुष्ठानिक अग्नि कुंड जिसे धुणी के नाम से जाना जाता है
(B) फूलों से सजाई गई एक प्रतिष्ठित काष्ठ खड्ग
(C) नीम की पत्तियों के साथ पूजी जाने वाली ईंटों की जोड़ी
(D) एक प्राकृतिक निरंतर बहने वाला पवित्र जल स्रोत

57. प्रश्न 57. देवनारायण जी का मुख्य मंदिर (सदर पीठ), जहाँ भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को उनका मुख्य मेला आयोजित किया जाता है, स्थित है:

(D) महाराणा उदय सिंह

12. प्रश्न 12. संत पीपा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वे मूल रूप से गागरोन राज्य के खींची राजपूत शासक थे।
II. दर्जी समुदाय द्वारा इन्हें अपने मुख्य आराध्य देव के रूप में पूजा जाता है।
III. इनकी प्रसिद्ध छतरी जयपुर जिले के नराणा में स्थित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

13. प्रश्न 13. संत पीपा को समर्पित प्रमुख मंदिर निम्नलिखित में से किस स्थान पर स्थित है?

(A) समदड़ी, बालोतरा
(B) आसींद, भीलवाड़ा
(C) रुणेचा, जैसलमेर
(D) खरनाल, नागौर

14. प्रश्न 14. राजस्थान के निम्नलिखित संतों को उनके ऐतिहासिक अस्तित्व के सामान्यतः स्वीकृत कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. संत रामचरण
2. संत पीपा
3. संत दादू दयाल

(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

15. प्रश्न 15. वे गुफाएँ जहाँ संत पीपा ने कठोर तपस्या और ध्यान किया था, निम्नलिखित में से किस स्थान पर स्थित हैं?

(A) समदड़ी (बालोतरा)
(B) कतरियासर (बीकानेर)
(C) मुकुंदरा पहाड़ियाँ (कोटा)
(D) टोडा गाँव (केकड़ी)

16. प्रश्न 16. दादू पंथ की प्रधान पीठ निम्नलिखित में से किस स्थान पर स्थित है?

(A) शाहपुरा
(B) खेड़ापा
(C) नराणा
(D) सिंहथल

17. प्रश्न 17. निम्नलिखित में से कौन-सी दादू पंथ की मान्यता प्राप्त उप-शाखाओं में से एक नहीं है?

(A) खालसा
(B) कामड़िया
(C) विरक्त
(D) नागा

18. प्रश्न 18. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनिए:

कथन (A) : संत दादू दयाल को प्रायः 'राजस्थान का कबीर' कहा जाता है।

कारण (R) : कबीर की भाँति, उन्होंने भी निर्गुण भक्ति का पुरजोर समर्थन किया, मूर्ति पूजा का विरोध किया और जातिगत भेदभाव की आलोचना की।

(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

19. प्रश्न 19. संत दादू दयाल के उपदेश और पद मुख्य रूप से 'दादू दयाल री वाणी' नामक ग्रंथ में संकलित हैं। यह ग्रंथ मुख्यतः किस बोली में रचित है?

(A) ढूंढाड़ी
(B) मारवाड़ी
(C) मेवाती
(D) मालवी

20. प्रश्न 20. संत दादू दयाल के निम्नलिखित प्रख्यात शिष्यों में से कौन दादू पंथ की नागा शाखा के संस्थापक थे, जो शस्त्र धारण करने और अखाड़ों में रहने के लिए जाने जाते थे?

(A) रज्जब जी
(B) गरीब दास जी
(C) सुंदर दास जी
(D) बखना जी

21. प्रश्न 21. मृतकों के अंतिम संस्कार के संबंध में दादू पंथ के अनुयायियों की एक अनूठी प्रथा यह है कि वे:

(A) शव को पशुपक्षियों के भक्षण हेतु जंगल में खुला छोड़ देते हैं
(B) शव को उत्तर दिशा की ओर मुख करके ध्यान की मुद्रा में दफनाते हैं
(C) चंदन की लकड़ी का उपयोग करके चिता पर शव का दाह संस्कार करते हैं
(D) शव को पुष्कर झील के पवित्र जल में प्रवाहित करते हैं

22. प्रश्न 22. 17वीं शताब्दी में मुगल सम्राट औरंगजेब से रक्षा करने हेतु श्रीनाथजी की पवित्र मूर्ति को वृंदावन से मेवाड़ निम्नलिखित में से किस धर्मगुरु द्वारा लाया गया था?

(A) गोस्वामी विट्ठलनाथ
(B) वल्लभाचार्य
(C) रामानुजाचार्य
(D) गोस्वामी दामोदर

23. प्रश्न 23. मेवाड़ के किस शासक ने श्रीनाथजी की मूर्ति को शरण दी और सिहाड़ गाँव (वर्तमान नाथद्वारा) में मंदिर की स्थापना में सहायता की?

(A) महाराणा अमर सिंह प्रथम

Click Here to Buy book on Flipkart

(B) महाराणा राज सिंह प्रथम
(C) महाराणा कुंभा
(D) महाराणा जगत सिंह द्वितीय

24. प्रश्न 24. राजस्थान में वल्लभ संप्रदाय के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे पुष्टिमार्ग संप्रदाय के नाम से भी जाना जाता है।
II. इसके मुख्य देवता श्रीनाथजी की पूजा भगवान कृष्ण के बाल रूप में की जाती है।
III. नाथद्वारा की प्रसिद्ध पिछवाई चित्रकला इस संप्रदाय में देव प्रतिमा की सजावटी पृष्ठभूमि के रूप में विकसित हुई।
IV. इस संप्रदाय का मूल दर्शन विशिष्टाद्वैत है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

25. प्रश्न 25. कांकरोली (राजसमंद) में स्थित द्वारकाधीश मंदिर निम्नलिखित में से किस धार्मिक परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है?
(A) रामस्नेही संप्रदाय
(B) दादू पंथ
(C) निम्बार्क संप्रदाय
(D) वल्लभ संप्रदाय

26. प्रश्न 26. वल्लभ संप्रदाय वल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित एक दार्शनिक सिद्धांत का पालन करता है, जो मानता है कि आत्मा और ईश्वर बिना किसी माया के पूर्णतः अभिन्न हैं। इस दर्शन को क्या कहा जाता है?
(A) शुद्धाद्वैत
(B) अद्वैत
(C) द्वैत
(D) द्वैताद्वैत

27. प्रश्न 27. निर्गुण राम की उपासना को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान में रामस्नेही संप्रदाय की स्थापना की गई थी। इस संप्रदाय की मुख्य शाहपुरा शाखा के संस्थापक कौन थे?
(A) संत रामदास
(B) संत रामचरण
(C) संत दरियावजी
(D) संत हरिरामदास

28. प्रश्न 28. रामस्नेही शाखाओं और उनके संस्थापकों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म असंगत है?
(A) रेण शाखा - संत दरियावजी
(B) शाहपुरा शाखा - संत रज्जबजी
(C) सिंहथल शाखा - संत हरिरामदास
(D) खेड़ापा शाखा - संत रामदास

29. प्रश्न 29. 'फूलडोल' के नाम से जाना जाने वाला प्रसिद्ध वार्षिक उत्सव रामस्नेही संप्रदाय से संबंधित है; यह मुख्य रुप से कहाँ मनाया जाता है?
(A) शाहपुरा
(B) नराणा
(C) मेड़ता
(D) मुकाम

NODIA

30. प्रश्न 30. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन रामस्नेही संप्रदाय के धार्मिक आचरण की सर्वोत्तम विशेषता बताता है?
(A) प्रतिष्ठित विशाल पाषाण मूर्तियों के माध्यम से भगवान राम की पूजा
(B) क्षेत्रीय सीमाओं की रक्षा के लिए सशस्त्र तपस्वी समूहों का गठन
(C) निर्गुण राम के नाम का जाप और गुरु का आदर
(D) मुख्य रुप से विस्तृत यज्ञों के माध्यम से की जाने वाली पूजा

31. प्रश्न 31. रामस्नेही संप्रदाय के प्राथमिक प्रार्थना स्थल या आध्यात्मिक केंद्र, जहाँ श्रद्धालु भजन-कीर्तन हेतु एकत्र होते हैं, स्थानीय रुप से किस नाम से जाने जाते हैं?
(A) अखाड़े
(B) छतरियाँ
(C) खानकाह
(D) रामद्वारा

32. प्रश्न 32. अत्यधिक पूजनीय लोक देवता गोगाजी का जन्म चौहान राजपूत वंश में निम्नलिखित में से किस स्थान पर हुआ था?
(A) खरनाल, नागौर
(B) कोलू मण्ड, जोधपुर
(C) ददरेवा, चूरू
(D) आसींद, भीलवाड़ा

33. प्रश्न 33. चैत्र माह से प्रारंभ होकर हिंदू विक्रम संवत वर्ष के दौरान आयोजित होने वाले राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख मेलों का सही कालानुक्रम चुनिए:
(A) शीतला अष्टमी, गोगा नवमी, पुष्कर मेला, बेणेश्वर मेला
(B) पुष्कर मेला, गोगा नवमी, बेणेश्वर मेला, शीतला अष्टमी
(C) गोगा नवमी, शीतला अष्टमी, पुष्कर मेला, बेणेश्वर मेला
(D) बेणेश्वर मेला, शीतला अष्टमी, पुष्कर मेला, गोगा नवमी

34. प्रश्न 34. गोगाजी को समर्पित प्रमुख वार्षिक मेला गोगा नवमी के अवसर पर हनुमानगढ़ जिले के गोगामेड़ी में आयोजित किया जाता है। हिंदू पंचांग में गोगा नवमी किस तिथि को आती है?
(A) भाद्रपद शुक्ल नवमी
(B) श्रावण कृष्ण नवमी
(C) आश्विन शुक्ल नवमी
(D) भाद्रपद कृष्ण नवमी

35. प्रश्न 35. गोगामेड़ी का स्मारक एक अनूठी स्थापत्य शैली का मिश्रण प्रस्तुत करता है। यह मकबरा शैली में निर्मित है और इसके मुख्य प्रवेश द्वार पर कौन-सा अरबी शब्द अंकित है?
(A) बिस्मिल्लाह
(B) अल्हम्दुलिल्लाह
(C) माशाअल्लाह
(D) सुभानअल्लाह

36. प्रश्न 36. स्थानीय गोधन की रक्षा और क्षेत्रीय संप्रभुता के लिए गोगाजी ने किस प्रमुख आक्रांता के विरुद्ध युद्ध लड़ा था?
(A) मुहम्मद गोरी
(B) अलाउद्दीन खिलजी
(C) महमूद गजनवी
(D) बाबर

37. प्रश्न 37. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनिए:
कथन (A) : बाबा रामदेवजी को सर्वसम्मति से राजस्थान में गहरे सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक माना जाता है।
कारण (R) : उन्हें हिंदुओं द्वारा भगवान कृष्ण के अवतार के रूप में पूजा जाता है और मुसलमानों द्वारा भी समान रूप से आदर दिया जाता है जो उन्हें 'रामसा पीर' कहते हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

38. प्रश्न 38. हाशिए पर स्थित वर्गों को एकीकृत करने और जातिगत भेदभाव के बिना आध्यात्मिक उत्थान को बढ़ावा देने के लिए, रामदेवजी ने एक विशिष्ट पंथ की स्थापना की, जिसे किस नाम से जाना जाता है?
(A) बिश्नोई पंथ
(B) जसनाथी पंथ
(C) लालदासी पंथ
(D) कामड़िया पंथ

39. प्रश्न 39. कामड़िया पंथ की महिला अनुयायी रामदेवजी के वार्षिक मेले के दौरान एक प्रसिद्ध पारंपरिक नृत्य करती हैं। इस नृत्य की पहचान कीजिए।
(A) घूमर
(B) तेरहताली
(C) चरी
(D) भवाई

40. प्रश्न 40. अधिकांश अन्य लोक देवताओं के विपरीत, रामदेवजी एक सिद्ध कवि भी थे। निम्नलिखित में से कौन-सी रचना उनकी मानी जाती है?
(A) अनभै वाणी
(B) पाबूप्रकाश
(C) चौबीस वाणियाँ
(D) हरिरास

41. प्रश्न 41. बाबा रामदेवजी के सम्मान में आयोजित रात्रि भक्ति जागरण को उनके भक्तों द्वारा विशेष रूप से क्या कहा जाता है?
(A) रतजगा
(B) रिखिया
(C) नेजा
(D) जम्मा

NODIA

42. प्रश्न 42. सूची I में दिए गए राजस्थान के लोक देवताओं का सूची II में उनके प्राथमिक संबंधित पशु/सवारी से मिलान कीजिए:
सूची I : (लोक देवता)
P. रामदेवजी
Q. पाबूजी
R. तेजाजी
S. देवनारायण जी
सूची II : (संबंधित पशु/सवारी)
1. लीलण घोड़ी
2. नीला घोड़ा (लीला घोड़ा)
3. लीलागर घोड़ा
4. केसर कालमी घोड़ी
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

43. प्रश्न 43. रामदेवजी के थान/धाम पर फहराई जाने वाली पंचरंगी ध्वजा को किस नाम से जाना जाता है?
(A) ध्वजा
(B) नेजा
(C) पताका
(D) निशान

44. प्रश्न 44. गोवंश के रक्षक और कृषि देवता के रूप में व्यापक रूप से पूजनीय वीर तेजाजी का जन्म जाट समुदाय के धोलिया गोत्र में किस स्थान पर हुआ था?
(A) रुणेचा
(B) खरनाल
(C) कोलू मण्ड
(D) पीपासर

45. प्रश्न 45. तेजाजी ने मंडावरिया के मीणा जनजाति के लुटेरों से किस ऐतिहासिक व्यक्तित्व की गायों की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी?
(A) लाछां गूजरी
(B) देवल चारणी
(C) सती माता
(D) पन्नाधाय

अध्याय 17
धार्मिक आंदोलन, संत और लोक देवता

1. प्रश्न 1. राजस्थान में भक्ति आंदोलन को इसके प्रारंभिक चरण में निम्नलिखित में से किस संत द्वारा विशेष रूप से लोकप्रिय बनाया गया था, जो रामानंद के प्रत्यक्ष शिष्य थे?
   (A) संत दादू दयाल
   (B) संत धन्ना
   (C) संत रामचरण
   (D) संत मावजी

2. प्रश्न 2. राजस्थान में भक्ति की निर्गुण धारा के मूल दर्शन का सर्वोत्तम वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा करता है?
   (A) मूर्ति पूजा और विस्तृत मंदिर अनुष्ठानों के माध्यम से भक्ति
   (B) भगवान कृष्ण के बाल रूप के प्रति अनन्य समर्पण
   (C) पृथ्वी पर देवताओं के भौतिक अवतार में विश्वास
   (D) निराकार एवं निर्गुण ब्रह्म की उपासना

3. प्रश्न 3. भक्ति की अपनी प्राथमिक धारा (सगुण बनाम निर्गुण) के आधार पर निम्नलिखित संतों में से असंगत को पहचानिए।
   (A) संत दादू दयाल
   (B) मीराबाई
   (C) भक्त कवि दुर्लभ
   (D) गोस्वामी दामोदर

4. प्रश्न 4. राजस्थान की क्षेत्रीय संस्कृति पर भक्ति आंदोलन के निम्नलिखित प्रभावों में से किसे ऐतिहासिक रूप से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है?
   (A) जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन
   (B) जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन
   (C) आध्यात्मिक साहित्य में ढूंढाड़ी और पिंगल जैसी स्थानीय बोलियों को प्रोत्साहन
   (D) ग्रामीण लोकगीतों में फ़ारसी शब्दावली का समावेश

5. प्रश्न 5. सूची I में दिए गए भक्ति संतों का सूची II में उनसे संबंधित प्राथमिक स्थानों से मिलान कीजिए:
   सूची I : (भक्ति संत)
   P. संत धन्ना
   Q. संत पीपा
   R. संत जसनाथ
   S. संत दादू दयाल
   सूची II : (संबंधित स्थान)
   1. नराणा
   2. कतरियासर
   3. गागरोन
   4. धुएँ (धुअँ)
   (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
   (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
   (C) P-4, Q-2, R-3, S-1
   (D) P-1, Q-3, R-2, S-4

6. प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किसे उनकी अनन्य कृष्ण भक्ति के कारण व्यापक रूप से 'राजस्थान का नरसिंह' कहा जाता है?
   (A) संत पीपा
   (B) संत रामचरण
   (C) संत हरिदास
   (D) भक्त कवि दुर्लभ

7. प्रश्न 7. राजस्थान की प्रसिद्ध 16वीं शताब्दी की कवयित्री-संत मीराबाई का जन्म निम्नलिखित में से किस गाँव में हुआ था?
   (A) मेड़ता
   (B) कुड़की
   (C) चित्तौड़गढ़
   (D) पीपासर

8. प्रश्न 8. मीराबाई के आध्यात्मिक गुरु के रूप में पारंपरिक रूप से किसे स्वीकार किया जाता है?
   (A) रामानंद
   (B) वल्लभाचार्य
   (C) संत रविदास (रैदास)
   (D) तुलसीदास

9. प्रश्न 9. निम्नलिखित में से कौन-सी साहित्यिक रचना मीराबाई के साथ गलत सुमेलित है?
   (A) नरसी जी रो मायरो - रत्ना खाती के सहयोग से रचित
   (B) गीत गोविंद री टीका - मीराबाई द्वारा रचित
   (C) राग गोविंद - मीराबाई द्वारा रचित
   (D) दादू री वाणी - मीराबाई द्वारा रचित

10. प्रश्न 10. भगवान कृष्ण के प्रति मीराबाई की भक्ति की प्रकृति को निम्नलिखित में से किस आध्यात्मिक भाव के अंतर्गत सर्वोत्तम रूप से वर्गीकृत किया गया है?
   (A) माधुर्य भाव
   (B) दास्य भाव
   (C) सख्य भाव
   (D) वात्सल्य भाव

11. प्रश्न 11. मेवाड़ के कौन-से शासक मीराबाई के श्वसुर थे?
   (A) महाराणा प्रताप
   (B) महाराणा सांगा
   (C) महाराणा कुंभा

Downloaded from www.pdf.tube

(A) मालासेरी, नागौर
(B) जोधपुरिया, टोंक
(C) कोलू मण्ड, जोधपुर
(D) आसींद, भीलवाड़ा

58. प्रश्न 58. देवनारायण जी की फड़ का वाचन करते समय भोपे पारंपरिक रूप से किस वाद्य यंत्र का प्रयोग करते हैं?
(A) जंतर
(B) रावणहत्था
(C) अलगोजा
(D) मशक

59. प्रश्न 59. प्रसिद्ध करणी माता का मंदिर, जो चूहों की बड़ी संख्या के लिए जाना जाता है, स्थित है:
(A) नोखा, बीकानेर
(B) देशनोक, बीकानेर
(C) फलोदी, जोधपुर
(D) ओसियां, जोधपुर

60. प्रश्न 60. करणी माता मंदिर परिसर के भीतर विचरण करने वाले पवित्र चूहों को स्थानीय रूप से क्या कहा जाता है?
(A) मूषक
(B) काबा
(C) रिखिया
(D) पीर

61. प्रश्न 61. निम्नलिखित पूजनीय व्यक्तित्वों को राजस्थान में उनके काल के अनुसार सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. गोगाजी
2. पाबूजी
3. रामदेवजी
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

62. प्रश्न 62. करणी माता को पारंपरिक रूप से राजस्थान के किस राजवंश की कुलदेवी माना जाता है?
(A) जयपुर के कछवाहा
(B) मेवाड़ के सिसोदिया
(C) बीकानेर के राठौड़
(D) जैसलमेर के भाटी

63. प्रश्न 63. लोक देवी करणी माता का मूल बचपन का नाम क्या था?
(A) कर्मा बाई
(B) पुली बाई
(C) सुप्यार दे
(D) रिद्धि बाई

64. प्रश्न 64. प्रसिद्ध सूफी संत हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने किस राजपूत शासक के शासनकाल के दौरान अजमेर में अपना आध्यात्मिक केंद्र स्थापित किया था?
(A) राणा सांगा
(B) अर्णोराज
(C) पृथ्वीराज चौहान तृतीय
(D) विग्रहराज चतुर्थ

65. प्रश्न 65. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के आध्यात्मिक गुरु (मुर्शिद) कौन थे?
(A) ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी
(B) शेख उस्मान हारुनी
(C) शेख निज़ामुद्दीन औलिया
(D) बाबा फरीद

66. प्रश्न 66. ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का वार्षिक उर्स (पुण्यतिथि समारोह) हिजरी संवत के किस महीने के दौरान अजमेर दरगाह में मनाया जाता है?
(A) मुहर्रम
(B) रमजान
(C) सफर
(D) रज्जब

67. प्रश्न 67. अजमेर दरगाह परिसर में बुलंद दरवाज़ा के नाम से जाने जाने वाले प्रवेश द्वार का निर्माण किस शासक द्वारा करवाया गया था?
(A) सुल्तान महमूद खिलजी
(B) मुगल सम्राट अकबर
(C) मुगल सम्राट जहांगीर
(D) मारवाड़ के राव जोधा

68. प्रश्न 68. अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें उन संत का मज़ार है जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में चिश्ती संप्रदाय की स्थापना की थी।
II. लंगर पकाने हेतु प्रयुक्त 'बड़ी देग' (विशाल कड़ाहा) सम्राट अकबर द्वारा भेंट की गई थी।
III. 'छोटी देग' सम्राट जहांगीर द्वारा भेंट की गई थी।
IV. यह दरगाह 'समा' (कव्वाली) के आयोजन का एक प्रमुख केंद्र है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

69. प्रश्न 69. चिश्ती सूफी संप्रदाय ने सभी अस्तित्वों के मौलिक एकत्व की वकालत करने वाली किस विशिष्ट रहस्यवादी अवधारणा पर बल दिया, जिसने भारतीय दर्शन के साथ संवाद को सुगम बनाया?
(A) वहदत-उल-वुजूद
(B) इल्म-उल-कलाम
(C) शरीयत
(D) तरीकत

NODIA

11. (B) महाराणा सांगा
मेवाड़ के पराक्रमी शासक महाराणा सांगा मीराबाई के श्वसुर थे। मीराबाई का विवाह सन 1516 में महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज के साथ संपन्न हुआ था। विवाह के कुछ वर्षों पश्चात् कुंवर भोजराज का असामयिक निधन हो गया। इसके बाद मीराबाई ने संसार से विरक्त होकर अपना संपूर्ण जीवन भगवान श्री कृष्ण की भक्ति और साधु-संगति में समर्पित कर दिया, जिससे मेवाड़ में सांस्कृतिक क्रांति हुई।

12. (A) केवल I और II
संत पीपा मूल रूप से गागरोन दुर्ग के खींची राजपूत राजा प्रतापसिंह थे, जिन्होंने बाद में राजपाठ त्यागकर संन्यास ग्रहण कर लिया था। दर्जी समुदाय इन्हें अपना आराध्य देव मानता है क्योंकि इन्होंने आजीविका के लिए वस्त्र सिलाई का कार्य अपनाया था। संत पीपा की प्रसिद्ध छतरी झालावाड़ के गागरोन में स्थित है, न कि जयपुर के नराणा में। नराणा दादू पंथ का प्रधान केंद्र है।

13. (A) समदड़ी, बालोतरा
संत पीपा का प्रसिद्ध और प्रमुख मंदिर बालोतरा जिले के समदड़ी गाँव में लूनी नदी के तट पर स्थित है। इस मंदिर में दर्जी समुदाय तथा अन्य श्रद्धालु प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में दर्शन हेतु आते हैं। यहाँ चैत्र माह में विशाल मेला आयोजित किया जाता है। संत पीपा ने दर्जी कर्म को अपनाकर श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित की, इसलिए यह स्थान सर्वसमाज के लिए पूजनीय है।

14. (A) 2, 3, 1
ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार संत पीपा का समय 14वीं-15वीं शताब्दी का है, जो संत कबीर और रामानंद के समकालीन थे। संत दादू दयाल का काल 16वीं-17वीं शताब्दी (1544-1603 ईस्वी) के मध्य रहा है। संत रामचरण का काल 18वीं शताब्दी (1720-1798 ईस्वी) का है, जिन्होंने रामस्नेही संप्रदाय की शाहपुरा शाखा की स्थापना की थी। अतः इनका सही कालानुक्रम क्रमशः पीपा, दादू दयाल और रामचरण है।

15. (D) टोडा गाँव (केकड़ी)
संत पीपा ने कठोर तपस्या और ध्यान साधना केकड़ी जिले में स्थित टोडा गाँव की गुफाओं में की थी। इस स्थान पर संत पीपा ने काफी समय बिताया था और ईश्वर भक्ति में लीन रहे थे। टोडा गाँव की गुफा आज भी श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत पवित्र और दर्शनीय स्थल मानी जाती है। यहाँ प्रतिवर्ष संत पीपा की स्मृति में धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

16. (C) नराणा
दादू पंथ की प्रधान पीठ जयपुर जिले के नराणा (नराना) में स्थित है। संत दादू दयाल ने अपने जीवन का अंतिम समय यहीं बिताया था और यहीं महासमाधि ली थी। इस स्थान को दादू दयाल का प्रमुख साधना केंद्र माना जाता है। नराणा में प्रतिवर्ष फाल्गुन माह में विशाल मेला भरता है, जहाँ देश भर से दादू पंथी साधु और श्रद्धालु दर्शन हेतु एकत्र होते हैं।

17. (B) कामड़िया
दादू पंथ की पांच मुख्य उप-शाखाएं स्वीकार की गई हैं, जिनमें खालसा, विरक्त, नागा, उत्तरादे और खाकी शामिल हैं। कामड़िया पंथ की स्थापना लोक देवता बाबा रामदेवजी ने की थी, जिसका दादू पंथ से कोई संबंध नहीं है। कामड़िया संप्रदाय के अनुयायी मुख्य रूप से रामदेवजी की भक्ति करते हैं और तेरहताली नृत्य प्रस्तुत करते हैं। इसलिए कामड़िया दादू पंथ की शाखा नहीं है।

18. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
संत दादू दयाल को राजस्थान का कबीर कहा जाता है क्योंकि कबीरदास की भाँति उन्होंने भी निर्गुण निराकार ब्रह्म की भक्ति का संदेश दिया। उन्होंने समाज में व्याप्त जाति-पाति, छुआछूत, मूर्ति पूजा और बाह्य आडंबरों का दृढ़ता से विरोध किया। उनकी भाषा और विचार कबीर की विचारधारा से मेल खाते हैं, इसलिए यह उपाधि पूरी तरह तर्कसंगत और ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

19. (A) ढूंढाड़ी
संत दादू दयाल ने अपने उपदेश और पद मुख्य रुप से स्थानीय ढूंढाड़ी बोली में रचे, जिसे 'दादू दयाल री वाणी' और 'दादू दयाल रा दुहा' में संकलित किया गया है। जयपुर तथा आसपास के क्षेत्र की बोली होने के कारण ढूंढाड़ी में रचित उपदेशों को आम जनता ने आसानी से समझा। दादू दयाल का यह साहित्य राजस्थानी लोक भाषा और निर्गुण भक्ति परंपरा का अमूल्य खजाना है।

20. (C) सुंदर दास जी
दादू पंथ की नागा शाखा की स्थापना संत सुंदर दास जी (छोटे) ने की थी। इन्होंने साधुओं को अस्त्र-शस्त्र धारण करने तथा सैन्य प्रशिक्षण देने की परंपरा प्रारंभ की। जयपुर राज्य के शासकों ने संकट काल में नागा साधुओं की सैन्य सहायता ली थी। सुंदर दास जी अत्यंत विद्वान, शास्त्रज्ञ और उच्च कोटि के कवि थे, जिन्होंने अनेक सुंदर साहित्यिक ग्रंथों की रचना की थी।

21. (A) शव को पशुपक्षियों के भक्षण हेतु जंगल में खुला छोड़ देते हैं
दादू पंथ में मृतक के अंतिम संस्कार की परंपरा अन्य संप्रदायों से भिन्न है। इस पंथ के अनुयायी न तो शव को जलाते हैं और न ही दफनाते हैं, बल्कि शव को जंगल में खुला छोड़ देते हैं ताकि वह पशुपक्षियों का भोजन बन सके। संत दादू दयाल का मानना था कि मृत्यु के पश्चात भी यह नश्वर शरीर किसी अन्य जीव के काम आना चाहिए।

22. (D) गोस्वामी दामोदर
17वीं शताब्दी में मुगल सम्राट औरंगजेब की मूर्ति भंजक नीति से सुरक्षा हेतु श्रीनाथजी की पवित्र मूर्ति को वृंदावन से राजस्थान लाया गया था। इस मूर्ति को गोस्वामी दामोदर जी और उनके भाई गोविंद जी मेवाड़ लेकर आए थे। तत्कालीन परिस्थितियों में उन्होंने राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर आश्रय

Click Here to Buy book on Amazon

(C) इसने स्थानीय कृषक और पशुपालक समाजों को सुरक्षात्मक प्रतीक और सामाजिक-आध्यात्मिक सांत्वना प्रदान की।
(D) यह मुख्य रूप से स्थानीय ग्रामीण आबादी को संगठित धार्मिक व्यवस्थाओं में परिवर्तित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

81. प्रश्न 81. एक राजपूत वंश और उनकी पारंपरिक कुलदेवी का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म असंगत है?
(A) सिसोदिया (मेवाड़) - बाण माता
(B) चौहान (अजमेर) - करणी माता
(C) राठौड़ (मारवाड़) - नागणेची माता
(D) भाटी (जैसलमेर) - स्वांगिया माता

82. प्रश्न 82. सामाजिक एकीकरण में लोक देवताओं की भूमिका को दर्शाने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बाबा रामदेवजी ने अस्पृश्यता के विरुद्ध सक्रिय रूप से प्रचार किया और वंचित वर्गों को जोड़ा।
II. पाबूजी को रायका (रेबारी) ऊंट-पालक समुदाय द्वारा अत्यधिक पूजनीय माना जाता है।
III. गोगाजी के थान/धाम हिंदू कृषक समुदायों और मुस्लिम भक्तों दोनों द्वारा पूजे जाते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

83. प्रश्न 83. राजस्थान की ग्रामीण परंपराओं में, 'भोमियाजी' की मुख्य रूप से किस रूप में पूजा की जाती है?
(A) भूमि और गाँव की सीमाओं के रक्षक देवता
(B) वर्षा और कृषि उर्वरता के समर्पित रक्षक देवता
(C) सर्पदंश के इलाज के लिए विशेष देवता
(D) वैवाहिक सद्भाव और घरेलू शांति के देवता

84. प्रश्न 84. राजस्थान में "पंच पीर" की अवधारणा धार्मिक समन्वयवाद का एक प्रमुख उदाहरण है। यह शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
(A) अजमेर दरगाह परिसर में स्थित पांच प्रमुख सूफी संत।
(B) मस्जिदों के स्थापत्य संलयन में निर्मित पांच ऐतिहासिक हिंदू मंदिर।
(C) मारवाड़ के पांच लोक देवता जो हिंदुओं और मुसलमानों दोनों द्वारा समान रूप से पूजे जाते हैं।
(D) भक्ति और सूफी विद्वानों द्वारा रचित पांच आध्यात्मिक ग्रंथ।

85. प्रश्न 85. सूची I में दिए गए राजस्थान के 'पीरों' का सूची II में दिए गए उनके प्राथमिक पूजनीय स्थलों से मिलान कीजिए:
सूची I : (पीर)
P. गोगाजी
Q. हड़बूजी
R. मेहाजी
S. रामदेवजी
सूची II : (पूजनीय स्थल)
1. बापणी
2. बैंगटी
3. गोगामेड़ी
4. रुणेचा
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

86. प्रश्न 86. निम्नलिखित में से कौन-से लोक देवता पारंपरिक रूप से राजस्थान के 'पंच पीरों' में शामिल नहीं हैं?
(A) पाबूजी
(B) रामदेवजी
(C) हड़बूजी
(D) तेजाजी

87. प्रश्न 87. मेवाड़ क्षेत्र में पूजे जाने वाले वीर कल्लाजी राठौड़ को स्थानीय लोक परंपरा में किस विशिष्ट उपनाम से जाना जाता है?
(A) ऊंटों के रक्षक देवता
(B) चार हाथों वाले देवता
(C) समुद्रों के अधिपति
(D) रेगिस्तान के पूज्य तपस्वी

88. प्रश्न 88. निम्नलिखित कथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनिए:
कथन (A) : वीर कल्लाजी राठौड़ को "चार हाथों वाले देवता" के रूप में जाना जाता है।
कारण (R) : चित्तौड़गढ़ के तीसरे शाके/घेराबंदी के दौरान, कल्लाजी ने अपने घायल सेनापति जयमल को अपने कंधों पर बिठाकर युद्ध लड़ा, जिससे वे चार हाथों वाले योद्धा प्रतीत हुए।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

NODIA

89. प्रश्न 89. मल्लीनाथजी पश्चिमी राजस्थान के एक प्राचीन और अत्यधिक सम्मानित लोक देवता हैं। उनका मुख्य धाम, जहाँ एक प्रसिद्ध पशु मेला आयोजित किया जाता है, स्थित है:
(A) समदड़ी, बालोतरा
(B) आसींद, भीलवाड़ा
(C) कोलू मण्ड, जोधपुर
(D) तिलवाड़ा, बालोतरा

90. प्रश्न 90. राजस्थान में मेलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तिलवाड़ा में आयोजित मल्लीनाथ पशु मेला राज्य के

हल-बैल पर गोगा राखड़ी बांधकर अच्छी फसल और मवेशियों की सुरक्षा की प्रार्थना करते हैं।

35. (A) बिस्मिल्लाह
गोगामेड़ी स्थित गोगाजी का प्रसिद्ध मंदिर स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है, जो देखने में एक मकबरे जैसा प्रतीत होता है। इस मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर अरबी भाषा में 'बिस्मिल्लाह' शब्द अंकित है। इस मंदिर का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया था तथा आधुनिक रूप बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह ने प्रदान किया था। यह मंदिर हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सौहार्द का जीवंत प्रतीक है।

36. (C) महमूद गजनवी
गोगाजी ने अपने राज्य की सीमाओं और मवेशियों की रक्षा के लिए विदेशी आक्रांता महमूद गजनवी के विरुद्ध भीषण युद्ध लड़ा था। गोगाजी के अद्भुत रणकौशल और पराक्रम को देखकर गजनवी ने उन्हें 'जाहरपीर' (साक्षात देवता) की उपाधि दी थी। गोगाजी अपने भतीजों अर्जन और सर्जन के साथ गायों को छुड़ाने हेतु वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

37. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
बाबा रामदेवजी राजस्थान में सांप्रदायिक सौहार्द के अनुपम प्रतीक हैं। उन्हें हिंदू समाज भगवान श्री कृष्ण या विष्णु का अवतार मानकर पूजता है, जबकि मुस्लिम समाज उन्हें 'रामसा पीर' या 'नेजा पीर' के रूप में आदर देता है। रामदेवरा मेले में बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मों के लोग एकत्र होते हैं, इसलिए कारण कथन की सटीक और तर्कसंगत व्याख्या प्रस्तुत करता है।

38. (D) कामड़िया पंथ
बाबा रामदेवजी ने समाज में व्याप्त छुआछूत, जातिगत भेदभाव और ऊँच-नीच की कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए 'कामड़िया पंथ' की स्थापना की थी। इस पंथ में सभी जातियों और विशेष रूप से शोषित वर्गों के लोगों को आध्यात्मिक समानता प्रदान की गई। कामड़िया पंथ के अनुयायी रामदेवजी की भक्ति में लीन होकर भजनों का गायन और धार्मिक अनुष्ठानों का संपादन करते हैं।

39. (B) तेरहताली
कामड़िया पंथ की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले में किया जाने वाला प्रसिद्ध पारंपरिक लोक नृत्य 'तेरहताली' है। इस नृत्य में नृत्यांगनाएँ अपने शरीर पर 13 मंजीरे बांधकर बैठती हैं और लयबद्ध तरीके से अद्भुत शारीरिक कलाबाज़ियाँ प्रदर्शित करती हैं। यह नृत्य मुख्य रूप से पाली, समदड़ी और रामदेवरा क्षेत्र में प्रचलित है तथा धार्मिक भक्ति भाव का सुंदर प्रदर्शन करता है।

40. (C) चौबीस वाणियाँ
बाबा रामदेवजी राजस्थान के एकमात्र ऐसे लोक देवता थे जो एक सिद्ध कवि भी थे। उनके द्वारा रचित प्रसिद्ध काव्य रचना 'चौबीस वाणियाँ' के नाम से जानी जाती है। इस ग्रंथ में रामदेवजी के उपदेश, सामाजिक समरसता के विचार, छुआछूत का विरोध और भक्ति भावना का भावपूर्ण वर्णन मिलता है। यह रचना राजस्थानी लोक साहित्य की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण धरोहर मानी जाती है।

41. (D) जम्मा
बाबा रामदेवजी के प्रति निष्ठा रखने वाले भक्तों द्वारा आयोजित किए जाने वाले रात्रि भक्ति जागरण को विशेष रूप से 'जम्मा' (जमा) कहा जाता है। इस जागरण में कामड़िया पंथ के भक्त और मेघवाल जाति के 'रिखिया' रामदेवजी के जीवन प्रसंगों तथा भजनों का रात भर गायन करते हैं। जम्मा जागरण को अत्यंत पवित्र धार्मिक अनुष्ठान माना जाता है।

42. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
लोक देवता रामदेवजी की सवारी नीला घोड़ा (लीला घोड़ा) है। पाबूजी की प्रसिद्ध घोड़ी का नाम 'केसर कालमी' था, जो उन्हें देवल चारणी ने दी थी। तेजाजी की सवारी 'लीलण' घोड़ी थी, जिसका वर्णन लोकगीतों में मिलता है। देवनारायण जी की सवारी 'लीलागर' घोड़ा था। इन सभी वाहनों का इन लोक देवताओं की वीर गाथाओं में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

43. (B) नेजा
बाबा रामदेवजी के थान या मंदिर पर फहराई जाने वाली पांच रंगों की विशेष पताका को 'नेजा' कहा जाता है। यह पचरंगी ध्वजा रामदेवजी के प्रति श्रद्धा और विजय का प्रतीक मानी जाती है। पैदल यात्री (जातरू) रामदेवरा यात्रा के दौरान अपने हाथों में नेजा लेकर रामसा पीर के जयकारे लगाते हुए चलते हैं। यह ध्वजा धार्मिक पहचान का मुख्य चिन्ह है।

44. (B) खरनाल
वीर तेजाजी का जन्म नागौर जिले के खरनाल (खड़नाल) गाँव में 11वीं शताब्दी में हुआ था। ये जाट समुदाय के धोलिया गोत्र से संबंधित थे। इनके पिता का नाम ताहड़ जी और माता का नाम रामकुंवरी था। खरनाल में तेजाजी का विशाल भव्य मंदिर बना हुआ है, जहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल नवमी को विशाल धार्मिक मेला लगता है और हजारों श्रद्धालु दर्शन हेतु पहुँचते हैं।

45. (A) लाछां गूजरी
वीर तेजाजी ने लाछां गूजरी की गायों को मंडावरिया के मीणा लुटेरों से छुड़ाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। लाछां गूजरी की प्रार्थना पर तेजाजी ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए लुटेरों से भीषण युद्ध किया और गायों को सुरक्षित वापस लाया। अपने वचन को निभाते हुए उन्होंने सर्वशक्तिशाली नागदेव को अपनी जीभ पर डसने दिया और वीरगति प्राप्त की।

46. (C) सुरसुरा
अजमेर जिले के सुरसुरा गाँव में नागदेव ने तेजाजी को दिए गए वचन के अनुसार उनकी जीभ पर डसा था और यहीं भाद्रपद शुक्ल दशमी को तेजाजी वीरगति को प्राप्त हुए थे। सैंदरिया वह स्थान है जहाँ तेजाजी की भेंट नागदेव से हुई थी। सुरसुरा तेजाजी का मुख्य निर्वाण स्थल है, जहाँ उनका ऐतिहासिक मंदिर स्थित है और प्रतिवर्ष मेला भरता है।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) संत धन्ना
राजस्थान में भक्ति आंदोलन का श्रीगणेश करने का श्रेय संत धन्ना को दिया जाता है। इनका जन्म टोंक जिले के धुएँ गाँव में एक जाट परिवार में हुआ था। ये स्वामी रामानंद के प्रमुख शिष्यों में से एक थे और इन्होंने उत्तर भारत की भक्ति परंपरा को राजस्थान में प्रसारित किया। इन्होंने ईश्वर प्राप्ति के लिए भक्ति तथा निष्काम कर्म को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना।

2. (D) निराकार एवं निर्गुण ब्रह्म की उपासना
राजस्थान में भक्ति की निर्गुण धारा परमेश्वर को सर्वव्यापी, निराकार, अगम और सर्वशक्तिमान मानती है। इस दर्शन के अनुसार ईश्वर का कोई भौतिक रूप, अवतार या निश्चित आकार नहीं होता है। अतः इसमें मूर्ति पूजा, बाहरी आडंबरों और मंदिर अनुष्ठानों का पूर्ण खंडन किया जाता है। साधक केवल ईश्वर के नाम स्मरण, ध्यान और आत्मचिंतन के माध्यम से परम तत्व की अनुभूति प्राप्त करता है।

3. (A) संत दादू दयाल
संत दादू दयाल निर्गुण भक्ति परंपरा के प्रमुख संत थे, जिन्होंने निराकार ब्रह्म की उपासना का उपदेश दिया और मूर्ति पूजा का विरोध किया। इसके विपरीत मीराबाई, भक्त कवि दुर्लभ और गोस्वामी दामोदर सगुण भक्ति धारा के अनुयायी थे। मीराबाई और गोस्वामी दामोदर ने भगवान श्री कृष्ण के सगुण रूप की आराधना की। इसलिए दार्शनिक परंपरा की दृष्टि से संत दादू दयाल अन्य संतों से भिन्न हैं।

4. (C) आध्यात्मिक साहित्य में ढूंढाड़ी और पिंगल जैसी स्थानीय बोलियों को प्रोत्साहन
भक्ति आंदोलन ने राजस्थान में जनसाधारण की भाषा को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। संतों ने संस्कृत के स्थान पर ढूंढाड़ी, मारवाड़ी, मेवाती और पिंगल जैसी क्षेत्रीय बोलियों में अपने उपदेश और काव्य रचे। इससे लोक भाषाओं का साहित्यिक विकास हुआ तथा ज्ञान समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचा। इसने राजस्थान की प्रांतीय पहचान, संस्कृति और लोक साहित्य को सुदृढ़ आधार प्रदान करने में ऐतिहासिक योगदान दिया।

5. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
संत धन्ना का जन्म टोंक जिले के धुएँ गाँव में हुआ था। संत पीपा का ऐतिहासिक संबंध झालावाड़ के गागरोन दुर्ग से है, जहाँ वे शासक थे। संत जसनाथ जी का मुख्य केंद्र बीकानेर जिले का कतरियासर गाँव है, जहाँ उन्होंने जसनाथी संप्रदाय की स्थापना की। संत दादू दयाल की प्रधान पीठ जयपुर के नराणा में स्थित है। इन सभी स्थलों का भक्ति साहित्य में विशेष महत्त्व है।

6. (D) भक्त कवि दुर्लभ
भक्त कवि दुर्लभ को उनकी अनन्य और निश्छल कृष्ण भक्ति के कारण व्यापक रूप से 'राजस्थान का नरसिंह' कहा जाता है। इन्होंने वागड़ क्षेत्र यानी डूंगरपुर और बांसवाड़ा में भक्ति धारा का प्रचार-प्रसार किया। गुजरात के प्रसिद्ध संत नरसिंह मेहता की भाँति दुर्लभ जी ने भी कृष्ण प्रेम में कई भावपूर्ण भजनों की रचना की, जिससे स्थानीय जनमानस में कृष्ण भक्ति की अलख जगी।

7. (B) कुड़की
राजस्थान की प्रसिद्ध भक्ति कवयित्री मीराबाई का जन्म 16वीं शताब्दी में नागौर जिले के कुड़की गाँव में हुआ था। इनके पिता रतन सिंह राठौड़ थे जो बाजोली के जागीरदार थे। मीराबाई का बचपन अपने दादा राव दूदा के पास मेड़ता में बीता, जहाँ उन्हें धार्मिक वातावरण प्राप्त हुआ। कुड़की गाँव मीराबाई की जन्मस्थली होने के कारण ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल माना जाता है।

8. (C) संत रविदास (रैदास)
मीराबाई के आध्यात्मिक गुरु के रूप में संत रविदास जी को मान्यता प्राप्त है। संत रविदास काशी के महान निर्गुण संत थे और स्वामी रामानंद के शिष्य थे। मीराबाई ने अपने अनेक पदों में संत रैदास को अपना गुरु स्वीकार किया है और उनके मार्गदर्शन का उल्लेख किया है। चित्तौड़गढ़ दुर्ग परिसर में स्थित कुंभश्याम मंदिर के पास संत रैदास की प्रसिद्ध छतरी भी निर्मित बनी हुई है।

9. (D) दादू री वाणी - मीराबाई द्वारा रचित
'दादू री वाणी' संत दादू दयाल के उपदेशों और भजनों का प्रसिद्ध संग्रह है, जिसकी रचना मीराबाई ने नहीं की थी। मीराबाई की प्रमुख प्रामाणिक रचनाओं में 'गीत गोविंद री टीका', 'राग गोविंद' तथा 'नरसी जी रो मायरो' शामिल हैं, जिसमें रत्ना खाती का सहयोग प्राप्त हुआ था। अतः 'दादू री वाणी' का मीराबाई के नाम से सुमेलित होना ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से पूरी तरह असंगत है।

10. (A) माधुर्य भाव
मीराबाई की भगवान श्री कृष्ण के प्रति भक्ति मुख्य रूप से 'माधुर्य भाव' अथवा 'कांता भाव' पर आधारित थी। इस भाव में भक्त अपने आराध्य को पति मानकर अनन्य प्रेम समर्पित करता है। मीराबाई ने कृष्ण को अपना एकमात्र स्वामी माना और लोक-लाज का त्याग कर उनके विरह तथा मिलन के पदों की रचना की। यह भाव भारतीय भक्ति परंपरा की उच्चतम एवं भावुक अवस्था मानी जाती है।

NODIA

70. प्रश्न 70. प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर, जो अपनी उत्कृष्ट संगमरमर की नक्काशी के लिए जाने जाते हैं, कहाँ स्थित हैं?
(A) राणकपुर
(B) ओसियां
(C) नाकोड़ा
(D) माउंट आबू

71. प्रश्न 71. भव्य राणकपुर जैन मंदिर परिसर, जो अपने 1444 नक्काशीदार स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है, मुख्य रूप से किस जैन तीर्थंकर को समर्पित है?
(A) महावीर
(B) आदिनाथ
(C) पार्श्वनाथ
(D) नेमिनाथ

72. प्रश्न 72. राजस्थान में जैन धार्मिक स्थलों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ओसियां में स्थित महावीर स्वामी मंदिर श्वेतांबर परंपरा का एक महत्त्वपूर्ण स्थल है।
II. नाकोड़ा मुख्य रूप से तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पूजा के लिए एक तीर्थ केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।
III. दिलवाड़ा का विमल वासाही मंदिर मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान बनाया गया था।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल III
(C) केवल I और II
(D) केवल II और III

73. प्रश्न 73. राणकपुर जैन मंदिर की वास्तुशिल्प योजना को तैयार करने वाले मुख्य शिल्पी/वास्तुकार कौन थे?
(A) मण्डन
(B) विमल शाह
(C) विद्याधर भट्टाचार्य
(D) देपाक (देपा)

74. प्रश्न 74. पर्युषण जैन समुदाय का सबसे महत्त्वपूर्ण वार्षिक आध्यात्मिक पर्व है। यह मुख्य रूप से हिंदू पंचांग के किस महीने में मनाया जाता है?
(A) भाद्रपद
(B) चैत्र
(C) श्रावण
(D) कार्तिक

75. प्रश्न 75. सूची I में दिए गए राजस्थान के प्रसिद्ध मंदिरों का सूची II में दिए गए उन जिलों से मिलान कीजिए जहाँ वे स्थित हैं:
सूची I : (मंदिर)
P. चारभुजा नाथ मंदिर
Q. ब्रह्मा मंदिर
R. कैला देवी मंदिर
S. गोविंद देवजी मंदिर
सूची II : (जिला)
1. करौली
2. जयपुर
3. राजसमंद
4. अजमेर (पुष्कर)
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

76. प्रश्न 76. गढ़बोर का ऐतिहासिक चारभुजा नाथ मंदिर, जहाँ जलझूलनी एकादशी पर एक प्रमुख मेला आयोजित होता है, किस जिले में स्थित वैष्णव परंपरा का तीर्थ केंद्र है?
(A) उदयपुर
(B) राजसमंद
(C) भीलवाड़ा
(D) चित्तौड़गढ़

77. प्रश्न 77. उदयपुर के निकट एकलिंगजी मंदिर परिसर भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर ऐतिहासिक रूप से शैव धर्म के किस संप्रदाय से संबंधित है?
(A) पाशुपत
(B) कापालिक
(C) लिंगायत
(D) नाथ पंथ

78. प्रश्न 78. दौसा और करौली जिलों की सीमा पर स्थित मेहंदीपुर बालाजी मंदिर की उत्तर भारत में किस कार्य हेतु विशेष मान्यता है?
(A) बड़े पैमाने पर वार्षिक मवेशी व्यापार और कृषि मेलों का आयोजन
(B) सामूहिक विवाह का आयोजन
(C) प्रेत बाधाओं से मुक्ति एवं मानसिक विकारों का उपचार
(D) शास्त्रीय ध्रुपद संगीत शिक्षण केंद्र

79. प्रश्न 79. जयपुर में आमेर दुर्ग परिसर के भीतर स्थित शीला देवी मंदिर के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह मंदिर ईश्वर के निर्गुण रूप को समर्पित है।
(B) मंदिर की स्थापना सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा की गई थी।
(C) मुख्य देवी की पूजा स्थापना काल से ही विशुद्ध शाकाहारी (वैष्णव) रीति से की जाती है।
(D) देवी की मूर्ति महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा जसोर (बंगाल) से लाई गई थी।

80. प्रश्न 80. ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, राजस्थान में लोक देवता पूजा के विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक भूमिका क्या थी?
(A) इसने जनजातीय आबादी पर उच्च जाति के प्रभुत्व को लागू करने का कार्य किया।
(B) इसने प्रांतीय बैंकिंग व्यवस्था के रूप में कार्य किया।

Click Here to Buy book on Flipkart

लिया और अंततः मेवाड़ के महाराणा की छत्रछाया में इस मूर्ति को सुरक्षित स्थापित किया।

23. (B) महाराणा राज सिंह प्रथम
मेवाड़ के पराक्रमी शासक महाराणा राज सिंह प्रथम ने औरंगजेब की नीतियों की परवाह न करते हुए श्रीनाथजी की मूर्ति को संरक्षण प्रदान किया। उन्होंने सन 1672 में सिहाड़ गाँव में भव्य मंदिर का निर्माण करवाकर मूर्ति की प्रतिष्ठा करवाई। यही सिहाड़ गाँव कालान्तर में 'नाथद्वारा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जो आज वल्लभ संप्रदाय का विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्र है।

24. (B) केवल I, II और III
वल्लभ संप्रदाय को पुष्टिमार्ग कहा जाता है और इसके प्रधान देवता श्रीनाथजी हैं, जिनकी पूजा कृष्ण के बाल रूप में होती है। नाथद्वारा की पिछवाई कला इसी संप्रदाय की देन है। हालाँकि, वल्लभ संप्रदाय का मूल दर्शन 'शुद्धाद्वैत' है, न कि 'विशिष्टाद्वैत'। विशिष्टाद्वैत दर्शन रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित किया गया था। अतः चौथा कथन गलत होने से अन्य तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

25. (D) वल्लभ संप्रदाय
राजसमंद जिले के कांकरोली में स्थित द्वारकाधीश मंदिर वल्लभ संप्रदाय की सात प्रमुख पीठों में से एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ भगवान कृष्ण के द्वारकाधीश रूप की पूजा-अर्चना की जाती है। यह मंदिर पुष्टिमार्गीय परंपरा का पालन करता है और वैष्णव धर्मावलंबियों के लिए अत्यंत पवित्र स्थान है। इस मंदिर की स्थापना मेवाड़ महाराणा राज सिंह के शासनकाल में हुई थी।

26. (A) शुद्धाद्वैत
महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक सिद्धांत को 'शुद्धाद्वैत' कहा जाता है। यह दर्शन मानता है कि ब्रह्म और जीव में कोई वास्तविक भेद नहीं है तथा यह संसार माया से रहित शुद्ध ब्रह्म का ही रूप है। इसमें भगवान की कृपा या अनुग्रह को ही 'पुष्टि' माना गया है। इसी आधार पर इस परंपरा को पुष्टिमार्ग भक्ति संप्रदाय के नाम से जाना जाता है।

27. (B) संत रामचरण
राजस्थान में रामस्नेही संप्रदाय की मुख्य शाखा शाहपुरा (भीलवाड़ा) के संस्थापक संत रामचरण जी थे। इनका मूल नाम रामकिशन था और इन्होंने निर्गुण निराकार राम की उपासना का उपदेश दिया। इन्होंने मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए केवल राम नाम के जप और गुरु भक्ति पर विशेष बल दिया। इनके उपदेशों का प्रसिद्ध संकलन 'अनभै वाणी' ग्रंथ में सुरक्षित है।

28. (B) शाहपुरा शाखा - संत रज्जबजी
रामस्नेही संप्रदाय की शाहपुरा शाखा के संस्थापक संत रामचरण जी थे, जबकि संत रज्जब जी दादू पंथ के प्रमुख शिष्य थे। रामस्नेही संप्रदाय की अन्य शाखाओं में रेण शाखा के संस्थापक संत दरियावजी, सिंहथल शाखा के संस्थापक संत हरिरामदास जी और खेड़ापा शाखा के संस्थापक संत रामदास जी थे। अतः शाहपुरा शाखा के साथ संत रज्जब जी का नाम पूरी तरह असंगत है।

29. (A) शाहपुरा
'फूलडोल' उत्सव रामस्नेही संप्रदाय का सबसे प्रसिद्ध वार्षिक धार्मिक पर्व है। यह उत्सव मुख्य रूप से शाहपुरा में चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से पंचमी तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर रंग-गुलाल उड़ाया जाता है और विशाल मेले का आयोजन होता है। देश भर से संत और श्रद्धालु शाहपुरा रामद्वारा में एकत्र होकर राम नाम का संकीर्तन करते हैं।

30. (C) निर्गुण राम के नाम का जाप और गुरु का आदर
रामस्नेही संप्रदाय निर्गुण भक्ति परंपरा का मुख्य संप्रदाय है। इसमें दशरथ पुत्र राम के स्थान पर सर्वव्यापी निर्गुण-निराकार राम के नाम स्मरण का विधान है। इस संप्रदाय में मूर्ति पूजा, कर्मकांड और बलि प्रथा का कोई स्थान नहीं है। श्रद्धालु अपने गुरु को ईश्वर तुल्य मानते हैं तथा रामद्वारा में एकत्र होकर नाम जप, भजन और कीर्तन द्वारा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करते हैं।

31. (D) रामद्वारा
रामस्नेही संप्रदाय के प्राथमिक प्रार्थना स्थलों और आध्यात्मिक केंद्रों को 'रामद्वारा' कहा जाता है। रामद्वारा में किसी भी देवी-देवता की मूर्ति नहीं होती है, बल्कि यहाँ केवल संत-महात्माओं के चित्र और पवित्र ग्रंथों की गद्दी स्थापित होती है। भक्तगण रामद्वारा में एकत्र होकर गुरुवाणी का पाठ, निर्गुण राम नाम का जाप और भजन-कीर्तन करते हैं। शाहपुरा का रामद्वारा इस संप्रदाय का सर्वोच्च केंद्र है।

32. (C) ददरेवा, चूरू
राजस्थान के सुप्रसिद्ध लोक देवता गोगाजी का जन्म चूरू जिले के ददरेवा नामक स्थान पर 11वीं शताब्दी में हुआ था। ये चौहान राजपूत वंश से संबंधित थे और इनके पिता का नाम जेवर सिंह तथा माता का नाम बाछल दे था। ददरेवा को 'शीर्षमेढ़ी' भी कहा जाता है क्योंकि मान्यतानुसार युद्ध के दौरान गोगाजी का शीष इसी स्थान पर गिरा था।

33. (A) शीतला अष्टमी, गोगा नवमी, पुष्कर मेला, बेणेश्वर मेला
हिंदू विक्रम संवत वर्ष चैत्र माह से शुरू होता है। शीतला अष्टमी चैत्र कृष्ण अष्टमी को मनाई जाती है। गोगा नवमी भाद्रपद कृष्ण नवमी को आती है। पुष्कर मेला कार्तिक पूर्णिमा को आयोजित होता है। बेणेश्वर मेला माघ पूर्णिमा को भरता है। अतः चैत्र माह से प्रारंभ होकर वर्ष के दौरान इन मेलों का सही कालानुक्रम क्रमशः शीतला अष्टमी, गोगा नवमी, पुष्कर मेला और बेणेश्वर मेला है।

34. (D) भाद्रपद कृष्ण नवमी
गोगा नवमी का प्रसिद्ध पर्व प्रतिवर्ष भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। इस दिन हनुमानगढ़ जिले के गोगामेड़ी में विशाल वार्षिक मेले का आयोजन होता है। श्रद्धालु गोगाजी की पूजा-अर्चना करते हैं और उन्हें लापसी व चूरमे का भोग लगाते हैं। किसान अपनी

Downloaded from www.pdf.tube

59. (B) देशनोक, बीकानेर
प्रसिद्ध लोक देवी करणी माता का मुख्य मंदिर बीकानेर जिले के देशनोक में स्थित है। यह मंदिर दुनिया भर में चूहों के मंदिर के नाम से विख्यात है क्योंकि यहाँ हज़ारों की संख्या में काले और सफेद चूहे स्वतंत्र रूप से घूमते हैं। श्रद्धालु इन्हें करणी माता का प्रसाद मानकर पूजा करते हैं और चूहों को किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाना वर्जित माना जाता है।

60. (B) काबा
देशनोक स्थित करणी माता मंदिर परिसर में पाए जाने वाले पवित्र चूहों को स्थानीय लोक परंपरा में 'काबा' कहा जाता है। मान्यता है कि चरण समुदाय के लोग मृत्यु के पश्चात् काबा के रूप में जन्म लेते हैं। इन काबों का जूठा प्रसाद अत्यंत पवित्र माना जाता है। मंदिर में सफेद काबा (सफेद चूहा) के दर्शन होना अत्यंत शुभ और भाग्यशाली माना जाता है।

61. (A) 1, 2, 3
लोक देवताओं के ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार गोगाजी का संबंध 11वीं शताब्दी से है (महमूद गजनवी के समकालीन)। पाबूजी का समय 13वीं शताब्दी (1239 ईस्वी) माना जाता है। रामदेवजी का काल 14वीं-15वीं शताब्दी का है। अतः इनका सही कालानुक्रम क्रमशः 1, 2, 3 (गोगाजी, पाबूजी, रामदेवजी) है। यह क्रम राजस्थानी इतिहास की स्वीकृत तिथियों पर आधारित है।

62. (C) बीकानेर के राठौड़
लोक देवी करणी माता को बीकानेर के राठौड़ राजवंश की कुलदेवी और इष्टदेवी के रूप में पूजा जाता है। बीकानेर राज्य की स्थापना करने वाले राव बीका को करणी माता का आशीर्वाद प्राप्त था। बीकानेर के शासक कोई भी शुभ कार्य करने से पूर्व देशनोक जाकर करणी माता के दर्शन करते थे। करणी माता को 'दाढ़ी वाली डोकरी' भी कहा जाता है।

63. (D) रिद्धि बाई
लोक देवी करणी माता का जन्म जोधपुर के सुवाप गाँव में चारण परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम 'रिद्धि बाई' था। अपनी बुआ के हाथ का टेढ़ापन ठीक करने और बचपन में ही कई चमत्कार दिखाने के कारण इनका नाम 'करणी' (कल्याण करने वाली) पड़ा। आगे चलकर इन्होंने मेहरानगढ़ और बीकानेर दुर्ग की नींव रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

64. (C) पृथ्वीराज चौहान तृतीय
प्रसिद्ध सूफी संत हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेर में अंतिम हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के शासनकाल (1192 ईस्वी के आसपास) के दौरान आए थे। उन्होंने अजमेर को अपना मुख्य आध्यात्मिक केंद्र बनाया और भारत में चिश्ती सूफी संप्रदाय की नींव रखी। उन्होंने प्रेम, बंधुत्व और शांति का संदेश दिया, जिसने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया।

65. (B) शेख उस्मान हारूनी
हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के आध्यात्मिक गुरु (मुर्शिद) महान सूफी संत शेख उस्मान हारूनी थे। ख्वाजा साहब ने कई वर्षों तक अपने गुरु की सेवा में रहकर रहस्यवादी ज्ञान और आध्यात्मिक दीक्षा प्राप्त की। गुरु के आदेशानुसार ही उन्होंने भारत आकर अजमेर को अपना निवास स्थान बनाया और सूफी मत के मानवीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया।

NODIA

66. (D) रज्जब
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का वार्षिक 'उर्स' (पुण्यतिथि समारोह) इस्लामिक हिजरी संवत के रज्जब महीने की 1 से 6 तारीख तक अजमेर शरीफ दरगाह में आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर भारत और विदेशों से लाखों की संख्या में ज़ायरीन (श्रद्धालु) आते हैं। उर्स के दौरान महफिल-ए-समा (कव्वाली), धार्मिक रस्में और लंगर का आयोजन बड़े स्तर पर किया जाता है।

67. (A) सुल्तान महमूद खिलजी
अजमेर दरगाह परिसर में स्थित ऐतिहासिक 'बुलंद दरवाज़ा' का निर्माण मांडू (मालवा) के सुल्तान महमूद खिलजी द्वारा करवाया गया था। यह विशाल प्रवेश द्वार दरगाह के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित है। उर्स मेले की औपचारिक शुरुआत इसी बुलंद दरवाज़े पर भीलवाड़ा के गौरी परिवार द्वारा झंडा फहराने की पारंपरिक रस्म के साथ प्रतिवर्ष होती है।

68. (D) I, II, III और IV
अजमेर दरगाह भारत में चिश्ती संप्रदाय का मुख्य केंद्र है। परिसर में स्थित 'बड़ी देग' मुगल सम्राट अकबर द्वारा और 'छोटी देग' सम्राट जहांगीर द्वारा श्रद्धालुओं के लंगर हेतु भेंट की गई थी। इसके अतिरिक्त यह दरगाह सूफी समा (कव्वाली) का विश्व प्रसिद्ध केंद्र है, जहाँ ईश्वर प्रेम का संगीत द्वारा अनुभव किया जाता है। अतः चारों कथन सत्य हैं।

69. (A) वहदत-उल-वुजूद
चिश्ती सूफी संप्रदाय ने 'वहदत-उल-वुजूद' (अस्तित्व की एकरूपता या अद्वैतवाद) के दर्शन का प्रतिपादन किया। इस अवधारणा के अनुसार संपूर्ण सृष्टि में केवल एक ही परम सत्य या ईश्वर का वास है। इस विचार ने भारतीय उपनिषदिक दर्शन (अद्वैत वेदांत) के साथ गहरा तालमेल बैठाया, जिससे हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच सांस्कृतिक व आध्यात्मिक सौहार्द स्थापित करने में मदद मिली।

70. (D) माउंट आबू
प्रसिद्ध दिलवाड़ा (देवलवाड़ा) जैन मंदिर सिरोही जिले के माउंट आबू पर्वतीय स्थल पर स्थित हैं। यह मंदिर समूह अपनी असाधारण वास्तुशिल्प कला, संगमरमर पर की गई बारीक नक्काशी और उत्कृष्ट मूर्तिकला के लिए दुनिया भर में जाने जाते हैं। यहाँ 11वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य निर्मित पांच प्रमुख श्वेतांबर जैन मंदिर हैं, जो भारतीय स्थापत्य के अनुपम उदाहरण हैं।

47. (D) परबतसर
वीर तेजाजी की स्मृतियों को अमर बनाए रखने के लिए डीडवाना-कुचामन जिले के परबतसर में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को राज्य स्तरीय वीर तेजाजी पशु मेले का आयोजन किया जाता है। यह मेला नागोरी बैलों और मवेशियों के क्रय-विक्रय के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है। इस मेले से राज्य सरकार को भारी राजस्व प्राप्त होता है और लाखों व्यापारी एकत्र होते हैं।

48. (B) केवल II और III
तेजाजी को मुख्य रूप से शिव के अवतार के रूप में पूजा जाता है, न कि विष्णु के अवतार के रूप में। चित्रों में उन्हें घोड़े पर सवार एक हाथ में तलवार लिए दिखाया जाता है, जिसकी जीभ को सर्प डस रहा होता है। राजस्थान के किसान अच्छी वर्षा और कृषि समृद्धि के लिए खेत जोतते समय 'तेजा टेर' लोकगीत गाते हैं। अतः कथन II और III सत्य हैं।

49. (B) लक्ष्मण
मारवाड़ की लोक संस्कृति में पाबूजी को मुख्य रूप से श्रीराम के अनुज 'लक्ष्मण' का अवतार माना जाता है। पाबूजी राठौड़ वंश के पराक्रमी योद्धा थे, जिन्होंने दीन-दुखियों और मवेशियों की रक्षा हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया। इन्हें ऊंटों के देवता, प्लेग रक्षक देवता और 'हाड़-फाड़ के देवता' के रूप में भी राजस्थान के लोक जीवन में अगाध श्रद्धा प्राप्त है।

50. (D) देवल चारणी
लोक देवता पाबूजी ने देवल चारणी की गायों की रक्षा करने के लिए अपने विवाह के फेरे बीच में ही छोड़ दिए थे। देवल चारणी ने पाबूजी को अपनी प्रसिद्ध घोड़ी 'केसर कालमी' दी थी। पाबूजी ने अपने बहनोई नागौर के जिंदराव खींची से देचू गाँव में कड़ा मुकाबला किया और गायों की रक्षा करते हुए अपने साथियों के साथ वीरगति को प्राप्त हुए थे।

51. (A) रावणहत्था
पाबूजी की फड़ का वाचन नायक या थोरी जाति के भोपे-भोपिन द्वारा पारंपरिक वाद्य यंत्र 'रावणहत्था' का प्रयोग करते हुए किया जाता है। रावणहत्था एक प्राचीन तारवाला वाद्य यंत्र है जो नारियल की कटोरी से बनता है। पाबूजी की फड़ राजस्थान की सबसे लोकप्रिय फड़ मानी जाती है, जिसमें पाबूजी के जीवन प्रसंगों और उनकी वीरता का सुंदर सचित्र वर्णन होता है।

52. (C) पाबूजी
मारवाड़ में सर्वप्रथम ऊंट लाने का श्रेय लोक देवता पाबूजी को दिया जाता है। इसलिए जब भी कोई ऊंट बीमार होता है या मारवाड़ में ऊंट-पालक रायका (रेबारी) समुदाय पर कोई संकट आता है, तो पाबूजी की मन्नत मांगी जाती है। पाबूजी को प्रसन्न करने के लिए श्रद्धालु रात्रि में पाबूजी की फड़ का वाचन करवाते हैं या पाबूजी के पवाड़े गाते हैं।

53. (A) आशिया मोड़जी
लोक देवता पाबूजी के जीवन चरित्र, अद्भुत शौर्य और सामाजिक कार्यों पर आधारित प्रसिद्ध आख्यान ग्रंथ "पाबूप्रकाश" की रचना आशिया मोड़जी द्वारा की गई थी। यह ग्रंथ डिंगल शैली में रचित है और इसमें पाबूजी की वीरता, देवल चारणी की गायों की रक्षा तथा उनके आदर्शों का बहुत ही जीवंत और भावपूर्ण काव्यबद्ध वर्णन किया गया है।

54. (D) गुर्जर
देवनारायण जी राजस्थान के एक अत्यंत प्रभावशाली और पूजनीय लोक देवता हैं, जो मुख्य रूप से 'गुर्जर' समुदाय के कुलदेवता माने जाते हैं। इन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। देवनारायण जी ने जनकल्याण, औषधि ज्ञान (नीम और गोबर का औषधीय उपयोग) तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कर समाज का मार्गदर्शन किया था। पूरे राजस्थान में इनके कई प्रसिद्ध मंदिर हैं।

55. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
देवनारायण जी की फड़ राजस्थान की सबसे प्राचीन, सबसे लंबी और सबसे अधिक गाथाओं वाली फड़ मानी जाती है। भारत सरकार के संचार विभाग द्वारा 1992 में इस फड़ पर 5 रुपये का डाक टिकट जारी किया गया था। दोनों कथन अपने स्थान पर पूर्णतः ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं, परंतु डाक टिकट जारी होना फड़ के सबसे लंबे होने का कारण नहीं है।

56. (C) नीम की पत्तियों के साथ पूजी जाने वाली ईंटों की जोड़ी
देवनारायण जी के मुख्य मंदिरों की अनूठी विशेषता यह है कि वहाँ किसी भी प्रकार की मूर्ति स्थापित नहीं होती है। इसके स्थान पर बड़ी ईंटों की पूजा की जाती है और उन पर नीम की पत्तियाँ चढ़ाई जाती हैं। देवनारायण जी ने आयुर्वेद और स्वास्थ्य सुधार के लिए नीम तथा छाछ-छाछ के औषधीय गुणों को बढ़ावा दिया था, जिसे यह परंपरा दर्शाती है।

57. (D) आसींद, भीलवाड़ा
देवनारायण जी का मुख्य मंदिर (सदर पीठ) भीलवाड़ा जिले के आसींद के पास खारी नदी के तट पर 'सवाई भोज' में स्थित है। यह स्थान देवनारायण जी की जन्मभूमि और कर्मभूमि माना जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को विशाल मेले का आयोजन होता है, जिसमें देश भर से लाखों गुर्जर श्रद्धालु और अन्य भक्त दर्शन करने हेतु आते हैं।

58. (A) जंतर
देवनारायण जी की फड़ का वाचन करते समय गुर्जर जाति के भोपे पारंपरिक रूप से 'जंतर' वाद्य यंत्र का प्रयोग करते हैं। जंतर एक वीणा जैसा तत्-वाद्य यंत्र है जो दो कद्दू के खोल और तारों से निर्मित होता है। इसे छाती पर रखकर बजाया जाता है। जंतर की मधुर ध्वनि के साथ देवनारायण जी की पौराणिक लोक गाथाओं का गान किया जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

सबसे पुराने पशु मेलों में से एक है।
II. परबतसर में वीर तेजाजी पशु मेला नागोरी नस्ल के मवेशियों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है।
III. गोगामेड़ी मेले में पशुओं का व्यापार होता है।
IV. जैसलमेर में रामदेवरा मेला मुख्य रूप से एक व्यावसायिक पशु प्रदर्शनी है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल III और IV
(B) केवल IV
(C) केवल II और III
(D) केवल I और IV

91. प्रश्न 91. दक्षिणी राजस्थान में जनजाति समाज का प्रसिद्ध बेणेश्वर मेला तीन नदियों के संगम पर आयोजित किया जाता है। ये नदियाँ हैं:
(A) बनास, चंबल, सीप
(B) माही, सोम, जाखम
(C) लूनी, सुकड़ी, जवाई
(D) साबरमती, वाकल, सेई

92. प्रश्न 92. डूंगरपुर जिले के बेणेश्वर मेले को निम्नलिखित में से किस उपनाम से जाना जाता है?
(A) मारवाड़ का पुष्कर
(B) आदिवासियों का कुंभ
(C) दक्षिण का उर्स
(D) थार का महाकुंभ

93. प्रश्न 93. हिंदू पंचांग के महीनों के अनुसार आयोजन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख मेलों का सही क्रम चुनिए (वर्ष में प्रारंभ से अंत की ओर):
(A) कैला देवी मेला (करौली), तेजाजी मेला (परबतसर), पुष्कर मेला (अजमेर), बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर)
(B) बेणेश्वर मेला, पुष्कर मेला, कैला देवी मेला, तेजाजी मेला
(C) पुष्कर मेला, बेणेश्वर मेला, तेजाजी मेला, कैला देवी मेला
(D) तेजाजी मेला, कैला देवी मेला, पुष्कर मेला, बेणेश्वर मेला

94. प्रश्न 94. भक्ति परंपरा से अनुप्राणित प्रसिद्ध डिंगल ग्रंथ "वेलि क्रिसन रुकमणी री" की रचना किसके द्वारा की गई थी?
(A) महाराणा कुंभा
(B) संत दादू दयाल
(C) पृथ्वीराज राठौड़
(D) सूर्यमल्ल मिश्रण

95. प्रश्न 95. "अनभै वाणी" नामक प्रसिद्ध ग्रंथ, जो निर्गुण राम के दर्शन का विवरण देता है, किस संत के उपदेशों का संकलन है?
(A) संत हरिरामदास
(B) संत दादू दयाल
(C) संत मावजी
(D) संत रामचरण

96. प्रश्न 96. दक्षिणी राजस्थान के किस संत ने स्थानीय रूप से "चोपड़ा" के नाम से प्रसिद्ध भविष्यवाणियों युक्त ग्रंथों की रचना की?
(A) संत भूरी बाई
(B) संत पीपा
(C) संत मावजी
(D) संत दरियावजी

97. प्रश्न 97. राजस्थानी साहित्य पर संत दादू दयाल के आंदोलन के प्रभाव को निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) इसने ग्रामीण क्षेत्रों में केवल संस्कृत साहित्य के उपयोग को बढ़ावा दिया।
(B) इसने आध्यात्मिक रचनाओं के लिए स्थानीय ढूंढाड़ी बोली को लोकप्रिय बनाया।
(C) इसने केवल फ़ारसी लिपि का उपयोग किया।
(D) इसके कारण लोक गायन परंपरा समाप्त हो गई।

98. प्रश्न 98. राजस्थान में लोक देवता पूजा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पाबूजी और देवनारायण जी से जुड़ी फड़ चित्रकला की पारंपरिक कला मुख्य रूप से शाहपुरा में संरक्षित है।
II. रामदेवरा का मेला सांप्रदायिक सौहार्द का प्रमुख केंद्र है।
III. गोगाजी और करणी माता जैसे देवताओं के मंदिरों के आसपास संरक्षित 'ओरण' (पवित्र उपवन) पर्यावरण संरक्षण में सहायक हैं।
IV. प्रमुख लोक देवता धामों में प्रवेश केवल विशिष्ट जातियों तक सीमित है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और III
(D) केवल I और III

99. प्रश्न 99. पंच पीरों में से एक लोक देवता हड़बूजी को एक सिद्ध शकुन शास्त्री एवं तपस्वी माना जाता है। पारंपरिक रूप से उनका वाहन किसे माना जाता है?
(A) सियार (गीदड़)
(B) श्वेत अश्व
(C) सिंह
(D) ऊंट

100. प्रश्न 100. लालदासी संप्रदाय, जो अपनी नैतिक आचार संहिता और समन्वयवादी विचारों के लिए जाना जाता है, की स्थापना संत लालदास ने की थी। उनका जन्म किस क्षेत्र में हुआ था?
(A) मेवाड़ (B) मारवाड़
(C) मेवात (D) वागड़

NODIA

71. (B) आदिनाथ
पाली जिले में अरावली पहाड़ियों के बीच स्थित राणकपुर जैन मंदिर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ (ऋषभदेव) को समर्पित है। इस मंदिर को 'चौमुखा मंदिर' भी कहा जाता है क्योंकि इसमें चारों दिशाओं में आदिनाथ जी की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह मंदिर अपने 1444 नक्काशीदार संगमरमर के स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है, जिनकी बनावट एक-दूसरे से भिन्न है।

72. (B) केवल III
ओसियां का महावीर मंदिर और नाकोड़ा का पार्श्वनाथ मंदिर प्रसिद्ध जैन तीर्थ हैं। हालाँकि, दिलवाड़ा का विमल वासाही मंदिर 1031 ईस्वी में गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव प्रथम के मंत्री विमल शाह द्वारा बनवाया गया था, न कि मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक दृष्टि से असत्य है, जिसके आधार पर विकल्प का चयन किया गया है।

73. (D) देपाक (देपा)
राणकपुर जैन मंदिर की अद्भुत वास्तुशिल्प योजना और भव्य डिजाइन को तैयार करने वाले मुख्य शिल्पी देपाक (देपा) थे। मेवाड़ के महाराणा कुंभा के शासनकाल में धरणक शाह नामक जैन व्यापारी ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। वास्तुकार देपाक ने अपनी शिल्प कला से 1444 स्तंभों वाले इस विशाल चौमुखा मंदिर को एक अलौकिक रूप प्रदान किया।

74. (A) भाद्रपद
पर्युषण पर्व जैन समुदाय का सबसे पवित्र और महत्त्वपूर्ण वार्षिक आध्यात्मिक उत्सव है। यह मुख्य रूप से हिंदू पंचांग के भाद्रपद (भादों) महीने में मनाया जाता है। श्वेतांबर जैन भाद्रपद कृष्ण पंचमी से और दिगंबर जैन (दशलक्षण पर्व के रूप में) भाद्रपद शुक्ल पंचमी से इसे मनाते हैं। इस दौरान आत्म-शुद्धि, उपवास, स्वाध्याय और क्षमावाणी पर्व मनाया जाता है।

75. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
गढ़बोर का चारभुजा नाथ मंदिर राजसमंद जिले में स्थित है। भगवान ब्रह्मा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक मंदिर पुष्कर (अजमेर) में स्थित है। प्रसिद्ध कैला देवी मंदिर करौली जिले में त्रिकूट पर्वत पर बना हुआ है। गोविंद देवजी का ऐतिहासिक मंदिर जयपुर के सिटी पैलेस परिसर में स्थित है। अतः इन मंदिरों का उनके संबंधित जिलों से सही मिलान प्राप्त होता है।

76. (B) राजसमंद
गढ़बोर का प्रसिद्ध चारभुजा नाथ मंदिर राजसमंद जिले के कुंभलगढ़ तहसील में स्थित वैष्णव संप्रदाय का अत्यंत पवित्र धाम है। यहाँ भगवान विष्णु (चारभुजाधारी) की पाषाण प्रतिमा पूजी जाती है। भाद्रपद माह की जलझूलनी एकादशी पर यहाँ बहुत बड़ा वार्षिक मेला भरता है, जिसमें देवविमान (बेवाण) को जल विहार कराया जाता है और लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं।

77. (A) पाशुपत
उदयपुर के पास कैलाशपुरी में स्थित एकलिंगजी मंदिर मेवाड़ के गुहिल/सिसोदिया राजवंश के कुलदेवता का स्थान है। यह मंदिर शैव धर्म के 'पाशुपत संप्रदाय' (लकुलीश संप्रदाय) का मुख्य केंद्र रहा है। इस मंदिर का निर्माण 8वीं शताब्दी में बप्पा रावल ने करवाया था। मेवाड़ के महाराणा स्वयं को एकलिंगजी का दीवान (प्रतिनिधि) मानकर राज्य का शासन चलाते थे।

78. (C) प्रेत बाधाओं से मुक्ति एवं मानसिक विकारों का उपचार
मेहंदीपुर बालाजी मंदिर भगवान हनुमान को समर्पित है, जो दौसा और करौली जिले की सीमा पर स्थित है। यह मंदिर पूरे भारत में बुरी आत्माओं, प्रेत बाधाओं से मुक्ति और गंभीर मानसिक विकारों के आध्यात्मिक उपचार हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ संकटमोचन बालाजी, प्रेतराज सरकार और भैरव बाबा की पूजा की जाती है, जहाँ प्रतिदिन हज़ारों पीड़ित लोग आते हैं।

79. (D) देवी की मूर्ति महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा जसोर (बंगाल) से लाई गई थी।
जयपुर के आमेर दुर्ग में स्थित शीला देवी का मंदिर कछवाहा राजवंश की इष्टदेवी का स्थान है। इस मंदिर में स्थापित काले संगमरमर की देवी प्रतिमा को महाराजा मानसिंह प्रथम 16वीं शताब्दी के अंत में बंगाल के जसोर नामक स्थान के राजा केदार को पराजित करके लाए थे। नवरात्रि के दौरान इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ एकत्र होती है।

80. (C) उसने स्थानीय कृषक और पशुपालक समाजों को सुरक्षात्मक प्रतीक और सामाजिक-आध्यात्मिक सांत्वना प्रदान की।
राजस्थान के इतिहास में लोक देवता पूजा का मुख्य सामाजिक योगदान यह था कि उसने ग्रामीण कृषकों और पशुपालकों को कठिन परिस्थितियों में सुरक्षा, राहत और आत्मबल प्रदान किया। लोक देवताओं ने मवेशियों की रक्षा, सर्वजन हिताय कार्य और सामाजिक समरसता के लिए प्राण न्योछावर किए। इससे ग्रामीण समाज में भ्रातृत्व, नैतिकता और सांस्कृतिक एकजुटता की भावना सुदृढ़ हुई।

81. (B) चौहान (अजमेर) - करणी माता
अजमेर के चौहान राजवंश की कुलदेवी शाकंभरी माता (या जीण माता) मानी जाती हैं, जबकि करणी माता बीकानेर के राठौड़ राजवंश की कुलदेवी हैं। अन्य विकल्पों में मेवाड़ के सिसोदिया वंश की कुलदेवी बाण माता, मारवाड़ के राठौड़ वंश की कुलदेवी नागणेची माता और जैसलमेर के भाटी वंश की कुलदेवी स्वांगिया माता हैं। अतः चौहान-करणी माता का युग्म गलत है।

82. (D) I, II और III
लोक देवताओं ने सामाजिक एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाबा रामदेवजी ने अस्पृश्यता मिटाने हेतु कामड़िया पंथ बनाया। पाबूजी को ऊंट-पालक रायका समुदाय अपना आराध्य मानता है। गोगाजी की पूजा हिंदू और मुस्लिम (कायमखानी) दोनों संप्रदाय श्रद्धापूर्वक करते हैं तथा उनके थान पर दोनों धर्मों के पुजारी होते हैं। अतः तीनों कथन सामाजिक समरसता को दर्शाते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

(D) सैन्य सेवा के लिए ब्रिटिश क्राउन द्वारा दिए गए शाही वित्तीय अनुदान

59. शेखावाटी क्षेत्र को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक आर्थिक परिवर्तनों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) चित्रित हवेलियाँ विशेष रूप से अत्यधिक किलेबंद सैन्य चौकियों के रूप में कार्य करने के लिए बनाई गई थीं।
(B) रेलमार्ग के कारण पारंपरिक कारवां मार्गों के पतन ने शुरू में व्यापारियों को बंदरगाह शहरों में जाने के लिए प्रेरित किया।
(C) कलकत्ता जैसे शहरों में जाने के बावजूद, व्यापारियों ने भव्य हवेलियों के निर्माण के लिए अपने मूल गांवों में धन वापस भेजा।
(D) इन हवेलियों का बाद में परित्याग काफी हद तक महानगरों में व्यापारी परिवारों के स्थायी निवास के कारण हुआ था।

60. निम्नलिखित में से किसे ऐतिहासिक रूप से शेखावाटी क्षेत्र का एक मुख्य नगर माना जाता है जो अपनी विरासत हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है?
(A) नाथद्वारा
(B) ओसियां
(C) मंडावा
(D) पुष्कर

61. अलवर की ऐतिहासिक रियासत की स्थापना 1770 ईस्वी में भरतपुर के जाटों से इस क्षेत्र को छीनने के बाद किस शासक द्वारा की गई थी?
(A) सवाई जय सिंह
(B) महाराजा सूरजमल
(C) राव बीका
(D) राव प्रताप सिंह

62. अलवर में मूसी महारानी की छतरी का ऐतिहासिक और वास्तुशिल्प महत्व क्या है?
(A) इसने ऐतिहासिक मत्स्य राज्य के प्राथमिक प्राचीन प्रशासनिक परिषद भवन के रूप में कार्य किया।
(B) यह 18वीं शताब्दी के दौरान वर्षा जल एकत्र करने के लिए निर्मित एक प्रमुख ऐतिहासिक बावड़ी है।
(C) महाराजा बख्तावर सिंह और उनकी रानी की स्मृति में निर्मित एक दोमंजिला छतरी
(D) यह दिल्ली सल्तनत युग के दौरान निर्मित सबसे पुरानी जीवित धार्मिक मस्जिद के रूप में खड़ी है।

63. स्वतंत्रता के बाद राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण के दौरान, 1948 में ऐतिहासिक नगर अलवर को किस नवगठित संस्था की राजधानी के रूप में नामित किया गया था?
(A) संयुक्त राजस्थान राज्य
(B) मत्स्य संघ
(C) वृहत राजस्थान
(D) राजस्थान संघ

64. अलवर जिले में स्थित कौन सा ऐतिहासिक रूप से प्रमुख स्थल अलौकिक इतिहास और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा लागू कड़े प्रवेश नियमों से जुड़े होने के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है?
(A) सिलीसेढ़ लेक पैलेस
(B) बाला किला
(C) सरिस्का पैलेस
(D) भानगढ़ दुर्ग

65. सूची I में दिए गए ऐतिहासिक शासकों/व्यक्तित्वों को सूची II में उनके संबंधित विरासत स्थलों या घटनाओं से सुमेलित कीजिए।
सूची I : (शासक/व्यक्तित्व)
P. महाराजा सूरजमल
Q. महाराजा बदन सिंह
R. लॉर्ड लेक
S. महाराजा जवाहर सिंह
सूची II : (स्थल/घटना संदर्भ)
1. विजयोत्सव मनाने के लिए जवाहर बुर्ज का निर्माण
2. डीग महलों का निर्माण शुरू करवाया
3. अभेद्य लोहागढ़ दुर्ग की स्थापना की
4. 1805 में भरतपुर दुर्ग के खिलाफ असफल घेराबंदी का नेतृत्व किया
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

66. भरतपुर के ऐतिहासिक लोहागढ़ दुर्ग ने एक "अभेद्य" संरचना के रूप में अपनी दुर्जेय प्रतिष्ठा मुख्य रूप से किस कारण अर्जित की?
(A) यह एक अत्यधिक ऊँची और दुर्गम पर्वत चोटी के शीर्ष पर स्थित था।
(B) यह पूरी तरह से एक विशाल प्राकृतिक जल निकाय और खाई से घिरा हुआ था।
(C) ब्रिटिश घेराबंदी के दौरान इसकी मोटी मिट्टी की दीवारों ने तोप के गोलों के प्रभाव को सोख लिया।
(D) इसका बचाव मराठों और फ्रांसीसी सैनिकों के संयुक्त सैन्य गठबंधन द्वारा किया गया था।

67. भरतपुर के डीग में स्थित ऐतिहासिक जल महल मुख्य रूप से किन दो शैलियों के शानदार वास्तुशिल्प संलयन को प्रदर्शित करते हैं?
(A) राजपूत और मुगल वास्तुकला शैलियों
(B) द्रविड़ और भारतीय-सारसेनिक
(C) ब्रिटिश औपनिवेशिक और गॉथिक शैलियों
(D) मराठा और कलिंग वास्तुकला शैलियों

68. 18वीं शताब्दी के दौरान भरतपुर के शासकों की राजनीतिक शक्ति और सैन्य सफलता का प्राथमिक ऐतिहासिक आधार किसमें निहित था?

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

95. (D) संत रामचरण
"अनभै वाणी" (अनुभव वाणी) रामस्नेही संप्रदाय की शाहपुरा शाखा के संस्थापक संत रामचरण जी के उपदेशों, भजनों और पदों का प्रामाणिक संग्रह है। इस ग्रंथ में निर्गुण राम की उपासना, गुरु की महिमा, ईश्वर भक्ति और नैतिक जीवन के नियमों का विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ रामस्नेही संप्रदाय के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र और पूजनीय माना जाता है।

96. (C) संत मावजी
दक्षिणी राजस्थान (वागड़ क्षेत्र) के प्रसिद्ध संत मावजी ने 'चोपड़ा' नामक ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में स्थानीय वागड़ी बोली में भविष्यवाणियाँ और आध्यात्मिक ज्ञान लिखा गया है। संत मावजी को भगवान विष्णु का 'कल्कि अवतार' माना जाता है। इन्होंने निष्कलंकी संप्रदाय की स्थापना की थी और बेणेश्वर धाम में बेणेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था।

97. (B) उसने आध्यात्मिक रचनाओं के लिए स्थानीय ढूंढाड़ी बोली को लोकप्रिय बनाया।
संत दादू दयाल और उनके शिष्यों ने अपने आध्यात्मिक काव्य की रचना के लिए संस्कृत के स्थान पर आम जनमानस की भाषा 'ढूंढाड़ी' (और सदुकड़ी) को अपनाया। इससे क्षेत्रीय भाषा को साहित्यिक दर्जा मिला और आम लोग निर्गुण भक्ति दर्शन को सरलता से समझ सके। दादू पंथी साहित्य ने राजस्थानी लोक भाषाओं और लोक वांग्मय के संवर्धन में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

98. (C) केवल I, II और III
शाहपुरा फड़ चित्रकला का केंद्र है, रामदेवरा मेला सामाजिक समरसता का प्रतीक है, और मंदिरों से लगे 'ओरण' (पवित्र वन) पर्यावरण संरक्षण करते हैं। हालाँकि, चौथा कथन असत्य है क्योंकि लोक देवताओं के धाम सभी जातियों और वर्गों के लिए खुले रहते हैं। बिना किसी भेदभाव के सभी लोग दर्शन करते हैं। अतः केवल कथन I, II और III ही सत्य हैं।

99. (A) सियार (गीदड़)
राजस्थान के पंच पीरों में शामिल लोक देवता हड़बूजी सांखला एक सिद्ध शकुन शास्त्री, वचनसिद्ध योद्धा और तपस्वी थे। वे बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई थे। हड़बूजी की सवारी पारंपरिक रूप से 'सियार' (गीदड़) मानी जाती है। बैंगटी में स्थित उनके मुख्य मंदिर में हड़बूजी की बैलगाड़ी (छकड़ा गाड़ी) की पूजा की जाती है, जिससे वे अपंग गायों के लिए घास लाते थे।

100. (C) मेवात
लालदासी संप्रदाय के प्रवर्तक संत लालदास जी का जन्म मेवात क्षेत्र के धोलीदूब गाँव (अलवर) में हुआ था। इन्होंने मेवात क्षेत्र में निर्गुण भक्ति, नैतिक आचरण और सांप्रदायिक सौहार्द का संदेश दिया। संत लालदास जी ने कबीर परंपरा का अनुसरण करते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया। लालदासी संप्रदाय की मुख्य पीठ अलवर जिले के नगला गाँव में स्थित है।

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 18
राजस्थान के ऐतिहासिक स्थल

1. 2013 की विश्व धरोहर सूची में शामिल राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों को वर्गीकृत करने और मान्यता देने के लिए यूनेस्को द्वारा निम्नलिखित में से किस मानदंड का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है?
   (A) राजपूत सैन्य पहाड़ी वास्तुकला और उनके सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतिनिधित्व
   (B) आधुनिक प्रशासनिक केंद्रों के रूप में उनका कार्य
   (C) उनका ऐतिहासिक महत्व केवल मुगल साम्राज्य से जुड़ा होना
   (D) मुख्य रूप से प्रागैतिहासिक पुरातात्विक उत्खनन स्थलों के रूप में उनकी स्थिति

2. राजस्थान के विरासत स्थलों के निम्नलिखित ऐतिहासिक वर्गीकरणों में से असंगत की पहचान कीजिए।
   (A) पहाड़ी किले (पर्वतीय दुर्ग)
   (B) बावड़ियाँ
   (C) आधुनिक औद्योगिक केंद्र
   (D) भित्ति-चित्रित हवेलियाँ

3. सूची I में दिए गए राजस्थान के ऐतिहासिक क्षेत्रों को सूची II में दिए गए उनकी प्रमुख ऐतिहासिक वास्तुशिल्प विरासत के साथ सुमेलित कीजिए।
   सूची I : (क्षेत्र)
   P. मेवाड़
   Q. शेखावाटी
   R. हाड़ौती
   S. मारवाड़
   सूची II : (विरासत का प्रकार)
   1. भित्ति-चित्रों वाली हवेलियाँ
   2. पहाड़ी दुर्ग और शाही छत्रियाँ
   3. मरुस्थलीय व्यापारिक केंद्र और किलेबंदी
   4. जटिल नक्काशीदार बावड़ियाँ और महल
   (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
   (D) P-3, Q-1, R-4, S-2

4. ऐतिहासिक वास्तुशिल्प शब्दावली "मारु-गुर्जर" का उपयोग राजस्थान में किस श्रेणी की संरचनाओं को परिभाषित करने के लिए सबसे उपयुक्त रूप से किया जाता है?
   (A) भारतीय-सारसेनिक औपनिवेशिक सार्वजनिक भवन
   (B) 18वीं शताब्दी के दौरान निर्मित सैन्य किलेबंदी
   (C) मुगल-प्रभावित उद्यान महल
   (D) प्रारंभिक मध्यकालीन और मध्यकालीन मंदिर वास्तुकला

NODIA

5. अपने विशाल दुर्ग की किलेबंदी के अतिरिक्त, चित्तौड़गढ़ का ऐतिहासिक महत्व किस प्रमुख राजपूत राजवंश की प्राथमिक राजधानी के रूप में इसकी विरासत में गहराई से निहित है?
   (A) मारवाड़ के राठौड़
   (B) मेवाड़ के गुहिल (सिसोदिया)
   (C) आमेर के कछवाहा
   (D) अजमेर के चौहान

6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग के भीतर स्थित ऐतिहासिक स्मारकों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
   (A) मालवा पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में महाराणा कुंभा द्वारा कीर्ति स्तंभ का निर्माण करवाया गया था।
   (B) विजय स्तंभ, कीर्ति स्तंभ से भी पुराना है और प्रथम जैन तीर्थंकर को समर्पित है।
   (C) मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में महाराणा कुंभा द्वारा विजय स्तंभ का निर्माण करवाया गया था।
   (D) कीर्ति स्तंभ और विजय स्तंभ दोनों का निर्माण महाराणा प्रताप के शासनकाल के दौरान हुआ था।

7. चित्तौड़गढ़ के ऐतिहासिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. यह उदयपुर की स्थापना से पहले कई शताब्दियों तक मेवाड़ राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता था।
   II. यह विभिन्न सैन्य घेराबंदी के दौरान हुए तीन प्रमुख जौहरों के लिए ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है।
   III. दुर्ग का निर्माण मूल रूप से मुगल सम्राट अकबर द्वारा राजपूताना क्षेत्र को सुरक्षित करने के लिए करवाया गया था।
   उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

8. निम्नलिखित में से किस ऐतिहासिक व्यक्तित्व ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग के विरुद्ध किसी प्रमुख घेराबंदी (आक्रमण) का नेतृत्व नहीं किया था?
   (A) सम्राट औरंगजेब
   (B) अलाउद्दीन खिलजी
   (C) गुजरात का बहादुर शाह
   (D) सम्राट अकबर

9. 1559 में महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा उदयपुर नगर की ऐतिहासिक स्थापना मुख्य रूप से किस रणनीतिक आवश्यकता से प्रेरित थी?
(A) उत्तरी रेशम मार्ग पर एक प्रमुख व्यापारिक एकाधिकार स्थापित करना
(B) चित्तौड़गढ़ पर खतरों के बाद एक सुरक्षित, रक्षात्मक राजधानी की स्थापना करना
(C) तटीय बंदरगाहों के माध्यम से मेवाड़ की समुद्री व्यापार क्षमताओं का विस्तार करना
(D) राजधानी को स्थानांतरित करने के आधिकारिक शाही निर्देश का पालन करना

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : उदयपुर ऐतिहासिक और व्यापक रूप से 'झीलों की नगरी' के रूप में जाना जाता है।
कारण (R) : उत्तरोत्तर महाराणाओं ने विषमतापूर्ण भूभाग में निरंतर पेयजल और सिंचाई सुरक्षित करने के लिए एक कृत्रिम, आपस में जुड़ी झील प्रणाली विकसित की थी।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

11. उदयपुर में आहड़ का ऐतिहासिक स्थल मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किसके लिए प्रसिद्ध है?
(A) मेवाड़ के महाराणाओं की शाही महासतियों (छतरियों) के स्थल के रूप में
(B) महाराणा प्रताप के ऐतिहासिक जन्मस्थान के रूप में
(C) ईस्ट इंडिया कंपनी की केंद्रीय टकसाल के रूप में
(D) उस स्थल के रूप में जहाँ 1818 की संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे

12. उदयपुर की ऐतिहासिक झीलों और उनके संबंधित निर्माताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(A) पिछोला झील - महाराणा लाखा के शासनकाल के दौरान एक बंजारे द्वारा निर्मित
(B) फतेह सागर झील - मूल रूप से महाराणा जय सिंह द्वारा निर्मित और बाद में महाराणा फतेह सिंह द्वारा पुनर्निर्मित
(C) राजसमंद झील - उदयपुर नगर में बाढ़ को रोकने के लिए महाराणा सज्जन सिंह द्वारा निर्मित
(D) उदय सागर झील - महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा निर्मित

13. जयपुर के ऐतिहासिक नियोजित नगर को मुख्य रूप से किस प्रसिद्ध वास्तुकार और विद्वान द्वारा अभिकल्पित (डिजाइन) किया गया था?
(A) मंडन
(B) सर स्विंटन जैकब
(C) उस्ताद अहमद लाहौरी
(D) विद्याधर भट्टाचार्य

14. जयपुर के ऐतिहासिक नगर नियोजन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस नगर की स्थापना 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी।
II. इसका विन्यास (लेआउट) प्राचीन भारतीय वास्तुशिल्प ग्रंथ, शिल्प शास्त्र से अत्यधिक प्रभावित था।
III. नगर को मूल रूप से नौ आयताकार क्षेत्रों वाली ग्रिड (जाल) पद्धति का उपयोग करके अभिकल्पित किया गया था।
IV. वास्तुशिल्प अभिकल्प को पूरी तरह से ब्रिटिश कलकत्ता के औपनिवेशिक नियोजन से अपनाया गया था।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

15. सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा जयपुर में जंतर-मंतर स्थापित करने का ऐतिहासिक उद्देश्य क्या था?
(A) आगे बढ़ती मराठा सेनाओं का पता लगाने के लिए एक सैन्य अवलोकन चौकी के रूप में कार्य करना
(B) अत्यधिक सटीक खगोलीय अवलोकन प्रदान करना और परिष्कृत खगोलीय सारणी संकलित करना
(C) कछवाहा राजवंश के लिए केंद्रीय कोष और शस्त्रागार के रूप में कार्य करना
(D) केवल शाही समारोहों के शुभ समय का निर्धारण करने के लिए एक स्मारक धूपघड़ी के रूप में कार्य करना

16. किस विशिष्ट ऐतिहासिक और वास्तुशिल्प पहलू ने 2019 में जयपुर के परकोटे वाले नगर को यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा दिलाने में सबसे सीधे योगदान दिया?
(A) प्राचीन मुगल हथियारों के सबसे बड़े आधिकारिक संग्रह का संरक्षण
(B) पूरी तरह से श्वेत संगमरमर से निर्मित एक प्रारंभिक नियोजित भारतीय नगर के रूप में इसकी अनूठी स्थिति
(C) राजपूताना एजेंसी की केंद्रीय प्रशासनिक राजधानी के रूप में इसकी विशेष भूमिका
(D) हिंदू, मुगल और पश्चिमी शैलियों को संयोजित करने वाला इसका ग्रिड-आधारित नगर नियोजन

17. ऐतिहासिक नगर जोधपुर की नींव वर्ष 1459 में किस प्रमुख शासक द्वारा रखी गई थी?
(A) राव जोधा
(B) राव चूंडा
(C) राव मालदेव
(D) महाराजा जसवंत सिंह

NODIA

83. (A) भूमि और गाँव की सीमाओं के रक्षक देवता
राजस्थानी लोक संस्कृति में 'भोमियाजी' को भूमि, गाँव के क्षेत्र और गाँव की सीमाओं के रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है। प्रत्येक गाँव में भोमियाजी का थान स्थापित होता है। मान्यता है कि जिन शूरवीरों ने गाँव की भूमि या मवेशियों की रक्षा करते हुए अपने प्राण त्याग दिए, वे भोमियाजी के रूप में ग्रामवासियों द्वारा पूजे जाते हैं।

84. (C) मारवाड़ के पांच लोक देवता जो हिंदुओं और मुसलमानों दोनों द्वारा समान रूप से पूजे जाते हैं।
राजस्थान की लोक परंपरा में "पंच पीर" उन पांच महान लोक देवताओं को कहा जाता है जिनकी पूजा हिंदू और मुस्लिम दोनों संप्रदायों द्वारा समान रूप से पीर मानकर की जाती है। इन पंच पीरों में पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, मांगलिया मेहाजी और गोगाजी शामिल हैं। यह अवधारणा राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक सौहार्द की अनुपम मिसाल है।

85. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
गोगाजी का मुख्य धाम गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) में स्थित है। हड़बूजी का मुख्य मंदिर बैंगटी (फलोदी) में है जहाँ उनकी बैलगाड़ी की पूजा होती है। मेहाजी मांगलिया का धाम बापणी (जोधपुर) में स्थित है। रामदेवजी का सुप्रसिद्ध धाम रुणेचा (रामदेवरा, जैसलमेर) में स्थित है। ये सभी राजस्थान के पंच पीरों में शामिल प्रमुख लोक देवता हैं।

86. (D) तेजाजी
राजस्थान की लोक संस्कृति में 'पंच पीरों' के अंतर्गत पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, मांगलिया मेहाजी और गोगाजी को परिगणित किया जाता है। वीर तेजाजी राजस्थान के अत्यंत पूजनीय और प्रमुख लोक देवता हैं, परंतु उन्हें पारंपरिक पंच पीरों की सूची में शामिल नहीं किया गया है। तेजाजी को मुख्य रूप से नागों के देवता और कृषि उपकारक देवता के रूप में पूजा जाता है।

87. (B) चार हाथों वाले देवता
मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्र में पूजे जाने वाले लोक देवता वीर कल्लाजी राठौड़ को 'चार हाथों वाले देवता' के नाम से जाना जाता है। वे एक कुशल योद्धा, अस्त्र-शस्त्र विद्या के धनी और सिद्ध पुरुष थे। कल्लाजी को योग, जड़ी-बूटी तथा औषधि ज्ञान का पारंगत माना जाता था। चित्तौड़गढ़ के तीसरे साके में दिखाई गई अद्भुत वीरता के कारण वे अमर हुए।

88. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
सन 1568 में चित्तौड़गढ़ के तीसरे शाके के दौरान अकबर की सेना से लड़ते हुए वीर कल्लाजी ने अपने घायल चाचा जयमल राठौड़ को अपने कंधों पर बिठा लिया। इसके बाद दोनों ने एक साथ दो-दो तलवारें चलाकर मुगलों का संहार किया। देखने वालों को ऐसा लगा जैसे चार हाथों वाला कोई देवता युद्ध कर रहा हो। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

89. (D) तिलवाड़ा, बालोतरा
लोक देवता मल्लीनाथजी मारवाड़ के राठौड़ वंश के सिद्ध पुरुष और योद्धा थे। इनका मुख्य धाम बालोतरा जिले के तिलवाड़ा गाँव में लूनी नदी के तट पर स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र माह में 'मल्लीनाथ पशु मेला' आयोजित किया जाता है। यह मेला राजस्थान के सबसे प्राचीन पशु मेलों में से एक है, जहाँ थारपारकर और कांकरेज नस्ल के मवेशियों का व्यापार होता है।

90. (B) केवल IV
तिलवाड़ा का मल्लीनाथ मेला, परबतसर का तेजाजी मेला और गोगामेड़ी मेला प्रसिद्ध पशु व्यापार केंद्र हैं। इसके विपरीत, जैसलमेर में आयोजित होने वाला रामदेवरा मेला मुख्य रूप से एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक मेला है, न कि व्यावसायिक पशु प्रदर्शनी। रामदेवरा मेले में लाखों श्रद्धालु दर्शन और मन्नत हेतु आते हैं। अतः चौथा कथन असत्य होने के कारण सही उत्तर है।

91. (B) माही, सोम, जाखम
दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर जिले में स्थित बेणेश्वर धाम तीन पवित्र नदियों - माही, सोम और जाखम के त्रिवेणी संगम पर बसा हुआ है। इस संगम स्थल पर माघ पूर्णिमा को विशाल मेला भरता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यहाँ स्वयंभू शिवलिंग स्थित है, जिसकी पूजा-अर्चना जनजातीय समाज और अन्य श्रद्धालुओं द्वारा अत्यंत निष्ठा के साथ की जाती है।

92. (B) आदिवासियों का कुंभ
डूंगरपुर जिले में स्थित बेणेश्वर मेले को 'आदिवासियों का कुंभ' तथा 'वागड़ का महाकुंभ' कहा जाता है। इस मेले में मुख्य रूप से भील जनजाति के लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। श्रद्धालु यहाँ त्रिवेणी संगम में अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं और स्नान कर पुण्य लाभ कमाते हैं। यह आदिवासियों की आस्था का सबसे बड़ा केंद्र है।

93. (A) कैला देवी मेला (करौली), तेजाजी मेला (परबतसर), पुष्कर मेला (अजमेर), बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर)
चैत्र माह से प्रारंभ होने वाले विक्रम संवत वर्ष के अनुसार, कैला देवी मेला चैत्र शुक्ल पक्ष में भरता है। तेजाजी मेला भाद्रपद शुक्ल दशमी को आयोजित होता है। पुष्कर मेला कार्तिक पूर्णिमा को भरता है। बेणेश्वर मेला माघ पूर्णिमा को आयोजित होता है। अतः चैत्र से माघ माह के क्रम में इन मेलों का सही कालानुक्रम विकल्प में दिया गया क्रम है।

94. (C) पृथ्वीराज राठौड़
प्रसिद्ध डिंगल काव्य ग्रंथ "वेलि क्रिसन रुकमणी री" की रचना बीकानेर के राजकुमार और अकबर के दरबारी कवि पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा की गई थी। इन्होंने इस ग्रंथ की रचना गागरोन दुर्ग में रहकर 1580 ईस्वी के आसपास की थी। संत कवि दुरसा आढ़ा ने इस ग्रंथ को 'पाँचवाँ वेद' और 'उन्नीसवाँ पुराण' कहकर इसकी साहित्यिक व आध्यात्मिक श्रेष्ठता की प्रशंसा की थी।

Downloaded from www.pdf.tube

(A) मराठा परिसंघ द्वारा किए गए विनाशकारी सैन्य आक्रमण
(B) एक भीषण क्षेत्रीय भूकंप जिसने सोनार दुर्ग को पूरी तरह से नष्ट कर दिया
(C) मरुस्थलीय व्यापारिक मार्गों को दरकिनार करते हुए समुद्री बंदरगाहों और रेलमार्ग का उदय
(D) स्थानीय स्वर्ण खदानों का पूर्ण रूप से समाप्त हो जाना

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : अजमेर राजस्थान में हिंदू-मुस्लिम समन्वयी संस्कृति का एक प्रमुख ऐतिहासिक केंद्र बनकर उभरा।
कारण (R) : इसने चौहानों की एक प्रमुख राजनीतिक राजधानी के रूप में कार्य किया और बाद में सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की पूजनीय आध्यात्मिक पीठ बन गया।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

30. अजमेर में "अढ़ाई दिन का झोंपड़ा" के नाम से जानी जाने वाली ऐतिहासिक संरचना का निर्माण मूल रूप से किस रूप में कार्य करने के लिए किया गया था?
(A) चौहान राजवंश के लिए शाही टकसाल
(B) पेयजल उपलब्ध कराने के लिए बावड़ी
(C) संस्कृत महाविद्यालय और सरस्वती मंदिर
(D) एक प्रमुख फारसी व्यापारी का मकबरा

31. मुगल साम्राज्य के ऐतिहासिक शासनकाल के दौरान, अजमेर नगर का प्राथमिक प्रशासनिक महत्व क्या था?
(A) इसने शाही व्यापारिक बलों के लिए प्राथमिक नौसेना और समुद्री अड्डे के रूप में कार्य किया।
(B) इसने राजपूताना राज्यों की देखरेख करने वाले सूबा मुख्यालय के रूप में कार्य किया।
(C) इसे सम्राट अकबर की विशेष वार्षिक ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में नामित किया गया था।
(D) इसे शाही नियंत्रण से बाहर एक स्वतंत्र बफर राज्य के रूप में बनाए रखा गया था।

32. 12वीं शताब्दी की शुरुआत में अजमेर नगर की स्थापना का श्रेय किस ऐतिहासिक शासक को दिया जाता है?
(A) अर्णोराज चौहान
(B) पृथ्वीराज चौहान तृतीय
(C) विग्रहराज चतुर्थ
(D) अजयराज चौहान

33. एक धार्मिक नगर के रूप में नाथद्वारा की ऐतिहासिक प्रमुखता तब शुरु हुई जब 17वीं शताब्दी में श्रीनाथजी की मूर्ति को किस मुगल सम्राट की मूर्तिभंजक नीतियों से बचाने के लिए यहाँ लाया गया था?
(A) औरंगजेब
(B) अकबर
(C) जहांगीर
(D) शाहजहाँ

34. नाथद्वारा की पारंपरिक पिछवाई चित्रकारी ऐतिहासिक रूप से किस प्राथमिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए विकसित हुई थी?
(A) मेवाड़ के महाराणाओं के व्यापक सैन्य अभियानों को दस्तावेज के रूप में दर्ज करने के लिए
(B) वरिष्ठ सिसोदिया रानियों के लिए औपचारिक शाही चित्रों के रूप में कार्य करने के लिए
(C) भगवान श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे सजावटी पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करने के लिए
(D) मेवाड़ को गुजरात से जोड़ने वाले प्राचीन वाणिज्यिक व्यापारिक मार्गों का मानचित्रण करने के लिए

35. नाथद्वारा का ऐतिहासिक नगर किस प्रमुख वैष्णव धार्मिक संप्रदाय का केंद्रीय तीर्थ स्थल है?
(A) पुष्टिमार्ग संप्रदाय
(B) रामानंदी संप्रदाय
(C) निम्बार्क संप्रदाय
(D) बिश्नोई संप्रदाय

36. श्रीनाथजी की मूर्ति की स्थापना के बाद ऐतिहासिक रूप से इसका नाम बदलकर नाथद्वारा किए जाने और विकसित किए जाने से पहले, इस गांव को मूल रूप से किस नाम से जाना जाता था?
(A) एकलिंगजी
(B) कांकरोली
(C) नागदा
(D) सिहाड़

37. पुष्कर नगर ऐतिहासिक और वैश्विक रूप से एक प्राचीन तीर्थ स्थल के रूप में मुख्य रूप से किसकी उपस्थिति के कारण प्रसिद्ध है?
(A) राजस्थान में जैन दिलवाड़ा शैली के मंदिरों का सबसे बड़ा संकेंद्रण
(B) भगवान ब्रह्मा को समर्पित एक प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर
(C) दादू पंथ का केंद्रीय आध्यात्मिक मंदिर और मुख्यालय
(D) सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा उत्खनित बंदरगाह स्थल

NODIA

38. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पुष्कर की ऐतिहासिक और ग्रंथ संबंधी प्राचीनता की सही पहचान करता है?
(A) यह पहली बार 18वीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा एक सैन्य अड्डे के रूप में स्थापित किया गया था।
(B) यह एक आधुनिक शहरी बसावट है जिसका मुगल काल से पहले के ग्रंथों में कोई उल्लेख नहीं है।
(C) रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में इसे एक पवित्र स्थल के रूप में उल्लेखित किया गया है।
(D) यह विशेष रूप से सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान एक बौद्ध मठीय केंद्र के रूप में स्थापित किया

गया था।

39. पुष्कर झील के किस ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण घाट का नाम महात्मा गांधी की अस्थियों के विसर्जन के बाद बदलकर गांधी घाट कर दिया गया था?
(A) ब्रह्मा घाट
(B) वराह घाट
(C) सप्तर्षि घाट
(D) गौ घाट

40. पुष्कर मेले के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह पूरी तरह से एक धार्मिक सभा के रूप में कार्य करता है जिसका स्थानीय व्यापार या वाणिज्य में कोई ऐतिहासिक योगदान नहीं है।
(B) यह प्रतिवर्ष हिंदू महीने कार्तिक में मनाया जाता है।
(C) ऐतिहासिक रूप से, इसने राजस्थान में सबसे प्रमुख पशु व्यापार बाजारों में से एक के रूप में कार्य किया।
(D) यह मेला महत्वपूर्ण घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को आकर्षित करता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

41. माउंट आबू के विकास से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. राजपूताना एजेंसी मुख्यालय की स्थापना
II. परमार राजवंश का शासनकाल
III. विमल शाह द्वारा विमल वसाही मंदिर का निर्माण
IV. चौहान राजवंश के राव लुम्बा द्वारा इस क्षेत्र की विजय
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) II, III, IV, I
(B) III, II, IV, I
(C) IV, I, II, III
(D) II, IV, III, I

42. भारत में ब्रिटिश सर्वोपरिता की अवधि के दौरान, माउंट आबू का ऐतिहासिक महत्व काफी हद तक किस रूप में इसके कार्य से जुड़ा था?
(A) ब्रिटिश विरोधी विद्रोहों को दबाने के लिए प्राथमिक सैन्य छावनी
(B) राजपूताना में ए.जी.जी. का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय
(C) आंदोलन के राजनीतिक बंदियों के लिए मुख्य नजरबंदी शिविर
(D) मराठों की विशेष राजनीतिक और प्रशासनिक राजधानी

43. माउंट आबू की सबसे ऊँची चोटी गुरु शिखर का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व किस पौराणिक व्यक्तित्व को समर्पित गुफा मंदिर से निकटता से जुड़ा हुआ है?
(A) भगवान दत्तात्रेय
(B) भगवान परशुराम
(C) महर्षि विश्वामित्र
(D) भगवान महावीर

44. राजपूत अभिजात वर्ग के बीच सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए ब्रिटिश प्रशासन द्वारा 1889 में माउंट आबू में किस प्रमुख ऐतिहासिक संस्थान की स्थापना की गई थी?
(A) राजपूताना मिडल स्कूल
(B) मेयो कॉलेज रिफॉर्म कमेटी
(C) वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा
(D) राजस्थान सेवा संघ

45. माउंट आबू के ऐतिहासिक दिलवाड़ा मंदिरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विमल वसाही, सबसे पुराना मंदिर, प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित है।
II. इन मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से गुजरात के सोलंकी (चालुक्य) शासकों के धनी मंत्रियों द्वारा करवाया गया था।
III. लूण वसाही (लूना वसाही) 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ को समर्पित है।
IV. पूरा मंदिर परिसर धौलपुर से लाए गए लाल बलुआ पत्थर के उपयोग से निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

46. माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा मंदिरों की असाधारण ऐतिहासिक वास्तुकला को व्यापक रूप से किस वास्तुशिल्प शैली का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है?
(A) द्रविड़ शैली वास्तुकला
(B) कलिंग शैली वास्तुकला
(C) मारु-गुर्जर शैली
(D) भारतीय-इस्लामिक वास्तुकला

47. निम्नलिखित में से कौन सा मंदिर ऐतिहासिक रूप से माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर परिसर का हिस्सा नहीं है?
(A) विमल वसाही
(B) रणकपुर चतुर्मुख मंदिर
(C) लूण वसाही
(D) पित्तलहर मंदिर

48. दिलवाड़ा परिसर के भीतर भव्य ऐतिहासिक लूण वसाही मंदिर का निर्माण 1230 ईस्वी में किस प्रमुख मंत्री जोड़ी द्वारा करवाया गया था?
(A) विमल शाह और धन्ना शाह
(B) हेमचंद्र और कुमारपाल
(C) भामाशाह और ताराचंद
(D) वस्तुपाल और तेजपाल

49. रणथंभौर दुर्ग का ऐतिहासिक महत्व दिल्ली सल्तनत के खिलाफ किस शासक के भीषण प्रतिरोध द्वारा सबसे प्रसिद्ध रूप से अमर है?
(A) हम्मीर देव चौहान

Click Here to Buy book on Amazon

(B) राणा सांगा
(C) पृथ्वीराज चौहान तृतीय
(D) राव मालदेव

50. रणथंभौर दुर्ग के ऐतिहासिक भूगोल और स्थिति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह अरावली और विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं के संगम पर रणनीतिक रूप से स्थित है।
(B) दुर्ग की स्थिति ने ऐतिहासिक रूप से इसे उत्तर भारत और मालवा के बीच व्यापारिक मार्गों को नियंत्रित करने की अनुमति दी।
(C) यह पूरी तरह से एक समतल मरुस्थलीय मैदान पर बनाया गया था ताकि आने वाले दुश्मनों का अबाध दृश्य दिखाई दे सके।
(D) विषम भूभाग और घने जंगलों ने ऐतिहासिक रूप से एक अभेद्य किले के रूप में इसकी प्रतिष्ठा में योगदान दिया।

51. 1301 ईस्वी में रणथंभौर में हुई ऐतिहासिक घटना को राजस्थान के इतिहास में मुख्य रूप से किस रूप में याद किया जाता है?
(A) रानी रंग देवी के नेतृत्व में राजस्थान में जौहर का पहला दर्ज उदाहरण
(B) मुगलों और राजपूतों के बीच एक निर्णायक शांति संधि पर हस्ताक्षर
(C) जयपुर राज्य की स्थापना
(D) राजपूताना में 1857 के विद्रोह की अंतिम लड़ाई

52. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प रणथंभौर दुर्ग के परिसर में स्थित एक अत्यधिक पूजनीय और ऐतिहासिक रूप से अद्वितीय मंदिर की सही पहचान करता है?
(A) करणी माता मंदिर, जो चूहों की बड़ी आबादी के लिए ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है
(B) ब्रह्मा मंदिर, जिसे इस क्षेत्र में अपनी तरह के एकमात्र प्रमुख मंदिर के रूप में पूजा जाता है
(C) श्रीनाथजी मंदिर, जिसमें मूल रूप से मथुरा से लाई गई पवित्र मूर्ति स्थापित है
(D) त्रिनेत्र गणेश मंदिर, जो विवाह के निमंत्रण पत्र प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध है

53. बूंदी के ऐतिहासिक नगर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी अनेक ऐतिहासिक बावड़ियों के कारण इसे व्यापक रूप से 'बावड़ियों का शहर' कहा जाता है।
II. रानी जी की बावड़ी, जो इसकी सबसे प्रसिद्ध बावड़ियों में से एक है, 1699 में रानी नाथावती द्वारा बनवाई गई थी।
III. यह नगर ऐतिहासिक रूप से किसी भी शाही महल से रहित है, जिसमें केवल व्यापारिक हवेलियाँ शामिल हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

54. 14वीं शताब्दी में मुख्य रूप से राव बर सिंह द्वारा निर्मित विशाल ऐतिहासिक किलाबंदी, जो बूंदी के क्षितिज पर हावी है, किस नाम से जानी जाती है?
(A) मेहरानगढ़
(B) नाहरगढ़
(C) तारागढ़ दुर्ग
(D) जूनागढ़

NODIA

55. बूंदी के गढ़ पैलेस के अंदर स्थित ऐतिहासिक चित्रशाला किस विरासत संपत्ति को संरक्षित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है?
(A) पूर्वी राजस्थान में खोजे गए सबसे प्राचीन अशोक शिलालेख
(B) आयातित मध्यकालीन यूरोपीय तोपों का एक विशाल ऐतिहासिक संग्रह
(C) भारतीय संविधान की मूल हस्तलिखित पांडुलिपियाँ
(D) बूंदी चित्रकला शैली के लघु भित्ति चित्र

56. मुख्य रूप से बूंदी से जुड़ी ऐतिहासिक बावड़ियों और स्मारकों के संबंध में असंगत की पहचान कीजिए।
(A) चांद बावड़ी (आभानेरी)
(B) रानी जी की बावड़ी (बूंदी)
(C) धाबाई कुंड (बूंदी)
(D) नगर सागर कुंड (बूंदी)

57. ऐतिहासिक शेखावाटी क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी चित्रित हवेलियों के कारण इसे प्रायः "राजस्थान की खुली कला दीर्घा" कहा जाता है।
II. इन हवेलियों के निर्माण में भारी उछाल मुख्य रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान आया था।
III. निर्माण और विस्तृत भित्ति चित्रों को काफी हद तक समृद्ध मारवाड़ी व्यापारी समुदाय द्वारा वित्तपोषित किया गया था।
IV. इस क्षेत्र में ऐतिहासिक रूप से उदयपुर, राजसमंद और भीलवाड़ा के आधुनिक जिले शामिल हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

58. ऐतिहासिक धन का विशाल संचय जिसने शेखावाटी के व्यापारियों को अपनी अलंकृत हवेलियों के निर्माण में सक्षम बनाया, मुख्य रूप से किससे उत्पन्न हुआ था?
(A) व्यापक स्थानीय मानसून कृषि कार्यों से उत्पन्न कृषि अधिशेष
(B) ब्रिटिश बंदरगाह शहरों में अंतर-क्षेत्रीय व्यापार लाभ और उद्यम
(C) स्थानीय ग्रामीण किसान समुदायों पर लगातार लगाए जाने वाले भारी कर

18. निम्नलिखित में से कौन सा मारवाड़ क्षेत्र में राठौड़ राजवंश की प्रमुख ऐतिहासिक राजधानियों के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) मंडोर, खेड़, जोधपुर
(B) खेड़, मंडोर, जोधपुर
(C) जोधपुर, मंडोर, खेड़
(D) मंडोर, जोधपुर, खेड़

19. जोधपुर के पुराने ऐतिहासिक मोहल्लों में मकानों का विशिष्ट नीला रंग पारंपरिक रूप से किस सांस्कृतिक और कार्यात्मक उद्देश्य से जुड़ा था?
(A) ब्राह्मण आवासों को दर्शाने और मरुस्थलीय गर्मी को दूर रखने के लिए
(B) विशेष रूप से शाही परिवार के आवासीय मकानों को दर्शाने के लिए
(C) नील व्यापार में विशेषज्ञता वाले व्यापारी मकानों की पहचान करने के लिए
(D) ब्रिटिश औपनिवेशिक युग के दौरान निर्मित सार्वजनिक संरचनाओं को चिह्नित करने के लिए

20. जोधपुर के ऐतिहासिक स्थलों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(A) मेहरानगढ़ दुर्ग - चिड़िया-टूँक पहाड़ी पर निर्मित
(B) जसवंत थड़ा - मारवाड़ का ताज महल, महाराजा सरदार सिंह द्वारा निर्मित
(C) मंडोर उद्यान - प्रारंभिक राठौड़ शासकों की ऐतिहासिक छत्रियाँ स्थित हैं
(D) उम्मेद भवन पैलेस - अकाल राहत प्रदान करने के लिए 15वीं शताब्दी में निर्मित

21. ऐतिहासिक रूप से, एक प्रमुख शहरी केंद्र के रूप में बीकानेर की समृद्धि काफी हद तक किस रूप में इसकी स्थिति पर निर्भर थी?
(A) उत्कृष्ट राजस्थानी वस्त्रों के निर्यात के लिए प्राथमिक अंतर्देशीय व्यापार डिपो
(B) मध्य एशिया को गुजरात के बंदरगाहों से जोड़ने वाला एक प्रमुख कारवां पारगमन केंद्र
(C) सम्राट जहांगीर के अधीन मुगल साम्राज्य की शाही राजधानी
(D) प्रमुख सूफी भक्ति संप्रदायों के लिए प्रमुख धार्मिक तीर्थ केंद्र

22. ऊँट की खाल पर सोने की नक्काशी वाली उत्कृष्ट उस्ता कला का ऐतिहासिक विकास बीकानेर में किस प्रमुख शासक के संरक्षण में फला-फूला?
(A) राव बीका
(B) महाराजा गंगा सिंह
(C) महाराजा अनूप सिंह
(D) राव लूणकरण

23. बीकानेर के एक ऐतिहासिक शासक द्वारा शुरू की गई किस महत्वाकांक्षी आधारभूत संरचना परियोजना ने शुष्क क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बदल दिया और स्वतंत्रता से पहले आधुनिक शहरी बसावट में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(A) आधुनिक इंदिरा गांधी नहर प्रणाली का निर्माण
(B) लूनी नदी भंडारण बांध का बड़े पैमाने पर निर्माण
(C) दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे का विकास
(D) महाराजा गंगा सिंह द्वारा स्थापित गंग नहर परियोजना

24. मुख्य रूप से बीकानेर नगर से जुड़े निम्नलिखित ऐतिहासिक स्थलों में से असंगत की पहचान कीजिए।
(A) पटवों की हवेली
(B) जूनागढ़ दुर्ग
(C) लालगढ़ पैलेस
(D) रामपुरिया हवेलियाँ

25. प्रायः 'स्वर्ण नगरी' कहे जाने वाले जैसलमेर की ऐतिहासिक नींव 12वीं शताब्दी में किस भाटी राजपूत शासक द्वारा रखी गई थी?
(A) महारावल जवाहर सिंह
(B) रावल जैसल
(C) राव लूणकरण
(D) अमर सिंह राठौड़

26. प्राचीन व्यापारिक मार्गों से जैसलमेर के ऐतिहासिक संबंध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जैसलमेर ने रेशम मार्ग की दक्षिणी शाखा पर एक महत्वपूर्ण पारगमन केंद्र के रूप में कार्य किया।
II. नगर ने गुजरने वाले व्यापारी कारवां पर भारी कर लगाकर अत्यधिक धन अर्जित किया।
III. अपार व्यापारिक धन के कारण, दुर्ग और व्यापारी हवेलियों का निर्माण पूरी तरह से मकराना संगमरमर से किया गया था।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) केवल I और III

27. जैसलमेर की जटिल नक्काशीदार ऐतिहासिक हवेलियाँ, जैसे नथमल जी की हवेली और सालिम सिंह की हवेली, मुख्य रूप से किसके द्वारा बनवाई गई थीं?
(A) कारवां व्यापार में लगे धनी जैन और हिंदू व्यापारियों द्वारा
(B) शाही भाटी राजपूत राजाओं द्वारा अपनी रानियों के लिए निजी महलों के रूप में
(C) औपनिवेशिक काल के दौरान तैनात वरिष्ठ ब्रिटिश राजनीतिक एजेंटों द्वारा
(D) इस क्षेत्र में आने वाले प्रमुख मध्य एशियाई खानाबदोश जनजातीय सरदारों द्वारा

28. 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में जैसलमेर के ऐतिहासिक आर्थिक पतन का मुख्य कारण निम्नलिखित में से कौन सा कारक था?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) पुर्तगाली औपनिवेशिक अधिकारियों के साथ एक मजबूत रणनीतिक गठबंधन करना
(B) अरब सागर में व्यापक नौसैनिक श्रेष्ठता और समुद्री व्यापार स्थापित करना
(C) गोलकुंडा हीरे के व्यापार पर एक विशेष वाणिज्यिक एकाधिकार सुरक्षित करना
(D) स्थानीय जाट कृषक समुदाय का सैन्यीकरण और सुदृढ़ीकरण

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : ऐतिहासिक रूप से, सांभर प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक और राजनीतिक केंद्र था।
कारण (R) : यह भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय नमक झील का स्थल है, जो चाहमानों और बाद में मुगलों जैसे इसे नियंत्रित करने वाले राजवंशों को अत्यधिक आर्थिक लाभ प्रदान करता था।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

70. ऐतिहासिक रूप से, सांभर के आसपास का क्षेत्र अजमेर और दिल्ली तक विस्तार से पहले किस प्रमुख राजपूत राजवंश का प्रारंभिक आधारभूत शक्ति केंद्र और राजधानी था?
(A) मेवाड़ के सिसोदिया
(B) मारवाड़ के राठौड़
(C) शाकंभरी के चौहान
(D) आमेर के कछवाहा

71. सांभर झील के पास स्थित किस प्राचीन ऐतिहासिक और पौराणिक स्थल को पारंपरिक रूप से "तीर्थों की नानी" कहा जाता है और यह महर्षि शुक्राचार्य से जुड़ा हुआ है?
(A) गलताजी
(B) नक्की झील
(C) कोलायत
(D) देवयानी सरोवर

72. 1869 और 1870 के बीच हस्ताक्षरित ऐतिहासिक नमक संधियों के बाद, सांभर झील के नमक व्यापार पर प्रशासनिक और वाणिज्यिक नियंत्रण पूरी तरह से किसको पट्टे पर दे दिया गया था?
(A) ब्रिटिश सरकार
(B) मराठा परिसंघ
(C) फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी
(D) हैदराबाद के निजाम

73. सूची I में दिए गए ओसियां के प्रमुख ऐतिहासिक मंदिरों को सूची II में दिए गए उनके संबंधित देवताओं या धार्मिक संबद्धताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (मंदिर)
P. सच्चियाय माता मंदिर
Q. महावीर मंदिर
R. हरिहर मंदिर
S. सूर्य मंदिर
सूची II : (संबद्धता/देवता)
1. सूर्य देव को समर्पित
2. ओसवाल जैन और हिंदू समुदायों के लिए महत्वपूर्ण मंदिर
3. प्रमुख ऐतिहासिक जैन तीर्थ केंद्र
4. भगवान विष्णु और भगवान शिव के मिलन को समर्पित
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

74. ओसियां का प्राचीन नगर 8वीं और 11वीं शताब्दी के बीच मुख्य रूप से किस प्रमुख राजवंश के शासनकाल के दौरान एक समृद्ध ऐतिहासिक व्यापारिक और धार्मिक केंद्र था?
(A) मौर्य साम्राज्य
(B) गुर्जर-प्रतिहार
(C) दिल्ली सल्तनत
(D) ब्रिटिश साम्राज्य

NODIA

75. ओसियां को मुख्य रूप से किस कारण से ऐतिहासिक और लोकप्रिय रूप से "राजस्थान का खजुराहो" कहा जाता है?
(A) जटिल कलात्मक विवरणों वाले सुरुचिपूर्ण मूर्तिकला से युक्त प्रारंभिक मध्यकालीन मंदिर
(B) चंदेलों की शाही राजधानी से इसकी रणनीतिक भौगोलिक निकटता
(C) विभिन्न मुगल सम्राटों के लिए एक निजी विश्राम स्थल के रूप में इसका ऐतिहासिक कार्य
(D) इसके शाही अभिलेखागार में दुर्लभ प्राचीन कामुक साहित्य की खोज

76. ओसियां के प्राचीन नगर की ऐतिहासिक समृद्धि, जिसके कारण इसके भव्य मंदिरों को संरक्षण मिला, काफी हद तक किस रूप में इसकी स्थिति से प्राप्त हुई थी?
(A) व्यापक रोमन समुद्री व्यापार को संभालने वाले एक प्रमुख तटीय बंदरगाह के रूप में कार्य करना
(B) मध्यकालीन उत्तर भारत में लौह अयस्क के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में कार्य करना
(C) उत्तरी मैदानों को पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ने वाला एक प्रमुख मरुस्थलीय कारवां मार्ग
(D) गुप्त साम्राज्य के लिए एकमात्र आधिकारिक केंद्रीय टकसाल सुविधा के रूप में कार्य करना

96. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में से किसकी स्थापना ऐतिहासिक समय-सीमा में सबसे बाद में हुई थी?
(A) जोधपुर
(B) बीकानेर
(C) उदयपुर
(D) जयपुर

97. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : पाली, जैसलमेर और चूरू जैसे ऐतिहासिक कारवां नगरों ने 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत के दौरान अपनी पारंपरिक वाणिज्यिक प्रमुखता में उल्लेखनीय गिरावट का अनुभव किया।
कारण (R) : भारत में रेलमार्ग नेटवर्क की शुरुआत और विस्तार ने व्यापार की गतिशीलता को व्यापक रूप से बदल दिया, जिससे तटीय बंदरगाहों के सीधे रेल संपर्कों के पक्ष में पारंपरिक मरुस्थलीय कारवां मार्गों को दरकिनार कर दिया गया।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

98. ऐतिहासिक रूप से, जैसलमेर, बीकानेर और पाली जैसे नगरों की अपार समृद्धि और शहरी विकास उन पारगमन मार्गों के किनारे उनकी रणनीतिक स्थितियों पर अत्यधिक निर्भर था, जो मुख्य रूप से किसको जोड़ते थे?
(A) दक्षिणी मालाबार तट को पूर्वी कोरोमंडल तट से
(B) पूर्वी ब्रह्मपुत्र घाटी को उत्तरी तिब्बती पठार से
(C) गंगा के मैदानों को गुजरात और सिंध के तटीय बंदरगाहों से
(D) मध्य दक्कन के पठार को विशेष रूप से मालवा क्षेत्र से

99. किस ऐतिहासिक खानाबदोश समुदाय ने मध्यकालीन राजस्थान के विषम भूभागों और मरुस्थलीय मार्गों पर रसद आपूर्ति श्रृंखला बनाए रखने और भारी वस्तुओं के व्यापार को सुगम बनाने में अनिवार्य भूमिका निभाई?
(A) बंजारे
(B) सिद्दी
(C) गोंड
(D) संथाल

100. अंतर्देशीय राजस्थान के कारवां नगरों से दूर अंतर-क्षेत्रीय व्यापारिक शक्ति का ऐतिहासिक बदलाव किन ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक केंद्रों के उदय से सबसे सीधे त्वरित हुआ था?
(A) शिमला और दार्जिलिंग के पर्वतीय स्थल
(B) विशेष रूप से मैनचेस्टर और लंकाशायर की औद्योगिक कपड़ा मिलें
(C) असम और सीलोन (श्रीलंका) के कृषि बागान
(D) बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास के प्रेसीडेंसी बंदरगाह नगर

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

87. मेवाड़ क्षेत्र के पास भीलवाड़ा जिले में स्थित बागोर स्थल का ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व मुख्य रूप से किसकी खोज में निहित है?
(A) गुप्त स्वर्ण सिक्कों के सबसे बड़े ज्ञात क्षेत्रीय खजाने की खोज
(B) मौर्यकालीन पोतगाह के असाधारण रूप से अच्छी तरह से संरक्षित संरचनात्मक अवशेष
(C) मध्यकालीन युग की व्यापक औद्योगिक लोहा गलाने की भट्ठियां
(D) प्रारंभिक सूक्ष्मपाषाण उपकरण और पशुपालन के साक्ष्य

88. गणेश्वर का प्राचीन पुरातात्विक स्थल, जिसने ऐतिहासिक रूप से हड़प्पा स्थलों को तांबे की वस्तुओं की आपूर्ति की थी, किस विरासत क्षेत्र के निकट स्थित है?
(A) शेखावाटी (सीकर जिला)
(B) हाड़ौती (कोटा जिला)
(C) मेवाड़ (उदयपुर जिला)
(D) मारवाड़ (जोधपुर जिला)

89. राजस्थान के ऐतिहासिक नगरों से जुड़ी आधुनिक पर्यटन क्षमता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. "पैलेस ऑन व्हील्स" विलासिता रेलगाड़ी विशेष रूप से ऐतिहासिक नगरों में विरासत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई थी।
II. प्राचीन किलों और हवेलियों का "हेरिटेज होटलों" में परिवर्तन ने वास्तुशिल्प संरक्षण और स्थानीय रोजगार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
III. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए जैसलमेर में मरु महोत्सव जैसे विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन करता है।
IV. पारिस्थितिकी पर्यटन और बाघ अभयारण्य, जैसे रणथंभौर, ऐतिहासिक पर्यटन से स्वतंत्र रूप से संचालित होते हैं और पर्यटकों के यात्रा कार्यक्रमों से स्थानीय किलों को पूरी तरह से बाहर रखते हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

90. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के संदर्भ में, जयपुर का ऐतिहासिक नगर किन दो अन्य शहरों के साथ भारत में विश्व प्रसिद्ध "स्वर्ण त्रिभुज" पर्यटन परिपथ बनाता है?
(A) उदयपुर और जोधपुर
(B) दिल्ली और आगरा
(C) मुंबई और गोवा
(D) वाराणसी और खजुराहो

91. राजस्थान के नगरों की ऐतिहासिक विरासत को उनकी आधुनिक पर्यटन क्षमता के साथ जोड़ने का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक आर्थिक प्रभाव क्या है?
(A) यह पारंपरिक हस्तशिल्प, लोक कलाओं और स्थानीय सेवा रोजगार को पुनर्जीवित करता है।
(B) यह पूर्ण औद्योगिकीकरण और प्राचीन परकोटे वाले नगरों के विध्वंस की ओर ले जाता है।
(C) यह राज्य में आधुनिक कृषि पद्धतियों की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त करता है।
(D) यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मौलिक रूप से परिवर्तित करता है और समुद्री वाणिज्य की ओर स्थानांतरित करता है।

92. राजस्थान पर्यटन द्वारा आधिकारिक तौर पर बढ़ावा दिए जाने वाले निम्नलिखित ऐतिहासिक पर्यटन परिपथों में से असंगत की पहचान कीजिए।
(A) मरु परिपथ (जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर)
(B) मेवाड़ परिपथ (उदयपुर, कुंभलगढ़, चित्तौड़गढ़)
(C) तटीय परिपथ (पोरबंदर, द्वारका, सोमनाथ)
(D) हाड़ौती परिपथ (कोटा, बूंदी, झालावाड़)

93. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प दिए गए ऐतिहासिक नगरों की स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) अजमेर, जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर
(B) जैसलमेर, अजमेर, जयपुर, जोधपुर
(C) जोधपुर, अजमेर, जैसलमेर, जयपुर
(D) अजमेर, जोधपुर, जैसलमेर, जयपुर

94. निम्नलिखित ऐतिहासिक नगरों की स्थापना को प्राचीनतम से नवीनतम तक, सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. बीकानेर
II. उदयपुर
III. कोटा
IV. अलवर
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) I, II, III, IV
(B) II, I, III, IV
(C) I, III, II, IV
(D) III, I, II, IV

95. राजस्थान में लगभग 15वीं और 18वीं शताब्दी के बीच के ऐतिहासिक काल में नई शहरी राजधानियों की स्थापना में तेजी देखी गई, जिसका मुख्य कारण था:
(A) भारत में पारंपरिक वास्तुशिल्प ज्ञान का पूर्ण उन्मूलन और हानि
(B) जनसंख्या का विस्तार और तोपखाने द्वारा पुराने किलों को अप्रचलित बना देना
(C) राजधानियों के पुनर्निर्माण के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रत्यक्ष प्रशासनिक आदेश
(D) सभी प्रमुख क्षेत्रीय राजपूत शासकों का जैन धर्म में व्यापक धार्मिक धर्मांतरण

Downloaded from www.pdf.tube

49. (A) हम्मीर देव चौहान
रणथंभौर दुर्ग का ऐतिहासिक महत्व मुख्य रुप से चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में चौहान शासक हम्मीर देव चौहान द्वारा दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध दिखाए गए अद्वितीय शौर्य और प्रतिरोध से जुड़ा है। जब हम्मीर देव ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही मंगोल सेनापतियों को शरण दी, तो खिलजी ने दुर्ग का विशाल घेरा डाला। 1301 ईस्वी में हम्मीर देव ने अपनी हठ, शरणागत वत्सलता और अंतिम सांस तक धर्म एवं दुर्ग की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की।

50. (C) यह पूरी तरह से एक समतल मरुस्थलीय मैदान पर बनाया गया था ताकि आने वाले दुश्मनों का अबाध दृश्य दिखाई दे सके।
रणथंभौर दुर्ग समतल मरुस्थलीय मैदान पर नहीं, बल्कि अरावली और विंध्याचल पर्वत श्रृंखलाओं के संगम पर अत्यधिक विषम, घने जंगलों और ऊँची पहाड़ियों के बीच स्थित एक प्रसिद्ध 'गिरि' और 'वैन' दुर्ग है। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह दूर से आसानी से दिखाई नहीं देता, जबकि दुर्ग के भीतर से आसपास के व्यापक क्षेत्रों पर कड़ी नज़र रखी जा सकती है। इसी प्राकृतिक अभेद्यता के कारण इसे राजस्थान के सबसे सुरक्षित किलों में गिना जाता था।

51. (A) रानी रंग देवी के नेतृत्व में राजस्थान में जौहर का पहला दर्ज उदाहरण
वर्ष 1301 ईस्वी में रणथंभौर दुर्ग पर अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के दौरान घटित घटना राजस्थान के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे राजस्थान का प्रथम दर्ज 'शाका' और 'जौहर' माना जाता है। जब शासक हम्मीर देव चौहान युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, तब उनकी महारानी रंग देवी और पुत्री देवलदे के नेतृत्व में राजपूत महिलाओं ने अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु जल एवं अग्नि जौहर का अनुष्ठान किया। यह घटना अदम्य साहस का प्रतीक है।

52. (D) त्रिनेत्र गणेश मंदिर, जो विवाह के निमंत्रण पत्र प्राप्त करने के लिए प्रसिद्ध है
रणथंभौर दुर्ग के परिसर में ऐतिहासिक और आध्यात्मिक रुप से अत्यंत प्रसिद्ध 'त्रिनेत्र गणेश मंदिर' स्थित है। यह भारत का एकमात्र ऐसा मंदिर है जहाँ भगवान गणेश की तीन आँखों वाली स्वयंभू मूर्ति स्थापित है। इस मंदिर की एक अनूठी सांस्कृतिक परंपरा यह है कि श्रद्धालु देश भर से अपने शुभ कार्यों, विशेष रूप से विवाह के प्रथम निमंत्रण पत्र डाक द्वारा यहाँ भेजते हैं। प्रत्येक वर्ष भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को यहाँ विशाल मेला आयोजित होता है।

53. (A) केवल I और II
बूंदी नगर अपनी अनेक कलात्मक एवं ऐतिहासिक जल संरचनाओं के कारण संपूर्ण भारत में 'बावड़ियों का शहर' या 'सिटी ऑफ स्टेपवेल्स' के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित रानी जी की बावड़ी स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमूना है, जिसका निर्माण 1699 ईस्वी में रानी नाथावती ने करवाया था। तीसरा कथन असत्य है क्योंकि बूंदी में एक अत्यंत समृद्ध गढ़ पैलेस (शाही महल) स्थित है, जो अपनी वास्तुकला और भित्ति-चित्रों के लिए जाना जाता है।

54. (C) तारागढ़ दुर्ग
बूंदी के क्षितिज और पहाड़ी की ऊँचाई पर स्थित विशाल किलाबंदी को 'तारागढ़ दुर्ग' कहा जाता है। इस ऐतिहासिक दुर्ग का निर्माण चौदहवीं शताब्दी में (लगभग 1354 ईस्वी में) हाड़ा चौहान शासक राव बर सिंह द्वारा करवाया गया था। पहाड़ी पर तारे के समान आकार में निर्मित होने के कारण इसे तारागढ़ नाम दिया गया। यह दुर्ग अपनी सुदृढ़ प्राचीरों, विशाल तोपों जैसे 'गर्भ गुंजन' तथा राजपूत स्थापत्य शैली के महलों के लिए जाना जाता है।

NODIA

55. (D) बूंदी चित्रकला शैली के लघु भित्ति चित्र
बूंदी के गढ़ पैलेस के भीतर स्थित 'चित्रशाला' (जिसे उम्मेद महल भी कहा जाता है) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बूंदी शैली के उत्कृष्ट भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। महाराणा उम्मेद सिंह के शासनकाल में निर्मित यह दीर्घा राजस्थानी चित्रकला की हाड़ौती शैली का बेजोड़ खजाना है। यहाँ की दीवारों पर प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करके राधा-कृष्ण की रासलीला, शाही शिकार के दृश्य, ऋतु वर्णन और दरबार के सजीव चित्रों का अत्यंत सूक्ष्म एवं आकर्षक चित्रांकन किया गया है।

56. (A) चांद बावड़ी (आभानेरी)
प्रसिद्ध चांद बावड़ी बूंदी में नहीं, बल्कि दौसा जिले के आभानेरी गांव में स्थित है। यह नौवीं शताब्दी की एक अत्यंत विशाल एवं जटिल नक्काशीदार बावड़ी है। दूसरी ओर, रानी जी की बावड़ी, धाबाई का कुंड और नगर सागर कुंड ये सभी ऐतिहासिक जल संरचनाएं बूंदी नगर के भीतर ही स्थित हैं, जो हाड़ौती क्षेत्र के उत्कृष्ट जल प्रबंधन और स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करती हैं। अतः चांद बावड़ी बूंदी से असंगत विकल्प है।

57. (A) केवल I, II और III
शेखावाटी क्षेत्र अपनी अलंकृत एवं चित्रित हवेलियों के कारण "राजस्थान की खुली कला दीर्घा" (ओपन आर्ट गैलरी) के रूप में जाना जाता है। इन हवेलियों का निर्माण मुख्य रुप से अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान धनी मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा कराया गया था। भौगोलिक दृष्टि से शेखावाटी में सीकर, झुंझुनूं और चुरु जिले शामिल हैं, न कि उदयपुर, राजसमंद और भीलवाड़ा। अतः चौथा कथन गलत है तथा प्रथम तीन कथन पूर्णतः सही हैं।

58. (B) ब्रिटिश बंदरगाह शहरों में अंतर-क्षेत्रीय व्यापार लाभ और उद्यम
शेखावाटी के मारवाड़ी व्यापारियों ने उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास जैसे ब्रिटिश कालीन प्रमुख बंदरगाह शहरों में व्यापार, बैंकिंग और औद्योगिक उद्यमों के माध्यम से विशाल धन अर्जित किया था। जब मरुस्थलीय कारवां व्यापार कम होने लगा, तब इस प्रवासी व्यापारी समुदाय ने अपने व्यावसायिक लाभ का एक बड़ा हिस्सा अपनी गृहभूमि शेखावाटी भेजा। इसी अकूत धन संपदा से उन्होंने अपने

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) राजपूत सैन्य पहाड़ी वास्तुकला और उनके सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतिनिधित्व
राजस्थान के छह प्रमुख पहाड़ी दुर्गों को वर्ष 2013 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया था। इस मान्यता का मुख्य आधार राजपूत सैन्य पहाड़ी वास्तुकला का सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन और इसके माध्यम से हुआ सांस्कृतिक आदान-प्रदान है। ये दुर्ग अरावली पर्वत श्रृंखला की भौगोलिक स्थितियों का सामरिक उपयोग करते हैं। इनमें स्थापत्य कला, सैन्य सुरक्षा, जल प्रबंधन और सांस्कृतिक परंपराओं का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है।

2. (C) आधुनिक औद्योगिक केंद्र
राजस्थान की ऐतिहासिक विरासत के पारंपरिक वर्गीकरण में पहाड़ी दुर्ग, जल संरचनाएं जैसे बावड़ियाँ तथा स्थापत्य शैली से सुसज्जित भित्ति-चित्रित हवेलियाँ प्रमुख रूप से शामिल हैं। ये सभी स्थल प्राचीन और मध्यकालीन कला, संस्कृति तथा समाज की समृद्ध जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। आधुनिक औद्योगिक केंद्र इस पारंपरिक ऐतिहासिक विरासत की श्रेणी में नहीं आते हैं, क्योंकि इनका संबंध हालिया समकालीन आर्थिक विकास से है।

3. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
राजस्थान के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट ऐतिहासिक वास्तुशिल्प पहचान रही है। मेवाड़ क्षेत्र अपने विशाल पहाड़ी दुर्गों और शाही छतरियों के निर्माण के लिए जाना जाता है। शेखावाटी अपनी सुंदर एवं कलात्मक भित्ति-चित्रों वाली हवेलियों के लिए संपूर्ण विश्व में विख्यात है। हाड़ौती क्षेत्र अपनी जटिल नक्काशीदार बावड़ियों एवं आकर्षक महलों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि मारवाड़ क्षेत्र अपने मरुस्थलीय व्यापारिक केंद्रों तथा सुदृढ़ किलाबंदी के लिए जाना जाता है।

4. (D) प्रारंभिक मध्यकालीन और मध्यकालीन मंदिर वास्तुकला
मारु-गुर्जर वास्तुकला शैली राजस्थान की एक प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर निर्माण परंपरा है, जिसका विकास आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य हुआ था। इस शैली का प्रयोग मुख्य रूप से प्रारंभिक मध्यकालीन और मध्यकालीन धार्मिक मंदिरों के निर्माण में किया गया था। इस स्थापत्य कला की मुख्य विशेषताओं में अत्यधिक अलंकृत आधार, बारंबार नक्काशीदार स्तंभ, जटिल आकृतियों वाले प्रवेश द्वार तथा विस्तृत गर्भगृह संरचनाएं शामिल हैं। यह शैली क्षेत्रीय शिल्पकला की उत्कृष्टता दर्शाती है।

5. (B) मेवाड़ के गुहिल (सिसोदिया)
चित्तौड़गढ़ दुर्ग ऐतिहासिक रूप से मेवाड़ राज्य के गुहिल और बाद में शिशोदिया राजवंश की प्राथमिक राजधानी रहा है। यह स्थल अपने शौर्य, त्याग और स्वाभिमान की ऐतिहासिक गाथाओं के लिए प्रसिद्ध है। आठवीं शताब्दी में बप्पा रावल द्वारा इस शक्ति केंद्र को सुदृढ़ किया गया था। बाद में चौदहवीं शताब्दी में हम्मीर देव के समय शिशोदिया शाखा की स्थापना हुई। यह दुर्ग कई शताब्दियों तक मेवाड़ के राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का मुख्य केंद्र बना रहा।

6. (C) मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में महाराणा कुंभा द्वारा विजय स्तंभ का निर्माण करवाया गया था।
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तंभ का निर्माण पंद्रहवीं शताब्दी में महाराणा कुंभा द्वारा मालवा और गुजरात के सुल्तानों की संयुक्त सेनाओं पर अपनी ऐतिहासिक विजय के उपलक्ष्य में करवाया गया था। नौ मंजिला यह विशाल स्मारक भगवान विष्णु को समर्पित है और इसे स्थापत्य कला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है। दूसरी ओर, कीर्ति स्तंभ चौदहवीं शताब्दी का एक जैन स्मारक है, जिसे एक जैन व्यापारी जीजा शाह द्वारा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के सम्मान में बनवाया गया था।

7. (A) केवल I और II
चित्तौड़गढ़ दुर्ग कई शताब्दियों तक मेवाड़ राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता रहा, जब तक कि महाराणा उदय सिंह द्वारा 1559 में उदयपुर की स्थापना नहीं की गई। यह दुर्ग 1303, 1535 और 1568 में हुए तीन प्रसिद्ध ऐतिहासिक शाकों और जौहरों का गवाह रहा है। इस दुर्ग का निर्माण मूल रूप से चित्रांगद मौर्य द्वारा करवाया गया था, न कि मुगल शासक अकबर द्वारा। अकबर ने केवल 1568 की घेराबंदी का नेतृत्व किया था।

8. (A) सम्राट औरंगजेब
चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर इतिहास में तीन प्रमुख ऐतिहासिक आक्रमण और घेराबंदी हुई थीं। प्रथम घेराबंदी 1303 ईस्वी में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी द्वारा की गई थी। द्वितीय आक्रमण 1535 ईस्वी में गुजरात के शासक बहादुर शाह द्वारा किया गया था, तथा तृतीय ऐतिहासिक घेराबंदी 1567-68 ईस्वी में मुगल सम्राट अकबर के नेतृत्व में हुई थी। मुगल शासक औरंगजेब ने इस दुर्ग पर कभी भी किसी प्रमुख सैन्य घेराबंदी का संचालन या नेतृत्व नहीं किया था।

9. (B) चित्तौड़गढ़ पर खतरों के बाद एक सुरक्षित, रक्षात्मक राजधानी की स्थापना करना
वर्ष 1559 में महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा उदयपुर नगर की स्थापना मुख्य रूप से एक सुरक्षित एवं रक्षात्मक राजधानी प्राप्त करने की रणनीतिक आवश्यकता से प्रेरित थी। चित्तौड़गढ़ दुर्ग मैदानी इलाकों से सुगम पहुंच के कारण बाहरी आक्रमणकारियों के हमलों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो चुका था। गिरवा घाटी में स्थित अरावली की पहाड़ियों और

Click Here to Buy book on Amazon

77. कोटा की ऐतिहासिक रियासत को 1631 ईस्वी में किस मुगल सम्राट के शाही फरमान द्वारा बूंदी के क्षेत्र से एक स्वतंत्र संस्था के रूप में अलग किया गया था?
(A) बाबर
(B) अकबर
(C) जहांगीर
(D) शाहजहाँ

78. प्रसिद्ध "कोटा डोरिया" कपड़ा बुनाई की ऐतिहासिक उत्पत्ति 17वीं शताब्दी के अंत या 18वीं शताब्दी की शुरुआत में मानी जा सकती है, जब श्रेष्ठ बुनकरों को मुख्य रूप से कहाँ से इस क्षेत्र में लाया गया था?
(A) ढाका (बंगाल)
(B) सूरत (गुजरात)
(C) मैसूर (कर्नाटक)
(D) कांचीपुरम (तमिलनाडु)

79. लघु चित्रकला की कोटा शैली ऐतिहासिक रूप से अन्य राजपूत शैलियों से मुख्य रूप से किसके प्रमुख और विशद चित्रण द्वारा भिन्न है?
(A) समुद्री नौसैनिक युद्ध और तटीय मुठभेड़
(B) स्थानीय जंगलों में शाही शिकार के दृश्य
(C) जटिल अमूर्त ज्यामितीय वास्तुशिल्प पैटर्न
(D) आने वाले यूरोपीय व्यापारियों के विस्तृत चित्र

80. किस प्राथमिक ऐतिहासिक और भौगोलिक लाभ ने राजस्थान में एक प्रमुख औद्योगिक और शैक्षणिक केंद्र के रूप में कोटा के आधुनिक विकास को सुगम बनाया?
(A) एक प्रमुख ठंडी जलवायु वाले पर्वतीय स्थल के रूप में इसकी अनूठी भौगोलिक स्थिति
(B) प्रमुख समुद्री व्यापार नेटवर्क के साथ इसके व्यापक तटीय समुद्र तट
(C) विशाल भूमिगत सोने और खनिज भंडारों की इसकी 20वीं शताब्दी की खोज
(D) चंबल नदी पर इसकी स्थिति जो जल और बिजली प्रदान करती है

81. सूची I में दिए गए ऐतिहासिक संस्थापकों को सूची II में उनके संबंधित नगरों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (संस्थापक)
P. राव जोधा
Q. सवाई जय सिंह द्वितीय
R. अजयराज चौहान
S. राव बीका
सूची II : (नगर)
1. जयपुर
2. बीकानेर
3. जोधपुर
4. अजमेर
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

82. ऐतिहासिक नगर और उसकी स्थापना के मान्यता प्राप्त वर्ष के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) उदयपुर - 1459 ईस्वी
(B) जोधपुर - 1559 ईस्वी
(C) जयपुर - 1727 ईस्वी
(D) बीकानेर - 1113 ईस्वी

83. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में से कौन सा नगर किसी राजपूत शासक द्वारा स्थापित नहीं किया गया था?
(A) टोंक
(B) जैसलमेर
(C) बीकानेर
(D) कोटा

84. राजस्थान में क्षेत्रीय राजधानियों के स्थानांतरण में देखा गया एक सामान्य ऐतिहासिक पैटर्न, जैसे कि मंडोर से जोधपुर या आमेर से जयपुर में स्थानांतरण, मुख्य रूप से किसकी आवश्यकता से प्रेरित था?
(A) तटीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक बंदरगाहों से निकट रणनीतिक निकटता सुरक्षित करना
(B) दिल्ली सल्तनत द्वारा जारी शहरी आदेशों का पूर्ण अनुपालन
(C) बड़े भूकंपों के कारण हुए गंभीर संरचनात्मक प्रभाव से बचना
(D) बेहतर सुरक्षा, शहरी विस्तार स्थान और जल प्रबंधन

NODIA

85. राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों के आसपास के क्षेत्रों के पुरातात्विक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हनुमानगढ़ के पास कालीबंगा स्थल, प्राक-हड़प्पा और हड़प्पाकालीन बसावट के साक्ष्य प्रदान करता है।
II. आधुनिक उदयपुर में स्थित आहड़ स्थल, एक प्रमुख ताम्रपाषाणिक संस्कृति के अवशेष प्रदर्शित करता है।
III. जयपुर के पास बैराठ स्थल, अपने बौद्ध स्तूप के अवशेषों और अशोक के शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

86. धूलकोट के नाम से जाना जाने वाला पुरातात्विक टीला ऐतिहासिक रूप से उदयपुर के पास स्थित किस प्राचीन सभ्यता स्थल से जुड़ा हुआ है?
(A) कालीबंगा
(B) बागोर
(C) आहड़
(D) गणेश्वर

था। प्रथम, यह रंग ऐतिहासिक रूप से ब्राह्मण समुदाय के घरों की पहचान को दर्शाता था। द्वितीय, चुना और तांबा आधारित नीले रंगों का मिश्रण दीवारों को दीमक से बचाता था तथा मरुस्थल की तीव्र गर्मी को परावर्तित करके मकान के अंदरुनी भाग को ठंडा रखता था। इसी कारण जोधपुर को 'नीली नगरी' कहा जाता है।

20. (D) उम्मेद भवन पैलेस - अकाल राहत प्रदान करने के लिए 15वीं शताब्दी में निर्मित
जोधपुर में स्थित उम्मेद भवन पैलेस का निर्माण पंद्रहवीं शताब्दी में नहीं, बल्कि बीसवीं शताब्दी में 1929 से 1943 के मध्य महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा करवाया गया था। इस महल के निर्माण का प्राथमिक ऐतिहासिक उद्देश्य भीषण अकाल के दौरान स्थानीय जनता को रोजगार और राहत सामग्री उपलब्ध कराना था। यह महल स्थापत्य कला के उत्कृष्ट आटो-आर्ट डेको और पारंपरिक भारतीय शैली का सम्मिश्रण है। अन्य सभी ऐतिहासिक स्थल और उनके विवरण पूर्णतः सही हैं।

21. (B) मध्य एशिया को गुजरात के बंदरगाहों से जोड़ने वाला एक प्रमुख कारवां पारगमन केंद्र
ऐतिहासिक रूप से बीकानेर नगर की आर्थिक समृद्धि मुख्य रूप से थार मरुस्थल के मध्य व्यापारिक मार्गों पर इसकी रणनीतिक स्थिति से जुड़ी थी। यह नगर मध्य एशिया, पंजाब और दिल्ली को गुजरात तथा सिंध के समृद्ध तटीय बंदरगाहों से जोड़ने वाले प्रमुख कारवां व्यापार मार्ग का एक अनिवार्य पारगमन केंद्र था। व्यापारी कारवां बीकानेर में विश्राम करते थे, जिससे कर राजस्व प्राप्त होता था और स्थानीय हस्तशिल्प एवं व्यापार को अभूतपूर्व प्रोत्साहन मिलता था।

22. (C) महाराजा अनूप सिंह
उस्ता कला बीकानेर की एक अद्वितीय ऐतिहासिक हस्तशिल्प परंपरा है, जिसमें ऊँट की खाल से बनी वस्तुओं तथा महलों की दीवारों पर सोने की अत्यंत सूक्ष्म एवं अलंकृत नक्काशी की जाती है। इस कलात्मक शैली का स्वर्ण काल सत्रहवीं शताब्दी में महाराजा अनूप सिंह के शासनकाल के दौरान माना जाता है। उन्होंने मुग़ल दरबार से आए प्रसिद्ध कारीगरों को संरक्षण दिया, जिसके परिणामस्वरूप यह पारंपरिक कला बीकानेर की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बन गई।

23. (D) महाराजा गंगा सिंह द्वारा स्थापित गंग नहर परियोजना
बीकानेर के आधुनिक विकास और आर्थिक परिवर्तन में बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में महाराजा गंगा सिंह द्वारा निर्मित गंग नहर परियोजना का ऐतिहासिक योगदान अतुलनीय है। वर्ष 1927 में सतलुज नदी के जल को इस शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र तक लाने के लिए यह नहर चालू की गई थी। इसने बीकानेर के विशाल शुष्क क्षेत्रों को उपजाऊ कृषि भूमि में बदल दिया, जिससे स्वतंत्रता-पूर्व काल में इस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति, पेयजल आपूर्ति और शहरी बसावट में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

24. (A) पटवों की हवेली
पटवों की हवेली बीकानेर में नहीं, बल्कि जैसलमेर के ऐतिहासिक नगर में स्थित है। यह पाँच हवेलियों का एक प्रसिद्ध परिसर है, जिसे उन्नीसवीं शताब्दी में धनी व्यापारी सेठ पटवा द्वारा बनवाया गया था। बीकानेर से जुड़े प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों में राजा राय सिंह द्वारा निर्मित जूनागढ़ दुर्ग, लालगढ़ पैलेस तथा प्रसिद्ध रामपुरिया हवेलियाँ शामिल हैं, जो अपनी उत्कृष्ट नक्काशी के लिए जानी जाती हैं। अतः पटवों की हवेली बीकानेर से असंगत विकल्प है।

25. (B) रावल जैसल
जैसलमेर नगर की स्थापना 1156 ईस्वी में भाटी राजपूत शासक रावल जैसल द्वारा की गई थी। उन्होंने सुरक्षा की दृष्टि से पुरानी राजधानी लोध्रवा से हटकर त्रिकूट पहाड़ी पर एक नया सुरक्षित दुर्ग और नगर स्थापित करने का निर्णय लिया था। पीले बलुआ पत्थर से निर्मित होने तथा सूर्य की किरणों में सोने जैसी चमक बिखरने के कारण इस ऐतिहासिक नगर को 'स्वर्ण नगरी' या 'सोनार किला' कहा जाता है। यह मरुस्थलीय स्थापत्य कला का अद्भुत केंद्र है।

26. (C) केवल III
जैसलमेर ऐतिहासिक रूप से रेशम मार्ग की दक्षिणी शाखा पर स्थित एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था, जहाँ से गुज़रने वाले व्यापारी कारवां से चुंगी कर वसूल कर अपार समृद्धि अर्जित की जाती थी। यद्यपि यह नगर अत्यधिक धन संपन्न था, किंतु यहाँ के दुर्ग और भव्य हवेलियों का निर्माण मकराना संगमरमर से नहीं, बल्कि स्थानीय रूप से उपलब्ध पीले बलुआ पत्थर से किया गया था। यही पीला पत्थर इस नगर की वास्तुशिल्प पहचान है, अतः तीसरा कथन गलत है।

27. (A) कारवां व्यापार में लगे धनी जैन और हिंदू व्यापारियों द्वारा
जैसलमेर की विश्व प्रसिद्ध हवेलियाँ जैसे नथमल जी की हवेली, सालिम सिंह की हवेली और पटवों की हवेली मुख्य रूप से अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान समृद्ध जैन और हिंदू व्यापारियों तथा राज्य के प्रधानमंत्रियों द्वारा बनवाई गई थीं। कारवां व्यापार से अर्जित विशाल संपत्ति का उपयोग इन धनी मारवाड़ी व्यापारियों ने अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और सौंदर्यबोध को प्रदर्शित करने के लिए अलंकृत पीले बलुआ पत्थर की जालियों से सुसज्जित भवनों के निर्माण में किया।

28. (C) मरुस्थलीय व्यापारिक मार्गों को दरकिनार करते हुए समुद्री बंदरगाहों और रेलमार्ग का उदय
उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में जैसलमेर के ऐतिहासिक आर्थिक पतन का मुख्य कारण ब्रिटिश शासन के दौरान बॉम्बे और कराची जैसे समुद्री बंदरगाहों का तीव्र विकास तथा रेलमार्ग नेटवर्क का विस्तार था। इन आधुनिक परिवहन माध्यमों ने थार मरुस्थल के कठिन भूमिगत कारवां व्यापार मार्गों को पूरी तरह से अप्रासंगिक बना दिया। व्यापारिक गतिविधियों के स्थानांतरित होने से जैसलमेर की चुंगी आय समाप्त हो गई और व्यापारी अन्यत्र चले गए।

29. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
अजमेर राजस्थान में हिंदू और मुस्लिम धार्मिक परंपराओं के सम्मिश्रण वाली समन्वयी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण

Downloaded from www.pdf.tube

प्राकृतिक सुरक्षा आवरण ने उदयपुर को एक आदर्श, सुरक्षित और जल-समृद्ध स्थान बनाया, जिससे राज्य की प्रशासनिक स्थिरता सुनिश्चित हो सकी।

10. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
उदयपुर को विश्व स्तर पर 'झीलों की नगरी' के रूप में जाना जाता है, क्योंकि यहाँ अनेक ऐतिहासिक जल निकाय स्थित हैं। इस शुष्क और विषमतायुक्त भूभाग में निरंतर पेयजल आपूर्ति और कृषि सिंचाई सुनिश्चित करने के लिए मेवाड़ के शासकों ने एक परिष्कृत, आपस में जुड़ी कृत्रिम झील प्रणाली का निर्माण कराया था। पिछोला, फतेह सागर और उदय सागर जैसी झीलें इसी योजना का परिणाम हैं, जो जल प्रबंधन का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

11. (A) मेवाड़ के महाराणाओं की शाही महासतियों (छतरियों) के स्थल के रूप में
उदयपुर के निकट स्थित आहड़ का ऐतिहासिक स्थल मुख्य रूप से मेवाड़ के महाराणाओं और शाही परिवार के सदस्यों के अंतिम संस्कार स्थल के रूप में प्रसिद्ध है, जिसे 'महासतियाँ' कहा जाता है। यहाँ अनेक अलंकृत एवं भव्य छतरियाँ निर्मित हैं, जो स्थापत्य कला की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनमें सबसे पहली छतरी महाराणा अमर सिंह प्रथम की है। इसके अतिरिक्त, आहड़ एक प्रमुख प्राचीन ताम्रपाषाणिक पुरातात्त्विक संस्कृति का स्थल भी रहा है।

12. (C) राजसमंद झील - उदयपुर नगर में बाढ़ को रोकने के लिए महाराणा सज्जन सिंह द्वारा निर्मित
राजसमंद झील का निर्माण सत्रहवीं शताब्दी में मेवाड़ के महाराणा राज सिंह प्रथम द्वारा कांकरोली के पास करवाया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य अकाल राहत प्रदान करना तथा क्षेत्र में जल संचयन सुनिश्चित करना था, न कि उदयपुर नगर में बाढ़ रोकना। यह झील अपनी प्रसिद्ध 'नौचौकी पाल' और संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण राजप्रशस्ति शिलालेख के लिए जानी जाती है। अन्य सभी उल्लेखित झीलों और उनके ऐतिहासिक निर्माताओं के युग्म पूरी तरह सही हैं।

13. (D) विद्याधर भट्टाचार्य
जयपुर के ऐतिहासिक नियोजित नगर का वास्तुकला संबंधी खाका मुख्य रूप से बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान और वास्तुकार पंडित विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा तैयार किया गया था। सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1727 में इस नगर की स्थापना की थी। विद्याधर भट्टाचार्य ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे शिल्प शास्त्र और वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों के साथ-साथ खगोलीय गणित का उपयोग करके इस नगर का सटीक नियोजन किया, जिससे यह भारत के प्रथम व्यवस्थित नगरों में गिना जाता है।

14. (B) केवल I, II और III
जयपुर नगर की स्थापना 1727 ईस्वी में आमेर के शासक सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। इस नगर का खाका प्राचीन भारतीय वास्तु ग्रंथ शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों तथा नौ मंडलों के वैदिक ग्रिड विन्यास पर आधारित था। इसका नगर नियोजन पूरी तरह से स्वदेशी भारतीय ज्ञान परंपरा और खगोलीय गणनाओं से प्रेरित था, न कि ब्रिटिश कलकत्ता के औपनिवेशिक नियोजन से अपनाया गया था। अतः प्रारंभिक तीन कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

15. (B) अत्यधिक सटीक खगोलीय अवलोकन प्रदान करना और परिष्कृत खगोलीय सारणी संकलित करना
महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय खगोल शास्त्र के महान संरक्षक और विद्वान थे। उन्होंने जयपुर में जंतर-मंतर की स्थापना 1734 के आसपास अत्यधिक सटीक खगोलीय अवलोकन प्राप्त करने, ग्रहों की गतियों का अध्ययन करने तथा पंचांग सारणियों को परिष्कृत करने के उद्देश्य से की थी। इस खगोलीय वेधशाला में पत्थर और संगमरमर से निर्मित विशाल यंत्र स्थापित हैं, जिनमें 'सम्राट यंत्र' प्रमुख है। यह वेधशाला तत्कालीन खगोलीय विज्ञान की एक महान तकनीकी उपलब्धि मानी जाती है।

16. (D) हिंदू, मुगल और पश्चिमी शैलियों को संयोजित करने वाला इसका ग्रिड-आधारित नगर नियोजन
वर्ष 2019 में जयपुर के परकोटे वाले नगर को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में घोषित किया गया। इसका मुख्य कारण इसकी अठारहवीं शताब्दी की अद्वितीय ग्रिड-आधारित नगर योजना है। यह नगर नियोजन पारंपरिक हिंदू स्थापत्य कला, मुगल वास्तुकला और पश्चिमी नगरीय अवधारणाओं के उत्कृष्ट समन्वय को दर्शाता है। चौड़ी सड़कें, एक समान व्यापारिक गलियारे तथा सुव्यवस्थित व्यावसायिक खंड इसकी ऐतिहासिक और शहरी नियोजन उत्कृष्टता के प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

NODIA

17. (A) राव जोधा
जोधपुर के ऐतिहासिक नगर की नींव वर्ष 1459 में मारवाड़ के राठौड़ शासक राव जोधा द्वारा रखी गई थी। उन्होंने सुरक्षा और रणनीतिक कारणों से अपनी राजधानी को पुरानी राजधानी मंडोर से स्थानांतरित करके एक सुरक्षित स्थान पर स्थापित करने का निर्णय लिया था। इसी दौरान उन्होंने एक ऊँची पहाड़ी पर सुदृढ़ मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण शुरू करवाया, जिसके चारों ओर जोधपुर नगर का निरंतर विकास हुआ। यह नगर मारवाड़ की शक्ति का मुख्य केंद्र बना।

18. (B) खेड़, मंडोर, जोधपुर
मारवाड़ क्षेत्र में राठौड़ राजवंश का ऐतिहासिक राजनीतिक सफर विभिन्न स्थानों से होकर गुजरा। प्रारंभिक काल में राव सीहा और उनके उत्तराधिकारियों ने खेड़ को अपना प्राथमिक शक्ति केंद्र बनाया। इसके बाद चौदहवीं शताब्दी के अंत में राव चूंडा के शासनकाल के दौरान राजधानी को मंडोर स्थानांतरित किया गया। तत्पश्चात 1459 ईस्वी में राव जोधा ने अधिक सुरक्षित और विशाल स्थान की आवश्यकता महसूस करते हुए जोधपुर नगर की स्थापना कर इसे स्थायी राजधानी बनाया।

19. (A) ब्राह्मण आवासों को दर्शाने और मरुस्थलीय गर्मी को दूर रखने के लिए
जोधपुर के पुराने ऐतिहासिक परकोटे वाले क्षेत्र में मकानों पर नीले रंग का प्रयोग पारंपरिक रूप से दो मुख्य उद्देश्यों से जुड़ा

39. (D) गौ घाट
पुष्कर झील के चारों ओर कुल 52 ऐतिहासिक घाट निर्मित हैं, जिनमें गौ घाट अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्ष 1948 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अस्थियों का एक भाग इसी पवित्र घाट पर विसर्जित किया गया था। इस ऐतिहासिक घटना के पश्चात गौ घाट का नाम बदलकर 'गांधी घाट' कर दिया गया। यह घाट न केवल धार्मिक अनुष्ठानों के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना की स्मृति को भी संजोए हुए है।

40. (A) यह पूरी तरह से एक धार्मिक सभा के रूप में कार्य करता है जिसका स्थानीय व्यापार या वाणिज्य में कोई ऐतिहासिक योगदान नहीं है।
पुष्कर मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि इसका ऐतिहासिक रूप से बहुत बड़ा व्यापारिक और आर्थिक महत्व रहा है। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होने वाला यह मेला राजस्थान के सबसे बड़े पारंपरिक पशु मेलों में से एक है, जहाँ ऊँटों, घोड़ों और मवेशियों का व्यापक क्रय-विक्रय होता है। इसके साथ ही यह मेला स्थानीय हस्तशिल्प, लोक संस्कृति और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

41. (A) II, III, IV, I
माउंट आबू का ऐतिहासिक क्रमबद्ध विकास विभिन्न युगों से जुड़ा हुआ है। सबसे पहले यहाँ परमार राजवंश का शासन रहा। तत्पश्चात 1031 ईस्वी में चालुक्य मंत्री विमल शाह द्वारा प्रसिद्ध विमल वसाही जैन मंदिर का निर्माण करवाया गया। चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में सिरोही के देवड़ा चौहान शासक राव लुम्बा ने इस क्षेत्र पर अधिकार स्थापित किया। अंततः उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश काल के दौरान यहाँ राजपूताना एजेंसी के ग्रीष्मकालीन मुख्यालय की स्थापना की गई थी।

42. (B) राजपूताना में ए.जी.जी. का ग्रीष्मकालीन मुख्यालय
भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान माउंट आबू की ऊँची पर्वतीय स्थिति और ठंडी जलवायु के कारण इसका अत्यधिक प्रशासनिक महत्व था। वर्ष 1845 में इसे राजपूताना में गवर्नर जनरल के एजेंट (ए.जी.जी.) का आधिकारिक ग्रीष्मकालीन मुख्यालय बनाया गया था। ग्रीष्मकाल की तीव्र मरुस्थलीय गर्मी से बचने के लिए ब्रिटिश अधिकारी और प्रांतीय प्रशासनिक अमला माउंट आबू स्थानांतरित हो जाता था, जिससे यह क्षेत्र औपनिवेशिक काल में एक प्रमुख कूटनीतिक और प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

43. (A) भगवान दत्तात्रेय
गुरु शिखर अरावली पर्वतमाला और राजस्थान की सबसे ऊँची पर्वत चोटी है, जिसकी ऊँचाई 1722 मीटर है। इस चोटी का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व शीर्ष पर स्थित एक प्राचीन गुफा मंदिर से जुड़ा है, जो भगवान दत्तात्रेय को समर्पित है। भगवान दत्तात्रेय को त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश का संयुक्त अवतार माना जाता है। श्रद्धालु एवं पर्यटक इस शिखर पर बने मंदिर में दर्शन और अरावली के विहंगम दृश्यों का अवलोकन करने हेतु आते हैं।

44. (C) वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा
वर्ष 1889 में माउंट आबू में ब्रिटिश कर्नल वॉल्टर के प्रयासों से 'वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा' की स्थापना की गई थी। इस संस्था का मुख्य ऐतिहासिक उद्देश्य राजपूत समाज में प्रचलित कुरीतियों जैसे विवाह के समय अत्यधिक फिजूलखर्ची, दहेज प्रथा, बाल विवाह तथा बहुविवाह प्रथा पर प्रभावी नियंत्रण लगाना और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देना था। इस सभा ने राजपूताना के रियासती अभिजात वर्ग में प्रशासनिक एवं सामाजिक चेतना जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

45. (B) केवल I, II और III
माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर अपनी अद्वितीय नक्काशी के लिए प्रसिद्ध हैं। सबसे पुराना मंदिर विमल वसाही 1031 ईस्वी में बना था जो प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है। लूण वसाही मंदिर 1230 ईस्वी में 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ के लिए निर्मित हुआ था। इन मंदिरों का निर्माण गुजरात के सोलंकी शासकों के मंत्रियों द्वारा कराया गया था। यह संपूर्ण मंदिर परिसर संगमरमर से निर्मित है, न कि धौलपुर के लाल बलुआ पत्थर से।

46. (C) मारु-गुर्जर शैली
माउंट आबू स्थित विश्व प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिरों की ऐतिहासिक वास्तुकला को मारु-गुर्जर (या सोलंकी) स्थापत्य शैली का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। यह शैली ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य पश्चिमी भारत में अत्यधिक विकसित हुई थी। इस वास्तुकला की मुख्य विशेषताओं में श्वेत संगमरमर का प्रयोग, छतों पर अलंकृत नक्काशी, बारीक उकेरे गए स्तंभ, भव्य तोरण द्वार तथा अत्यंत सूक्ष्म शिल्पकला शामिल है, जो भारतीय मूर्तिकला की पराकाष्ठा को प्रदर्शित करती है।

47. (B) रणकपुर चतुर्मुख मंदिर
रणकपुर का चतुर्मुख जैन मंदिर माउंट आबू के दिलवाड़ा मंदिर परिसर का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह पाली जिले की सादड़ी के पास अरावली की घाटी में स्थित है। इसका निर्माण पंद्रहवीं शताब्दी में महाराणा कुंभा के शासनकाल के दौरान व्यापारी धन्ना शाह ने करवाया था। दूसरी ओर, विमल वसाही, लूण वसाही, पित्तलहर और पार्श्वनाथ मंदिर माउंट आबू के प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर समूह के ही अभिन्न ऐतिहासिक भाग हैं।

48. (D) वस्तुपाल और तेजपाल
दिलवाड़ा मंदिर परिसर के भीतर स्थित भव्य और कलात्मक लूण वसाही (लूना वसाही) मंदिर का निर्माण 1230 ईस्वी में गुजरात के धौलका के शासक वीरधवल के दो धनी और प्रभावशाली मंत्रियों, वस्तुपाल और तेजपाल द्वारा करवाया गया था। उन्होंने यह मंदिर अपने दिवंगत भाई तेजपाल के पुत्र लूण की स्मृति में 22वें जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ को समर्पित करते हुए बनवाया था। इस मंदिर का संगमरमर का केंद्रीय रंगमंडप अपनी सूक्ष्म नक्काशी के लिए विख्यात है।

Click Here to Buy book on Flipkart

ऐतिहासिक केंद्र रहा है। बारहवीं शताब्दी में यह चौहान शासकों की एक शक्तिशाली राजनीतिक राजधानी था, जिससे यहाँ हिंदू स्थापत्य और संस्कृति का विकास हुआ। तत्पश्चात, प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की स्थापना से यह संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में सूफी आध्यात्मिकता का केंद्रीय स्थान बन गया। यह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दोनों संस्कृतियों के सुंदर सामंजस्य को दर्शाती है।

30. (C) संस्कृत महाविद्यालय और सरस्वती मंदिर
अजमेर स्थित "अढ़ाई दिन का झोंपड़ा" नामक ऐतिहासिक इमारत का निर्माण मूल रूप से बारहवीं शताब्दी में चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ द्वारा एक संस्कृत विद्यालय और सरस्वती मंदिर के रूप में करवाया गया था। बाद में बारहवीं शताब्दी के अंत में मोहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे आंशिक रूप से परिवर्तित करके एक मस्जिद का रूप दे दिया। आज भी इसके मेहराबों और स्तंभों पर प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के अंश और हिंदू वास्तुकला के स्पष्ट अवशेष दृष्टिगोचर होते हैं।

31. (B) इसने राजपूताना राज्यों की देखरेख करने वाले सूबा मुख्यालय के रूप में कार्य किया।
मुगल काल के दौरान अजमेर का प्रशासनिक और रणनीतिक महत्व अत्यधिक बढ़ गया था। सम्राट अकबर ने 1570 के दशक में इसे राजपूताना प्रांत (सूबा) का प्रशासनिक मुख्यालय बनाया था। अपनी केंद्रीय भौगोलिक स्थिति के कारण अजमेर से संपूर्ण राजपूताना के राजपूत राज्यों पर नियंत्रण रखना और सैन्य अभियानों का संचालन करना अत्यंत सुगम था। इसके अतिरिक्त, अकबर और बाद के मुगल सम्राट धार्मिक आस्था के कारण नियमित रूप से अजमेर शरीफ दरगाह की यात्रा करते थे।

32. (D) अजयराज चौहान
बारहवीं शताब्दी की शुरुआत में, लगभग 1113 ईस्वी में, अजमेर नगर की स्थापना चौहान वंश के प्रसिद्ध शासक अजयराज चौहान द्वारा की गई थी। उन्होंने इस रणनीतिक पहाड़ी क्षेत्र में 'अजयमेरु' दुर्ग का निर्माण करवाया, जिसे बाद में तारागढ़ दुर्ग के नाम से जाना गया। अजयराज ने अपनी राजधानी को शाकंभरी (सांभर) से अजमेर स्थानांतरित किया, जिससे चौहान साम्राज्य के विस्तार, सैन्य सुदृढ़ीकरण और सांस्कृतिक गतिविधियों को एक नया राजनीतिक आधार प्राप्त हुआ।

33. (A) औरंगजेब
नाथद्वारा का एक पवित्र धार्मिक केंद्र के रूप में ऐतिहासिक उदय सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। जब मुगल सम्राट औरंगजेब की धार्मिक और मूर्तिभंजक नीतियों के कारण उत्तर भारत के मंदिरों को खतरा उत्पन्न हुआ, तब वृंदावन से भगवान श्रीनाथजी (श्रीकृष्ण) की प्राचीन स्वरूप मूर्ति को सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। मेवाड़ के महाराणा राज सिंह प्रथम ने इस मूर्ति को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया और 1672 में सिहाड़ गांव में इसकी पुनर्स्थापना की।

34. (C) भगवान श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे सजावटी पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करने के लिए
नाथद्वारा की प्रसिद्ध पिछवाई चित्रकारी कला का ऐतिहासिक विकास मुख्य रूप से मंदिर की धार्मिक आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ है। 'पिछवाई' शब्द का अर्थ है 'पीछे लटकाया जाने वाला'। यह कपड़े पर बनाई जाने वाली एक विशिष्ट चित्रकारी है, जिसका उपयोग नाथद्वारा मंदिर में भगवान श्रीनाथजी की मुख्य मूर्ति के पीछे सुंदर सजावटी पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता है। इन चित्रों में श्रीकृष्ण की विभिन्न बाल लीलाओं, ऋतुओं और धार्मिक उत्सवों का अत्यंत मनोरम चित्रांकन होता है।

35. (A) पुष्टिमार्ग संप्रदाय
नाथद्वारा का ऐतिहासिक नगर वैष्णव संप्रदाय के अंतर्गत 'पुष्टिमार्ग' (शुद्धाद्वैत दर्शन) का सबसे प्रमुख और केंद्रीय तीर्थ स्थल है। इस संप्रदाय की स्थापना पंद्रहवीं शताब्दी में महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा की गई थी। नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी का मंदिर पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली का मुख्य पीठ है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की दिन के आठ अलग-अलग समयों में विशेष अष्टछाप सेवा और श्रृंगार परंपराओं के अनुसार भक्तिपूर्वक पूजा-अर्चना की जाती है।

36. (D) सिहाड़
वर्तमान नाथद्वारा नगर को सत्रहवीं शताब्दी में श्रीनाथजी की पवित्र मूर्ति स्थापित होने से पूर्व 'सिहाड़' नाम के एक छोटे से गांव के रूप में जाना जाता था। वर्ष 1672 में जब मेवाड़ के महाराणा राज सिंह के संरक्षण में भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप श्रीनाथजी का मंदिर यहाँ निर्मित हुआ, तब इस स्थान को 'नाथद्वारा' अर्थात 'भगवान का द्वार' कहा जाने लगा। समय के साथ यह छोटा गांव एक प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक नगर के रूप में विकसित हो गया।

NODIA

37. (B) भगवान ब्रह्मा को समर्पित एक प्रमुख ऐतिहासिक मंदिर
पुष्कर भारत के सबसे प्राचीन और पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। इसकी वैश्विक और ऐतिहासिक ख्याति का मुख्य कारण यहाँ स्थित जगत्पिता भगवान ब्रह्मा का अत्यंत दुर्लभ एवं प्रमुख मंदिर है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार संपूर्ण विश्व में भगवान ब्रह्मा के अत्यंत सीमित मंदिर हैं, जिनमें पुष्कर का मंदिर सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं पूजनीय माना जाता है। इस मंदिर के समीप स्थित प्राकृतिक पुष्कर झील धार्मिक स्नान और अनुष्ठानों के लिए अत्यंत पवित्र मानी जाती है।

38. (C) रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में इसे एक पवित्र स्थल के रूप में उल्लेखित किया गया है।
पुष्कर की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्राचीनता का उल्लेख भारत के महान प्राचीन पौराणिक ग्रंथों जैसे रामायण, महाभारत और विविध पुराणों में विस्तार से मिलता है। इन ग्रंथों में पुष्कर को 'तीर्थराज' अर्थात सभी तीर्थों का राजा कहा गया है। महाभारत के वन पर्व में पुष्कर तीर्थ की यात्रा के विशेष धार्मिक महत्व का वर्णन मिलता है। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि पुष्कर वैदिक और पौराणिक काल से ही एक निरंतर क्रियाशील पवित्र केंद्र रहा है।

पैतृक गांवों में विशाल एवं अत्यधिक चित्रित हवेलियों का निर्माण करवाया।

59. (A) चित्रित हवेलियाँ विशेष रूप से अत्यधिक किलेबंद सैन्य चौकियों के रूप में कार्य करने के लिए बनाई गई थीं।
शेखावाटी की चित्रित हवेलियाँ सैन्य चौकियाँ या दुर्ग नहीं थीं, बल्कि ये धनी मरुस्थलीय व्यापारियों के निजी आवासीय एवं व्यावसायिक भवन थे। ये हवेलियाँ व्यापारी परिवारों के रहने, व्यापारिक बैठकों तथा सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करने हेतु बनाई गई थीं। औपनिवेशिक काल में रेलमार्गों के विकास के कारण कारवां मार्ग प्रभावित हुए, जिससे व्यापारी बड़े औद्योगिक नगरों में बस गए। बाद में इन परिवारों के स्थायी प्रवास के कारण कई हवेलियाँ उपेक्षित हो गईं।

60. (C) मंडावा
मंडावा शेखावाटी क्षेत्र का एक अत्यंत प्रमुख और ऐतिहासिक नगर है, जो अपनी भव्य एवं कलात्मक भित्ति-चित्रों से सुसज्जित हवेलियों के लिए संपूर्ण विश्व में विख्यात है। यहाँ स्थित चोखानी हवेली, लाडिया हवेली और सर्राफ हवेली जैसी संरचनाएं अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी की स्थापत्य कला की अनुपम धरोहर हैं। इन हवेलियों की बाहरी एवं आंतरिक दीवारों पर बने सूक्ष्म चित्र देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे यह विरासत पर्यटन का मुख्य केंद्र बना हुआ है।

61. (D) राव प्रताप सिंह
अलवर की स्वतंत्र रियासत की स्थापना वर्ष 1770 में नरुका शाखा के कछवाहा राजपूत शासक राव राजा प्रताप सिंह द्वारा की गई थी। उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए जयपुर और भरतपुर के जाट शासकों के प्रभाव वाले क्षेत्रों से पृथक होकर अलवर दुर्ग पर अधिकार कर लिया। उन्होंने अलवर को अपनी राजधानी बनाया और एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी, जिसके बाद अलवर राजपूताना की एक महत्वपूर्ण स्वतंत्र रियासत के रूप में उभरा।

62. (C) महाराजा बख्तावर सिंह और उनकी रानी की स्मृति में निर्मित एक दोमंजिला छतरी
अलवर स्थित मूसी महारानी की छतरी एक अत्यंत सुंदर और भव्य दोमंजिला ऐतिहासिक स्मारक है। इसका निर्माण 1815 ईस्वी में महाराजा विनय सिंह द्वारा अपने पूर्ववर्ती शासक महाराजा बख्तावर सिंह और उनकी रानी मूसी की स्मृति में करवाया गया था। इस छतरी की निचली मंजिल लाल बलुआ पत्थर से तथा ऊपरी मंजिल संगमरमर से निर्मित है। इसकी दीवारों और छतों पर रामायण एवं महाभारत के प्रसंगों पर आधारित आकर्षक भित्ति चित्र उकेरे गए हैं।

63. (B) मत्स्य संघ
स्वतंत्रता के पश्चात राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण के प्रथम चरण में, 18 मार्च 1948 को 'मत्स्य संघ' का गठन किया गया था। इस संघ में पूर्ववर्ती रियासतों अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली को शामिल किया गया था। इस नवनिर्मित प्रशासनिक इकाई की राजधानी के रूप में ऐतिहासिक नगर अलवर का चयन किया गया था। धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह को इसका राजप्रमुख तथा शोभाराम कुमावत को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था।

64. (D) भानगढ़ दुर्ग
अलवर जिले में स्थित भानगढ़ का ऐतिहासिक दुर्ग अपने रहस्यमयी इतिहास और अलौकिक आख्यानों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। सत्रहवीं शताब्दी में राजा भगवंत दास द्वारा निर्मित यह किला वर्तमान में एक उजाड़ नगर का रूप ले चुका है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने इसकी सुरक्षा और रहस्यमयी स्थितियों को देखते हुए सूर्यास्त के बाद और सूर्योदय से पहले पर्यटकों के प्रवेश पर पूर्ण कानूनी प्रतिबंध लगा रखा है, जिससे यह अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण का केंद्र है।

65. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
भरतपुर रियासत के इतिहास में विभिन्न शासकों और सेनापतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महाराजा सूरजमल ने 1733 में प्रसिद्ध एवं अभेद्य लोहागढ़ दुर्ग की स्थापना की। महाराजा बदन सिंह ने डीग के सुंदर जल महलों का निर्माण प्रारंभ करवाया था। ब्रिटिश सेनापति लॉर्ड लेक ने 1805 में भरतपुर दुर्ग की प्रसिद्ध परंतु असफल घेराबंदी का नेतृत्व किया था। महाराजा जवाहर सिंह ने दिल्ली पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में लोहागढ़ में जवाहर बुर्ज बनवाया था।

66. (C) ब्रिटिश घेराबंदी के दौरान इसकी मोटी मिट्टी की दीवारों ने तोप के गोलों के प्रभाव को सोख लिया।
भरतपुर का लोहागढ़ दुर्ग अपनी विशेष निर्माण तकनीक के कारण इतिहास में 'अभेद्य' माना गया। इस किले के चारों ओर एक अत्यंत चौड़ी और गहरी खाई बनाई गई थी तथा मुख्य पत्थरों की दीवारों के बाहर मिट्टी की अत्यंत मोटी दोहरी प्राचीर उठाई गई थी। 1805 में लॉर्ड लेक के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना द्वारा दागे गए तोप के गोले इस नरम मिट्टी की दीवारों में धंसकर निष्क्रिय हो जाते थे, जिससे किले की संरचना को कोई क्षति नहीं पहुंचती थी।

NODIA

67. (A) राजपूत और मुगल वास्तुकला शैलियों
भरतपुर के डीग में स्थित ऐतिहासिक जल महल अठारहवीं शताब्दी के वास्तुकला सौंदर्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन महलों का निर्माण मुख्य रूप से जाट राजा बदन सिंह और महाराजा सूरजमल द्वारा करवाया गया था। डीग के ये महल पारंपरिक राजपूत स्थापत्य कला (जैसे अलंकृत झरोखे, छतरियाँ और विशाल प्रांगण) तथा मुगल स्थापत्य कला (जैसे सममित उद्यान, फुहारे और ज्यामितीय योजना) के अत्यंत सुंदर और सुरुचिपूर्ण संलयन को प्रदर्शित करते हैं।

68. (D) स्थानीय जाट कृषक समुदाय का सैन्यीकरण और सुदृढ़ीकरण
अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के दौर में भरतपुर के जाट राज्य का एक शक्तिशाली क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उदय हुआ। इस राजनैतिक एवं सैन्य सफलता का मुख्य आधार स्थानीय जाट कृषक समुदाय का प्रभावी सैन्यीकरण, संगठन और सुदृढ़ीकरण था। महाराजा सूरजमल जैसे कुशल रणनीतिकारों ने इस कृषक जनबल को एक संगठित,

अध्याय 19
राजस्थान की प्रमुख हस्तियाँ

1. विक्रम संवत पंचांग के अनुसार, महाराणा प्रताप की जयंती किस तिथि को मनाई जाती है?
(A) चैत्र शुक्ल नवमी
(B) ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
(C) वैशाख कृष्ण तृतीया
(D) श्रावण पूर्णिमा

2. हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना की कमान कई प्रसिद्ध योद्धाओं के हाथों में थी। निम्नलिखित में से कौन इस युद्ध के दौरान उनकी सेना का सेनापति नहीं था?
(A) हाकिम खान सूर
(B) रामदास राठौड़
(C) बीदा झाला
(D) जगन्नाथ कछवाहा

3. महाराणा प्रताप के राजदरबार के प्रसिद्ध विद्वान चक्रपाणि मिश्र ने कई महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ उनके द्वारा नहीं लिखा गया था?
(A) वास्तु मंजरी
(B) राज्याभिषेक पद्धति
(C) मुहूर्तमाला
(D) विश्ववल्लभ

4. हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अकबर ने महाराणा प्रताप के विरुद्ध कई सैन्य अभियान चलाए। 1584 ई. में अकबर द्वारा भेजे गए अंतिम प्रमुख मुगल सैन्य अभियान का नेतृत्व किसने किया था?
(A) शाहबाज खान
(B) राजा मानसिंह
(C) जगन्नाथ कछवाहा
(D) अब्दुल रहीम खान-ए-खाना

5. सूची I में दी गई राणा कुंभा के काल से संबंधित शास्त्रीय कृतियों का सूची II में उनके संबंधित रचनाकारों से मिलान कीजिए।
सूची I : शास्त्रीय ग्रंथ
P. संगीत राज
Q. राज वल्लभ
R. कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति
S. उद्धार धारिणी
सूची II : रचनाकार
1. मंडन
2. गोविंद
3. राणा कुंभा
4. अत्रि और महेश
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

6. राणा कुंभा ने 1457 ई. में मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया था। यह युद्ध उनके विरुद्ध हुई किस ऐतिहासिक संधि का प्रत्यक्ष परिणाम था?
(A) पुरंदर की संधि
(B) सारंगपुर की संधि
(C) चंदेरी की संधि
(D) चंपानेर की संधि

7. राणा कुंभा ने संगीत और कलाओं पर कई प्रामाणिक ग्रंथों की रचना की। निम्नलिखित में से किसे राणा कुंभा का संगीत गुरु माना जाता है?
(A) कान्हा व्यास
(B) सारंग व्यास
(C) नाथा
(D) मंडन

8. राणा कुंभा ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी निपुणता को दर्शाने वाली अनेक उपाधियां धारण कीं। निम्नलिखित में से कौन सी उपाधि राणा कुंभा द्वारा धारण नहीं की गई थी?
(A) अभिनव भारताचार्य
(B) हिंदू सुरत्राण
(C) राय पिथोरा
(D) राणो रासो

9. सवाई जयसिंह द्वितीय ने खगोलीय पिंडों की गति का अध्ययन करने के लिए पांच खगोलीय वेधशालाओं का निर्माण कराया, जिन्हें 'जंतर-मंतर' के नाम से जाना जाता है। निम्नलिखित में से किस नगर में उन्होंने वेधशाला का निर्माण नहीं कराया था?
(A) दिल्ली
(B) उज्जैन
(C) मथुरा
(D) ग्वालियर

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : सवाई जयसिंह द्वितीय ने व्यापक खगोलीय अनुसंधान तथा यूरोपीय गणितीय ग्रंथों के संस्कृत अनुवाद

Downloaded from www.pdf.tube

आवश्यकताओं के साथ सम्मिश्रण किया, जिससे अत्यधिक हल्की, पारदर्शी और टिकाऊ 'कोटा डोरिया' साड़ियों की विश्वविख्यात बुनाई शैली विकसित हुई।

79. (B) स्थानीय जंगलों में शाही शिकार के दृश्य
कोटा शैली की लघु चित्रकला अन्य राजस्थानी चित्रकला शैलियों से मुख्य रूप से अपने प्रकृति प्रेम और घनघोर जंगलों में शाही शिकार के जीवंत दृश्यों के अंकन के कारण पृथक पहचानी जाती है। इस शैली में अरावली और विंध्य के घने जंगलों, हिंसक पशुओं के शिकार, हाथियों की लड़ाई तथा प्रकृति के विशद चित्रों का अत्यधिक गतिशीलता के साथ चित्रांकन किया गया है। यहाँ तक कि कोटा शैली में नारियों और रानियों को भी शिकार करते हुए चित्रित किया गया है।

80. (D) चंबल नदी पर इसकी स्थिति जो जल और बिजली प्रदान करती है
आधुनिक राजस्थान में कोटा के एक प्रमुख औद्योगिक और शैक्षणिक केंद्र के रूप में विकसित होने का मुख्य आधार इसकी बारहमासी चंबल नदी के तट पर रणनीतिक स्थिति है। बीसवीं शताब्दी में चंबल घाटी परियोजना के अंतर्गत निर्मित बांधों (जैसे गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और कोटा बैराज) से प्रचुर मात्रा में जल और जलविद्युत उपलब्ध हुई। इस निरंतर ऊर्जा और जल आपूर्ति ने कोटा में भारी उद्योगों, उर्वरक संयंत्रों और बाद में शैक्षणिक संस्थानों को आकर्षित किया।

81. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों की स्थापना विभिन्न शक्तिशाली राजपूत शासकों द्वारा की गई थी। मारवाड़ के राव जोधा ने 1459 में जोधपुर नगर बसाया। आमेर के सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1727 में सुनियोजित जयपुर नगर की स्थापना की। चौहान राजा अजयराज ने 1113 ईस्वी में अजमेर नगर की नींव रखी, जबकि राव बीका ने 1488 ईस्वी में थार मरुस्थल के मध्य बीकानेर नगर की स्थापना की थी।

82. (C) जयपुर - 1727 ईस्वी
जयपुर नगर की स्थापना का स्वीकृत ऐतिहासिक वर्ष 1727 ईस्वी (18 नवंबर 1727) है, जब कछवाहा राजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने इसकी नींव रखी थी। अन्य विकल्पों के संदर्भ में: उदयपुर की स्थापना 1559 ईस्वी में हुई थी, जोधपुर की स्थापना 1459 ईस्वी में हुई थी तथा बीकानेर की स्थापना 1488 ईस्वी में हुई थी। अतः जयपुर और 1727 ईस्वी का युग्म ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्णतः सही और सुमेलित है।

83. (A) टोंक
टोंक राजस्थान की एकमात्र ऐसी ऐतिहासिक रियासत थी जिसकी स्थापना किसी राजपूत शासक द्वारा नहीं की गई थी। इसकी स्थापना 1817 ईस्वी में पश्तून (अफगान) अमीर खां पिंडारी द्वारा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ हुई एक संधि के तहत की गई थी। इसके विपरीत, जैसलमेर की स्थापना भाटी राजपूत रावल जैसल ने, बीकानेर की स्थापना राठौड़ राजपूत राव बीका ने तथा कोटा की स्थापना हाड़ा राजपूत माधो सिंह ने की थी।

84. (D) बेहतर सुरक्षा, शहरी विस्तार स्थान और जल प्रबंधन
राजस्थान के इतिहास में राजधानियों का स्थानांतरण (जैसे मंडोर से जोधपुर या आमेर से जयपुर) मुख्य रूप से तीन व्यावहारिक आवश्यकताओं से प्रेरित था। प्रथम, मैदानी या अधिक सुरक्षित स्थानों पर जाकर तोपखाने के युग में बेहतर सैन्य सुरक्षा प्राप्त करना। द्वितीय, बढ़ती जनसंख्या और प्रशासनिक गतिविधियों के लिए विशाल शहरी विस्तार हेतु समतल भूमि प्राप्त करना। तृतीय, नए क्षेत्रों में बेहतर जल संचयन और निरंतर आपूर्ति प्रबंधन प्रणालियों को विकसित करना था।

85. (D) I, II और III
राजस्थान के पुरातात्विक स्थल प्राचीन मानव इतिहास के विभिन्न युगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। हनुमानगढ़ जिले में स्थित कालीबंगा प्राक-हड़प्पा और विकसित हड़प्पा कालीन कांस्ययुगीन सभ्यता के साक्ष्य प्रस्तुत करता है। उदयपुर में स्थित आहड़ स्थल ताम्रपाषाणिक संस्कृति का मुख्य केंद्र रहा है, जिसे 'ताम्रवती नगरी' भी कहा जाता था। जयपुर के पास स्थित बैराठ (विराटनगर) मौर्यकालीन बौद्ध स्तूपों, गोल मंदिरों और सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख के लिए प्रसिद्ध है।

NODIA

86. (C) आहड़
उदयपुर नगर के समीप आहड़ नदी के किनारे स्थित प्राचीन पुरातात्विक टीले को स्थानीय भाषा में 'धूलकोट' (धूल का टीला) कहा जाता है। यह स्थल प्राचीन आहड़ या ताम्रवती संस्कृति का मुख्य केंद्र था, जिसका कालक्रम लगभग 2000 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व माना जाता है। उत्खनन में यहाँ से तांबे की कुल्हाड़ियाँ, गलाने की भट्टियां, काले और लाल मृदभांड तथा विशाल आवासीय संरचनाएं प्राप्त हुई हैं, जो प्राचीन धातु कर्म को दर्शाती हैं।

87. (D) प्रारंभिक सूक्ष्मपाषाण उपकरण और पशुपालन के साक्ष्य
भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तट पर स्थित बागोर स्थल का पुरातात्विक महत्व मुख्य रूप से मध्यपाषाण कालीन (मेसोलिथिक) संस्कृति के अवशेषों की खोज में निहित है। यहाँ से भारत में सबसे प्राचीन तिथि-युक्त पशुपालन के पुरातात्विक साक्ष्य तथा बड़ी संख्या में सूक्ष्मपाषाण (माइक्रोलिथ) उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह स्थल यह दर्शाता है कि प्राचीन मानव ने शिकार और खाद्य संग्रहण की अवस्था से पशुपालन की ओर संक्रमण किस प्रकार प्रारंभ किया था।

88. (A) शेखावाटी (सीकर जिला)
गणेश्वर का प्राचीन पुरातात्विक स्थल राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में सीकर जिले की नीम का थाना (वर्तमान पृथक जिला) तहसील में कांतली नदी के उद्गम पर स्थित है। इसे भारत में 'ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी' माना जाता है। इस स्थल से प्रचुर मात्रा में तांबे के उपकरण और अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुए हैं। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार गणेश्वर से हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख नगरों को तांबे की आपूर्ति की जाती थी।

89. (B) केवल I, II और III
राजस्थान में विरासत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 'पैलेस ऑन व्हील्स' जैसी शाही रेलगाड़ी शुरु की गई। पुरानी हवेलियों और किलों को 'हेरिटेज होटल' में बदलने से स्थापत्य संरक्षण और स्थानीय रोजगार को प्रोत्साहन मिला है। आरटीडीसी जैसलमेर के मरु महोत्सव जैसे सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन करता है। चौथा कथन गलत है, क्योंकि रणथंभौर जैसे वन्यजीव अभयारण्यों में आने वाले पर्यटक अनिवार्य रूप से वहाँ स्थित ऐतिहासिक रणथंभौर दुर्ग का भी भ्रमण करते हैं।

90. (B) दिल्ली और आगरा
भारत के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर "स्वर्ण त्रिभुज" (गोल्डन ट्रायंगल) एक अत्यधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय पर्यटन परिपथ है। यह परिपथ देश के तीन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रुप से समृद्ध नगरों - दिल्ली, आगरा और राजस्थान की राजधानी जयपुर को आपस में जोड़ता है। इस परिपथ के माध्यम से विश्व भर से आने वाले लाखों पर्यटक भारत के मुग़ल, राजपूत और औपनिवेशिक काल की उत्कृष्ट स्थापत्य कला, किलों, महलों और विविध सांस्कृतिक विरासत का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

91. (A) यह पारंपरिक हस्तशिल्प, लोक कलाओं और स्थानीय सेवा रोजगार को पुनर्जीवित करता है।
राजस्थान के ऐतिहासिक नगरों की स्थापत्य और सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक पर्यटन के साथ एकीकृत करने का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक आर्थिक प्रभाव यह है कि इससे पारंपरिक हस्तशिल्प, स्थानीय लोक कलाओं और हस्तशिल्प उद्योगों को नया जीवन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, विरासत पर्यटन से गाइड, परिवहन, आतिथ्य और स्थानीय व्यापार के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर स्थायी रोजगार के अवसर सृजित होते हैं, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता मिलती है।

92. (C) तटीय परिपथ (पोरबंदर, द्वारका, सोमनाथ)
राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा राज्य की भौगोलिक और ऐतिहासिक विविधता के अनुसार विभिन्न पर्यटन परिपथों को आधिकारिक रूप से बढ़ावा दिया जाता है। इनमें मरु परिपथ (जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर), मेवाड़ परिपथ (उदयपुर, कुंभलगढ़, चित्तौड़गढ़) तथा हाड़ौती परिपथ (कोटा, बूंदी, झालावाड़) शामिल हैं। तटीय परिपथ (पोरबंदर, द्वारका, सोमनाथ) गुजरात राज्य से संबंधित है, क्योंकि राजस्थान एक भू-आबद्ध (लैंडलॉक्ड) राज्य है जहाँ कोई समुद्र तट नहीं है।

93. (A) अजमेर, जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर
इन ऐतिहासिक नगरों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले अजमेर की स्थापना 1113 ईस्वी में अजयराज चौहान द्वारा की गई थी। इसके पश्चात जैसलमेर की स्थापना 1156 ईस्वी में रावल जैसल द्वारा हुई। तत्पश्चात जोधपुर की स्थापना 1459 ईस्वी में राव जोधा द्वारा की गई। अंत में जयपुर नगर की स्थापना 1727 ईस्वी में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। अतः पहला विकल्प सही क्रम दर्शाता है।

94. (A) I, II, III, IV
दिए गए नगरों की स्थापना का प्राचीनतम से नवीनतम कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: बीकानेर की स्थापना 1488 ईस्वी में राव बीका द्वारा की गई थी। उदयपुर की स्थापना 1559 ईस्वी में महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा की गई। कोटा को 1631 ईस्वी में बूंदी से पृथक करके स्वतंत्र रूप से स्थापित किया गया। अंततः अलवर रियासत की स्थापना 1770 ईस्वी में राव राजा प्रताप सिंह द्वारा की गई थी।

95. (B) जनसंख्या का विस्तार और तोपखाने द्वारा पुराने किलों को अप्रचलित बना देना
राजस्थान में पंद्रहवीं से अठारहवीं शताब्दी के मध्य नई शहरी राजधानियों की स्थापना में तेजी आने का मुख्य कारण बारूद और तोपखाने का व्यापक उपयोग था, जिसने ऊँचे पहाड़ियों पर स्थित पुराने किलों को तोप के गोलों के सामने संवेदनशील बना दिया था। इसके साथ ही, बढ़ती जनसंख्या, नए व्यापारिक मार्गों के विकास तथा सुव्यवस्थित नागरिक प्रशासन के लिए मैदानी भागों में व्यापक स्थानों की आवश्यकता महसूस हुई, जिसके परिणामस्वरूप जयपुर और उदयपुर जैसी नई राजधानियाँ बनीं।

96. (D) जयपुर
दिए गए राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में जयपुर की स्थापना ऐतिहासिक समय-सीमा में सबसे बाद में हुई थी। जोधपुर की स्थापना 1459 ईस्वी में, बीकानेर की स्थापना 1488 ईस्वी में तथा उदयपुर की स्थापना 1559 ईस्वी में हुई थी। इसके विपरीत, जयपुर नगर की स्थापना अठारहवीं शताब्दी में 1727 ईस्वी में सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा की गई थी। इसलिए जयपुर इन सभी नगरों में सबसे नवीनतम स्थापित नियोजित राजधानी नगर है।

97. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पाली, जैसलमेर और चूरू जैसे पारंपरिक मरुस्थलीय कारवां नगरों की वाणिज्यिक प्रमुखता में भारी गिरावट आई। इसका मुख्य कारण भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा रेलमार्ग नेटवर्क का बिछाया जाना और तटीय बंदरगाहों (जैसे बॉम्बे और कलकत्ता) का तेजी से विकास होना था। आधुनिक रेलमार्गों ने प्राचीन ऊँट कारवां मार्गों को दरकिनार कर दिया, जिससे इन आंतरिक मरुस्थलीय नगरों का पारंपरिक पारगमन व्यापार और राजस्व समाप्त हो गया।

98. (C) गंगा के मैदानों को गुजरात और सिंध के तटीय बंदरगाहों से
मध्यकालीन और उत्तर-मध्यकालीन युग में जैसलमेर, बीकानेर और पाली जैसे राजस्थान के अंतर्देशीय नगरों की आर्थिक समृद्धि मुख्य रूप से उनकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति पर निर्भर थी। ये नगर उपजाऊ गंगा के मैदानी इलाकों तथा उत्तर भारत के व्यापारिक केंद्रों को गुजरात (जैसे खंभात, सूरत) और सिंध के समृद्ध तटीय बंदरगाहों से जोड़ने वाले प्रमुख अंतर्देशीय कारवां मार्गों पर स्थित थे। इन मार्गों से रेशम, मसाले, अफीम और वस्त्रों का वृहद व्यापार होता था।

Click Here to Buy book on Amazon

99. (A) बंजारे

मध्यकालीन राजस्थान और संपूर्ण भारत के विषम भूभागों तथा कठिन मरुस्थलीय मार्गों पर रसद आपूर्ति और माल परिवहन बनाए रखने में 'बंजारा' खानाबदोश समुदाय ने अत्यंत अनिवार्य ऐतिहासिक भूमिका निभाई। यह समुदाय हजारों बैलगाड़ियों और मवेशियों के काफिलों के साथ अनाज, नमक, मसाले और हथियारों का दूर-दराज के क्षेत्रों तक परिवहन करता था। युद्ध काल में दिल्ली सल्तनत, मुगलों और राजपूत शासकों की सेनाओं के लिए रसद सामग्री जुटाने में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

100. (D) बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास के प्रेसीडेंसी बंदरगाह नगर

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान राजस्थान के आंतरिक कारवां नगरों से व्यापारिक शक्ति का स्थानांतरण ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रेसीडेंसी नगरों - बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास के उदय से तीव्र हुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी ने समुद्री वाणिज्य, आधुनिक बंदरगाहों और रेल नेटवर्क पर ध्यान केंद्रित किया। इसके परिणामस्वरूप राजस्थान के पारंपरिक व्यापारी परिवारों (मारवाड़ियों) ने इन तटीय प्रेसीडेंसी नगरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन किया, जिससे अंतर-क्षेत्रीय व्यापारिक शक्ति का केंद्र औपनिवेशिक महानगरों में स्थानांतरित हो गया।

www.nodia.in

NODIA

(C) जयपुर रियासत में तुरंत पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित किया गया।
(D) ब्रिटिश सैन्य बलों ने राजपूताना रेजीडेंसी से अपना परिचालन पूरी तरह से वापस ले लिया।

43. हीरालाल शास्त्री और उनकी पत्नी रतन शास्त्री ने 1935 ई. में 'शांताबाई शिक्षा कुटीर' की स्थापना की, जो बाद में वनस्थली विद्यापीठ के रूप में विकसित हुई। इस संस्थान की स्थापना मूल रूप से किसकी स्मृति में की गई थी?
(A) एक हुतात्मा स्वतंत्रता सेनानी
(B) उनकी दिवंगता पुत्री
(C) महात्मा गांधी की पत्नी, कस्तूरबा
(D) निवाई की एक किसान बालिका

44. मोतीलाल तेजावत ने अत्यधिक करों और बेगार के विरुद्ध भील और गरासिया जनजातियों को संगठित किया। उन्होंने 1921 ई. में प्रसिद्ध एकी आंदोलन की शुरुआत किस स्थान से की थी?
(A) मानगढ़ धाम
(B) मातृकुंडिया
(C) झाड़ोल ठिकाना
(D) सलंबर जागीर

45. राजस्थान में जनजातीय और किसान आंदोलनों से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. गोविंद गुरु द्वारा संप सभा का गठन
2. मानगढ़ पहाड़ी नरसंहार
3. मोतीलाल तेजावत द्वारा एकी आंदोलन का प्रारंभ
4. मीना क्षेत्रीय परिषद (मीना क्षत्रिय महासभा) की स्थापना

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इन घटनाओं के सही कालानुक्रम को दर्शाता है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 2, 4

46. मोतीलाल तेजावत ने शोषित जनजातीय आबादी की ओर से महाराणा फतेह सिंह को 21 सूत्री मांग पत्र प्रस्तुत किया। इस प्रसिद्ध दस्तावेज़ को किस नाम से जाना जाता है?
(A) मेवाड़ रो संदेश
(B) भील पुकार
(C) मेवाड़ की पुकार
(D) आदिवासी अधिकार पत्र

47. एकी आंदोलन का नेतृत्व संभालने से पूर्व, मोतीलाल तेजावत मेवाड़ के किस ठिकाने में कामदार (प्रबंधक) के रूप में कार्यरत थे?
(A) खेरवाड़ा
(B) गोगुंदा
(C) ओगणा
(D) झाड़ोल

48. केसरी सिंह बारहट ने मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह को 'चेतावनी रा चूंगट्या' नामक कविता भेंट करके 1903 ई. के दिल्ली दरबार में सम्मिलित होने से रोका था। इस दरबार का आयोजन करने वाला वायसराय कौन था?
(A) लॉर्ड मिंटो
(B) लॉर्ड हार्डिंग
(C) लॉर्ड कर्जन
(D) लॉर्ड चेम्सफोर्ड

49. 'चेतावनी रा चूंगट्या', जिसने महाराणा फतेह सिंह के स्वाभिमान को जगाया, में कितने सोरठे हैं?
(A) 11
(B) 13
(C) 15
(D) 21

50. सूची I में दिए गए राजस्थान के क्रांतिकारी व्यक्तित्वों का सूची II में उन ऐतिहासिक मुकदमों/संस्थानों से मिलान कीजिए जिनसे वे मुख्य रूप से जुड़े हैं।
सूची I : क्रांतिकारी व्यक्तित्व
P. केसरी सिंह बारहट
Q. प्रताप सिंह बारहट
R. सागरमल गोपा
S. अर्जुन लाल सेठी

सूची II : ऐतिहासिक मुकदमे/संस्थान
1. वर्धमान विद्यालय (जयपुर)
2. बनारस षड्यंत्र केस
3. प्यारेलाल साधु हत्याकांड
4. जैसलमेर का गुंडाराज

(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-1, Q-2, R-4, S-3
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

51. केसरी सिंह बारहट के युवा क्रांतिकारी पुत्र प्रताप सिंह बारहट ने अमानवीय यातनाएं सहीं और अंततः 1918 ई. में शहीद हो गए। उन्हें किस कारागार में कैद करके यातनाएं दी गई थीं?
(A) बरेली सेंट्रल जेल
(B) सेल्यूलर जेल, अंडमान
(C) यरवदा जेल
(D) वेल्लोर सेंट्रल जेल

52. राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजपूताना में ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार की जाने वाली पहली महिला होने का गौरव किसे प्राप्त है?
(A) उदयपुर की नारायणी देवी वर्मा
(B) वनस्थली की रतन शास्त्री
(C) अंजना देवी चौधरी
(D) जयपुर की रमा देवी

Downloaded from www.pdf.tube

को संरक्षण प्रदान किया।
कारण (R) : उनके दरबारी विद्वान जगन्नाथ सम्राट ने टॉलमी के ग्रंथ 'अलमागेस्ट' के अरबी संस्करण का 'सिद्धांत सम्राट' के रूप में संस्कृत में अनुवाद किया।
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

11. हुरड़ा सम्मेलन का आयोजन 1734 ई. में सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा किया गया था। निम्नलिखित में से किस राजपूत शासक ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की थी?
(A) जयपुर के सवाई जयसिंह द्वितीय
(B) महाराणा जगत सिंह द्वितीय
(C) मारवाड़ के महाराजा अभय सिंह
(D) कोटा के महाराव दुर्जन शाल

12. सवाई जयसिंह द्वितीय ने सटीक पंचांग तैयार करने में सहायता के लिए अपने प्रेक्षणों के आधार पर खगोलीय सारणियों का एक संकलन तैयार किया। इस संकलन का क्या नाम था?
(A) यंत्र राज
(B) जीज मोहम्मद शाही
(C) सिद्धांत कौस्तुभ
(D) जयसिंह कारिका

13. पृथ्वीराज चौहान (पृथ्वीराज तृतीय) ने 1182 ई. में चंदेल शासक परमर्दिदेव के विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध लड़ा, जिसमें प्रसिद्ध सेनापति आल्हा और ऊदल वीरगति को प्राप्त हुए थे। इस युद्ध का क्या नाम है?
(A) तुमुल का युद्ध
(B) तराइन का युद्ध
(C) तबरहिंद का युद्ध
(D) नागौर का युद्ध

14. पृथ्वीराज चौहान के राजदरबार में कई महान विद्वान और कवि सुशोभित थे। उस विद्वान की पहचान कीजिए जो पृथ्वीराज चौहान के दरबार से संबंधित नहीं था।
(A) जयानक
(B) चंदबरदाई
(C) सोमदेव
(D) विद्यापति गौड़

15. पृथ्वीराज चौहान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में शिहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी को पराजित किया था।
II. उनकी माता, रानी कर्पूरी देवी ने उनके शासनकाल के शुरुआती वर्षों में उनकी संरक्षिका के रूप में कार्य किया।
III. वे तराइन के द्वितीय युद्ध में विजयी हुए और दिल्ली में एक विशाल हिंदू साम्राज्य की स्थापना की।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

16. ऐतिहासिक ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो', जो पृथ्वीराज चौहान के सैन्य और प्रेम प्रसंगों का वर्णन करता है, में उनके मुख्य युद्धक घोड़े का उल्लेख है। उस घोड़े का क्या नाम था?
(A) मेवाड़ का चेतक
(B) मालवा का हस्ती
(C) नात्य रंभा
(D) चित्तौड़ का बादल

NODIA

17. भक्ति आंदोलन की प्रमुख प्रतिपादकों में से एक, संत मीराबाई का जन्म राठौड़ राजवंश में हुआ था। उनका जन्म किस गाँव में हुआ था?
(A) मेड़ता
(B) कुड़की
(C) बोरुंदा
(D) पीपासर

18. मीराबाई के भक्ति पदों में व्यक्तिगत भावनाओं और आध्यात्मिक लालसा का अद्भुत संगम है। निम्नलिखित में से किसे व्यापक रूप से मीराबाई का आध्यात्मिक गुरु माना जाता है?
(A) संत दादू दयाल
(B) स्वामी रामानंद
(C) वल्लभाचार्य
(D) संत रैदास

19. मीराबाई की प्रत्यक्ष प्रेरणा और मार्गदर्शन में, रत्ना खाती द्वारा किस प्रमुख साहित्यिक कृति की रचना की गई थी?
(A) नरसी जी रो मायरो
(B) राग गोविंद
(C) राग सोरठ
(D) गीतगोविंद की टीका

20. संत मीराबाई के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनका विवाह मेवाड़ के महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था।
II. उनकी भक्ति काव्य रचनाएँ मुख्य रूप से ब्रजभाषा मिश्रित राजस्थानी में रची गई थीं।
III. उन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद सती प्रथा का कड़ा विरोध किया।
IV. उन्होंने अपने अंतिम दिन वृंदावन में बिताए, जहाँ वे बांके बिहारी की मूर्ति में विलीन हो गईं।
इनमें से कौन सा संयोजन सही कथनों की पहचान करता है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV

अनुशासित और अनुकरणीय सैन्य बल में बदल दिया, जिसने दिल्ली और आगरा के निकट अपनी संप्रभुता सफलतापूर्वक स्थापित की।

69. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
सांभर प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक और व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था। इस महत्व का मुख्य भौगोलिक आधार यहाँ स्थित भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय लवण (नमक) झील है। इस झील से नमक का वृहद पैमाने पर उत्पादन होता था, जिससे इसको नियंत्रित करने वाले शाकंभरी के चौहानों, दिल्ली सल्तनत और बाद में मुगल साम्राज्य को प्रचुर व्यापारिक राजस्व प्राप्त होता था। अतः कथन और कारण दोनों पूर्णतः सत्य हैं।

70. (C) शाकंभरी के चौहान
सांभर (प्राचीन नाम शाकंभरी) का आसपास का क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से चौहान (चाहमान) राजवंश का प्रारंभिक शक्ति केंद्र और मूल निवास स्थान था। छठी शताब्दी ईस्वी के आसपास वासुदेव चौहान ने इस क्षेत्र में चौहान वंश की स्थापना की थी और सांभर को अपनी पहली राजधानी बनाया था। यहीं से चौहानों की शक्ति का विस्तार हुआ, जिसके बाद उन्होंने अजमेर और कालांतर में दिल्ली तक अपने विशाल साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया।

71. (D) देवयानी सरोवर
सांभर झील के समीप स्थित देवयानी सरोवर एक अत्यंत प्राचीन ऐतिहासिक और पौराणिक तीर्थ स्थल है। भारतीय लोक परंपरा और धार्मिक मान्यताओं में इसे "तीर्थों की नानी" के नाम से जाना जाता है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार इस स्थल का संबंध दैत्यगुरु महर्षि शुक्राचार्य और उनकी पुत्री देवयानी से है। यहाँ स्थित पवित्र कुंड में स्नान करने का धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व माना जाता है, जहाँ प्रतिवर्ष वैसाख पूर्णिमा को मेला आयोजित होता है।

72. (A) ब्रिटिश सरकार
वर्ष 1869-70 के दौरान जयपुर और जोधपुर की रियासतों ने ब्रिटिश सरकार के साथ ऐतिहासिक नमक संधियों पर हस्ताक्षर किए थे। इन संधियों के माध्यम से सांभर झील से नमक उत्पादन, प्रसंस्करण और उसके व्यापार का संपूर्ण वाणिज्यिक एवं प्रशासनिक नियंत्रण ब्रिटिश सरकार को पट्टे पर हस्तांतरित कर दिया गया था। अंग्रेजों ने इस लवण संसाधन पर अपना पूर्ण एकाधिकार स्थापित किया और इसके वितरण से भारी राजस्व एवं कर प्राप्त किया था।

73. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
जोधपुर जिले में स्थित ओसियां के प्राचीन मंदिर अपनी धार्मिक विविधता के लिए प्रसिद्ध हैं। सच्चियाय माता का मंदिर ओसवाल जैन और हिंदू दोनों सम्प्रदायों के लिए समान रूप से पूजनीय है। महावीर मंदिर आठवीं शताब्दी का एक प्रमुख ऐतिहासिक जैन तीर्थ केंद्र है। हरिहर मंदिर भगवान विष्णु और शिव के संयुक्त स्वरूप (हरी-हर) को समर्पित है, जबकि सूर्य मंदिर प्राचीन सूर्य उपासना का एक उत्कृष्ट वास्तुकला केंद्र है।

74. (B) गुर्जर-प्रतिहार
ओसियां का प्राचीन नगर आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य मुख्य रूप से गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के शासनकाल के दौरान एक समृद्ध धार्मिक और व्यावसायिक केंद्र के रूप में फला-फूला। इस अवधि में प्रतिहार शासकों और धनी व्यापारियों के संरक्षण में यहाँ अनेक भव्य हिंदू और जैन मंदिरों का निर्माण हुआ। ओसियां के ये मंदिर गुर्जर-प्रतिहार स्थापत्य शैली (मारु-गुर्जर कला) के शुरुआती और सबसे उत्कृष्ट जीवित पुरातात्विक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

75. (A) जटिल कलात्मक विवरणों वाले सुरुचिपूर्ण मूर्तिकला से युक्त प्रारंभिक मध्यकालीन मंदिर
ओसियां को इसकी अद्भुत मूर्तिकला और स्थापत्य समृद्धि के कारण "राजस्थान का खजुराहो" या "राजस्थान का कोणार्क" कहा जाता है। यहाँ आठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के बीच निर्मित मंदिरों में पत्थरों पर अत्यंत बारीक, कलात्मक और जीवंत नक्काशी की गई है। देव आकृतियों, नर्तकियों और पौराणिक प्रसंगों का सुंदर चित्रांकन मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिरों की उत्कृष्ट मूर्तिकला की याद दिलाता है, जो तत्कालीन भारतीय शिल्पियों की उच्च कलात्मक दक्षता को दर्शाता है।

76. (C) उत्तरी मैदानों को पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ने वाला एक प्रमुख मरुस्थलीय कारवां मार्ग
प्राचीन ओसियां नगर की आर्थिक समृद्धि और उसके फलस्वरूप भव्य मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से व्यापारिक मार्गों पर इसकी रणनीतिक स्थिति का परिणाम था। यह नगर उत्तर भारत के मैदानी भागों को गुजरात और सिंध के तटीय बंदरगाहों से जोड़ने वाले प्रमुख मरुस्थलीय कारवां मार्ग पर स्थित था। यहाँ से गुजरने वाले धनी व्यापारियों और महाजनों ने अपनी धार्मिक आस्था तथा आर्थिक संपन्नता के कारण ओसियां में इन भव्य मंदिरों को भारी वित्तीय संरक्षण प्रदान किया।

77. (D) शाहजहाँ
कोटा की स्वतंत्र रियासत का गठन वर्ष 1631 में हुआ था, जब मुगल सम्राट शाहजहाँ ने एक शाही फरमान जारी किया था। इस फरमान के माध्यम से कोटा क्षेत्र को बूंदी रियासत से अलग करके एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई के रूप में स्थापित किया गया था। बूंदी के राव रतन सिंह के पुत्र माधो सिंह प्रथम को कोटा का पहला स्वतंत्र हाड़ा शासक नियुक्त किया गया, जिन्होंने मुगल साम्राज्य के प्रति अपनी वीरता और वफादारी के बल पर यह मान्यता प्राप्त की थी।

78. (C) मैसूर (कर्नाटक)
प्रसिद्ध "कोटा डोरिया" कपड़ा बुनाई की ऐतिहासिक उत्पत्ति सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मानी जाती है। कोटा के तत्कालीन महाराव किशोर सिंह प्रथम और उनके कुशल सेनापति जालिम सिंह ने मैसूर (कर्नाटक) से दक्ष बुनकरों को कोटा लाकर बसाया था। इन दक्षिण भारतीय बुनकरों ने अपनी पारंपरिक सूती और रेशमी बुनाई तकनीक का स्थानीय

Click Here to Buy book on Flipkart

(B) मराठा
(C) हरिजन
(D) प्रताप

32. जयनारायण व्यास ने सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध युवाओं को संगठित करने के लिए जोधपुर में मारवाड़ यूथ लीग की स्थापना की। इसकी स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(A) 1921 ई.
(B) 1938 ई.
(C) 1931 ई.
(D) 1942 ई.

33. जयनारायण व्यास ने एक प्रसिद्ध पुस्तिका प्रकाशित करके मारवाड़ राज्य के प्रशासनिक भ्रष्टाचार और निरंकुश शासन की आलोचना की। इसका शीर्षक क्या था?
(A) मारवाड़ की अवस्था
(B) पोपाबाई की पोल
(C) जोधपुर राज्य का इतिहास
(D) मारवाड़ का वर्तमान शासन

34. जयनारायण व्यास ने प्रजामंडल की मांगों को उठाने के लिए कई समाचार पत्रों का संपादन और प्रकाशन किया। निम्नलिखित में से कौन सा समाचार पत्र उनके द्वारा पूर्णतः राजस्थानी भाषा में प्रकाशित किया गया था?
(A) अखंड भारत
(B) तरुण राजस्थान
(C) पीप
(D) आगीबाण

35. जयनारायण व्यास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने देशी रियासतों में लोकतांत्रिक अधिकारों की वकालत करने के लिए दिल्ली से अंग्रेजी समाचार पत्र 'पीप' प्रकाशित किया।
II. वे 1934 ई. में मारवाड़ प्रजामंडल के गठन में अत्यधिक सक्रिय रूप से सम्मिलित थे।
III. वे मार्च 1952 ई. में प्रथम आम चुनावों के बाद राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री बने।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल III
(C) केवल II और III
(D) केवल I और II

36. बिजोलिया किसान आंदोलन के दौरान, माणिक्य लाल वर्मा ने एक लोकप्रिय देशभक्ति गीत की रचना की, जिसने आंदोलनकारी किसानों में नवचेतना का संचार किया। इस गीत का क्या नाम था?
(A) अर्जी
(B) झंडा गीत
(C) पंछीड़ा
(D) प्रलय प्रतीक्षा

37. 1938 ई. में मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना में माणिक्य लाल वर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस संगठन का प्रथम अध्यक्ष किसे चुना गया था?
(A) बलवंत सिंह मेहता
(B) स्वयं माणिक्य लाल वर्मा
(C) भूरेलाल बया
(D) जमनालाल बजाज

38. अजमेर में निर्वासन के दौरान, माणिक्य लाल वर्मा ने अपने गृह राज्य में सामंती अत्याचारों को उजागर करने वाली एक पुस्तक लिखी। उस पुस्तक की पहचान कीजिए।
(A) मेवाड़ स्टेट का संकट
(B) राजपूताना की देशी रियासतें
(C) मेवाड़ की प्रगतिशील पुकार
(D) मेवाड़ का वर्तमान शासन

39. माणिक्य लाल वर्मा ने राजस्थान के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने राज्य के गठन के किस चरण के दौरान प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया?
(A) मत्स्य संघ
(B) संयुक्त राजस्थान
(C) राजस्थान संघ (पूर्व राजस्थान)
(D) बृहत् राजस्थान

40. हीरालाल शास्त्री के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने महिलाओं की समग्र शिक्षा के लिए वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की।
II. उनकी आत्मकथा का शीर्षक 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र' है।
III. उन्होंने प्रसिद्ध देशभक्ति गीत 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' की रचना की।
IV. वे 1942 ई. के जेंटलमैन एग्रीमेंट के मुख्य सूत्रधार थे।
इनमें से कौन सा संयोजन सही कथनों की पहचान करता है?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

41. हीरालाल शास्त्री को पुनर्गठित राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री (तब प्रधानमंत्री कहा जाता था) होने का गौरव प्राप्त है। वे किस जिले से संबंधित थे?
(A) अजमेर
(B) टोंक
(C) सीकर
(D) जयपुर

42. 1942 ई. में हीरालाल शास्त्री और सर मिर्जा इस्माइल के बीच हस्ताक्षरित 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम हुआ। इसका प्राथमिक परिणाम क्या था?
(A) जयपुर प्रजामंडल भारत छोड़ो आंदोलन से पृथक रहा।
(B) जयपुर राज्य तत्काल प्रभाव से सीधे भारतीय संघ में सम्मिलित हो गया।

Downloaded from www.pdf.tube

(D) केवल I, III और IV

21. पन्ना धाय ने मेवाड़ के उत्तराधिकारी को बचाने के लिए अपने स्वयं के पुत्र का बलिदान देकर स्वामिभक्ति की अनुपम मिसाल प्रस्तुत की। पन्ना धाय के पुत्र का क्या नाम था?
(A) चंदन
(B) बनवीर
(C) विक्रमादित्य
(D) रतन सिंह

22. चित्तौड़गढ़ से निकलने के बाद, पन्ना धाय बालक उदय सिंह को सुरक्षित ले गईं और उन्होंने किस दुर्ग में शरण प्राप्त की?
(A) मांडलगढ़
(B) रणथंभौर
(C) गागरोन
(D) कुंभलगढ़

23. वह दुर्गपाल कौन था जिसने पन्ना धाय और बालक उदय सिंह को सत्ता हथियाने वाले बनवीर के विरुद्ध शरण और सुरक्षा प्रदान की थी?
(A) मेड़ता के जयमल राठौड़
(B) आशा शाह देवपुरा
(C) सलंबर के पत्ता सिसोदिया
(D) बेगूं के रावत चूंडावत

24. गोविंद गुरु ने भील समाज में सुधार के लिए 1883 ई. में 'संप सभा' की स्थापना की। स्थानीय बोली में 'संप' शब्द का मुख्य रूप से क्या अर्थ है?
(A) राज्य के अत्याचार के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति
(B) राज्य प्राधिकारियों के साथ असहयोग
(C) एकता और आपसी भ्रातृभाव
(D) आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता

25. सूची I में दी गई प्रमुख हस्तियों का सूची II में उनके द्वारा स्थापित या नेतृत्व किए गए सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों अथवा संस्थाओं से मिलान कीजिए।
सूची I : व्यक्तित्व
P. गोविंद गुरु
Q. मोतीलाल तेजावत
R. विजय सिंह पथिक
S. स्वामी दयानंद सरस्वती
सूची II : आंदोलन/संस्थान
1. एकी आंदोलन
2. राजस्थान सेवा संघ
3. परोपकारिणी सभा
4. भगत आंदोलन
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

26. जनजातीय आबादी को राजनीतिक और सामाजिक रूप से संगठित करने के गोविंद गुरु के प्रयासों का अंत मेवाड़ भील कोर द्वारा किए गए एक दुखद सामूहिक नरसंहार के रूप में हुआ। मानगढ़ पहाड़ी नरसंहार किस तिथि को हुआ था?
(A) 17 नवंबर 1913 ई.
(B) 13 अप्रैल 1919 ई.
(C) 07 मार्च 1922 ई.
(D) 15 अगस्त 1914 ई.

27. गोविंद गुरु उदयपुर यात्रा के दौरान एक प्रमुख सामाजिक-धार्मिक सुधारक की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। वह सुधारक कौन थे?
(A) स्वामी विवेकानंद
(B) स्वामी दयानंद सरस्वती
(C) राजा राममोहन राय
(D) ईश्वर चंद्र विद्यासागर

28. भारत में किसान आंदोलनों के जनक माने जाने वाले विजय सिंह पथिक राजस्थान आने से पूर्व मूल रूप से किस क्षेत्र के निवासी थे?
(A) मालवा क्षेत्र, मध्य प्रदेश
(B) बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश
(C) हिसार जिला, हरियाणा
(D) काठियावाड़ क्षेत्र, गुजरात

29. विजय सिंह पथिक ने किसानों के शोषण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए 1919 ई. में 'राजस्थान सेवा संघ' की स्थापना की थी। इस संस्था की स्थापना मूल रूप से कहाँ की गई थी?
(A) वर्धा
(B) अजमेर
(C) बिजोलिया
(D) उदयपुर

NODIA

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : विजय सिंह पथिक को सर्वसम्मति से बिजोलिया किसान आंदोलन के सबसे संगठित चरण का सूत्रधार माना जाता है।
कारण (R) : उन्होंने 1897 ई. में इसकी शुरुआत से ही बिजोलिया आंदोलन का नेतृत्व किया और 1941 ई. तक लगातार इसका संचालन किया।
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

31. बिजोलिया के किसानों की दुर्दशा को राष्ट्रीय स्तर पर उठाने के लिए विजय सिंह पथिक ने गणेश शंकर विद्यार्थी के सहयोग से किस प्रसिद्ध समाचार पत्र में समाचार प्रकाशित करवाए?
(A) केसरी

53. 13 वर्षीया भील बालिका काली बाई ने 1947 ई. में अपने शिक्षक सेंगाभाई को पुलिस की बर्बरता से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। यह ऐतिहासिक घटना किस गाँव में हुई थी?
(A) रास्तापाल
(B) मानगढ़
(C) पुनावाड़ा
(D) मातृकुंडिया

54. नारायणी देवी वर्मा ने प्रजामंडल आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और अपना जीवन समाज सुधार के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने 1944 ई. में किस नगर में 'महिला आश्रम' की स्थापना की?
(A) उदयपुर
(B) अजमेर
(C) बीकानेर
(D) भीलवाड़ा

55. राजस्थान की प्रमुख महिला हस्तियों से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं पर विचार कीजिए:
1. रास्तापाल में काली बाई की शहादत
2. किसान आंदोलन के दौरान अंजना देवी चौधरी की गिरफ्तारी
3. रतन शास्त्री द्वारा शांताबाई शिक्षा कुटीर (बाद में वनस्थली) की स्थापना

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इन घटनाओं के सही कालानुक्रम को दर्शाता है?
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

56. अपनी रियासत के निरंकुश शासन का पुरजोर विरोध करने वाले सागरमल गोपा को 1946 ई. में कारागार में जीवित जला दिया गया था। वे किस रियासत से संबंधित थे?
(A) जोधपुर राज्य
(B) बीकानेर राज्य
(C) जैसलमेर
(D) सिरोही राज्य

57. गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित जमनालाल बजाज ने खादी को बढ़ावा देने के लिए 1925 ई. में राजस्थान में 'चरखा संघ' की स्थापना की। इसका मुख्यालय कहाँ स्थापित किया गया था?
(A) जयपुर
(B) सीकर
(C) वर्धा
(D) अजमेर

58. राजस्थान के किस स्वतंत्रता सेनानी ने यह कहते हुए अपने प्रतिष्ठित राजकीय पद से त्यागपत्र दे दिया था, "यदि मैं राज्य की सेवा करूंगा, तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा?"
(A) अर्जुन लाल सेठी
(B) स्वामी कुमारानंद
(C) मास्टर आदित्येंद्र
(D) बालमुकुंद बिस्सा

59. बालमुकुंद बिस्सा की राजनीतिक बंदी का दर्जा मांगने को लेकर जोधपुर सेंट्रल जेल में लंबी भूख हड़ताल के बाद मृत्यु हो गई। वे किस प्रजामंडल से जुड़े थे?
(A) बीकानेर प्रजामंडल
(B) मारवाड़ प्रजामंडल
(C) मेवाड़ प्रजामंडल
(D) जयपुर प्रजामंडल

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : कोमल कोठारी ने राजस्थान की मांगणियार और लंगा लोक संगीत परंपराओं के प्रलेखीकरण और अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार में अद्वितीय भूमिका निभाई।
कारण (R) : उन्होंने राजस्थानी लोकगीतों एवं लोककथाओं को संरक्षित और संग्रहीत करने के लिए लेखक विजयदान देथा के साथ मिलकर बोरुंदा में 'रूपायन संस्थान' की सह-स्थापना की।
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

61. कृपाल सिंह शेखावत एक विश्व प्रसिद्ध कलाकार थे, जिन्होंने राजस्थान की एक पारंपरिक कला में 25 अलग-अलग रंगों का समावेश करके उसमें नवीनता ला दी। वे किस कला से जुड़े हैं?
(A) जयपुर की ब्लू पॉटरी
(B) प्रतापगढ़ की थेवा कला
(C) बीकानेर की उस्ता कला
(D) नाथद्वारा की पिछवाई चित्रकारी

62. राज्य गीत "केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देस" को लोकप्रिय बनाने वाली मांड गायकी की सुप्रसिद्ध गायिका अल्लाह जिलाई बाई को किस शासक का राजकीय संरक्षण प्राप्त था?
(A) मेवाड़ के महाराणा भोपाल सिंह
(B) जयपुर के सवाई मानसिंह द्वितीय
(C) बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह
(D) जोधपुर के महाराजा उम्मेद सिंह

63. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कलाकार गुलाबो सपेरा को किस अनूठे राजस्थानी लोक नृत्य को विश्व मंच पर लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जाता है?

Click Here to Buy book on Amazon

84. सर्वसम्मति से राजस्थान के राज्य कवि के रूप में आदरणीय सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'वंश भास्कर' लिखी। वे किस रियासत के दरबारी कवि थे?
(A) जोधपुर
(B) कोटा
(C) बूंदी
(D) मेवाड़

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'वंश भास्कर' को जानबूझकर अधूरा छोड़ दिया था।
कारण (R) : अपनी ऐतिहासिक वस्तुपरकता से समझौता करने से इंकार करने के कारण उनके अपने संरक्षक बूंदी के महाराव राम सिंह के साथ गंभीर वैचारिक मतभेद हो गए थे।
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

86. राजस्थानी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान कन्हैयालाल सेठिया ने प्रसिद्ध कविता 'पीथल और पाथल' की रचना की। इस कविता में 'पाथल' पात्र महाराणा प्रताप का प्रतिनिधित्व करता है। 'पीथल' किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(A) अजमेर के पृथ्वीराज चौहान
(B) जयपुर के सवाई जयसिंह द्वितीय
(C) आगरा के सम्राट अकबर
(D) पृथ्वीराज राठौड़

87. विजयदान देथा (बिज्जी) ने राजस्थानी लोककथाओं के 14 खंडों के विशाल संग्रह 'बातां री फुलवारी' की रचना की। निम्नलिखित में से कौन सी साहित्यिक कृति उनके द्वारा नहीं लिखी गई थी?
(A) दुविधा
(B) पगफेरो
(C) अलेखूं हिटलर
(D) उलझन

88. राजस्थान में महिला शिक्षा और समाज सेवा की अग्रणी हस्ती रतन शास्त्री को कई राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए। वे किस प्रतिष्ठित संस्थान की संस्थापिका थीं?
(A) महिला मंडल, उदयपुर
(B) महिला आश्रम, भीलवाड़ा
(C) वनस्थली विद्यापीठ
(D) सावित्री गर्ल्स कॉलेज, अजमेर

89. जयपुर में जन्मे और पद्म भूषण से सम्मानित पंडित विश्व मोहन भट्ट ने किस वाद्ययंत्र का आविष्कार करके अंतरराष्ट्रीय ख्याति और 1994 ई. में ग्रेमी पुरस्कार प्राप्त किया?
(A) रुद्र वीणा
(B) कामायचा
(C) सुरबहार
(D) मोहन वीणा

90. राजस्थान के प्रमुख सम्मान प्राप्तकर्ताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. घनश्याम दास बिड़ला पद्म विभूषण से सम्मानित होने वाले राजस्थान के प्रथम व्यक्ति थे।
II. अरुणा रॉय को सूचना के अधिकार आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए रमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
III. श्रीगंगानगर के मूल निवासी जगजीत सिंह को कला और ग़ज़ल गायकी में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।
इनमें से कौन सा संयोजन सही कथनों की पहचान करता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

91. राजस्थान के किस प्रसिद्ध पर्यावरणविद और जल संरक्षणवादी को 'भारत का जलपुरुष' (वाटरमैन ऑफ इंडिया) कहा जाता है और उन्हें सामुदायिक जल संचयन परियोजनाओं के लिए रमन मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त हुआ है?
(A) सुंदरलाल बहुगुणा
(B) राजेंद्र सिंह
(C) अनुपम मिश्र
(D) चंडी प्रसाद भट्ट

92. कालानुक्रमिक रूप से, राजस्थान की निम्नलिखित प्रमुख ऐतिहासिक हस्तियों में से कौन सबसे प्राचीन काल से संबंधित है?
(A) मेवाड़ के महाराणा प्रताप
(B) पृथ्वीराज चौहान
(C) महाराणा कुंभा
(D) महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय

93. राजस्थान के समकालीन ऐतिहासिक व्यक्तित्व और केंद्रीय सत्ता के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) सवाई जयसिंह द्वितीय और औरंगजेब
(B) राणा कुंभा और अकबर
(C) महाराणा प्रताप और अलाउद्दीन खिलजी
(D) पृथ्वीराज चौहान और बाबर

94. 20वीं सदी के प्रारंभ के निम्नलिखित दूरदर्शी नेताओं में से किसने रियासती निरंकुशता के विरुद्ध प्रजामंडल आंदोलनों में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लिया या उनका नेतृत्व नहीं किया?
(A) जयनारायण व्यास
(B) माणिक्य लाल वर्मा
(C) गोविंद गुरु
(D) हीरालाल शास्त्री

NODIA

74. मास्टर आदित्येंद्र पूर्वी राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे। उन्होंने किस प्रजामंडल के महत्वपूर्ण नेता और अध्यक्ष के रूप में कार्य किया?
(A) भरतपुर प्रजामंडल
(B) अलवर राज्य प्रजामंडल
(C) धौलपुर राज्य प्रजामंडल
(D) करौली राज्य प्रजामंडल

75. सूची I में दिए गए स्वतंत्रता सेनानियों/राजनीतिक कार्यकर्ताओं का सूची II में उनकी गतिविधियों के मुख्य क्षेत्र से मिलान कीजिए।
सूची I : स्वतंत्रता सेनानी/कार्यकर्ता
P. स्वामी कुमारानंद
Q. भोगीलाल पांड्या
R. मास्टर आदित्येंद्र
S. गोकुल भाई भट्ट
सूची II : मुख्य क्षेत्र
1. डूंगरपुर
2. सिरोही
3. भरतपुर
4. ब्यावर/अजमेर
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

76. राजस्थान के अग्रणी इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी महान कृति 'ऐनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' अपने गुरु को समर्पित की थी। उनके गुरु कौन थे?
(A) मुहणोत नैणसी
(B) यति ज्ञानचंद्र
(C) कविराजा श्यामलदास
(D) बांकीदास

77. कर्नल जेम्स टॉड 1818 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधि के रूप में राजपूताना आए थे। वे किस आधिकारिक पद पर आसीन थे?
(A) पश्चिमी राजपूत राज्यों के पॉलिटिकल एजेंट
(B) राजपूताना के एजेंट टू द गवर्नर जनरल (AGG)
(C) जयपुर राज्य के रेजिडेंट
(D) मेरवाड़ा बटालियन के सैन्य कमांडर

78. निम्नलिखित में से किस ऐतिहासिक घटना को कर्नल जेम्स टॉड ने अपने इतिहास लेखन में उपमा देते हुए 'मेवाड़ का मैराथन' कहा था?
(A) हल्दीघाटी का युद्ध
(B) चित्तौड़गढ़ का युद्ध
(C) दिवेर का युद्ध
(D) खानवा का युद्ध

79. कर्नल जेम्स टॉड के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) वे मेवाड़/मारवाड़ और अंग्रेजों के बीच सहायक संधियों के प्रारूप तैयार करने और उन पर हस्ताक्षर करने में सहायक थे।
(B) उन्हें इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए आधुनिक नाम 'राजस्थान' गढ़ने का व्यापक श्रेय दिया जाता है।
(C) उनका दूसरा प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ 'ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' मरणोपरांत प्रकाशित हुआ था।
(D) उन्होंने 1835 ई. में अपनी सेवानिवृत्ति तक जयपुर राज्य के रेजिडेंट के रूप में लगातार सेवा की।

80. राजस्थान में स्वामी दयानंद सरस्वती की सुधारवादी गतिविधियों पर विचार कीजिए:
1. करौली में राज्य अतिथि के रूप में राजपूताना की उनकी पहली आधिकारिक यात्रा
2. उदयपुर में परोपकारिणी सभा की स्थापना
3. अजमेर में आर्य समाज की शाखा की स्थापना
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इन घटनाओं के सही कालानुक्रम को दर्शाता है?
(A) 1, 3, 2
(B) 1, 2, 3
(C) 2, 1, 3
(D) 3, 1, 2

81. स्वामी केशवानंद एक असाधारण समाज सुधारक और शिक्षाविद थे, जिन्होंने ग्रामोत्थान विद्यापीठ की स्थापना करके शुष्क उत्तरी क्षेत्र का कायाकल्प कर दिया। उनके कार्य का मुख्य केंद्र कहाँ था?
(A) पिलानी, झुंझुनू
(B) संगरिया, हनुमानगढ़
(C) सरदारशहर, चूरू
(D) सूरतगढ़, श्रीगंगानगर

82. अजमेर के प्रसिद्ध बुद्धिजीवी और समाज सुधारक हरबिलाश शारदा को 1929 ई. के 'शारदा एक्ट' का प्रारूप तैयार करने के लिए जाना जाता है। इस अधिनियम ने किस सामाजिक कुरीति का समाधान किया?
(A) सती प्रथा का उन्मूलन
(B) विधवा पुनर्विवाह का प्रोत्साहन
(C) कन्या भ्रूण हत्या का उन्मूलन
(D) बाल विवाह का निवारण

83. राजपूत समाज में संस्थागत समाज सुधार प्रारंभ करने के लिए 1889 ई. में अजमेर में 'वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा' की स्थापना की गई थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) विवाह व्यय को नियंत्रित करना तथा बहुविवाह और बाल विवाह पर रोक लगाना।
(B) ब्रिटिश शासन के कराधान के विरुद्ध एक व्यापक सशस्त्र विद्रोह संगठित करना।
(C) राज्य की सैन्य भर्तियों में जातियों के कड़े पृथक्करण को लागू करना।
(D) विशेष रूप से राजघरानों के बीच पाश्चात्य शिक्षा को बढ़ावा देना।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का जन्म विक्रम संवत 1597 के ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को हुआ था। यह तिथि ईस्वी सन के अनुसार 9 मई 1540 बैठती है। राजस्थान तथा संपूर्ण भारत में प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया के दिन महाराणा प्रताप की जयंती अत्यंत श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई जाती है। कुंभलगढ़ दुर्ग के कटारगढ़ स्थित बादल महल में जन्मे महाराणा प्रताप ने मुगलों के समक्ष कभी आत्मसमर्पण नहीं किया और स्वाधीनता की अलख जगाए रखी।

2. (D) जगन्नाथ कछवाहा
18 जून 1576 को हुए प्रसिद्ध हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना का अग्रिम दस्ता (हरावल) अफगान सेनापति हाकिम खान सूर के नेतृत्व में लड़ा था। इस युद्ध में रामदास राठौड़ और बीदा झाला जैसे स्वामिभक्त योद्धा महाराणा प्रताप के पक्ष में वीरतापूर्वक लड़े थे। जगन्नाथ कछवाहा आमेर के शासक थे, जो मुगल सम्राट अकबर के सेनापति के रूप में मुगलों की ओर से लड़े थे, न कि महाराणा प्रताप की सेनापति के रूप में।

3. (A) वास्तु मंजरी
चक्रपाणि मिश्र महाराणा प्रताप के राजदरबार के एक प्रकांड पंडित और बहुमुखी प्रतिभा के धनी विद्वान थे। उन्होंने राज्याभिषेक पद्धति, मुहूर्तमाला और विश्ववल्लभ जैसे सुप्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथों की रचना की थी। विश्ववल्लभ ग्रंथ उद्यान विज्ञान तथा जल प्रबंधन से संबंधित है। दूसरी ओर, वास्तु मंजरी नामक महान स्थापत्य ग्रंथ की रचना महाराणा कुंभा के प्रसिद्ध प्रमुख शिल्पी मंडन के भ्राता नाथा द्वारा की गई थी, जो स्थापत्य शास्त्र से संबंधित एक प्रामाणिक रचना है।

4. (C) जगन्नाथ कछवाहा
हल्दीघाटी के युद्ध के उपरांत मुगल सम्राट अकबर ने मेवाड़ और महाराणा प्रताप को पराजित करने के उद्देश्य से कई सैन्य अभियान भेजे। अकबर ने शाहबाज खान, मानसिंह तथा अब्दुल रहीम खान-ए-खाना के नेतृत्व में अनेक सैन्य दल भेजे। दिसंबर 1584 में अकबर द्वारा भेजा गया अंतिम बड़ा मुगल सैन्य अभियान आमेर के जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व में आयोजित किया गया था, परंतु वह भी महाराणा प्रताप को पकड़ने या झुकाने में पूरी तरह असफल रहा था।

5. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मेवाड़ के महाराणा कुंभा का काल कला और साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। उन्होंने स्वयं संगीत पर महान ग्रंथ संगीत राज की रचना की थी, जिसके पांच खंड हैं। कुंभा के प्रधान शिल्पी मंडन ने नगर निर्माण पर राज वल्लभ ग्रंथ लिखा। कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति की रचना कवि अत्रि तथा उनके पुत्र महेश ने की थी। मंडन के पुत्र गोविंद ने उद्धार धारिणी नामक ग्रंथ की रचना की।

6. (D) चंपानेर की संधि
1456 ईस्वी में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी और गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन के मध्य चंपानेर की संधि हुई थी। इस संधि का मुख्य उद्देश्य दोनों राज्यों की सैन्य शक्ति को एकजुट करके मेवाड़ के पराक्रमी शासक महाराणा कुंभा पर दोनों दिशाओं से आक्रमण करना और मेवाड़ को आपस में बांटना था। हालांकि, 1457 ईस्वी में महाराणा कुंभा ने अपनी श्रेष्ठ सैन्य रणनीति के बल पर मालवा और गुजरात की इस संयुक्त सेना को बदनोर के युद्ध में बुरी तरह पराजित कर दिया।

7. (B) सारंग व्यास
महाराणा कुंभा न केवल एक प्रतापी शासक और कुशल युद्ध कला विशेषज्ञ थे, बल्कि वे संगीत, साहित्य तथा ललित कलाओं के भी महान संरक्षक थे। वे स्वयं वीणा बजाने में अत्यंत निपुण थे और उन्होंने संगीत पर कई उच्च कोटि के ग्रंथों की रचना की थी। सारंग व्यास को महाराणा कुंभा का संगीत गुरु माना जाता है, जिनसे उन्होंने संगीत विद्या की शिक्षा प्राप्त की थी। वहीं एकलिंग महात्म्य के रचयिता कान्हा व्यास उनके दरबार के प्रख्यात वेतनभोगी कवि थे।

NODIA

8. (C) राय पिथोरा
मेवाड़ के महाराणा कुंभा ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा, विद्वता और सैन्य विजयों के उपलक्ष्य में अनेक प्रसिद्ध उपाधियां धारण की थीं। उन्हें संगीत ज्ञान के लिए अभिनव भारताचार्य, मुस्लिम शासकों को पराजित करने तथा हिंदू धर्म की रक्षा करने के लिए हिंदू सुरत्राण, तथा साहित्यकारों के आश्रयदाता होने के कारण राणो रासो कहा जाता था। इसके विपरीत, राय पिथोरा की उपाधि अजमेर के प्रसिद्ध चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय द्वारा धारण की गई थी।

9. (D) ग्वालियर
जयपुर के दूरदर्शी शासक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय खगोलशास्त्र और गणित के असाधारण पंडित थे। उन्होंने खगोलीय पिंडों तथा ग्रहों की गति का सटीक अध्ययन करने के लिए भारत के पांच प्रमुख स्थानों पर वैज्ञानिक वेधशालाओं का निर्माण कराया था, जिन्हें जंतर-मंतर कहा जाता है। ये पांच वेधशालाएं दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में निर्मित की गई थीं। इनमें जयपुर का जंतर-मंतर सबसे बड़ा है। ग्वालियर में ऐसी कोई वेधशाला नहीं बनाई गई।

10. (A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
आमेर के शासक सवाई जयसिंह द्वितीय ने खगोलशास्त्र के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने यूरोपीय, अरबी और ग्रीक खगोलीय ग्रंथों के संग्रह तथा संस्कृत अनुवाद को व्यापक संरक्षण प्रदान किया। उनके प्रमुख दरबारी विद्वान

95. राजस्थान की प्रमुख हस्तियों की तुलना करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. राणा कुंभा और सवाई जयसिंह द्वितीय दोनों अपने असाधारण स्थापत्य योगदान और विद्वतापूर्ण ग्रंथों के संरक्षण के लिए जाने जाते थे।

II. विजय सिंह पथिक और मोतीलाल तेजावत समकालीन थे जिन्होंने 20वीं सदी की शुरुआत में क्रमशः प्रमुख किसान और जनजातीय आंदोलनों का नेतृत्व किया।

III. पन्ना धाय और मीराबाई दोनों 16वीं शताब्दी के दौरान जीवित थीं और मेवाड़ क्षेत्र से निकटता से जुड़ी थीं।

IV. माणिक्य लाल वर्मा और जयनारायण व्यास दोनों ने पुनर्गठित राजस्थान राज्य के निर्वाचित मुख्यमंत्री के रुप में कार्य किया।

इनमें से कौन सा संयोजन सही कथनों की पहचान करता है?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) केवल I, III और IV

96. महाराणा प्रताप के जीवन, आदर्शों और इतिहास को स्मरण करने के लिए किस नगर में 'प्रताप गौरव केंद्र राष्ट्रीय तीर्थ' नामक एक प्रमुख राष्ट्रीय स्मारक स्थापित किया गया है?

(A) चित्तौड़गढ़
(B) राजसमंद
(C) उदयपुर
(D) गोगुंदा

97. राज्य सरकार ने हाल ही में पन्ना धाय के पैतृक स्थान पर उनके सर्वोच्च बलिदान और स्वामिभक्ति के सम्मान में 'पन्ना धाय पैनोरमा' विकसित किया है। यह पैनोरमा कहाँ स्थित है?

(A) बोरुंदा गाँव, जोधपुर
(B) पांडोली, चित्तौड़गढ़
(C) खमनोर गाँव, राजसमंद
(D) शाहपुरा, भीलवाड़ा

98. राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला राजस्थानी भाषा का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार किस महान व्यक्तित्व के सम्मान में नामित किया गया है?

(A) सूर्यमल्ल मिश्रण
(B) कन्हैयालाल सेठिया
(C) पृथ्वीराज राठौड़
(D) मीरा पुरस्कार

99. लोकतांत्रिक अधिकारों और शिक्षा के लिए उनके अनवरत संघर्ष के सम्मान में, जोधपुर के एक प्रमुख विश्वविद्यालय का नाम किस प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर रखा गया है?

(A) जयनारायण व्यास
(B) माणिक्य लाल वर्मा
(C) मोहनलाल सुखाड़िया
(D) बरकतउल्ला खान

100. राजस्थान की निम्नलिखित प्रख्यात हस्तियों पर विचार कीजिए:

1. सवाई जयसिंह द्वितीय
2. राणा कुंभा
3. पृथ्वीराज चौहान
4. संत मीराबाई

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उनकी ऐतिहासिक प्रमुखता की अवधि के आधार पर उनके सही कालानुक्रम को दर्शाता है?

(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 4, 3, 1, 2

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

निकाल ले गईं। उन्होंने प्रारंभ में कई स्थानों पर आश्रय मांगा, किंतु अंततः वे राजसमंद जिले में स्थित प्रसिद्ध कुंभलगढ़ दुर्ग पहुँचीं। कुंभलगढ़ दुर्ग में उन्हें सुरक्षा और संरक्षण प्राप्त हुआ, जहाँ उदय सिंह का लालन-पालन हुआ तथा राज्याभिषेक संपन्न हुआ।

23. (B) आशा शाह देवपुरा
जब पन्ना धाय बालक उदय सिंह को लेकर शरण की खोज में भटक रही थीं, तब बनवीर के प्रकोप और भय के कारण अनेक सामंतों ने इंकार कर दिया था। उस विकट परिस्थिति में कुंभलगढ़ दुर्ग के जैन दुर्गपाल आशा शाह देवपुरा ने असीम साहस दिखाया। उन्होंने पन्ना धाय और राजकुमार उदय सिंह को अपने दुर्ग में सुरक्षित शरण प्रदान की।

24. (C) एकता और आपसी भ्रातृभाव
महान समाज सुधारक और जनजातीय नेता गोविंद गुरु ने भील समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों को समाप्त करने के लिए 1883 ईस्वी में संप सभा की स्थापना की थी। स्थानीय बोली में संप शब्द का मूल अर्थ आपसी एकता, प्रेम, सद्भाव और भ्रातृभाव होता है। इस सभा का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समाज में एकता एवं जागृति लाना था।

25. (D) P-4, Q-1, R-2, S-3
राजस्थान के सामाजिक और राजनीतिक पुनर्जागरण में प्रमुख व्यक्तियों का योगदान अतुलनीय रहा है। गोविंद गुरु ने भील जनजाति के उत्थान के लिए भगत आंदोलन चलाया। मोतीलाल तेजावत ने मातृकुंडिया से ऐतिहासिक एकी आंदोलन की शुरुआत की। विजय सिंह पथिक ने 1919 में वर्धा में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1883 में परोपकारिणी सभा का गठन किया था।

26. (A) 17 नवंबर 1913 ई.
17 नवंबर 1913 को मार्गशीर्ष पूर्णिमा के अवसर पर बांसवाड़ा जिले में स्थित मानगढ़ पहाड़ी पर गोविंद गुरु के आह्वान पर हजारों भील एकत्र हुए थे। ब्रिटिश मेवाड़ भील कोर तथा रियासती सेनाओं ने अंधाधुंध गोलाबारी कर दी। इस अमानवीय नरसंहार में 1500 से अधिक निर्दोष आदिवासी शहीद हो गए। इस घटना को राजस्थान का जलियांवाला बाग हत्याकांड कहा जाता है।

27. (B) स्वामी दयानंद सरस्वती
गोविंद गुरु का जन्म डूंगरपुर जिले के बांसिया गाँव में हुआ था। जब आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती उदयपुर की यात्रा पर आए थे, तब गोविंद गुरु उनसे मिले थे। स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों और उपदेशों से गोविंद गुरु अत्यधिक प्रभावित हुए। स्वामीजी से प्रेरणा लेकर ही उन्होंने आदिवासियों के सामाजिक उत्थान का संकल्प लिया था। यह ऐतिहासिक क्षण था।

28. (B) बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश
भारत में संगठित किसान आंदोलन के जनक कहे जाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी विजय सिंह पथिक का वास्तविक नाम भूप सिंह गुर्जर था। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के गुठावली गाँव में हुआ था। वे रास बिहारी बोस की सशस्त्र क्रांति से जुड़े हुए थे। क्रांति विफल होने के पश्चात वे नाम बदलकर राजस्थान आ गए और जनसेवा की।

29. (A) वर्धा
विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी और हरिभाई किंकर ने मिलकर वर्ष 1919 में महाराष्ट्र के वर्धा में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य रियासतों में सामंती शोषण के विरुद्ध जनजागृति फैलाना और किसान आंदोलनों को नेतृत्व देना था। बाद में वर्ष 1920 में इस संघ का मुख्यालय अजमेर स्थानांतरित कर दिया गया था। यह ऐतिहासिक कदम था।

30. (C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
बिजोलिया किसान आंदोलन भारत का सबसे लंबा अहिंसक आंदोलन था। विजय सिंह पथिक 1916 ईस्वी में साधु सीताराम दास के आग्रह पर इस आंदोलन से जुड़े और उन्होंने इसके सर्वाधिक संगठित चरण का नेतृत्व किया। हालांकि, बिजोलिया आंदोलन की शुरुआत 1897 में हुई थी तथा पथिक जी 1927 में इससे पृथक हो गए थे। अतः कारण असत्य सिद्ध होता है।

31. (D) प्रताप
बिजोलिया के किसानों पर जागीरदारों द्वारा रोपे गए अत्यधिक करों और बेगार प्रथा के अत्याचारों को राष्ट्रीय स्तर पर उजागर करने के लिए विजय सिंह पथिक ने प्रयास किए। उन्होंने कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा प्रकाशित होने वाले प्रसिद्ध समाचार पत्र 'प्रताप' के माध्यम से आंदोलन के समाचारों को प्रकाशित करवाया। इससे बिजोलिया आंदोलन को राष्ट्रीय पहचान प्राप्त हुई।

32. (C) 1931 ई.
मारवाड़ क्षेत्र में जनजागृति लाने और सामंती निरंकुशता के विरुद्ध युवाओं को संगठित करने के ध्येय से जयनारायण व्यास ने 10 मई 1931 को जोधपुर में मारवाड़ यूथ लीग की स्थापना की थी। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य युवाओं में राजनीतिक चेतना जगाना और उत्तरदायी शासन की मांग करना था। बाद में रियासती सरकार ने इसे प्रतिबंधित कर दिया था।

33. (B) पोपाबाई की पोल
जोधपुर रियासत में व्याप्त कुशासन, सामंती अत्याचारों और प्रशासनिक भ्रष्टाचार को बेनकाब करने के लिए जयनारायण व्यास ने पुस्तिकाएं लिखीं। उन्होंने जनसामान्य में राजनीतिक चेतना जगाने हेतु 'पोपाबाई की पोल' तथा 'मारवाड़ की अवस्था' नामक प्रसिद्ध पर्चे प्रकाशित करवाए। 'पोपाबाई की पोल' के माध्यम से रियासती कुशासन और अव्यवस्था पर तीखा प्रहार किया गया था, जो जनता में लोकप्रिय रही।

34. (D) आगीबाण
जयनारायण व्यास राजस्थानी भाषा के पहले ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने मातृभाषा में राजनीतिक पत्रकारिता का

NODIA

पं. जगन्नाथ सम्राट ने प्रसिद्ध यूनानी खगोलशास्त्री टॉलमी के ग्रंथ अलमागेस्ट के अरबी रुपांतरण का संस्कृत में सिद्धांत सम्राट नाम से अनुवाद किया था। यह कार्य सवाई जयसिंह के खगोलीय अनुसंधान को बढ़ावा देने के प्रयासों को दर्शाता है।

11. (B) महाराणा जगत सिंह द्वितीय
राजस्थान में मराठों के बढ़ते हस्तक्षेप और आक्रमणों का मुकाबला करने के उद्देश्य से 17 जुलाई 1734 को भीलवाड़ा के हुरड़ा स्थान पर सम्मेलन बुलाया गया था। जयपुर के सवाई जयसिंह द्वितीय इस सम्मेलन के मुख्य आयोजक थे। हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह द्वितीय ने की थी। इसमें मारवाड़, कोटा, बीकानेर, बूंदी और किशनगढ़ जैसी प्रमुख रियासतों के शासकों ने भाग लेकर संयुक्त रणनीति तैयार की थी।

12. (B) जीज मोहम्मद शाही
जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय एक महान खगोलशास्त्री थे। उन्होंने अपने स्वयं के वेधशाला प्रेक्षणों के आधार पर नक्षत्रों की शुद्ध सारणी तैयार की, ताकि पंचांग की गणना को पूर्णतः सटीक बनाया जा सके। 1728 ईस्वी में तैयार किए गए इस खगोलीय संकलन का नाम तत्कालीन मुगल सम्राट मोहम्मद शाह के सम्मान में जीज मोहम्मद शाही रखा गया था। यह खगोलीय गणना हेतु एक प्रामाणिक कार्य था।

13. (A) तुमुल का युद्ध
1182 ईस्वी में अजमेर के शासक पृथ्वीराज चौहान (पृथ्वीराज तृतीय) ने महोबा के चंदेल शासक परमर्दिदेव के विरुद्ध सैन्य अभियान चलाया था। इस युद्ध को महोबा का युद्ध या तुमुल का युद्ध कहा जाता है। इस संघर्ष में परमर्दिदेव के दो सुप्रसिद्ध और पराक्रमी सेनापति आल्हा और ऊदल महोबा की रक्षा करते हुए वीरतापूर्वक लड़े और वीरगति को प्राप्त हुए। पृथ्वीराज चौहान ने इस युद्ध में विजय प्राप्त की थी।

14. (C) सोमदेव
अजमेर के चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में अनेक महान साहित्यकार तथा विद्वान सुशोभित थे। इनमें पृथ्वीराज विजय के रचयिता जयानक, पृथ्वीराज रासो के रचयिता चंदबरदाई, विद्यापति गौड़, वागीश्वर और जनार्दन शामिल थे। इसके विपरीत, प्रसिद्ध कवि सोमदेव शाकंभरी के चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ के दरबारी कवि थे, जिन्होंने ललित विग्रहराज नाटक की रचना की थी। वे पृथ्वीराज के दरबार में नहीं थे।

15. (A) केवल I और II
पृथ्वीराज चौहान ने 1191 ईस्वी में तराइन के प्रथम युद्ध में शिहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी को करारी शिकस्त दी थी। अल्पायु में सिंहासन पर बैठने के कारण उनकी माता रानी कर्पूरी देवी ने आरंभिक वर्षों में उनकी संरक्षिका के रूप में कुशलतापूर्वक कार्य किया था। हालांकि, 1192 ईस्वी के तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गोरी विजयी हुआ था। इससे भारत में तुर्क शासन स्थापित हुआ था।

16. (C) नाट्य रंभा
चंदबरदाई द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में चौहान राजवंश के महान राजा पृथ्वीराज तृतीय के पराक्रम और युद्ध कौशलों का विस्तृत विवरण मिलता है। इस ग्रंथ के अनुसार, पृथ्वीराज चौहान के मुख्य युद्धक घोड़े का नाम नाट्य रंभा था। यह घोड़ा अत्यंत अनुशासित, चतुर और युद्ध कौशल में प्रवीण माना जाता था। ऐतिहासिक ग्रंथों में इस घोड़े का विशेष विवरण प्राप्त होता है।

17. (B) कुड़की
भारत के भक्ति आंदोलन की महान संत और कृष्ण भक्त कवयित्री मीराबाई का जन्म राठौड़ राजवंश में हुआ था। उनका जन्म 1498 ईस्वी के आसपास मेड़ता के पास स्थित कुड़की गाँव में हुआ था, जो वर्तमान में राजस्थान के पाली जिले में आता है। उनके पिता का नाम रतन सिंह राठौड़ था। उनका बचपन अपने दादा राव दूदा के पास मेड़ता में बीता था।

18. (D) संत रैदास
महान भक्ति संत मीराबाई के जीवन में संत रविदास (रैदास) का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मीराबाई संत रैदास को अपना आध्यात्मिक गुरु मानती थीं और उन्होंने अपने अनेक पदों में इसका उल्लेख किया है। संत रैदास काशी के प्रसिद्ध समाज सुधारक और महान संत थे। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित मंदिर परिसर में संत रैदास की छतरी निर्मित की गई है।

19. (A) नरसी जी रो मायरो
राजस्थानी लोक साहित्य और भक्ति परंपरा में नरसी जी रो मायरो एक अत्यंत लोकप्रिय और प्रसिद्ध साहित्यिक कृति है। इस महान ग्रंथ की रचना संत मीराबाई के प्रत्यक्ष निर्देशन और मार्गदर्शन में भक्त कवि रत्ना खाती द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ में भक्त नरसी मेहता की गाथा का भावपूर्ण वर्णन ब्रज मिश्रित राजस्थानी भाषा में किया गया है। यह रचना अत्यंत प्रसिद्ध है।

NODIA

20. (A) केवल I, II और III
संत मीराबाई का विवाह 1516 ईस्वी में मेवाड़ के महाराणा सांगा के बड़े पुत्र युवराज भोजराज के साथ संपन्न हुआ था। उनकी काव्य रचनाएँ मुख्य रूप से ब्रजभाषा और मारवाड़ी मिश्रित राजस्थानी में हैं। पति की मृत्यु के बाद उन्होंने सती होने से इंकार किया था। जीवन के अंतिम चरण में वे द्वारका पहुँचीं और श्रीकृष्णा मूर्ति में विलीन हुईं।

21. (A) चंदन
मेवाड़ के इतिहास में पन्ना धाय त्याग, स्वामिभक्ति और बलिदान की अमर प्रतीक हैं। जब दासी पुत्र बनवीर ने मेवाड़ के उत्तराधिकारी अल्पवयस्क राजकुमार उदय सिंह की हत्या करने के उद्देश्य से प्रवेश किया, तब पन्ना धाय ने अपने स्वयं के पुत्र चंदन को उनके बिस्तर पर सुला दिया। बनवीर ने चंदन को मारकर राजकुमार समझा, जिससे उदय सिंह सुरक्षित रहे।

22. (D) कुंभलगढ़
अपने पुत्र चंदन के सर्वस्व बलिदान के उपरांत पन्ना धाय बालक राजकुमार उदय सिंह को चित्तौड़गढ़ दुर्ग से सुरक्षित बाहर

46. (C) मेवाड़ की पुकार
एकी आंदोलन के नेता मोतीलाल तेजावत ने शोषित भील आदिवासियों की ओर से मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह के समक्ष 21 सूत्री मांगों का एक पत्र प्रस्तुत किया था। इस प्रसिद्ध मांग पत्र को 'मेवाड़ की पुकार' के नाम से जाना जाता है। इसमें मुख्य रूप से अनुचित करों को हटाने तथा बेगार प्रथा को समाप्त करने की मांग शामिल थी। यह ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

47. (D) झाड़ोल
मोतीलाल तेजावत का जन्म उदयपुर जिले के कोल्यारी गाँव में हुआ था। एकी आंदोलन का नेतृत्व संभालने से पूर्व वे मेवाड़ रियासत के 'झाड़ोल' ठिकाने में कामदार (प्रबंधक) के रूप में कार्यरत थे। वहाँ कार्य करते हुए उन्होंने भील आदिवासियों पर हो रहे सामंती अत्याचारों और बेगार प्रथा को प्रत्यक्ष देखा, जिसने उन्हें आंदोलन शुरू करने हेतु प्रेरित किया। यह सत्य है।

48. (C) लॉर्ड कर्जन
1903 ईस्वी में भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन ने दिल्ली में एक भव्य 'दिल्ली दरबार' का आयोजन किया था। इसमें शामिल होने के लिए मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह भी दिल्ली गए थे। परंतु क्रांतिकारी केसरी सिंह बारहट द्वारा भेजे गए सोरठों को पढ़कर उनका स्वाभिमान जागृत हो उठा और वे लॉर्ड कर्जन के दरबार में बिना गए ही लौट आए।

49. (B) 13
क्रांतिकारी कवि केसरी सिंह बारहट ने मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह को 1903 के दिल्ली दरबार में जाने से रोकने के लिए डिंगल भाषा में 'चेतावनी रा चूंगट्या' नामक रचना लिखी थी। इस कृति में कुल 13 सोरठे थे। इन सोरठों में मेवाड़ के पूर्वजों की आन-बान-शान का वर्णन था, जिसने महाराणा के सोए हुए स्वाभिमान को झकझोर दिया था।

50. (D) P-3, Q-2, R-4, S-1
राजस्थान के प्रमुख क्रांतिकारियों का संबंध विभिन्न मुकदमों तथा संस्थाओं से रहा है। केसरी सिंह बारहट प्यारेलाल साधु हत्याकांड से जुड़े थे। प्रताप सिंह बारहट बनारस षड्यंत्र केस में अभियुक्त बनाए गए थे। सागरमल गोपा ने 'जैसलमेर का गुंडाराज' पुस्तक लिखी थी। अर्जुन लाल सेठी ने जयपुर में क्रांतिकारी प्रशिक्षण हेतु 'वर्धमान विद्यालय' की स्थापना की थी। यह सुमेलित है।

51. (A) बरेली सेंट्रल जेल
क्रांतिकारी प्रताप सिंह बारहट को प्रसिद्ध बनारस षड्यंत्र केस में गिरफ्तार करके उत्तर प्रदेश की 'बरेली सेंट्रल जेल' में रखा गया था। जेल में अंग्रेज अधिकारी क्लीवलैंड द्वारा उन्हें कठोरतम मानसिक और शारीरिक यातनाएं दी गईं, किंतु उन्होंने गुप्त जानकारियां देने से मना कर दिया। अंततः 1918 ईस्वी में बरेली जेल में ही वे हंसते-हंसते शहीद हो गए। यह वीरता थी।

52. (C) अंजना देवी चौधरी
राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका अत्यंत गौरवशाली रही है। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण चौधरी की पत्नी अंजना देवी चौधरी राजपूताना में राजनीतिक कारणों से गिरफ्तार होने वाली प्रथम महिला थीं। उन्होंने बिजोलिया और बेगूं के किसान आंदोलनों के दौरान स्त्रियों को संगठित किया और सत्याग्रह में भाग लेकर जेल की यात्रा की थी। यह प्रेरणास्पद इतिहास है।

53. (A) रास्तापाल
19 जून 1947 को डूंगरपुर रियासत के 'रास्तापाल' गाँव में प्रजामंडल द्वारा संचालित विद्यालय को बंद कराने पुलिस आई थी। रियासती पुलिस जब शिक्षक सेंगाभाई को ट्रक से बांधकर घसीट रही थी, तब 13 वर्षीया वीर भील बालिका काली बाई ने अपनी दांतेली से रस्सी काट दी। पुलिस की गोलियों से वह बालिका रास्तापाल में शहीद हो गई। यह अमर घटना है।

54. (D) भीलवाड़ा
माणिक्य लाल वर्मा की धर्मपत्नी नारायणी देवी वर्मा ने स्वतंत्रता आंदोलन तथा समाज सुधार में अग्रणी योगदान दिया। उन्होंने नवंबर 1944 में राजस्थान के भीलवाड़ा शहर में 'महिला आश्रम' संस्था की स्थापना की थी। इस आश्रम का मुख्य ध्येय महिलाओं को शिक्षित करना, संबल देना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना था। इस संस्था ने नारी उत्थान में बड़ी भूमिका निभाई। यह सराहनीय है।

55. (A) 2, 3, 1
दिए गए घटनाक्रमों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: अंजना देवी चौधरी की गिरफ्तारी 1921-24 के दौरान हुई। रतन शास्त्री द्वारा 'शांताबाई शिक्षा कुटीर' (वनस्थली) की स्थापना वर्ष 1935 में की गई। रास्तापाल गाँव में शिक्षक की रक्षा करते हुए काली बाई की शहादत 1947 में हुई थी। अतः विकल्प 2, 3, 1 सही कालानुक्रमिक क्रम को निरुपित करता है।

56. (C) जैसलमेर
जैसलमेर के महान स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा ने जैसलमेर रियासत के निरंकुश शासन और अत्याचारों का पुरजोर विरोध किया था। उन्होंने 'जैसलमेर का गुंडाराज' जैसी प्रसिद्ध पुस्तकें लिखी थीं। दमनकारी शासन ने उन्हें जेल में बंद करके अमानवीय यातनाएं दीं। अंततः 1946 ईस्वी में जैसलमेर जेल में ही उन्हें मिट्टी का तेल छिड़ककर जीवित जला दिया गया था। यह महान बलिदान था।

57. (D) अजमेर
महात्मा गांधी के पांचवें पुत्र माने जाने वाले उद्योगपति जमनालाल बजाज ने स्वदेशी तथा खादी के प्रचार-प्रसार हेतु विशेष प्रयास किए। उन्होंने वर्ष 1925 में राजस्थान में 'चरखा संघ' की स्थापना की थी। इस संस्था का मुख्य मुख्यालय अजमेर में स्थापित किया गया था। चरखा संघ ने ग्रामीणों को रोजगार देने और स्वतंत्रता संग्राम में चेतना जगाने में योगदान दिया।

58. (A) अर्जुन लाल सेठी
जयपुर के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी अर्जुन लाल सेठी ने राष्ट्र सेवा को अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं से ऊपर रखा। जब उन्हें

Downloaded from www.pdf.tube

शुभारंभ किया। उन्होंने 1932 ईस्वी में ब्यावर से 'आगीबाण' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया था। आगीबाण पूर्णतः राजस्थानी भाषा में प्रकाशित होने वाला पहला राजनीतिक पत्र था, जिसके माध्यम से सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध जनचेतना का प्रसार किया गया था। यह ऐतिहासिक कदम था।

35. (B) केवल III
जयनारायण व्यास ने दिल्ली से अंग्रेजी में 'पीप' पत्र निकाला था और वे मारवाड़ प्रजामंडल के प्रमुख नेता थे। मार्च 1952 में हुए प्रथम आम चुनावों के पश्चात टीकाराम पालीवाल राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री बने थे, क्योंकि व्यास जी प्रारंभिक चुनाव हार गए थे। बाद में उपचुनाव जीतकर वे मुख्यमंत्री बने थे। अतः तीसरा कथन असत्य साबित होता है।

36. (C) पंछीड़ा
बिजोलिया और मेवाड़ किसान आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाने वाले स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा एक ओजस्वी कवि भी थे। बिजोलिया किसान आंदोलन के दौरान उन्होंने 'पंछीड़ा' नामक अत्यंत लोकप्रिय लोकगीत की रचना की थी। यह गीत आंदोलनकारी किसानों में अद्भुत उत्साह, राष्ट्रभक्ति और नवचेतना का संचार करता था तथा उन्हें संघर्ष हेतु प्रेरित करता रहता था। यह अमर हुआ।

37. (A) बलवंत सिंह मेहता
24 अप्रैल 1938 को उदयपुर में मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना की गई थी। इस संस्था की स्थापना में मुख्य भूमिका माणिक्य लाल वर्मा की थी, जो इसके महामंत्री बने। मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष के रूप में बलवंत सिंह मेहता को चुना गया था। इस प्रजामंडल ने मेवाड़ रियासत में उत्तरदायी शासन स्थापित करने हेतु ऐतिहासिक आंदोलन चलाया था। यह प्रसिद्ध संगठन था।

38. (D) मेवाड़ का वर्तमान शासन
मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना के उपरांत रियासती सरकार ने इसे अवैध घोषित कर दिया और माणिक्य लाल वर्मा को निष्कासित कर दिया। अजमेर में निर्वासित रहते हुए वर्मा जी ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक प्रसिद्ध पुस्तिका लिखी। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने मेवाड़ राज्य में व्याप्त सामंती शोषण और प्रशासनिक कुशासन का प्रामाणिक खुलासा किया था। यह महत्वपूर्ण कृति थी।

39. (B) संयुक्त राजस्थान
राजस्थान के एकीकरण के तीसरे चरण के अंतर्गत 18 अप्रैल 1948 को 'संयुक्त राजस्थान' का गठन हुआ, जिसमें उदयपुर रियासत का विलय किया गया था। इस एकीकृत राज्य का उद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया। संयुक्त राजस्थान का राजप्रमुख महाराणा भोपाल सिंह को तथा प्रधानमंत्री स्वतंत्रता सेनानी माणिक्य लाल वर्मा को बनाया गया था। यह एकीकरण की महत्वपूर्ण घटना थी।

40. (D) I, II, III और IV
हीरालाल शास्त्री ने महिला शिक्षा के लिए वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की थी। उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र' नाम से प्रकाशित हुई। उन्होंने ओजस्वी गीत 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' की रचना की थी। इसके अलावा 1942 में उन्होंने जयपुर राज्य के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल के साथ जेंटलमैन एग्रीमेंट किया था। अतः दिए गए चारों कथन पूर्णतः सत्य एवं सही हैं।

41. (D) जयपुर
पंडित हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवंबर 1899 को जयपुर जिले के जोबनेर गाँव में हुआ था। उन्होंने राजकीय सेवा का त्याग करके स्वतंत्रता संग्राम और समाज सेवा का मार्ग अपनाया। 30 मार्च 1949 को बृहत् राजस्थान के निर्माण पर वे राजस्थान के प्रथम प्रधानमंत्री (मुख्यमंत्री) बने। वे जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष और प्रमुख नेता के रूप में कार्यरत रहे।

42. (A) जयपुर प्रजामंडल भारत छोड़ो आंदोलन से पृथक रहा।
1942 में जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री तथा जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल के बीच जेंटलमैन एग्रीमेंट हुआ था। इस समझौते में सहमति बनी कि जयपुर सरकार युद्ध में अंग्रेजों को मदद नहीं देगी। इसके एवज में जयपुर प्रजामंडल प्रत्यक्ष भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लेगा। इसी कारण प्रजामंडल इस आंदोलन से अलग रहा था। यह महत्वपूर्ण समझौता था।

43. (B) उनकी दिवंगता पुत्री
हीरालाल शास्त्री और उनकी पत्नी रतन शास्त्री की पुत्री शांताबाई का अल्पायु में निधन हो गया था। अपनी दिवंगता पुत्री की स्मृति तथा इच्छाओं को पूर्ण करने के उद्देश्य से उन्होंने 1935 में निवाई में 'शांताबाई शिक्षा कुटीर' की स्थापना की थी। यही संस्थान आगे चलकर नारी शिक्षा का सुप्रसिद्ध केंद्र 'वनस्थली विद्यापीठ' बना, जो आज भी विख्यात है। यह प्रेरणादायी है।

44. (B) मातृकुंडिया
जनजातीय नेता मोतीलाल तेजावत ने भील और गरासिया आदिवासियों को सामंती शोषण और बेगार के खिलाफ एकजुट किया। उन्होंने वर्ष 1921 में चित्तौड़गढ़ जिले के 'मातृकुंडिया' नामक स्थान से प्रसिद्ध 'एकी आंदोलन' का श्रीगणेश किया था। मातृकुंडिया को राजस्थान का हरिद्वार माना जाता है, जहाँ से तेजावत जी ने आदिवासियों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया। यह महत्वपूर्ण था।

45. (A) 1, 2, 3, 4
दिए गए ऐतिहासिक घटनाक्रमों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: गोविंद गुरु द्वारा 'संप सभा' का गठन 1883 ईस्वी में हुआ। मानगढ़ पहाड़ी का प्रसिद्ध नरसंहार 1913 में घटित हुआ। मोतीलाल तेजावत ने 'एकी आंदोलन' का शुभारंभ 1921 में किया था। इसके पश्चात 'मीणा क्षत्रिय महासभा' की स्थापना 1933-34 में की गई थी। अतः पहला विकल्प पूर्णतः सही क्रम दर्शाता है।

NODIA

(A) भवाई लोक नृत्य
(B) घूमर लोक नृत्य
(C) चरी लोक नृत्य
(D) कालबेलिया

64. डॉ. पी.के. सेठी ने 'जयपुर फुट' के नाम से जाने जाने वाले क्रांतिकारी कृत्रिम अंग के सह-आविष्कार के लिए एक अस्थि रोग विशेषज्ञ के रूप में वैश्विक पहचान प्राप्त की। इस आविष्कार में उनके साथ सहयोग करने वाले कुशल कारीगर कौन थे?
(A) जयपुर के कृपाल सिंह शेखावत
(B) बीकानेर के हिसामुद्दीन उस्ता
(C) मास्टर रामचंद्र शर्मा
(D) जयपुर के कुदरत सिंह

65. डॉ. दौलत सिंह कोठारी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे एक प्रख्यात भौतिक विज्ञानी थे, जिन्होंने रक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में कार्य किया।
II. उन्होंने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।
III. उन्होंने ऐतिहासिक कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) का नेतृत्व किया, जिसने भारत की शुरुआती शिक्षा नीति को आकार दिया।
इनमें से कौन सा संयोजन सही कथनों की पहचान करता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

66. 'जयपुर फुट' के माध्यम से चिकित्सा विज्ञान और सामुदायिक कल्याण में उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. पी.के. सेठी को 1981 ई. में किस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?
(A) चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार
(B) अल्बर्ट लस्कर पुरस्कार
(C) डब्ल्यूएचओ महानिदेशक विशेष सम्मान
(D) रमन मैग्सेसे पुरस्कार

67. आधुनिक भारतीय विज्ञान के महान व्यक्तित्व डॉ. दौलत सिंह कोठारी का जन्म राजस्थान के किस जिले में हुआ था?
(A) उदयपुर
(B) जयपुर
(C) जोधपुर
(D) बीकानेर

68. अवनी लेखरा ने पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनकर इतिहास रचा। वे किस खेल स्पर्धा से संबंधित हैं?
(A) भाला फेंक (F46)
(B) तीरंदाजी (कंपाउंड ओपन)
(C) निशानेबाजी (SH1 राइफल)
(D) टेबल टेनिस (क्लास 4)

69. राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने 2004 ई. में ओलंपिक रजत पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया था। उन्होंने भारतीय सशस्त्र बलों की किस शाखा में सेवा दी थी?
(A) भारतीय सेना (द ग्रेनेडियर्स)
(B) भारतीय वायु सेना (फाइटर स्ट्रीम)
(C) भारतीय नौसेना (मार्कोस)
(D) भारतीय सेना (राजपूताना राइफल्स)

70. राजस्थान की आधुनिक खेल हस्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने अपना ओलंपिक पदक डबल ट्रैप निशानेबाजी स्पर्धा में जीता था।
II. देवेंद्र झाझड़िया भाला फेंक में बहु-पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता हैं।
III. अवनी लेखरा ने टोक्यो 2020 पैरालंपिक में स्वर्ण और कांस्य दोनों पदक जीते।
IV. कृष्णा पूनिया राष्ट्रमंडल खेलों (2010) में एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।
इनमें से कौन सा संयोजन सही कथनों की पहचान करता है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

71. भारत के सम्मानित पैरा-एथलीटों में से एक और पद्म भूषण प्राप्तकर्ता देवेंद्र झाझड़िया राजस्थान के किस जिले से संबंधित हैं?
(A) झुंझुनू
(B) चूरू
(C) सीकर
(D) हनुमानगढ़

72. सर्वसम्मति से 'राजस्थान के गांधी' के रूप में याद किए जाने वाले गोकुल भाई भट्ट ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मुख्य रूप से किस रियासत में प्रजामंडल आंदोलन का नेतृत्व किया?
(A) डूंगरपुर
(B) बांसवाड़ा
(C) सिरोही
(D) प्रतापगढ़

73. महात्मा गांधी के साथ अपने गहरे वैचारिक और वित्तीय जुड़ाव के लिए जाने जाने वाले राजस्थान के किस प्रमुख उद्योगपति ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय व्यवसायियों की राष्ट्रवादी आवाज का प्रतिनिधित्व किया था?
(A) जमनालाल बजाज
(B) रामकृष्ण डालमिया
(C) सेठ हुकमचंद
(D) जी.डी. बिड़ला

Click Here to Buy book on Amazon

उच्च राजकीय पद का प्रस्ताव मिला, तब उन्होंने ऐतिहासिक कथन कहा था कि यदि अर्जुन लाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा। इसके पश्चात उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया। यह महान त्याग था।

59. (B) मारवाड़ प्रजामंडल
स्वतंत्रता सेनानी बालमुकुंद बिस्सा मारवाड़ प्रजामंडल तथा मारवाड़ लोक परिषद के सक्रिय कार्यकर्ता थे। जोधपुर राज्य के दमनचक्र के दौरान उन्हें जोधपुर सेंट्रल जेल में बंदी बनाया गया था। जेल में राजनीतिक बंदियों के अधिकारों तथा खराब भोजन के विरोध में उन्होंने लंबी भूख हड़ताल की। 19 जून 1942 को भूख हड़ताल के दौरान ही उनका निधन हो गया था।

60. (A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
कोमल कोठारी ने राजस्थान की समृद्ध लोक कलाओं और संगीत परंपराओं के संरक्षण में महान कार्य किया। उन्होंने मांगणियार तथा लंगा लोक संगीतकारों की प्रतिभा को विश्व पटल पर स्थापित किया। लोककथाओं और लोकगीतों को सहेजने के लिए उन्होंने विजयदान देथा के साथ मिलकर बोरुंदा में 'रुपायन संस्थान' की स्थापना की थी। अतः कथन और कारण दोनों सही हैं। यह प्रामाणिक है।

61. (A) जयपुर की ब्लू पॉटरी
कृपाल सिंह शेखावत जयपुर की विश्वप्रसिद्ध 'ब्लू पॉटरी' हस्तकला के महान कलाकार थे। उन्होंने ब्लू पॉटरी की पारंपरिक शैली में नवीनता लाते हुए 25 अलग-अलग रंगों का सफल समावेश किया। इस अनूठी कलात्मक शैली को 'कृपाल शैली' के नाम से जाना गया। उनके इस उल्लेखनीय कार्य के लिए उन्हें 1974 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। यह गौरवशाली उपलब्धि थी।

62. (C) बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह
राजस्थान का प्रसिद्ध राज्य गीत "केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देस" की प्रसिद्ध मांड गायिका अल्लाह जिलाई बाई बीकानेर से संबंधित थीं। उन्हें बीकानेर के दूरदर्शी महाराजा गंगा सिंह का राजकीयाश्रय और संरक्षण प्राप्त था। महाराजा गंगा सिंह ने उनकी संगीत प्रतिभा को प्रोत्साहित किया, जिससे उन्होंने मांड गायकी को विश्वभर में पहचान दिलाई। उन्हें पद्मश्री पुरस्कार भी मिला।

63. (D) कालबेलिया
कालबेलिया लोक नृत्य राजस्थान की सपेरा जाति का एक अत्यंत प्रसिद्ध और आकर्षक नृत्य है। प्रसिद्ध नृत्यांगना गुलाबो सपेरा ने अपने अद्भुत कौशल से कालबेलिया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पहचान दिलाई। उनके प्रयासों के कारण ही यूनेस्को ने वर्ष 2010 में कालबेलिया नृत्य को मानव जाति की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में स्थान दिया था। यह देश के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण बात है।

NODIA

64. (C) मास्टर रामचंद्र शर्मा
'जयपुर फुट' नामक क्रांतिकारी कृत्रिम अंग का आविष्कार प्रसिद्ध ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. पी.के. सेठी ने जयपुर के कुशल कारीगर मास्टर रामचंद्र शर्मा के साथ मिलकर किया था। रामचंद्र शर्मा के पारंपरिक कौशल तथा डॉ. सेठी के चिकित्सकीय ज्ञान के समन्वय से कम लागत वाला यह कृत्रिम पैर तैयार हुआ, जिसने लाखों दिव्यांगों का जीवन बदल दिया। यह महान खोज थी।

65. (D) I, II और III
डॉ. दौलत सिंह कोठारी भारत के विख्यात भौतिक वैज्ञानिक तथा शिक्षाविद थे। उन्होंने रक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में सेवाएं दीं। वे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के अध्यक्ष रहे तथा उन्होंने 1964-66 के ऐतिहासिक कोठारी शिक्षा आयोग की अध्यक्षता की, जिसने देश की शिक्षा नीति को नया स्वरुप प्रदान किया। अतः दिए गए सभी तीनों कथन सत्य हैं।

66. (D) रमन मैग्सेसे पुरस्कार
'जयपुर फुट' के माध्यम से चिकित्सा क्षेत्र तथा मानवता की सेवा में अतुलनीय योगदान देने के लिए प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. पी.के. सेठी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली। उनके इस उत्कृष्ट कार्य के लिए वर्ष 1981 में उन्हें प्रतिष्ठित 'रमन मैग्सेसे पुरस्कार' से अलंकृत किया गया था। उनके आविष्कार ने दिव्यांगों का जीवन सुगम बनाया। यह अत्यंत बड़ा सम्मान था।

67. (A) उदयपुर
भारत के महान वैज्ञानिक और प्रख्यात शिक्षाविद डॉ. दौलत सिंह कोठारी का जन्म 6 जुलाई 1906 को राजस्थान के उदयपुर जिले में हुआ था। उन्होंने देश में वैज्ञानिक अनुसंधान तथा शिक्षा के विकास में दूरगामी योगदान दिया। वे रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष रहे। भारतीय शिक्षा नीति निर्धारण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही थी।

68. (C) निशानेबाजी (SH1 राइफल)
राजस्थान के जयपुर की प्रसिद्ध पैरा-एथलीट अवनी लेखरा का संबंध निशानेबाजी (SH1 राइफल) स्पर्धा से है। उन्होंने टोक्यो 2020 पैरालंपिक खेलों में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में भारत के लिए ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीता। वे पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली प्रथम भारतीय महिला बनीं। उन्होंने पेरिस पैरालंपिक में भी पुनः स्वर्ण पदक हासिल किया। यह ऐतिहासिक उपलब्धि है।

69. (A) भारतीय सेना (द ग्रेनेडियर्स)
2004 के एथेंस ओलंपिक में निशानेबाजी स्पर्धा में रजत पदक जीतने वाले राज्यवर्धन सिंह राठौड़ भारतीय सेना के एक अधिकारी रहे हैं। उन्होंने भारतीय सेना की 'द ग्रेनेडियर्स' रेजीमेंट में कर्नल के पद पर कार्य करते हुए देश की सेवा की। सैन्य जीवन के साथ-साथ उन्होंने खेल क्षेत्र में देश का नाम रोशन किया। बाद में वे राजनीति में आए।

70. (D) I, II, III और IV
राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने 2004 में निशानेबाजी में ओलंपिक रजत पदक जीता था। देवेंद्र झाझड़िया भाला फेंक में दोहरे पैरालंपिक स्वर्ण पदक विजेता हैं। अवनी लेखरा ने टोक्यो में स्वर्ण तथा कांस्य दोनों पदक जीते। कृष्णा पूनिया ने 2010 राष्ट्रमंडल खेलों की एथलेटिक्स स्पर्धा में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीता। अतः दिए गए चारों कथन पूर्णतः सत्य एवं प्रामाणिक हैं।

71. (B) चूरू
भारत के सुप्रसिद्ध पैरा-एथलीट और भाला फेंक खिलाड़ी देवेंद्र झाझड़िया का जन्म राजस्थान के चूरू जिले में हुआ था। उन्होंने पैरालंपिक खेलों में दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीतकर इतिहास रचा। वे पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित होने वाले भारत के प्रथम पैरा-खिलाड़ी हैं। उनके इस प्रदर्शन से चूरू तथा संपूर्ण राजस्थान का नाम रोशन हुआ है। यह प्रेरणादायक है।

72. (C) सिरोही
'राजस्थान के गांधी' नाम से विख्यात स्वतंत्रता सेनानी गोकुल भाई भट्ट का जन्म सिरोही जिले में हुआ था। उन्होंने वर्ष 1939 में सिरोही प्रजामंडल का गठन करके प्रजातांत्रिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन हेतु जन-आंदोलन चलाया। इसके अतिरिक्त सिरोही तथा माउंट आबू को राजस्थान में मिलाए जाने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक रही थी। यह ऐतिहासिक प्रामाणिक तथ्य है।

73. (D) जी.डी. बिड़ला
प्रसिद्ध भारतीय उद्योगपति घनश्याम दास बिड़ला (जी. डी. बिड़ला) महात्मा गांधी के निकट सहयोगी तथा वित्तीय मददगार थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के समय भारतीय उद्योग जगत में राष्ट्रवादी विचारों का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने खादी के विकास, सामाजिक सुधारों और रचनात्मक कार्यों में गांधीजी का निरंतर सहयोग किया तथा पिलानी में उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। यह उनका अत्यंत बड़ा योगदान था।

74. (A) भरतपुर प्रजामंडल
मास्टर आदित्येंद्र पूर्वी राजस्थान के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने भरतपुर रियासत में जनजागृति लाने तथा नागरिकों को उनके अधिकार दिलाने के लिए स्थापित 'भरतपुर प्रजामंडल' के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उनके सक्षम नेतृत्व में भरतपुर में उत्तरदायी शासन की मांग को लेकर व्यापक आंदोलन चलाया गया था। वे एक अत्यंत लोकप्रिय नेता माने जाते थे।

75. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों का अपनी-अपनी कर्मभूमि में विशिष्ट योगदान रहा है। स्वामी कुमारानंद ने ब्यावर और अजमेर क्षेत्र में कार्य किया। भोगीलाल पांड्या की मुख्य कार्यस्थली डूंगरपुर रही। मास्टर आदित्येंद्र भरतपुर क्षेत्र के प्रमुख नेता थे, जबकि गोकुल भाई भट्ट ने सिरोही रियासत में आंदोलन का संचालन किया था। अतः विकल्प B बिल्कुल सही उत्तर प्रस्तुत करता है।

76. (B) यति ज्ञानचंद्र
कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान के इतिहास पर 'ऐनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की थी। उन्होंने अपनी इस महान ऐतिहासिक कृति को अपने गुरु जैन विद्वान 'यति ज्ञानचंद्र' को समर्पित किया था। यति ज्ञानचंद्र ने टॉड को प्राचीन शिलालेखों और ऐतिहासिक पांडुलिपियों को पढ़ने तथा ऐतिहासिक साक्ष्य जुटाने में सहायता की थी। यह महत्वपूर्ण था।

77. (A) पश्चिमी राजपूत राज्यों के पॉलिटिकल एजेंट
कर्नल जेम्स टॉड 1818 ईस्वी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिनिधि के रूप में राजपूताना आए थे। उन्हें 'पश्चिमी राजपूत राज्यों के पॉलिटिकल एजेंट' के रूप में नियुक्त किया गया था। इस पद पर रहते हुए उन्होंने मेवाड़, मारवाड़ तथा आसपास के राज्यों के इतिहास एवं रीति-रिवाजों का गहरा अध्ययन किया तथा ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे। यह महत्वपूर्ण पद था।

78. (C) दिवेर का युद्ध
अक्टूबर 1582 में महाराणा प्रताप और मुगलों के मध्य लड़े गए प्रसिद्ध दिवेर के युद्ध में राजपूतों ने मुगलों को पराजित करके मेवाड़ के अनेक दुर्गों को पुनः मुक्त कराया था। प्रसिद्ध ब्रिटिश इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने इस युद्ध के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए इसे 'मेवाड़ का मैराथन' की संज्ञा दी थी। यह महाराणा प्रताप की बड़ी विजय थी।

79. (D) उन्होंने 1835 ई. में अपनी सेवानिवृत्ति तक जयपुर राज्य के रेजिडेंट के रूप में लगातार सेवा की।
कर्नल जेम्स टॉड 1822 ईस्वी में ही स्वास्थ्य कारणों से सेवामुक्त होकर इंग्लैंड वापस लौट गए थे। उन्होंने 1835 तक जयपुर में रेजिडेंट के रूप में कार्य नहीं किया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें राजस्थान इतिहास की प्रमुख स्रोत मानी जाती हैं। अतः चौथा कथन ऐतिहासिक रूप से असत्य एवं गलत सिद्ध होता है। यह बिल्कुल स्पष्ट उत्तर है।

80. (A) 1, 3, 2
स्वामी दयानंद सरस्वती की राजस्थान यात्राओं और सुधारों का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: स्वामीजी 1865 में करौली राज्य के अतिथि के रूप में पहली बार आए। उन्होंने 1880 ईस्वी में अजमेर में आर्य समाज स्थापित किया। इसके बाद 1883 में उन्होंने उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' का गठन किया। अतः विकल्प 1, 3, 2 सही अनुक्रम दर्शाता है। यह प्रामाणिक है।

81. (B) संगरिया, हनुमानगढ़
स्वामी केशवानंद राजस्थान के एक महान शिक्षाविद और समाज सुधारक थे। उन्होंने हनुमानगढ़ जिले के 'संगरिया' स्थान पर 'ग्रामोत्थान विद्यापीठ' की स्थापना करके ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का अभूतपूर्व प्रसार किया। उनके अथक प्रयासों से उत्तरी राजस्थान के मरुस्थलीय और ग्रामीण इलाकों में सैकड़ों विद्यालय स्थापित हुए, जिससे जनचेतना का अभूतपूर्व विकास हुआ। यह उनका अत्यंत महान कार्य था।

Downloaded from www.pdf.tube

82. (D) बाल विवाह का निवारण
अजमेर के प्रसिद्ध समाज सुधारक हरबिलाश शारदा के प्रयासों से 1929 में 'बाल विवाह निरोधक अधिनियम' पारित किया गया था, जिसे 'शारदा एक्ट' कहा जाता है। इस ऐतिहासिक अधिनियम का प्राथमिक उद्देश्य बाल विवाह की सामाजिक कुरीति को कानूनी रूप से रोकना था। इसमें विवाह हेतु बालक तथा बालिका की न्यूनतम आयु सीमा निर्धारित की गई थी। यह ऐतिहासिक कानून था।

83. (A) विवाह व्यय को नियंत्रित करना तथा बहुविवाह और बाल विवाह पर रोक लगाना।
1889 ईस्वी में अजमेर में स्थापित वॉल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा का मुख्य उद्देश्य राजपूत समाज में सुधार लाना था। इस संस्था ने विवाह के दौरान होने वाले अत्यधिक व्यय पर रोक लगाने तथा बहुविवाह और बाल विवाह जैसी बुराइयों को समाप्त करने हेतु नियम बनाए। इस संस्था के नियमों से समाज में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले थे। यह ऐतिहासिक पहल थी।

84. (C) बूंदी
राजस्थान के राज्य कवि के रूप में सम्मानित महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण बूंदी रियासत के महाराव राम सिंह के दरबारी कवि थे। उन्होंने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'वंश भास्कर' की रचना की, जिसमें बूंदी राजवंश का इतिहास लिखा गया है। इसके साथ ही उन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'वीर सतसई' नामक ओजस्वी ग्रंथ लिखकर वीरों में उत्साह भरा। यह प्रसिद्ध है।

85. (A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
बूंदी के राजकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'वंश भास्कर' को अधूरा छोड़ दिया था। इसका मुख्य कारण यह था कि ऐतिहासिक सत्यता और तटस्थता को लेकर उनके अपने आश्रयदाता बूंदी के महाराव राम सिंह के साथ मतभेद उत्पन्न हो गए थे। बाद में इस ग्रंथ को उनके पुत्र मुरारीदान ने पूरा किया। अतः कथन एवं कारण दोनों सत्य हैं।

86. (D) पृथ्वीराज राठौड़
कन्हैयालाल सेठिया द्वारा रचित प्रसिद्ध राजस्थानी कविता 'पीथल और पाथल' में 'पाथल' महाराणा प्रताप को तथा 'पीथल' बीकानेर के राजा पृथ्वीराज राठौड़ को कहा गया है। पृथ्वीराज राठौड़ अकबर के दरबार में रहते हुए भी महाराणा प्रताप की देशभक्ति और स्वाभिमान के प्रशंसक थे। उन्होंने अपने पत्रों के माध्यम से प्रताप के स्वाभिमान को सदा जागृत रखा। यह प्रसिद्ध काव्य है।

87. (B) पगफेरो
प्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यकार विजयदान देथा ने 'बातां री फुलवारी', दुविधा, उलझन तथा 'अलेखूं हिटलर' जैसी कालजयी कृतियों की रचना की थी। इसके विपरीत, 'पगफेरो' विजयदान देथा की कृति नहीं है, बल्कि यह राजस्थानी के विख्यात कवि मणी मधुकर द्वारा रचित एक चर्चित काव्य संग्रह है। अतः पगफेरो उनकी रचनाओं में शामिल नहीं है। यह बिल्कुल स्पष्ट उत्तर सिद्ध होता है।

88. (C) वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान में महिला शिक्षा और नारी कल्याण के क्षेत्र में पद्मश्री रतन शास्त्री का योगदान अतुलनीय है। वे टोंक जिले के निवाई में स्थित विश्वप्रसिद्ध महिला विश्वविद्यालय 'वनस्थली विद्यापीठ' की सह-संस्थापिका थीं। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन बालिकाओं की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वावलंबन और चरित्र निर्माण हेतु समर्पित कर दिया था। उन्हें अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। यह महान कार्य था।

NODIA

89. (D) मोहन वीणा
जयपुर में जन्मे सुप्रसिद्ध संगीतकार पंडित विश्व मोहन भट्ट ने पारंपरिक गिटार में भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनुसार परिवर्तन करके 'मोहन वीणा' नामक नया वाद्ययंत्र बनाया। इस अनोखे आविष्कार और संगीत साधना के लिए उन्हें 1994 में विश्व के सर्वोच्च संगीत पुरस्कार 'ग्रेमी अवार्ड' से अलंकृत किया गया था। उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया है। यह गौरवपूर्ण बात है।

90. (D) I, II और III
उद्योगपति घनश्याम दास बिड़ला 1957 में पद्म विभूषण से सम्मानित होने वाले प्रथम व्यक्ति थे। अरुणा रॉय को सूचना के अधिकार आंदोलन हेतु रमन मैग्सेसे पुरस्कार मिला। ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह को ग़ज़ल गायकी के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। अतः दिए गए तीनों कथन ऐतिहासिक एवं तथ्यपरक रूप से पूर्णतः सत्य एवं सही हैं। यह प्रामाणिक है।

91. (B) राजेंद्र सिंह
'तरुण भारत संघ' के संस्थापक राजेंद्र सिंह को जल संरक्षण और जोहड़ निर्माण द्वारा नदियों को पुनर्जीवित करने के लिए 'भारत का जलपुरुष' कहा जाता है। उनके इस अतुलनीय पर्यावरण कार्य के लिए उन्हें 2001 में प्रतिष्ठित 'रमन मैग्सेसे पुरस्कार' से अलंकृत किया गया था। उन्होंने राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट का स्थाई समाधान प्रस्तुत किया। यह सराहनीय है।

92. (B) पृथ्वीराज चौहान
ऐतिहासिक कालक्रम की दृष्टि से अजमेर के चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय (1177-1192 ईस्वी) सबसे प्राचीन हैं। इसके बाद 15वीं सदी में महाराणा कुंभा, 16वीं सदी में महाराणा प्रताप तथा 18वीं सदी में जयपुर के सवाई जयसिंह द्वितीय का काल आता है। अतः दिए गए सभी शासकों में पृथ्वीराज चौहान सबसे प्राचीन ऐतिहासिक कालखण्ड से संबंधित हैं। यह कालानुक्रम सत्य है।

93. (A) सवाई जयसिंह द्वितीय और औरंगजेब
आमेर के राजा सवाई जयसिंह द्वितीय मुगल बादशाह औरंगजेब के समकालीन थे। औरंगजेब ने ही उन्हें 'सवाई' की उपाधि प्रदान की थी। इसके विपरीत महाराणा कुंभा दिल्ली के सैय्यद व लोदी सुल्तानों के समकालीन थे, महाराणा प्रताप

S. हरिभाऊ उपाध्याय

सूची II : (एकीकरण के दौरान भूमिका)

1. रियासती विभाग के प्रमुख
2. अजमेर-मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री
3. रियासती विभाग के सचिव
4. सिरोही के एकीकरण में प्रमुख नेता

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

36. एकीकरण के छठे चरण (26 जनवरी 1950) के दौरान, माउंट आबू और दिलवाड़ा क्षेत्रों को छोड़कर, किस रियासत का राजस्थान में विलय कर दिया गया था?
(A) प्रतापगढ़
(B) किशनगढ़
(C) सिरोही
(D) डूंगरपुर

37. माउंट आबू और दिलवाड़ा क्षेत्रों को 1950 में प्रारंभ में किस राज्य में मिला दिया गया था, जिससे राजस्थान में व्यापक विरोध हुआ था?
(A) बंबई राज्य
(B) गुजरात राज्य
(C) मध्य भारत
(D) सौराष्ट्र

38. राजस्थान के एकीकरण का अंतिम (सातवाँ) चरण 1 नवंबर 1956 को किसकी सिफारिशों के आधार पर पूरा हुआ था?
(A) बी.आर. पटेल समिति
(B) के.एम. पणिक्कर समिति
(C) शंकर राव देव समिति
(D) राज्य पुनर्गठन आयोग

39. 1953 में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग के सदस्य निम्नलिखित में से कौन नहीं थे?
(A) फज़ल अली
(B) के.एम. मुंशी
(C) के.एम. पणिक्कर
(D) एच.एन. कुंजरू

40. 1 नवंबर 1956 को अंतिम पुनर्गठन के तहत, राजस्थान के झालावाड़ जिले के किस उप-खंड को मध्य प्रदेश में स्थानांतरित कर दिया गया था?
(A) सुनेल टप्पा
(B) नीमच
(C) सिरोंज
(D) भानपुरा

41. एकीकरण प्रक्रिया के दौरान पद ग्रहण करने के सही कालानुक्रमिक क्रम में राजस्थान के निम्नलिखित प्रधानमंत्रियों/ मुख्यमंत्रियों को व्यवस्थित कीजिए:
I. माणिक्य लाल वर्मा
II. गोकुल लाल असावा
III. हीरालाल शास्त्री
IV. शोभाराम कुमावत
(A) IV, II, I, III
(B) I, II, III, IV
(C) IV, III, II, I
(D) II, IV, I, III

42. 1956 में मध्य प्रदेश को दिए गए क्षेत्र के बदले में, मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले का कौन-सा क्षेत्र राजस्थान में मिलाया गया था?
(A) सुनेल टप्पा
(B) सिरोंज तहसील
(C) कुशलगढ़ क्षेत्र
(D) भानपुरा तहसील

43. 1 नवंबर 1956 को राजस्थान में विलय से पूर्व, अजमेर-मेरवाड़ा की प्रशासनिक स्थिति क्या थी?
(A) भाग A (क) राज्य
(B) भाग B (ख) राज्य
(C) भाग C (ग) राज्य
(D) भाग D (घ) राज्य

44. राजस्थान में विलय से पूर्व स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही अजमेर-मेरवाड़ा की विधानसभा को किस नाम से जाना जाता था?
(A) प्रजा मंडल सभा
(B) धारा सभा
(C) लोक परिषद
(D) विधान परिषद

45. अजमेर-मेरवाड़ा की 'धारा सभा' में कुल कितने सदस्य थे?
(A) 20
(B) 30
(C) 40
(D) 50

46. भारत के संविधान (1950) के तहत, 7वें संवैधानिक संशोधन से पूर्व एकीकृत राजस्थान को किस श्रेणी के राज्य के रूप में वर्गीकृत किया गया था?
(A) भाग A राज्य
(B) भाग B राज्य
(C) भाग C राज्य
(D) भाग D राज्य

47. किस संविधान संशोधन द्वारा भाग A, B और C राज्यों के बीच के अंतर को समाप्त किया गया तथा 'राजप्रमुख' के पद को समाप्त कर दिया गया?
(A) 4वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1955
(B) 7वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1956
(C) 9वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1960
(D) 11वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1961

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 20

राजस्थान का एकीकरण

1. भारत की स्वतंत्रता से पूर्व, राजपूताना का राजनीतिक भूगोल क्रमशः कितनी रियासतों, ठिकानों और ब्रिटिश-शासित क्षेत्रों से मिलकर बना था?
   (A) 18 रियासतें, 4 ठिकाने और 2 ब्रिटिश-शासित क्षेत्र
   (B) 19 रियासतें, 3 ठिकाने और 1 ब्रिटिश-शासित क्षेत्र
   (C) 20 रियासतें, 2 ठिकाने और 1 ब्रिटिश-शासित क्षेत्र
   (D) 19 रियासतें, 4 ठिकाने और 1 ब्रिटिश-शासित क्षेत्र

2. देसी रियासतों के एकीकरण के कार्य को संभालने के लिए भारत सरकार द्वारा 5 जुलाई 1947 को निम्नलिखित में से किस विभाग की स्थापना की गई थी?
   (A) प्रांतीय संबंध विभाग
   (B) एकीकरण मंत्रालय
   (C) क्राउन संबंध विभाग
   (D) रियासती विभाग

3. सरदार वल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में गठित रियासती विभाग के सचिव के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
   (A) वी.पी. मेनन
   (B) लॉर्ड माउंटबेटन
   (C) पी.बी. मेनन
   (D) के.एम. मुंशी

4. ब्रिटिश सर्वोपरि सत्ता समाप्त होने के बाद किसी रियासत को अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के लिए रियासती विभाग द्वारा निम्नलिखित में से कौन-सी शर्तें निर्धारित की गई थीं?
   (A) न्यूनतम 20 लाख जनसंख्या तथा 2 करोड़ रुपये की वार्षिक आय
   (B) न्यूनतम 5 लाख जनसंख्या तथा 50 लाख रुपये की वार्षिक आय
   (C) न्यूनतम 10 लाख जनसंख्या तथा 1 करोड़ रुपये की वार्षिक आय
   (D) न्यूनतम 15 लाख जनसंख्या तथा 1.5 करोड़ रुपये की वार्षिक आय

5. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
   सूची I : (एकीकरण के चरण)
   P. मत्स्य संघ
   Q. राजस्थान संघ
   R. संयुक्त राजस्थान
   S. वृहत् राजस्थान
   सूची II : (गठन की तिथि)
   1. 25 मार्च 1948
   2. 30 मार्च 1949
   3. 18 मार्च 1948
   4. 18 अप्रैल 1948
   (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
   (B) P-1, Q-3, R-2, S-4
   (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
   (D) P-2, Q-1, R-4, S-3

6. राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण (मत्स्य संघ) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. इसमें अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली की रियासतें शामिल थीं।
   II. इसकी राजधानी भरतपुर में स्थापित की गई थी।
   III. 'मत्स्य संघ' नाम के.एम. मुंशी की सिफारिश पर अपनाया गया था।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

7. एकीकरण के प्रथम चरण के दौरान मत्स्य संघ का राजप्रमुख किसे नियुक्त किया गया था?
   (A) अलवर के महाराजा तेज सिंह
   (B) धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह
   (C) भरतपुर के महाराजा बृजेंद्र सिंह
   (D) करौली के महाराजा गणेश पाल

8. निम्नलिखित में से कौन मत्स्य संघ के प्रधानमंत्री थे?
   (A) गोकुल लाल असावा
   (B) माणिक्य लाल वर्मा
   (C) शोभाराम कुमावत
   (D) जुगल किशोर चतुर्वेदी

9. नीमराना ठिकाने का राजस्थान में विलय एकीकरण प्रक्रिया के किस चरण के दौरान हुआ था?
   (A) प्रथम चरण
   (B) द्वितीय चरण
   (C) तृतीय चरण
   (D) चतुर्थ चरण

10. राजस्थान के किस शासक ने विलय पत्र (इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एसेशन) पर हस्ताक्षर करते समय प्रसिद्ध रूप से कहा था, "मैं अपने डेथ वारंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ"?

Downloaded from www.pdf.tube

अकबर के तथा पृथ्वीराज चौहान मोहम्मद गोरी के समकालीन थे। अतः पहला युग्म ऐतिहासिक रुप से सही सुमेलित है। यह तथ्यपरक उत्तर है।

94. (C) गोविंद गुरु
जयनारायण व्यास, माणिक्य लाल वर्मा तथा हीरालाल शास्त्री ने विभिन्न रियासतों में प्रजामंडल आंदोलनों का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया था। इसके विपरीत गोविंद गुरु एक महान जनजातीय सामाजिक-धार्मिक सुधारक थे, जिन्होंने आदिवासियों के नैतिक तथा सामाजिक उत्थान के लिए 'भगत आंदोलन' चलाया था। वे रियासती प्रजामंडल की राजनीति से सीधे नहीं जुड़े थे। यह सही उत्तर सिद्ध होता है।

95. (A) केवल I, II और III
कुंभा और सवाई जयसिंह अपने स्थापत्य तथा विद्वता हेतु विख्यात हैं। पथिक और तेजावत ने किसान व जनजातीय आंदोलन चलाए। पन्ना धाय व मीराबाई 16वीं सदी में मेवाड़ से संबंधित थीं। परंतु माणिक्य लाल वर्मा राजस्थान के निर्वाचित मुख्यमंत्री नहीं रहे, केवल जयनारायण व्यास ही मुख्यमंत्री बने थे। अतः चौथा कथन गलत होने से विकल्प A सही है। यह प्रामाणिक है।

96. (C) उदयपुर
वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के अद्वितीय शौर्य, स्वाभिमान और ऐतिहासिक योगदान को स्मरणीय बनाए रखने हेतु राजस्थान के उदयपुर नगर में 'प्रताप गौरव केंद्र राष्ट्रीय तीर्थ' नामक एक भव्य स्मारक का निर्माण किया गया है। इस केंद्र में महाराणा प्रताप की विशाल कांस्य प्रतिमा तथा मेवाड़ के स्वाभिमानशाली इतिहास को आधुनिक तकनीकों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। यह प्रेरणास्पद स्थल है।

97. (B) पांडोली, चित्तौड़गढ़
राजस्थान सरकार ने स्वामिभक्ति और त्याग की प्रतिमूर्ति पन्ना धाय की स्मृति में उनके पैतृक जन्मस्थान चित्तौड़गढ़ जिले के 'पांडोली' गाँव में 'पन्ना धाय पैनोरमा' का निर्माण कराया है। इस स्मारक में पन्ना धाय के महान बलिदान तथा उनके जीवन चरित्र को कलात्मक माध्यमों से प्रदर्शित किया गया है, ताकि आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरणा ले सकें। यह अनुकरणीय है।

98. (D) मीरा पुरस्कार
राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) द्वारा साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान महान भक्त कवयित्री संत मीराबाई की पावन स्मृति में 'मीरा पुरस्कार' के नाम से प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों के लिए साहित्यकारों को दिया जाता है, जिसमें प्रशस्ति पत्र तथा नकद राशि प्रदान की जाती है। यह सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है।

99. (A) जयनारायण व्यास
राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री और मारवाड़ के महान स्वतंत्रता सेनानी जयनारायण व्यास के नाम पर जोधपुर शहर में स्थित प्रमुख विश्वविद्यालय का नाम 'जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय' रखा गया है। उन्होंने सामंती शासन के विरुद्ध अनवरत संघर्ष किया और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु उनका नाम सदा स्मरणीय रहेगा। यह सम्मानजनक कदम है।

NODIA

100. (A) 3, 2, 4, 1
दिए गए ऐतिहासिक व्यक्तित्वों का उनके कालखंड के अनुसार सही कालानुक्रम इस प्रकार है: पृथ्वीराज चौहान 12वीं सदी में, महाराणा कुंभा 15वीं सदी में, संत मीराबाई 16वीं सदी में तथा जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय 18वीं सदी में हुए थे। अतः क्रम 3, 2, 4, 1 उनके ऐतिहासिक काल के सही अनुक्रम को प्रस्तुत करता है। यह पूर्णतः सत्य है।

www.nodia.in

(B) जोधपुर, कुशलगढ़, अजमेर-मेरवाड़ा, उदयपुर
(C) उदयपुर, कुशलगढ़, जोधपुर, अजमेर-मेरवाड़ा
(D) कुशलगढ़, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर-मेरवाड़ा

23. संयुक्त राजस्थान में चार प्रमुख रियासतों का विलय करके 30 मार्च 1949 को वृहत् राजस्थान (चतुर्थ चरण) का गठन किया गया था। निम्नलिखित में से कौन-सी रियासत इन चार राज्यों में शामिल नहीं थी?
(A) जयपुर
(B) भरतपुर
(C) जोधपुर
(D) बीकानेर

24. वृहत् राजस्थान के लिए राजधानी के चयन से संबंधित विवाद को सुलझाने के लिए भारत सरकार द्वारा किस समिति का गठन किया गया था?
(A) शंकर राव देव समिति
(B) फज़ल अली आयोग
(C) बी.आर. पटेल समिति
(D) के.एम. मुंशी समिति

25. बी.आर. पटेल समिति की सिफारिशों के आधार पर किस शहर को वृहत् राजस्थान की राजधानी के रूप में चुना गया था?
(A) जोधपुर
(B) उदयपुर
(C) अजमेर
(D) जयपुर

26. वृहत् राजस्थान के प्रथम प्रधानमंत्री (बाद में मुख्यमंत्री) कौन बने?
(A) हीरालाल शास्त्री
(B) जयनारायण व्यास
(C) टीकाराम पालीवाल
(D) माणिक्य लाल वर्मा

27. वृहत् राजस्थान के गठन पर, विशेष रूप से किस शासक के लिए 'महाराजप्रमुख' का पद सृजित किया गया था?
(A) जयपुर के सवाई मानसिंह द्वितीय
(B) मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह
(C) बीकानेर के महाराजा सादुल सिंह
(D) जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह

28. प्रत्येक वर्ष 30 मार्च को 'राजस्थान दिवस' निम्नलिखित में से किसके गठन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है?
(A) मत्स्य संघ
(B) संयुक्त राजस्थान
(C) वृहत् राजस्थान
(D) 1956 में अंतिम पुनर्गठित राज्य

29. बी.आर. पटेल समिति द्वारा अनुशंसित प्रशासनिक पुनर्गठन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उच्च न्यायालय जोधपुर को आवंटित किया गया था।
II. शिक्षा विभाग बीकानेर को दिया गया था।
III. कृषि विभाग भरतपुर में स्थापित किया गया था।
IV. खनिज एवं सीमा शुल्क विभाग कोटा में रखा गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III और IV
(C) केवल IV
(D) केवल II और III

30. भारतीय संघ में विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली राजपूताना की पहली रियासत निम्नलिखित में से कौन-सी थी?
(A) अलवर
(B) जयपुर
(C) बीकानेर
(D) मेवाड़

31. विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली राजपूताना की अंतिम रियासत कौन-सी थी?
(A) भरतपुर
(B) जैसलमेर
(C) सिरोही
(D) धौलपुर

32. एकीकरण का पाँचवाँ चरण, जिसे संयुक्त वृहत् राजस्थान के रूप में जाना जाता है, 15 मई 1949 को वृहत् राजस्थान में किस इकाई के विलय द्वारा संपन्न हुआ था?
(A) सिरोही
(B) अजमेर-मेरवाड़ा
(C) मत्स्य संघ
(D) माउंट आबू

33. मत्स्य संघ का वृहत् राजस्थान में विलय किस समिति की सिफारिशों पर आधारित था?
(A) बी.आर. पटेल समिति
(B) शंकर राव देव समिति
(C) फज़ल अली राज्य पुनर्गठन आयोग
(D) वी.पी. मेनन समिति

34. शंकर राव देव समिति के गठन का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) नवगठित राजस्थान राज्य और पाकिस्तान के बीच सीमा विवादों का निपटारा करना
(B) नवगठित राजस्थान के प्रशासनिक विभाजन की योजना बनाना
(C) सामंती जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन की सिफारिश करना
(D) भरतपुर और धौलपुर की जनता की राजस्थान या उत्तर प्रदेश में विलय संबंधी राय का पता लगाना

35. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (प्रमुख व्यक्तित्व)
P. वी.पी. मेनन
Q. सरदार पटेल
R. गोकुलभाई भट्ट

Click Here to Buy book on Amazon

(A) बांसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह
(B) जैसलमेर के महारावल जवाहर सिंह
(C) कोटा के महाराव भीम सिंह
(D) जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह

11. एकीकरण के द्वितीय चरण (राजस्थान संघ) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका गठन 25 मार्च 1948 को हुआ था।
II. इस संघ की राजधानी कोटा थी।
III. गोकुल लाल असावा को इसका प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था।
IV. इस संघ में उदयपुर रियासत शामिल थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

12. कोटा में राजस्थान संघ (एकीकरण का द्वितीय चरण) का उद्घाटन किसने किया था?
(A) सरदार वल्लभभाई पटेल
(B) एन.वी. गाडगिल
(C) जवाहरलाल नेहरू
(D) लॉर्ड माउंटबेटन

13. राजस्थान के एकीकरण के किस चरण के दौरान कुशलगढ़ ठिकाने का विलय किया गया था?
(A) मत्स्य संघ
(B) राजस्थान संघ
(C) संयुक्त राजस्थान
(D) वृहत् राजस्थान

14. निम्नलिखित में से कौन-सी रियासत 25 मार्च 1948 को गठित राजस्थान संघ का हिस्सा नहीं थी?
(A) बूंदी
(B) झालावाड़
(C) सिरोही
(D) प्रतापगढ़

15. एकीकरण का तीसरा चरण, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राजस्थान का निर्माण हुआ, तत्कालीन राजस्थान संघ में किस रियासत के विलय द्वारा संपन्न हुआ था?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) मेवाड़

16. 18 अप्रैल 1948 को गठित संयुक्त राजस्थान का राजप्रमुख किसे नियुक्त किया गया था?
(A) महाराव भीम सिंह
(B) सवाई मानसिंह द्वितीय
(C) महाराणा भूपाल सिंह
(D) महाराजा सादुल सिंह

17. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : संयुक्त राजस्थान (तृतीय चरण) की राजधानी उदयपुर में स्थापित की गई थी।
कारण (R) : मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह अपनी रियासत के विलय पर इस शर्त पर सहमत हुए थे कि उदयपुर को राजधानी बनाया जाएगा और उन्हें वंशानुगत राजप्रमुख बनाया जाएगा।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

18. 18 अप्रैल 1948 को संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन किसने किया था?
(A) वी.पी. मेनन
(B) सरदार वल्लभभाई पटेल
(C) एन.वी. गाडगिल
(D) जवाहरलाल नेहरू

NODIA

19. माणिक्य लाल वर्मा को राजस्थान के एकीकरण के दौरान निम्नलिखित में से किस संघ का प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था?
(A) मत्स्य संघ
(B) राजस्थान संघ
(C) संयुक्त राजस्थान
(D) संयुक्त वृहत् राजस्थान

20. एकीकरण से पूर्व, किस शासक ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के लिए राजपूताना, गुजरात और मालवा के राज्यों को मिलाकर 'राजपूताना यूनियन' बनाने का प्रयास किया था?
(A) जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह
(B) जयपुर के सवाई मानसिंह द्वितीय
(C) मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह
(D) कोटा के महाराव भीम सिंह

21. जोधपुर के किस शासक ने मोहम्मद अली जिन्ना के साथ बातचीत की थी और पाकिस्तान में शामिल होने के विचार पर विचार-विमर्श किया था?
(A) महाराजा हनवंत सिंह
(B) महाराजा उम्मेद सिंह
(C) महाराजा सरदार सिंह
(D) महाराजा गज सिंह

22. निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम एकीकृत राजस्थान में शामिल किए गए क्षेत्रों के सही कालानुक्रम को दर्शाता है?
(A) कुशलगढ़, उदयपुर, जोधपुर, अजमेर-मेरवाड़ा

48. सिरोही के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. गोकुलभाई भट्ट ने माउंट आबू का राजस्थान में विलय कराने के आंदोलन का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

II. 1950 में एक ही चरण में सिरोही का पूर्णतः राजस्थान में विलय कर दिया गया था।

III. राज्य पुनर्गठन आयोग ने अंततः माउंट आबू को बंबई राज्य से राजस्थान में स्थानांतरित करने की सिफारिश की।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

49. 1956 में राजप्रमुख के पद के उन्मूलन के पश्चात्, राजस्थान के प्रथम राज्यपाल के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?

(A) डॉ. संपूर्णानंद
(B) गुरुमुख निहाल सिंह
(C) सरदार हुकम सिंह
(D) सरदार जोगेंद्र सिंह

50. प्रजा मंडल आंदोलन ने एकीकरण प्रक्रिया में मुख्य रूप से किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

(A) ब्रिटिश सेना का सैन्य रूप से मुकाबला करने के लिए देसी रियासतों के शासकों को हथियार और वित्तीय संसाधन प्रदान करके
(B) स्वतंत्र संप्रभु दर्जा प्राप्त करने के लिए ब्रिटिश संसद के साथ सीधे बातचीत करके
(C) पाकिस्तान में शामिल होने की रियासतों की मांग का समर्थन करके
(D) लोकतांत्रिक शासन और भारत के साथ एकीकरण के लिए जनमत तैयार करके

51. राजस्थान का एकीकरण एक लंबी प्रक्रिया थी। मत्स्य संघ के गठन से लेकर अंतिम पुनर्गठन तक इसमें कुल कितना समय लगा?

(A) 7 वर्ष, 7 माह और 14 दिन
(B) 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन
(C) 8 वर्ष, 11 माह और 18 दिन
(D) 9 वर्ष, 2 माह और 14 दिन

52. राजस्थान की निम्नलिखित रियासतों में से कौन-सी एकमात्र ऐसी रियासत थी जहाँ एकीकरण के समय मुस्लिम शासक वंश था?

(A) झालावाड़
(B) किशनगढ़
(C) टोंक
(D) शाहपुरा

53. राजस्थान में एकीकरण के बाद की चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. प्रमुख चुनौतियों में से एक विभिन्न रियासतों की विविध प्रशासनिक प्रणालियों का एकीकरण था।

II. जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन राजपूत अभिजात वर्ग के किसी भी विरोध के बिना आसानी से पूरा हो गया था।

III. विभिन्न रियासती सेनाओं को भारत के एकीकृत पुलिस और सैन्य ढांचे में विलय करने के लिए जटिल वार्ताओं की आवश्यकता थी।

IV. एक एकीकृत कानूनी प्रणाली की स्थापना को बी.आर. पटेल समिति द्वारा सुगम बनाया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

54. 1838 में अंग्रेजों द्वारा निर्मित राजपूताना की सबसे नवीन (नवीनतम) रियासत, जो बाद में राजस्थान संघ में विलय हुई, वह थी:

(A) प्रतापगढ़
(B) शाहपुरा
(C) टोंक
(D) झालावाड़

55. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

कथन (A) : भरतपुर और धौलपुर के शासकों ने प्रारंभ में राजस्थान संघ में शामिल होने में हिचकिचाहट दिखाई थी।

कारण (R) : भौगोलिक और भाषाई रूप से ब्रज क्षेत्र के निकट होने के कारण, इन राज्यों में उत्तर प्रदेश के साथ विलय की तीव्र आंतरिक भावना थी।

(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

56. डूंगरपुर के किस शासक ने डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ को मिलाकर एक स्वतंत्र 'वागड़ संघ' बनाने का प्रयास किया था?

(A) महारावल चंद्रवीर सिंह
(B) महारावल रघुनाथ सिंह
(C) महारावल लक्ष्मण सिंह
(D) महारावल उम्मेद सिंह

57. राजस्थान सेवा संघ के निम्नलिखित नेताओं में से किसने जन चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने अंततः एकीकरण प्रक्रिया में सहयोग किया?

(A) हीरालाल शास्त्री

Downloaded from www.pdf.tube

(B) टीकाराम पालीवाल
(C) जुगल किशोर चतुर्वेदी
(D) विजय सिंह पथिक

58. स्वतंत्रता से पूर्व 'लावा' ठिकाना भौगोलिक रूप से किस प्रमुख रियासत के भीतर स्थित था और व्यापक एकीकरण से पहले अंततः उसी में विलय हो गया था?
(A) जयपुर
(B) मेवाड़
(C) मारवाड़
(D) बीकानेर

59. शाहपुरा रियासत, जो राजपूताना में उत्तरदायी शासन स्थापित करने वाली पहली रियासत थी, का विलय किस चरण के दौरान हुआ था?
(A) प्रथम चरण
(B) द्वितीय चरण
(C) तृतीय चरण
(D) चतुर्थ चरण

60. मत्स्य संघ के गठन के समय अलवर के शासक कौन थे, जिन्हें महात्मा गांधी की हत्या के संदेह के कारण कुछ समय के लिए दिल्ली में नजरबंद किया गया था?
(A) महाराजा जय सिंह
(B) महाराजा तेज सिंह
(C) महाराजा विनय सिंह
(D) महाराजा मंगल सिंह

61. राजस्थान के एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने राजपूताना की रियासतों को मिलाकर तीसरी शक्ति बनाने के भोपाल के नवाब के प्रयासों को निष्फल कर दिया।
II. उन्होंने जयपुर में वृहत् राजस्थान संघ का व्यक्तिगत रूप से उद्घाटन किया।
III. उन्होंने विलय करने वाले शासकों के लिए प्रिवी पर्स व्यवस्था का कड़ा विरोध किया।
IV. उन्होंने अनिच्छुक शासकों को सहमत करने के लिए कूटनीति और जन आंदोलन की चेतावनी दोनों का प्रयोग किया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

62. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य एकीकरण से पूर्व स्वतंत्र इकाई बने रहने के लिए भारत सरकार द्वारा निर्धारित जनसंख्या और राजस्व के मानदंडों को पूरा नहीं करता था?
(A) जयपुर
(B) बीकानेर
(C) कोटा
(D) मेवाड़

63. किस प्रमुख राष्ट्रीय नेता ने वृहत् राजस्थान संघ का उद्घाटन करते हुए राजपूताना में सामंती राजशाही के ऐतिहासिक अंत को रेखांकित किया था?
(A) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(B) जवाहरलाल नेहरु
(C) सी. राजगोपालाचारी
(D) सरदार वल्लभभाई पटेल

64. एकीकृत राजस्थान के प्रारंभिक राजनीतिक नेताओं के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) हीरालाल शास्त्री ने राजस्थान के पहले मनोनीत मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया।
(B) टीकाराम पालीवाल राजस्थान के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री थे।
(C) सी.एस. वेंकटाचारी को संक्रमण काल के दौरान कभी भी मुख्यमंत्री नियुक्त नहीं किया गया था।
(D) जयनारायण व्यास एकमात्र ऐसे नेता हैं जिन्होंने राजस्थान के मनोनीत और निर्वाचित दोनों मुख्यमंत्रियों के रूप में कार्य किया है।

65. राजस्थान के भूतपूर्व शासकों को उनकी रियासतों के विलय के बदले दिया जाने वाला 'प्रिवी पर्स' औपचारिक रूप से किस वर्ष समाप्त कर दिया गया था?
(A) 1956
(B) 1969
(C) 1971
(D) 1976

66. 25 मार्च 1948 को गठित राजस्थान संघ का उप-राजप्रमुख किसे नियुक्त किया गया था?
(A) कोटा के महाराव भीम सिंह
(B) डूंगरपुर के लक्ष्मण सिंह
(C) शाहपुरा के सुदर्शन देव
(D) बूंदी के बहादुर सिंह

NODIA

67. प्रसिद्ध पुस्तक "द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स" किसके द्वारा लिखी गई थी?
(A) वी.पी. मेनन
(B) सरदार वल्लभभाई पटेल
(C) के.एम. मुंशी
(D) लॉर्ड माउंटबेटन

68. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (एकत्रीकरण के बाद के विभाग)
P. उच्च न्यायालय
Q. शिक्षा
R. खनिज एवं सीमा शुल्क
S. कृषि
सूची II : (आवंटित शहर)

1. भरतपुर
2. उदयपुर
3. बीकानेर
4. जोधपुर

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

69. 1956 में माउंट आबू को राजस्थान में स्थानांतरित किए जाने से पूर्व, राजस्थान के किस प्रमुख राजनीतिक संगठन ने इसे बंबई राज्य में मिलाए जाने के विरोध में प्रस्ताव पारित किए थे?
(A) राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य प्रजा परिषद
(B) राजस्थान सेवा संघ
(C) राजपूताना मध्य भारत सभा
(D) मारवाड़ लोक परिषद

70. 7वें संविधान संशोधन से पूर्व राजस्थान जैसे 'भाग B' राज्य के संवैधानिक प्रमुख के लिए किस पदनाम का प्रयोग किया जाता था?
(A) राज्यपाल
(B) मुख्य आयुक्त
(C) उपराज्यपाल
(D) राजप्रमुख

71. बीकानेर के किस शासक ने भारतीय संघ में राजपूताना की रियासतों के विलय में सर्वप्रथम और सहयोगात्मक भूमिका निभाई?
(A) महाराजा गंगा सिंह
(B) महाराजा सादुल सिंह
(C) महाराजा करणी सिंह
(D) महाराजा डूंगर सिंह

72. जोधपुर और जैसलमेर के शासकों द्वारा पाकिस्तान में शामिल होने पर विचार करने का प्राथमिक कारण क्या था?
(A) अपनी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना
(B) पाकिस्तान के साथ धार्मिक जुड़ाव होना
(C) कराची बंदरगाह तक पहुँच और स्वायत्तता के संबंध में जिन्ना द्वारा दिए गए आकर्षक प्रस्ताव
(D) ब्रिटिश प्रशासन द्वारा जारी प्रत्यक्ष आदेश

73. मत्स्य संघ में शामिल किन दो रियासतों में मुख्य रूप से जाट राजवंश का शासन था?
(A) भरतपुर और करौली
(B) अलवर और धौलपुर
(C) करौली और अलवर
(D) धौलपुर और भरतपुर

74. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प मेवाड़ के एकीकरण से संबंधित घटनाओं के क्रम को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) मेवाड़ ने प्रारंभिक संघ से इनकार किया -> विशेष शर्तों पर बातचीत की -> तीसरे चरण में शामिल हुआ -> भूपाल सिंह राजप्रमुख नियुक्त हुए
(B) मेवाड़ शुरू में मत्स्य संघ में शामिल हुआ -> राजधानी के दर्जे की मांग की -> राजस्थान संघ में स्थानांतरित हुआ -> भूपाल सिंह को महाराजप्रमुख बनाया गया
(C) मेवाड़ ने वृहत् राजस्थान की अवधारणा शुरू की -> चौथे चरण में शामिल हुआ -> भूपाल सिंह को उप-राजप्रमुख बनाया गया
(D) मेवाड़ का सीधे भारतीय संघ में विलय हुआ -> 1956 में राजस्थान को स्थानांतरित किया गया -> महाराणा भूपाल सिंह सेवानिवृत्त हुए

75. राजस्थान विधानसभा के लिए प्रथम आम चुनाव किस वर्ष आयोजित किए गए थे?
(A) 1950
(B) 1951
(C) 1952
(D) 1956

76. राजस्थान के एकीकरण के पश्चात्, क्षेत्रीय असंतुलन के मुद्दे को मुख्य रूप से किस प्रकार संबोधित किया गया था?
(A) सभी रियासती क्षेत्रों में छोटे प्रशासनिक जिलों का निर्माण करके
(B) प्रमुख शहरों में विभिन्न राज्यस्तरीय सरकारी विभागों का वितरण करके
(C) पूर्व रियासती मुख्यालयों में ग्रीष्मकालीन राजधानियों की स्थापना करके
(D) सभी पूर्व रियासतों की सेनाओं को बनाए रखकर

77. एकीकरण के समय निम्नलिखित में से किस रियासत का भौगोलिक क्षेत्रफल और जनसंख्या सबसे कम थी?
(A) शाहपुरा
(B) प्रतापगढ़
(C) कुशलगढ़
(D) टोंक

78. 1956 में राजस्थान में विलय होने तक कौन-सी प्रशासनिक इकाई मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व में एक पृथक राज्य के रूप में कार्य कर रही थी?
(A) मत्स्य संघ
(B) आबू-दिलवाड़ा क्षेत्र
(C) अजमेर-मेरवाड़ा
(D) सुनेल टप्पा क्षेत्र

79. संविधान सभा में भारत के संविधान पर हस्ताक्षर करने वाले राजस्थान के प्रतिनिधियों की कुल संख्या कितनी थी?
(A) 9
(B) 11
(C) 12
(D) 15

80. उस क्षेत्र की पहचान कीजिए जो राजस्थान के एकीकरण में शामिल तीन ठिकानों में से एक नहीं था:

Click Here to Buy book on Flipkart

(A) नीमराना
(B) लावा
(C) डांग्स
(D) कुशलगढ़

81. एकीकरण में जनमत की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य प्रजा परिषद ने रियासतों के एकीकरण के लिए अभियान चलाया।
II. शासकों पर प्रायः केंद्रीय रियासती विभाग की तुलना में स्थानीय प्रजा मंडलों का अधिक दबाव होता था।
III. मत्स्य संघ का अंतिम विलय भरतपुर और धौलपुर की जनता की राय का परामर्श लिए बिना तय किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

82. 1947 में ब्रिटिश सर्वोपरि सत्ता के समाप्त होने के साथ राजपूताना में किस पद की प्रशासनिक व्यवस्था का अंत हो गया?
(A) गवर्नर-जनरल प्रत्यक्ष निगरानी व्यवस्था
(B) प्रांतीय स्वायत्तता प्रशासनिक व्यवस्था
(C) अधीनस्थ पृथक्करण संधि व्यवस्था
(D) एजेंट टू द गवर्नर-जनरल (A.G.G.) व्यवस्था

83. एकीकरण प्रक्रिया के प्रारंभ के समय राजस्थान की एकमात्र रियासत जहाँ कोई प्रजा मंडल गठित नहीं था, वह थी:
(A) झालावाड़
(B) टोंक
(C) जैसलमेर
(D) डूंगरपुर

84. 1949 में वृहत् राजस्थान के गठन के समय किस शासक को आजीवन राजप्रमुख नामित किया गया था?
(A) महाराणा भूपाल सिंह
(B) महाराजा सादुल सिंह
(C) सवाई मानसिंह द्वितीय
(D) महाराव भीम सिंह

85. उस समिति के अध्यक्ष कौन थे जिसने ढांचागत सुविधाओं के कारण राजधानी को जयपुर स्थानांतरित करने की सिफारिश की थी?
(A) बी.आर. पटेल
(B) टी.सी. मेनन
(C) के.एम. पणिक्कर
(D) एच.एन. कुंजरु

NODIA

86. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : राजस्थान में राजप्रमुख का पद 1956 में समाप्त कर दिया गया था।
कारण (R) : 1956 के 7वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा राज्यों का पुनर्गठन किया गया और राजप्रमुख के स्थान पर राज्यपाल का पद स्थापित किया गया।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

87. 1947 में भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत 'यथास्थिति समझौते' (स्टैंडस्टिल एग्रीमेंट) के तहत रियासतों से भारतीय संघ को किन तीन विषयों को सौंपने की अपेक्षा की गई थी?
(A) रक्षा, मुद्रा और अंतरराज्यीय व्यापार
(B) रक्षा, विदेशी मामले और संचार
(C) विदेशी मामले, आंतरिक कराधान और रेलवे
(D) दूरसंचार, गृह मामले और रक्षा

88. राजस्थान के एकीकरण के किस चरण में राज्य में सबसे बड़ा क्षेत्रीय और जनसांख्यिकीय विस्तार हुआ?
(A) द्वितीय चरण (राजस्थान संघ)
(B) तृतीय चरण (संयुक्त राजस्थान)
(C) चतुर्थ चरण (वृहत् राजस्थान)
(D) पाँचवाँ चरण (संयुक्त वृहत् राजस्थान)

89. भारतीय संघ में शामिल होने के लिए रियासतों के शासकों द्वारा हस्ताक्षरित औपचारिक कानूनी दस्तावेज को क्या कहा जाता था?
(A) द्विपक्षीय विलय संधि
(B) यथास्थिति समझौता
(C) राज्य विलय पत्र
(D) इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एसेशन (विलय पत्र)

90. राजस्थान के कौन-से मुख्यमंत्री जयपुर प्रजा मंडल के रचनात्मक कार्यों से जुड़े थे और उन्होंने वनस्थली विद्यापीठ की स्थापना की थी?
(A) हीरालाल शास्त्री
(B) जयनारायण व्यास
(C) टीकाराम पालीवाल
(D) माणिक्य लाल वर्मा

91. राजस्थान के एकीकरण के क्रमिक चरणों (चरण 1 से 4) के दौरान बनीं निम्नलिखित राजधानियों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. कोटा
II. अलवर
III. जयपुर

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

IV. उदयपुर
(A) II, I, IV, III
(B) I, II, III, IV
(C) II, IV, I, III
(D) IV, I, II, III

92. राजस्थान के एकीकरण ने इसे सामंती व्यवस्था से लोकतांत्रिक ढाँचे में परिवर्तित कर दिया। इस संदर्भ में, जब प्रथम राजस्थान विधानसभा का गठन हुआ, तब इसका प्रमुख कार्य क्या था?
(A) पूर्व रियासती शासकों के साथ नई संधियों पर बातचीत करना
(B) सामंती भूमि व्यवस्था को समाप्त करने वाले भूमि सुधार कानून पारित करना
(C) राजस्थान के लिए एक पृथक राज्य संविधान तैयार करना
(D) पूर्व शासकों के प्रिवी पर्स का प्रबंधन करना

93. वह तिथि क्या थी जिस दिन भारत का संविधान लागू हुआ और राजस्थान को 'भाग B' राज्य के रूप में मान्यता मिली?
(A) 30 मार्च 1949
(B) 15 मई 1949
(C) 26 जनवरी 1950
(D) 1 नवंबर 1956

94. एकीकरण के समय किशनगढ़ के शासक निम्नलिखित में से कौन थे, जिन्होंने सहर्ष अपना प्रशासन संघ को सौंप दिया था?
(A) महाराजा मदन सिंह
(B) महाराजा यज्ञ नारायण सिंह
(C) महाराजा सुमेर सिंह
(D) महाराजा सुमेर सिंह द्वितीय

95. राजस्थान के एकीकरण में वी.पी. मेनन की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वह लॉर्ड माउंटबेटन के मुख्य संवैधानिक सलाहकार थे।
II. उन्होंने राजपूताना के शासकों के साथ प्रिवी पर्स और विशेषाधिकारों की शर्तों पर बातचीत की।
III. उन्होंने विलय पत्र (इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एसेशन) का मसौदा तैयार किया।
IV. वह एकीकृत राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II और III
(C) केवल I, III और IV
(D) केवल II, III और IV

96. किस राज्य के शासक को दीवान के.एम. पणिक्कर के हस्तक्षेप के बाद विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी किया गया था?
(A) जयपुर
(B) उदयपुर
(C) बीकानेर
(D) जैसलमेर

97. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (इकाई)
P. मत्स्य संघ
Q. अजमेर-मेरवाड़ा
R. आबू-दिलवाड़ा
S. सिरोंज
सूची II : (जिसमें विलय हुआ)
1. मध्य प्रदेश
2. वृहत् राजस्थान
3. राजस्थान राज्य (1956)
4. राजस्थान राज्य (1956, बंबई राज्य से)
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

NODIA

98. राजस्थान की राजनीतिक पहचान पर एकीकरण के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी भारत में एक एकीकृत भाषाई और सांस्कृतिक क्षेत्र का निर्माण हुआ।
II. एकीकरण की प्रक्रिया ने राज्य में जाति आधारित सभी राजनीतिक निष्ठाओं को तुरंत समाप्त कर दिया।
III. उसने विखंडित सामंती अर्थव्यवस्थाओं को एक एकीकृत राज्य अर्थव्यवस्था में बदल दिया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

99. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : 1955 में राज्य पुनर्गठन आयोग ने अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय करने की सिफारिश की थी।
कारण (R) : अजमेर-मेरवाड़ा राजपूताना से भाषाई और सांस्कृतिक रूप से भिन्न क्षेत्र था और फ्रांसीसियों द्वारा प्रशासित था।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

100. 1956 में राजस्थान के अंतिम भौगोलिक स्वरूप के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सुनेल टप्पा को झालावाड़ जिले में जोड़ा गया था।
II. सिरोंज को मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले को दिया गया था।

III. राजधानी जयपुर ही रही।
IV. राजप्रमुख के पद को औपचारिक रुप से बरकरार रखा गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, II और III

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) 19 रियासतें, 3 ठिकाने और 1 ब्रिटिश-शासित क्षेत्र
भारत की स्वतंत्रता से पूर्व राजपूताना क्षेत्र में प्रशासनिक रूप से विभिन्न इकाइयां विद्यमान थीं। इस क्षेत्र के अंतर्गत कुल 19 देशी रियासतें, 3 ठिकाने तथा 1 ब्रिटिश-शासित केंद्र शासित प्रदेश शामिल था। तीन ठिकानों के नाम कुशलगढ़, लावा और नीमराना थे, जबकि अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश प्रशासन के नियंत्रण में संचालित होता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन सभी पृथक प्रशासनिक इकाइयों का सात चरणों में एकीकरण करके वर्तमान राजस्थान राज्य का निर्माण किया गया।

2. (D) रियासती विभाग
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित होने के उपरांत देश की विभिन्न देशी रियासतों को भारतीय संघ में शामिल करने तथा एकीकरण प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु भारत सरकार द्वारा 5 जुलाई 1947 को रियासती विभाग की स्थापना की गई थी। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य रियासतों के प्रशासनिक एवं राजनीतिक विलय की प्रक्रिया का समन्वय करना था। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को इस विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था, जिन्होंने अपनी कूटनीतिक कुशलता से भारत के राजनीतिक एकीकरण का ऐतिहासिक कार्य संपन्न किया।

3. (A) वी.पी. मेनन
देशी रियासतों के भारत संघ में विलय की कार्ययोजना तैयार करने के लिए 5 जुलाई 1947 को स्थापित रियासती विभाग का दायित्व सरदार वल्लभभाई पटेल को सौंपा गया था। इस विभाग के प्रशासनिक सचिव के रूप में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी वी.पी. मेनन को नियुक्त किया गया था। सरदार पटेल और वी.पी. मेनन की जोड़ी ने अत्यधिक सूझबूझ तथा कूटनीतिक दक्षता का परिचय देते हुए भारतीय रियासतों के विलय पत्र और यथास्थिति समझौते के प्रारूप तैयार किए तथा एकीकरण को सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

4. (C) न्यूनतम 10 लाख जनसंख्या तथा 1 करोड़ रुपये की वार्षिक आय
ब्रिटिश सर्वोपरि सत्ता के अंत के पश्चात् रियासती विभाग ने यह नीति निर्धारित की कि केवल वे ही रियासतें अपना पृथक और स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने की पात्र होंगी जिनकी न्यूनतम जनसंख्या 10 लाख हो तथा जिनकी वार्षिक आय कम से कम 1 करोड़ रुपये हो। इस मापदंड को पूरा न करने वाली रियासतों के लिए किसी समीपवर्ती बड़े राज्य या संघ में विलय होना अनिवार्य कर दिया गया था। राजपूताना क्षेत्र में केवल जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर रियासतें ही इस मानक को पूरा करने में सक्षम थीं।

5. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न चरणों का गठन निर्धारित तिथियों के अनुसार हुआ था। प्रथम चरण में मत्स्य संघ का गठन 18 मार्च 1948 को किया गया था। द्वितीय चरण के अंतर्गत पूर्व राजस्थान अथवा राजस्थान संघ की स्थापना 25 मार्च 1948 को हुई थी। तृतीय चरण में उदयपुर रियासत के शामिल होने से संयुक्त राजस्थान का निर्माण 18 अप्रैल 1948 को हुआ, जबकि चतुर्थ चरण में चार बड़ी रियासतों के विलय के साथ वृहत् राजस्थान का गठन 30 मार्च 1949 को संपन्न हुआ था।

6. (C) केवल I और III
राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण में अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली नामक चार देशी रियासतों को मिलाकर मत्स्य संघ का निर्माण किया गया था। प्रसिद्ध साहित्यकार और राजनीतिज्ञ के.एम. मुंशी की सिफारिश के आधार पर इस क्षेत्र का नाम प्राचीन पौराणिक नाम 'मत्स्य संघ' रखा गया था। प्रशासनिक और सुरक्षात्मक कारणों से इस नवगठित मत्स्य संघ की राजधानी अलवर शहर में स्थापित की गई थी, न कि भरतपुर में। धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह को इस संघ का राजप्रमुख नियुक्त किया गया था।

7. (B) धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह
18 मार्च 1948 को गठित मत्स्य संघ राजस्थान के एकीकरण का प्रथम चरण था। इस संघ में अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा करौली रियासतों का विलय किया गया था। सर्वसम्मति और वरिष्ठता के आधार पर धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह को मत्स्य संघ का राजप्रमुख नियुक्त किया गया था। इसके अतिरिक्त करौली के महाराजा गणेश पाल को उप-राजप्रमुख बनाया गया था। मत्स्य संघ का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल द्वारा किया गया था तथा इसकी राजधानी अलवर को बनाया गया था।

8. (C) शोभाराम कुमावत
मत्स्य संघ के गठन के समय अलवर के प्रजामण्डल नेता शोभाराम कुमावत को इस संघ का पहला प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था। उनके मंत्रिमंडल में चारों रियासतों के प्रतिनिधियों को स्थान दिया गया था, जिनमें जुगल किशोर चतुर्वेदी, गोपीलाल यादव और मास्टर भोलानाथ शामिल थे। शोभाराम कुमावत ने मत्स्य संघ के शासन और प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में 15 मई 1949 को मत्स्य संघ का वृहत् राजस्थान में विलय कर दिया गया था।

NODIA

55. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
भरतपुर और धौलपुर रियासतों के सांस्कृतिक तथा भाषाई संबंध उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र से बहुत गहरे थे। इस भौगोलिक निकटता के कारण इन रियासतों में प्रारंभ में राजस्थान में शामिल होने के प्रति हिचकिचाहट थी और वे उत्तर प्रदेश में विलय चाहते थे। अतः कथन और कारण दोनों सही हैं तथा सही व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

56. (C) महारावल लक्ष्मण सिंह
स्वतंत्रता के बाद डूंगरपुर के शासक महारावल लक्ष्मण सिंह राजस्थान संघ में विलय के इच्छुक नहीं थे। वे वागड़ क्षेत्र को एकीकृत करके एक पृथक स्वतंत्र इकाई स्थापित करना चाहते थे। इस उद्देश्य से उन्होंने डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ को मिलाकर वागड़ संघ बनाने का प्रयास किया था, जिसे रियासती विभाग ने अस्वीकार कर पूरी तरह खारिज कर दिया।

57. (D) विजय सिंह पथिक
राजस्थान सेवा संघ के संस्थापक विजय सिंह पथिक ने राजपूताना की आम जनता में राष्ट्रीय चेतना और सामंती शोषण के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाया। उनके समाचार पत्रों और संगठनात्मक प्रयासों ने जनमानस को एकजुट किया, जिसने आगे चलकर रियासतों के एकीकरण तथा लोकतान्त्रिक भारत के निर्माण में अत्यधिक निर्णायक भूमिका का निर्वहन सफलता पूर्वक किया था।

58. (A) जयपुर
लावा राजपूताना के तीन प्रमुख ठिकानों में से एक था। भौगोलिक रुप से लावा का क्षेत्र जयपुर रियासत के आंतरिक भाग में स्थित था। लावा के ठाकुर और टोंक के नवाब के मध्य विवाद था। जुलाई 1948 में लावा ठिकाने को टोंक से पृथक करके जयपुर रियासत में औपचारिक रुप से शामिल कर पूरी तरह दिया गया था।

59. (B) द्वितीय चरण
शाहपुरा रियासत राजपूताना की सबसे छोटी रियासत थी। शाहपुरा के राजा सुदर्शन देव ने 14 अगस्त 1947 को ही अपनी रियासत में पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित कर दिया था, ऐसा करने वाली यह प्रथम रियासत थी। 25 मार्च 1948 को एकीकरण के द्वितीय चरण में शाहपुरा का विलय राजस्थान संघ में पूर्णतः कर दिया गया था।

60. (B) महाराजा तेज सिंह
18 मार्च 1948 को जब प्रथम चरण में मत्स्य संघ का गठन हुआ, उस समय अलवर के महाराजा तेज सिंह शासक थे। महात्मा गांधी की हत्या के उपरांत महाराजा तेज सिंह और उनके दीवान पर संदेह जताया गया था। इसके चलते भारत सरकार ने महाराजा तेज सिंह को जांच हेतु दिल्ली में कुछ समय नजरबंद करके रखा था।

61. (B) केवल I, II और IV
सरदार वल्लभभाई पटेल ने राजपूताना के एकीकरण में केंद्रीय भूमिका निभाई। उन्होंने भोपाल के नवाब के प्रयासों को विफल किया, 30 मार्च 1949 को वृहत् राजस्थान का उद्घाटन किया, तथा कूटनीति का प्रयोग किया। किंतु पटेल ने प्रिवी पर्स का विरोध नहीं किया था, बल्कि रियासतों के विलय हेतु प्रिवी पर्स की व्यवस्था स्वयं उन्होंने ही निर्मित की थी।

62. (C) कोटा
स्वतंत्रता के समय रियासती विभाग द्वारा निर्धारित मापदंडों के अनुसार, किसी भी रियासत को स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के लिए 10 लाख की जनसंख्या तथा 1 करोड़ रुपये की आय आवश्यक थी। राजपूताना में केवल जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और मेवाड़ ही इन शर्तों को पूरा करती थीं। कोटा रियासत इन मानकों को पूरा करने में असमर्थ थी।

63. (D) सरदार वल्लभभाई पटेल
भारत के उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने 30 मार्च 1949 को जयपुर में वृहत् राजस्थान का उद्घाटन किया था। इस अवसर पर सरदार पटेल ने राजपूताना में पुरानी सामंती राजशाही के अंत की घोषणा की थी तथा एक एकीकृत, लोकतांत्रिक एवं शक्तिशाली राजस्थान के निर्माण का ऐतिहासिक शंखनाद सफलता पूर्वक किया था।

64. (C) सी.एस. वेंकटाचारी को संक्रमण काल के दौरान कभी भी मुख्यमंत्री नियुक्त नहीं किया गया था।
राजस्थान के संक्रमण काल के दौरान वरिष्ठ अधिकारी सी.एस. वेंकटाचारी को 6 जनवरी 1951 से 25 अप्रैल 1951 तक राजस्थान का मनोनीत मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया था। हीरालाल शास्त्री के इस्तीफे के बाद यह नियुक्ति हुई थी। अतः यह कहना असत्य है कि वे मुख्यमंत्री नहीं बने। टीकाराम पालीवाल प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री के रूप में बने थे।

65. (C) 1971
भारतीय संघ में रियासतों के विलय के समय पूर्व शासकों को निश्चित वार्षिक राशि दी जाती थी जिसे प्रिवी पर्स कहा जाता था। 1971 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के समय 26वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1971 पारित किया गया। इस संशोधन के माध्यम से भूतपूर्व राजाओं के प्रिवी पर्स को पूर्णतः समाप्त कर हमेशा के लिए दिया गया था।

66. (D) बूंदी के बहादुर सिंह
25 मार्च 1948 को निर्मित राजस्थान संघ में कोटा को राजधानी बनाया गया था तथा कोटा के महाराव भीम सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया था। इस संघ का वरिष्ठ उप-राजप्रमुख बूंदी के महाराजा बहादुर सिंह को बनाया गया था। डूंगरपुर के महारावल को कनिष्ठ उप-राजप्रमुख बनाया गया था। एन.वी. गाडगिल ने इसका उद्घाटन सफलता पूर्वक किया था।

67. (A) वी.पी. मेनन
प्रसिद्ध पुस्तक द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स के लेखक वरिष्ठ अधिकारी वी.पी. मेनन हैं। वी.पी. मेनन

Click Here to Buy book on Amazon

गोकुल लाल असावा को उप-प्रधानमंत्री बनाया गया। माणिक्य लाल वर्मा ने राजस्थान में लोकतान्त्रिक उत्तरदायी शासन की स्थापना और जनता के अधिकारों की रक्षा हेतु ऐतिहासिक योगदान दिया था।

20. (C) मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह
भारतीय स्वतंत्रता के समय जब देशी रियासतों के सामने विलय या स्वतंत्र रहने का विकल्प आया, तब मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह ने अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश की। उन्होंने जून 1946 में उदयपुर में राजपूताना, गुजरात और मालवा के राजाओं का एक सम्मेलन बुलाया था। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इन सभी क्षेत्रों को मिलाकर 'राजपूताना यूनियन' नामक एक शक्तिशाली महासंघ गठित करना था, यद्यपि यह योजना सफल नहीं हो सकी।

21. (A) महाराजा हनवंत सिंह
स्वतंत्रता के समय जोधपुर (मारवाड़) के युवा महाराजा हनवंत सिंह ने भारतीय संघ में शामिल होने के बजाय पाकिस्तान में विलय की संभावनाओं पर विचार किया था। उन्होंने मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना के साथ दिल्ली में गोपनीय बैठकें की थीं। जिन्ना ने उन्हें कराची बंदरगाह का उपयोग, रेल संपर्क तथा पूर्ण स्वायत्तता जैसे कई लुभावने प्रस्ताव दिए थे। किंतु सरदार पटेल और वी.पी. मेनन के कठोर हस्तक्षेप के बाद अंततः वे भारतीय संघ पर हस्ताक्षर करने को विवश हुए।

22. (A) कुशलगढ़, उदयपुर, जोधपुर, अजमेर-मेरवाड़ा
राजस्थान के एकीकृत क्षेत्रों के कालानुक्रम पर विचार करें तो कुशलगढ़ ठिकाने का विलय द्वितीय चरण (25 मार्च 1948) में हुआ था। इसके उपरांत उदयपुर (मेवाड़) का विलय तृतीय चरण (18 अप्रैल 1948) में संपन्न हुआ। इसके पश्चात् चतुर्थ चरण (30 मार्च 1949) के दौरान जोधपुर रियासत का विलय वृहत् राजस्थान में किया गया। अंततः सातवें चरण (1 नवंबर 1956) में अजमेर-मेरवाड़ा का विलय राजस्थान में हुआ। अतः यह अनुक्रम पूर्णतः सही है।

23. (B) भरतपुर
30 मार्च 1949 को गठित वृहत् राजस्थान में तत्कालीन संयुक्त राजस्थान के साथ चार बड़ी देशी रियासतों—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर का विलय किया गया था। भरतपुर रियासत इस चतुर्थ चरण का हिस्सा नहीं थी, क्योंकि इसका विलय पहले ही 18 मार्च 1948 को प्रथम चरण के अंतर्गत मत्स्य संघ में किया जा चुका था। बाद में 15 मई 1949 को मत्स्य संघ के साथ भरतपुर का वृहत् राजस्थान में विलय हुआ।

24. (C) बी.आर. पटेल समिति
वृहत् राजस्थान के गठन के समय जयपुर और जोधपुर रियासतों के मध्य राजधानी के चयन को लेकर गहरा मतभेद उत्पन्न हो गया था। इस विवाद का शांतिपूर्ण समाधान करने हेतु भारत सरकार द्वारा बी.आर. पटेल की अध्यक्षता में एक तीन-सदस्यीय समिति का गठन किया गया था। इस समिति के अन्य सदस्यों में एच.के. कृपलानी और वी. विश्वनाथन शामिल थे। इस समिति ने प्रशासनिक सुविधाओं का आकलन करके जयपुर को राजधानी बनाने की सिफारिश की।

25. (D) जयपुर
वृहत् राजस्थान के निर्माण के समय राजधानी के स्थान को लेकर जयपुर और जोधपुर के बीच प्रतिस्पर्द्धा थी। बी.आर. पटेल समिति ने विस्तृत प्रशासनिक समीक्षा करने के बाद जयपुर शहर को वृहत् राजस्थान की स्थाई राजधानी बनाने का सुझाव दिया। जयपुर में पर्याप्त भवन निर्माण, पेयजल और यातायात की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध थीं। इस सिफारिश के आधार पर 30 मार्च 1949 को जयपुर को आधिकारिक राजधानी घोषित किया गया।

26. (A) हीरालाल शास्त्री
30 मार्च 1949 को जब वृहत् राजस्थान संघ की स्थापना हुई, तब प्रसिद्ध जननेता पंडित हीरालाल शास्त्री को इस नवगठित राज्य का पहला प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। बाद में 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने पर 'प्रधानमंत्री' पद का नाम बदलकर 'मुख्यमंत्री' कर दिया गया। इस प्रकार हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री बने। उन्होंने शुरुआती प्रशासनिक और संवैधानिक ढाँचे को सुदृढ़ किया।

27. (B) मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह
चतुर्थ चरण में 30 मार्च 1949 को जब वृहत् राजस्थान का गठन हुआ, तब जयपुर के सवाई मानसिंह द्वितीय को राजप्रमुख बनाया गया। मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह पहले से ही तीसरे चरण में राजप्रमुख थे। उनकी वरिष्ठता और वंशगत प्रतिष्ठा का सम्मान बनाए रखने के लिए विशेष रूप से 'महाराजप्रमुख' का एक नया और सर्वोच्च पद सृजित किया गया। महाराणा भूपाल सिंह जीवनभर के लिए इस पद पर आसीन हुए।

28. (C) वृहत् राजस्थान
30 मार्च 1949 को राजस्थान के एकीकरण का चौथा चरण संपन्न हुआ था, जिसके तहत चार बड़ी रियासतों के विलय द्वारा वृहत् राजस्थान का निर्माण किया गया था। इस भौगोलिक एकीकरण से राजस्थान का अधिकांश क्षेत्र एकीकृत हो गया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 30 मार्च को सम्पूर्ण राज्य में राजस्थान दिवस का आधिकारिक आयोजन धूमधाम से किया जाता है।

29. (C) केवल IV
बी.आर. पटेल समिति की सिफारिशों के अनुसार नवगठित वृहत् राजस्थान में प्रशासनिक मुख्यालयों का आवंटन विभिन्न शहरों को किया गया था। उच्च न्यायालय जोधपुर को, शिक्षा विभाग बीकानेर को, तथा कृषि विभाग भरतपुर को दिया गया। खनिज विभाग उदयपुर को सौंपा गया था, जबकि कोटा को वन विभाग दिया गया था। अतः चतुर्थ कथन असत्य माना जाता है और यह पूर्णतः गलत सिद्ध होता है।

30. (C) बीकानेर
भारत की स्वतंत्रता के समय देशी रियासतों के भारत संघ में विलय की प्रक्रिया शुरु हुई। राजपूताना की समस्त रियासतों में

NODIA

9. (A) प्रथम चरण
नीमराना एक छोटा ठिकाना था जो स्वतंत्रता से पूर्व भौगोलिक और प्रशासनिक रूप से अलवर रियासत के अधीन आता था। 18 मार्च 1948 को राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण के दौरान जब अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली रियासतों को मिलाकर मत्स्य संघ का गठन किया जा रहा था, तब नीमराना ठिकाने को भी इसी संघ में शामिल कर लिया गया था। इस प्रकार नीमराना ठिकाने का विलय प्रथम चरण में ही संपन्न हो गया था।

10. (A) बांसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह
भारतीय संघ में रियासतों के विलय की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न शासकों की मनोस्थिति भिन्न थी। बांसवाड़ा रियासत के शासक महारावल चंद्रवीर सिंह अपनी रियासत की संप्रभुता समाप्त होने से अत्यंत दुखी थे। जब वे राजस्थान संघ में विलय हेतु हस्ताक्षरित होने वाले विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर रहे थे, तब उन्होंने भावुक होकर यह ऐतिहासिक वाक्य कहा था कि मैं अपने डेथ वारंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ। उनका यह कथन रियासती व्यवस्था के अंत की वेदना को व्यक्त करता है।

11. (B) केवल I, II और III
राजस्थान के एकीकरण के द्वितीय चरण में 25 मार्च 1948 को नौ रियासतों और एक ठिकाने को मिलाकर राजस्थान संघ का निर्माण किया गया था। इस संघ की राजधानी कोटा को बनाया गया था और कोटा के महाराव भीम सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया था। शाहपुरा के स्वतंत्रता सेनानी गोकुल लाल असावा को इसका प्रधानमंत्री बनाया गया था। उदयपुर रियासत इस द्वितीय चरण का भाग नहीं थी, बल्कि इसका विलय तृतीय चरण में हुआ था।

12. (B) एन.वी. गाडगिल
25 मार्च 1948 को गठित राजस्थान संघ (पूर्व राजस्थान) के औपचारिक उद्घाटन हेतु कोटा में समारोह आयोजित किया गया था। भारत सरकार के केंद्रीय कार्य, खान एवं ऊर्जा मंत्री एन.वी. गाडगिल ने इस चरण का आधिकारिक उद्घाटन किया था। गाडगिल ने इससे पूर्व प्रथम चरण यानी मत्स्य संघ का उद्घाटन भी किया था। इस संघ में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की नौ रियासतों और कुशलगढ़ ठिकाने का एकीकरण संपन्न किया गया था।

13. (B) राजस्थान संघ
राजस्थान के एकीकरण के द्वितीय चरण के दौरान, जिसे पूर्व राजस्थान अथवा राजस्थान संघ कहा जाता है, बांसवाड़ा रियासत के साथ उससे सम्बद्ध कुशलगढ़ ठिकाने का विलय किया गया था। यह द्वितीय चरण 25 मार्च 1948 को अस्तित्व में आया था, जिसमें नौ प्रमुख रियासतों के साथ ही कुशलगढ़ ठिकाने को भी सम्मिलित करके एक सुदृढ़ एकीकृत प्रशासनिक ढांचा निर्मित किया गया था।

14. (C) सिरोही
25 मार्च 1948 को निर्मित राजस्थान संघ में दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की नौ रियासतें शामिल थीं, जिनमें कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, टोंक, किशनगढ़ और शाहपुरा शामिल थीं। सिरोही रियासत इस संघ का हिस्सा नहीं थी। सिरोही का विलय काफी जटिल प्रक्रिया के तहत छठे और सातवें चरण में संपन्न हुआ था। सिरोही का मुख्य भाग 1950 में तथा आबू-दिलवाड़ा क्षेत्र 1956 में राजस्थान में मिलाया गया था।

15. (D) मेवाड़
राजस्थान के एकीकरण के तीसरे चरण के तहत 18 अप्रैल 1948 को संयुक्त राजस्थान का गठन हुआ था। यह चरण पूर्व में गठित राजस्थान संघ में मेवाड़ यानी उदयपुर की ऐतिहासिक रियासत के विलय के साथ संपन्न हुआ था। मेवाड़ के विलय से इस संघ का राजनीतिक और भौगोलिक महत्व अत्यधिक बढ़ गया। इस नए संघ की राजधानी उदयपुर बनाई गई थी तथा मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह को संयुक्त राजस्थान का राजप्रमुख नियुक्त किया गया था।

16. (C) महाराणा भूपाल सिंह
18 अप्रैल 1948 को अस्तित्व में आए संयुक्त राजस्थान के राजप्रमुख के रूप में मेवाड़ के शासक महाराणा भूपाल सिंह को नियुक्त किया गया था। जब मेवाड़ रियासत का राजस्थान संघ में विलय हुआ, तब महाराणा भूपाल सिंह ने उदयपुर को राजधानी बनाने तथा स्वयं को राजप्रमुख बनाए जाने की शर्त रखी थी, जिसे स्वीकार कर लिया गया था। कोटा के महाराव भीम सिंह को इस संघ का वरिष्ठ उप-राजप्रमुख बनाया गया था।

17. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
मेवाड़ रियासत राजस्थान की सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित रियासतों में से एक थी। जब 18 अप्रैल 1948 को संयुक्त राजस्थान का गठन हुआ, तब मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह ने विलय हेतु यह विशेष शर्त रखी थी कि उदयपुर को संघ की राजधानी बनाया जाए तथा उन्हें वंशानुगत राजप्रमुख का पद दिया जाए। भारत सरकार ने इन शर्तों को स्वीकार किया, जिसके फलस्वरूप संयुक्त राजस्थान की राजधानी उदयपुर बनी। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

18. (D) जवाहरलाल नेहरू
18 अप्रैल 1948 को उदयपुर में आयोजित एक भव्य समारोह में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त राजस्थान का आधिकारिक उद्घाटन किया था। इस तीसरे चरण के दौरान पूर्व राजस्थान संघ में मेवाड़ रियासत का ऐतिहासिक विलय संपन्न हुआ था। उद्घाटन समारोह के दौरान पंडित नेहरू ने भारत की एकता और अखंडता को सुदृढ़ करने के लिए रियासतों के एकीकरण के इस महत्वपूर्ण कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

19. (C) संयुक्त राजस्थान
मेवाड़ प्रजामण्डल के प्रखर नेता माणिक्य लाल वर्मा को 18 अप्रैल 1948 को गठित संयुक्त राजस्थान का प्रथम प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था। मेवाड़ रियासत के एकीकरण के पश्चात् उनके सुयोग्य नेतृत्व में नए मंत्रिमंडल का गठन हुआ था, जिसमें

Downloaded from www.pdf.tube

42. (A) सुनेल टप्पा
1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम के लागू होने पर राजस्थान और मध्य प्रदेश के मध्य सीमाओं का पुनर्गठन हुआ। इसके तहत राजस्थान ने झालावाड़ जिले की सिरोंज तहसील मध्य प्रदेश को सौंपी, तथा इसके बदले में मध्य प्रदेश का सुनेल टप्पा क्षेत्र राजस्थान के झालावाड़ जिले में एकीकृत कर लिया गया, जो एक महत्वपूर्ण सीमा समायोजन था।

43. (C) भाग C (ग) राज्य
1950 में भारतीय संविधान के लागू होने के समय राज्यों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था। अजमेर-मेरवाड़ा एक प्रत्यक्ष केंद्र-शासित क्षेत्र था, इसलिए इसे संविधान के तहत भाग C श्रेणी के राज्य का दर्जा दिया गया था। यहाँ मुख्य आयुक्त का शासन था। 1 नवंबर 1956 को इसे राजस्थान राज्य में पूरी तरह मिला दिया गया।

44. (B) धारा सभा
स्वतंत्रता के पश्चात् अजमेर-मेरवाड़ा एक पृथक भाग C राज्य के रूप में प्रशासित हो रहा था। इस क्षेत्र के लिए एक पृथक विधानसभा का गठन किया गया था, जिसे स्थानीय रूप से 'धारा सभा' के नाम से जाना जाता था। इस विधानसभा के पास कानून बनाने का अधिकार था। हरिभाऊ उपाध्याय इसके मुख्यमंत्री थे। 1956 में इसका राजस्थान में विलय हुआ।

45. (B) 30
अजमेर-मेरवाड़ा के पृथक भाग C राज्य रहने के दौरान गठित विधानसभा यानी धारा सभा में कुल 30 निर्वाचित सदस्य थे। इस धारा सभा के मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे। 1 नवंबर 1956 को जब अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय हुआ, तब इन 30 सदस्यों को राजस्थान विधानसभा में सम्मिलित कर लिया गया था, जिससे विधानसभा का आकार बढ़ा।

46. (B) भाग B राज्य
26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के तहत एकीकृत राजस्थान को 'भाग B' श्रेणी के राज्य का संवैधानिक दर्जा दिया गया था। भाग B श्रेणी में वे राज्य शामिल थे जो पूर्व में देशी रियासतों के समूह थे। इस श्रेणी के राज्यों का प्रमुख राजप्रमुख कहलाता था। 1956 में यह व्यवस्था समाप्त कर दी गई थी तथा राजस्थान सामान्य राज्य बना।

47. (B) 7वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1956
7वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1956 के माध्यम से भारत में राज्यों के ए, बी, सी और डी श्रेणियों के वर्गीकरण को समाप्त कर दिया गया। इसके स्थान पर केवल राज्य और केंद्र शासित प्रदेश बनाए गए। इसी संशोधन द्वारा राजप्रमुख के पद को समाप्त करके राज्यपाल का पद स्थापित किया गया था, जो अत्यंत महत्वपूर्ण था।

48. (B) केवल I और III
सिरोही का एकीकरण दो चरणों में संपन्न हुआ था। गोकुलभाई भट्ट ने माउंट आबू को राजस्थान में शामिल कराने हेतु आंदोलन का नेतृत्व किया था। 1950 में सिरोही का केवल आधा भाग राजस्थान में मिलाया गया था, अतः कथन II गलत है। अंततः 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर आबू क्षेत्र राजस्थान में शामिल किया गया था।

49. (B) गुरुमुख निहाल सिंह
1 नवंबर 1956 को 7वें संविधान संशोधन द्वारा राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया और राज्यपाल का पद सृजित हुआ। इसके तहत गुरुमुख निहाल सिंह को राजस्थान का प्रथम राज्यपाल नियुक्त किया गया था। उनका कार्यकाल 1 नवंबर 1956 से 16 अप्रैल 1962 तक रहा, जो राजस्थान में सबसे लंबा कार्यकाल माना जाता है।

50. (D) लोकतांत्रिक शासन और भारत के साथ एकीकरण के लिए जनमत तैयार करके
राजपूताना की विभिन्न रियासतों में चले प्रजामण्डल आंदोलनों ने आम जनता में राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया। प्रजामंडलों ने सामंती शोषण का विरोध करते हुए रियासतों में जिम्मेदार शासन की स्थापना तथा भारत में विलय की मांग उठाई। इस जन दबाव ने रियासती शासकों को एकीकरण स्वीकार करने पर विवश कर दिया था।

51. (B) 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन
राजस्थान का एकीकरण एक जटिल और लंबी प्रक्रिया थी जो कुल सात चरणों में पूरी हुई। इसकी शुरुआत 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ के गठन से हुई थी और समापन 1 नवंबर 1956 को अंतिम पुनर्गठन के साथ हुआ। इस संपूर्ण प्रक्रिया में कुल 8 वर्ष, 7 माह और 14 दिन का ऐतिहासिक समय लगा था।

52. (C) टोंक
स्वतंत्रता और एकीकरण के समय राजपूताना क्षेत्र की 19 देशी रियासतों में से टोंक एकमात्र ऐसी रियासत थी जहाँ मुस्लिम राजवंश का शासन था। टोंक रियासत की स्थापना 1817 में अमीर खां पिंडारी द्वारा की गई थी। एकीकरण के द्वितीय चरण में टोंक का विलय राजस्थान संघ में किया गया था। यहाँ के नवाब ने सहमति से विलय स्वीकार किया।

53. (B) केवल I, III और IV
राजस्थान के एकीकरण के बाद विभिन्न प्रशासनिक और कर प्रणालियों का एकीकरण बड़ी चुनौती था। रियासती सेनाओं का समायोजन भी जटिल कार्य था। बी.आर. पटेल समिति ने प्रशासनिक संरचना में योगदान दिया। किंतु जागीरदारी प्रथा का उन्मूलन बिना विरोध के नहीं हुआ; जागीरदारों ने इसका विरोध किया था, अतः कथन II पूर्णतः असत्य सिद्ध होता है।

54. (D) झालावाड़
झालावाड़ राजपूताना की सबसे नवीन रियासत थी, जिसका निर्माण 1838 में अंग्रेजों द्वारा किया गया था। अंग्रेजों ने कोटा के विभाजन के बाद मदन सिंह के लिए इस रियासत का गठन किया था। एकीकरण के द्वितीय चरण में 25 मार्च 1948 को झालावाड़ का विलय राजस्थान संघ में सफलतापूर्वक संपन्न किया गया था।

NODIA

से बीकानेर रियासत के दूरदर्शी शासक महाराजा सादुल सिंह पहले ऐसे नरेश थे जिन्होंने 7 अगस्त 1947 को भारत संघ के विलय पत्र (इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एसेशन) पर सबसे पहले हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने अन्य रियासतों को भी इसके लिए निरन्तर प्रेरित किया था।

31. (D) धौलपुर
भारतीय संघ में शामिल होने के लिए राजपूताना की रियासतों के विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने की प्रक्रिया 1947 में शुरु हुई थी। बीकानेर के महाराजा ने सबसे पहले हस्ताक्षर किए, जबकि धौलपुर के शासक महाराजा उदयभान सिंह अंतिम शासक थे। उन्होंने 14 अगस्त 1947 को इस दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर किए, जिससे सभी रियासतों का भारतीय संघ में विलय सुनिश्चित हो सका।

32. (C) मत्स्य संघ
राजस्थान के एकीकरण का पाँचवाँ चरण 15 मई 1949 को पूरा हुआ, जिसे 'संयुक्त वृहत् राजस्थान' के नाम से जाना जाता है। इस चरण के अंतर्गत तत्कालीन वृहत् राजस्थान में मत्स्य संघ का पूर्ण रूप से विलय कर दिया गया। इस एकीकरण के बाद राजस्थान की भौगोलिक सीमाएं और अधिक विस्तृत हो गईं तथा राज्य का राजनीतिक ढांचा सुदृढ़ हुआ।

33. (B) शंकर राव देव समिति
मत्स्य संघ की रियासतों के विलय को लेकर जनमत और भाषाई समानता के मुद्दे पर विवाद था। इस समस्या के समाधान हेतु भारत सरकार द्वारा शंकर राव देव की अध्यक्षता में समिति गठित की गई थी। शंकर राव देव समिति की सिफारिशों के आधार पर ही 15 मई 1949 को मत्स्य संघ का वृहत् राजस्थान में विलय किया गया था।

34. (D) भरतपुर और धौलपुर की जनता की राजस्थान या उत्तर प्रदेश में विलय संबंधी राय का पता लगाना
मत्स्य संघ के निर्माण के बाद भरतपुर और धौलपुर रियासतों के भाषाई तथा सांस्कृतिक संबंध उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र से अत्यंत गहरे थे। इन राज्यों के कुछ वर्ग उत्तर प्रदेश में मिलना चाहते थे, जबकि अन्य राजस्थान के पक्षधर थे। इस विषय पर जनता की राय जानने के उद्देश्य से शंकर राव देव समिति का गठन किया गया था, जिसने राजस्थान में विलय के पक्ष में अपनी रिपोर्ट दी थी।

35. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान के एकीकरण प्रक्रिया में विभिन्न प्रमुख हस्तियों का विशिष्ट योगदान रहा था। वी.पी. मेनन भारत सरकार के रियासती विभाग के प्रशासनिक सचिव थे। गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल रियासती विभाग के अध्यक्ष एवं प्रमुख थे। गोकुलभाई भट्ट ने सिरोही रियासत के एकीकरण हेतु आंदोलन का नेतृत्व किया था, जबकि हरिभाऊ उपाध्याय अजमेर-मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री के रुप में कार्यरत थे।

36. (C) सिरोही
26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ और इसी दिन राजस्थान के एकीकरण का छठा चरण संपन्न हुआ। इस चरण में सिरोही रियासत का राजस्थान में विलय कर दिया गया। किंतु माउंट आबू तथा दिलवाड़ा क्षेत्रों को राजस्थान से पृथक रखकर बंबई राज्य में मिला दिया गया था। इस निर्णय का स्थानीय स्तर पर व्यापक विरोध किया गया था।

37. (A) बंबई राज्य
26 जनवरी 1950 को सिरोही के एकीकरण के समय रियासती विभाग ने माउंट आबू और दिलवाड़ा क्षेत्रों को राजस्थान में शामिल न करके तत्कालीन बंबई राज्य में मिला दिया था। इस निर्णय का राजस्थान की जनता और नेताओं, विशेष रूप से गोकुलभाई भट्ट, ने तीखा विरोध किया, जिसके कारण अंततः राज्य पुनर्गठन आयोग ने इसे राजस्थान में वापस शामिल किया।

38. (D) राज्य पुनर्गठन आयोग
राजस्थान के एकीकरण का सातवाँ तथा अंतिम चरण 1 नवंबर 1956 को संपन्न हुआ था। यह पुनर्गठन भारत सरकार द्वारा गठित राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर किया गया था। इस चरण में अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-दिलवाड़ा तथा सुनेल टप्पा क्षेत्र राजस्थान में मिलाए गए, जबकि सिरोंज उपखंड मध्य प्रदेश को सौंप दिया गया था, जिससे वर्तमान राजस्थान का निर्माण हुआ।

39. (B) के.एम. मुंशी
भारत में भाषाई और प्रशासनिक आधार पर राज्यों के पुनर्गठन हेतु दिसंबर 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति फज़ल अली थे, तथा इसके दो अन्य सदस्य एच.एन. कुंजरु और के.एम. पणिक्कर थे। के.एम. मुंशी इस तीन-सदस्यीय आयोग के सदस्य नहीं थे, बल्कि वे संविधान की प्रारुप समिति में सम्मिलित थे।

40. (C) सिरोंज
1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के तहत सीमाओं का समायोजन किया गया। इस प्रक्रिया में राजस्थान के झालावाड़ जिले की सिरोंज तहसील को भौगोलिक समीपता के कारण मध्य प्रदेश के विदिशा जिले में मिला दिया गया था। इसके बदले में मध्य प्रदेश का सुनेल टप्पा क्षेत्र राजस्थान के झालावाड़ जिले में सफलता पूर्वक सम्मिलित किया गया।

41. (A) IV, II, I, III
राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न क्रमिक चरणों में प्रधानमंत्रियों द्वारा पदभार ग्रहण करने का कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: प्रथम चरण में शोभाराम कुमावत ने पद संभाला। द्वितीय चरण में गोकुल लाल असावा प्रधानमंत्री नियुक्त हुए। तृतीय चरण में माणिक्य लाल वर्मा ने यह पद ग्रहण किया। अंततः चतुर्थ चरण में पंडित हीरालाल शास्त्री राज्य के प्रथम प्रधानमंत्री नियुक्त किए गए थे।

Click Here to Buy book on Flipkart

1947 में सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में गठित रियासती विभाग के सचिव थे। इस पुस्तक में उन्होंने रियासतों के विलय और एकीकरण की प्रक्रिया का प्रामाणिक और विस्तृत विवरण अत्यंत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है।

68. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
बी.आर. पटेल समिति की सिफारिशों के आधार पर एकीकृत राजस्थान में प्रशासनिक मुख्यालयों का न्यायसंगत वितरण किया गया था। उच्च न्यायालय जोधपुर को दिया गया था। शिक्षा विभाग का मुख्यालय बीकानेर में स्थापित किया गया था। खनिज विभाग उदयपुर को सौंपा गया था। कृषि विभाग का मुख्यालय भरतपुर में स्थापित करके संतुलन कायम किया गया था।

69. (A) राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य प्रजा परिषद
1950 में जब माउंट आबू और दिलवाड़ा क्षेत्रों को राजस्थान से अलग करके बंबई राज्य में मिला दिया गया था, तब राजस्थान में गहरा असंतोष फैल गया। राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य प्रजा परिषद ने इस फैसले के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन आयोजित किए तथा आबू को पुनः राजस्थान में शामिल करने हेतु प्रस्ताव पारित करके कड़ा विरोध जताया था।

70. (D) राजप्रमुख
भारतीय संविधान लागू होने के पश्चात् भाग B श्रेणी के राज्यों के संवैधानिक प्रमुख के लिए 'राजप्रमुख' पदनाम का प्रयोग किया जाता था। एकीकृत राजस्थान भी भाग B श्रेणी का राज्य था, इसलिए इसके संवैधानिक प्रमुख को राजप्रमुख कहा जाता था। 1956 में 7वें संविधान संशोधन द्वारा यह पद समाप्त कर राज्यपाल का नया पद स्थापित किया गया।

71. (B) महाराजा सादुल सिंह
बीकानेर के महाराजा सादुल सिंह ने स्वतंत्रता के पूर्व ही देशी रियासतों के भारत संघ में विलय का समर्थन किया था। वे राजपूताना के प्रथम शासक थे जिन्होंने 7 अगस्त 1947 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। उन्होंने अन्य राजाओं को भी भारतीय संघ में शामिल होने हेतु प्रेरित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण और राष्ट्रभक्त भूमिका निभाई।

72. (C) कराची बंदरगाह तक पहुँच और स्वायत्तता के संबंध में जिन्ना द्वारा दिए गए आकर्षक प्रस्ताव
पाकिस्तान के नेता मोहम्मद अली जिन्ना जोधपुर और जैसलमेर जैसी सीमावर्ती रियासतों को पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे। इसके लिए जिन्ना ने जोधपुर के महाराजा को कराची बंदरगाह के मुफ्त उपयोग, रेल संपर्क, हथियारों के आयात और पूर्ण स्वायत्तता के कई आकर्षक प्रस्ताव दिए थे, जिससे शासक प्रारंभ में इस दिशा में विचार करने लगे थे।

73. (D) धौलपुर और भरतपुर
18 मार्च 1948 को गठित मत्स्य संघ में चार रियासतें—अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली शामिल थीं। इनमें से धौलपुर और भरतपुर रियासतों पर जाट राजवंश का शासन था। धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह जाट शासक थे जिन्हें मत्स्य संघ का राजप्रमुख बनाया गया था, तथा भरतपुर में भी जाट राजवंश का ही शासन स्थापित रहा था।

74. (A) मेवाड़ ने प्रारंभिक संघ से इनकार किया -> विशेष शर्तों पर बातचीत की -> तीसरे चरण में शामिल हुआ -> भूपाल सिंह राजप्रमुख नियुक्त हुए
मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह ने प्रारंभ में द्वितीय चरण के राजस्थान संघ में शामिल होने से इनकार कर दिया था। बाद में उन्होंने भारत सरकार के साथ विशेष शर्तों पर वार्ता की। शर्तें स्वीकार होने पर मेवाड़ तीसरे चरण में शामिल हुआ तथा महाराणा भूपाल सिंह को राजप्रमुख पद पर आसीन किया गया था।

75. (C) 1952
एकीकृत राजस्थान में लोकतान्त्रिक सरकार के चुनाव हेतु प्रथम आम चुनाव जनवरी 1952 में आयोजित किए गए थे। राजस्थान विधानसभा की कुल 160 सीटों के लिए चुनाव हुए। इसके पश्चात् मार्च 1952 में टीकाराम पालीवाल प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री बने। प्रथम आम चुनाव ने राजस्थान में पूर्ण लोकतान्त्रिक शासन की नींव को सुदृढ़ करने का ऐतिहासिक कार्य किया था।

76. (B) प्रमुख शहरों में विभिन्न राज्यस्तरीय सरकारी विभागों का वितरण करके
एकीकरण के बाद विभिन्न रियासती क्षेत्रों के बीच उत्पन्न असंतोष को दूर करने के लिए बी.आर. पटेल समिति की सिफारिशों पर प्रमुख सरकारी विभागों का विभिन्न शहरों में वितरण किया गया। इसके तहत जयपुर को राजधानी, जोधपुर को उच्च न्यायालय, बीकानेर को शिक्षा और उदयपुर को खनिज विभाग दिया गया ताकि संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित हो सके।

77. (A) शाहपुरा
स्वतंत्रता और एकीकरण के समय राजपूताना की 19 देशी रियासतों में से शाहपुरा रियासत क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों की दृष्टि से सबसे छोटी रियासत थी। शाहपुरा का क्षेत्रफल केवल 405 वर्ग मील था और जनसंख्या लगभग 16,000 थी। शाहपुरा का विलय 25 मार्च 1948 को द्वितीय चरण में राजस्थान संघ में पूर्णतः संपन्न हुआ था।

78. (C) अजमेर-मेरवाड़ा
अजमेर-मेरवाड़ा स्वतंत्रता के पश्चात् एक पृथक भाग C श्रेणी का राज्य था। इस पृथक राज्य का प्रशासन चलाने के लिए धारा सभा गठित थी, जिसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे। हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व में यह क्षेत्र 1 नवंबर 1956 तक पृथक राज्य के रूप में कार्य करता रहा, जिसके बाद इसका राजस्थान में पूर्ण विलय संपन्न हुआ।

79. (C) 12
भारत की संविधान सभा में राजपूताना क्षेत्र से कुल 12 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और भारतीय संविधान पर अपने हस्ताक्षर किए थे। इन प्रतिनिधियों में हीरालाल शास्त्री,

Downloaded from www.pdf.tube

जयनारायण व्यास, माणिक्य लाल वर्मा, गोकुल लाल असावा, मुकुट बिहारी लाल भार्गव और बलवंत सिंह मेहता जैसे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनेता मुख्य रूप से सम्मिलित थे।

80. (C) डांग्स
स्वतंत्रता के समय राजपूताना में कुल 19 देशी रियासतों के अलावा 3 ठिकाने भी विद्यमान थे। ये 3 ठिकाने—नीमराना, लावा, तथा कुशलगढ़ थे। डांग्स एक प्राकृतिक भौगोलिक क्षेत्र है, यह स्वतंत्रता पूर्व का कोई प्रशासनिक ठिकाना नहीं था। अतः डांग्स एकीकरण प्रक्रिया में शामिल तीन ठिकानों में सम्मिलित नहीं था, बल्कि यह केवल एक भौगोलिक भूभाग है।

81. (A) केवल I और II
राजपूताना प्रांतीय देसी राज्य प्रजा परिषद ने रियासतों के एकीकरण हेतु अभियान चलाया था। शासकों पर प्रजामण्डलों का भारी दबाव था। तीसरा कथन असत्य है क्योंकि मत्स्य संघ का विलय भरतपुर और धौलपुर की जनता की राय जानने हेतु गठित शंकर राव देव समिति की सिफारिश पर ही विचार करके तय किया गया था।

82. (D) एजेंट टू द गवर्नर-जनरल (A.G.G.) व्यवस्था
1947 में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित होने और ब्रिटिश सर्वोपरि सत्ता के अंत के साथ ही राजपूताना पर ब्रिटिश नियंत्रण समाप्त हो गया। इसके साथ ही एजेंट टू द गवर्नर-जनरल (A.G.G.) का पद और प्रशासनिक व्यवस्था समाप्त हो गई। A.G.G. का मुख्यालय अजमेर तथा ग्रीष्मकालीन कार्यालय माउंट आबू में स्थित होकर संचालित होता था।

83. (A) झालावाड़
एकीकरण प्रक्रिया के प्रारंभ के समय राजपूताना की रियासतों में से झालावाड़ एकमात्र ऐसी रियासत थी जहाँ कोई पृथक प्रजामण्डल गठित नहीं किया गया था। झालावाड़ के शासक हरिश्चंद्र बहादुर ने स्वयं आगे बढ़कर एकीकरण का समर्थन किया था तथा 25 मार्च 1948 को अपनी रियासत का विलय राजस्थान संघ में स्वीकार करके विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए।

84. (C) सवाई मानसिंह द्वितीय
30 मार्च 1949 को वृहत् राजस्थान के गठन के समय जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय को राज्य का राजप्रमुख बनाया गया था। उन्होंने 30 मार्च 1949 से 1 नवंबर 1956 तक राजप्रमुख पद की जिम्मेदारी निभाई। 1956 में 7वें संविधान संशोधन के बाद यह पद समाप्त कर राज्यपाल का नया पद स्थापित किया गया था।

85. (A) बी.आर. पटेल
वृहत् राजस्थान की स्थापना के समय जयपुर और जोधपुर के बीच राजधानी चयन को लेकर मतभेद था। इस विवाद का समाधान करने हेतु भारत सरकार ने बी.आर. पटेल की अध्यक्षता में समिति गठित की थी। बी.आर. पटेल समिति ने उपलब्ध ढांचागत सुविधाओं तथा भवनों की सुलभता को ध्यान में रखते हुए जयपुर को राजधानी बनाने की सिफारिश प्रस्तुत की।

86. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
1 नवंबर 1956 को 7वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा राज्यों के पुराने वर्गीकरण को समाप्त कर दिया गया। इसके तहत राजप्रमुख के संवैधानिक पद को समाप्त करके राज्यपाल पद स्थापित किया गया। अतः राजस्थान में राजप्रमुख का पद 1956 में समाप्त हो गया था। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा सही व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

87. (B) रक्षा, विदेशी मामले और संचार
1947 में रियासती विभाग ने देशी रियासतों के भारत संघ में समायोजन हेतु यथास्थिति समझौता तथा विलय पत्र तैयार किया था। इसके तहत रियासतों को केवल तीन प्रमुख विषय—रक्षा, विदेशी मामले तथा संचार—भारत संघ को सौंपने थे, जबकि अन्य सभी आंतरिक विषयों पर रियासतों की स्वायत्तता और शासन बना रहना तय हुआ था, जो अत्यंत महत्वपूर्ण शर्त थी।

88. (C) चतुर्थ चरण (वृहत् राजस्थान)
राजस्थान के एकीकरण के चतुर्थ चरण में राज्य का सबसे बड़ा भौगोलिक तथा जनसांख्यिकीय विस्तार हुआ था। इस चरण में चार बड़ी देशी रियासतों—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर का विलय किया गया था। इस विलय के पश्चात् राजस्थान का अधिकांश भूभाग एक सूत्र में बंध गया और विशाल आकार अस्तित्व में आया जो अत्यंत महत्वपूर्ण था।

89. (D) इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एसेशन (विलय पत्र)
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के अंतर्गत देशी रियासतों के भारत संघ में विलय हेतु कानूनी दस्तावेज़ तैयार किया गया था, जिसे 'इन्स्ट्रूमेंट ऑफ एसेशन' (विलय पत्र) कहा जाता था। इस दस्तावेज़ पर शासकों के हस्ताक्षर के पश्चात् ही विलय कानूनी रूप से वैध माना जाता था। इसके द्वारा प्रमुख विषय केंद्र सरकार को सौंपे गए थे।

90. (A) हीरालाल शास्त्री
पंडित हीरालाल शास्त्री जयपुर प्रजामण्डल के प्रमुख नेता और स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने समाज सेवा तथा बालिका शिक्षा के प्रसार हेतु 1935 में निवाई में जीवन कुटीर की स्थापना की थी, जो आगे चलकर वनस्थली विद्यापीठ बनी। हीरालाल शास्त्री 30 मार्च 1949 को गठित वृहत् राजस्थान के प्रथम प्रधानमंत्री तथा मनोनीत मुख्यमंत्री के रूप में नियुक्त हुए।

91. (A) II, I, IV, III
राजस्थान के एकीकरण के प्रारंभिक चार चरणों में बनीं राजधानियों का कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: प्रथम चरण में राजधानी अलवर बनी। द्वितीय चरण में राजधानी कोटा बनाई गई। तृतीय चरण में राजधानी उदयपुर बनी। अंततः चतुर्थ चरण में जयपुर को स्थाई राजधानी के रूप में घोषित किया गया था, जो वर्तमान में भी राजधानी है।

NODIA

92. (B) सामंती भूमि व्यवस्था को समाप्त करने वाले भूमि सुधार कानून पारित करना
1952 में गठित प्रथम निर्वाचित राजस्थान विधानसभा का मुख्य कार्य पुरानी सामंती भूमि व्यवस्था को समाप्त करना था। इसके लिए विधानसभा ने जागीरदारी उन्मूलन तथा भूमि सुधार कानून पारित किए। इन कानूनों के माध्यम से किसानों को उनकी भूमि का वास्तविक मालिकाना हक प्रदान किया गया तथा शोषणकारी व्यवस्था का अंत सफलता पूर्वक किया गया था।

93. (C) 26 जनवरी 1950
26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। इसी तिथि को राजस्थान को भारतीय संघ के अंतर्गत भाग B श्रेणी के राज्य के रूप में संवैधानिक मान्यता मिली थी। इसी दिन इस राज्य का आधिकारिक नाम 'राजस्थान' स्वीकार किया गया तथा इसके प्रमुख को राजप्रमुख का संवैधानिक पद आधिकारिक रुप से प्रदान किया गया।

94. (C) महाराजा सुमेर सिंह
25 मार्च 1948 को एकीकरण के द्वितीय चरण में किशनगढ़ के शासक महाराजा सुमेर सिंह ने अपनी रियासत का राजस्थान संघ में विलय स्वीकार कर लिया। उन्होंने प्रजातांत्रिक मूल्यों और भारतीय संघ की अखंडता का सम्मान करते हुए किशनगढ़ का संपूर्ण प्रशासन नवगठित संघ को सहर्ष सौंप दिया था। इस चरण में अन्य आठ रियासतें भी सम्मिलित थीं।

95. (A) केवल I, II और III
वी.पी. मेनन रियासती विभाग के सचिव और लॉर्ड माउंटबेटन के संवैधानिक सलाहकार थे। उन्होंने विलय पत्र और प्रिवी पर्स की शर्तों पर वार्ताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चौथा कथन असत्य है क्योंकि वी.पी. मेनन राजस्थान के मुख्यमंत्री नहीं थे, बल्कि हीरालाल शास्त्री राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री बने थे, जो एक लोकप्रिय नेता थे।

96. (C) बीकानेर
बीकानेर के दीवान के.एम. पणिक्कर एक कुशल कूटनीतिज्ञ थे। स्वतंत्रता के समय बीकानेर के महाराजा सादुल सिंह को भारतीय संघ में सम्मिलित होने तथा विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने हेतु राजी करने में दीवान के.एम. पणिक्कर की कूटनीतिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और सराहनीय सिद्ध हुई थी, जिससे बीकानेर प्रथम हस्ताक्षरित रियासत बनी।

97. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के एकीकरण का विवरण इस प्रकार है: मत्स्य संघ का विलय वृहत् राजस्थान में हुआ। अजमेर-मेरवाड़ा का 1 नवंबर 1956 को राजस्थान में विलय हुआ। आबू-दिलवाड़ा को बंबई से राजस्थान में स्थानांतरित किया गया। सिरोंज तहसील को 1956 में मध्य प्रदेश में सम्मिलित करके सीमा समायोजन पूरा किया गया था।

98. (B) केवल I और III
राजस्थान के एकीकरण से एक संगठित भाषाई व सांस्कृतिक क्षेत्र बना और विखंडित अर्थव्यवस्थाओं को एकीकृत राज्य अर्थव्यवस्था में बदला गया। किंतु कथन II असत्य है क्योंकि एकीकरण के बाद भी राजनीति में जातिगत निष्ठाएं रातों-रात समाप्त नहीं हुईं। अतः केवल कथन I और III सत्य माने जाते हैं, जो राजस्थान के इतिहास को दर्शाते हैं।

99. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
राज्य पुनर्गठन आयोग ने अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय करने की सिफारिश की थी क्योंकि यह क्षेत्र भाषाई तथा सांस्कृतिक रुप से राजस्थान का भाग था। कारण गलत है क्योंकि अजमेर-मेरवाड़ा फ्रांसीसियों के अधीन नहीं था, बल्कि यह ब्रिटिश प्रशासन के सीधे नियंत्रण में स्थित केंद्र-शासित क्षेत्र था। अतः केवल कथन सही है और कारण गलत है।

100. (B) केवल I और III
1 नवंबर 1956 को राजस्थान का अंतिम पुनर्गठन हुआ। इसके तहत सुनेल टप्पा क्षेत्र झालावाड़ में जोड़ा गया तथा जयपुर को राजधानी बनाए रखा गया। सिरोंज को मध्य प्रदेश में मिलाया गया था तथा राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया था। अतः केवल कथन I और III ही सत्य हैं, जबकि अन्य दो कथन गलत हैं।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

Visit :
www.pdf.tube

Download PDFs For :

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

NODIA

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 420.00